क्ताम्बुनिधि का सूचीपत्र ।

भक्ताम्बुनिधि का सूचीपत्र।



भक्ताम्बुनिधि ॥

छंदशिखरणी ॥

मनोज्ञंनस्याहारीधनुदलनकारीरघुपते रघुवंशांभोजङ्गमदह-
रशोकंसुखकृतं अखण्डंअद्वैतंअविपदकृअखंडंअघयरी इषुंचापंधा
रीजननदुखहारीनतुधरी १ सरोज्ञंनेत्रं उडुपसुखपीताम्बरधरं
त्रयीलोकस्वामी दशवदननाशीविधकरं रघूनन्दंवन्दे उरगपानि
पद्माहरहरी भजेदर्वीदियाअतुरगुरनागागलवरी २ सर्वरक्षाहेतुं
मुनिसंगगतंध्यानंदयुतं सुवाहुंमारीचंकरतयुयकीन्हांविवहुतं शि
ला दीन्हींनारीसकलअघहारीसुखकरी अयोध्यानाथस्यचरणसु-
निध्यानाल्लयधरी ३ सो० । श्रीरघुवीर कृपाल दुखदारिद नाशन
सुखद । भक्तिकुञ्जर भाल जियालाल राखिय शरण १ रूप
महाछविखानि वर्णि सकै अस कौन कवि । सुन्दर सुनि सुखदा-
नि जगसंभवपालन हरन २ अवधपुरी निजधाम ऋद्धिसिद्धि
मंगल सकल । शोभितआठौ याम सुन्दर भांगन नारिनर ३
कल्पवृक्षनदिग नाहिं शोभितमंदिर माणिन चुन । गङ्गमणिनकर अ-
जिराई सुनचारि शोभनवरु ४ चौ० । स्वर्ण वेदिका मध्यसु-
भासन । रत्नजटित मोहन सिंहासन ॥ तिहि सिंहासन मध्य
सुहावा । पद्मासन अति शोभा पावा १ मध्यसुदल कर्णिका



भक्ताम्बुनिधि ॥

छंदशिखरणी ॥

मनोज्ञनम्याहारीधनुरदनकारीरघुपते रघुवंशांगगणइन्दुभवह-
रशोकंसुखकृते अखण्डंअद्वैतंअविपयहृशानंअवयर्स इषुंचापंधा
रीजनलदुखहारीतनुधरी १ नगोन्नतंनत्रं उडुपमुखपीनाम्बरधरं
त्रयीलोकस्वामी दशवदननाशीविधकरे रघूनन्दंवन्दे उरगपति
ब्रह्मादिगहरी सजेदेवीदेवाअसुरसुरनागापलयशी २ सर्वंरसाहन्तं
मुनिसँगगतंआनंदहुनं सुबाहुंमारीचंकरतअघवकीन्होंवधहनं शि
ला दीन्होंनारीसकलअघहारीसुखकरी अयोध्यानाथस्यचरणसु-
निध्यानालयधरी ३ सो० । श्रीरघुवीर कृपाल दुखदारिद नाशन
सुखद । भक्तिसुअक्षर भाल जियालाल राखिय शरण १ रूप
महाछविखानि वरणि सकै असकौन कवि । सुन्दर सुनि सुखदा-
नि जगसंभवपालन हरन २ अवधपुरी निजधाम ऋद्धिसिद्धि
मंगल सकल । शोभितआठौ याम सुन्दर भोगन नागिरि ३
कल्पवृक्षहिग ताहँ शोभितमंदिर मणिन युत । रश्मितिकर अ-
तिलाऊँ सुनधारि गोगियमय ४ चौ० । स्वर्ण वेदिका मध्यसु-
भासन । रत्नजटित सोहत सिंहासन ॥ तिहि सिंहासन मध्य
सुवासा । पद्मासन अति शोभा पाशा १ सप्तदलन कर्णिका

राजै । अद्भुत शिखिसम शोभा साजै ॥ तामधि शोभित श्री-रघुनायक । तोपद तनसेवक सुख दायक २ शिरपर क्रीट मुकुट छबिछाजत । जटित मंजुमणि जलज बिराजत ॥ निरखत रबि शशि उस्र लजाहीं । कुंडल झलक कपोलन छाहीं ३ अरुण तामरस दृगछबिछाजैं । भृकुटि मनहुं आलि अवलि बिराजैं ॥ नासा परमसुदेश सुहाई । कीरतुएड छबि देखिलजाई ४ चि-तवन चारुरसिक मनहरणी । मन्द हास मन आनँद करणी ॥ दीरघ दीशललाट सुहायो । सुन्दर तिलक महाछबि छायो ५ जलजहार मणि मालसुहावा ॥ उरश्रीवत्स चिन्ह छबिपावा ॥ कंठमध्य कौस्तुभ मणि भ्राजै । अपरजनेउ कंध सुखसाजै ६ भुजप्रलम्ब कटि किंकिणि सोहत । रतनजटित मुँदरी मन मोहत ॥ सोहत भूषण विविध प्रकारा । बरणि कौन कबि पावै पारा ७ नाभि मनोहर रेख समेता । त्रिवली सहित हरत चित चेता ॥ नूपुरपुरट मणिनयुत सोहत । रवकुल सुर संगीत बि-मोहत ८ युगपद अरुण कमल छबिछाजैं । कुलिशादिक चि-न्हनयुतराजैं ॥ दिव्यायुधकर धारणकीन्हे ॥ बामधनुष दक्षिण शरलीन्हे ९ षोड़शवर्ष रूपनितधारे । कोटिनसूर रूपलखिहारे ॥ इहि विधि श्रीरघुवीर विराजत । बामभाग सीताछबि छाजत १० नगनजरे छबिभरे अपारा । शोभित भूषण विविध प्रकारा ॥ सुन्दरतन चामीकर शोभा । किधौं तड़ित निरखत मन लो-भा ११ गज मुक्तन सो मांग सवाँरी । मनहुंदेवसरि शोभा धारी ॥ पाट लरन माथि उज्ज्वलमोती । सघन तिमिर जनु उड-गण जोती १२ रतन रचित मणि जटित सुहाये। विन्दाराजत शीशमहाये ॥ युगल श्रुतिन ताटंक विराजत । दरशनकरत अखिल अघभाजत १३ उज्ज्वल भाल सुचारु सुहायो शो-भित मनहुंसुहागमहायो ॥ किधौं भाग्य मन्दिर सुखसाजत । गोरोचन को तिलक विराजत १४ नासावेसरि लसत सुहाई । भृकुटी नयन महाछबिछाई ॥ बिकसत कमल बदन असला-

गत। अरुण अधरतर दशन विराजत १५ चारु चिबुकबिच मेचक बिन्दू। मुक्तमालगल निन्दितइन्दू॥ पदिकरचित कलधौत विशाला। सोहत ग्रीवमनोहर माला १६ हेमतंतुकरि रचित सवाँरी। सोहतझीन अरुण रँगसारी॥ चित्र विचित्र न चित्रितसोई। किहिविधि बरणि कहै कविकोई १७ सुन्दरबाहु चुरी.कर सोहत। अमित रंग मुंदरी मन मोहन॥ पद्मराग मणि नील बनाये। कंकण युग सोहत मनभाये १८ बनज सुमन जनु षटपद राजी। कंकनकी शोभा इमिछाजी॥ कटिसुदेश लहँगा छबि पावत। पीत अमित सित रँगदरशावत १९ हरित नगनसों जगि सुहाई। जेहरि युगल महा सुददाई॥ तिनतर घुंघुरू बिछुआ गाजें। तिनपरनगजु अमोलबिराजें २० चुन्नीगण बहुभांतिनलाये। चरण अरुण अति लगत सुहाये॥ अतुलित युगल रूप प्रभुताई। यह उपमा तिनको लघुताई २१ कोटिन अगडतनोमहजासू। यह उपमा अतिही लघुतासू॥ निजमति के अनुसार सुहावा। दम्पति ध्यान रसिक हित गावा २२ यह धरिध्यान विनय बहुकरिके। करहुं प्रणाम शीश महि धरिके॥ करन चहत भक्ताम्बुधि काहीं। चरण आश मम बुधि बल नाहीं २३ शुभ प्रबंध वर्णन बलदीजे। अनुचर जानि कृपा प्रभु कीजे॥ भक्त चरित्र अमल सुखदाई। कहन चहत मो कथा बनाई २४ कीरति गवरि अगम अपारा। ताकहँ वरणि लहै को पारा॥ शारद शेष महेश विधाना। इनपै तवयश वर्णि न जाना २५ शंकर वेद पुराण बखानत। देवदैत्य कोउअंत न जानत॥ पै बुद्धि मनरूप तुम्हारा। जनके हेत लेत अवतारा २६ जब जब आरत भक्त पुकारत। तिनदुख देखि जगत वपु धारत॥ बाहर लोक वेदकीरगती। विद्या ज्ञान जानत नीती २७ महा अनाथ अधम कुलहीना। ते उत्तम गति में भे लीना॥ केवल नर कीरति को करिके। गे परलोक महा सुद भरिके २८ निरगुण सगुण नवनरगनत। दोनों में वर नाम चि-

राजत॥ जबतव नामहिं भक्त उचारत। तबतुमजाइ दीहदुखटारत॥ गज पुकार कीन्हो जल माहीं । तब तुम रक्षा कीन तहाँहीं ॥ द्रुपदसुता जब नाम पुकारा । तब तुम जाइ बसन तनधारा २० नामकुरंगिनि जबहिं पुकारी । तब तुम ताकहँलीन उबारी ॥ पांडु सुवन जबनाम पुकारा । लाक्षागढ़ में तिनहिं उबारा २१ नाम-हिंको प्रहलाद पुकारा । खंभमांझ नरहरि वपुधारा ॥ पुनि ध्रुव जपतभये तवनामा । दीन्हो अचलअनूपमठामा २२ अजामील भाषो तबनामा । ताहि बुलाइ लियो निजधामा ॥ नामभजन पारथ जबकीन्हो । शरके हेठ पीठितब दीन्हो २३ जो ये नाम भजन नहिं धरते । तौकाहे प्रभुरक्षाकरते ॥ ताते नाम बड़ोदुहुं माहीं । वेदपुराण कहैं बहुधाहीं २४ दोनों रूपनाम आधीना । नाम अगुण रस गुण विच्चलीना ॥ निरगुण रूप कोउ नहिं जा-नै । निराकारतिहि वेद बखानै २५ निरगुण केररूप कछुनाहीं । केवल नामै अहैसदाहीं ॥ सोइनाम जन दुखितउचारैं । तबहीं प्रभुसरगुणवपुधारैं २६ संतन सुखदैदुष्टनमारी । नामहिं लीन होत वनवारी ॥ केवल नाम उभय दरशावत । निरगुण सरगुण रूप बतावत २७ दो० । सोइनाम उरमांझ धरिरामहिं शीशनवाय । भक्तअम्बुनिधिवरणऊं सुनिकलि कलुषनशाय १ वंदौं श्रीगुरुपद कमल जोरिपानि अरुजानु ॥ जासुकृपा मोहहिदलन तिमिर नि-करकरभानु २ चौ० । अब श्रीभक्तिहि शीशनवावौं । जासुकृपा निर्मलमतिपावौं ॥ सो रघुनन्दन की पटरानी । भक्तजननकहँ अति सुखदानी १ श्रीरघुनाथ कर्म अनुसारा । दुखसुखदेत जनन बहुसारा ॥ भक्तिकृपालु महासुखदाई । भक्तनदुखहरि सुखदरशाई२ वेदपुराणविदित यशजासू । हरिसो अधिक कहतबुधतासू ॥ पद्म पुराण कहतइहिभांती । जैसेकाठ अग्निजरिजाती ३ तैसे भगवत भक्तिप्रतापा । संचितइहिजनु नाशतपापा ॥ करतप्रार्थना हरिसों देवा । जो हमजपतप कीन्हीसेवा ४ ताकोफलहमको यहदीजै । भरत खण्डमहँ जन्महिलीजै ॥ तहांशबरी भक्तिहिभारैं । सकल

त्रास दुख दोषन दारै ५ पुनि नारदपुराण यहगावत । भक्तिहि धारिभक्त हरिपावत ॥ जलसों हरिकहँ पूजनकीन्हें । पावत हरिहि भक्ति मनदीन्हें ६ पुनि वामन पुराण यहकहई । जासु अनन्य भक्तिजग अहई ॥ शंखचक्र धारीनारायण। निश्चय करिजेनर पारायण ७ त्रासहोत नारायण पाहीं । सत्यबात यह संशय नाहीं ॥ यहभारत इहिभांति पुकारत । करितप ध्यान पापजो जारत ८ जन्म सहस्रनपाप नशावत। तेभगवत की भक्तिहि पावत ॥ पुनिबैशाख महातम गावै । दुर्लभ भरतखण्ड महँ आवै ९ तामहँ नरतन दुर्लभजोई । पुनिदुर्लभ सुधर्म रत होई ॥ अतिदुर्लभ जो भक्तिहि धारै । भक्तिधारि निजकार्य सँवारै १० पद्मपुराण कहत इहिभांती । जाउर भक्ति प्रेमकीपांती॥ तिहियमराज स्वप्न नहिंदेखा । प्रेतपिशाच विघ्ननहिं लेखा ११ पुनिनारदपुराण यहगावत । अर्थादिक हितजन श्रमलावत ॥ भक्तिकरत बिनश्रम अनयासा । अर्थादिक आवहिं तिहिपासा १२ पद्मपुराण बहुरि असबोले । मुक्तिद्वार भक्तन हितखोले ॥ यहनिश्चय सन्देह बिनाहीं । भक्तिसमान अपर कछुनाहीं १३ पुनिब्रह्माण्ड पुराण बखाना । जिनभगवतकी भक्ति नजाना ॥ तिनके हेतु सुकोटिनकल्पा । ज्ञानमुक्ति नहिंप्रापतिअल्पा १४ इहिविधि लिखाभागवतमाहीं । कहो कृष्ण उद्धवके पाहीं ॥ सांख्यवेद वैराग्य कहाये । भक्तिसमान मोहिं नहिंभाये १५ भापत इमि अस्कंद पुराना । उत्तममग न भक्तिसमआना ॥ इहिविधि है भगवतकी बानी । केवल अवभक्ति ममजानी १६ गोपी गऊवृत्तपशु सांपा । हमको प्रापभये दहिपापा ॥ पुनि भागवत कहत यहबानी । जो फल जप तप योग बखानी १७ जोफल ज्ञान विरागहि कीन्हें । जो फल अमितदानके दीन्हें ॥ सोफल भक्त निमिषमहँपावै । भक्तिधारि ममकीरति गावै १८ पुनिनारद पुराण इमिगावै । ज्ञानबिना नहिंमुक्ति बतावै ॥ सोवहज्ञानभक्ति आधीना । बिनाभक्ति किमिपावैदीना १९ सहसन अश्वमेध

मखकीजै। भक्तिविना निष्फल गनिलीजै ॥ अरुजे कर्म वेद अनुसारा। भक्तिविना नहिंसुख संचारा २० पुनि अस्कंदपुराण बखाना। रहतजहां हरिभक्त सुजाना॥ ब्रह्माहरि हरसुर समुदाई। सिद्धनिवासकरततहँआई २१ इहिविधि भक्तिप्रताप महाना। वेदपुराणन सुयश बखाना ॥ ताकेयुग चरणन शिरधरिकै। भक्ताम्बुधि वरणौं मुदभरिकै २२ दो०। श्रीभगवत की भक्तिको रूपकहत अवगाय॥ जाकी महिमा इविधिहै सोई कहत बुझाय २३ चौ०। वेदसूत्र सिद्धांत बिचारा। यहदृढ़ बातहोत निरधारा॥ भगवत माहँपरम अनुरागा। सोई भक्ति कहत बड़भागा २४ सोसांडिल्यऋषीश्वरभाखा। सोईसूत्र अग्रलिखि राखा॥ सूत्रताहि वर्णत सबकोई। थोरेवर्ण अर्थ बहुहोई २५ यथा सापरानुरक्ती ईश्वरे इदंसूत्रं। लिंगपुराण कहत यहभेवा। कर्म वचन मन भगवतसेवा॥ ताकोनाम भक्ति सुखकारी। तंत्रशास्त्र इमि कहत पुकारी २६ त्र्यक्षर भक्तिमाँझ पहिचानौ। प्रथमभभव दुख नाशन जानौ॥ दोसरिका कल्याण निवासू। तृतियति तीव्र ज्ञान परकासू २७ सनत्कुमार संहिता भाषत। भक्तिनाम तिहि सब दुखनाशत॥ बिष्णुपुराण कहत इमिगाई। ताकहँ भक्ति कहत सुखदाई २८ शास्त्र कहत सो कर्म करीजै। त्यागन कहत तिनहिं तजिदीजै॥ पुनिसाहित्यशास्त्र इमिभाखा। जिनरसनेह काव्य गुनिराखा २९ सात्विक ज्ञानशुद्ध जब होई। ताकहँ नाम भक्ति कहसोई॥ इहिबिधि वेदपुराणन माहीं। भक्ति नाम बरणे बहुधाहीं ३० दो०। केवल हरिचरणनविषे होवैदृढ़ अनुराग॥ सोई भक्ति कहावई ताहिगहत बड़भाग ३१ नरकादिक के भयन तजि स्वर्गादिक सुखछाण्डि। भगवत सुंदरता उदधि रहै रूपसोमण्डि ३२ उदासीन जगसों रहै रूपमगन मनहोइ। ह्वै अखण्ड निश्चलसदा भक्ति नामहै सोइ ३३ द्वै प्रकार की सोइकहावै। अविहित विहित नाम छविपावै॥ शास्त्र रीति आज्ञाअनुसारा। ताकहँ बिहित नाम सुखसारा ३४ ताकेभेद चारि बिधि जानौ।

एककामना अर्थबखानौ ॥ जैसे ध्रुव निज कारज हेता। अपर गोपिका गणनसमेता ३५ दोसरि शत्रुभाव पहिंचानी। जिमि रावण शिशुपाल सुठानी ॥ तीसर भेदभयातुर जानौ। मारीचहु कंसादिबखानौ ३६ चौथेभेद प्रेम पहिचानी। जिमि नारदसनकादिक जानी ॥ ये जो चारो भेद प्रचारे। भय रिपुरीति उपासन न्यारे ३७ दूजो अविहित कियो बखाना। तासुस्वभाव करत अवगाना ॥ शास्त्रायसुविन आपुहि आपू। प्रगटत भगवतप्रीति प्रतापू ३८ ताहूके द्वै भेद बखाने। प्रथमहि ज्ञानांग मन आने ॥ ज्ञानहि उतपति करिकै जोई। मुक्ति देइ ज्ञानांगा सोई ३९ द्वितिय स्वतंत्रा बहुरि बखानी। आपुहि मुक्ति देति सुखखानी ॥ तीनि भांति पुनि भक्तिहि जानौ। उत्तम मध्यम प्राकृत मानौ ४० उत्तम को इहि भांति बखाना। ठाम ठाम भगवतमय जाना ॥ नीरतरंग सदृश अवलोकै। व्यापकवर्तमान प्रभुएकै ४१ बहुरिप्रीति भगवत में जोकर। दया करत प्राकृत भक्तांपर ॥ आपन मित्र भक्ति कोजानत। द्वेपिजनों से अनमिल मानत ४२ ताकहँ मध्यम भक्ति विचारिय। तदुपरि प्राकृत भक्ति उचारिय ॥ भगवत अरु भगवत की मूरति। ईश्वर जानि करै दृढ़ सूरति ४३ भगवत भक्तोंमें नहिं प्रीती। प्राकृत भक्ति केरि यह रीती ॥ सात्विक राजस तामस तेरे। त्रैविधि वचन भागवत केरे ४४ जोनिष्काम सुसात्विक जानौ। जैसे प्रह्लादादिकमानौ ॥ राजस सोइ सकाम लखाती। ध्रुव गज इत्यादिक जिहिभांती ४५ शत्रु विजय हित तामस जानिय। वृत्तबधन हित जिमिहरि मानिय॥अपर भक्ति के तीन प्रकारा। श्री भागवत पुराण उचारा ४६ मानस प्रथम जुमनते होई। वाचक दोसरि बोलन सोई ॥ प्रगट देह सो काइक अहई। गीता बहुरि चारिविधि कहई ४७ एकआर्त्त दुखसों हरिगावैं। जिमि द्रौपदि गजादि छविपावैं ॥ जिज्ञासूदोसरहैं सोई। राह मुक्तिकी ढूंढ़न जोई ४८ भये परीक्षित राजा जैसे। तीसर

अर्थार्थी ध्रुव तैसे ॥ चौथे ज्ञानी जिमि नारद मुनि । प्रह्लादहु सनकादिकहू पुनि ४९ बहुरि भक्ति के हैं त्रैभेदा । वर्णत सोइ हरणभव खेदा ॥ एक वहैजो आपुहिकीजै । दोसरि औरन को सिख दीजै ५० भक्ति करत औरन कहँ देखै । होइसुखी सो तृतिय बिशेखै ॥ पुनिताके नव भेदबखाना । श्रीभागवत माहँ सुखदाना ५१ श्रवण कीर्तन सुमिरण जानौ । सेवा अर्चा वन्दन मानौ । दास्य सख्य अरु आत्मनिवेदन । एनव भेद हरणभव खेदन ५२ बहुरि भक्तिके गेरह भेदा । भाषत हरण सकल भव खेदा ॥ प्रथम भेद सतसंग बखाना। दया प्रसन्नताहु पुनि आना ५३ तीसरि भक्तोंके जे करमा । शांत दया युत धारण धरमा ॥ श्रवण करन हरिचरित सुहाये । चौथो भेद भांति इमि गाये ५४ श्रवण किया जो भगवत रूपा । तामहँ उपजै प्रेमअनूपा ॥ सोई पंचम भेद कहावै । छठयें भेद धरै इमि भावै ५५ निज स्वरूप अरु भगवत रूपा । जानि यथार्थ लेइ अनुरूपा ॥ ज्ञानकहत अद्वैत बखानी । सोइ अवस्था धारै प्रानी ५६ भगवत वपुमें प्रेम बढ़ावै ॥ सोइ सातवीं भक्ति कहावै ॥ उरप्रकाश दिनादिन प्रति होई । भगवतको आठवीं है सोई ५७ दया और निरमलता धरई । भगवन माहिं धर्म अनुसरई । ये सबधर्म हृदय महँआवैं । सोईनवमभेद कबि गावैं ५८ दशम भेद इहि विधि ते जानिय । ईश्वरताहु दया उरआनिय । पूरण पुरुषमाहिं मनलावै । सर्वज्ञता धारि सुखपावै ५९ पुनि गेरहों भेदइमि भानिये । जितनी प्रीति देह निज गनिये ॥ तैसी हरिसें प्रीति लगावै । निश्चल क्षणक्षण सुख उपजावै ६० वही भक्ति पुनि तीस प्रकारा । क्रम क्रम अधिक भई सुखसारा ॥ यहसब भक्ति भेद इहि हेता । जिमि मन लागै भक्ति निकेता ६१ हरिजन मन लागै जिहि भावै । सोइएक विधि भक्ति कहावै ॥ जैसे श्री उद्धवसुख पाई । हरि सों प्रश्न कियो मुददाई ६२ कोई चौविस तत्त्वबखानै । सत्रहकौ सोलह

कौ मानै ॥ पांचकोउ कौ तीनिविचारत । सातकोउ कौआठ उचारत ६३ सो विरोध को कारण भाषिय । राउर मुख सुनि मन गुनि राखिय ॥ यह सुनि भगवत वचन बखानो । उद्धव नहिं विरोध कछु मानो ६४ दो० । मिलो तत्त्व दूजेविषे एक तत्त्व जिन देख । ताकी गणनाके विषे कमती तत्त्व विशेख ६५ चौ० । न्यारे न्यारे जिन अनुमाना । तिनकी गणना अधिक बखाना ॥ तीनि भेद जिन मनमहँ आने । ईश्वर मायाजीव बखानै ६६ भगवत इच्छा मायाजानत । तिनकी गणना दोइ बखानत ॥ इहि विधि तत्त्वनको विस्तारा । उद्धव सोभगवान उचारा ६७ कारण मूल एक भगवानै । दोसरि अब दृष्टांत बखान ॥ बरगद पादप कोउ बिलोकै । द्वै शाखा तामहँ अवलोकै ६८ बरगद चारिशाख कौ देखी । चारिशाख सो कहत विशेखी ॥ वास्तव करके बरगद एका । यही भांति सो भक्ति विवेका ६९ भक्तन केरिलगन अनुसारा । भक्ति लखाती कई प्रकारा ॥ सबकर तात्पर्य यह होई । कौनौ भांति भक्तिकर कोई ७० दृढ़अनुराग जबहिं मनआवै । तबहिं प्रयोजन सिद्ध कहावै ॥ प्रीति सिद्ध पदको नहिं जावै । तबतक साधन रूपकहावै ७१ थायी भाव पहुंचि गै जबहीं । सो फल रूप कहावत तबहीं ॥ है दृढ़भावन साधनदूजा । जीवनमुक्त सोइ पद पूजा ७२ अबभगवत भक्तोंके चरणा । बन्दन करौं सकल भ्रम हरणा ॥ जिनभगवतकी भक्तिहि धारा । तिनहिं प्रणाम करौं बहु वारा ७३ श्रीभागवतमाहँ इमिभाषे । जिनके सुमिरण के अभिलाषे ॥ होत सहितपरिवार पवित्रा । जोगावत हरिदास चरित्रा ७४ दरश परस अरु सेवा करई । मनक्रम वचन पाप लखि जरई ॥ बहुरि भागवत कहन बखानी । डूबतउद्धरत भवनिधि मानी ७५ तिनको भक्ति पोतसम आहीं । भगवत कहत भागवत माहीं ॥ मैं भक्तनके सदाअधीना । भक्तस्वतंत्र भक्ति रसभीना ७६ पद्मपुराण माहँ भगवाना । इहिविधि कीन्हो वचन

बखाना ॥ जौन भक्त भगवत भक्तनके । मेरेभक्त तौन ममनके ७७ साधुन की महिमा अवगाहा । बिधि हरिहर कवि पाव न थाहा ॥ जिनकी सतसंगति मनआनी । ब्रह्मसुखहि भोगत वर प्रानी ७८ पारस के गुण सदा संतधर । शठ कुधातु सुवरण शुचिमनकर ॥ पारस तिनसम होत न कबहूं । वेदपुराण बिदित जगअबहूं ७९ पारस करत लोहजाम्बूनद । निज समकरत संत हरि जगगद ॥ पारससो पारसनहिं होई । संत करत निज सम खल जोई ८० देखिय करिबिचार मनमाहीं । बिन सतसंग प्राप्त कछुनाहीं ॥ एकसमयभो वाद बिचित्रा । परवत ऋषि अरु बिश्वामित्रा ८१ विश्वामित्र तपहि बड़ भाषत । परवत सतसंगहि बड़ राखत ॥ दोनों गये शेषके पासा । कही बुझाइ सकल इतिहासा ८२ सुनत धरणिधर वचन उचारे । एक मुहूर्त धरणि जो धारे ॥ सोई बड़ो जानिके लीजै । और कछुसन्देह न कीजै ८३ यह सुनि विश्वामित्र उदारा । जन्म भरे को तप फल धारा ॥ धरतीठहरत जबनहिं देखी । परवत लिय सतसंग विशेखी ८४ एक मुहूरतको फल धारा । धरती ठहरिगई तिहिबारा ॥ इहिबिधि शेष न्याव करिदीन्हो । दोनों ऋषि मारग निज लीन्हो ८५ है सतसंग प्रताप महाना । वेदपुराण कीनयशगाना ॥ हरिहर अज मुनि भेदनजानैं । कविकोविद किहिभांति बखानैं ८६ अबबन्दों तिन पद दुखहर्ता । नाभाभक्तमाल के कर्ता ॥ जिनवरणोहरियश मनभावन । गावत सुनत होत जन पावन ८७ दक्षिण दिशि तैलंग सुदेशा । गोदावरी समीप सुवेशा ॥ तहां पहाड़ रामभद्राचल । कछुदिन राम वसे ताही थल ८८ तहँवां श्रीहनुमान सुअंशा । उपजे द्विज महाराष्ट्र सुवंशा ॥ रामदास अस नाम कहावा । सो हनुमान वंश छवि पावा ८९ श्रीरघुनाथ उपासन माहीं । दीन लगाइ जनन वहुधाहीं ॥ उपजत आइ वंश इहि जोई । गान वेद अधिकारी होई ९० तौने बंश माहँ सुखखानी । नाभाजी जन्मत भेआनी ॥ नाभारहे जन्म के सूरा ।

तहां अकाल परो परिपूरा ९१ तिनको पिता मृत्युवश भयऊ। तिनहिं मातु कानन तजिदयऊ॥ कील्हदासजी अग्रदासजी। नाभहि देखिकरी दायाजी ९२ जलछींटामारो नेत्रनपर। नेत्रखुले वृत्तांत पूछकर॥गलताजीमें तिनहिं लयाये। चेलाकरिदुखदूरिवहाये ९३ नाम धरो नारायण दासा। साधुप्रसादी खात सुखासा॥ दिनप्रति साधु प्रसादी खावा। तासों दिव्य ज्ञानहै आवा ९४ दो०। एक समय श्रीअग्रजी करत मानसीध्यान। बणि कपोत अटके जलधि दुचिताई मन आन ९५ तबनाभाजी कहतभे सुनि लीजै महराज। सावधान पूजाकरिय छूटत भये जहाज ९६ चौ०। तबहिं अग्रजी आज्ञा कयऊ। जासु प्रसादि ज्ञान यह भयऊ॥ तिन भक्तनके यशहि बखानो। सुनि नाभा उरआनँद मानो ९७ छप्पैछन्दनमें तिहि काला। रचत भये भक्तनकी माला॥ जन मणि गण से भरा अपारा। भक्तमाल भक्तन सुखसारा ९८ जिसने निज उर धारण कीन्हा। तिसने भगवत रूपहि चीन्हा॥ शुभ सम्वाद सोइ उर धरिहौं। भक्त अम्बुनिधि विरचित करिहौं ९९ सो०। साधु चरित सुखमूल दुखनाशन तारणतरण। नाशक सब जगशूल कथाकहौं तिन चरणभजि १००॥

इतिश्रीभगवत्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते वन्दनावर्णनभक्ताम्बुनिधौप्रथमस्तरंगः १॥

दो०॥ द्वीपरामग्रह विधुवरप सुभगलग्न सुखसार। रामकोट शुभग्राममें भक्तांबुधिअवतार१रामलषण सियपद्मपद दुखनाशन सुखदानि। करौंदगडवतशीशधरि बहुरि हृदयमहँआनि २ चौ०। चौविसनिष्ठायामें कीनी। सो सम्बन्धरसनसों लीनी॥ मूल पांच रस भक्तमालमें। भक्ति मिलापी सर्व कालमें ३ मूल रसनकी वेद श्रुति है। रसो वेस इहिभांति भनत है॥ तासु अर्थ इहि भांति बखानो। ईश्वर परमात्मा वपु जानो ४ रसको अर्थ बहुरि अस भाषत। जिस आनन्द स्वादके चाखत॥ सुखमें डूबि होइ सुधि-

हीना । भगवत चरण होइ मनलीना ५ चित्तवृत्ति दृढ़होवै ध्याना । ताको रस कबि करत बखाना ॥ द्वितिय अर्थ पुनिरसको कहिये । जो स्वरूपभगवत को लहिये ६ जिमि वात्सल्य अपर शृंगारा । सखा आदि रसभेदवदारा ॥ हृदय रूप प्रत्यक्ष लखाई । दृढ़बृत्तीसो रस कबि गाई ७ कोईकबि इहिबिधिते भाषै । जो स्वरूप हियमें अभिलाषै ॥ तदाकार जबहीं ह्वै जावै । सो सुखदाता भाव कहावै ८ भावैमें मनवृत्ति दृढ़ावै । ताही को निश्चय रस गावै ॥ सो रस एकै ब्रह्म कहावै । प्रगट भये बहु रूप दिखावै ६ जैसे मिट्टी एक प्रकारा । होतनाम घटरूप अपारा ॥ जल में जैसोरंग मिलावै । तिही भांतिको रूप लखावै १० जलमें रंगकई बिधिनाहीं । इहीभांति जानिय रसकाहीं ॥ सुन्दरता आभूषण जानौ । अरु कटाक्ष कोमलता मानौ ११ इन करिकै जाहिरजो होई । रस शृंगार कहावत सोई ॥ बल उत्साह शूरता सोई । शस्त्र आदि सो प्रगटत जोई १२ ताहि बीररस कबिजनराखत । इमि वात्सल्य सख्यहू भाषत ॥ कोशशास्त्र रस आठ उचरते । शांत रसहि वर्णननहिं करते १३ पुनि उपनिषद शास्त्रके बादी । शांत रसहि वर्णत हैं आदी ॥ और रसन तिहि शास्त्र बतावत । नव साहित्य शास्त्र कहि गावत १४ रौद्र हास्य करुणा शृंगारा । अद्भुतबीर शांत सुखसारा ॥ अरुवीभत्स भयानक जानौ । योग्य उपासन द्वै अनुमानौ १५ एक शांत दोसर शृंगारा । तीन अधिक उस में सुखसारा ॥ सख्यदास्य वात्सल्य बखानो । इहि विधि पांच रसन मन आनो १६ यद्यपिसबरसमेंभगवाना । योग्य उपासन पांचबखाना ॥ इनमें शीघ्र प्राप्त हरि होवैं । औरन काहँ भक्तनहिं जोवैं १७ उनको गनि रसमें इमिलीन्हो । रावणआदि मुक्ति हरि दीन्हो ॥ हैं रस पांच उपासन वारे । निष्ठा युक्त ग्रंथ मधिधारे १८ दो० । किसी भाव बिश्वाससों निष्ठाभगवतमाहिं । आराधन जिहिविधिकरै रस व्यतिरिक्त सुनाहिं १६ चौ० । येजोरस वरणे सुखदाना । सामग्री तामहँ श्रुतिजाना ॥ एक

विभावद्वितिय अनुभावा। सात्विक व्यभिचारी पुनिगावा २०
कारणमूल प्रगट रसकोई। ताहिविभाव कहत कविलोई॥ ताहू
के द्वैभेद बखाने। आलम्बन उद्दीपनजाने २१ आलम्बन विभा-
वद्वै भांती। इकआश्रय आलम्बन जाती॥ जोरसरहनेका अ-
स्थाना। अथवा रसउतपति अस्थाना २२ भगवतभक्त आश्र-
यीजानौ। विषयालम्बन दोसरमानौ॥ अथवारस मूरति शृं-
गारा। भगवतरूप ध्यान सुखसारा २३ दोसरउद्दीपनहै जोई।
चारिप्रकार कहावत सोई॥ प्रथम भेदइहिविधिते जानै। सुंदर
ता हरिकी उरआनै २४ नवयौवन मनमोहन रूपा। अथवा बा-
लकिशोर स्वरूपा॥ बोलनआदि प्रीति मनलावै। दोसरचेष्टा
भेदकहावै २५ दो०। क्रांतिगर्व सुकुमारता हावभाव अरु झ-
लक। अरु कटाक्ष आदिकविषे नेक न टारै पलक २६ अ०भूष
ण इत्यादिसज वस्त्रआदि सजजोइ। अलंकार सो जानिये है
तटस्थ चौथोइ २७ चौ०। अतरपान आदिकलै दयऊ। इमि
विभाव वर्णन यहभयऊ॥ दोसरिसामग्री अनुभावा। भवदुख
कानन दाहनदावा २८ नेहकरनवालाहै जोई। जापरनेह करत
हैसोई॥ द्वौएकत्र प्रकट जोबाता। तासोंरस प्रत्यक्षलखाता २९
मिलन परस्पर खेलनसाथा। बैठनगले मांझ धरिहाथा॥ ठट्ठा
हँसीलेटना संगा। चुंबन वा आलिंगन अंगा ३० तीसरिसाम
ग्री व्यभिचारी। चंचलदशा तासु अतिप्यारी॥ चौथीसामग्री
हैजोई। सात्विक अब वर्णतहैं सोई ३१ एकदशा सब रसमें
होई। सात्विकनाम कहावत सोई॥ सात्विकताको कहत विशे
खी। अपने प्रियवल्लभको देखी ३२ दो०। अथवा ताकीओर
से दुखसुख आवैजोइ। मनकीवृत्तीको दशा प्राप्तहोतहै सोइ ३३
चौ०। सात्विकदशा आठपरकारा। ताकोवरणि कहत वि-
स्तारा॥ प्रथमैनामस्तंभ कहावै। ज्योंकात्यों जबहींरहजावै ३४
दोसरिप्रलय कुमुर्छाजानौ। तीसरिरोमांचहु मनआनौ॥ चौ-
थीस्वेद पसीनाआवै। पंचम विवरण मुखद्युति जावै ३५ छठईं

कम्प शरीरकँपावै । सप्तम अश्रु आंशु बहवावै ॥ अष्टमहै स्वर-भंग सुहाई । भेदशब्दमहँ परत जनाई ३६ एकदशा पुनिमरण बखानौं । व्यभिचारी वरणनमें आनौं ॥ अमितहर्ष अथवा अति शोगा ।अथवा अतिवियोग संयोगा३७दोउअवस्था एकैभांती। मृत्युदशा सबरस विलगाती ॥ इहिविधि भेद कविन मनजानी । व्यभिचारी सें ताको आनी ३८ व्यभिचारी भाषतहैं तेही । रसके दृढ़होने पहिलेही ॥ अथवा पीछे प्रकटितहोई । जातीरहै प्रगटिकै सोई ३९ ताके तेंतिसभेद बखाने । सबरसमें व्यापक नहिं जाने ॥ प्रथम भेद निर्वेद कहावै । प्यारेको वियोग मनआवै ४० प्रीति दूसरेके सँगदेखै । कछु विपरीत मनै निजलेखै ॥ दूसरि ग्लानि देहबलजावै । अपर उमंग नाशको पावै ४१ तीसरि शंका प्यारेहेता । मिलन विघ्न संदेहजुहोता ॥ चौथी श्रममारग चलिआवै । वासंभोग अन्त थकिजावै ४२ दो० । पञ्चमधृति संतुष्टता मनकीहोवै जोइ । छठईं जड़ता दुःखयह वियोगादि जबहोइ ४३ सप्तमहर्ष सुदेखकर प्यारेको जोहोइ । अथवा वार्त्तालापमें हरषितहोवै सोइ ४४ अष्टमकहिये दीनता बेचैनी मनजोइ । प्यारेके वीयोगको सहिनसकै मन सोइ४५चौ०।नवम उग्रता यहिविधि होई।भई अवज्ञा प्यारेसोई॥ तासों क्रोधहोइकै आवै । दशईं चिन्ता भेदकहावै ४६ प्यारेकें मिलनेहित जोई । करैशोच चिन्ताहै सोई ॥ ईर्षा कहत गेरहीं रीती । प्यारेमें दूजेकीप्रीती ४७ साझापना देखिकै जोई । सहि न सकै ईर्षाहै सोई ॥ त्रास बारहोंभेद कहावै । आइ अचानक भयजोजावै ४८ भेदतेरहों अमरपसोई । प्यारेकरी अवज्ञाजोई॥ सोदुखसहे सहोनहिं जावै । भेद चौदहों गर्वकहावै ४९ प्यारे निकट प्रेम इमिठानै । आपुसमान न दूसरजानै ॥ भेदस्मृति पन्द्रहवों जानिय । प्यारेगुण सुमिरण मनआनिय ५० मरण भेद सोरहवों धरिये । मरण उपाय करिय वा मरिये ॥ सत्रहवों मदभेद बखानो । कार्याकार्य विवेक नआनो ५१ निद्रा अष्टा-

दशो विशेखै । स्वप्नसमान सकलजग देखै ॥ बोनैशवों सुधि असकहिये । सदा जगतसों सोवत रहिये ५२ पुनि अव बोध बीसवों सोई । बेसुधिभये बहुरि सुधिहोई ॥ एकैसवों भेदहै ब्रीड़ा । उपजै प्यारे सँगकरि क्रीड़ा ५३ अपस्मार बाइसवों भनिये । दुखआशा मनको दुखगनिये ॥ मोहनाम तेइसवों जानिय । मनके डगमग दुखभय आनिय ५४ चौबीसवों भेदमाति सोई । पथ सिद्धान्त आदिहै जोई ॥ करिविचार निश्चय उर आनिय । पच्चीसवों सुआलस मानिय ५५ छब्बीसम आवेश कहावै । मनरुचि वा अनरुचि उपजावै ॥ होइअचानक परगट जोई । तासों मनको डगमगहोई ५६ सत्ताइसवों वितर्कजाना । सहसन्देह बहुतविधि ध्याना ॥ अवहित्था अट्ठाइस होई । हर्ष शोकके कारणजोई ५७ अपनेजाने काहाछिपावै । उनतीसवों व्याधि कहवावै ॥ प्यारेके वियोगकोपाई । होइ शरीरदुखी बहु धाई ५८ पुनिउन्माद तीसवों लेखत । जड़चैतन्य बराबर देखत ॥ प्यारेमाहँ प्रीति इमिलाई । मतवारेसम रहत सदाई ५९ इकतीसवों विपाद बखाना । निजमनको विरुद्ध विधिनाना ॥ दूरिकरन करतासु उपाई । कोउभांति नहिंपरै लखाई ६० बत्तीसवों सुऔत्सुक लहिये । प्यारेमिलन विलम्ब न सहिये ॥ तेंतीसवों चपलता सोई । मित्रशत्रुके कारण जोई ६१ मनअस्थिर उरमें नहिं धरना । इमिचारो सामग्री वरना ॥ इनरसमें एकौ जिनपाये । तिन जगके दुखदूरि बहाये ६२ दो० । निज सजाति वीजातिसे जो रसदूरनहोइ । रहत बराबर निजदशा स्थायीभावजु सोइ ६३ चौ० । जो रससे रसको मिटजाना । ताहि सजाती करतबखाना ॥ जिमि शिशुहँसी खेलबहु करहीं ॥ प्रगटत हास्यरसहि मुदभरहीं ६४ ताहिसमय बड़ो कोआयो । क्रोधित रौद्र रसहि प्रगटायो ॥ हँसी निवृत्त करत सो भयऊ । बालकभाजि भवन निजगयऊ ६५ बहुरि विजाती कहियेताही । बालकमगन हास्यरसमाही ॥ रोटी खानचलै सबगयऊ । रमसों

रस निबृत्त नहिं भयऊ ६६ दो० । अभिप्राय ताको इहै कोई विघ्नजुहोइ ॥ हरिस्वरूपके ध्यानते चित्तनटारै सोइ ६७ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते रसवर्णन भक्ताम्बुनिधौद्वितीयस्तरंगः २ ॥

दो० । श्रीरघुवरके पदकमल अंकुशरेखा नौमि । प्रथमधर्म निष्ठाकहौं जासुकथा अतिसौमि १ चौ० । धारो राममीन अवतारा ॥ तासु दण्डवतकरौं अपारा । जिन जगकी शिक्षाहित गायो ॥ नृप श्रुतदेवहि धर्म सिखायो २ निजमाया दिखराइ घनेरी । पुनि रक्षाकीन्ही नृपकेरी ॥ वेदसूत्रके जो अनुकूला । शुभआचरण धर्म सुखमूला ३ निन्दित वेदाज्ञा जोकर्मा । तिनहिं त्यागकरिबो अतिधर्मा ॥ वेदाज्ञा विरुद्ध जेकरहीं । तेनर जाइ नरकमेंपरहीं ४ कठिन यातना तहँवाँपावैं । लखचौरासि योनि पुनिआवैं ॥ कठिन जन्मकर दण्डमहाना । सो कछुकरत न बनत बखाना ५ छूटननरकसुअवधि बखाना । जन्ममरणकी नाहिं प्रमाना ॥ आवागमन चक्रकी भांती । तामें मनुजदेह मिलिजाती ६ यहसंसार महोदधिगावा । तामहँ नरशरीर दृढ़ नावा ॥ सोलहि नरउपायकरजोई । जगकेपार अवशिसोहोई ७ नाहितबहुरि दुःखकोपावै । पुनिचौरासी लखमेंजावै ॥ कर्मशास्त्रकी आज्ञामाहीं । युक्तरहब सीढ़ीसमताहीं ८ बिनापरिश्रम शीघ्रहि सोई । उत्तम पदमें प्रापतिहोई ॥ जेनिराश इहिमारगतेरे । तेनिराश उद्धारहुकेरे ९ जासुप्रीति नहिं कर्मनमाहीं । तेकदापि पद सिद्धनजाहीं ॥ देखियकरि विचार मनमाहीं । तजतआप हरिकर्मननाहीं १० लेतकर्म श्रुतिहित अवतारा । नरबिनकर्म चहतउद्धारा ॥ श्रीगीताजीमें हरिगावैं । हमआपै कर्मनमन लावैं ११ जोहम कर्मनको नाहिंकरईं । दूजेलोग सकल परिहरईं ॥ श्रीरघुवर रावण वधकीन्हो । ब्राह्मणजानि पाप शिरलीन्हो १२ अश्वमेधमख ताहितकीन्हे । कर्मशास्त्र मर्य्यादालीन्हे ॥ ताबिन मानुष किमिसुखपावै । आवागमन शोक किमिजावै १३

जो कोई यह शंकाधारै। कर्म आपुजड़ सो किमितारै॥ ताको उत्तर इहिविधि जानौ। जिहिप्रकार नौकाजड़मानौ॥ जब हिंदास सहारापावै। सहसनकाहँ पारलैजावै॥ पुनि जिहिवि-धि सीढ़ीजड़ अहई। ताबिनकौन अटारीलहई १५ इमिभवनि-धिमहँ कर्मउवारैं। करिसहाय सो पारउतारैं॥ जोमनमें शंकाय हलावै। कर्मभोगहित पुनि वपुपावै १६ आवागमन जाइगो कैसे। जन्ममरण होवैगो ऐसे॥ ताको उत्तर यहिविधिजानो। द्वैविधिके शुभकर्म बखानो १७ एकसकाम कामनाहेता। सो तौ आवागमन निकेता,॥ जबफल कर्म बीतिकै जावै। स्वर्ग भोग करि पृथ्वी आवै १८ दुतियकर्म निष्काम कहावै। सो उद्धारहेत श्रुतिगावै॥ कर्म सोइ निष्काम कहीजै। अर्पण करिभगवत हितदीजै १९ हैं भगवत अच्युत अविनाशी। अपरअनन्त सकल घटवासी॥ तिनको जोफल अर्पण कीजै। सो अनन्त अच्युत गनिलीजै २० ताहीसों प्रसन्न हरिहोवैं। ताकेहृदय प्रीति निजदेवैं॥ जौनभांति कोई कंगाला। कछुक वस्तुलै देतनृपाला २१ तासु वस्तुके मोल समाना। देतनृपति नहिं ताकोदाना॥ तिहिमर्य्याद विचार न भेवै। अपनी ओर दरिवधन देवै २२ यहहै प्राकृत नृपन सुभाऊ। नृपन शिरोमणि कोशलराऊ॥ तिनकेकर्म सहायक होवैं। भगवतमाहँ प्रीतिक रिदेवैं २३ दिनप्रति भगवत प्रीति बढ़ावत। उरनिर्मल करिभक्ति दृढ़ावत॥ सोईभक्ति कृपाकोपाई। भगवतपदको पहुंचतजाई॥ २४ बहुरिजन्म ताको नहिंहोई। कर्मशास्त्र हरिआयसु सोई॥ यहतौरीति अहै सबकालै। सेवक प्रभुकी आज्ञापालै २५ जो हरिआज्ञा पालनकरई। आवागमन तासु हरिहरई॥ जोनिष्का मकर्म करिलेखो। ताकोचमत्कार यहदेखो २६ संसारी कामना जहांलों। भगवत पूरण करततहांलों॥ जनप्रहलाद कामनाही ना। तिनको राजतिलक हरिकीना २७ अर्जुन अपर युधिष्ठिर राजा। तिनके पूरतभे सबकाजा॥ ध्रुवआदिक बहुभक्त महा

ना। बिनइच्छा भोगे सुखनाना २८ अबसन्देह प्रगट यहकीना। भेशुभकर्म जाइ हरिलीना ॥ अशुभ कर्मनरसो होजावै। सोकि हिभांति नाशकोपावै २९ ताकोउत्तर इहिविधिजानौ। द्वैप्रका रके कर्मनमानौ ॥ एकज्ञात दोसर अज्ञाता। इहिविधि दूरहोत अज्ञाता ३० नित्यप्रति संध्या जोकीजै। श्राद्धरुविश्वदेव बलि दीजै ॥ अभ्यागत पूजन सुखदाई। अशुभकर्म इमिजात पला ई ३१ ज्ञातकर्म अबकहत बखाने। ताकोहाल इविधिते जाने ॥ जाकीमति शुभकर्मनमाहीं। तासोंहोत महा अघनाहीं ३२ दैव योग कोऊ अघहोवै। मार्जन तिहिभगवंत करिदेवै ॥ शुभकर्म नकर स्वामीआपा। ताते नाशकरत सबपापा ३३ ताकोहैइहि विधि ब्यौहारा। जिमिकोऊहै ठेकेदारा ॥ तासोंकछु हानिहै जा वै। ताकोदेन तासु शिरआवै ३४ घरकेदासी सुतसोहानी। तासुदेन स्वामीपरजानी ॥ ठेकेदार समान सकामा। दासीसुत समान निष्कामा ३५ वेदाज्ञा निष्काम जुकर्मा। यह सिद्धांत उचितहै धर्मा ॥ ज्ञानी और भक्तभेजेई। है ह्वैहैं कर्मन करितेई ३६ गीतामें इहिभांति बखाना। कर्मभाव जनकादिक जाना ॥ थिरतासिद्धिभई मनमाहीं। विनाकर्म छूटत कोनाहीं ३७ इहि विधिकर्म हृदय धरिलीजे। प्रातहिउठि अस्नान करीजे ॥ करै प्रणामगुरू पितुमाता। सत्यअपर मीठीकह बाता ३८ संग विवे की जनकोराखै। विद्यापढ़ै बुरानहिं भाषै ॥ लोनखवावै पालन करई। सेवातिहि निश्छलमन धरई ३९ कबहुं मित्रसे कपट न आनै। वेदपढ़ावै तिहिगुरु मानै ॥ जोभगवतकी ओर लगावै। ताकोगुरूमानि सुखपावै ४० भगवत भजन आदि बहुकरई। मिथ्यावच चोरी परिहरई ॥ गमन परस्त्रीहिंसा छोड़ै। जुवाखेल मदिराको ओड़ै ४१ संगअसाधुजनन नहिं कीजे। मिथ्याउत पातहु तजिदीजै ॥ कपट मिताईको नहिंराखै। तजिमूढ़ता चतु रताभाषै ४२ पानीबरषत नदीनहाते। मारग चलत बारबनवा- ते ॥ इस्त्रीओर चित्तनहिं धरई। बासीजूठ अशन नहिं करई ४३

तीक्ष्णखट्टा क्षारनखाइय । कोमलमिष्ट स्निग्धसुपाइय ॥ नि
शीथनीनहिं नगपरत्राले । इमिसहसन आयसु प्रतिपाले ४४
इनादिनलोग कहत इहिभांती । कठिनकर्म कासों करिजाती ॥
कठिनकर्म नहिंवेद उचारे । जवकोऊ हियमांझ विचारे ४५ तब
तो कठिनसहज लखिपरई । नाहित नाहक वकिवाकिमरई ॥ ज
हांवेदअति कठिन वखाना । सहजहुतहां कर्मकियगाना ४६
दीपकतेल हाथ लगिजावै । तहांलिखा वहुमृतिका लावै ॥ तह
ईवहुरियहौ लिखिदयऊ । धरतीरगाड़ि हाथ शुचिभयऊ ४७ को
ऊपाहिं पापकौ भयऊ । चान्द्रायणव्रत तहँ लिखिदयऊ ॥ वहु
रिलिखा जो यहनहिं होवे । कृच्छायन करिके शुचिहोवे ४८
यहौनहोइ तीनिदिन करई । यहौनएक दिवस व्रतधरई ॥ इहि
विधिशास्त्र सहजकरि कह्यऊ । ससुझवकरव कठिनहै रह्यऊ ४६
जेनहिंवेद वचन मनआने । तेनास्तिक अरु म्लेच्छवखाने ॥ वे-
दशास्त्रजे मिथ्या मानत । स्वर्गनर्क झूठेकरि जानत ५० तिन
कीदुर्गति होइ अपारा । नानाभांति लहैं दुखभारा ॥ यहसब वा
त वेदालिखिराखे । नहिंकरिकृत्य अपनि कछुभापे ५१ तिनकी
कथाकहौं अवभापे । जेइसनिष्ठामें अभिलापे ॥ तिनकी चरण
रेणु शिरलावौं । नामधाम संक्षेपहि गावौं ५२ सातभक्त या नि-
ष्ठामाहीं । हरिश्चन्द्र प्रथमे तामाहीं ॥ हरिश्चन्द्र रविवंशी रा-
जाराजअयोध्या मांझविराजा ५३ वलप्रतापअरु तेजनिधाना ।
शास्त्रपुराणन मांझ प्रमाना ॥ वहुविधि यज्ञ नृपति तहँकीन्हा ।
अमितदान विप्रनकहँ दीन्हा ५४ दो० । यज्ञदक्षिणाके विषे
गाधिसुतहि तिहिकाल ॥ राज्यादिक सववस्तुलै देतभये नर
पाल ५५ चौ० । तीनभार सुवरणकेहेता । विकनगये तिय कु-
वँरसमेता ॥ किसी नगरते पहुंचतभयऊ । सोऊ राज्य नृपहि
कररह्यऊ ५६ तहाँ वशिष्ठ शत्रुताहेता । अथवा धर्मपरीक्षालेता ॥
विश्वामित्र वचन इमिकहई । यहौ नगर तवराज्यम अहई ५७
तववशिष्ठ राजाहिदिय सैना । काशी राज्यमाहिं तवहैना ॥ तहां

जाहु सुनिकै नृपआये। काशीपुरीदेखि सुखपाये ५८ तहँ चां॰
डालहाथ बिकिगयऊ। जाहु मृतकघटियासो कह्यऊ॥ जोकौ
आइ मृतकलै धरई। करहरिलेउ दाह तबकरई ५९ तियसुत
इक ब्राह्मणघरजाई। विकलभये अति आनँदपाई॥ विश्वामित्र
सांप बपुकयऊ। रोहितासकहँ काटतभयऊ ६० रानी रोदनक
रत अपारा। मृतक जलावनको तिहिबारा॥ पहुंचतभई घाटपर
जाई। करनिमित्त नृप रोंको आई ६१ रानी बहुविधि कहत
पुकारी। करुणावचन सुनावतभारी॥ धर्ममाहँ दृढ़नृपति विशे-
षी। धर्मनतजो दशा यहदेखी ६२ रानीकेढिग कछू न दामा।
जो करदेइ करै यहकामा॥ तबतक निशाआइ नियरानी। बैठी
रही गंगतटरानी। ६३ विश्वामित्र तहां चलिगयऊ॥काशीराजपुत्र
बधकयऊ॥लैरानीकेढिग धरिदीन्हा। प्रातहिजाइप्रगट यहकीन्हा
६४ काशी नृपसों इहिबिधि कहई। गंगाकूल तीय यकरहई॥ सो
तौ खात शिशुनकी देहा। ताबिन करै कर्मको एहा ६५ सुनत
लोग ढूँढ़नकहँ धाये। तियके पास मृतक शिशु पाये॥ काशी
राज देखि शिशुदेहा। चाण्डालहि दिय आयसु एहा ६६ या
तियकेर करौबध जाई। सो हरिचन्द्रहि कहोपठाई॥ सुनिराजा
अति आनँद पाये। खड्ग खैंचि रानीढिग आये ६७ जबहिं
चलावन चहो नृपाला। अवनी कांपिउठी तिहिकाला॥ हाय
हाय इमि नभमहँ भयऊ। हरि हर अज सुर नृपकर गह्यऊ ६८
हर्षवंत हरि वचन सुनावैं। मांगुमांगु वर जो नृप भावै॥ राजा
कहो भक्ति प्रभु दीजै। अपर कछू इच्छा नहिं कीजै ६९ सुनि
हरि भक्ति देइ सुख पायो। रोहितासकहँ बहुरि जियायो॥ पुनि
जियाय काशीनृप बालक। हरिश्चन्द्रसन कह जनपालक ७०
राज्य अयोध्याको नृपकीजै। वचन हमार मानिकैलीजै॥ यह
कहिकै निजलोक सिधाये। राजा बहुरि अवधपुर आये ७१ ब-
यसमस्त नययुत किय राजू। भक्तियुक्तकीन्हे सबकाजू॥ भक्ति
रीति महँ भजन लगाये। हरिचरित्र निशिवासरगाये ७२ अंत-

म. रोहितास बुलवाई। दीनराज्य बहुविधि समुझाई॥ करिहरि ध्यान देह तजि दयऊ। जग यशकरि दुर्लभपद लयऊ ७३ दोहा। इविधि कथा हरिचन्दकी कियसंक्षेपहिगान। अबराजा बलिकी कथा सुन्दर करत बखान ७४ चौपाई। भये विरोचनके बलि पुत्रा। महाभक्त प्रह्लाद सुपौत्रा॥ परमभक्त भगवतको भयऊ। मांगन भीख आपु हरि गयऊ ७५ राजि त्रिलोक देत सो भयऊ। पीठिनपाइं बहुरिकै दयऊ॥ वामनरूप आपु प्रभु धारे। अजहूं खड़रहत बलिद्वार ७६ तिनकी कथा विदित जग जाना। ताते मैं संक्षेप बखाना॥ यहां ध्यानकरके यह देखो। हरि निजभक्त कियो छल पेखो ७७ ताते निजतनको दुख दयऊ। द्वारपालकर बाना कयऊ॥ और कोउ जो भक्त सतावै। सो किहिभांति दण्ड नहिं पावै ७८ नृपति दधीचि केरि अब गाथा। बरणों नाइ रामपद माथा॥ नृप हरिभजन करत अहनक्ता। परउपकारी ज्ञानी भक्ता ७९ जिन निजअस्थि देवतन दयऊ। इन्द्र बनाइ कठिन पवि लयऊ॥ तासों वृत्रासुरको मारा। कठिन दुःख दीरघ निज टारा ८० सिद्धअवस्था प्रापतजेऊ। कर्मशास्त्र छांड़ो नहिं तेऊ॥ ताते कर्म कबहुं नहिं तजई। करि करि कर्म राम नित भजई ८१ अब दशरथकी कथा सुहाई। बरणों रामचरण शिर नाई॥ परम भागवत धर्म प्रवीना। धर्म कर्म निष्ठा मन लीना ८२ इनकी भाग्य बड़ाई जोई। ताको वर्णिसकै नहिं कोई॥ निर्गुण निराकार भगवाना। अज अव्यय मुनि पाव न ध्याना ८३ अलखनिरंजन मन गोतीता। अखिल विश्वकारण शुभ गीता॥ निर्विकार निश्चल जगपारा। अनघ त्रिगुणपर अगम अपारा ८४ संत सुखद असुरन संहारन। सुर द्विज धेनु भूमि भय टारन॥ ऐसेप्रभु करुणासुख सारा। दशरथ गृह लीन्हो अवतारा ८५ बालचरित आदिक बहु कीन्हे। दशरथ नृपकहँ आनँद दीन्हे॥ प्रथमजन्म स्वायंभू भूपा। अरु उनकी रानी शतरूपा ८६ करितप भगवतसे वर

मांगा। तुमसम पुत्र मिलै बड़भागा ॥ जीवन मोर दरश तव
देखी। नृप रानी इमि कहो विशेषी ८७ सोई दशरथको तन
धारा। तिमि श्रीराम लीन अवतारा ॥ नानाविधि के चरित
सुहाये। बालमीकि रामायण गाये ८८ अत्युत्तम सौकोटि श्लो
का। सुनत चरित जन होत विशोका ॥ श्रीरघुपतिके चरित
सुहाये। भानु भानु सम तिहुपुर छाये ८९ कैकेइहि नरपति व
दयऊ। तासों राम गवन बन कयऊ ॥ चौदह वर्ष वास बन
करिकै। रावणादि मारो मुद भरिकै ९० पुनि संसार जलधि
गंभीरा। बाँध्यो सुयश सेतु रघुबीरा ॥ महाराज दशरथ मति
धीरा। बिछुरत रघुपति तजे शरीरा ९१ दोहा। रामचरण मन
ध्यानकरि रामनाम उरधारि। अब प्रबन्ध भीषम सुभग कहैं
सुजन सुखकारि ९२ चौपाई। भीषम भगवत भक्त सुहाये।
महाभक्त बारहमें गाये ॥ निष्ठा कर्ममाहँ इमि भाषा। भक्ति
किये कर्म अभिलाषा ९३ यद्यपि ज्ञानहु भक्तिहु पाये। तब
कर्मशास्त्र मनलाये ॥ भीषम श्राद्धकरत इकबारा। प्रगटो पित
हाथ सुखसारा ९४ पिण्ड न पिताहाथ में दीन्हा। वेदीपर धरि
कै सुख कीन्हा ॥ अदन कियो दुर्योधन केरा। सोई समुझि स
मरकी बेरा ९५ और युधिष्ठिरकी नहिं गयऊ। कुनप समर म
ण्डल तजिदयऊ ॥ गंगाउदर लियोअवतारा। जबगंगा प्रविशी
निजधारा ९६ शंतनु व्याकुल भये विशेषा। योजनगंधा इक
दिन देखा ॥ राजाके लाये नहिं आई। भीषम वचन दियो त
जाई ९७ हम या देह राज्य नहिं करिहैं। पुत्र तुम्हार राज्यसुर
भरिहैं ॥ इमि गृहलाइ पितहि सुखदीन्हा। तासों निजबिवा
नहिं कीन्हा ९८ काशिराज की कन्या जोई। अम्बा नाम वि
दितहै सोई ॥ तासों जब बिवाह नहिं कयऊ। ताते भृगुपतिसं
रणभयऊ ९९ पुनि भीषम इहिभांति दयाला। दीन्हो निज ब
ताइकै काला ॥ जब निशिमाहँ युधिष्ठिरराई। रोदनकिय भीषम
ढिगजाई १०० तिहि दूजेदिन सुरपतिढोटा। वेधेवाण शिखण्डी

चोटा ॥ ताजि स्यन्दन शरशय्यासोये। सो विलोकि कौरवगण रोये १०१ भीषमको प्रणराखि महाना। आपन प्रणत्यागो भगवाना ॥ रहै स्वतन्त्र मृत्यु जिनकेरी । पितु आशिषदिय कृपा घनेरी १०२ बावनदिन शरशय्यामाहीं । रहे भजत भगवत कहँ ताहीं ॥ बहुरि कृष्णमुख दृष्टि लगावत। गये तहां जहँ सो नहिं आवत १०३ ॥

अथ सुरथसुधन्वाकी कथा ॥

दोहा। सुरथसुधन्वा केरिअब वरणौं उत्तमगाथ। येद्वौहंसध्वजसुवन रहेभक्तरघुनाथ १०४ छन्द चंचला। वासचंपकापुरी सुहंसकेत भूपजान । नारिके समानपाल शोभहू अमानमान॥ अश्वमेध धर्मराज यज्ञअश्व आवतत्र । कुंतिसूनु सव्यशाचि वीरयुक्त रक्षयत्र १०५ दूतवक्रहंसकेत जानिके अनन्दचित्त। पूँछियो बुलाइमंत्रि बन्धुपुत्र आदिमित्त। पार्थको तुरंगाक्षिप्र धारिहौं सजोरआज। होइगो महानलाभ यत्रकृष्णहैं विराज १०६ विष्णुभक्त जिष्णुतत्र आइहें अवश्यश्याम। भुक्तिदानि मुक्तिदानि कोटिकाम शोभधाम॥ होतयारपत्रअत्र युद्ध अर्थ हौं तयार। भाषिहंस केतभूप जातभौनकी अवार १०७ दोहा। सप्तिनायक संगलै भेसन्मुख रणखेत। नायक प्रतिदलहोतसो रक्षत यत्नसमेत १०८ सहसएक सप्ततिकरी स्यन्दन सोइप्रमान। एकलक्ष अश्वस्थपुनि रणाहित कियो पयान १०९ सहसयून त्रय नवतिनव पदचर संख्यायत्र । दानपरायण भक्तहरि एक नारि व्रतितत्र ११० नायक रक्षत सैन्यपुनि नृपभ्रातर बलवान। नाम विदूरथ मेघबल धर्मबाहु मतिमान १११ चन्द्रसेन अरु चन्द्रध्वज चन्द्रदेव अतिवीर । न्यायवर्त्ति रक्षत कटक नृप भ्रातारणधीर ११२ पुत्रपंच पुनि नृपतिके सुबल सुदर्शननाम। सुरथ सुधन्वा समसहित महाबली रणधाम ११३ याविधि भूपति व्यूहरचि पारथदलकीओर। भये उपस्थित पुनिभयो दुन्दुभि

को अतिशोर ११४ गजारूढ़ भूपतिचले पीछे कटक अपार।
विप्रन अशन कराइकै भेवाहन असवार ११५ सिंहनादकरि
भटचले शोभित चामरछत्र। तासुप्रिया कौतुकलखन चढ़ीं अ-
टारिनतत्र ११६ दुन्दुभिकोरव श्रवणकरि चले क्षत्रिसबहाल।
पूरित तैल कटाहशिखि ज्वलितकराव नृपाल ११७ जो नहिं
रणहित जाइगो ममआयसुको पाइ । भ्राता नाती पुत्रहू देहुँ
कटाहडराइ ११८ आज्ञाभंग नरेन्द्रकी विप्रनको अपमान। श
य्या नारीकी पृथक सो अशस्त्र बधजान ११९ दियो पुरोहित
शंखको यहआज्ञा महिपाल। प्रथम सुधन्वा पुत्रजो सुनतभयो
यहहाल १२० चलतभयो भूपति निकट मातहि शीशनवाइ।
पार्थसमरहित जातहौं कहे वचन समुझाइ १२१ लावहुँ हरि
रणजीतिकै पाण्डवरक्षित जौन । याविधिसुनि अंगजवचन
कहे मातुगुण भौन १२२ चतुष्पाद हरि त्यागिकै लाइय मुक्ति
दकाहँ । बहुतबार नारदकहो आइनिकट नरनाह १२३ मम
भर्त्ता जीतेअमित वीररणांगणपाइ । निजनयनन कीन्हो च
हत अब दर्शन यदुराइ १२४ निशिदिन जिनको जपतनित
लखियति नहिं सुखपाइ। जातेहोइ प्रसन्नहरि सुतसो करिय उ
पाइ १२५ दूरदूर हरिरहतहैं वशाता आवनसोइ। तब हरिदर्शन
पावनर महद्भाग्य जबहोइ १२६ पारथको गहिये सुवन वशहोवैं
हरिआइ। क्षणक नहीं त्यागत सुनो निजभक्तहि यदुराइ १२७
यथा वत्सवन त्यागिकै धेनुभुवन नाहिंजात। कष्टपरे तिमिनहिं
तजत निजभक्तहि नँदतात १२८ युद्धसमय हरिसोंहँसुत भय
न कीजियोतत्र। सम्बन्धी अरु लोकसब मोहिं हँसैंगे अत्र १२९
ऐसोपुत्र न कीजियो कहैं सकलमोपाहँ । तवसुत कृष्णविलो-
किकै तजिआयो रणकाहँ १३० अद्यहर्ष तव पतनमें मेरेउर सुत
होइ। यद्यपि यह अनुचित वचन कहतलोक नहिं कोइ १३१
पतित कहावत तौन नहिं हरिसन्मुख पतजौन। एकविंश उद्धा
रई निजसमेत सुततौन १३२ तेनारी रोदनकरहिं जासुपौत्र

सुत अत्र। हरि सन्मुख जावैं नहीं कहो सुधन्वा तत्र १३३ भाषित तव करिहौं सकल सुनिये माता वैन। पौरुष करिहौं अमित मैं जय अधीन मम हैन १३४ जन्म तवोदरके विषे विमुख होउँ हरि देखि। जग में यशको त्यागिकै लहौं न सुगति विशेखि १३५ चौपाई। यह कहि चलनचहे जिहि काला। कुवला भगिनि आव तहँ हाला॥ लाजा सुमन गंधहू लैकै। नीराजनकिय आनँद कैकै १३६ माला कंठ बहुरि पहिराई। या विधि कहे वचन सुख पाई॥ लखिजात धनंजय पाहीं। सावधान करियौ रणकाहीं १३७ मोकहँ हँसत सकल ससुरारी। ज्येष्ठादिक इमि कहत उचारी॥ कुवले जनक मूर्ख तव भारी। कहत कि हम जीतहिं कंसारी १३८ सुनत सुधन्वा कहो बखानी। कुवले होइ सत्य पितु वानी॥ यह कहि नमस्कार पुनि कयऊ। कच्या वाह्य जात पुनि भयऊ १३९ प्रभावतीहि देखतिहिवारा। सुन्दर नयन अंग सुकुमारा॥ चन्द्रक चन्दन चम्पक धारे। दीपक कांचनपात्र सँवारे १४० दोहा। सां भोज दूर्वाचतहु अपर कपूर समेत। दीपपंच शिखधारि नव धवाहित खड़ी सहेत १४१ छन्द मनहरण। नूपुरसुमेखलाहु वलयाविराजमान कुसुमी वसन शुभ्र कंचुकीहिधारिसो। मोतीमाल कंठ मुखरागहै अरुणजासु पतिहि समर्च वक्र दृष्टिसों निहारिसो॥ इविधि नीराजि निजपति सों कहनलागी हरिहिलखन कितजात तजि नारिसो। जात नाथ पारथ प्रबलके समर हित हृदय विवेक सुत मम सुखकारिसो १४२ दोहा। मूर्तिमान वह लखि परै मम प्रिय कीजिय सोइ। तुमहिं गये नहिं लखिपरै जलदाता इत कोइ १४३ पारथ हरिको जीतिकै कहोसुधन्वा वैन। पंचवाणसों आइहौं तव समीप छविऐन १४४ कहो प्रभावति सुनियपति जे गे सोंह मुरारि। ते संसार न आवहीं लहत मुक्ति सुखकारि १४५ कहत सुधन्वा वैन सुनि जो जानत यह सांच। हरिदर्शनसों मुक्तिहै जलदाता किमि यांच १४६ सुत संयुत

हरिपद लहत कहे प्रभावति वैन । शुक नारद सुत प्रगटकरि लह
परपद सुख ऐन १४७ लखत सुतानन जे नहीं ऋणी कहावत
सोइ । सफल पराशा जातकरि सकल काज तिहि होइ १४८
विफलपराशा जात करि जे तिन सिद्ध न काज।चिंतित कबहूं
जानिये सुनिय बचन सुख साज १४९ या विधि सुनि रमणी
वचन कहो सुधन्वा बैन । तीव्राज्ञा महिपालकी जानो नहिं गुण
ऐन १५०भयद दुन्दुभी बजतहै पूरित तैलकटाह।रणमण्डल जो
जाइ नहिं भस्मकरै नरनाह१५१सुतदायक ऋतुदानजो निशि
में सोइबखान । दिनमें मैथुनकर्म जो साधुनकरत प्रमान १५२
पुरबाहर सबबीरगे ममपितु आयसुपाइ। अर्जुनसों रणहेतसुनि-
कहो नारि सुखपाइ १५३ छन्दबरवा । मैसराग बिनजीते चा
हतजान । एक अनंगाबृतहौं लीजियमान ॥ अमित अंगयुत
सेना जीतिकिजाइ । कृष्णसौंहँ अंतकसम भटबलदाइ १५४
कौनहोइ गतिमेरी तुमबिनसाथ।पोड़शयों दिनआयो जानि-
यनाथ ॥ ऋतुभंगति जो पातक जानहुनाह । तीनिहोइँ इक
ठौरी कीजियकाह १५५ ऋतुपूरित दिनहोवै श्राद्धसमेत । ए
कादशिव्रत तादिन पुण्यनिकेत ॥ कहो सुधन्वा सुनिये सुमु
खीवैन । ऋषिन धर्मसंकटमें कह गुणऐन १५६ अन्नसूंघि नि
शिलीजै श्राद्धपिताकि । एकादशि व्रतकीजै पातकचाकि ॥
अर्द्धरात्रिपर दीजै ऋतुकोदान । गृहीधर्म यहलीजै सुमुखी
मान १५७ सुनत सुधन्वावाणी युवतीकाह । विद्यमान पितु
सबर रणनरनाह ॥ तातेदै ऋतुदानहि रणको जाहु । यहकहि
कंठमडारे दोनोंबाहु १५८ कोमलकरके लागत जगो अनंग ।
सकोजाइ नहिं भूपज हितरणरंग ॥ कवचकाढ़ि धरिदीन्हो
औटउतारि । दिवारमणसो कीन्हो तिय सुखकारि १५९ सु
ष्णातभइ सोई गर्भहिधार । रणहित चलन सुधन्वा चह तिहि
वार ॥ जबलगि रथचाढ़िआवै भवन विहाइ । हंसकेतु इतबोले
बलपच्छुलाइ १६० दुन्दुभिरव सुनिआये सकलजुझार । देखि

सुधन्वा परतन जंगमँझार ॥ ममआज्ञा नहिं जानत भूलकटाह।
लंघित शासन नागत कारणकाह १६१ गजप्रति गजहरि
हरिप्रति कीन्हो गौन । पीछे कर्म सुधन्वा करतसुकौन ॥ जा
हिं यवन बलभारी मुद्गरधारि । केशपकरि तिहिलावैं पुहुमी
पारि १६२ भगवत विमुखहिं लावैं तीरकटाह। चले यवनलहि
आयसु हुतनरनाह ॥ पहुँचे मन्दिररम्य सुधन्वा जाहँ । भुक्त
भोगलख आवत सुतभूनाह १६३ वज्रपात समभाषे आयसु
भूप। तुमहि ग्रहण हमआये सुभट अनूप ॥ किय किमर्थ भूप
तिकी आज्ञाभंग। रहे पृष्ठ सबकेरे ताजि रणरंग १६४ तव पितु
क्रोधित दीन्हो हमहिं पठाइ। खैंचत भूमेंलावहु मन्दहिजाइ ॥
अरिदल वारणजाइय भूपतिपाहँ । पद्मव्यूहरचि ठाढ़े जहँ नर
नाहँ १६५ कुपित वचन निजपितुके सुनिकै तत्र । सोरथस्थ
पहुँचतभे कटकसुयत्र ॥ तोयराशि समसेना योजनतीन । जहँ
अर्जुन जयकांक्षी भूपप्रवीन १६६ दो०। कुपित पितरलखि
नमस्करि अग्रहोतभे ठाढ़ । देखि सुधन्वाको नृपति कह्यो
क्रोध करि गाढ़ १६७ उल्लंघन शासनकियो क्यहिकारण
हेवीर। सुनत सुधन्वा पितुवचन कहे वचन धरिधीर १६८
जलद मांगियो तत्र वधू मोसो गृहमें तत्र। भई बेरतासों नृप
ति आयों शीघ्र न अत्र १६९ मूरखतर ध्रुवतू अहै सन्मुख
कृष्ण नदेख । या संगर साक्षातहरि वंचितकुलतु विशेख १७०
पुरसों निकसे दै जलद प्रिया आपनी काहि।तासोंपूर्वज पावहीं
पूरण तृप्तीनाहिं १७१ जलद त्वदीय मदीयसो हरिविन तृप्तिन
होइ। पूर्णपिपासा नरनकी पूरहिं वरुणनसोइ १७२ जो पुत्री
मुक्तीलहैं सुनहु सुताधमवैन। तौ श्वासू करहूलहैं हरिविनहरि
पदचैन १७३ पालनहयहित प्राप्तभे महाबली जगजिष्णु। तिन
कोक्षण छांड़त नहीं प्रगट बात रणाविष्णु १७४ धिग्विचार धिग्व
लधरम जो कीन्हों याचार। पुरआये हरिजानिकै मन मनोजमें
धार १७५ कृष्णपराङ्मुख तुअहै डारौंतप्त कटाह। महाबलीमम

कम्पतमही सहित सकत दलभार २४६ कह हंसध्वज भटनसौं गहियवाजि इहिकाल । गहिलावत हयसों भये शीघ्रायसुमहिपाल २४७ पूजित चर्चित अश्वलखि पद्मब्यूह माधिकीन्ह। पुत्र सहोदर सहित नृप अर्जुन रण चित दीन्ह २४८ सुरथ सुधन्वा सुमतिहू मंत्रीबुद्धि अगार। वीरकेतु अरुतीव्र रथ शतधन्वा भटभार २४६ अन्य नृपति बहु अग्रदल । अर्जुन सों रणहेत। चलत भये दुंदुभिबजे ढक्कढोलमुदसेत २५० मर्दल पटहनिशान हू वेणुतंत्रकीतत्र । शृंग मृदंग ववादिरे पणवानकहू यत्र २५१ छन्दरामगीतिका । भेरि गोमुखकाहलादिक बजे डिंडिमतत्र। तालमुरली जलजझर्झर वीरआगमयत्र ॥ क्रोशगिरि सागर फटे उर कादरन हरचाव । देखि अर्जुन कृष्णसुतसोइ विविध वचन सनाव २५२ अश्व भूपति धर्मकोलिय हंसकेत नरेश। कौनभट तिहि मोचिवे कहँ जाहिंगे बलवेश ॥ पुत्रयुत बलवान तुमहौ यौवनाश्वमहीप । सात्यकी अनुशाल्वहू कृतवर्महू कुल दीप २५३ वृषध्वज अनिरुद्धयोधा नीलकेत महान । अपरभट बहु अत्रराजत देशपर यहजान ॥ नाथतुमहौ सकल दलके अग्रहौं अवजात । भूलियो किमि कृष्णभाषित कहो हरिसुत वात २५४ सौंपियो पितु तुमहिं ममकरधर्मभूपति अग्र। अद्य में भुजबलहि देखहिं समरवीर समग्र ॥ हंसकेत नरेशमंत्री सुमति सुरथसमेत। सुधन्वाहु समेत तोषित करहुँगो रणखेत २५५ सुनत इमि प्रद्युम्नके वरवैन कर्णकुमारायुक्त कहत नदोउ तुमकर जोरि वचन उचार।दोउ प्रलयोत्पत्ति कारक अल्प दल यहकौन। प्रेरिये किमि वाडवानलतू लगत मुख पौन २५६ नेत्र यत्नम प्रहार नाशहि मशकयदिह वीर । तार्क्ष्य नाशन तासुके हितभेजिये किमिधीर ॥ स्वल्प सीकर वर्षसो रजशमित होवैयत्र। तासु नाशनहेत वरषहिं जाइ वरुण कि तत्र २५७ जाइलावहुं अश्व अ[illegible] मोकाहँ । हार्जिनहिं हरिदास यमभट [illegible] भो

समुहाइ। कीन्ह यद्यपि पार्थ वारण गयो शंख बजाइ २५८ गर्जत पताका शुभगरथमें सारथी सो काह। पद्मव्यूह लखात दारुणलै चलियरथताह ॥ कसाघात उड़ाइयो हयसारथी तिहि काल। लखत भो वृषकेतुको तिहि काल सुत महिपाल २५६ दो०। लीला करि आवत चलो पद्मव्यूह नहिं देख। वृषयाके ध्वजमध्यहै अर्जुन नहीं विशेख २६० छन्दराम गीतिका ॥ अपर कोउ अकेल आवत वीर सत्व समेत। धनंजय समतेज याको वधिहि नृपनसचेत ॥ हम सबनको निदरि आवत ताहि सो यह एक। जाहिं हम संग्राम याके लरहिं धारि विवेक २६१ सूतमम रथलै चलिय यह सुभट आवत जाहँ। सुनि सुधन्वा वैनसारथि लैगयो रथ ताहँ॥ दोउ तीव्र पराक्रमीभे युद्ध उद्यत तत्र। सुधन्वा वृषकेतु सो यह भये पूछत अत्र २६२ दो०। काके आतमज कौन तुम काह नामहै वीर। कश्यप सुतरवि सुत करण भये दानमें धीर २६३ तिनके अंगजहम अहैं नाम मोरवृषकेतु। हंसध्वज सुत हम अहैं कहो सुधन्वा हेतु २६४ छन्दरामगीतिका। मधुश्छन्दा ऋषि अहैं मम वंशकारकपूर्व। तिष्ठ संगर अग्रमेरेवल लखाव अपूर्व ॥ यथा सूरजध्वांत नाशक तथा अरिदलहोउ। स्वकुल वर्णत मन्द पौरुषहीन पूरुष सोउ २६५ कहत इमिवृषकेतु सुनिकै वल दिखावौंअद्य। करहिं ममशर तीक्ष्ण तवदलमहँ प्रवेश सुसद्य ॥ भाषिनृप सुतको छपायो वाण वरषा यत्र। भेदि गजरथ अश्वडारो गरजि हरि समतत्र २६६ जीवगत करि भूमिडारो कर्णको सुतवीर। शरसुधन्वा कटक वेधे चहूं दिशि सों धीर॥ वाण गुसलखात पत्रन परनिृप सुतभीर। सारथी ध्वजवेध शायक हरनि उर अतिपीर २६७॥ पांच वाण प्रहार हँसिकै भूप सुत उरतत्र। गार्घ्रपत्र प्रहार तीक्षण पतित भो दलयत्र॥ काटियो ध्वज छत्र चामर क्रोधयुत सुत कर्ण। खण्डियो शिरत्राहुसायुध खण्ड शर बहु वर्ण २६८ भिन्न निज दल लखि सुधन्वा चढ़त मोरथअन्य।

अमित पौरुष देखिशर झरिकीन्ह समपर्ज्जन्य ॥ तुरग सारथि केतु छत्रहु हनत भोतिहि बार। खण्डियो वृषकेतुको धनुपंच शायकमार २६६ जातभो भ्रममाण दलमेंबहुरि मुर्च्छा त्यागि। लखत भोदलमध्य आपुहि लखत तिहि रणलागि ॥ लियो गोतिहि देखि आगे बिरथ आपुहि देखि। त्याग खैंचिदृढ़ज्य बाणन हेमरचित विशेखि २७० छिन्नबाणन अंग पूरण मनहु छिन्न नहोइ। कियो हंसध्वज कटक तहँ हीन जीवित सोइ॥ कर्णसुत परसैन्य आबृत शक्तितोमरचण्ड। भिन्दिपाल भुशुण्डि मुद्गर परिघपाट्टिश दण्ड२७१ अयोमुख नाराचहू करपत्र शूल समेत। अर्द्धमान स्वदेहपर दल सुमिरबीपतिकेत॥ महाध्वजयुत अन्तरथ लैगयो सारथितत्र। चढ़त भे वृषकेतु तापर करी शरझरियत्र२७२ तीक्ष्ण शायक अंगनृप सुत मारि यो तिहि काल। सैन्य पीड़ित कीन्ह बहुविधि बाण झरिकरिहाल ॥ तब सुधन्वा क्रोधसंयुत पंचशायक छण्ड। बाणलागत कर्णअंगज देहमुर्छा मण्ड २७३ दो०। मुर्छितलखि वृषकेतुको रणमण्डल तजि ताहँ। जातभयो सारथि तबहिं आवकार्षिण रणमाहँ २७४ तिष्ठ तिष्ठकहिं पंचशर मारतभे तिहिकाल। सूत सुधन्वाको वधो वधेअश्व पुनिहाल २७५ एकविंश रथखण्डियो धनुबदले पुनितीन। प्रद्युम्नहि तब जानियो भूपतिसुत परवीन २७६ लीलायुत रणकरतभो निजपौरुष दरशाइ। किय अद्भुत संधानपुनि रोपहिये सरसाइ २७७ अष्टबार हयहनतभो पंचबार धनु तत्र। सारथिको शिरकाटियो भोअद्भुत रणयत्र २७८ तीनि बाण प्रद्युम्नके हतिगरजो तिहिकाल। उभय विशारद जंगहैं दोनोंवीर विशाल २७९ भूतल नभरण करतहैं मुर्छिगिरत शर लागि। रुधिरोक्षित उभयांगहैं भिरत बहुरि रिसपागि २८० चढ़ो सुधन्वा अपररथ क्रोधित छांड़ेतीर। वीरसहस्रन बधतभो पारथसैन्य गँभीर २८१ कृतवर्मा तनु बाणनब हनतभयो अति जोर। कृतवर्मासो शरदले पांचबाण तजिघोर २८२ उरसि सु-

धन्वा पीड़ियो तब भूपतिसुत तत्र । नवशरसों हार्दिक्यरथ खण्डितकीन्हो यत्र २८३ जूझो सारथि हयनयुत शरपीड़ित तिहिकाल । कृतवर्मा भागतभये आयो रण अनुशाल्व २८४ कहो सुधन्वासों वचन गहि धनुबाण कराल। निजबलसों तोपितकियो तुम बहुवीर विशाल २८५ सहिये एक हमारशर अ-सकहि छांड़ोतीर । बड़वानल समसोचलो दारुण प्रबल गँभीर २८६ लागो काटन भूपसुत परनाहिंसको बचाइ । हृदयमध्य लागतभयो वह कठोर शरआइ २८७ अमितसेन दलिसो बहुरि तजे वाण नवजोर । विरथकियो भूपतिसुवन गर्जतभो रवघोर २८८ छन्द रामगीतिका। जागि मुर्छासो सुधन्वा एक शायकछण्ड । गिरतभो अनुशाल्व भूमें लगत मुर्छासण्ड ॥ तब सुधन्वा दलनलागो पार्थको दलतौन । गजानीक विभेद बाणन अश्वनर रणजौन २८९ वही रुधिर अपार सरिता मांस कर्दमअत्र । गजानन हय शीर्ष संगरपरे सहसनतत्र ॥ रुधिर बहु बहिजात सरिमधि मगनपारथ पत्र । बाणसप्तति हति सुधन्वा गर्ज सात्यकि यत्र २९० दो० । इषुसप्तति शरछांडिकै सात्यकिको रथजौन । सूतध्वज हयछत्रयुत दलो सुधन्वा तौन २९१ स्यन्दनचाढ़ि दोऊ सुभट भेउद्यत रणमाहँ । अम्बर बाणन छाइयो शतन सहसन ताहँ २९२ विशीर्णांग शरदोउ भे बहत रुधिर परवाह । किंशुक इव राजतभये जनु वसन्तऋतु चाह २९३ सात्यकितन मारतभयो शक्तिमहा विकराल। शक्तिघात युयुधानलहि कश्मलपाव विशाल २९४ छन्दरामगीतिका। देखि तहँ शैनेय मुर्छित भयो हाहाकार। भयावृत बल देखि संगर गये जिष्णुजुझार॥ कह सुधन्वा पाहँ ठाढ़े होहु संगरवीर। युद्धहम बहुवीरजीते तब अधिक बलधीर २९५ द्रोण भीष्मसकर्णजीते कृपाचार्य सुजौन । समर शंकर असुरकाल समान जीतेतौन ॥ भयो विस्मय नाहिं जैसो भयो तुमकहँ देखि । तत्र सारथि कृष्णगावर कह सुधन्वालेखि २९६ कृष्ण

बिन संग्राम यामें भयो विस्मय अत्र । युद्ध मोसनहोइ किमि ताजि कृष्णआये तत्र । बाँधिजूप तुरंग रावर यथोचित इहि काल । हंसकेतु नरेन्द्र करि हैं वाजिमेध विशाल २९७ अद्य मम संग्रामदेखहिं देव आनँदपाइ । जीतिहौं रणमाहिं तुमको सहितहू यदुराइ ॥ सुनत अर्जुन बाणशर संधान कीन्हेहाल । सुधन्वा शरदिव्यसोई काटियो तिहिकाल २९८ मारियो दश बाण अर्जुन अंग नृपसुतबीर । शतसहस्रन अयुत प्रयुतन तजतभो पुनितीर ॥ अर्जुनहु तिलमानकाटे बाणताके सर्व । अग्निअस्त्र सुमोच अर्जुन क्रोधसंयुत खर्व २९९ खचर नभनहिं जात अर्जुन बाणछायेघोर । तिंहूपुरमहँ तिमिरछायो बाणछाहँ अथोर ॥ जरतलखि निजदल सुधन्वा पावकास्त्र अपार । अग्नि नाशनहेत तत्क्षण वारुणास्त्रप्रहार ३०० घनघुमरि चहुंओरआये लगे वर्षनतत्र । मग्न पाण्डव कटकवर्षन उपललागे यत्र ॥ मोरचातक लहे आनँद शीतमोहित वीर । वाद्यनष्टसु भये वस्त्र लखातनहिं रणधीर ३०१ वर्मचामर कुम्भकरिवर शोभहीन लखात । बाणपक्ष विहीन चलत न करत शत्रुनपात ॥ जानि स्वपरन परत अर्जुन लीन्ह बायबबान । टूटि ध्वज रणगिरन लागे जलदभे गतमान ३०२ तब सुधन्वा अर्द्ध विधुशर जिष्णुगोकिय खण्ड । पंचसूतहु शीशकाटो तीनि शायकछण्ड ॥ हीनशायक कीन्ह पार्थहि कहतभो इमि बैन । गयो पौरुष आजु रावर कृष्णबिन गुणऐन ३०३ सूत सर्वग त्यागिकै किय प्राकृतहि इहिकाल । गिरहिगो मम अयनाहित सुमिरिये हरि हाल ॥ गह्यो अर्जुन तुरगहू पुनि वामकर धनुतान । युद्धकरन वहोरिलागे तजतभे बहुबान ३०४ सुमिरियो जबताइँ हरिको परे स्थपरदेखि । मुंचअर्जुन अश्वयाविधि कहे वचन विशेखि ॥ हरिहि आये जानि अर्जुन करतभे परनाम । अश्वप्रग्रह+त्यागि

+ प्रग्रहरश्मी ॥

आनँद पावचित्त ललाम २०५ तजनलागे वोरशायक तव सुधन्वापाहिं । तव सुधन्वा कहतभो इमिदेखि हरिरथमाहिं ॥ अद्यहम हरिकाहँदेखो हेत पाण्डव आव । सदासवंग तुमहिं जानत वेद भेदनपाव २०६ करहु अर्जुन अव प्रतिज्ञा हमहिं जीतनहेत।तोपहीं जगकाहँ पौरुष धारि हम रणखेत॥कहो अर्जुन तीनिशरसों काटिहौं शिरतोर।जो न काटहुँ पुण्यगतपर नर्कपूर्व जमोर२०७ आपहू प्रणकीजिये अरु पालिये निज काहूँ।पार्थके ये वैन सुनिकै कह सुधन्वा ताहँ॥ अग्रहरि यह कहतहौ शरकाटिहौं तव जोर। त्रिधा खण्डित भूनडारौंलहौ गति अतिघोर २०८भापि इमिशर शतनमारे हृदयहर्षित वीर। रथ उड़ाइ भ्रमाइयोसहकृष्णपारथ धीर॥ भ्रमो सो घट चक्रवत शरविधे अर्जुन अंग । पृष्ठगोरथ नल्वमात्र+सुवाणके परसंग२०९ देखि श्रीहरि कहनलागे लखिय अर्जुन याहि। कीन्ह प्रणइषु तीनिसो वधकियो सो भलनाहिं। जयद्रथ वधहेत प्रणकिय लहे वहुदुख ताहँ। भयोविस्मृत सव धनंजय चेत नहिं मनमाहँ ३१० पदन सो हमरेप संयुत रोकते रथकाहँ। नल्वमात्र+हठाइदीन्हो वाण के वलयाहँ ॥ एक पत्नी धर्म संयुत भूप सूनुलखात । तुम न हम करिसकत हैं प्रणकरहिंगे तवधात ३११ कष्टदीरघ होइगो यह जिष्णु मोहिं लखात। मारिहौ इषुतीनिसों यह कही अर्जुन वात॥ होत कष्ट अवश्य जो नहिंआवते यदुराइ।भापिपारथछाव दशदिशि वाणकी भारिलाइ ३१२ धनुप पावत रोपसंयुत कह सुधन्वा धीर। राखिये अव पार्थ जिमिव्रज धारि गिरियदुवीर॥ कीन्हशर संधान अर्जुन क्रोध संयुततत्र। कालशिखिसम छूट शायक पुण्यदिय हरियत्र ३१३ दो० धेनुगोपरक्षाकरी धारिगोवर्द्धन हाथ।तौन पुण्य तेहिवाणपर धारतभे यदुनाथ ३१४ उभय समर देखन त्र्प्रभव आवतभे तेहिकाल। अप्सराहुआईं लखन शोभितरूप विशाल ३१५पारथहितकारक निरखिकृष्ण

+नल्वमात्र चतु:शत स्तम्भित स्थान॥

काहँ तेहि जंग। यह शायकमैं काटिहौं कहभूपज सो मंग ३१६ वहुतपुण्ययुत बाण यह जो काटौं मैं नाहिं। राक्षसतस्कर भोगहीं पुण्य हमारी काहिं ३१७ जानतहौ गोविन्द यह देखहु पुण्यहमारायहकहि ताजि विध्वद्धशर खण्डिबाण महिडार ३१८ भई शंकतिहुंलोकमें बिस्मितअमर विशेख॥ द्वितिय बाण अर्जुन लियो लाघवताकी देख ३१९ पुण्ययुक्त श्री हरिकियो भूमिदान जो कीन्ह। पाण्डवरक्षाहेतलखि कहन सुधन्वालीन्ह ३२०दीन्हो शरमें पुण्य निज अर्जुनार्थभगवान। अर्जुनकोशर काटिहौंतव देखत गतमान३२१निज शरकी रक्षाकरिय पार्थपराक्रम धारि। धन्यधनंजयहेताजिन देवैं पुण्यमुरारि ३२२ पुनि भीषणछाँड़त भये रविमण्डलसमबान। यथा कृपणधन क्रोधचख अरुणसूनु मघवान ३२३ कहत देवगणगगनमें धरणी मनुज बखान। काहहोइ को जीतिहै उभयबीर बलवान ३२४ प्रगटी बहु शिखिबाणसों शायकगोनभमाह। अर्जुनके करसों छुटो प्रलय करैगो काह ३२५ तबहिं सुधन्वा जोरकरि तजि शर काटो बान।शंखबजावत पुनि भयो आनन्द हियसरसान ३२६ सदल पितहि हर्षित कियो कँपीभूमि तेहिकाल। बाण छिन्नलखि जिष्णुसो कहत भये हरिहाल ३२७ युक्त करिय मार्जुन शरहि दरखकीजिय अत्र। भूपजु पौरुष देखिये धनि कीरति हैं तत्र ३२८ दई पुण्यहम शर बिषे तदपि सके नहिं जीति। सत्य प्रतिज्ञा करहिगो स्वर्गकांक्षियुत नीति ३२९ भये बजावत भापिइमि पांच जन्य भगवान। देवदत्त अर्जुन धमो छायोशब्द महान ३३० अच्युत मुखकी वायु लहि पांच जन्य ध्वनि जोइ। भूपताल दिशि विदिशिपति भयो कपावत सोइ ३३१ पूरि शब्द इमि कहत भे अर्जुन सों हरिबैन। अबशायक कर लीजिये मम आज्ञा गुणऐन ३३२ लियो पार्थ शर हस्तमें दृढ़ कीन्हों हरियत्र। शरके पश्चिमभागमें विधिहि युक्त किय तत्र ३३३ कालहि थाप्यो मध्यमें फलमें बैठे आप। पुण्य रामअव-

तारकी जाको विदित प्रताप ३३४ सोऊ अर्पित करतभे वाण
मध्य तेहिकाल। संधित कीन्हों पार्थ जब हाहामची कराल ३३५
देखि सुधन्वावाणअस कहत भयो इमिवैन। जानों मैं गोविन्द
जो करतभये गुण ऐन ३३६ सहसा मेरेवध हितै विश्वदेह थित
वाण। करहु प्रतिज्ञा पार्थ अब कीजिय सत्य प्रमाण ३३७
इहिशर काटहु शीशतब जो न करौं मैं येह। जो अघ हरिहर
भेद करि सो लागै मम देह ३३८ कहो सुधन्वा काटिहौं यहशर
सत्य प्रमाण। तब अर्जुन संधित कियो वड़वानल समवाण
३३९ स्वर्गी अप्सरा गगनमें सुरनभयो भयतत्र। वाणशब्दसों
नष्टभो वाधन को स्वयंत्र ३४० कांपत उरवी हूभई कपोसुधन्वा
नाहिं। कोप सहित वोलतभयो या विधि पारथ पाहिं ३४१
मोसों रक्षा करत तव देवहरादिक वीर। काटहुँ शरसंदेह विन
हाहतोस्मि रणधीर ३४२ तजिसंग्रामन जाइहौं इहि अवसर
यदुनाथ। लज्जापावै मातुमम हंसध्वज नरनाथ ३४३ जानत
तुमहिं नृसिंह हम पारथ सारथि तत्र। तिष्ठमान होरण करिय
करहु जिष्णुबल अत्र ३४४ यह कहि कृष्णहि सुमिरिकै काटत
भोशर तत्र। आधो कटि पृथुमी गिरो हाहा भोअति यत्र ३४५
वाह वजावत निजभयो तबहिं सुधन्वा वीर। विधुमंडल कंपत
भयो तिहुंपुर भयो अधीर ३४६ अर्द्धवाण शिर काटियो तबहिं
सुधन्वा धाइ। ज्वलित रम्य कुण्डल सहित परो कृष्णपद जाइ
३४७ रामराम मुखसों जपत पुनि कवन्ध तिहि वार। भ्रमतभये
अतिवेगसों नाशो कटकअपार ३४८ दोऊहाथनगहतभे केशव
सोंशिरवेश। तामुख निकसत तेजभो हरिमुख कियोप्रवेश ३४९
केशवशीश वहोरिलै हंसध्वजरथडार। हंसध्वज सुत शीशलखि
कीन्हविलाप अपार ३५० किमिमोसन वोलत नहीं सुनहुसुध-
न्वावैन। पितातुम्हारो मैंअहौं रूठे किमि गुणऐन ३५१ डारो
पुत्र कराहमें तैल तप्तरह जोइ। दीन्हो तीक्षण दण्डमें पुत्रनेहको
खोइ ३५२ कियोप्रतिज्ञा सफलरण तोपितकिय हरिपार्थ। प्रभा

वती मनसिज शमित कियदै जलद यथार्थ ३५३ पुनि हँसि
मुख चूमतभये निजधन माथ लगाइ । पुनि बोलत भूपतिभये
पुत्रशोक उरछाइ ३५४ उठहुपुत्र गहिये तुरँग अर्जुनको इहि
काल । प्रद्युम्नादिकसों करिय संगर सुवन कराल ३५५ कियो
कुवलयोदितसकल जननी भाषित जौन । सुरथादिक सुनिये
नहीं बोलतमोसोंतौन ३५६ कहोसुरथ इमिरणविषे किमिरोवत
नरनाथ। भयोयुद्धहत पुत्रतव तासुशीश गहिहाथ३५७कहहंस-
ध्वज सुरथसन रोदनकारणयेह । छिन्नशीश हरिपद गिरो पूर्ण
सुकृत गुणगेह ३५८ सोपदत्यागतशीशभो मिलत पुण्यअति
जोर । अघसोंहोत वियोगतिहि कौनप्रगट अघघोर ३५९ मो
पर दियो चलाइहरि कुण्डल शोभित जौन । स्यन्दन कृष्णप-
बाँरिहौ पुत्रशीश यहतौन ३६० प्रेरत हंसध्वज भये शीशकृष्ण
रथफेरि । अन्तर्हित चिक्षेपहरि गगनतासु मुखहेरि ३६१ भक्त
भयद विलोकिहर रुण्डमाल धर तौन । दुखहारक पितुसोंवचन
कहो सुरथ गुणभौन ३६२ छन्दरामगीतिका । अद्यतात विलो-
किये हरिपार्थ सों ममयुद्ध । सैनिका अवलोकहीं ममवन्धु मारों
क्रुद्ध ॥ भेदिहौं शर पार्थकेतन और वहुजगवन्द । तिष्ठमान ज्ञ
होइँगे ममअग्र देवकिनन्द ३६३ भाषिस्यन्दन वैठिआतुरसैन्य
लै वहुसंग । शंखनाद सुकीन्ह हर्षित सिंहनाद अभंग ॥ धारि
धनु निजहस्तमें कहपार्थसोंइमिवैन ।तिष्ठ ममसंग्राममें हरिरक्षिये
गुणऐन ३६४ सुरथहौंतवशत्रुआयो पुण्यदैममभ्रात ।वधकरायो
वालवत नहिंलखी हानिकिवात ॥ यथाबालक देइमौक्तिक वरद
फलकोलेत । तथादैनिजपुण्यमुक्ता पार्थकेहितहेत ३६५ लीन्ह
जीवन तुमसुधन्वा वदरफलके मान । सत्यहौ गोपालमोहिं न
जानहूभगवान ॥ कहँ सुधन्वा गयोभ्राता देखिये हम नाहिं ।
अद्यपांडव पाइकै मोहर्ष अति मनमाहिं ३६६ ताहि ताविधि
देखिकै कहकृष्ण पारथपाहिं । हांकि स्यन्दन चलहिं अनतहि
रहिय थिर इतनाहिं॥भ्रातृदुखकी तापतापित पुण्यवपु वलवान

और योधा आइ यासों करहिंसंयुग आन ३६७ करहु जो संग्राम यासों होइअनरथ घोर । कहो अर्जुन अमितनाशोअशुभ तुम वरजोर ॥ सुरथकरिअब घोरअनरथ होइकिमि भगवान । सुनत अर्जुन वचनयाविधि कहोहरिसुखदान ३६८ सृष्टिदूसरिरचन के हित याहि रण महँदेखि।पितामहउरहोतचिन्तासर्वकालविशेखि ॥ सुरथ के वलभूरि अर्जुन तोरहै वलथोर । कीजिये मतमोरअर्जुन सदा मानोमोर ३६९ वीरप्रद्युम्नादि यासों करहिं संगरजाइ । पातने इहि सव्यशाची लखि न परत उपाय॥कष्टते भो वधसुध-न्वा पुण्य निज जव दीन्ह । पाप किञ्चितं रहो तातन पुण्य पूरण चीन्ह ३७० पुण्य पूरण वासयातन कोउभय नहिंएहि । व्याघ्र तस्कर सर्प शिखिभय हो अघांग सुजेहि ॥ भापि इमि प्रद्युम्नको लिय वोलि श्रीहरितत्र । सुरथसों रण कीजियो वहु वीरलै तुमअत्र ३७१ जातभे प्रद्युम्न आदिक कृष्णके सुनिवैन । पार्थरथ हरिहांकियो संग्राम सों गुण ऐन ॥ तीनि योजनहांकि के रथ जातभे भगवान । सुरथ सों रणहोतभो इत लरतभे वल वान ३७२ पार्थ कृष्णन देखवोलत सुरथ भो तिहिकाल । करि-ययुद्ध कि लखत नाहीं भ्रातृशत्रु कराल ॥ शिशुनसों किमियुद्ध कीजिय कृष्ण अर्जुन त्यागि । वालकन कहँ प्रेरिआगे आपुगे कहँभागि ३७३ करि निवारण इनहिं पीछे मारिहौं द्वौवीर । अन्तरिक्ष पतालहू जहँ जाहिंगे रणधीर । इविधि मनहिं विचा रिपूँछो सैनिकन नृपपुत्र । सैन्यमध्य नदेखिये गतकृष्ण पांडव कुत्र ३७४ सैनिका सुनि सुरथ वाणी कहतभे इमिसोइ । वृथा जल्पत वीर क्योंतुम यथा कातरकोइ ॥ अग्रजेथित युद्धके हित करिय तिन संग्राम । लरहुगे हरि पार्थ पीछे शत्रु निज वलधा-म ३७५ सुरथ परिवारित सवनकरि महावीरन तत्र । हनत भो वहुअंग शायक कीन्ह व्याकुल पत्र ॥ कोउ निपतित वीर कोऊ मध्य खण्डित ताहँ । गदासों शिर भिन्नकाहू भयो हाहा ३७६ तीनि योजन सैन्यमध्ये व्यूह शोभित जौन । त

विदारि श्रीहरि पाहँ कीन्हो गौन ॥ देखिपारथ कृष्णहूपर कीन्ह शरझरि हाल। तिष्ठतिष्ठ सुसमरमध्ये पार्थकह तिहिकाल ३७७ भाषि सहसन बाण छांड़े सूतहय दुखदीन। काटियोधनु सगुण सध्वज रथहि तिलसम कीन ॥ मारिहय शतबाण मारे सुरथके तनतत्र। सुरथहू अनगणित शायक हनो अर्जुनयत्र ३७८ अस्त्रशस्त्र प्रहार नाना कीन्ह दोऊवीर। तबहिं श्रीहरि कहो पारथ पाहँ हेरणधीर ॥ पश्य धीरज वीरको किमिकरतहै रणएह। भ्रातृजन्य वियोग तवदल वधिहिगत सन्देह ३७९ याहितजि हम इतहिआये तजो नाहींतोन। हीनवीर्येन होत याको बाण छायेभौन ॥ कृष्णके येवैन सुनिकै कहो क्रोधितपार्थ। मारिहौं तव अग्र याकहँ कहत नाथयथार्थ ३८० नहिंअसाध्य लखात किञ्चित आपुके परसाद। गाढ़ जहँजहँ परो मोकहँ रक्तध्वज उरगाद ॥ मारियो शतबाण यहकहि सुरथके तनहाल। सुरथ को रथजातभो नभ मध्य ताहीकाल ३८१ कृष्ण फाल्गुन अंग मारे सुरथहू बहुबान। श्वेतवाहन सों विहँसि पुनि इविधि वचन बखान ॥ भेदिहौं तवयान अर्जुन राखिये इहिकाल। मारियो शर भाषि याविधि भ्रमतभो रथहाल ३८२ कृष्ण अर्जुन रुद्र संयुत महारणके माहिं। उभयपाद दबाइयो हरि रहत थिर रथनाहिं ॥ भिन्न कृष्णार्जुनभये द्वौगार्धपत्रन तत्र। कृष्ण अर्जुन धमितकीन्हो कम्बु निज निजयत्र ३८३ कहत श्रीहरि भये याविधि वचन पारथपाहिं। धरत हमकरि जोरपै रथ रहतहै थिरनाहिं ॥ विरथ सुरथहि करि यथारथ सुनत श्री हरि वानि। सहयसध्वज सूत सहरथ भंजियो धनुतानि ३८४ विरथ सुरथहि कीन्ह पारथ पवनसुत तेहिकाल। पार्थरथ लांगूल निजसों कीन्ह वेष्टितहाल। वद्धकीन्हो भूमिमें धर कृष्ण नाहिं चलात ॥ सुरथ याविधि देखिकै कह सुनिय कृष्ण कृपाल ३८५ नद्ध यह तव भारसों अब करिय रक्षाअत्र। लीन्ह धाइ उठाइ स्यन्दन वचन कह इमितत्र ॥ कहां डारिय पार्थ

स्यन्दसापियेमोपाहँ । सागरे वा मेरुगिरि वापुरीर
मारियोशरपांच पारथ भयोमुर्छित सोइ । मुक्तस्यन्द॰
सोंजागिरथचढ़जोइ ॥ करन लागे युद्धदोऊ अस्त्र शस्त्रन ते॰
अर्द्ध विधुनाराचहू तजवत्सदंतहुयत्र ३८७ वाराह कर्ण क्षुरम
अरु शिलीमुख नालीक । अस्त्रकंटक आस्यआदिक भये तजत
अलीक ॥ करहु अर्जुन कछु प्रतिज्ञा सुरथ कह इमिवैन । होत
अनृत न तब प्रतिज्ञा सुनो हम गुणऐन ३८८ कहोअर्जुन तुम-
हिं मारहुँ जनकके तबअग्र । कछु प्रतिज्ञातुमहुँ भाषिय अत्रवीर
समग्र ॥ डारिहौं भूमाहिं रथसों कहो नृपसुत तत्र । नाशहोवै
पुण्यमेरीकरौं जो नहिंअत्र ३८९ दो॰ । तिहि अवसर पारथ
सुरथ छांड़े कोटिन वान । अष्टोत्तरशत सुरथके रथकिय पार्थ
मसान३९०दलअपार मारत भयेक्रोध सुरथ लखिकीन्ह । अर्द्ध
चन्द्र तजिपंच धनु शायक वेधन लीन्ह ३९१ पुनि अर्जुन धनु
सगुणकरि श्रृंगज रथ हीन । करिभुज दक्षिण अर्द्धविधु मारि
डारि महिदीन ३९२ अलंकार मण्डित भुजा गिरे लखत भेपा
र्थ । सुरथ वामकर लैगदा धावत भयो यथार्थ ३९३ पारथके अ-
श्वन हयो बहुरिजनार्दन अंग । एक सहस गजमारियो अयुत
अश्व रणरंग ३९४ द्वे सहस्र रथभंजियो धावत इतउत सोइ ।
तिष्ठमान हरिपार्थहो वलीअपर नृपजोइ ३९५ याविधि कहिमा
रन भयो पैदल अयुत प्रमान । तब अर्जुन कर काटियो सहित
गदातजिवान ३९६ दोऊ कर वर्जित सुरथ कहोपार्थ सों बैन ।
आगनिरक्षा करिय हरि राखिय रथ वुधिऐन ३९७ अर्जुन ऊपर
धाइयो महावीर बलवान । चारिवाण फाल्गुन तजे नाकोआवत
जान३९८एकहिये भेदनकियो काटे पदद्वैतीर । शीश सकुण्डल
काटियो एकवाण रणधीर ३९९ धाव कबंधा गंड सो सेनादली
अपार । मुर्छित अर्जुन होनभे शिर उड़िलगो लिलार ४००
गिरोशीश सो भूमिमें बहुरि कृष्णपदजाइ । कृष्णशीश वह
करलियो बोलनमें मुखपाइ ४०१ देखिय अर्जुन सुरथवह

तथ्यवादि बर बीर। निजप्रणको राखतभयो सत्य ममांतिक धीर ४०२ त्वत्प्रसाद सों मारियो कह अर्जुनमैं जाहि। ताहिदेहुममहस्त में करहुँ वंदनायाहि ४०३ ताहिहस्त लै पार्थनिज कीन्हबन्दना अत्र। सुमिरत भे हरिगरुड़कहँ तेआवतभे तत्र ४०४ कहोकृष्ण यह सुरथ शिर तुमलैजाहुप्रयाग। बारि त्रिबेणीके विषे कहीगरुड़ यहबाग ४०५ माधव अत्र विराज प्रभु गंगाजल नरयस्य। जबलागि तिष्ठतिअस्थि हैं स्वर्गभोग तब तस्य ४०६ तव आनन शुभतेज गत सुरथ केर भगवान। तद पिलैजैहौं अवशि आज्ञा मानि निदान ४०७ पावनहोइ प्रयाग मम श्रीहरि कहो बखानि। डारियलै शिर रत्नयह ममकोशेसुख मानि ४०८ वैनतेयलै सुरथशिर जबलगि गगन उड़ान। वृषारूढ़ हरलखत भे गिरिजा सहसुखदान ४०९ आयसु भृंगी को दियो लाइयशीश विशाल। गरुड़काह लैजात हैं कहो उमा तिहिकाल ४१० सुरथहिमारो पार्थरण पुण्यशीश शुभगात। कृष्णाज्ञाको पाइकै लिये प्रयागहि जात ४११ पठयो मैं भृंगीगणहि शीशलाइये हाल। मुण्डमालमें लाइहौं कुण्डल ज्वलित विशाल ४१२ जेधर्मिष्ठ वदान्य हैं अरु कृतज्ञ रणशूर। जितक्रा मनके करतहम शिरसों मण्डन पूर ४१३ भृंगीधाये वेग सों गये गरुड़ के पास। मत्करदीजिय शीशयह याविधि बचनप्रकाश ४१४ वलसों लेहौं छीनि नतु जानत वल न हमार। मुञ्च मुंच नहिं सर्पहम जोभय करहिंतुमार ४१५ गरुड़ उड़ायो पक्ष सों भृंगी गणको तत्र। तीरथ राजहि जातभे भृंगीके शिवयत्र ४१६ पक्षवात अतिघोर सों शुष्कपर्णवत देखि। भृंगी सों बोलत भई गिरिजा विहँसि विशेखि ४१७ जानत नाहिं हरिवाह नहिं खगराजहि वलपूर। पक्षवात तुम जातुलहि आये हरढिग दूर ४१८ सूखे तन वल हीनको पठयो शंकर तत्र। बीर पन्नगाशन गरुड़ हरिवाहन है यत्र ४१९ वृद्धवृषभ अतिजासुहै प्रिया नदी गजचर्म। वस्त्रशस्त्र खट्वाङ्ग है सुनि शिव वचमह

नर्म ४२० जाहुवृषभ लैआवहू वैनतेयसों शीश। जानहिं गिरि जा दूतदल चले नन्दिकरि रीश ४२१ वृषनासा की वातसों गरुड़ उड़ाने हाल । अस्त भये सब धरणि में गहिन सके तिहि काल ४२२ वन सरिता गिरि सागरन सत्यलोक कैलास। वैकु-एठहुतजि दैव वश गेप्रयाग सुखवास ४२३ तीरथ में डारन भये जल में डारत देखि। नन्दी लीन्हो धाइशिर हरकर दियो वि-शेखि ४२४ मुएडमाल के मध्य में लीन्हो शंभु लगाइ । गरुड़ जाइ हरिसों कहो शंभुचरित सुखदाइ ४२५ याविधि वर्णनकीन्ह में सुरथ सुधन्वा गाथ ।जियालाल सुख दायिनी दायक पदरघु नाथ ४२६चौ०। नृप हरिदाम भक्त हरिभारी । धर्मशास्त्रकीआ ज्ञाधारी ॥ पाटननगरवासइनकेरा । राजपूतहरिभक्तघनेरा ४२७ नृप दधीचिसम दानिनमाहीं । वचनपालबलि सदृशसदाहीं ॥ भक्तिम जिमि प्रह्लादउदारा । नृप जगदेव सरिस रिझवार ४२८ नृप जगदेव कथा अवगाई । याहीमें वरणौं सुखदाई ॥ शूरवीर अरु न्याय प्रवीना। अरु रिझवार निष्ठमें लीना ४२९ इमि रिझवार निष्ठमें लीना । इकदिन नटिनि तमाशाकीना ॥ ताको रागनाच अवलोकी । अपरकला आदिकनविलोकी ४३० है प्रसन्न धनदेन विचारा। ताके गुणसम कछुन निहारा ॥ पुनि विचार भूपति मनमाहीं । आपन शीशदेउँ इहिकाहीं ४३१ यहसुनि नटिनि निवेदनकीन्हा। पायो शीश आपु जो दीन्हा॥ कारज आइपरैगो जबहीं । लैजैहौं राउर शिरतबहीं ४३२ जां-चनहेतु सुनो नरनाथा । दूजे अग्रउठन अबहाथा ॥ दक्षिणहाथ न नृपति उठावौं । केतौ अधिक द्रव्यधनपावौं ४३३ यहकहिकै वह नटिनि सिधाई । द्वितिय नृपति घर पहुंचीजाई ॥ ताको नृत्यभयो तेहिकाला । देनलगे कछुरीझि नृपाला ४३४ वामहाथ तब नटिनि पसारा। क्रोधित पूछतभये भुवारा॥ कारण कवन वामकरताना । सुनि नटिनी इहिभांति बखाना ४३५ दक्षिण हस्त सुनो नरदेवा। भेंटभयो राजा जगदेवा ॥ वासों अधिक

न दानीकोई। जासु अमृतानों करसोई ४३६ राजाकही देउँ दशगूना॥ वासों मोहिं गनत कि मिऊना। यहिविधि बातचीत बहुभयऊ॥ राजा तबहिं प्रतिज्ञा कयऊ ४३७ दशगुण नृपप्रण नटिनि दृढ़ाई। चलि जगदेव निकटसो आई॥ तिनको शीश लियो हरपाई। लिये शीश राजापहँ आई ४३८ यह जगदेव दियो लखिलीजै। आपहु अब विचारयुत दीजै॥ राजा लज्जित ह्वै उठिगयऊ। नटिनि सोंहँ पुनि मुखनहिं कयऊ ४३९ घूमी नटिनि बहुरि तहँ आई। रुण्डमाहँदिय मुण्ड लगाई॥ सोई रागगान पुनि कीन्हा। जापर रीझि राउ शिरदीन्हा ४४० तुरतहि राउ जियत तबभयऊ। देशदेशमहँ निजयश कयऊ॥ रिझवारता नृपतिसम नाहीं। कोऊ निपुण भयो जगमाहीं ४४१ दो०। अह नृपति जगदेवकर औरौ एकप्रसंग। इक नृपतनुजा माहिकै व्याहचहत तिनसंग ४४२ चौ०। नेगी भेजि व्याह हित दीन्हा॥ राजा अंगीकारन कीन्हा। माता तासु बहानो करिकै॥ राजहि बोलिलियो मुदभरिकै ४४३ मंत्रिन द्वार नृपति समुझायो। राजाके मनमें नहिं आयो॥ प्रेमासक्तहोइ नृपकन्या। प्रेमदिखायो नृपहि अनन्या ४४४ दुखयुत विनय कीन बहुसेवा। अंगीकार न किय जगदेवा॥ नृपति कियो नहिं अंगीकारा। तब कन्याकिय दुष्टाचारा ४४५ नृपको मस्तक काटि मँगायो। देखनहित अति प्रेमबढ़ायो॥ ऐसीदशा नृपतिकीदेखी। हरिराखो प्रण तबहुँ विशेखी ४४६ जबहीं मुख दिशि कन्याआवै। तब मुखघूमि और दिशिजावै। याको तात्पर्यहै सोई। तियसों विमुख इविधिते होई ४४७ निश्चयकरि इन्हिनको संगा। है मुमुक्षुको करतजु भंगा॥ भगवत प्राप्तको जु अनन्दा। ताहि नाशि बांधत निजफन्दा ४४८ याको अभिप्राय यहजानो। राजा हरिदासहु इमिमानो॥ भे रिझवार निष्ठ ऐसेही। मानो तोदरकुल रविदेही ४४९ कलियुगमाहँ धर्मधुरधारी। मालातिलक प्रीति अतिभारी॥ भक्तनमाहँ प्रीति

रहि जैसी। काहूसों निबहै नहिं तैसी ४५० कोऊ भेष भक्तको धारे। तुलसीमाला तिलक सँवारे॥ कन्या सँग सोवत निशि देखा। तासों बोले वचन वेशेखा ४५१ ऐसो कर्मकरत तुम जोई। यामें निन्दा भेषकि होई॥ यहसुनि सो तहँ मों उठि भागो। भयो ज्ञान हरिपद अनुरागो ४५२ दो०। विषयवासना त्यागिके कियोजाइ बनवास। तहां करत भगवत भजन त्यागिसकलविधि आस ४५३॥

इतिश्रीभगवद्भक्तोऽनुरागदायकजियालालजन्माश्रेणविरचि तेचतुर्विंशतिनिष्ठांमध्येप्रथमधर्मनिष्ठायां सप्तभक्तकल्पना वर्णनभक्ताम्बुनिधौतृतीयस्तरंगः ३॥

दो०। सीतापति पदपद्मको करिकै अमित प्रणाम। निष्ठा दूसरि वर्णऊं धर्मप्रचारक नाम १चौ०। धारोरामव्यासअवतारा। तिनहिं दण्डवतकरौं अपारा॥ जेजग उद्धारनहित लागी। ब्रह्मसूत्र वरणे सुखपागी २ वेदनकाह विशेष प्रकाशा। महभारथभाषो सहुलाशा॥ अष्टादश पुराण पुनिगायो। पुनि अस्मृति बनाय सुखपायो ३ दो०। धर्मभागवत जानहैं तिहि प्रवृत्तिकीओर। कुलिशरेख पदपद्मकी जो रेखन शिरमोर ४चौ०। वृत्तासुर अघ महाविशाला। वधनहेत पविरेख कराला॥ पाप पहाड़ ढहावनहारा। ताहि प्रणामकरौं बहुबारा ५ भगवद्भक्ति युक्त जेकर्मा। ताकहँ कहत भागवतधर्मा॥ सुमिरण कीर्त्तन पूजनआदी। सेवभजन वन्दन इत्यादी ६ कोउ संदेहजुयामें। धर्मभागवत अरु निष्ठामें॥ भेदकाह ताकोसो शुनिये। अभिप्राय कर्मनसों गुनिये ७ कर्महोइ चाहै निष्कामा। चाहै होवै कर्मसकामा॥ जो निष्काम कर्मकरकोई। धर्मभागवत जानिय सोई ८ इहि जनु अगिले जन्महुकीन्हे। करि भगवत अर्पण जो दीन्हे॥ भगवतभक्ति प्राप्त जोहोई। तेहि सम्बन्ध कर्मकर जोई ६ दो०। सावधानह्वै भक्तमन धर्म भागवतमाहिं। वहिरन्तर चितवृत्तिको प्रतिक्षण टारतनाहिं १० चौ०। ओर कर्म

करनो नाकरनो। सो स्वाधीन भांति इहिवरनो॥ वहु आचार्यन को मतसोई। भक्तिप्राप्त कर्मनसों होई ११ जबलौं देहदशाको भूली। मगनन होइ प्रेमरस फूली॥ तबलौं सन्ध्याआदिक कर्मा। आवश्यक करिये सबधर्मा १२ धर्मभागवतमें चितजासू। है एकाग्र कर्म जो तासू॥ सम्बन्धी हरिभक्ति सुजानो। उनको कर्म न जीमहँआनो १३ सो हरिभक्ति प्रचारकजोई। नौकासदृश जानिये भाई॥ आपहु पार भलीविधि जावैं। औरनहूंको पारलगावैं १४ तारणतरण चरणहै जोई। ऐसेही भक्तनाहित सोई। यदपि भागवत धर्म सुदेशा॥ भगवतवेद अजाहिं उपदेशा १५ पाइप्रवृत्ति वेदअनुकूला। धर्म भागवत सुखको मूला॥ ताहूपर विशेष दायाहित। धर्मप्रवृत्तिम कीन इविखिचित १६ ब्रह्महुब्रह्म प्रबन्धनराखा। कइकयुक्त परगटकरि आखा॥ ऋषीश्वरन भक्तनसुखतेरे। चरित रचावतभये घनेरे १७ दो०। सूत्रतंत्र अस्मृति सहित अरु वेदांतहुजानि। मीमांसा पातंजलिहु येषटशास्त्र बखानि १८ चौ०। बालमीकि रामायण भाखा। व्यास महाभारत रचिराखा॥ बहुइतिहास पुराण बनाये। तिहिमग चलत लोग सुखपाये १९ पुनि हरि लोगन मनगति जानी। काव्यकि पदपदार्थ महँमानी॥ नाटक चम्पू काव्य रचायो। पुनि साहित्य शास्त्र प्रगटायो २० तिनसों शिक्षा कियो विशेखी। ताहुम असित अमित मतिदेखी॥ टीका करन प्रचार चलायो। ताहुम लोगन सलुभिनपायो २१ अल्प बुद्धि नर कलियुग देखी। प्रगटे भगवत अंश विशेखी॥ सूर दास अरु तुलसीदासा। अग्रदास नाभा सुखवासा २२ कृष्ण दास अरु नन्दहुदासा। जिनबहु भगवत चरित प्रकासा॥ भाषाभगवत चरित बखाने। देखिभक्तजन भक्ति लुभाने २३ पुनि दूसर उपाय यहठयऊ। निजमुख धर्म न भाषत भयऊ॥ और सहस्रन गुरु बनाई। करीभागवत धर्म बड़ाई २४ नदजा अरु निज पार्षदजैसे। ब्रह्माशिव सनकादिक तैसे॥नारद शुकाचार्य

हू जानौ। गीष्पति व्यास वशिष्ठहु मानौ २५ पुनि कलिमें निज अंशनतेरे। धारण किये रूप वहुतेरे ॥ रामानुज निम्बारक स्वामी। अपरमाधवाचारयनामी २६ भवल्लभाचार्यसुखसारा। हित हरिवंशरूप पुनिधारा ॥ विष्णु स्वामीहू पुनि भयऊ। रूप शंकराचारय लयऊ २७ जिनकी कृपा सुकोटिन जीवा। पापात्मा उद्धरे अतीवा ॥ फिरितीसरि विचार कियेऐसे। निज मन्दिर वा मूरति जैसे २८ भजन और तपवास स्थाना। जिमिवद्री आदिक वननाना॥ और आपने धाम सुहाये। जिमिमथुरा साकेतकहाये २९ और तीरथहुजानिय ऐसे। गंगा यमुनापुष्कर जैसे॥ जासुप्रभाव भक्ति परचारा। होतभयो भक्तन सुखसारा ३० धर्म भागवतकी दृढ़ताई। राखन भगवतको सुखदाई॥ जबजब आइ विघ्न कौ परई। तब अवतार जगत हरि धरई ३१ करि संहार विघ्नकर्त्तनको। थापत वहुरि सुनिज धर्मनको॥ गीता में हरि भाषो सोई। धर्महानि अर्जुन जब होई ३२ वृद्धिहोत अधरमकी जवहीं। मैं अवतार लेतहौं तवहीं॥ धर्म थापि दुष्टन वधकरिकै। भक्त सहाय करौं मुद भरिकै ३३ तासों आवश्यक चित दीजै। धर्म प्रचार परिश्रम कीजै॥ यासों हरिहि महा सुखहोती। धर्म प्रचारक भगवत जोती ३४ विमुख जीव हरि सन्मुखलावै। दश सहस्र हयमख फलपावै॥ भगवत कथा कहै कहवावै। भजन कुटी हरिभौन वनावै ३५ धर्मशाल वाटिका तड़ागा। कूप पाठशाला हुविभागा॥ पुनि ऐसे मन्दिर वनवावै। जासों भजनी जन सुखपावै ३६ भगवत चरितन काहँ वनावै। टीका पोथिन रचि सुखपावै॥ अधरम वर्जि सुधर्म लगावै। रहि इहिभांति जगत सुखपावै ३७ अवधपुरी आदिक अस्थाना। एकादशी आदि व्रत नाना॥ भगवत जन्म दिवस मुददाई। लोगनकरै प्रवृत्त सदाई ३८ येसव सामग्रीसुखकारी। धर्म भागवत वर्द्धनहारी॥ जेकोऊ भगवतके दासा। लोगन उद्धारत सहुलासा ३९ अथवा परउपकारीजेऊ। जिनकी मनोवृत्ति इहिभेऊ॥ तिनकी को करिसकै

बड़ाई। वेहैंरूप कृतार्थ सदाई ४० प्रगट करन निजयश संसारा। धर्म भागवत करत प्रचारा॥ तेऊ भगवतको अतिप्यारे। जिहि प्रभाव सहसन नरतारे ४१ धर्म भागवत जौन प्रचारा। आधिक्य ताक वार न पारा॥ सो बर्णन अब सुखदघनेरी। कथा अनंताचार्यकेरी ४२ लिखी प्रपन्नामृतमें जोई। सुमिरण भयो कहत अब सोई॥ ठाकुर द्वार नगर मगबीचा। गड़हा एक भयो अति नीचा ४३ तबहिं अनंताचार्य बिशेषी। मारग क्लिष्ट भयो सो देखी॥ फावड़ाहुटोकरिकरधरिकै। गड़हा भरन लाग मुदभरिकै ४४। छन्द बरवा। गर्भवती तिनकीतिय लीन्हो संग। ढोवनलागे मृतिका सहित उमंग॥ प्रसवकाल ढिग आयो तातिय काहँ। ढोने को दुखभारी भो मन माहँ ४५ भगवत निजबपु कीन्हो तब पनिहार। तिनकी तियसों भाषो हरिसुखसार॥ मैं ढोकरि टोवतहौं बदलेतेरि। तुम विश्रामकरौ अब थोरीदेरि ४६ कछुक देरमें लखो अनन्ताचार्य। तियबदले पनिहार करतहै कार्य॥ सोंटालै कर धाये कहतू कौन। भयोह मारे भागम साक्षीजौन ४७ दोहा। जब समीप पहुंचे तबहिं इकभागने सिवाय। भगवतको आयोनहीं दोसर कछू उपाय ४८ चौपाई। मन्दिर भागि घुसे हरिजाई। गयेअनन्ताचार्यहु धाई॥ देखोहरिको बपुक्षण तेही। मिट्टीमाहँ भरीसब देही ४९ यासों बूझिपरो यह हाला। दयाकरी तियपर गोपाला॥ तबकर जो रि अनंताचारी। हर्षसहित अस्तुति अनुसारी ५० जयति जयति जै त्रिभुवन भूषण। जनउर मोह तिमिर हर पूषण॥ जनसुखकार उवारनवारन। सुररक्षक नरभक्षक दारन ५१ जैजैजै दिनकर कुलकेतू। रक्षक धर्मनीति श्रुति सेतू॥ विप्रधेनु सुर संतन पालक। काम क्रोध मद लोभहु शालक ५२ इहिविधि प्रेम मगन मनवानी। अस्तुति करत भये सुखदानी॥ बहुरि अनंताचारय बोले। सुन्दरमीठेवचन अमोले ५३ उचित बात यहभक्तन काहीं। करैं प्रवृत्त सुधर्म सदाहीं॥ कौनौविधि

की विद्या जानै। ताही में हरिचरित बखानै ५४ बिन हरिचरित काव्य है कैसी। वस्त्रहीन सुन्दर तियजैसी॥ कौनो भाषामें निर्माणा। हरिगुण युत बुध करत प्रमाणा ५५ सोरठा। बीस भक्त सुखधाम निष्ठा धर्म प्रचारके। वरणौं तिनके नाम सुखदायक जिनके चरित ५६ चौपाई। तिनमें प्रथम द्रुहिणकी गाथा। वरणौं नाइ रामपद माथा॥ सुर ज्येष्ठ सब जगके ताता। भक्तन मांझ श्रेष्ठ विख्याता ५७ धर्मप्रचारक निष्ठा माहीं। जिन समान दोसर जग नाहीं॥ भगवतकी विभूतिहैं सोई। नाभि कमलसे जन्मे जोई ५८ निज अरु जग उतपतिको ज्ञाना। तप पश्चात भयो सुखदाना॥ पुनिपाई सामर्थ्य अपारा। भगवत धर्म जगत विस्तारा ५९ अबतक ब्रह्माको उपदेशा। चलोजात जगमाहँ सुदेशा॥ नारद सनकादिक ऋषिनाना। तिन कहँबहु उपदेशत ज्ञाना ६० जिन करि कर्म ब्रह्मपुरपावा। तिनहिं देत उपदेश सुहावा॥ तासों मुक्ति होत सुखदानी। इहिविधिकहत पुराण बखानी ६१ बाधा होत धर्ममें जबहीं। भक्तन सुरन होत दुख तबहीं॥ तब परमेष्ठी रचत उपाई। हरिअवतार हेतु सुखगाई ६२ अधरम टारि धर्म हरिधारत। दुष्टन बधकरि संत उबारत॥ इहिविधि कथा आत्मभूकेरी। कही पुराणन मांझ घनेरी ६३ दोहा। कही पुराणनके विषे धाताकी बहुगाथ। ताते मैं संक्षेप कहि नाइ रामपद माथ ६४ चौपाई। अब सीतापति पद उरधरि कै। शिवकी कथा कहौं मुद भरिकै॥ भक्तराज पदवी जिन केरी। धर्मप्रचारक बुद्धि घनेरी ६५ ह्वै आचार्य्य आपु जगमाहीं। उपदेशत बहु जनन सदाहीं॥ संप्रदाय विष्णुस्वामी के। हैं आचारय शिवजी नीके ६६ भयसेबड़े बादृत जबहीं। प्रगटे स्मार्त्त संप्रदा तबहीं॥ रूप शंकराचार्य्यक धारा। किय प्रवृत्त मत स्मार्त्त उदारा ६७ प्रगटो विष सागर महँ जबहीं। लागे जरन देवता तबहीं॥ लखि शंकर उरदया चढ़ाई। तिखन पान कियो हरपाई ६८ रामहिबन घूमत भ्रमपाई। लेन परीक्षा सती

सिधाई॥ रूप जानकीको तहँ कीन्हा। तिहिकारण शंकर तजि दीन्हा ६९ सती देह तजिहिम गृहजाई। जन्मी पारबती तनु पाई॥ तहँ बहुभांति तपहि मनु दीन्हा। अंगीकार शम्भु तब कीन्हा ७० ऐसे शम्भु महा सुखधामा। रसिक भक्त नृपदाहन कामा॥ इकदिन शिव गिरिजासन बोले। मृदुल मनोहर वचन अमोले ७१ एकबार मुख रामजु गावै। सहस नाम कर सो फल पावै॥ पारबती करि दृढ़ बिश्वासा। कहि प्रभुनाम गई शिव पासा ७२ तब शिव मन प्रसन्न अति भयऊ। गिरिजहि वाम अंग धरिलयऊ॥ एकसमय सनकादिक आई। दियप्रसाद भगवत करलाई ७३ आनँदसों तन सुधि बिसरायो। गिरिजहि भूलि आपु सबुखायो॥ नगजा शापदियो शिवकाहीं। नाहिंबिचार कीन्हो मनमाहीं ७४ जो निर्माल्य आजुते खैहै। सोतजिकाय नरक को जैहै॥ गिरिजाशाप दियोहै जबते। शिव निर्माल्य त्याज्य है तबते ७५ एकसमय शिवगिरिजा संगा। चलेजात मग सहित उमंगा॥ द्वै अस्थान ऊजरे देखी। कीन्हो शिव दण्डवत विशेषी ७६ पारवती पूँछासुख पाई। किहिदण्डवत कियो सुरसाईं॥ तब शिव शंकर आनंद धारी। गिरिजा सोंइमिगिरा उचारी ७७ बर्ष सहस्र बीति कै गयऊ। भगवद्भक्त इहां इकभयऊ॥ पुनिदूजे अस्थान प्रभावा। गिरिजहि शंकर भाषिसुनावा ७८ बर्षसहस्र बीति जबजैहै। भगवद्भक्त एक इतह्वै है॥ तासों येखेरे सुखदाई। पूजन करिवे योग सदाई ७९ ऐसे शिवकेचरित अपारा। बेद पुराण सुयश विस्तारा॥ बालरूप सियपतिकर ध्यावत। नित्यनवीन प्रेमप्रगटावत ८० दो०। इहिबिधिबरणी शंभुकी कथामहा सुखदाइ। घटज कथा अब बरणऊं रामचरण शिरनाइ ८१ चौ०। येअगस्त्य ऋषिपरम सुजाना। रामोपासक गतमद माना॥ बहुविधन आचारय सोई। कहो अगस्त्य संहिता जोई ८२ घटसे जन्मभयो है जासों। कुंभजनाम कहायो तासों॥ धरिगंडूप

माहिं सब सागर। पान कियो कुंभज मति आगर ८३ दानव देव वोझसे हीची। राज राज दिगभूमै नीची॥ लही याम्य दिग्भूमि उचाई। तबहिं अगस्त्य रहेतहँ जाई ८४ तब उनके प्रभाव को पाई। उत्तर ऊंची याम्यनिचाई॥ पुनिजिन के प्रभाव को पाई। विन्ध्याचल नहिं उठन कदाई ८५ मैत्रा वरुण मांगि यह लीन्हा। आशु गमन दक्षिण दिशि कीन्हा॥ जबलगि हम आवैं नहिं भाई। तब लगिपड़े रहो इहिठाईं ८६ तासों घटजन उत्तर जाहीं। पड़ारहत विन्ध्याचल ताहीं॥ कुंभजकी इमिकथा सुहाई। मैंवरणी संक्षेपहिगाई ८७ सोरठा। रामचरण उरआनि रघुवर दरशन चरणभजि। वरणौं सुखद बखानि स्वामी रामानुज कथा ८८ चौ०। जिमि भगवत जग के उद्धारा। हेतुलिये चौविस अवतारा॥ तिमिकलिकाल चारिवपु धरिकै। धर्मप्रकाशकियो सुद भरिकै ८९। छन्द बरवा। चारिसंप्रदाथापी अति सुख पाइ। प्रथमहि सनकादिक की आनँददाइ॥ निम्बारक स्वामी आचारय तासु। दोसरि श्री रामानुज स्वामी जासु ९० तृतियसंप्रदा शिवकी आनँद दानि। तिहिआचारय विष्णुस्वामी जानि॥ ब्रह्मसंप्रदा चौथी साधक कार्य्य। तासु माधवाचार यहैं आचार्य ९१ भक्तिरूप पुहुमी के धारण हेत। संप्रदायदिग्गज सम वीर्यनिकेत॥ श्रीयसंप्रदा चारों मेंहे जौन। आचारय रामानुज स्वामी तौन ९२ निज प्रभाव को गहिकै पतित अनेक। संसारार्णव तरिगे धारि विवेक॥ तरत जातहैं आजहुं भक्तिहि धारि। भक्तिप्रताप कि महिमा जिनकी भारि ९३ दो०। रविकर सम प्रगटित जगत उद्भव मरणप्रबंध। ग्रंथ प्रपन्नामृतविषे वरणी युत सम्बन्ध ९४ परम्परा प्रारंभ से रामानुजपर्यन्त। लिखी प्रपन्नामृत विषे कथासुखद अत्यन्त ९५ दो०। हरिभक्तन पदकमल भजि नाइरामपद माथ। स्वामी रामानन्द की वरणौं उत्तम गाथ ९६ चौ०। रामानन्द स्वामि सुखदायक। भगवद्भक्त सिद्ध सबलायक॥ आचारय हरिभक्ति प्रचारक। सुद

धारक अघओघ बिदारक ९७ जग समुद्र तारणके हेतू । निज संप्रदा बांध दृढ़सेतू ॥ जिनकीकृपा प्रभावहि लहिकै।बहुजनभे पवित्रमुद गहिकै ९८ जैसे भये अनंतानंदा । सुरेश्वरानंदहु सुखकन्दा ॥ सुखानन्दपीपा रैदासा । भावानन्द सेन सुखबासा ९९ धनाजाटहू अपर कबीरा । तरे कृपा जिन जगत गंभीरा ॥ येस्वामी दक्षिण दिशिमाहीं । चेला भे संन्यासी पाहीं १०० करि करि बिबिध भांति सों साधन । करत रहे भगवत आराधन ॥ एक दिवस फूलन के हेता । फुलवारिगे बुद्धि निकेता १०१ तहँ राघवानन्दजी स्वामी । रामानुज संप्रदाम नामी ॥ तिनके दरश तहां तिनपाये । तब राघवानन्द समुझाये १०२ है वृत्तांत तुमहिं कछुज्ञाता । आयुर्बल तव शेष न ताता ॥ अंत समय अपनो लखिलाजै । तासों भगवत शरण गहीजे १०३ रामानँद सुनि अचरज पाये । चलिसंन्यासी गुरुढिग आये ॥ आइ सकल वृत्तांत बखाना । तबतिनहूं देखो धरि ध्याना १०४ जानत भये मृत्यु सतिभाऊ । परकछु नाहिं करिसके उपाऊ ॥ दोनों जने चले तहँ तेरे । गये राघवानँदके नेरे १०५ कृपाराघवानँदअति कीन्हा । तिनहिं मंत्र उपदेशहि दीन्हा ॥ पुनि रामानँद प्राणसुहायो । दशम द्वार ब्रह्माण्ड पठायो १०६ टरो मृत्युको अवसर जबहीं । किय चैतन्य जियाइक तबहीं ॥ चिरंजीवि कहि आशिष दीन्हा । रामानँद सेवा बहुकीन्हा १०७ बहुत काल गुरु सेवाकरिकै । तीर्थाऽटनहि चले मुद भरिकै ॥ तीर्थ करत बद्रविन आये । वाराणसी माहँ पुनि छाये १०८ पंच सुरसरी घाट सुहायो । तहां बासकहि आनँद पायो ॥ तहां पादुका अजहुं विराजत । दर्शन करत अखिल अघ भाजत १०९ गये बहुरि गुरु सेवामाहीं । आचारिन पूछो तिन पाहीं ॥ क्रिया और आचार घनेरा । तिनमें भेद परो तिन हेरा ११० अपने से न्यारे तिन कीन्हा । तब राघवानन्द कहि दीन्हा ॥ तुम अपना पथ अलग चलाओ । राम

भक्ति जगमहँ प्रगटाओ १११ रामानन्द सुनत सुख पायो। रा-
मावत संप्रदा चलायो॥ रामानन्दीहू तिहि भापत। सीताराम
ध्यान उरराखत ११२ दो०। आचारिनकी रीतिपर नहिं यामें
आचार। कौन शास्त्र सिद्धांत सो यह मनमें निरधार ११३ चौ
पाई। जो भगवत शरणागत भयऊ। तासुवरण बन्धन छुटि
गयऊ॥ अच्युत गोत्रटेक सो धरई। भोजन एकपंक्ति सबकरई
११४ सोयह सकल शास्त्रअनुसारा। पञ्चरात्र नारदहुपुकारा॥
कीजिमि आश्रमचारि बखाने। तिमि हरिभक्ति आश्रमहुजाने
११५ सबहरिभक्त वरणहैंएका। कहतभागवत तासुविवेका॥
सावधानद्विजकर्म नहोई। परहरिभक्त होइनहिंसोई ११६ नीच
वरणहरि भक्तिहिधारै। ताहिश्रेष्ठ सदग्रन्थपुकारै॥ ताकी अहै
एकपरमाना। हैप्रसिद्ध सोकरतबखाना११७ जबक्रतुनृपति युधि
ष्ठिरकीन्हो। सुरमुनि विप्र पूजिमुदलीन्हो॥ पुनिहरिसों बोले
सुखपाई। पूरणयज्ञ भईकीनाई ११८ तब श्रीहरि नृपमणिसों
बोले। सुन्दरवचन मनोहरखोले॥ इहिथल एकशंख धरवाइय।
तासोंइहिविधि वचनसुनाइय ११९ पूरणयज्ञ भयोजोमोरा। तौ
तुमकम्बु करौ धुनिघोरा॥ यहसुनिनृपदर तुरितधरायो। तासों
सोई वचन सुनायो १२० सुनत शंखबोलो नहिं लेशा। तब
राजा मनभयो अँदेशा॥ करिप्रणाम तबकह नृपधीरा। यहकस
चरितभयो यदुवीरा १२१ पूजे सुरमुनि विप्रबुलाई। कस न पूर्ण
क्रतुभई गुसाई॥ तब श्रीहरिकह सुनहु नरेशा। आये द्विज
मुनि ऋभवसुरेशा १२२ परमभक्त वाल्मीकि सुजाना। ताको
नृपति बोलि नहिं आना॥ ममहितदेत भक्त तनमनधन। तिन
समता न पाव सुरमुनिगन १२३ ताको नृपमणि तुरित बुला
इय। पूजि यज्ञ पूरणफल पाइय॥ सुनत नृपति निजबन्धु
बुलाये। वालमीकिगृह तुरित पठाये १२४ तासु भुवन पहुंचेते
जाई। कहि न जाइ शोभा अधिकाई॥ सुन्दर भुवन अनूपम
सोहा। देखत सुरनर मुनिमनमोहा १२५ तुलसीवृन्द अनूपम

राजत । रामनाम अंकितगृह छाजत ॥ भुवनमध्य इकभुवन
विराजत । उपमा तासुदेत कविलाजत १२६ दो० । श्यामपीत
उज्ज्वल हरित लोहित धूमप्रकाश । चित्रितसो मानहु तहांकी
न नवग्रहवास १२७ चौ० । तहँ हरि चित्रशाल बहुराजत ।
लखि प्रकाश रविशशि करलाजत ॥ तेहि मन्दिर सियराम
विराजे ।कोटिन माररूप लखिलाजे १२८ वालमीकि तहँईं सुख
छावत । करिपूजासो चमर डुलावत ॥ तुलसीमाल गलेबिच
धारी । तिलक ललाट महाछबिभारी १२९ पाटम्बर कटि देश
सुहायो । रामनाम रसना रटलायो ॥ यहिविधि भक्ति स्वपच
की देखी । नृपति बन्धु सुखलहे विशेषी १३० जाइ सामुहे वि
नयसुनाये । तुमहिं लेनहित नृपति पठाये ॥ सुनि इमि बाल
मीकितबबोले । सुन्दर वचनमनोहरखोले १३१ मैं जगसबजातिन
मेंनीचा । किहि विधि चलौं मुनिन के बीचा ॥ तब तिन तासु
विनयबहु करिकै । लैआयेनृपढिग मुदभरिकै १३२ कृष्णायसु
लहि तबनृपराई । धोयेचरण स्वपचकेजाई ॥ गहिकरताहि पीठ
बैठारा । भोजनअग्रधरे पुटथारा १३३ व्यंजनछरसनामकोजाना ॥
सबमिलाइएकै सो साना । मनमें द्रुपदसुता अनखानी ॥ यह
कसव्यंजन भेदनजानी १३४ स्वपचग्रासजबमुखमें डारा । अल्प
शब्द सों शंखपुकारा ॥ देखिकहोइमि नृपकुलराई । यहकसचरित
भयोयदुराई १३५ ह्रस्वशब्ददर बोलनभयऊ । सुनिहरिद्रुपदिहि
पूंछनलयऊ ॥ तुमनिजमनमें काहविचारा । जासोंकम्बुन शब्द
उचारा ॥ १३६सुनतग्लानि द्रौपदिमनआई । तबदरकीन्हों शब्द
महाई ॥ स्वपचजेइँकरि अचमनलीन्हा । तबताम्बूलनृपति मणि
दीन्हा १३७ करिसनमान विदानृपकयऊ । पूरणयज्ञजानि सुद
भयऊ ॥ इमिहरिभक्तहिदीनबड़ाई । विप्रदेवमुनि साननवाई१३८
भक्तिवंतनीचहु हरिपावै । भक्तिहीनकल उच्चनभावै ॥ समदमनि
यम ज्ञानविज्ञाना । जपंतपव्रत सुकर्ममहाना १३९ भक्तिसमान
हरिहि प्रियनाहीं ॥ वरणेवेद पुराणनमाहीं । रामानँदसोंमग प्र

गटायो ॥ चलतदुःखतजि सुखसरसायो १४० गंगासागरसंग-
मजहँवां । कपिलस्थानगुप्त भो तहँवां ॥ रामानन्दजाइ सुदभीने ।
सोइथल प्रकटित मुनिकीन्हे १४१ सिद्धनमाहँ कपिल अव-
तारा । लै श्रीहरि सन्यास प्रचारा ॥ होत समाज जासु थल
भारी । कहौं नाभि कछु मति अनुसारी १४२ छंद रामगीतिका ॥
वन्दियै पद कपिलमुनि के वत्समोद बढ़ाइ । जासु उ-
त्पल चरणरजसों हृदयभक्ति दृढ़ाइ ॥ शुभग टापू मध्य राजत
तोयनिधिके बीच । दरश करि करि चढ़िविमानन जात सुरपुर
नीच १४३ संपदा जहँ चारि बावन द्वारकी अतिभीर । रंगरंग
फहरत पताके वायरव गम्भीर ॥ मिली गंगा सिन्धुसागर गंग
सोहतजाहँ । उठत घोरतरंग लपभ्रप जात ऊरधताहँ १४४ छपकि
फफ फुफ्कारि चिघरत अग्निठाट बहूत । वजरपेन्स जहाज
डोंगी मोरपंखि अकूत ॥ भोड़िया पलवार कच्छा कटरश्रीपं प-
टेल । अश्वदोर उलाक अरु पंसोइ धावत हेल १४५ चहूओर
समाज याहिविधि सिंधुमांझ लखात । उतरि तटवर नारि झुण्डन
मध्यटापू जात ॥ करहिं मज्जन गंगसागर दानदै सुखपाइ ।
जियालाल मुनीशकेपद पूजहीं मुददाइ १४६ चौ० । आवत
भये मकररवि जबहीं । यह उत्साह लखोहमतबहीं ॥ बनैससैतिस
समआयो । तबदेखो अदृष्ट नहिं गायो १४७ सोई रामानन्दकृपा-
लय । प्रकटकियो मुनिवरको आलय ॥ ऐसे रामा नन्द उदारा ।
प्रगटि सुमारग जगदुखदारा १४८ दो० । सियपति चरणमनाइकै
सन्तचरण धरिध्यान । कृष्णदासपय हारिकी करौं कथा शुभगान
१४९ रहे अनन्तानन्दके शिष्य कृष्ण जी दास । ब्राह्मणकुल
में जनमियो भये परम सुखवास १५० ऐसे भगवतभक्त कहाये ।
तासुनकी जगपारलगाये ॥ कील्ह अग्र अरुकेवलरामा ।
हठीनरायण देवानामा १५१ पद्मनाभ कल्याण गदाधर । चेलास-
तनरहेगुण आगर ॥ तेअतिसिद्ध भयेसुखकारे । लाखनभवनि-
धि पारउतारे १५२ दोहा । करतरहेयोगीप्रथम गलताजी में

परवस चित्त चुरावन हारी। कामादिक खलविटपकुठारी॥ सोई भापि महामुद लहिहौं। वात्सल्य निष्ठामें कहिहौं १६९ विष्णु खानि संप्रदा केरी। जन उरधारि उपासन हेरी॥ कोटिन भगवत चरण सिधाये। नानाजग दुखदूरि बहाये १७० यहगुरुद्वारा अति सुखकारी। हैगोकुल गुजरात मझारी॥ परंपरा केगुरु हैं जोई। तिनके नामकहतहौं सोई १७१ शिवजी परमानँद मुनि गानिये। आनँद मुनिप्रकाश मुनि मानिये॥ श्रीकृष्ण मुनिनारायण मुनि। जयमुनि श्रीमुनि पद्मभट्ट गुनि१७२ शंकर भट्टभट्ट गोपाला। श्रीवर भट्टहुभट्ट कृपाला॥ श्यामहु रामहु संतभट्ट गुनि। कृष्ण दिवाकर दिनकरहू पुनि १७३ दो०। मधुनिधान विद्याधरहु ज्ञान देवहू भट्ट। शांत भट्टसुख देवहू अरुशिव देवहु भट्ट १७४ चौ०। क्षमादेव संतोषहु देवा। ध्यान देव विज्ञानहु देवा॥ अपर दयाल देवकहि गाये। बहुरिधीर जलदेव बताये१७५ महाचार्य्य तत्याचुत जानौ। सुअहु नृसिंहाचार्य्य बखानौ॥ रुद्राचार्य्य सुबुद्धा गुनिये। परबोधाहु प्रबुद्धा भनिये१७६ भगवंताचारय सुखखानी। रामेश्वराचार्य्य मुददानी॥ सहित अनूपा सुदयाचारय। अपरब्रह्मविधि मरयाचारय १७७ लक्ष्मीनारायण आचारी। ज्ञानहुनाम देव सुखकारी॥ देव तिलोचन विष्णुस्वामी। लक्ष्मणभट्ट जगतमें नामी १७८ सोरठा। रामचरण सुखखानि सुखदायक दारक दुरित। तिनहिं वन्दि मन आनि साधुचरित वर्णनकरौं १७९ चौ०। कथा वल्लभाचारयकेरी। वरणौं सुखदायक मुदढेरी॥ परम भागवत प्रेमी अधिका। जिनचरित्र अघ खगगण वधिका १८० भवनिधि पारउतारन हेतू। पोतचरित्र साधुकुल केतू॥ प्रथमहि जन्मस्थान विहाई। गोकुलमें आये सुखपाई १८१ फिरिवृन्दावन आवत भयऊ। भगवत आराधन मनदयऊ॥ यह मनोर्थ भगवतसे कीना। वात्सल्य निष्ठा सुखलीना १८२ ताकीरीति जगतहु होई। इहिकारण गोकुल वसिसोई॥ सेवापूजा हरिकी कराई।

अति आनन्द उमँगिमन भरई १८३ वातसल्य निष्ठाकी रीती। साधी इमिसो कहत नवीती ॥ आयसु दियोस्वम भगवाना। निज विवाह तुमकरो सुजाना १८४ पुनि भगवान प्रेरि निज माया। एकविप्र तिनपास पठाया॥ कन्यालाइ दियो द्विजराई। वेदरीति भाँवरी फिराई १८५ कछुक दिवसबीते इहिभाँती। महा मोद बहुविधि सरसाती॥ विट्ठलनाथ जन्म तबलयऊ। अतिवात्सल्य निष्ठसो भयऊ १८६ दो०। वातसल्य निष्ठाविषे भक्तन गाथामाहिं। तिनप्रबंध शुभ भाषिहौं सुखदायक सबकाहिं १८७ चौ०। सातपुत्र जन्मे तिनकेरे। जगमहँ जाहिर सुयश घनेरे॥ गादीसातभई तिननामा। गोकुलमाँझजहँ शिरनामा १८८ सातवार कोऊ नौवारा। भोग लगावत बिबिध प्रकारा॥ धारिस्वकी याभाव राधिकहि। आराधत गुणज्ञान साधिकहि १८९ महारानि करि तिनकहँ जानत। पूरणब्रह्म कृष्ण कहँ मानत॥ यह संप्रदा अलौकिक भाँती। भावकथा इहिकहि नसिराती १९० वाबानन्द यशोदा रानी। लाड़लड़ाये हरिसुख दानी॥ तैसहि भावगुसाँई राखत। गोकुल में आनँद रसचाखत १९१ आँगन सेघर ऊंचन राखत। यह विचार निजमानस साधत॥ बालक चलत घुटरुअन धाई। जासों गिरें न कुवँरकन्हाई १९२ शयन समयछुतन उचरहीं। काचिनींद हरिजागि न परहीं॥ ऐसेअमेत अलौकिक भावन। धारि हियेगावत यशपावन १९३ पुनि सो राखत दृढभावै। शयन समय कोऊकस आवै॥ जगधन है चढ़ावन जबहूँ। भुवनकपाट न खोलत तबहूँ १९४ तीन री छाजे पुरराई। सत्यबात यहझूंठ न भाई॥ वर्त्तमान अबहीं ह भावा। सातौगद्दिन में सरसावा १९५ दो०। चालिस तीस वरसहू सहससाल परमाज। मुद्रा आवत होतव्यय रागभोग स्थान १९६ ऋणीरहत एतेहुपर गोकुलस्थ गोसाइँ। पदवी विख्यातहैं इनसम दूजोनाइँ १९७ भक्तिगुसाइनके विषेचलन जिहि भाँति। माड़वार गुजरात में हैं वहुकही न जाति १९८

वंशवल्लभाचार्य्य के भयेभक्त वहुलोग । भगवत पारायण भये जासुकृपा तजिशोग १९९ चौ० । लखिय वल्लभाचार्यकभावा । भावसमान नामनिज गावा ॥ वल्लभ गोपजाति कोकहई । जामें नन्दरायजीरहई २०० तासोंवल्लभ नामकहाये। गोपवंशविख्यात दिखाये॥इकवइ एक साधु व्रजआयो । वटुवा पादप डारझुलायो॥ २०१ हरिसंपुट झुलाय करितहँवां। गयो वल्लभाचारय जहँवां ॥ दर्शन करि फिरिकै तहँ आयो । हरिवटुआ ताथलनहिंपायो ॥ २०२ तव आचारय सौंहीं गयऊ । निजवृत्तांत सुनावत भयऊ ॥ सुनि वल्लभाचार्य्य हसिवोलत । कस सेवक स्वामिहि तजिडोलत २०३ साधु विनय करिकै तहँआयो । वटुआ सतन झुलत तहँ पायो ॥ तिन समीप साधू पुनिगयऊ । सव वृत्तांत निवेदन कयऊ २०४ आज्ञा आचारय यह कीन्हीं । कस सेवक स्वामिहि नहिं चीन्हीं ॥ सुनत साधु तिनकी यहवानी । चरणन परो महासुख मानी २०५ पुनिउठिकै हरिसम्पुट लयऊ । भगवत आराधन मन दयऊ ॥ सत्य उपासक कोहै एहा । जिमि मूरुखपाले निजदेहा २०६ जिमिकामी विषया मनलावै । शिशिर गरीव शिखी सुखपावै ॥ चातृक सुखी स्वाति जलवरषे । मन्मथभ खुवारिंद लखिहरषे २०७ सेवक स्वामि प्रीतिइमि राखे । मन मधुकर पदाब्ज रसचाखे ॥ असनहिं स्वामी झूलत डारा । घूमत आप फिरत वाजारा २०८ दो० ॥ अववल्लभ आचार्यकी परम्परा गुरुजोइ । गद्दी हर्षितवर्णऊं सुनहु संतजन सोइ २०९ चौपाई ॥ विष्णु स्वामी प्रथमहि जानो । दोसर लक्षण भट्टवखानो ॥ वहुरि वल्लभाचारयलेखो । विट्ठलनाथ भक्ति वपुदेखो २१० गोकुलनाथ अपर रघुनाथा । यदुनाथहु घनश्याम सुगाथा॥ वालकृष्ण गोविन्द स्वरूपा । गिरिधरराय सुभक्त अनूपा २११ वहुरि नाम वृन्दावन दासा । कृष्णदासदामोदर दासा ॥ स्वामी शुकदेवहु सुखपागे । हरि चरणहु हरि यश अनुरागे २१२ स्वामीतुलसीदास सुहायो । पुनिहरि शरणजीव

हरिपायो ॥ मोहनदासहु सीतारामा । प्रकटेपुनि तहँ मनसारामा २१३ दो० । कथा माधवाचार्य्यकी अघनाशन सुखखानि । सोई अब वर्णनकरौं सियराम उरआनि २१४ चौ० । भयेमाधवाचारय स्वामी । ब्रह्मसंप्रदामें अति नामी ॥ यदपि ब्रह्मसंप्रदा पुरानी । तदपि आचारय गुणखानी २१५ कीन्हो ताहि प्रकाशितभारी । नाम संप्रदा माधविधारी ॥ ब्रह्मसंप्रदाइमिकहिगाये । प्रथमहि हरि ब्रह्माहिबताये २१६ ब्रह्मासकल जगतपरकाशी । सो संप्रदा ब्रह्मसुखराशी ॥ कोगौड़िया संप्रदाभाषत । कोउ महाप्रभुकी अभिलाषत २१७ जाकोअभ्यन्तर इहिभांती । प्रभुचैतन्य महा सुखपांती ॥ गौड़देशकेरहनवाले । इहिसंप्रदाकाहँप्रतिपाले २१८ भये भक्तआचारय नामी । हरिअवतार जगत सुखदानी ॥ शिक्षाकिये गौडबंगाला । करिहरिसौंहहरे दुखजाला २१९ याहीसों यहनाम सुहायो । महाप्रभू गौड़िये कहायो ॥ उरपी कृष्ण गांव सुखदाना । द्राविड़देश मध्य ठहराना २२० तहँ माधवाचार्य्य गुण खानी । प्रगटे ब्रह्मवंशमें आनी ॥ उड़पी कृष्णगावँहै जोई । कांचीपुरीतें नैऋतसोई २२१ शारीरक जो सूत्रसहाये । अरु गीतापरभाष्य बनाये ॥ याउपासना निश्चयएहा । ईश्वररहत सदा सँगदेहा २२२ ताकी आयसुको जबपावत । मायासकल जगत उपजावत ॥ यद्यपि याहि निष्टाकेमाहीं । नारायणकर ध्यान सदाहीं २२३ जबतेभये माधवाचारी । तिन उपासना इमि विस्तारी ॥ कृष्णकेर अवतार वदारा । वर्त्तमान सम्प्रदाममझारा २२४ श्रीगोलोक निवासीजोई ॥ कृष्णानँदघन मानतसोई ॥ अरु माधुर्य्य निष्ठसे ध्याना । निष्ठा उन्नीसवीं मगाना २२५ युगलस्वरूप ध्यान उरधारत । कामक्रोध मदलोभ विदारत ॥ राधामहरानी कर ध्याना । धरि पराकिया भावकरगाना २२६ पर ईश्वरताहू अद्वैता । सबजगभरता पूर्णब्रह्मता । उद्भव पालन लयकर हेतू । जानत कृष्णहि सकल निकेतू २२७ लाखनभक्त सिद्धभेभारी । यह संप्रदा मांझ मुदधारी ॥ दक्षिण देश म बहु

विस्तारा। ये संप्रदा महा मृतधारा २२८ व्रजमें वंगालेहू माहीं। हैंप्रकाश दक्षिण समनाहीं॥ गुरुद्वार वृन्दावन माहीं। बहुप्रसिद्ध वरणौं तिनकाहीं २२९ जिमिगोविन्द देव अस्थाना। अपर मदन मोहन भगवाना॥ अरु शृंगार वटहु इत्यादी। वास करत जहँ पुरुपअनादी २३० इहि संप्रदामांझ गुरुद्वारा। हैं सहसन नहिपाइयपारा॥ श्रीनारायण अजहिंवतायो। ब्रह्मासों नारद मुनिपायो २३१ वेदव्यास पावमुद धारी। तिनसोंलहो सुबुद्धाचारी॥ लहमुद सहित नरहराच रय। पायो बहुरिमाधवाचारय २३२ जाह्नवितीरथहू विद्यामुनि। तीर्थमहानंदराजेन्द्रहुमुनि॥ मुनिजय धर्महु ईश्वरपुरीहु। तदुपरित्रेणी माधवपुरीहु २३३ दो०। कथा माधवाचार्यकी दुखनाशन सुखसार। परम्पराहु कछुकहो भक्तमाल अनुसार २३४ सो०। सीयरामपद नौमि संत चरण मनलाइकै। भक्तचरित अतिगौभि नित्यानंदकथा कहौं २३५ चौपाई। नित्यानंद भक्तभेभारी। जिन महिमासब जगत पसारी॥ भगवत धर्म प्रचारक ऐसे। भानु भानु जगभापितजैसे २३६ देशगौड़ वंगालमझारा। रहअधर्म पाखण्ड अपारा॥ ताहिदूरिकरि भक्ति चलाई। रवितप हरजिमि हरिकर छाई २३७ नदिया शांती पुरजनु लीन्हों। परदुख देखिमहा तपकीन्हों॥ गौड़देश के लोगन काहीं। भगवत धर्मविमुख लखजाहीं २३८ श्रीभगवत तपदेखि महाना। तबतिनको दीन्हो वरदाना॥ नित्यानंद महामुद धारी। गुरुमहंत रूपनिज कारी २३९ भगवद्भक्ति केर उपदेशा। लागे करननरन तिहिदेशा॥ भक्तिप्रचार अबहुँजिहि भाँती। हैतिहि देशन सो कहि जाती २४० भगवत परायण बहुलोगा। गृहपरिवार तजहिं सुखभोगा॥ बसत जाइवृन्दावन माहीं। उनसम प्रेमनदोसर काहीं २४१ ऐसे भगवत विमुख न काहीं। दीनलगाइ सुमग्ग माहीं॥ मैंहू सोइ शरण तकिआयो। जानि कृपालु सुभाव सुहायो २४२ पाँच सुभट बाँधिनि दृढ़धरिकै। लेहुछँड़ाइ दया उरकरिकै॥ जियालाल शठबुद्धि गँवारी॥

किहि विधिअस्तुति करै तुम्हारी २४३ दो० । जियालाल भव रजु बँधो ताहि छोरिये नाथ । पाहिपाहि तवशरणहौं नमतमही धरिमाथ २५४ चौ० । नित्यानन्द कथा इमिगाई । गाथाअपर कहौं सुखदाई ॥ श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु । नित्यानन्दकि भाईयुत विभु २४५ श्रीव्रजराज अंशअवतारा । लीन्हो अघनाशन धर्मधारा ॥ गीतामें हरिवचन प्रकाशे । बढ़त अधर्म धर्म जबनाशे २४६ तब अवतार भूमिपरधारौं । धर्मथापि अधरम संहारौं ॥ ताहीहितलियो अवतारा । गौड़देश बंगालमझारा २४७ भगवतभक्ति तहाँ नहिदेखी । रहीधर्म विपरीति विशेखी ॥ बंगालेमें लै अवतारा । प्रगट उदर सचीके द्वारा २४८ सातवर्षके भये कृपाला । केशव भट्ट तहाँ तेहिकाला ॥ काश्मीरी ब्राह्मण विद्वाना । शास्त्रविवाद आइसोठाना २४९ तेहि परास्त क्षणमें प्रभुकीन्हो । भगवद्भक्ति दयाकरि दीन्हो ॥ एकसमय प्रभु सुखसोपागे । जगन्नाथस्वामी के आगे २५० प्रेमसहित कीर्तन इमि कयऊ । तनकीदशा भूलि निजगयऊ ॥ भये चतुर्भुजतन्मयह्वैके । लागकहनलोग यहज्वैके २५१ यह इसपुरीकेर परभावा । कौन सिद्धता प्रगट दिखावा ॥ तब विश्वास हेत तिहि काला । भक्ति कि दृढ़ता करन कृपाला २५२ धारण करत भये षट बाहू । दृढ़ विश्वास भयो सबकाहू ॥ पुरीमध्य आजहूँ कृपाला । षट भुज दर्शन देत विशाला २५३ दो० । ऐसे प्रभु तारण तरण लीन्हो महिं अवतार । जियालाल वरणन कियो निज मति के अनुसार २५४ रूप सनातन की कथा कहौं महा मुददाइ । जासु चरित सब दुख हरण सुनि कलि कलुष नशाइ २५५ चौ० । रूप सनातन द्वौ सगभाई । भगवत भक्त भये अधिकाई ॥ गौड़ देश बंगाल कि बासी । भये भागवत धर्म प्रकासी २५६ पाये रहे मलिक अधिकारा । अति धनवान भरे भण्डारा ॥ भई एक दिन इहि विधि बाता । गिनत रुपैया भयो प्रभाता २५७ आई ग्लानि दुहुंन मन माहीं । पुनि विचार कीन्हों निजपाहीं ॥

देखौ व्यर्थ कार्य मनभूला । आलस लहो नहीं रहफूला २५८ भजन समाज बैठतेकबहीं । पूँछत रहत घड़ी प्रति तबहीं ॥ कितनीराति गई सबपाहीं । ज्ञान रहो भूँठे में नाहीं २५९ यह विचारि मन गुरु ढिगआये । नित्यानंदहि शीशनवाये ॥ तिन सों आइक शिक्षा माँगी । आज्ञा दियो गुरू सुखपागी २६० तुम व्रज भूमि जाउ इहिकाला । वन अरुथल विहारनँदलाला॥ भये गुप्त सब कालहि पाई । तिनको प्रगटकरौ तुमजाई२६१ रस विलास माधुर्य चरित्रा । प्रगटौ लीला ग्रंथ पवित्रा ॥ गुरु आज्ञा माथे निजधरिकै । दोनों बंधु चले मुदभरिकै २६२ चलत चलत व्रज अवनिम आये । देखत पुहुमि महासुखपाये ॥ भूरम्यता पवनसुखदाई । हरित भूमि मनहरत बनाई२६३ प्रीतमप्रिया प्रेम में फूली । भेउन्मत्त दशातन भूली ॥ प्रेमानन्द मगन भे भारी । विग्रह सुखदुख दिये बिसारी २६४ जब कछु सुधिशरीर में कीन्हो । व्रज लोगन सों पूँछ न लीन्हो ॥ है व्रज कहाँ सुदेहु बताई । तिन में बोलो एक रिसाई २६५ तोको सूझिपरत को नाई । यह व्रजहीतौ परतलखाई ॥ रूपसनातन सुनिसुखपाये । मथुरा पुनि वृन्दावन आये २६६ देखत वृन्दावन की शोभा । यमुन प्रवाह देखि मन लोभा ॥ कानन हरित सघन अति छाया । हरत भानुकर भास निकाया २६७ ढूंढ़त ढुंढ़त भेवड़ि वारा । बस्ती मिली भुवन दुइचारा ॥ पूजन गये वहाँ के बासी । वृन्दादेवी सुखकी रासी २६८ चलेतहाँते वृन्दा जहँवाँ । देखत भये लोग सब तहँवाँ ॥ दूधदही चढ़ाइ चलि गयऊ । तबनिश्राम तहां तिन लयऊ २६९ पूजनहोत रहो भूमाहीं । मूरति प्रगट रही नहिं ताहीं ॥ सोवत इनहिं निशामें देखी । देवी दीन्हो दरश बिशेखी २७० है स्वरूप इहितीर हमारा । तिहि निकारि थापौ सुखसारा ॥ थापो सो गुसाइँ सुख साजा । अबहूँ सोई रूप बिराजा २७१ बचागऊदेतहैं जबहीं । पहिले दूध चढ़त तब तिनहीं ॥ पुनिगोविन्द देव मुदभीने । रूपगुसाइँहिं दरशन

दीने २७२ स्वप्नमांझ तिन रूप निहारी। थापितकीन्हो तिन हिं निकारी॥ तिनकीपूजा करिबेहेतू। जीवगुसांई बुद्धिनिकेतू २७३ रहेभतीजे इनके सोऊ। आयेरहे त्यागलै ओऊ॥ तिनहीं को यह आयसु दीन्हा। उनआज्ञामाथे धरिलीन्हा २७४ राजा मानसिंह आमेरा। मन्दिर बनवायो तिनकेरा॥ बनतरहो तिन दिन सुख छावा। किला अकबराबाद सुहावा २७५ लाल उपलकहुँ जान न पावै। राजा इत मन्दिरबनवावै॥ बाद शाह से आज्ञा लैकै। मन्दिरलाल रचो मुदकैकै २७६ तेरह लाख रुपैया ताहीं। लगो मँजूरि मसालेमाहीं॥ अबतक वह मन्दिर सुख दाता। बृन्दाबनमें है विख्याता २७७ समय मुहम्मदशाह कि जोई। भयो चरित बरणतहौं सोई॥ सुनो नृपति जयसिंहउदारा। श्रीबाराहपुराण मँझारा २७८ श्रीगोविन्द देवके दरशे। पुनि तिन चरणन मस्तक परसे॥ आवागमनजीवकर नाशै। जिमि तमहर रविकरपरकाशै २७९ करिअतिप्रीति प्रार्थना ताहीं। मूरतिलैगो जयपुर काहीं॥ वहांविराजमान भगवाना। तासु प्रीति लखिकै सुख माना २८० प्रीतिवश्य सचराचर नायक। दुष्टदलन संतन सुखदायक॥प्रीतिसमेत हरिहिजे भजहीं। तिनको संग कबहुं नहिं तजहीं २८१ बृन्दाबनमें दोसर रूपा। थापितहोत भयो सुअनूपा॥ श्रीगुरु आयसु रूप गुसाईं। वा शिव आप सुस्वप्न पाईं २८२ रचे ग्रंथ बहुभक्ति रसामृत। रस सिद्धान्तहु भगवत अमृत॥ पांचलाख अश्लोकन माहीं। रचनाकिये ग्रन्थबहु काहीं २८३ युगलकिशोर ध्यान सुखसारा। तहँई एक श्लोक मँझारा॥ श्रीराधा कवरी सुख भीनी। नागिनि के सम उपमा दीनी २८४ देखि सनातनजीतिहि काहीं। यह विचार कीन्हो मनमाहीं॥ काव्यरूप जो माधुरि कीन्हो। प्रीतम प्रियाभाव नहिं चीन्हो२८५ वेणी प्रिया महासुखकारी। क्रूर जन्तुकी उपमाधारी॥ अति सुकुमारि परसमृदुगाता। चित्रसांप जाहि न लखि जाता २८६ यहां ध्यानपर खटकत

सोई । नागिनि उपमा वेणि कि जोई ॥ एक दिवस घूमत वनमाहीं । देखा एक वृक्षकी छाहीं २८७ बालक एक खड़ो अति नीको । सुन्दर रूप भावतो जीको ॥ तासँग अमित लड़िकिनी सोहैं । देखत रूप मारातिय मोहैं २८८ सोहत एक बाल तिनमाहीं । उपमा तीनिभुवनमें नाहीं ॥ सुन्दरपरे हिंडोरा राजें । तिनपर भूलि महासुख साजें २८९ अतिसुन्दरीदारिका जोई । ओढ़ेसुरँग चूनरी सोई ॥ तामें केशपाश इमिसोहत । लहलहात नागिनि मनमोहत २९० देखिगुसाइँ सनातनजीने । अतिघबराइ पुकार सोकीने ॥ यहनागिनि सुन्दरिशिर ऊपर । मारो कोगहि डारो भूपर २९१ यहकहिकै बेसुध ह्वैगयऊ । सावधान कछु अन्तर भयऊ ॥ रूपगुसाईंको अश्लोका । सुमिरण भयो गयो तब शोका २९२ जानो दूरिकरन सन्देहा । रचो चरित्र लाड़िली एहा ॥ आवतभये रूपजी पासा । परिक्रमाकरि सहित हुलासा २९३ तिनसों वरणो सकल हवाला । देखो जो कानन तिहिकाला ॥ रूपतिबड़े सनातन लेखे । परहरि भक्त तिनहिं अति देखे २९४ तासों बड़ोजानि मनमाहीं । कीनप्रणाम प्रदक्षिण काहीं ॥ सांची बड़ो जुहरिको ध्यावे । वयपैप्रीति न बड़ो कहावे २९५ रूपगुसाइँ मोटतनवारे । रहे सनातनअति सुकुमारे ॥ परिक्रमा नित ब्रजकी करहीं । युगुलकिशोर ध्यान उरधरहीं २९६ एक दिवस सो परमहुलासा । आये रूपगुसाईं पासा ॥ रूपगुसाईं चित्त विचारा । अहे सनातन अति सुकुमारा २९७ करतरहे भोजन घरमाहीं । सबको प्रासहोत तस नाहीं ॥ तेसूखीरोटी अब खाहीं । कैसे तृप्तहोत मनमाहीं २९८ छन्दगोपाल । इहिविधि ध्यानकरत मनमाहँ । आइलाड़िलीजी यों ताहँ ॥ धारिरूप ब्रजवासीबाल । तिनसों बोली वचन रसाल २९९ बच्चा जनो हमारी गाय । सामग्री दीन्हीममभाय ॥ अस कहि दिये अदनके साज । कीजो खदन हमारो आज ३०० दौगुसाइँसो असन बनाइ । दीन्हो हरिको भोगलगाइ ॥ पातव

भे सोई परसाद। बरणनकरि नसकत सोस्वाद ३०१ कोईबस्तु मजन्मप्रयन्त। ऐसोस्वादन लखो अनन्त॥ कहतसनातन सुनिये रूप।याको कारण कहो अनूप ३०२ छन्दबरवा। कहीबात सब मनकी रूपबखानि। सुनत सनातन बोले इहिबिधि बानि॥ दीन त्यागि सब संपति औएश्वर्य्य। गयो न स्वाद रसज्ञा अति आश्चर्य्य ३०३ दोहा। परो परिश्रमहेतजा अधिक लाड़िली काहिं। चेतरहै अब अग्रको ऐसो कीजिय नाहिं ३०४ चौपाई। एक दिवस वृन्दाबन साजा। भगवद्भक्तनकेर समाजा॥ कीर्त्तन भजन प्रेम अनुरागा। सहित भयो जो लखि सुख जागा ३०५ प्रीतम प्रिया प्रेम अनुरागे। बेसुध भये देह गति त्यागे॥ परठाढ़े रह रूप गुसाईं। दृढ़कीन्हे निज चित्त बनाई ३०६ करनपुरी गुसाइँ यह देखी। निजमन कियो बिचार बिशेखी॥ अग्रणीय भक्तन में रूपा। प्रेमिनमें अति प्रेम अनूपा ३०७ भगवतप्रेम उनहिं नहिं आयो। तौ औरन हित नीक न गायो॥ आये रूप निकट यह गुनि मन। रूप कि श्वास लागि तिनके तन ३०८ तस श्वास लगि परे फफोले। रूप गुसाइँ वचन अस बोले॥ है सम्बन्ध जिनहिं कछु देहीं। है असावधानी तिनकेहीं ३०९ है सम्बन्धन जिनहिं शरीरा। देखिय तनुन लखिय मनधीरा॥ भूले देह दशा नर जेई। जड़ उनमत्त रहतहैं तेई ३१० दोहा। कही गुसाईं रूपकी गाथा मति अनुसार। साधु चरित्र पवित्र अति वरणि लहै को पार ३११ चौपाई। कथासनातनकी जिहि भांती। वरणौं सोइ प्रेम की पांती॥ इक कोपीन कमंडल लीन्हे। और सकल वस्तुन तजि दीन्हे ३१२ बिचरत बिचरत पहुंचे तहँवां। एक भाटकर मंदिर जहँवां॥ रूप मदनमोहन तिहिमंदिर। राजत लखो सनातन सुन्दर ३१३ दरशन करिपायो सुख भारि। जात नित्य तिहि भुवन मँझारी॥ देखि रूप अति प्रेम बढ़ावत। आँखिन सों जल धार बहावत ३१४ पहिले भाट रहो धनवाना। भयो दरिद्री बहुरि निदाना॥ सो

मन में विचार यह ठयऊ । मूरति हमहिं दरिद्री कयऊ ३१५ जैसे हमहिं महा दुख दीन्हा । तैसे ही याहूको कीन्हा ॥ ताही सो रोवत यह भारी । मूरति को बहुवार निहारी ३१६ भाटगुसाइँहिं पूछन लीन्हा। तुमहूंसों मूरति छल कीन्हा ॥ जानिपरत घरके सुखवीते । तुमहूं भे धन संपतिरीते ३१७ तवहिं सनातन मनहि विचारा । विश्वास न इहि हृदय मँझारा॥ भाटहि इहि विधि उत्तर दीन्हा । तेरेसँग यह कछून कीन्हा ३१८ मेरे सङ्ग कियो जिहि भांती । सो मोसों नहिं वरणिसिराती ॥ भाट कहो का करौं उपाई । यह सुनिदियो जवाव गुसाईं ३१९ घर सों बाहर देउ निकारी । भगवानहिं पावौ सुखभारी ॥ नतना जानै अवका करई । याहूते अतिदुख विस्तरई ३२० वाने कहो कि जो ए ऐसे। तौ इनको लैहै को कैसे ॥ सुनत सनातन जीयों कहई। मेरेसँग करिवेजो रहई ३२१ सो करिचुके न अव भय मोहीं । तासु इनहिं लैजैहौं हौंहीं ॥ यह कहिके प्रभु मूरतिलाये । श्री वृन्दावन में पधराये ३२२ पूजा सेवा में मन लावत । भिक्षा मांगिक भोग लगावत ॥ इक दिन भगवत स्वप्न किमाहीं । आज्ञा देतभये तिन काहीं ३२३ भिक्षा मांगन को जव जैये । थोड़ा लोन तहाँ ते लैये ॥ लावन लगे लोन निन जवहीं । पुनि आज्ञा दीन्हों हरि तवहीं ३२४ छन्द रामगीतिका ॥ लाइये कछु घृतहुलावन मांगि भिक्षासोइ । आज्य लावत देखि भगवत् प्रेम हियको जोइ ॥ दीन आयसु वहुरि कानन शाक विविध अपार । सोउ लायो करहु प्रतिदिन सुखद स्वाद अपार ३२५ दो० । कियोसनातन ध्यानतव दृष्टि खोलि उरअच्छि । भये चटोरमोहनाजानो यह परतच्छि ३२६ चौ० । खोवाचहतमोर वैरागा । एउत्पतकीर हैं पुनिरागा ॥ यह विचारि विनती वहुकयऊ । तिनसों वहुरि कहन यह लयऊ ३२७ स्वादनकी इच्छा जो कीजै । सेवक धनी ढूंढ़ि तौलीजै ॥ इहि विधि हरिसों वचन सुनाई । मन्दिर वाहर वैठेआई ३२८ छन्दगोपाल । ताही समय भ-

यो असहाल। साहू कार कि तरणि समाल॥ चली अकबरा बा-
दक जाइ। काली दह समीप सो आइ ३२९ रुकी तरनि चली
तिहि बार। व्याकुल होइके साहूकार॥ पठये निज जन चहूं
दिशान। ढूंढ़ो गहन भक्त भगवान ३३० छन्दहंसी। तासों जाइ
निवेदन करैं। नौका चलै मोद मन भरैं॥ अनुगन जाइ आइ
फिरिभना। साधू एक बैठ सुखसना ३३१ चौ०। साहूकार सु-
नत तहँ आये। देखि गुसाइहिं शीशनवाये॥ अस्तुति कियो
युगुल करजोरी। हाल भनो निज तिनहिं निहोरी ३३२ सुनत
सनातन जी अनुरागे। ता कहँ लैगे भगवत आगे॥ कहो कि
इनकी बिनती कीजै। इनहीं को कर्त्तब गुनि लीजै ३३३ साहू
कार जोरि करदोई। सेवा हित आज्ञा कछुहोई॥ आज्ञा भगवत
दीन सुहाई। सुन्दर मन्दिर दे बनवाई ३३४ तामें राग भोग
हित कीजै। कछु बंधान जगत यश लीजै॥ अंगीकार साह
यह कीना। तुरितै चली उडुप सुखभीना ३३५ साहू कार बहुरि
तहँ आई। उत्तम मन्दिर दीन बनाई॥ बड़ी भक्ति अरु प्रेम ब-
ढ़ाई। मन्दिर रचना सुखद कराई ३३६ राग भोग के हेत तहाँ-
ना। मासिक करि दीन्हों बंधाना॥ जब सब सामग्रीके साजा।
भगवत सेवा हेत बिराजा ३३७ तबहिं सनातन जी सुखपाई।
सो अधिकार परम सुखदाई॥ कृष्णदास कहँ दीनबुलाई। आपु
चले अति आनँद पाई ३३८ ब्रजमण्डल परिकरमा हेतू। गये
सनातन बुद्धिनिकेतू॥ एकबार मानस सरकूला। नन्दगांव
ढिग भूरुह मूला ३३९ बैठरहे तीनिदिन ताहीं। चौथेदिन
भगवत तिन पाहीं॥ सुन्दर रूप मनोहर धारे। इक ब्रजबासी
सुत वपुकारे ३४० चीरालाल शीशपर बांधे। पीताम्बर कटिमें
अरुकांधे॥ कांखछड़ी रंगीन दबाये। थाली दूध भातकी लाये
३४१ दीनसनातन जीको लाईं। पुनि तिनसों इमिवचन सु-
नाईं॥ गांव समीपन बैठत जाईं। तुमहिंकौन इत भोजन लाईं
३४२ भगवत दिय कर पदचनाई। बिना सुकृत भल खाब न

भाई। सुनत सनातन अतिसुख करिकै। परमानन्द लहे मुद भरिकै ३४३ तीनि दिवस इहिविधि व्रजचन्दा। पठये भोजन आनँद कन्दा॥ तबहिं सनातन मन अनुमाना। प्यारे को श्रम भयो महाना ३४४ यह अतिअनुचित गुनिमन माहीं। गाँव-पता पूँछा तिनपाहीं॥ दूजे दिन बहु ढूंढ़न लयऊ। कहूं पता नहिं लागत भयऊ ३४५ तब अति भये सनातन व्याकुल। भांति अनेक शोचकर आकुल॥ तिनको स्वप्न भयोतिहिवारा। वहलड़का हमहीं सुखमारा ३४६ जोइच्छा होवै मनमाहीं। सोई मांगि लेहुहमपाहीं॥ कियो गुसाइँ विनय कर जोरी। धरोध्यान में रूपवहोरी ३४७ दो०। ध्यानानंद समुद्र में भयेमग्नतिहि वार। जियालाल सो किमि कहै अति मतिमंद गँवार ३४८ रूप सनातन की कथा इहिप्रकार सुखखानि। पढ़ै सुनै मनलाइकै होहिं सकल अघहानि ३४९ अबनारायण भट्ट जो श्रीगुसाइँ सुखदानि॥ तासुकथा वरणन करौं रघुनन्दन उरआनि ३५० चौ०। एनारायण भट्ट सुजाना। प्रेमी भक्त भये भगवाना॥ भगवत धर्म पुहुमि विस्तारक। सुखकारक भव जनु दुख दारक ३५१ दो०। कृष्ण दास जोई रहे ब्रह्मचारि सुखवास। मदन मोहनै पूजिवे कहो सनातन जास ३५२ चौ०। तिनहीं के एशिष्य सुजाना। गुरु सों सुनो भागवत गाना॥ दशमस्कंध माहँहरि चरिता। सुनत भये मुदमंगल सरिता ३५३ बहु विधि खेल सखन सँग-खेले। रास किये तिय गल करमेले॥ क्रीड़ाके बहुभांति चरित्रा। हृदय समाने सकल पवित्रा ३५४ देखन चहे सकल थलसोई। परे लखाइ कहूं नहिं कोई॥ जिहिंवे भो भगवत अवतारा। बीते सम्वत पांच हजारा ३५५ तब इहि विधि भगवत आराधा। भे हरि लीन देह गति बाधा॥ पूरण करन भक्त मनआशा। भगवत मानस कीन प्रकाशा ३५६ सब थल तिनको परे लखाई। जिमि वाराह संहिता गाई॥ ताहीके अनुसार सुहाये। श्रीगुसाइँ सब थल प्रगटाये ३५७ जिनके नाम अमित परकारा। तिनको

बरणि लहैको पारा॥ पर जे हैं बिख्यात स्थाना। तिनके नाम करत अब गाना ३५८ मन्दिर श्याम रोहिणी भवना। जहां जन्म लीन्हों श्री रवना॥ ब्रह्मघाट जहँ माटी खायो। बहुरि यशोदहि मुखदिखरायो ३५६ बहुरिपूतना खार बखाना। प्राण सहित पय कीन्हों पाना॥ गोप कूप अतिही सुख छावत। सोमवती कहँ जल तट आवत ३६० बा बा नन्द यशोदा माता। सुन्दर थल मथुरा बिख्याता॥ पुनि बिश्रांत घाट सुख धामा। कंसहि मारि कियो बिश्रामा ३६१ सात समुद्र कूप सुखछाये। दरश द्वारिकधीश सुहाये। राम घाट बैराग सुहायो। बैकुण्ठहु अक्रूरहु गायो ३६२ पुनि बंगाली घाट सुशोभित। सूरज घाट निरखि मन लोभित॥ श्रीगोविन्द देव अस्थाना। गोपीनाथ भुवन सुखसाना ३६३ मोहन मदनौ राधारमना। पुनि बांकेहु बिहारी भवना॥ अटल बिहारी बहुरि बखाने। चौरासी खंभा मनआने ३६४ खंभा आठ महासुखदाई। दधिबिलोव यशोदामाई॥ रेतीरमन महासुख भीना। सखनसंग लीला हरिकीना ३६५ यमलार्जुन भूरुहसुख छाये। ऊखलसों हरितिनहिं गिराये॥ गद्दीसात गुसाईंनकेरी। जिनकी महिमा कहीघनेरी ३६६ दो०। रानीघाट यशोदहू अपर बल्लभाघाट। मन्दिर केशवदेवजी जेसोवन अहिखाट ३६७ चौपाई। जिहिथल रूप चतुर्भुजधारो। रंगभूमिजहँ कंस पछारो॥ कंसखार पुनि शोभित तहँवाँ। कंसहिमारि डारियो जहँवाँ ३६८ पुनि भूदार दरश तहँ लहिये। मथुरा देवीके पदगहिये॥ भूतेश्वर शिव सहज सुशीला। देविसप्तऋषि औ बलिटीला ३६६ बहुरि दशाश्वमेध सुखखानी। चक्रतीर्थ ध्रुव क्षेत्रहु जानी॥ कुण्डसरस्वति योगमार्ग पुनि। रावणकुटी कृष्ण गंगा गुनि ३७० छाकबिहारीहू सब लायक। कंठाभर्ण महासुख दायक॥ यमुनाकूल कालिदहघाटा। विष्णुघाट केशिहु पटघाटा ३७१ दो०। घाटबिहारहु घाटरवि रसिक बिहारीधाम। राधापति

शृंगारवट छैल चिकनियां नाम ३७२ चौपाई ॥ कृष्णचन्द्रमा जी सुखखानी । रङ्गनाथ अणिमादिक दानी ॥ निधिवन सेवा कुंजसुहाये । भगवतलीला थलसुख छाये ३७३ दो० । ब्रह्मकुण्ड गोविन्दहू कुण्डबेणुहूकूप । ज्ञानगूदरी बंशिबट धीर समीर अनूप ३७४ टट्टी मौनीदासकी राधाबाग सुहाव । मधुवन अति घन बागबहु हरियाली बहुछाव ३७५ चौपाई ॥ अब उन अस्थाननको गैये । वनयात्रामें दरशन पैये ॥ थलथल जन्म अष्टमी करिजन । दिगतिथि मथुराजात मुदितमन ३७६ मथुरामें करिकरि अस्नाना । शिवतिथि यात्रीकरत पयाना ॥ परिक्रमा ब्रजमण्डल जोई । पक्षदिवस महँ पूरणहोई ३७७ धवल ककुभ तिथि भादोंकेरी । अथवा एकादशी उजेरी ॥ यात्री सब मथुरामेंआई । चक्रबाक तिथि उठिसुखपाई ३७८ परिक्रमा मथुराकी करिकरि । उद्धव सुफल करत सुख भरिभरि ॥ अबजिमि दिवस दिवस प्रतिलोगा । करत बासकरि यमताजि भोगा ३७९ बरणौं सोई थलमन भाये । कीन्हेजहँ हरिचरित सुहाये ॥ प्रथम दिवसकर करौं बखाना । करिविश्रामघाट अस्नाना ३८० यात्राके निमित्त सब लोगा । चलत पियादे तजि सुखभोगा ॥ भगवत भजन नेम उरधरिकै । यात्राप्रथम करत मुदभरिकै ३८१ छन्द रामगीतिका ॥ करतमधुवन ताल वनअरु कुमुदवनके दरश । शिवनरायण शिशु यशोदा कपिलमुनि सुखसरस ॥ दरश गिरिधरराय शंतनु कुण्डकी अस्नान । करततहँ विश्राम दैकै विविध भांतिनदान ३८२ दो० । बहुलावनमें करत हैं दूजे दिन विश्राम । दरशन मोहनलालके करतमहा सुखधाम ३८३ चौ० ॥ गोवर्द्धनहि जात दिनतीजे । चौथे टिकत तहां मुदभीजे ॥ परिक्रमा करिकरि गिरिराजा । दरशन करत समेत समाजा ३८४ जहँ हरदेव विराजत स्वामी । अपरनाथजी विष्टप नामी ॥ मन्दिर एक अनूप अपारा । श्रीयसंप्रदा को गुरुद्वारा ३८५ मनिस गंगा अति सुखदाई । संकर्षण कुण्डहु मुददाई ॥

कुण्ड अप्सरा पुछड़ी कुण्डा। रासौलीहु गुलालहु कुण्डा ३८६ छन्द गोपाल॥ गाठौली अरु हरजी कुण्ड। विजयनाभ सींकर गोकुण्ड॥ रुद्रकुण्ड अरु राधाकुण्ड। कृष्णकुण्ड अरु नारदकुण्ड ३८७ सरवर कुसुमहु सरवर कुण्ड। बहुरि सुखद ऐरावत कुण्ड॥ एतेकहे अपरबहु कुण्ड। मज्जन करत नारिनर झुण्ड ३८८ चौ०॥ दीपमालिका को गिरिराज। मेलाहोत महा सुखसाज॥ दीपदान जिहिविधि तहँहोइ। तैसाकहूं लखोनहिं कोइ ३८९ दो०। कार्त्तिक अर्जुन प्रतिपदा अन्नकूट तहँहोत। अरु पूजन गिरिराजकी अति उत्साह उदोत ३९० चौपाई॥ पञ्चम दिवस डीघमें बासा। होत तहां बहुभांति सुपासा॥ बड़े बड़े अस्थान अनूपा। बनवाये सुभरतपुर भूपा ३९१ छठयें दिवस मनानँदलाई। कामाँ में पहुंचत सबजाई॥ सप्तम दिवस बासतहँ करिकै। दरशन करत महासुद भरिकै ३९२ छन्दराम गीतिका॥ करत दरशन विजय गोविन्दचन्द गोकुलजाहँ। अपरठाकुर गोपिनाथहु वृन्ददेवी ताहँ॥ प्रीयराधा सीयरामहु अशन थालीदेखि। शिला घिसिनीकी परिक्रम करत ताहँ विशेखि ३९३ चौपाई॥ अष्टमादिन सब यात्रा करिकै। बरसाने पहुँचत मुदभरिकै॥ जहँ जनुभूमि लाड़िलीजीकी। देखतहरत कुबुधि सबहीकी ३९४ मन्दिर उच्च अनूप सुहावा। भूधरऊपर शोभा पावा॥ तहँ वृषभानबबा सुखकारी। कीरति श्रीदामा छबि भारी ३९५ बहुरि दानगढ़ शोभित तहँवां। भई दानलीला है जहँवां। बहुरिमानगढ़ सोहतहाँना॥ जहँ वृषभान ललिय किय माना ३९६ पुनि दरशन विलासगढ़ केरे। प्रीतम प्रिया विहारघनेरे॥ मोरकुटी पुनि अधिकसुहाई। बोलेकृष्णमोर कीनाई ३९७ लियो लाडिली काहँबुलाई। पुनि साँकरी खोरसुखदाई॥ जहाँअकेली देखिसुहाई। लियो लाड़िलिहि पकरिकन्हाई३९८गहवरवन अरुभानु सरोवर। श्रीपोखरयुत प्रेमसरोवर॥ श्रीलाड़िली केर सुखदाई। झूलन खेलन ठौर महाई ३९९ दो०।

श्रीनारायणभट्टकी जन्मभूमि सुखदानि। ऊंचोगांवसुनामाजिन्न
प्रगटे येथल आनि ४०० चौ० ॥ मंदिरहलधर जीकोराजै। दर-
शनकरत अखिल अघ भाजै ॥ देहकुण्ड सोहत सुखकारी।
अपर त्रिवेणी जी मुदधारी ४०१ नवयें दिवस मोद मनधारी।
नन्द ग्राम पहुँचत नरनारी ॥ दरशन नन्द यशोदा के कर। व-
हुरि यशोदानन्दन हलधर ४०२ वहुरि विहारि विहारस्थाना।
मान सरोवर मज्जन दाना॥ ललिता कुण्ड विशाखा कुण्डा।
मधुसूदनहुँ यशोदा कुण्डा ४०३ दो०। कृष्ण कुण्ड मोती सहि
त कदम खण्ड सुखदानि। दरश मथानी दूधजहँ मथो यशो-
दारानि ४०४ हाऊ जहँ नँदनन्दनै हाऊ करि डरपाव। जावक
वट लाड़िलि पगन जावक श्याम लगाव ४०५ कोकिल वन
जहँ लाड़िलिहि बोलि कोकिला भांति। बोलाये रासौ लिहू
रास कियो सुखपांति ४०६ दरश वठेन श्याम सुखपाई। वेणी
लाड़िलि गुथी बनाई॥ रंगमहल संकेत विहारी। अरु संकेत
देवि मुदधारी ४०७ दशम दिवस नर तिय सुखपाई। शेष शा-
इमें पहुँचत जाई॥ नारायण कर मन्दिर तहवाँ। क्षीर समुद्र
तीर्थहू जहवाँ ४०८ कदम खण्ड मारग में सोहा। कानन क्षीर
निरखि मन मोहा॥ दिवस ग्यारहें अतिसुख पावैं। यमुनापार
उतरि सब जावैं ४०९ चीरघाट जहँ अति सुखकारी। कात्याय
नि देवी मुदधारी॥ चीरघाटके थोरीदूरी। नन्दघाट शोभित
सुख भूरी ४१० जात भद्रवन उतरिकपारा। पुनि भांडीरगहन
सुखसारा॥ यात्राकरत वेल वनकेरी। मनचारीव सुख लह पुट
ढेरी ४११ दिवस बारहें की अस साजा। जात माठवन सहित
समाजा॥ तहँ विश्राम करत दिन तासू। दिवस तेरहें पुनि
चलि आसू ४१२ नन्दी वन्दी देवी देखी। लोहकवनमें वसत
विशेखी॥ दिवस चौदहें आनँदपाई। हलधरजीमें पहुंचत जा
ई ४१३ दर्शन करत तहां बलरामा। पूरणहोत सबन मनका-
मा॥ दिवसपन्द्रहें सुखसोंपागे। मथुरामेंपहुंचत अनुरागे ४१४

मारग दरशनहोत सुहाये । गोकुल महा गहन सुख छाये ॥ गोकुल मथुराकेथलजेते।प्रथमहि बर्णन कीन्हेतेते ४१५प्रगटभये सब बनथल जबहीं । इच्छाभई भट्टमन तबहीं ॥ जिमि हरि इन अस्थानन माहीं । रासविलास किये बहुधाहीं ,४१६ सो प्रत्यक्ष सकल जब देखौं । तब निजजन्म सुफलकरि लेखौं ॥ मनइच्छा लखि भगवत कहई । बल्लभनामजु नृत्यक अहई ४१७ बादशाहि सेवातजि जोई । बासकरत बृन्दाबन सोई ॥ ताहि अपर भूसुर शिशुलावौ । ममअरुगोपी रूप बनावौ,४१८ लीलानुकरन जौन चरित्रा । अवलोकौं थल थलन पवित्रा ॥ कहागुसाईंजी सुखपाई । बल्लभ नृत्यककाहँ बुलाई ४१९ सो सुनिकै अति आनँद पायो । एकबिप्र शिशुकृष्ण बनायो ॥ एकबालकहिराधा रूपा । साजेसब शृंगार अनूपा ४२० आठ बालकन सखी बनायो । ललित विशाखादिक सुख पायो ॥ नृत्यगान बिधि सकल सिखाई । तिनके भेद सकै कोगाई ४२१ मति अनुसार कछुक अब भाषत । हरिचरित्र गुनिमन अभिलाषत ॥ स्वरअरु नादग्राम सताला । मुख बहुरूप अलाप किकाला ४२२ स्वरके भेद सातविधि गाये । षड्जर्षभ गांधार कहाये ॥ मध्यमपञ्चम धैवत नामा । सप्तमहै निषाद सुख धामा ४२३ दो० । प्रगटित षड्जमयूरते ऋषभवृषभते होय।गांधारभयो मेषते सारसमध्यम जोय ४२४ पञ्चम विरच्यो कोकिला धैवतहयते जान । भौनि पादगजतेइ बिधि स्वरउत्पत्ति बखान ४२५ चौपाई ॥ बहुरिनाद है तीनिप्रकारा । ध्वनिमधुरास्फुटअति सुखसारा ॥ पांचस्थान नादके भाखे । नाभी हृदय कण्ठ मुख राखे ४२६ पुनि कपाल पञ्चम अस्थाना । रत्नाकर संगीत बखाना ॥ स्वर समूहको ग्रामबखाना । सांगीतदर्प्पण सुखसाना ४२७ तालभेद द्वैभांति कहाये । देशीमारग नामसुहाये ॥ मारग देवलोकमें छाये । देशीभूमण्डलठहराये ४२८ बहुरितालजाति पांचप्रकारा । समा मृदंगा अति सुखसारा ॥ अतीगताङ्कुपपीलक नामा । गोपुच्छा

पंचमसुखधामा ४२९ देशीताल कहौं सुखखानी। दुइसै बत्तिस नामबखानी॥ तिन के नामकछू अबबरणौं। मनलगाइ सीता पतिचरणौं ४३० छन्दरामगीतिका॥ बन्दिसियपति चरणवरण तकछुक तालसुठाम। चित्रअरुकटु कारिकंडुक रामतालसुनाम॥ आदिलघुशेखरहु करुणा सबै इकसनिपात। चौथिपञ्चमद्वितियसप्तम अष्टमौ विख्यात ४३१ दोहा॥ ब्रह्मताल उडुपतिकला चतुरकुंभ निश्शंक॥ दगडवान लीला सहित लक्ष्मीहूहै वंक ४३२ कुंडन चर्चननकुलयुत इच्छाअस्तानिताल॥ जतिशेखर रंगदोतहू विक्रमसिंह रसाल ४३३ चंद्रूलाड़ जतिप्रति सहित संचयपृथिसुरसाल। कुगडल अहिगति हिमाचल ब्रह्मागडा हरिताल ४३४ शंख गर्गतिवड़ा सहित चक्र झुमँड़वी राज। स्वर्णमेरु इकतालहै ताल सहित सबसाज ४३५ चाखा तीतर वकचटक कोकिल बायस जानि। कुक्कुटहूते प्रगटभे तालअंग गुण खानि ४३६ चौ०॥ पांचजाति बहुकला समेता। एक विंश मुरछना सहेता॥ चारिभाग अरुगमकपंच दश। गुणनसहित चलिकरतमननवश ४३७ मुखचाल नृत्यअरुशब्दचाल। ऊडुपतिर्यग पतिपतिअडाल॥ लागधाउअरु रायरंगाला। उलथाटेंकी आलमचाला ४३८ पद पलटीहुरमयी समेता। दिंड निशंक चिंडमुदसेता॥ वल्लभनृत्यक सकल सिखायो। सहित समाज केलिथलआयो ४३९ बीससमाजीहूतिहि ठमा। आये वरणिकहौंतिननामा॥ गायक आठप्रकारसुहाये। चारि प्रकार तालधरआये ४४० चारि प्रकार वेनुके धारी। आवतभये मृदंगी चारी॥ वाजानिजानिज सकलसवांरी। लगे वजावन ताल सँभारी ४४१ वाजा बाजे चारिप्रकारा। ततअन घनघन सुखिर अपारा॥ आपु आपुमें मिलि जो बाजत। तत वाजासो अतिसुख साजत ४४२ अनघन आकर्षन करिबाजैं। घनजो पीटि दीर्घरव गाजैं॥ जिनके छिद्रमाहँ मुखलाये। बाजैं तेईसुखिर कहाये ४४३ ततके धाता देव बखाने। वायुसखा

अनघनके आनें॥ घनके सुरगुरु देवसुहावैं। वायुसुखिरकेसुख सरसावैं ४४४ बाजा चारि भांतिके बरने। महासुमंगल आनँद करने॥ ढाकढोल डमरू पविहंजा। भेरी शंख मुरलि औ गुंजा ४४५ दो०। काहल मुरली तूम्बू पत्री बीणा साजि। दगडी यंत्र तँबूरहू झालरि घंटहुराजि ४४६ कलपवृक्ष अठतारहू द्वैतारा चौतार। काष्ठतार सारंगिहू सुरतूरहु सुखसार ४४७ हुरकमुरज मिरदंगहू झांझ झमक अरुताल। चंगउपंगहु कुबुजयुत धौला कीशुभचाल ४४८ जलतरंग खँजरीसहित आवजपण वरसाल। बाजाबहु सुरएकहै मोह मतिनके जाल ४४९ थेइथेइ थुँगथुँग ततक ततथ्यै थ्यै ततथेइ। थेइ थेइ ततथेइथ्यै तातातीधा थेइ ४५० चौ०॥ तकतक दिग दिग ताल सग्रामा। नाचत गावत अति सुख धामा॥ गोपिनयुत श्रीकृष्णमुरारी। देखिसमाजहि भये सुखारी ४५१ नाचतभे नानागति धरिकै। बिबिध बर्ग अंगनके करिकै॥ करन एकसै अष्ट सुहाये। रत्नाकर संगीत बताये ४५२ हैं दशकरन मुख्य तिनमाहीं। मुख लोचन शिर कटि उरबाहीं॥ हृदयग्रीव पग जानु समेता। निज निज भाव दिखावसहेता ४५३ अंगअंग प्रति भावन रचिकै। नृत्यतघुमरि लपकि झकिलचिकै॥ भेदतीनि दश मुखकेजाने। भेद दृष्टिके आठ बखाने ४५४ शिरके भाव पंचदश करने। पंच भावकटि के शुभबरने॥ उरके जैकर भाव पचीसा। ग्रीवकि भाव पंचदश दीसा ४५५ इक्यावन पदभेद बताये। जानूके द्वैभांति सुहाये॥ करिरस वेप अशेषसुनाचैं। बरषैंरस बहुतै सुख साचैं ४५६ नौ रस मिश्रित भावबनावैं। करनभेद नहिं एकदुरावैं॥ बाजानृत्य सतालसंभारी। गावनलगे महामुदधारी ४५७ सकल रागअब कहौं सुहाये। प्रथममुख्य षटरागगनाये॥ तिनकी युवतीतीस बखानी। पांचपांच इक इक सुखदानी॥ ४५८ दोहा। भैरव मेघ हिंडोल युत दीपक श्रीसुखखानि॥ मालकोस षटरागये वरणे मरुयबखानि ४५९ चौ०॥ वहलबरारीभैरवि ललिता। मध

माधविभैरवकीबनिता ॥ अष्टपुत्रतिनके गुणखानी । देवरशा
खहुहरषन जानी ४६० बंगालाहुविभाससहाना ॥ माधव ललि
तबिलावलजाना । मेघराग नियकहौंबखानी ॥ शारंग देशि गौरि
सुखदानी ४६१ रतिबइलाभिहुबिलावलकहिये । आठ पुत्र तिन
के शुभलहिये ॥ लाइर कान्हर शंकरभूषन । तिलकघटारगहारन
दूषन ४६२ हैहमीरअस्तम्भसुहावा । एकदेशकर नामकहावा ॥
कहौं तीय हिंडोलबखानी । रामकली लावनि सुख दानी ४६३
देवकरी गुनकरी असावरि । तिनके आठ पुत्र बंशावरि ॥ नाग
धनी अरु धवलबसंता । बंदबखारअवल सामंता ४६४ लं ारहन
माल बहुमारू । ये हिंडोल पुत्रमति चारू ॥ अबदीपक रागिनी
गनावत । जिनको भेद गुनीजन पावत ४६५ गौड़गुजरी गौर
किदारा । सिंधुलयुत दीपककीदारा ॥ तिनकेआठपुत्रशुभचाला ।
नटनारायनटंक अडाला ४६६ बल्लभशक्तिबिहाग कहायो । फि
रोदशाइक रंभ सुहायो ॥ हैं श्रीराग कि शुभ इषुनारी । तिन के
नामकहौंसुख कारी ४६७ दोहा । संबबेदिसहठीटयुत हूमरिकाफा
जानि । आठ पुत्रहैं तासुके सोऊ कहत बखानि ४६८ कोलाहलश्री
रवनयुत सावत शूराराग । संबोधन बड़ हंसहू श्री सुतअति बड़
भाग ४६९ चौपाई ॥ मालकोस तियकहौं बखानी । गौरीद्रावनि
टोड़ीजानी ॥ खंभावति कर ककुभव नामा । आठ पुत्र अबकहौं ल
लामा ४७० मागरु त्रेछन शुद्ध कहायो । सुर गंधार पूरिया जायो ॥
गौराबल्लभ शक्ति सुहायो । मालिय कामोदर सुख छायो ४७१
भैरवसुततिय आठ बखानी । बहलगूजरी सोरठ जानी ॥ पारमंजरी
बरवैसूहा । आनंदाहक आनँद जूहा ४७२ अष्टमतीय बिलावलिना
मा । होत गान सुनि पूरण कामा ॥ इहिविधि षट रागन सुत ना
री । जानैंचतुर गुनीजनभारी ४७३ तीसरागिनी अरु पटरागा ।
अरतालीस पुत्र बड़भागा ॥ अरतालीस पतोहबखानी । इकशत
बत्तिअलीजिय जानी ४७४ ते सब सबै समाजिनगाये । कृष्ण
गोपिकन युत सुख पाये ॥ अवगुण रहित समाजी जेते । सुन्दर

गान करैं शुभ तेते ४७५ गायनमें अवगुणहैं जेते । कहौंबखानि सकल अब तेते ॥ कंठहीन कृश देह सरोगा । राग भेद जे जान न लोगा ४७६ सुन्दर रूप न ताल नजानै । राग समय नाहिंन पहिंचानै ॥ गावैं गर उठाइ मुँह बाई । कान हाथदै अति चिचि याई ४७७ बार बार गरको सहरावैं । नारिमरोरि उच्चस्वर गावैं॥ मुख मलीन अरु भौंह बटोरत । गावत झझकि झटकि स्वर तोरत ४७८ भौंह चढ़ाइ हँसत तनवाली । काकअजास्वर होइ वितालो ॥ अधमधिऊरध स्वरन सँभारी । शीश घुमावत हाथ पसारी ४७९ अति ऊँचो अति लघु अति मोटो । देहक्षीण नृत्यक सा छोटो ॥ गाइ न जानै रूप न जाके । नृत्य भेद गण एक न ताके ४८० असगुण हीनएक नहिं तहवाँ । गुणन सहित सब शोभित जहवाँ॥ विच विचहास्य तर्क बहुहोई । परमानन्द मगन सब कोई ४८१ इहि बिधि भयो रासमुख सारा । मानहुंलियो कृष्ण अवतारा ॥ अब तक रास होत हैं तबते । भट्टनरायण प्रगटो जबते ४८२ यह उपकार जगत हितकीन्हो । हरिपुर जान आपु मनदीन्हो ॥ सेवकनिज बुलाइ तब लीन्हा । तिनको इहि विधि आयसु दीन्हा ४८३ हम तौ अब गोलोक सिधारब । मम तन तिरबेणी तट जारब ॥ पूंछा सबन कहां तिरबेणी । तब बोले गुसाइँ गुण श्रेणी ४८४ ऊंच गावँ बरसाने तीरा । तहांत्रिबेणी सुखद गँभीरा । श्रीगुसाइँ तीरथइकएहू ॥ प्रगटत भये महागुणगेहू ४८५ दो० ।इमिनारायणभट्टकी कथामहा सुखसार । जियालालद्विज भाषियो निजमति के अनुसार ४८६ अब स्वामी निम्बार्ककी सुन्दर कथा अनूप । परमभक्त भगवान के बरणौं मति अनुरूप ४८७ चौ० ॥ गोदावरी निकट शुभ ग्रामा । है सुंगेर जाहिको नामा ॥ महाराष्ट्र द्विज अरुण सुनामा । नाम जयंती जिनकी बामा ४८८ तिनके गर्भ जन्मतिन लयऊ । भगवद्धर्म प्रचारक भयऊ ॥ संप्रदाय सनकादिक जोई । ताके भये प्रवर्त्तक सोई ४८९ यद्यपि संप्रदाय यह तबते ।

भोअवतार हंस हरि जबते॥ तद्यपि निम्बारक बिख्याता॥कियसंसार माहँ सुखदाता ४९० ताते तिनके नाम सुहाई। निम्बारक संप्रदा कहाई॥ प्रथम हंस सनकादि बताई। सनकादिक संगदा कहाई ४९१ निम्बारक बहु ग्रंथ बनाये। रीति उपासन की प्रगटाये॥ ईश्वर माया जीव बिभेदा। भाषत भये शोधित्रच वेदा ४९२ भेद रहित पुनिकीनबखाना। जलतरंग जिमिभेदन माना॥ शातकंभ बहु भूषण कीन्हे। नाम अनेक एक बपु चीन्हे ४९३ माधुरीय शृंगारक ध्याना। दशमनिष्ठमें तासुबखाना॥ इहि उपासनामें सुखछायो। युगलस्वरूपध्यान मनभायो ४९४ तिलक आदिवृत्तांत पुनीता। निष्ठाभेष माहँता गीता॥जासोंभो निम्बारकनामा। बरणोंसोचरित्रसुखधामा४९५इकदिनइकसंन्यासीआयो॥निम्बारक समीपसुखपायो॥ निम्बारकतिहि आदरकीन्हा। उत्तम थलले आसनदीन्हा ४९६ भईतयार रसोईजबलों। बीती निशा चारि घटि तबलों॥ अशन हेत संन्यासिबुलाये। सो इहि बिधिते बचन सुनाये ४९७ भोजन निशा करत हम नाहीं। सुनि निम्बार्क दया उरमाहीं॥ होत भई तब रचो उपाई। बरणों सुनो सुमति चितलाई ४९८ निम्बउरबिरुहतिनकेद्वारा। तापर प्रगटे अर्क उदारा॥ जबसंन्यासिहि अर्क दिखाये। आनँद सहित अदन तबखाये ४९९ तब ते निम्बारक यह नामा। होत भयो सुन्दर सुख धामा॥ परम्परा याकी अब गावों। संत सुयश कहि आनँद पावों ५०० हंस प्रथम सनकादिक दीन्हा। सनकादिकसों नारद लीन्हा॥ नारद सों निम्बारक पायो। श्री निवास आचार्य्य बतायो ५०१ तिनसों पायो बिश्वाचारय। तिनसों पुरुषोत्तम आचारय॥ तिनसों श्रीबिलास आचारी। तिनसों लहो स्वरूपाचारी ५०२ तिनसों पाइ माधवाचारय। उनउपदेशो पद्माचारय॥ तिनसों श्यामाचार्य्य सुहाये। बलभद्रा चारय मुदपाये ५०३ तिनसों पुनिगोपाला चारी। तिनसों कृपाचार्य्य सुखकारी॥ देवाचार्य्य बहुरिकै भयऊ। सु-

न्दर भट्ट महामुद लयऊ ५०४ पद्मनाभ पुनि उ
चन्द्रभट्ट पुनि बावन भट्टा। कृष्णभट्ट पद्माकरभट्ट
हु भूरिहु माधव भट्टा ५०५ श्यामहु गोपालहु बल
पी नाथहु केशव भट्टहु॥ गागल केशव द्विति
केशव सों श्रीभट्ट कहाये ५०६ पुनिहरि व्यासदेव
तिनसों परशुराम सुरराखे॥ पुनिहरिवंश नरायण दे
[illegible] गोविंद शरणहु देवा ५०७ ईश्वर शरण देव सुख
[illegible] अनुरागे॥ श्रीव्रजराज शरणहुदेवा।
[illegible]हु देवा ५०८ दो०॥परम्परा [illegible] अंभासगी.
[illegible]। निम्बारक की इमिकथा दुखदारक सुखसार ५०६
[illegible]/रामचरण शिरनाइ रामभक्त उत्तमकथा। बरणौं अति
[illegible] पाइ पुण्य प्रकाशन अघदहन ५१० चौ०॥श्रीहरि
व्यास कथा सुखखानी। कलिमल नाशन आनँद दानी॥
सुसुखन शुक्लकेर सुतसोई। भेनिम्बार्क संप्रदाजोई ५११ ति-
लकमालसों अतिरुचिकीनी। जिनकी भक्ति प्रेमरस भीनी॥
हरीराम पूरब जिन नामा। बासस्थान वोड़छाग्रामा ५१२
सम्बत सोरहसै अरु द्वादश। समैअवस्था समपैंतालिश॥
बृन्दाबन आये सुखपाई। भगवत धर्म प्रबृत्ति चलाई ५१३ सह-
सन शिष्य भक्तकरि दयऊ। बारह शिष्य सिद्धअति भयऊ॥
गुरुद्वाराभे तिनके नामा। न्यारे न्यारे अति सुखधामा। ५१४
पद्धति रीति अबहुँ है तैसी। निम्बारक आगे रहि जैसी॥ जब
हरिव्यास बसे बृन्दाबन। तब इहि भांति प्रीति उपजीमन ५१५
बृन्दाबन क्षणमात्र न त्यागत। कोऊ तजत इनहिं दुख लागत॥
मुद्गर नृपति वोडछेवारा। सेवक रहहरि व्यास उदारा ५१६
व्यासबुलावन केहित आयो। करि विनती बहु वचन सुनायो॥
कहाव्यास सुनु वचन नरेशा। वृन्दाबन द्रुमलता सुवेसा ५१७
बासाकियो जिनछाँह सदाई। चलिहौं तिनसों मांगि बिदाई॥
यह कहिबिदा होन हित आये। राजा तिनकेसंग सिधाये ५१८

न वृन्दतरे सो जावैं। हाथजोरि यह विनय सुनावैं॥ महाराज शरणहि आये। अबकाआज्ञाहमहिंलगाये ५१९ राजा निज माहँ विचारा। इमिकहि चलिहैं देश मझारा॥ तिहि अवसर नि सुखकीन्हे। पत्तलसीथ प्रसादी लीन्हे ५२० श्रीगोविन्द स्थाना। भोजन कीन्हो संतसुजाना॥ सो परसाद लिये ई। तासों कह हरिव्यास सुनाई ५२१ यामें का गोविंद । धाये व्यास सहित अहलादा॥ काढ़िफुलौरी द्रुत इक । तुरतहि डारि बदन निज दीन्हा ५२२ यह लखिराजा बिचारा। चित्तभ्रम गुरुभयो अपारा॥ अब जो इन देशहि जैहैं। सब लोगन कर धर्म नशैहैं ५२३ यह गुनि विदा माँगि आयो। व्यास महा आनन्द बढ़ायो॥ अबसानन्द किशोर शोरी। पूजत विनय करत करजोरी ५२४ दो०॥ एक समय गारवै बांधन लागे चीर। जरी चिकनई कारणे बांधत बनत तीर ५२५ चौपाई॥ बनो नहीं बांधो बहुबारा। तब मनमें य क्रोध अपारा॥ जोलाड़िकाई इबिधि ढिठाई। तौ आगेका रौ गुसाईं ५२६ मेरा बांधा तुमहिंन भाई। तौअपने करलेहु नाई॥ इहि बिधि तिनसों बचन सुनाई। बैठेबाहर कुंज किजाई २७ थोड़ीदेर बाद सुख पाये। दरशन करिकरि लोगजु आये॥ हो व्यास सो निज निज जीको। चीरा आजु बनो अति को ५२८ सुनत व्यास अभिलाष समेता। धाइ देखि बोले अति हेता॥ जो निज हाथ सुघरता ऐसी। तौ पर हाथन भावै कैसी ५२९ एक दिवस हरिभक्त समाजा। भोजनहित बैठे युतसाजा॥ परसत रही व्यास की बाला। विधि संयोग भयो यह हाला ५३० दूध मलाइ गिरी व्यासागे। सोलखि मनहिं विचारन लागे॥ गुनिपति भाव प्रेम वश होई। दीन्हों अधिक दूध यह सोई ५३१ पंगति ते निकारि द्रुत दीन्हा। सुनी न बहु विधि विनती कीन्हा॥ तीनि दिवस जल अन्न न पायो। अंगीकृत भक्तन समुझायो ५३२ परदण्डम गहना सबु लीन्हो।

वेंचि सुसंत रसोई दीन्हो ॥ व्यास कि तनुजा केरि सगाई। हेतब नो पकवान मिठाई ५३३ धरी बरात हेतसो देखा । मधुर बस्तु अति स्वाद विशेखा ॥भगवद्भक्तन योग सुचीन्हे।चोरिकराइ अशन तिन दीन्हे ५३४ जब बरात द्वारेपरआई। रीतेकोठा सकलमिठाई॥तबलोगन पकवान बनाई।दिये बरातिन तुरतजिमाई५३५ स्वरजन व्यासते भये उदासा । व्यास तबहिं यहबात प्रकासा ॥ जिन लोगन समधी प्रियहोवैं । मीठेभोजन समधिनदेवैं ५३६ सूखा आटा भक्तन देता। ऐसे विमुख अघौघ निकेता ॥ खैंचत तिनहिं बलीयमदूता । हारिजातजे अतिमजबूता ५३७ सो०॥ एकसमय श्रीव्यास भगवत के कर बांसुरी । देतरहे सहुलास चांदी की सुन्दर नई ५३८ चौ० ॥ छिली आंगुली ताकी कोरा। रुधिर बहन लागो तिहि ओरा ॥ देखिव्यास चिन्ता मन कीन्हा । अम्बर बारि बोरि कसि दीन्हा ५३९ अबहूं सोईरीति सुहाई। वै शृंगार होत सुखदाई ॥ इस चरित्र से श्री भगवाना। भक्त भाव माधुर्य महाना। ५४० पक्का दृढ़करके उपदेशत । प्रेम पंथमें मति परवेशत ॥ कीजिहि भाव भक्त ममध्यावै। प्रगटहोत मैं तौने भावै ५४१ ब्राह्मण एक वोड़छे केरा । आवत भयो व्यासके नेरा ॥ भईरसोई भक्तन जहवाँ। भोजन करन कहो नहिं तहवाँ। ५४२ तब सामग्री दियो दिलाई। ब्राह्मण चर्म पात्र जल लाई ॥ करन रसोई लागो जबहीं ।घृतलैव्यास उपानह तबहीं ५४३ दियो रसोईमें धरि सोई । ब्राह्मण क्रोध समेत उठोई॥हाथ जोरि बोले हरिव्यासा । हे द्विज काहे भये उदासा ५४४ जासु धातु बरतन ज़लधारा। ताही में घृतअहै हमारा ॥ सुनिकै ब्राह्मण अधिक लजाना। अभिप्राय तिन मनको जाना ५४५ भगवतशरण तुरत सो भयऊ । भगवद्भक्तहोइ मुदलयऊ ॥ एक साधु बहुदिन तक सोई । मन्दिरकी सेवामें जोई ५४६ रहो करत कीर्त्तन अधिकाई । श्यामा श्याम अग्र हरषाई ॥ जब इच्छा चलनेकी करई । तब समुझाइ व्यास मुद भरई ५४७

एक दिवस सो अति हठ करिकै। व्यासते विदा मांगि मुद भरिकै॥ निज ठाकुर सम्पुट जब मांगा। तब हरिव्याससहित अनुरागा ५४८ गोरैया बीड़वे धरिकै। साधूको दीन्हो मुदभरिकै॥ साधू भोला लै चलि भयऊ। यमुना कूल जबहिं सो गयऊ ५४९ सम्पुट पूजा हेत उघारा। पत्ती उड़ि निज गई अगारा॥ व्यास समीप साधु सो आयो। हाथ जोरि यह विनय सुनायो ५५० महाराज इत शालग्रामा। आये देउढूंढ़ि सुखधामा॥ कहो व्यास वच सत्य तुम्हारी। तिन किशोर सों भई चिन्हारी ५५१ तासों आये होहिं विशेखी। देवोढूँढ़ि भवनमहँ देखी॥ यहकहिकै मन्दिरमें जाई। साधूसों बोलेसुखपाई ५५२ तव स्वामी किशोरजी पासा। बैठि चहत वृन्दावन वासा॥ तुम कतजात काज कितलागी। सुनिसाधू इच्छासवत्यागी ५५३ दो०। होत रास वृन्दाअटवि शरद पूरणा काहँ। रूप प्रिया प्रीतम निरखि छके रसिक मनमाहँ ५५४ चौ०॥ नृत्यत प्रिया चरणको नूपुर। टूटि परो ताही क्षण भूपर॥ तालसमामें आयो भेऊ। तबहिं व्यास निज तोरि जनेऊ ५५५ नूपुर गूंथि दियो पहिनाई। पुनि बोले इमि सबन सुनाई॥ यह जनेउ अबतक गल भारा। राखब सुफल भयो इहि बारा ५५६ नाभाजी यह कियो प्रकासा। भक्तइष्ट भक्तन में व्यासा॥ यह सुनिकै महन्त इक आयो। व्यास परीक्षा लेन सिधायो ५५७ तजि लाहौर समेत उमंगा। आयो बहु जमातिलै संगा॥ क्षुधा क्षुधा सब साधु पुकारे। सुनत व्यास इमि वचन उचारे ५५८ लागत भोग देरनहिं होई। पर साधू मानत नहिं कोई॥ तबहिं व्यास भगवत परसादा। कछु लैआये युत अहलादा ५५९ साधुन के आगे धरिदीन्हों। इक द्वै ग्रासअदन तिन कीन्हों॥ उठेसकल पुनि दरद बहाने। सीथ प्रसादि व्यास सब आने ५६० कियो बहुरि अस्तुति करजोरी। कीन्हीं आप दया नहिं थोरी॥ जूठनि दीन्ही कृपा निकेता। कछुदिन पुंजी भो-

बूड़न लगो नगर भो गाढ़ा ॥ कीन पुकार सबन अतिभारी। तब आपुन बिनती अनुसारी ५७६ कहा कि जो इच्छा यह आई। तौ मैं इनकी करत सहाई ॥ यह कहि हाथ फावड़ा लैकै। बारि राह बाँधत मुद कैकै ५७७ यह लखि कै हटिगई यमुनाजी। आनँद दुन्दुभि पट्टनबाजी ॥ आरति समय होत शंखध्वनि। क्रोध करत हाकिम ताको सुनि ५७८ पुनि अपने मन कियो बिचारा। राधा चढ़ाइ करौं मुखकारा ॥ सोभूराम रूप स्त्रै करिकै। ताके द्वारगये मुद भरिकै ५७९ देखत तिनहिं लाज अति पायो। ह्वै अधीन बहु बिनय सुनायो ॥ पुनि अपराध क्षमा करवाये। सोभूराम भवन निज आये ५८० आत्मा राम जासु के भाई। होत भये हरि भक्तमहाई ॥ संत दास अरु माधौ दासा। जिनकी महिमा जगत प्रकासा ५८१ माधौ दास योगियन काहीं। कीन्हों विजय ज्ञान रणमाहीं ॥ एकबार योगिन अस्थाना। बैठे आगि वारि सुखदाना ५८२ योगिन स्वामि क्रोध जब लायो। तब इन अम्बर अग्नि उठायो ॥ आसन जाइ द्वितिय थल कीन्हा। चरित देखि भो योगि अधीना ५८३ सोभूराम कथा इमि बरणी। दुख दारिद्र नाशन सुखकरणी ॥ हित हरि वंश कथा अब गावों। संत चरण में शीश नवावों ५८४ छन्दगोपाल ॥ हित हरि वंश भजन को भाव। को कवि जो कहि सकै प्रभाव ॥ जिन राधा प्रधान मन जानि। प्रियप्रीतम बिहार उरआनि ५८५ चौ० ॥ कुंज महलमें ध्यानमानसी। करि प्रापत सखि भाव पालसी ॥ हरि प्रसादमें अति विश्वासा। विधि निषेध व्योहार उदासा ५८६ भक्ति अनन्य धरे उर माहीं॥संशय शोक मोह भ्रमनाहीं ॥ राधावल्लभि जौन संप्रदा। तिहि आचारय जगदा मोदा ५८७ जिनके अति प्रभाव सुखदाई। सहसन मनुजन सद्गतिपाई॥ गौड़ विप्र जिनके पितुव्यासा।तारा मातु गर्भकियवासा ५८८ पन्द्रहसै वनसठि समजवहीं। उद्भव खेतभये यतवहीं ॥ श्री नृसिंहकी आशिष पाई। भोहरि वंश जन्मसुखदाई ५८९ कृष्ण

जन हेता ५६१ अब इहि विधिते कृपा करीजै। भोजन द्वितिय होत सो कीजै॥ भयो महंतन दृढ़ बिश्वासा। असि निश्चयका के बिन व्यासा ५६२ तबहिं ब्यास भगवत हित पाई। महिमा सीथ प्रसाद कि गाई॥ जिनमुख भक्त सीथ नहिंआना। तिन मुख शूकर श्वान समाना ५६३ बालक बाल अवस्था माहीं। नाक बहत मुखमें लपटाहीं॥ ताको मुखचू मत सुख सोई। पुनि जब कामविबश मन होई ५६४ चाटत तीय अंग सुख पावत। नेक घृणा मनमें नहिंआवत॥ भगवद्भक्त प्रसादी खाते॥ करत घृणा मन में सकुचाते ५६५ दो०। जगदुर्लभनर देह लहि गुणो न सारा सार। मिलोपोत बूड़त जलधि गहि छांड़ो तिहि बार ५६६ रहे ब्यासके तीनिसुत झगड़ निवारण हेत। सम्पतिके त्रैभागकरि दीन्हे बुद्धि निकेत ५६७ एक भाग किय द्रव्यको द्वितियं किशोर किशोरि। तिलक छापबन्दनि असित कीन्हो तृतियबहोरि ५६८ चौ०॥ पहिला दोसर भाग प्रकासा। रामदास अरु दास बिलासा॥ तिलक आदिजो तीसर भागा। दास किशोर सहित अनुरागा ५६९ बांटि लियो इमि तीनो भाई। तबहिं किशोरदास सुखपाई॥ ढिग हरिदास छाप धारण करि। लागे करन भजन आनन्द भरि ५७० थोरेकाल माहँ अति सिद्धा। भये भक्त हरिभोमन शुद्धा॥ भेहरिव्यास शिष्य बहुतेरे। जिनमें भजन प्रभाव घनेरे ५७१ दो०॥ इहिविधि श्रीहरिव्यासकी कहीकथा सुखखानि। अब श्रीसोभूरामकी गाथाकहत बखानि ५७२ चौपाई॥ विप्रवंशमें सोभूरामा। जन्मतभये वोड़ियाग्रामा॥ संप्रदाय निम्बारक माहीं। चेलाभे हरिव्यासकि पाहीं ५७३ वोड़िय जगधारी के पासा। एक कोस पर जासु निवासा॥ अजहुँ बिराजमान है जोई। परतापी गुरुद्वारासोई ५७४ लाखों जासु प्रभावहि पाई। भगवद्भक्त भये सुखदाई॥ सोभूराम कृपा को पाई। तासुराष्ट्र पथ भक्ति महाई ५७५ एकबार यमुना जल बाढ़ा।

बूड़न लगो नगर भो गाढ़ा ॥ कीन पुकार सबन अतिभारी। तब आपुन विनती अनुसारी ५७६ कहा कि जो इच्छा यह आई। तौ मैं इनकी करत सहाई ॥ यह कहि हाथ फावड़ा लैकै। बारि राह बाँधत मुद कैकै ५७७ यह लखि कै हटिगईं यमुनाजी। आनँद दुन्दुभि पट्टनबाजी ॥ आरति समय होत शंखध्वनि। क्रोध करत हाकिम ताको सुनि ५७८ पुनि अपने मन किया बिचारा। गधा चढ़ाइ करौं मुखकारा ॥ सोभूराम रूप स्त्रे करिकै। ताके द्वारगये मुदभरिकै ५७९ देखत तिनहिं लाज अति पायो। ह्वै अधीन बहु बिनय सुनायो ॥ पुनि अपराध क्षमा करवाये। सोभूराम भवन निज आये ५८० आत्मा राम जासु के भाई। होत भये हरि भक्तमहाई ॥ संत दास अरु माधौ दासा। जिनकी महिमा जगत प्रकासा ५८१ माधौ दास योगियन काहीं। कीन्हों बिजय ज्ञान रणमाहीं ॥ एकबार योगिन अस्थाना। बैठे आगि वारि सुखदाना ५८२ योगिन स्वामि क्रोध जब लायो। तब इन अम्बर अग्नि उठायो ॥ आसन जाइ द्वितिय थल कीन्हा। चरित देखि भो योगि अधीना ५८३ सोभूराम कथा इमि बरणी। दुख दरिद्र नाश न सुखकरणी ॥ हित हरि वंश कथा अब गावों। संत चरण में शीश नवावों ५८४ छन्दगोपाल ॥ हित हरि वंश भजन को भाव। को कवि जो कहि सकै प्रभाव ॥ जिन राधा प्रधान मन जानि। प्रियप्रीतम विहार उरआनि ५८५ चौ० ॥ कुंज महलमें ध्यानमानसी। करि प्रापत सखि भाव पालसी ॥ हरि प्रसादमें अति विश्वासा। विधि निषेध व्योहार उदासा ५८६ भक्ति अनन्य धरे उर माहीं। संशय शोक मोह भ्रमनाहीं ॥ राधावल्लभि जौन संप्रदा। तिहि आचारय जगदा मोदा ५८७ जिनके अति प्रभाव सुखदाई। सहसन मनुजन सद्गतिपाई ॥ गौड़ विप्र जिनके पितु व्यासा। तारा मातु गर्भ कियवासा ५८८ पन्द्रहसै वनसठि समजबहीं। उद्भव लेतभये येतबहीं ॥ श्री नृसिंहकी आशिष पाई। भोहरि वंश जन्मसुखदाई ५८९ कृष्ण

राधिका भक्ति महाना। भई प्रथम ते अति सुखदाना॥ एकसमय राधा महरानी। अमित दया तिन ऊपर आनी ५९० चलदल पत्रमंत्र लिखिआई। दीन स्वप्न में पताबताई ॥ बहुरि कृपा तिन ऊपरकीन्ही। कूप बनाइ मूर्त्ति हरिदीन्ही ५९१ मूरति मंत्रपाइ सुखकारी। मंत्र जपन लागे उरधारी॥ भगवत मूर्त्ति राधिका जानी। सेवा पूजा बन्दन ठानी ५९२ पुनि रुक्मिणीनाम तिय जोई। तासों प्रगटभये सुतदोई॥ पुत्रीएक जन्म पुनि लीन्हा। तिनके बिबाहादि सबकीन्हा ५९३ वृन्दाबन तजिगेवन दूजे। तहँ भगवत इमि कारज पूजे॥ चरथा बलं अति सुन्दर ग्रामा॥ भगवत आज्ञा पाइ ललामा ५९४ ब्राह्मण एक महा सुखपाई। निज कन्या दीन्हीं ढेलाई॥ राधा बल्लभजी की मूरति। सोऊ देत भयो सुख पूरति ५९५ तब हर्षित वृन्दाबन आये। पहुँचतही मंदिर बनवाये॥ भगवत मूरति जो सुखदाना। थापत भे राधा अस्थाना ५९६ तब राधा भल्लभी सुहाई। संप्रदाय सुख दानि चलाई॥ राधा कृष्ण स्वरूप उपासन। इहि संप्रदा माहँ सुख वासन ५९७ पर राधिका मभावन जैसी। कृष्ण माहँ नहिं राखत तैसी॥ आपुहि सखी भाव करिजानत। महा रानि राधा उरमानत ५९८ जिन निज उर निश्चय इमि आनी। रहैं प्रसन्न राधिका रानी॥ प्रीति राधिका मानस धरि हैं। कृष्ण कृपा आपुहिते करि हैं ५९९ राधा अमृत निधि जो ग्रंथा। संस्कृतमें विरचो शुभपंथा॥ ताकी प्रेम भक्ति सुखदाई। रचना काव्य वरण मधुराई ६००बरणत बनत सो न सुखदाई। हितचौरासी भाषागाई॥ निष्ठा हरि प्रसाद में जैसी। नाहिंन कहत बनतहै तैसी ६०१ श्रीराधा की कृपा महाई। स्वयंसिद्ध हरिवंश गोसांई॥ भजन प्रेमरस भक्ति नवीनी। चुनि निकारि संप्रदन सुलीनी ६०२ श्रीराधिकापर कियाभावा। इहि संप्रदा सुखद अति गावा॥ श्रीहरि बंश बंश सुख साजत। देव नँदन वृन्दावन राजत ६०३ दो०॥ इहि विधि श्री हरि वंश सुभग गाथ कियगान। बरणि चतुर्भुज की कथा अब मैं

करत बखान ६०४ शिष्य रहे हरि बंश के चतुरबाहु महराज। भगवत भक्ति बिना नहीं किये जगतके काज ६०५ भगवद्भक्ति प्रताप दृढ़ाई। बहु लोगन उर भक्ति बढ़ाई॥ राधाबल्लभ लाल चरित्रा। रचित काव्यमें कीन पवित्रा ६०६ पढ़ि सुनि सोई चरित सुहाये। सहसन जन सदगति को पाये॥ भक्तन की सेवा इमि ठानी। तिन पद रज शिरभूषण मानी ६०७ सत संगति में मगन सदाई। जिन गुरुपद रजकृपा महाई॥ देशगोडवानो जिहि नामा। किये भक्त सब नर तिहि ठामा ६०८ रहे लोग वा देशम जेते। प्रथम उपासक कालीकेते॥ देत मनुज बलिकालिहिजाहाँ। भगवद्भक्ति प्रवेशन ताहाँ ६०९ विधि बशतहां चतुर्भुज गयऊ। देखत चरित तहांके भयऊ॥ भगवद्भक्त प्रथम करिकाली। तब होवै सब कारज हाली ६१० कालिहि भगवत मंत्र सुनायो। करिहरि भक्तताहि अपनायो॥ तब कालीनिशि स्वप्नमँझारा। दियो सबन उपदेश वदारा ६११ तुमसब जाइ चतुर्भुजतीरा। परिचरण न कहि वचन अधीरा॥ सेवक होइ विनय बहुगावो। भगवद्भक्ति तहां तुम पावो ६१२ नाहित नाशकरौं सबकेरा। सब उठि धाये होत सवेरा॥ सब कहँ शिष्य चतुर्भुज कीन्हे। माला तिलक सबन कहँ दीन्हे ६१३ कछु दिन रहि तिहि देश मँझारा। भगवतआराधनाविस्तारा॥ पुनि श्रीमद्भागवत सुनाई। भगवत पूरण प्रीतिदृढ़ाई ६१४ दो०। एकवैश्यकी द्रव्यकछु लीन्हों कोउ उठाइ। धायो पीछे वणिक लखि तब वह चलो पराइ ६१५ चौ०॥ जब छपिवेको ठौर न पायो। तब यह देखो चरितसुहायो॥ बांचत कथाचतुर्भुजस्वामी। बैठतहां करिजाइनमामी ६१६ तिहि क्षण कथाहोन यह लागी। सुननलाग सो परमसभागी॥ शास्त्रविहितदीक्षाजेलेहीं। तासुनवीन होतहै देहीं ६१७ यह सुनि शिष्य भयो तिनकेरा। आवतभयो वणिक तिहि बेरा॥ तासों कहो द्रव्य मम लायो। सो कहमैं नहिं कछू चुरायो ६१८ गोला तप्तकरायो तबहीं। ताके हाथ धरो लै जबहीं॥ तबराजाप्रेवचन

सुनायो । मैं इहिजन्म न कछुचुरायो ६१९ ताको पानि दाह नहिंभयऊ । राजा वचन कहनइमिलयऊ ॥ आज्ञा दियो बणि क हित शूली । तब वह साधु कहो मुदफूली ६२० सब वृत्तान्त नृपहि समुझायो । राजा बणिकहि भवन पठायो ॥ पुनि राजा अति आनँद पाई । शिष्य भयो स्वामीको आई ६२१ आवत रहे साधु इक दीना । देखो पाको खेत नवीना ॥ लागेखान अन्न सुख पाई । रखवारो तब कहोसुनाई ६२२ यहतो खेत चतुर्भुज केरा । सुनि साधू बोले तिहि बेरा ॥ तौ यह खेत हमाराही है । मनाकरत तू बिरथाहीहै ६२३ यहसुधि जबहिं चतुर्भुज पाये । करि प्रणाम साधुन घरलाये ॥ पुनि तिन आसन अशन कराये । आनँदके जल चक्षु बहाये ६२४ महाधन्य आपुनकरि जानो । की मम वस्तु साधु निज मानो ॥ ऐसे चरित महा सुखकारी । किये चतुर्भुज जग उपकारी ६२५ छन्द रामगीति का ॥ कहत अब सुखपाइ शंकर स्वामि उत्तमगाथ । भे प्रवर्त्तक धर्म भगवत पार्वती के नाथ ॥ जे अनीश्वर वादि धर्मी जैन अरु पाखंडि । विमुख भगवत दुष्टबुद्धी दियो तिन मत खंडि ॥ ६२६ शास्त्र पद्धतिपर चलायो सबनको सुखसार । विक्रमादित्य के समयदिग्याम्यभो अवतार ॥ दण्ड धरि संन्यासि ह्वै वहि धर्म पद्धति जोइ । ताहि सों फैलाइ भगवत धर्म सुन्दर सोइ ॥ ६२७ मिश्रमण्डन कहत जिन को आतमभू अवतार । वादि सो मीमान्समत के रहे पालनहार ॥ कहतहै मीमान्स ईश्वर कर्महि सबकाल । तिनहि शंकर स्वामिजीतो बादही में हाल ६२८ मिश्रकी तियकाम शास्त्रम वादकिय आरंभ । ये यतीसं-न्यासि जाननभई वाणीथंभ ॥ नृपति अमरुक देह आपनि छांड़ियो तिहिकाल । योगबलसों प्राण आपन प्रविशकिय तहँ हाल ६२९ वासकरि पटमास तातन शतक अमरुक ग्रन्थ । कियो रचना ललित सुन्दर कामके बहुपन्थ ॥ सकल रानी नृपति अमरुक जानियो मनयेह । कोट है यह योगिह्वै है गुप्तयाकी

देह ६३० भस्मकरिये देह याकी रहै जासोंसंग। रहै हमर सुहाग राजै राजसातौ अंग ॥ यह विचारि ढुँढ़ाइतनको भस्मकरिवे हेत। दियोआज्ञा भृत्यहुतभुक् देत स्वामी चेत ६३१ तुरततजि नृपदेह निजतन माहँकीन प्रवेश। अनल रक्षा हेत नरहरि विनयकीन विशेष॥ भई शीतल दहन तवउठि चलतभे आचा र्य्य। कियनिरुत्तर मंडनस्त्री जासु हित कियकार्य्य ६३२दो०॥ शिष्याकियो पुनि मिश्रको शंकरजी हरषाइ। चारवाक मतके जनन दीन्हो वहुरिहराइ ६३३ कियप्रवर्त्त निजधर्म में लखि न परत अव सोइ। मुसलमानमें सुनिपरत कहत दहरियाजोइ ६३४ शांख्यशास्त्र हठ योगियन दीन्हो शिक्षा फेरि। साथ सेवड़नके वहुरि वाद कियोतिनहेरि ६३५ चौ० ॥ वढ़मत वाद युद्ध अति भारी। कीन परास्त शंकराचारी ॥ चेटक मंत्र धूर्त्त- ई आदिक। तिनकी दूरिकियो शुभ वादिक ६३६ पुनि उन इन्द्रजाल बहु कीन्हा। सो अपनेही शिरपर लीन्हा ॥ कोठे ते गिरि धरणी आये। मरे वहुत निज कृत फल पाये ६३७ बूड़े कछुक नदी में जाई। रहे जो तिनहित भयोउपाई॥ देशाधीशि समय तिहि जोई। नावन भरवायो लै सोई ६३८नदीमाहँ सव कहँ वुड़वाये। वचे जो भगवत शरणहि आये॥ तात्पर्य्य तिन को यह अहेऊ। भगवत विमुख कोउ जो रहेऊ ६३९ अथ- वा वेद विरुद्धी जोई। विद्या वल प्रभाव सो सोई ॥ जिहिविधि वोध भयो तिनकाहीं। दृढ़कीन्हो भगवत प्रथमाहीं ६४० ठौर ठौर मंदिर वनवाये। देवालय शिव सदन सुहाये ॥ पुनि प्रति देवस्तोत्र वनाये। पूजा आदि रीति प्रगटाये ६४१ विष्णुसह स्रनाम अरु गीता। शारीरक जो सूत्र पुनीता॥ इनपर भाष्य रची करि न्यारी। +शंकरविजय कथा विस्तारी ६४२ नाममात्र है यहां वखाना। सूक्ष्महाल वरणों सुखदाना॥ अगुणउपासक कहत विचारी। निर्गुण भाव शंकराचारी ६४३ सगुण उपासक

+शंकर विजय अर्थात् शंकर दिग्विजय॥

वैष्णव मानत । नादसुष्ठुतर ताहित ठानत ॥ सगुण उपासन पद्धति एहा । सोईबर्णत सहित सनेहा ६४४ अपने इष्टहिं अंगी मानत । दूजे देव न अंग बखानत ॥ सकल संप्रदन में जिहि भांती । पूजा जप सुमिरण सुखपांती ६४५ सोई मत शंकर आचारी । ताते भेद कि नाहिं चिह्नारी ॥ भये शिष्य तिन के बहुतेरे । तिनके भे अस्थानघनेरे ६४६ वेदस्थानमुख्यातिनमाहीं । चारिशिष्यभे वसत तहाँहीं ॥ तिनके नाम भये मठजोई । तिनकेनाम कहतहौं सोई ६४७ परंपरा कछुबरणि सुनावत । शंकर के शिष्यन लौंगावत ॥ सतयुगमाहँ विष्णुशिव भयऊ । त्रेतायुग वशिष्ठ सुखछयऊ ६४८ शक्ति वशिष्ठ पुत्र ताहीमें । भये पराशरहू वाहीमें ॥ द्वापर व्यास अपर शुकदेवा । गौडाचार्य कलियुगभेवा ६४९ पुनि गोबिन्दहु शंकरस्वामी । जिनके शिष्यभये अतिनामी ॥ संगेरी मठ दक्षिण राजै । पृथ्वी धराचार्य्य सुख साजै ६५० शारदमठ पश्चिम सुखछावै । तहाँ स्वरूपाचार्य्य सुहावै ॥ गोवर्द्धन मठ पूरबसोहै । पद्माचार्य्य तहां मनमोहै ६५१ दो० ॥ पायासिमठ उत्तर अहै तहाँ तोटकाचार्य्य । राजत इहिविधि मठनमें पूरणकीन्हेकार्य्य ६५२ पृथ्वीधराचार्यके तीनि शिष्य सुखदान । पुरीसरस्वति भारतीतिनके नाम बखान ६५३ भयेस्वरूपाचार्य के आश्रम तीरथनाम । वनआरण्यहु होतभे पद्माचारय धाम ६५४ गिरिपरबत सागर सहित शिष्य तोटकाचार्य्य । इहिविधि प्रगटे शिष्यदश साधक पूरण कार्य्य ६५५ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचितेचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येधर्मप्रचारकनिष्ठायांविंशभक्तकथावर्णनभक्ताम्बुनिधौचतुर्थस्तरंगः ४ ॥

सोरठा । श्रीरघुवर उरधारि अम्बर रेखाचरणकी । कोलरूप सुखकारि धारोहारि बन्दौंचरण १ छंदकंकणबद्ध ॥ जयति मापतिं उत्तमांगातिं मनस वाचकं कर्म कायजं । हरति पातकं जात नांतकं शमन दारिदं रूप वारिदं २ चौ० ॥ पुनिबन्दौ

दंष्ट्री अवतारा । ब्रह्मपुरी में निजतन धारा ॥ धरि अवतार महासुख कारो । हिरण्याक्ष बधि भूमि उधारो ३ निष्ठा तृतिय महासुख कारी । सत्संगति जामें बिस्तारी ॥ सेवा साधु कही है तामें । कथातीस भक्तन की जामें ४ सोई बरणि कहत सुखपाई । संत चरण में शीश नवाई ॥ सर्व शास्त्र इमि कहत सचेता । जीव कि बंधन छूटनहेता ५ है सत्संग एक जगमाहीं । दूजी अपर साधनानाहीं ॥ पुनिसत्संग कहावत सोई । भगवद्भक्ति प्राप्त जिहिहोई ६ ताकी महिमा अगमअपारा । किंचिन्मात्रक-हत सुखसारा ॥ यहसत्संग लहै पै सोइ । सेवासाधु करै जो कोई ७ तासों सेवासाधु सुहाई । यानिष्ठा तामहिमागाई ॥ सत जो भगवद्भक्त सुहावै । तासु संग सत्संग कहावै ८ पर कोऊ बहुभांति बतावत । तामें मुख्य दोइ ठहरावत ॥ एकशास्त्र तीर्थ न सत्संगा । दूसर भगवद्भक्त अभंगा ९ पढ़ै शास्त्र अरुसदाबि-चारै । यह अभ्यासहिये बिचधारै ॥ चलैतासु अनुकूल सदाई । सारासार बिचार कराई १० ईश्वर माया जीव बिचारै । नाना भांति ज्ञान उरधारै ॥ नर्क दुःखसे डरै सदाई । भगवत रूपमाहँ मनलाई ११ रूपमाधुरी मूरतिशोभा । तामेंरहै सदामनलोभा ॥ ऐसी बुद्धि लगै दृढ़जाकी । शास्त्रसार जानो मति ताकी १२ हरिचरित्र जिन शास्त्र बिशाला । सोई पढ़ै सुनै सब काला ॥ तब यह जीव कृतारथ होई । सुख दुखतजि आनँद लहसोई १३ धर्म बिरुद्ध ग्रन्थ हैं जेते । भूलि न कबहुँ बिलोकै तेते ॥ इहि बिधि शास्त्र संग किय गाना । करत तीर्थ सत्संग बखाना १४ दरश परस मज्जन जो करई । बाढ़ै पुण्य पाप तन जरई । भगवतने यह दियो प्रतापा । तीर्थन को दारन त्रैतापा १५ कोई इहिबिधि कहत सुनाई । भगवद्भक्त नियत वैआई ॥ नाना भाँति समाज बनावैं । तासों तीरथ नाम कहावैं १६ उनभक्तन में पुण्य महाई । तिन अस्नान कीन तहँ आई ॥ चरण परे भक्तन के जोई । तहँ अस्नान करै नरकोई १७ शुद्ध चित्त

यहिप्रकार बनिआवै ४६ भगवत में निष्ठा जिमिकरई। तिमिभ गवद्भक्तनमेंधरई ॥ जिमिभगवत सेवामनलागै। तिमिभगवद्भ-क्तनअनुरागै ४७ भगवत बचन भागवतमाहीं। ममउपघन हैं भक्तसदाहीं॥ वेही पूज्य जगत लखिलीजै। तजिउपाय तिन सेवाकीजै ४८ पद्मपुराणमाहँ हरिगावै। जो ममभक्तअशनकर वावै। सेवाकरतजौन भक्तनकी। सोसबहोत हमारे तनकी ४९ जबलौंमोहिं न अशनकरावैं। तबलौंभक्त कछूनहिंखावैं ॥ तैसे हीहौंहूं नाहिंखाऊं। जबलौं तिनहिंन अशन कराऊं ५० अपर पुराणन में हरिगावत। जो मम भक्त भक्त मम पावत॥ फिरि भगवत यह वचन उचारा। गंगापाप हरणसुख सारा ५१ च-न्द्रताप हर सुरतरु दारिद। त्रिदुख अनल नाशन जनबारिद॥ ममभक्तन के दरशन करई। तीनौ दुख क्षण भीतर जरई ५२ बहुरिऋपिन ये वचन सुनाये। असपवित्र तीर्थादिन गाये॥ संत शीघ्र जसकरत पवित्रा। उभय लोक सुखदानि चरित्रा ५३ इहि विधि वचन हजार न भांती। जियालाल नाहिं बरणि सिराती॥ जो भगवत आनन्दहि चाहै। चाहै अपर जगत निर्वाहै ५४ तौ भगवद्भक्तन की सेवा। करै जानि देवनके देवा जाति पाँति कछु नाहिं विचारै॥ भगवतसम भक्तहि उरधारै ५५ कौनौ जाति भक्त हरिहोई। भगवतरूप जानिये सोई॥ महभारत में भगवत बानी। जाति भेद मम भक्तमजानी ५६ जो सेवा नहिं करै सुहाई। ताकी नास्तिक बुद्धि महाई॥ सेवासाधु मार्ग दुखदाई। वसत पांचठग सबल सदाई ५७ सोरठा। एकजातिको मान छोटिजाति करसाधुलखि। करै न सेवादान दूजोविद्या गर्वठग ५८ चौ०॥ अपढ़ साधुको छोटाजानै। तृतियगर्व ऐश्वर्य्य ब-खानै॥ जाके मदसों मत्तसदाई। भला बुरा नाहिं लखत कदाई ५९ चौथोठग निजरूप विलोकी। साधूको कुरूप अवलोकी॥ सेवामें मननाहिं लगावै। निजस्वरूपके मानभुलावै ६० पंचम निज शरीर बलदेखी। काहूको नहिंगनत विशेखी॥ इनपांचौ

को न्यारेधरई। भगवत चरण प्रीतिदृढ़ करई ६१ जिन बाल्मी
कि सुपच सुखसाजा। नृपनि युधिष्ठिर यज्ञसमाजा॥निज रसोइ
में ताहि बिठाई। सेवाद्रुपदी हाथ कराई ६२ पुनि श्रीरघुनन्दन
सुखपाये। भिल्लिनके जूठेफल खाये॥ पुनि केवट निजहृदय
लगाये। लंकविभीषण स्ववश वसाये ६३ हैइकसाधु सेबिइति
हासा। सुखदायक सो करत प्रकासा॥ एकसमय साधू इक
आयो। वहकछुरहो देह दुखपायो ६४ सोनिज तियसों कहो
बुझाई। सेवासाधु करौ मनलाई॥ कहोतीय ममशीश पिराई।
तिहि अवसर विधिरचा उपाई ६५ आयो तिहिक्षण तिहिया
माता। उठीतीय अति हर्षित गाता॥ रचेअमित पकवान सि
ठाई। व्यंजन बहुप्रकार सुखदाई ६६ यह लखिसाधु सेबिरुटकी
न्हा। घरसों तीय काढ़ि द्रुतदीन्हा॥ बहुरितीय सों बचन सुना
यो। जबयामात मोर चलिआयो ६७ तबतेरो अति शीश
पिरानो। निज यामातदेखि सब मानो॥ सत्यकि कामी मिथ्या
बादी। स्त्री लोभी अरु बाद कुबादी ६८ दो०। होत द्रव्यप्रिय
जौन विधि सुजनहि भगवद्भक्त। देहगेह परिवार धन गुनि
सेवत अहनक्त ६९ जाकी भगवद्भक्तमें प्रीतिन इहि संसार।
तिहि मनोर्थ इहु लोकमें सिद्धन होत असार ७० चौ०। भ-
गवद्भक्त प्रीति जो करई। मनवच क्रम सेवा अनुसरई॥ सिद्ध
मनोर्थ तासु सब होई। युगयुग में यश पावै सोई ७१ भगवद्भक्त
बिमुख नरजेई। निन्दा करत भक्त कीतेई॥ भगवत घरसों गये
निकाले। चीन्ह हेत मानहुँ मुहँ काले ७२ जो शत्रुता भक्त सों
करई। दुःखदेइ सो आपुन जरई॥ जब हिरण्यकश्यप बलवा
ना। देवन को दीन्हे दुखनाना ७३ भगवत सों सुरजाइ पुका
रे। रोदन करि निज दुःख उचारे॥ पर भगवत उरक्रोध न आ
यो।जब प्रह्लादहि असुर सतायो ७४ तब पलआध रहानहिं गय
ऊ। असुरहि मारि भक्तसुखदयऊ॥ भगवद्भक्त जासु दुखपावत।
तासुनाशहित भगवत धावत ७५ जो को भगवद्भक्त सतावत।

तीनों लोक मांझ दुखपावत ॥ जिमिदुर्वास गाथजगमाहीं । गये शरण जिहि राखा नाहीं ७६ अब वरणों सो भक्त सुहाये । इहि निष्ठामें जिन गुणगाये ॥ प्रथमहिं बिदुरकथा अबगाऊं । संतचरण में शीश नवाऊं ७७ दो० । ग्रामछटेरा योधपुर राजधानि सुखमूल । सेवा संतनकी करत जोदारक सब शूल ७८ एक साल आवर्षण भयऊ । खेत सुखाय सकल तहँ गयऊ ॥ तबहिं विदुरमनमाहँ विचारा । साधुनको किमि देब अहारा ७९ आज्ञा स्वप्न दीन भगवाना । काटिक झारौ खेत सुखाना ॥ सोई करन लगे हरषाई । हँसी करहिं सब लोग लुगाई ८० सो० । द्वै सहस्र मनअन्न प्रगटो तासों सुभग अति । भोमन विदुर प्रसन्न भगवत दीन्हो साधुहित ८१ चौ० । सत्यकि सेवा साधु सुहाई । उभय लोकमें आनँद दाई ॥ सूखेतरु फलफूललगावै । जन्मजन्म उर भक्ति बसावै ८२ अबभगवानदास को गाथा । वरणौं नाइ रामपद माथा ॥ क्षत्रीवंश जन्म जिनपाये । भीमसिंहके पुत्र कहाये ८३ परमभक्त भगवतके भयऊ । भक्तनकी सेवामन दयऊ ॥ दृढ़ विश्वास साधुमें कीन्हा । निज मनखैंचि जगत सों लीन्हा ८४ मथुरा माँझ वर्षप्रति आवैं । साधुन विप्रन अशन करावैं ॥ रासविलास तहां करवावैं । बहुत द्रव्य तिहि माँझ उठावैं ८५ विधि वशधनसँकोच कछु भयऊ । ऋणलैके मथुरामें गयऊ ॥ कछु कमकरि कियदेन विचारा । विप्रनकीनन अंगीकारा८६सदा मिलत तेती जबपैहैं । तबहम द्रव्य आपकीलैहैं ॥ सुनि भगवान दास इमि बानी । सबगथ अग्रदियो धरिआनी८७तब सबहुँन मिलि कीन विचारा । यामें नहिं ह्वै है भगडारा ॥ सूखा अन्न देहु बँटवाई । यह कहि एक भवन में आई ८८ अन्न मँगाइक बाँटन लागे । यह लखि भक्त द्रोहि अनुरागे ॥ यह विचार किय भक्त अराती । इनकी हँसी होइ जिहि भांती ८९ दो० । इक सीधे के ठौर पर दश सीधा दैदेत । कृपा करी रघनाथ तहँ भक्त लाजके हेत ९० चौ० । द्रव्य लुटाइ अमितति

नदयऊ। पररीतो मन्दिर नहिं भयऊ॥ भक्त लाज राखी रघुरा
या। जिमि द्रौपदि कर वसन वढ़ाया ९१ दो०। भक्तन मन नि
श्चय भई भक्ति प्रभावहि देखि। दारिद वन दावा भगति कामद
सुरतरु लेखि ९२ चौ०। वारमुखी की कथा सुहाई। वर्णन करौं
भक्त सुखदाई॥ नगर बलाद याम्य दिगमाहीं। वारमुखी इक
वसत तहाँहीं ९३ अति धनवान रूप मम मोहै। ताद्वेर इक भूरु
ह सोहै॥ तातर विमल वेदिका राजै। घनोछाँह पादप सुख
साजै ९४ इकवै साधु लोग तहँआये। टिके सुथल लखि आ
नँद पाये॥ संध्या वारवधू गै द्वारे। बैठे साधू तहाँ निहारे ९५
तब निज मन में कीन विचारा। साधू जो जानै मम द्वारा॥ तौ
तुरन्त इतसों उठिजाई। यह गुनिमन्दिररही छिपाई ९६ थाली
भरिमुहरैं निशिलीन्हीं। साधुन जाइ दण्डवति कीन्हीं॥ जाति
भेद साधुन जबजाने। तब ताहित उपदेश बषाने ९७ एकमुकु
ट तैंलै बनवाई। रंगनाथ को भेंटसि जाई॥ शुद्ध होइ तेरोधन
तबहीं। सो या विधि सुनिपायो जबहीं ९८ मुकुट जड़ाउ एकबन
वायो। तीनि लाख मुद्रालगवायो॥ अति विश्वास प्रीतिमन
लाई। नाचत चली वाद्य बजवाई ९९ लिये मुकुट पहुँची इमि
तहँवाँ। रंगनाथ को मन्दिर जहँवाँ॥ मन्दिर के समीप जब
आई। रजस्वला भो प्रगट जनाई १०० व्याकुल धरणि गिरी
सह शोका। रंग नाथ तब ताहि विलोका॥ ताके हिये प्रेम पहिं
चानी। कही पुजारिन सों इमि वानी १०१ वारमुखी को लाव
हु जाई। सुनतहि गे सामुहे लवाई॥ मुकुट धरन शिरहाथ उ
ठायो। सिंहासन ऊंचो नहिं पायो १०२ तब भगवत निज शीश
झुकायो। वड़ भागिनी मुकुट पहिरायो॥ बड़ भागिन की ग
णना माहीं। भई प्रगट धरि हरि उर माहीं १०३ भो भक्तन को
क्षण सत संगा। भयो मनोरथ सिद्ध अभंगा॥ जियालाल स-
तसंगति करिये। ममता छोरि पिटारे धरिये १०४ अब तिलोक
जी की शुभ गाथा। वरणौं नाइ राम पद माथा॥ स्वर्णकरा

के गृह अवतारा। लीन्हों पूरब देश मँझारा १०५ दो०। हरि भक्तन सेवा बिषे बढ़ी प्रीतिअति जाहि। लाभ होत उद्यम बिषे खरचत सेवा माहि १०६ चौ०। तौन देश को राजा जोई। कन्या के बिवाह हितसोई। गहन बनावन हेतु भुवारा। दियो तिलोकहि द्रव्य अपारा १०७ इनसाधू सेवा में सोई। व्ययकरि दियो सकल गथजोई॥ मांगोनृपति गाहनो जबहीं। आजु कालिह करिटारो तबहीं १०८ तबराजा निज निकट बुलायो। भोरहिंदेन भाषिघरआयो॥ भयो नृपति करडर अतिताहीं। भोर हि जाइ छिपो बनमाहीं १०९ यह प्रसंग जानोजग तारण। सदाभक्त के रक्षाकारण॥तुरित तिलोक रूपधरि लीन्हो। गहनो जाइ नृपतिको दीन्हो ११० तहां इनाम नृपतिसों लयऊ। लैति लोक के मन्दिर गयऊ॥ उत्सव अति तिनके घरकीन्हो। साधुन विप्रन भोजन दीन्हो १११ लैपरसाद तहांतिन लीन्हो। जाइ ति लोकहि बन में दीन्हो॥ भोतिलोक घर उत्सव आजू। हमप्रसा दलाये तुवकाजू ११२ कहोतिलोक कौनहैं सोई। जासमनहिं त्रिलोक में कोई॥ यह कहि भे प्रभु अन्तरध्याना। देखितिलो क चरित सुखमाना ११३ धरिभगवान हियेघरआये। सुमिरण भजन माहँ मनलाये॥ साधुन की सेवा नितकरहीं। सीताराम नाम उच्चरहीं ११४ दो०। इहि विधिकथा तिलोककी जियाला ल कियगान। कथा तिलोचनदेवकी अबमैं करत बखान ११५ चौ०। वैश्य वर्ण में जन्मे जोई। चेलाज्ञान देव के सोई॥ वैष्णु संप्रदा के सुखकारी। भगवद्भक्त भये अतिभारी ११६ [सा]धु सेवा करत अतिसोई। रहेतीय निज आपुन दोई॥ चि ताकरत रहत दिन राती। चाकर मिलत एकयहि भांती ११७ [सा]धुन के मन की गति जानी। सेवा विविध करत सन मानी॥ [य]ह गुनि श्री भगवत सुखदायक। भक्त जनन के सदा सहा[य]क ११८ टहलू रूप आपु हरि करिकै। टूटी जूती पायँन धरि[कै]॥ कमरी फटी एक शिर धारे। आवत भये तिलोचन द्वारे११९

कहो तिलोचन लखि सुख पाई। कत रावरे भवन पितु माई ॥
सो कह मम घर बाप न माई। टहलू इत उत फिरौं सदाई १२०
चारि बरण की पद्धति जानौं। भक्तन की सेवा अति आनौं ॥
अन्तर यामी नाम हमारा। सात सेर नित करत अहारा १२१
सुनत तिलोचन आनँद पाये। स्नान कराइ बस्त्र पहिराये॥ तब
अन्तरयामी इमि बोले। तुम सों कहत बचन इक खोले १२२
भोजन हित गिल्ला जबहैहौंतादिन हम या थल नहिं रैहौं॥तिय
सों सकल तिलोचन भाखा।अन्तरयामिहि निज घरराखा१२३
दीन सौंपि संतनकीसेवा।लगे करनसो गुनि मनभेवा॥इमि सेवा
कीन्हीं मन लाई।नाम तिलोचन जग फैलाई १२४ इहि प्रकार
भे तेरह मासा।मास चतुर्दश कियो प्रकासा।।तीय तिलोचनकी
इकदीना।गई परोसिन घरतन छीना१२५कहो परोसिनि सहित
सनेहा।केहि कारण दुर्बल तव देहा॥सो कह सुनहु परोसिनि बा
ता।पीसत पोवत सबदिन जाता१२६टहलू इक राखो मम स्वामी।
खात बहुत सो अंतरयामी ॥ जब इहि विधि सों तीय बखाना।
भे भगवत द्रुत अन्तर ध्याना १२७ अन्तरयामिहि जब नहिं
देखा। भयो तिलोचन शोक अशेखा॥ बिन जल अन्न रहे दिन
तीनी। भै अकाश वाणी सुख भीनी १२८ सुनहु तिलोचन
बचन सुहाये। तुव अभिलाष जानि हम आये॥ हमहिं टहलुवा
रूप बनाये। संतनकी सेवा मन लाये १२९इच्छा बहुरि तुम्हारी
होई। अंगीकार करैं हम सोई॥ सुनत तिलोचन अति दुखपाये।
पश्चात्ताप महा मन लाये १३० तब संतन बहुविधि समुझायो।
भोजन पान तिनहिं करवायो॥ सेवा भजन करन सो लागे।
भगवत चरणनमें अनुरागे १३१ इहि विधि कथा तिलोचन
केरी। बरणन कीन महासुद हेरी॥अब जस्सू स्वामीकी गाथा।
बरणौं नाइ राम पद माथा १३२ दो०। गंग यमुनके बीचबर
भगवद्भक्त सुजान। लाभ होत खेतीम जो भक्त अशन हित
आन १३३ चौ०। एक समय या विधिते भयऊ। तिनके वृषभ

चोर लैगयऊ॥ तब करुणानिधि रच्यो उपाई। जिमि ब्रह्माको मोह भुलाई १३४ हरि अवतार जबहिं ब्रज लीन्हा। ग्वालबाल सँग भोजन कीन्हा॥ सो लखि ब्रह्मा मोह भुलाये। येकैसे ब्रज में हरि आये १३५ जो अवतार सुनो जगमाहीं। सो न लखाइ परत हम काहीं॥ यह कहि बालवत्स हरि लीन्हों। तुरित पयान लोक निज कीन्हों १३६ यह चरित्र जानो यदुराई। लीन्ह तुरित ते सकल बनाई॥ ब्रह्मा पुनि देखो इत आई। बालवत्स सब परे लखाई १३७ पुनि देखन निज लोक सिधायो। तहँ विलोकि वहुरो इतआयो॥ इहि विधि किय आवर्ति घनेरी। पुनि अस्तुति कीन्ही हरि केरी १३८ जस्सूके तिमि वृषभ बनाये। चोर देखि देखन घरधाये॥ घर लखि बहुरि आइ इत देखा। तिन मन भो आश्चर्य्य विशेखा १३९ तब जस्सू स्वामी सों बोले। भेद सुनाइ कपटउर खोले॥ हरि चरित्र ये स्वामीभाषा। करौकार्य तुम निज अभिलाषा १४० हम अपनो कारजहैं करते। तुम सन्देह मांझ किसिपरते॥ सुनि चोरन मन भो विश्वासा। वृषभ लयाये जस्सू पासा १४१ गुप्तभये मायाके बैला। चोर काम तजि भे तिन चेला॥ भगवद्भजन करन सो लागे। भगवत चरणनमें अनुरागे १४२ दो०। जस्सू स्वामी की कथा इहि विधिकही बनाइ। रामदासकी गाथशुभ सोऊकहत सुनाइ १४३ चौ०। परम भागवत ब्रजके वासी। सेवासाधु किभये प्रकासी॥ देखि भक्त सुख लहैं अतूलै। रविहि विलोकि कमल जिमिफूलै १४४ इकबैएक साधुसुखपायो। सुनिबड़ाइ तिनकी तहँ आयो॥ पूँछाराम दास कहँअहहीं। रामदास सुनिकै उठितवहीं १४५ चरण धोइ चरणोदक लीन्हो। नानाभांति विनय पुनि कीन्हो॥ भोजन आपुकरैं इतजवतक। रामदासहू आवत तवतक१४६मिलैं प्रथम यह साधु बखानी। सविनय रामदास कहवानी॥ रामदासहै एही दासा। सुनि साधू मन भयो हुलासा १४७ रामदास लड़की को व्याहा। ताहित होतभयो उत्साहा॥ बने अमित पकवान

मिठाई। तिहि अवसर जमाति इक आई १४८ तालातोरि तुरि
त तिन डारा। साधुजनन को दीनअहारा॥ साधुन में इहिविधि
जिन प्रीती। सुमिरण भजन सकल वयबीती १४६ सन्तभक्त
की कथा सुहाई। वरणौं रामचरण शिरनाई॥ रहो योधपुर वास
स्थाना। भगवद्भक्त भये सुखदाना १५० भीखमांगि ग्रामनसों
लावैं। सो साधुन को अशन करावैं॥ भो विख्यात नामतिन
केरा। आये तहांसाधु इकवेरा १५१ तिनकी तीयरही घरमाहीं।
साधुन कहो सन्तकहँ आहीं॥ गेचूल्हे में तीय वखानो। सुनत
साधुजन कीन पयानो १५२ सन्तभक्त मारगमिलि गयऊ। ति
नसों साधुन पूछन लयऊ॥ कहँ सों आवत करिय वखाना।
तव इनतीय वचन सवजाना १५३ दो०। सेवासाधुप्रतापसे
विमल हृदय तिन केर। काकुकहे गुनिधरणिके कहे वचन करिफेर
१५४चौ०। चूल्हेगये रहे गुणखानी। सुनतसाधुजन चकृतवानी॥
साधुनको चकृत जब देखा। संतभक्त इमि कहो विशेखा १५५
जवहिं प्रभात होत लखिपावों। साधु अशन हित चिन्ता लावों॥
की कव तिनहिं खदन करवैहौं। तिनकी सीथ प्रसादी पैहौं१५६
यह चूल्हेको अर्थ सुहायो। सुनत साधुंजन आनँद पायो॥
संतभक्त साधुन घरलाये। प्रीति समेत अदन करवाये १५७
सो०। संतभक्त की गाथ वरणन कीन्हो सुभग यह। नाइ
रामपदमाथ सेनभक्त गाथा कहत १५८ सेनभक्त हज्जाम चेला
रामानन्दके। माधोगढ़ शुभधाम भयेभक्त भगवानके१५९ जिमि
गो वत्सहि पाल तैसेही तिन पालना। कीन्हीं श्रीगोपाल साधु
सेवि अति होतभे १६० चौ०। जात एक दिन भूपति पासा।
तेल लगावन सहित हुलासा॥ मारग माहँ साधु मिलि गयऊ।
तिनहिं लिवाइ भुवन निज गयऊ१६१लागिगये तिनकी सेवामें।
राजाको भय रहा न जीमें॥ सेवा नृपति समय जवआयो। सेन
रूप भगवान वनायो १६२ राजाकी सेवा सव कीन्हा। करिप्रसन्न
निज मारग लीन्हा॥ पीछे सेन भक्त पुनि आये। राजाको

बहु विनय सुनाये १६३ मम अपराध क्षमा प्रभु करिये। मेरी चूक हिये नहिं धरिये ॥ सुनि राजा अति अचरज मानों। सेन हिं महा धन्य करिजानों १६४ गिरो सेन के चरणन राजा। तिनको शिष्य भयो सुख साजा ॥ भगवद्भजन करन सो लागो। भक्ति प्रभाव जानि अनुरागो १६५ धन्य सेन जिन बदि मम सेवा। करी आपु देवल के देवा ॥ सेन शिष्य ताते नृपभयऊ। मार्ग चलाइ बंश निज गयऊ १६६ अब तक बंश नृपति को जोई। चेला सेन बंश में होई ॥ इहि बिधि सेन कथा सुख दानी। जियालाल द्विज कहा बखानी १६७ संत चरण में पुनि शिर नावौं। सदा ब्रती की कथा सुनावौं ॥ वैश्य बरण सो शाहू कारा। भगवद्भक्तभये सुख सारा १६८ बड़ी प्रीति विश्वासहि धरिकै। सेवा साधु करैं मुद भरिकै॥ टिका रहत इक साधु सदाई। तिनके सुतसों प्रीति महाई १६९ खेलत साधु संग निशि दीना। इक दिन साधु कुबुधि यह कीना ॥ गयो शिशुहि काननहि लवाई। दीन्हों ताापि मारि तिहि जाई १७० सांझ भई बालक नहिं आयो। तब पुकारता मातु मचायो ॥ तहां एक संन्यासी आई। शाहूकारहि गयो लवाई १७१ गाड़ा बालक दीन दिखाई। पुनि साधू कर कर्म बताई ॥ शाहूकार गहो मुनिताही। मारो तुमहीं बालक काहीं १७२ संन्यासी व्याकुल अति भयऊ। तासों शाह कहन इमि लयऊ ॥ काहू सों यह बात न कहिये। जाहु नगर सों निज भल चहिये १७३ सुनि संन्यासि नगर तजि दीन्हों। अनतै बास जाइ कहुँ कीन्हों ॥ शाहूकार भवन निज आये। साधू को लाज्जित लखि पाये १७४ तिहि संकोच मिटावन हेतू। पूंछो तिय सों धर्म निकेतू ॥ बोली युवति धर्म अवगाही। जो कन्या मेरी अनब्याही १७५ ताको ब्याह साधुसंग कीजै। तौया ग्लानि कदा चितछीजै ॥ नाहिंत कोटि भांति नहिं रहिहै। चलो जाइहै चुपनहिं कहिहै १७६ सुनत शाहवह साधु बुलायो। भगवत इच्छाकहि समुझायो ॥

निज मनको बिचार सब खोलो। ग्लानि समेत साधु तब बोलो १७७ मो पर ऐसी दया न कीजै। सहित यातना के बधकीजै॥ विविध प्रबोध साहतब कीन्हो। कन्याको बिवाह करि दीन्हो १७८ यहयश फैलो सब संसारा। आये साहगुरू तिहि बारा॥ साहदेखि बड़ आदर कीन्हो। भोजन पानशुभा सनदीन्हो १७९ पूंछा गुरुबालक कहँ गयऊ। कछुदिन भये मृत्युबश भयऊ॥ किहि बिधिमरासु कहौ बुझाई। मृत्यु विवश संसार गुसाई १८० कारण कहत साहनहिं भयऊ। तब गुरुध्या न मार्ग लखि लयऊ॥ अति विश्वास भक्तिमें देखी। गुरुबालक खुदवाइ बिशेखी १८१ दीन्हो हर्षित ताहि जियाई। आनन्दित भे लोग लुगाई॥ इहि विधि कथा सदाब्रतिकेरी। बरणी सुखद यथा मति मेरी १८२दो०। केवल कूवाँकी कथा अब बरणौं सु खदाइ। संतचरित्र विचित्र अति सुनि कलि कलुष नशाइ १८३ कुंभ कार घर जन्मे सोई। परम भक्त भगवत के जोई॥ सेवा सा धु बिविध विधि कीन्हा। निज कुल को पवित्र करि दीन्हा १८४ तिन घर साधु एक दिन आये। अन्न न घर कहुँ ऋणहु न पा-ये॥ एक दुकान दार कछुदीन्हा। खोदन कूप कौल करि ली-न्हा १८५ सामग्री तासों लै आये। साधुन को भोजन करवाये॥ खोदन कूप जात जब भयऊ। गज दश बीस खोदि जब ग-यऊ १८६ निकसो रेत तोपि तिन लीन्हा। मरो जानि लोगन तजि दीन्हा॥ कोऊ गयो मास दिन बीते। राम नाम सुनि प-रोसप्रीते १८७ जाइ ग्राम सो कीन पुकारा। सुनत लोग धाये-तिहि बारा॥ हाथौ हाथ मृत्तिका टारा। केवल जी को बैठ निहारा १८८ आसन किये बैठ अनुरागे। लोटा धरा भरा जल आगे॥ एक ओर सब लोग निहारे। धरे मास दिन के पनवारे १८९ सकल लोग तिनको घरलाये। आनँद सहित वाद्य बजवाये॥ कूबर भयो दबे तहँ तासों। केवल कूवाँनाम प्र काशो १९० एक समय साधूजन आये। मूरति एक लिये सुख

रि जो पावैं। तौ संतन को इहां बुलावैं २२१ गुरुनिज चहूँओर जलडारे। पुनि शिष्यनसों बचन उचारे ॥ सामग्री तुम सजहु बनाई। ऐहैं संतव दिन हरषाई २२२ जौने दिन ह्वैहै उत्साहा। सुनि दोनो हरषे मनमाहा ॥ सामग्री सब सजी बनाई। आये जगत साधु सुखपाई २२३ तिन सबको आदर करि लीन्हों। भण्डारा आनँदसों दीन्हो ॥ पांच दिवस लगि सुख सों छाये। भांति भांति के अशन कराये २२४ भेंट बस्त्र अरु द्रब्यसुहाई। सबको देत भये हरषाई ॥ पुनि आयसु दीन्हो गुरु धीरा। नाम देव अरुदास कबीरा २२५ आये इहि समाज महँ सोऊ। दरश न करि आवो तुमदोऊ॥ तिनको पता दियो बतलाई। धाये दरश हेतद्वैभाई २२६ नाम देवके चरणन गह्यऊ। ह्वै प्रसन्न तिन इहि विधि कह्यऊ ॥ भगवद्भक्तन प्रीति न जहवाँ। कबहूं जात नाहिं हमतहवाँ २२७ जहँ भक्तनमें प्रीति सुहाई। तहँहम जातसदा सुखपाई ॥ भक्तनमाहँ प्रीति अति देखी। ममसन आनँदलह्यो बिशेखी २२८ दो०। अब तुमकरो कबीरके दरशन दोनो भाइ। सुनतधाइमारग बिषे मिले कबीरहि जाइ २२९ कृपा सहित ओऊमिले बिदामांगि सुखपाइ। गुरुढिग रहिलागे करन भजन सिया रघुराइ २३० दो०॥ कहत गणेशहुदेइ की सुन्दर कथा अनूप। रही ओडछेकी युवति मधुकरशाहजु भूप २३१ चौ०॥ भगवद्भक्ति मांह अद्वेता। भावशुद्ध अति राखत श्वेता॥ जो कछु राज्य माहँ सो पावै। साधुन सेवा माहँ लगावै २३२ एक साधुरानीसों बोलो। धनके उत्तमथल को खोलो॥ रानीकह उत्तमधन सोई। सेवा साधुमलागै जोई२३३ सुनि जानुम साधूअपकारी। भागि गयो छूरीइकमारी॥ कितने दिवसलगे सोरानी। तनुअचैन रजधर्म बखानी २३४ नृपकीसे जगई नहिं सोई। की यह घावलखै नृपजोई॥ साधुनसों दे भावघटाई। कछु दिन गये नृपति ढिगआई २३५ दो०। पूंछा चिह्न विलोकिनृप कहो सकल बिरतंत। भाग सराहो सुन

त नृप पायो सुख अत्यंत २३६ चौ० ॥ लाखा भक्त केरि शुभ गाथा । करौं नाइ रघुनाथहि माथा ॥ लीन्हो जन्म वंश हनुमाना । मारवाड़ मेंबासस्थाना २३७ रामोपासकभे अतिभारी सेवा साधु करत सुखकारी ॥ एक समय तहँ परोअकाला । साधु बहुत आये तिहि काला २३८ दूजे थल बैठनो विचारा । भगवत स्वभमें वचन उचारा ॥ वासकरौ एही अस्थाना । वृथा विचार द्वितियमनआना २३६ दो० । महिषिएक गोहूंसकटभरि प्रातहि सुख पाइ । लाखा तुमरे भवन में मैंदेहौं पहुंचाइ २४० चौ०॥ गोहूंइककोठीमें भरियौ । जितोप्रयोजन नित्यनिकरियै॥ कोठी कबहूं घटिहिनसोई । आज्यदुग्ध महिषी सोहोई २४१ हो त प्रभात मनुज इक आयो । महिषी गोहूं तिनहितलायो ॥ लाखाके मनभो अति मोदा । सेवा साधु करत तजि खेदा २४२ गोहूं महिषि मनुजजो लावा । सोऊ वर्णत हालसुहावा ॥ सीतापति कियचरित सुहावा । कोउ काहु को बोलसुनावा २४३ की देखैं लाखा ढिग जाई । गोहूं महिषि देहि पहुंचाई ॥ सोईदइगयो सुखपाई । वरणौं आगे कथा सुहाई २४४ दो० । साष्टांग दण्डवतको करते युत आनन्द ॥ लाखा दर्शन हितचले जगन्नाथ सुखकन्द २४५ लिये सुमिरिनी भेंटकि हेता । पहुंचे जगपति निकट निकेता ॥ जगन्नाथ तब दर्शन दीन्हो । अंगीकार सुमिरिनी कीन्हो २४६ जगपति पाल कि प्रथमपठाये । तापर चढ़ि लाखाजी आये ॥ कछु दिन रहे पुरीमें सोई । कन्या एक कुमारी जोई २४७ सेवा साधु करन हित व्याहा । करन हेत भो तिन मन माहा ॥ पर रुपया तिनके ढिगनाहीं । जगन्नाथ बोले तिन पाहीं २४८ रुपयामम भण्डारे लीजै । हरषित होइ ब्याह निज कीजै ॥ लाखा अंगीकार न करयऊ । पुरीछांड़ि तुरतहि चलि भयऊ २४६ तब श्री जगन्नाथ सुखपाई । स्वभदियो इक राजहि जाई ॥ एक सहस मुद्रा सो दीन्हों । हरिआज्ञा गुनिकै तिन लीन्हों २५० घरमें आइ ब्याह निज कीन्हा । बहुरि साधु सेवा

मन दीन्हा ॥ ऐसे तिनके चरित सुहाये। जियालाल संक्षेपहि गाये २५१ दो०। वरणौं रसिक मुरारिकी कथा परम सुख मूल ॥ परम भक्त भगवानके दारक विष्टप शूल २५२ चौ० ॥ सेवा पूजा करत सुहाई। प्रिय प्रीतम रँगरँगे महाई ॥ युगल किशोर माधुरी मूरति। आनँद मगन न टारति सूरति २५३ सदापियत चरणामृतकाहीं।पीवतबारि कबहुँसोनाहीं॥एकसमय भण्डारा कीन्हो। चरणामृतसंतनको लीन्हो २५४ तामें स्वाद कछू नहिं पायो। कारण पूछो जो लै आयो ॥ सो कह साधु कुष्ठि इक जामें। धोयो पद न घृणाकरि तामें २५५ आज्ञादियो धोय द्रुत लायो। अमित स्वाद तामें तबपायो॥ एक साधु निज सोंटे केरा। पारस मांगत भो तिहि बेरा २५६ भण्डारा सो जब नहिं पायो। तब वह उठत भयो अधखायो ॥ पत्तल निज उठाइ कर धारा। रसिक मुरारि शीशपर मारा २५७ दो०। ताको रूसो जानिकै द्वादश नृप तिहिकाल । चेला रसिक मुरारिके उठे मनावन हाल २५८ चौ० ॥ तिनको वरजि आपुही धाये। साधूको बहु विनय सुनाये॥ नितप्रति हम चरणोदक पीन्हों। सीथ प्रसाद आजु तुम दीन्हों २५९ इहिविधि साधूको समुझाये। पारस बहुताको दिलवाये॥ एक समय बागीचे माहीं। साधू उतरे गये तहाहीं २६० दो०. । एक साधु पीवत रह्यो हुक्का धरो छिपाय । रसिक मुरारि विलोकि निज सेवक लीन बुलाइ २६१ होत दरदहै पेटमें हुक्का लावहु आसु। लायो पी साधुहि दियो। सकुच मिटो उरतासु २६२ एक बेर जागीरके ग्राम रहे दो चार । लीन्हों नृपति निकारिकै दबोराज मद भार २६३ चौ० ॥ श्यामानन्द गुरुसुख पांती। तिनको लिखि पठयो इहि भांती ॥ जिमिहोवौ आवौ तैसेई। उठेरहे भोजन करि येई २६४ जूँठेगये गुरुके पासा। कीन प्रणाम समेत हुलासा॥ आज्ञादियो नृपति ढिगजाऊ। चलेपालकी चढ़ि जहँराऊ २६५ रसिक मुरारि सुनो नृप आयो। मस्त गयंद बाट छुड़वायो॥

भागेलोग कहारहु भागे। रसिक मुरारि कहन तब लागे २६६ रेगज गर्जतर्ज अब तजिये। कृष्ण कृष्ण या विधिसों भजिये॥ सुनत गर्जेंद्र शोर तजि दीन्हों। चरणन माहँ शीशधरि दीन्हों २६७ आंसू प्रेम गिरन तिहलागे। रसिक मुरारि देखि सुख पागे॥ माला ग्रीव दीन पहिनाई। भगवत नाम नेम बतलाई २६८ धरि गोपालदास तिहि नामा। राजा सुनि यह चरितल-लामा॥ तजि दुष्टना शरण तिन आयो। निज अपराध क्षमा करवायो २६९ चेला होत भयो तिनकेरा। दीन्होग्राम छोड़ि तिहि बेरा॥ औरौ ग्रामदेत भो भूपा। वह गज करत चरित्र अनूपा २७० बनजारन की जिनिसि लयावै। साधुन सेवा मांझ लगावै॥ भण्डारा सो करत अपारा। अति उत्साह करत सुखसारा २७१ बनजारनकी हानि सुनी जब। समुझायो गुशाइँ हाथिहि तब॥ तब वारण सो देश विहाई। पांच सात सौ साधु लिवाई २७२ रामत करन लगो तिहि काला। बनि महंत संतन सुखपाला॥ उतरैं जहां भेंट तहँपावैं। सामग्री सब लोग लयावैं २७३ यह वृतान्त जगत भो ख्याता। आमिल देश सुनी यह बाता॥ पकरनको तिहि कीन उपाया। पर तिहि हाथ न हाथी आया २७४ कोऊ साधू बेष बनायो। सहजहि करिवरको गहि लायो॥ कारागारम बन्धन कीना। वह गोपाल दास सुख भीना २७५ तजि भगवत प्रसाद को सोई। भोजन करत अपर नहिं कोई॥ तीनि दिवस किय अन्न न पाना॥ तब आमिल इहि भांति बखाना २७६ लैजावो गंगाजी माहीं। गंगा जल पीवैगो ताहीं॥ लै गंगा जीमें जब गयऊ। तजितन परम धाम पथ लयऊ २७७ दो०। ऐसे रसिक मुरारिके चरित महा सुख दाइ। हाथीको उपदेश यों नरकी कहा बिसाइ २७८ चौ०॥ संत चरण रज मानस लावौं। मन सुखदास कथा अब गावौं॥ कायथ भगवत भक्तसुहाये। भगवतके दरशन जिनपाये २७९ सेवा साधु प्रीति अति जिनके। कंगालता आइ घर तिनके॥

उपबासन सों दिवस बितावत। ऐसी दशा माहँदुख पावत २८० एक दुष्ट साधुहि बहँकाई। भोजन हित सो माँग मिठाई॥ तिन निज तिय सों पूँछा जाई। नथ उतारि सो दिय हरषाई २८१ गहने ताहि बणिक घर कीन्हों। आनि मिठाई साधुहि दीन्हों॥ भगवत लखि इमिप्रीति सुहाई। मनसुखदासक रूपबनाई २८२ वणिकहि मुद्रा दै सुख पाये। लै नथ मनसुख के घर आये॥ चौका देत युवति तिहि काला। नथलखि बोली वचन रसाला २८३ आपुहि देहु मोहिं पहिनाई। सुनि पहिनाव स्वकर रघुराई॥ तियकी भक्ति अधिक हरिजानी। ताको दरशदीन सुख दानी। २८४ ऐसी रंक दशा में जोई। गहन एक केवल नथ सोई॥ पहिनि सुहागिनि जासु कहाई। सो उतारि दीन्हों सुख पाई २८५ साधूसेवा कीनसुहाई। दरशन कस न देहिं रघुराई॥ मनसुखदास सुनो जबहाला। जानेरघुपति चरित बिशाला २८६ भये महा आनँद रसपागे। अपने भागक शोचन लागे॥ तियको भागधन्य करि माना॥ अन्न बारितजि दीन निदाना २८७ दरशन की अभिलाषा करिकै। लागे भजनकरन मुद भरिकै॥ स्वप्न भयो काशीमें आवौ। दरशन तहां हमारे पावौ २८८ काशीमें पहुँचे तिहि काला। दरश चतुर्भुजरूप विशाला॥ पायोवर मांगो तिन पाहीं। एहीरूपबसै उर माहीं २८९ धारो मानसरूप सुहायो। अन्त समय सोई वपुपायो॥ मन सुखदासगाथ सुखखानी। जियालाल संक्षेप बखानी २९० दो०। अबवरणौं हरिपाल निःकिंचनकी गाथशुभ। ब्राह्मण वंशरसाल भयेभक्तभगवानके २९१ चौ०॥ सेवासाधु करत मनलाई। सेवा में सब द्रव्य उठाई॥ जब कछुद्रव्य रही घरनाहीं। तब ऋणलेत भये जहँ ताहीं २९२ निःकिंचनभे ख्यात अपारा। जबकोऊ नहिं दीन उधारा॥ चोरीठगी करन तबलागे। सेवा साधुहेत सुखपागे २९३ कंठीतिलक जासुतन देखै। जानै भगवद्भक्त विशेखै॥ भगवतसेवी जाहि निहारैं। ताके ऊपर हाथ न डारैं २९४॥

एक जमाति साधुकी आई । तिहि टिकाइ चिन्ता मनलाई ॥
सामग्री भोजन हितकाहीं । निकरे हाथलगो कछुनाहीं २९५
व्याकुल होत भये मनमाहीं । तब चिंताव्यापी हरिकाहीं ॥
रुक्मिणि सहित द्वारिका तेरे । आये निःकिंचन द्विजनेरे २९६
शाहूकार रूप निज कीन्हा । शाहूकारिणि रुक्मिणि लीन्हा ॥
बोलतभे निःकिंचन पाहीं । देहु पठाइ ग्रामवहि ताहीं २९७
मुद्राएक लेउ निज हाथा । चले सुनत निःकिंचन साथा ॥
कछुक पंथआगे चलिगयऊ । तीरकमान सुधारत भयऊ २९८
यह निज मनमें कीन विचारा । चीकन चांदन मोट अपारा ॥
भगवत विमुख परत दिखराई । तिलक मालनहिं परत लखाई ॥
२९९ लेन चाहिये याको माला । मन विचारि वनमें ततकाला ॥
लीन्हो रिष्टधारि करमाहीं । भय दिखराइ तुरित तिनपाहीं ३००
सब आभूषण लीनउतारी । छल्लाएक रहोतिहिवारी ॥ निःकिंच
न ताको बलकरिकै । लगे उतारन अति मुद भरिकै ३०१ शाहू
कारिनि वचन सुनाई । रे बेदरद कठोर महाई ॥ लीन्हो सारो
गहन हमारा । छल्ला हितबल किये अपारा ३०२ तोरे अत्र अं-
गुलिममडारत । निःकिंचन सुनि वचन उचारत ॥ सुनुनावरि
कठोरता कैसी । अरु कोमलता चहतन ऐसी ३०३ सोछल्ले तो
कहँ सुखपाई । देहै तेरो खसमगढ़ाई ॥ मैंयाछल्ले को परिहरऊं ।
दश भक्तन सेवा किमि करऊं ३०४ यह सुनिप्रभु प्रगटे निज
रूपा । हृदयलगाइ तिनाहिंकियभूपा ॥ अन्तरध्यान भयेबनवारी ।
सो मूरति ब्राह्मण उरधारी ३०५ सेवासाधु प्रताप महाई । देखौ
प्रगट प्रभाव लखाई ॥ पापकर्मभे पुण्यस्वरूपा । भगवत दीन्हो
दरश अनूपा ३०६ जो भगवत कालहुके काला । अरुभय केभय
परमकराला ॥ भक्तन वश्य रहत प्रभुसोई । करत मनोरथ पूरण
जोई ३०७ भक्तन हेतधाम तजि आवत । दुःख विनाशि सुक्ख
उपजावत ॥ जासु समान द्वितिय नहिंकोई । ताकर शीलकस
न असहोई ३०८ श्रीरघुवर पदकमल मनावों । हरी रामकी

कथा सुनावों ॥ भगवत भजन सदाउर आनत। साधन अपर तुच्छ सब जानत ३०९ बुद्धिमान अति चतुर प्रतापी। प्रीतम प्रियाप्रीति अतिब्यापी ॥ करत दिवस निशिध्यान सदाई। साधू सेवा अति मनलाई ३१० एक साधुकी धरतीएका। संन्यासी लीन्हो अविवेका ॥ रानाढिग बैठत रहसोई। अति मित्रता गर्व सों जोई ३११ साधूराना केढिग गयऊ। सब वृत्तान्त कहतनिज भयऊ॥ रानाधरती नहिं दिलवायो। ताहिपकरि बाहरकरवायो ३१२ तब वह साधुलाज अति पायो। हरी राम समीप चलिआयो ॥ सब वृत्तान्त कहो समुझाई। हरीराम रानाढिग जाई ३१३ राना वचन कान नहिं कीन्हे। हरीराम प्रत्युत्तर दीन्हे ॥ तैंअति मूढ़ नियाउ न जाना। अतिमदांध ऐश्वर्य्य भुलाना ३१४ हाटक कश्यप कंससुरारी। रावणादि हरिजन दुखकारी ॥ धृष्टबुद्धि मंत्री कुन्तल नृप। धृतराष्ट्रहू सचिव सुनागप ३१५ दुर्योधन आदिक बहुतेरे। हरिदासन दिय दुःख घनेरे ॥ गये सकल ते बारह बाटा। तैसेही साजे तूठाटा ३१६ पौंड्रक बेणू आदिघनेरे। मानी भयोमान तिमितेरे ॥ तिनकी कथा धारि उरलीजे। हरब र भूमि साधुकी दीजे ३१७ सुनि राजामन बोध जनायो। भूमि दिवाइ चरण शिरनायो ॥ हर्षित साधुहि भूमि दिवाये। हरीराम निज आश्रम आये ३१८ दो०। संतडरत नहिं कालयम नृप की कहा बिसाति। जियालाल तिन चरणरज धारसि उरअह राति ३१९ अब इकरानी नृपतिकी कथा अमित सुखमूल। ताको मैं वर्णन करत दारक सकल कुशूल ३२० भयेसाधु सेवी सुखपांती। साधुन भीररहत बहुभांती ॥ एक महंतभक्तभगवाना ॥ सो अतिज्ञानी रहो महाना ३२१ तासों नृपति प्रीति अतिकीन्हो। वर्षप्रयंत जान नहिं दीन्हो ॥ प्रात जानको कियो विचारा। राजा व्याकुल भये अपारा ३२२ कहो जाइ नृपरानी पाहीं। जात महंत रहत अबनाहीं ॥ किय विचार मनरानि अतीवै। गयेमहंत नृपति नहिं जीवै ३२३ देउँ गरल निज बालक काहीं। जाँइ

महंत कछू दिन नाहीं ॥ इहि विधि करि विचार मनमाहीं। दीन्हो कालकूट शिशुकाहीं ३२४ राजमहल धुनिरुदन सुं- नानी। दौरि महंत गये दुखमानी ॥ देखो अर्भक उपघन श्यामा। जानो विष दीन्हो यह बामा ३२५ पूंछत नृपति हाल बतलायो। सुनि महंत अतिशय दुखपायो ॥ तिनकर नि- जमें प्रेम विचारी । भये मग्नतन दशा विसारी ३२६ बोलि लिये सब साधुन काहीं। लागेकरन भजन प्रभु ताहीं ॥ क- छुकबेरमें बालक जागो । उठि आनन्दित खेलन लागो ३२७ तब महंत सब साधु बुलाई । तिनको बिदाकीन सुख पाई ॥ प्रेमबन्ध रानी नृप देखी । आपुरहतभे ताहँ विशेखी ३२८ सत्यकि जो भगवतके दासा। जिन उरसत्संगति गुणभासा ॥ तिनहिं वियोग भक्त रघुराई। कोटि नर्क दुखसरिस लखाई ३२६ दो०। एकभूपकी कन्यका साधुसेविहरिभक्त। तासुकथा वर्णन करौं जपतराम अहनक्त ३३० चौ०॥ ऐसे संग व्याह भो ताको।जानन कहत भक्तिहरि काको ॥ जाननहैं को भक्तसु- रारी ।सो कन्याआई ससुरारी ३३१ व्याकुलहोत भई अति तहँवां। संतदरश पावत नहिं जहँवां ॥ चेरी बोलिबच न सम झायो। आवैं साधु मोहिं बतलायो ३३२ आई साधुन केरि जमाती। उतरि बाटिकामें सुख पाँती ॥ देखिकै लौंडी तुरित बतायो। सुनि कन्या मनआनंद पायो ३३३ शाबकरहो छोट तिहिकेरा। विरसन दीन ताहि तिहिबेरा॥ तुरित पतंग त्यागि सो दीन्हा। कामुक देखिकृच्छ्र अति कीन्हा ३३४ तब वह क न्या कहो बुझाई। मैकेमें देखा मैं साँई ॥ साधुनको चरणामृत पाई। जीवै पोत महासुखदाई ३३५ कहो दयित साधूनहिं चीन्हा । तब तिहि चेरी सँगकरि दीन्हा ॥ तिनके मिलनरीति बतलाई। साधुनके ढिग दीनपठाई ३३६ कीनजाय दण्डवति प्रणामा। साधुनको लायो निजधामा ॥ कन्याहू दरशन तव कीन्हे । धन्यभाग आपनकरिचीन्हे ३३७ साधुन चरण बारि

सुखडारा। भगवद्भजन ध्यानसंभारा ॥ उठो पृथुकजनु नींद बिहाई। देखत भूप महासुख पाई ३३८ राजाभयो भक्त तिहि वारा। निज देशनमें भक्ति सँचारा ॥ कन्याधन्य महाबड़भागी। अमितलोग कीन्हे अनुरागी ३३९ जे सांचे भगवतके दासा। जन्ममरणके नाशत त्रासा॥ कोटिन जीव अमरकरि डारि। नन्दन एकजियोकाभारी ३४०दो०। जियालालसत्संग करु छांड़ि मूढ़ताभाइ। मिथ्याजग मनलाइहै अंतनकरिहि सहाइ ३४१ चौपाई ॥ नीवांजीकि कथा इहिबेरा। कहौं क्षत्रिकुलजनु जिनकेरा॥ भये भक्त भगवतकेतेई। साधुनकी सेवा मनदेई ३४२ कोऊ भक्त भवन तिन आवैं। चरणधोइ चरणोदक पावैं॥ बहुरि शुभासन लै बैठावैं। बहुरिप्रेम युत अशन करावैं ३४३ करैं प्रसन्नबोलि मृदुबानी। इहिप्रकारसेवा विधिठानी ॥ इहिविधि वयक्रम सहित उछाहा। भगवत तिनको कीन निबाहा ३४४ कृष्णदासजीकी अबगाथा। कहौंनाइ रघुनाथहि माथा ॥ गलताजी जयपुर सुखबासा। भेरघुनन्दन स्वामिके दासा ३४५ चरण कमलमें भ्रमर समाना। सुख दुख शत्रु मित्र समजाना॥ महिलाआनन देखनतेई। अभ्यागत सेवामनदेई ३४६ कियो दधीच ऋषीश्वर जिहिविधि। एऊकाज करतभे तिहिविधि॥ बैठेगुफा मांझ इकबेरा। करत भजन सीनापति केरा ३४७ आयो व्याघ्र द्वारपर देखी। अभ्यागत मनजानि विशेखी॥ जानू मांसकाटि तिहि दीन्हा। आस स्वास तासु इमिकीन्हा ३४८ भयेप्रसन्न देखि भगवाना। दर्शन देतभये सुखदाना॥ अब जगमांझ लोग इहिभांती। मुट्ठी अन्न दियो नहिं जाती ३४९ मांगत क्षुधित द्वारपर आई। तासों कहत सोट अधिकाई॥ मिहनतमाहँ कठिनता देखा। मांगब भीख सहज करिलेखा ३५० दाना एकदेत नहिं भयऊ। वचन कठोर कहन बहुलयऊ॥ ऐसेलोगनको यमदूता। ताड़न करहिं बांधि मजबूता ३५१ राजा बाईकथा सुहाई। सोऊ सुनहु संत मन

लाई ॥ राजा रामपुत्र खेमाला। धर्म पत्निवाई सुखशाला३५२ भगवतगुरू भक्तकी सेवा। करतसदा त्यागे छलभेवा॥ नवधा भक्ति मुख्यतर जाना। अपरधर्म दिय छोंड़ि निदाना ३५३ भगवत भक्ति प्राप्तको हेतू। भक्तनसों गुनिधर्म निकेतू॥ तिन सों प्रीति कियो अति भारी। हरिदास्यता सुमानस धारी ३५४ एक समय पति सँग सुख पागी। मथुरा जातभई अनुरागी॥ रहो द्रव्यधन पासम जोई। साधुब्राह्मणनको दिय सोई ३५५ खरच न राखो मारग हेतू। आये नाभाजी सुख सेतू॥ कड़ारहे हाथनमें ताही। मोल पाँचशत मुद्रा जाही ३५६ कीन विचार रहे मनमाहीं। इन्हेंबेंचि जैहैं घरकाहीं॥ सो नाभाजी को दै दयऊ। कहन वचन राजासों लयऊ ३५७ अवतक देह बोझ यह जोई। आयो आज काममें सोई॥ राजासुनि प्रसन्न अति भयऊ। कौनिऊ भांति भवन निज गयऊ ३५८ दो०। सत्यकि चिंताकालिहकी जाके मनमें होइ। जियालाल किहि विधिकरै साधूसेवा सोइ ३५९ चौ० ॥ नन्ददास ब्राह्मण हरिदासा। तिनकीकथा करौं परकासा॥ जासु बरेली वासस्थाना। सेवा साधु करत विधिनाना ३६० खेतीमांझ अन्न जो पावैं। सोसब सेवा साधु लगावैं॥ एक दुष्ट हरि विमुख अपारा। वत्सीमारि खेत तिन डारा ३६१ हत्या तिनको दीन लगाई। नन्ददास लखिदीन जियाई॥ निश्चय भयो भक्तिको भारी। सब विश्वास हिये निजधारी ३६२ दो०। कथाकहौं हरिदासकी परम भक्तभे राम। योगानन्दसुवंशमें होतभये सुखधाम३६३वढ़ी भक्ति थोरेहीकाला। जिमिवामन वाढ़े ततकाला॥ कबहुँनकीनसाधुअपराधू। गुरु समान माने नित साधू ३६४ तिलक मालसों प्रीति विशाला। जनक सदृश विराग सब काला॥ इमिहरिदास कथा सुखखानी। जियालाल द्विज कहावखानी ३६५ कान्हर जीकी उत्तमगाथा। वरणौंनाइ रामपदमाथा॥ विट्ठलदास पुत्र रहजोई। मथुरावासी चौवे सोई ३६६ करतरहे भगवतउत्साहा

चारौ बरणसमेत उछाहा ॥ चारौ आश्रमनृप समुदाई। अरु कंगाल आव सुखपाई २६७ दो०। सबको अति आदर करत बिमुख जात नहिं कोइ। भोजन अम्बर बन्दना देत भक्त हरिजोइ २६८ होत समाज तहां इहिभांती। जनु बरषा अमृत सुख पांती॥ सबको बहु बिधि करि सत्कारा। बिदा करत कान्हरसुख सारा २६९ होत मग्न प्रेमाम्बुधि भारी। आपनको बड़ भागि बिचारी॥ तिहि समाज नाभाजी आई। तिनको पदबी दीनगुसाँई २७० साधो ग्वाल.कथा अवगाई। भक्त साधु सेवी सुखदाई॥ न वधा भक्ति धरेउरसोई। लक्षण प्रेममानसरजोई २७१ भये तासु तेराजमराला। सब कि भलाइ चहत सबकाला॥ अहनिशि ध्यावत रामचरित्रा। क्षमा शील तन धरेपवित्रा॥ २७२ निर्मल चित्त प्रेमकी खानी। सबके मित्र सबहि सुखदानी॥ क्रूर भावकाहू सों नाहीं। शत्रु मित्र जानत समताहीं २७३ गोपाली कि कथा सुख दाता। गिरिधर ग्वाल केरि जो माता॥ रही यशोदाकी समताई। मनमोहन में प्रीति महाई २७४ रसमाधुर्य्य प्रेमउरधारा। अहनिशि गोविन्देति पुकारा॥ संतचरण में प्रीति महाई। पुनि तिनको पालत सुख पाई २७५ दो०। श्रीरघुनन्दन चरणरज के प्रसाद को पाइ। वरणी निष्ठा तीसरी भक्तनको सुखदाइ २७६॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचितेचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येतृतीयसाधुसेवासत्संगनिष्ठायांत्रिंशद्भक्तकथावर्णनभक्ताम्बुनिधौपंचमस्तरंगः ५॥

सो०। श्री रघुवरपद नौमि जनकनन्दिनी के सहित। भक्त अम्बुनिधिसौमि गाथा भक्तनकी कहौं १ दो०। श्रवण महातमजासुमें निष्ठाचौथी नाम। अहैचारि भक्तन कथा जामेंअति सुखधाम २ श्री रघुवर पदकमल की कमल रेखउरधार। कपिल देव अवतार को करौं प्रणाम अपार ३ चौ०। जिन जग के उद्धारन हेतू। सांख्य शास्त्रप्रगटो सुखसेतू॥ भगवतपद प्राप

त सुखसाजा। अथवा निज उद्धारन काजा ४ भगवत चरित
सुनै मनलाये। जबलौं चरितन सुनै सुहाये॥ भगवतमें किहि
विधि मनलागै। ध्यान मंत्रजप किहिविधि जागै ५ पूजाव्रत
सब साधन जोई। है सम्बन्ध श्रवणसे सोई॥ जैसे गुरुशास्त्रन
सों सुनिकै। ताअनुकूल करतमन गुनिकै ६ जे पर लोकलौ
कके काजा। श्रवणहि किये सजत सब साजा॥ जैसे ब्रह्महि
हरिसुख भीना। सृष्टि रचन को आयसु दीना ७ रचिनहिं
सके भई तपबानी। तिहि अनुकूल कियो सुख दानी॥ तब
रचना कीन्ही संसारा। यहि विधि श्रवण महात्म्य अपारा ८
शब्द ब्रह्म कोऊ मत भाषत। शब्दहि सुने मुक्ति अभिलाषत॥
ताते श्रवण महात्म्य अपारा। सुनि हरि सुयश तरैभव पारा ९
बिनासुने श्री राम चरित्रा। मिलैं कि भगवत परमपवित्रा॥
महिमा सत्संगति सुख पांती। शास्त्र पुराण कहत बहुभांती१०
ताको तात्पर्य्य यह भाई। भगवत चरित सुनै मनलाई॥ प्राप्त
होइ भगवत पद माहीं। सत्यसत्य पुनि सत्यसदाहीं ११ श्री
मुख भगवत आपु बखाना। बहुरिपुराण करत असगाना॥ है
हरिवंश लिखीयह बाता। भगवत चरित जहां सुख दाता१२हो
त बसत तहँ शास्त्रपुराना। वेद तीर्थ सब कर अस्थाना॥ करै
मुक्तिकी इच्छा जोई। भगवत चरित श्रवण करुसोई १३ पुनि
भागवत वचन यहिभांती। भगवत कथा अमृतकीपांती॥ ता
जो सुनै श्रवणमन लाई। जाइ परमपद पापनशाई १४ दूसर
वचन कहत पुनिसोई। भगवत कथा सुनत नहिं जोई॥ प्रा
कृतनरचरित्रको गाना। सुनैंते श्वान कोल अनुमाना १५ वि-
ष्टामेंशूकर रुचिभारी। तैसे वे नर चरित सुखारी॥ भये जुहैंहैं
सुख दाता। सुनि हरिचरित न दूसरि बाता १६ दो०। पर जब
अति विश्वासकरि सुनै चरित भगवान। नित्य नवीनहि जानई
तृप्ति न मानसआन १७ सो०। महाराज पृथुभूप हरिचरित्रकेश्र
वणहित। दशसहस्र सुखरूप मांगेश्रवण उदारमति १८लिखोजु

श्रवण प्रथम नवधा में। तात्पर्य्य येही है तामें ॥ कीबिन सुनि भगवान चरित्रा। मिलत न भगवतभक्ति पवित्रा १९ एक श्रवण इहिविधिते होई। बार्तालाप परस्पर जोई ॥ दूसर श्रवण छन्द गति जोई। तीसर संतसंग में होई २० श्रवण संतसंगति में जोई। उत्तम सब श्रवणन में सोई ॥ याको कारण कहत बुझाई। श्रवण साधना मिलै तहांई २१ भ्रम सन्देह होइ कछु जोई। तिन समीप नाशै सब सोई ॥ कथा पुराण आदिकी जोऊ। है करावनो उत्तम सोऊ २२ आपै आप मिलै संतसंगा। भगवत चरित सुनै सउमंगा ॥ परजे लोगमदांधघनेरे। तेनाहिं जात कथा हरिनेरे २३ हैं ऐश्वर्य्य माननर जोई। कथा करावत इहि विधि सोई ॥ जानि अमंगल कछु उत्पाता। अथवा मरत देखि तनुजाता २४ अथवा प्रेत तीयको लागै। कीन्हे बहु उपाय नहिंत्यागै ॥ इहि विधि कारजजगत घनेरे। मानि कहावत नहिं सुवते रे२५ जब वै कथा नाहिं कहवावत। तब बहुलोग तिनहिं खिसवावत ॥ जबमनमाहँ लाजअतिआवै। तब ऐसेसों कथा कहावै २६ आवत सदा काममें जोई। अथवा अपनपुरोहित होई ॥ जिनसोंदबे रहत दिनराती। कथा कहावत तेइहि भांती २७लागीहोन कथाजवसोई। तहां सुनन आवत नहिं कोई ॥ सावकास नहिं कोउबतावत। कोऊ भीर परिश्रमगावत २८ कोऊ इविधि कहत सुखपाई। हमका पाप कीनहै भाई ॥ जो हरिकथामाहँ मनलावै। पूरणहोइ तीन दिन आवै २९ दो०। कोऊ निजको जानि बड़ लघुघर कथा विचारि। जैबो लघुता मानिकै जात न मद उरधारि ३० चौ० । भगवतकथा सुनन नहिं जाहीं। कारज इविधि करत घरमाहीं ॥ खेलैं गंजीफा सतरंजा। कुत्सितकथा कहैं सुख भंजा ३१ नाचकूद अरु खेल तमासा। देखनमें लावत मनखासा ॥ ऐसे निष्फल कारज त्यागी। करत न कारज भगवतलागी ३२ विधिवश जातभयो जो कोई। जातहि सो निद्रावश होई ॥ कोऊ तिनसों पूंछत भयऊ।

पण्डितकथा निन्द करिदयऊ ३३ कथा कहावन वाला जोई। सुनतारहा अकेला सोई॥ जब समाप्त होने दिन आयो। तब सबकाहँ बुलाइ पठायो, ३४ बारजबहिं दश बीस बुलाये। तब पूजाहि चढ़ावन आये॥ जासो अक्षर कानन परई। देरीहोइ क्रोध अति करई ३५ गयो बुलावन ताहिरिसाई। अबहीं क्यों बुलाइ बैठाई॥ कोऊ पण्डितजीहि सुनावै। करौ शीघ्रता संध्या आवै ३६ शीश उठाइ कोउ अवलोकत। पांती पत्र समाप्त विलोकत॥ कोघर मालिक पाहिं पुकारी। आरति आदिकि करौ तयारी ३७ कोई चरण दुःख नहिं कयऊ। मुद्रा भेजि तहांपर दयऊ॥ इहिविधि कथामाहँ मनलावैं। जो कहुँ नृत्य विषे सो जावैं ३८ निद्रा सपनेमांझ बिहाई। इकटक चितवैं दृष्टिलगाई॥ चलैन नूतन इहिविधि करई। बारबधू लै अम्बक धरई ३९ तृष्णाक्षुधा भूलि तनजावैं। मनलै ताके प्रेम लगावैं॥ बैठैंप्रथम सबनसो जाई। अति आनन्द मनहुँ निधि पाई ४० भगवत कथा सुनन जब जावैं। खड़े तोप मुहँ इमि मन लावैं॥ वरणि कहे अवगुण ये जोई। हैंमोमे सब अपरनकोई ४१ हाथजोरि बिनती यह करिये। कोऊ माख न मनमेंधरिये॥ भगवत चरित महासुखदाई। ताहि सुने कल्याण महाई ४२ भगवत चरित सदा सुखदाई। कलि विशेष नहिं आन उपाई॥ भगवतसुयश सुने बिनभाई। कौन सकै भव फांस छुड़ाई ४३ भगवत चरित सुने जिनकाना। हरि पुर चले बजाइ निशाना॥ निष्ठा श्रवण महात्म्य महाना। जियालाल किमि करै बखाना ४४ हे प्रभु सीतानाथ खरारी। प्रणतारति भंजन सुखकारी॥ दीनबन्धु दीनन दुख दारण। गणिकागृद्ध किरात उधारण ४५ जनप्रह्लाद बिभीषण रक्षक। मानस वाच कर्मकृत भक्षक॥ शबरि सुतीक्ष्ण ध्रुव सुखदायक। विश्वामित्र सुकंठ सहायक ४६ धना द्रौपदी लज्जा राखन। गज विपत्ति दारन द्रुतताक्षन॥ जैजैजै कौशल्या नन्दन। जियालाल जन विपति निकन्दन ४७ जै त्रिशिरारी जयति मुरारी।

गोखण्डन गोवर्द्धन धारी ॥ जै सुबाहु नाशन बक हंता। दुष्ट दलन सुखदायक संता ४८ जै जै दशरथ अजिर विहारी। जै गोपीजन आनँद कारी ॥ जै कौशल्या सुवन दुलारे। जै बृन्दावन के रखवारे ४९ जयति जनक प्रण राखनहारे। जै देवकि वसुदेव दुलारे ॥ जयति परशुधर गर्वप्रहारी। जै परमेष्ठी मोह बिदारी ५० युगलस्वरूप अतुल बलधामं। पूरण करन सुजन मन कामं ॥ जियालाल अति पतित निदाना। तुम बिन रक्षा कारन आना ५१ यह अस्तुति अतिही सुखदाई। पढ़ै सुनै जो जनमन लाई ॥ संकट दारिद्र निकट न आवै। अन्त वास श्रीपतिपुर पावै ५२ निष्ठा श्रवणमनंद घनेरे। इहिविधि सुनै चरित हरिकेरे ॥ होली समयकेर इकध्याना। राधाकृष्णक करौं वखाना ५३ ब्रजचन्दिनि वृषभान नंदिनी। सुनीबात यह जगत वन्दिनी ॥ की नँदनन्दन श्रीब्रजचन्दा। सामा होलि लिये सुखकन्दा ५४ आवत धूमधामसेभारी। सहसन लाखन सखा सँभारी ॥ मित्रन सखन सहित लखिनेरे। सखिन झुण्ड श्री राधाटेरे ५५ कोटिन झुण्ड आवतिहि काला। लीन्हे अगणित रंग गुलाला ॥ गावत अपर बजावत बाजा। चलीं राधिका सहित समाजा ५६ पहुँचीं मानसरोवर पासा। नँदनन्दनहु यूथ सहुलासा ॥ पहुंचोआइ समीपमहाई। दोनों ओर रंगभरि लाई ५७ केतक अरुगुलाब कस्तूरी। केशर गंध सुगंधन पूरी॥ ताभे वरषा प्रथम महाई। अपर रंग वरषा पुनिलाई ५८ कुमकुम अपर अबीर गुलाला। लालश्वेत पीले रँग चाला ॥ हरे बैंजनी नाफरमानी। प्याजी सोसनिजाफरानी ५९ चले सुनहरीसन्दलि खाकी। लाजवर्दि तूसी अँग ताकी ॥ कासनि अपर कंजई रंगा। फालसई मास्तताकि अँगा ६०शरबति खसखसि गंधकि मोरें। हास्यपरस्पर बचनउचारें॥रंगकरौंदिया अपरकपूरी॥उन्नाबीहुअसो-आसूरी ६१ चले अरगजा आदि अपारा। जियालाल रँगलहै कि पारा ॥ यह वृत्तांत दूरिते भयऊ। दोनों यूथ जबहिं मिलि

गयऊ ६२ तब अत्यन्त बढ़ो मन हरषा। घनघमण्डि जनु रँग जल बरषा॥ मलन गुलाल परस्पर होई। भई भीर भारी अति सोई ६३ बरषे अमित रंग तिहि काला। धरणी व्योम भये सब लाला॥ सुखदायक सामा अति भारी। लाड़िलि जी के यूथ मझारी ६४ सेना विजय रूप तिनकेरी। सजे साज जिन सखी घनेरी॥ ललिता अपरविशाखा नामा। श्रीशामला श्रीमतीभामा ६५ धन्या अरु पद्मागुणखानी। भद्रा चन्द्रावलि सुखदानी॥ सहसन यूथेश्वरी सुहाई। श्री लाड़िली संग छबिछाई ६६ व्रज किशोरिकर यूथ प्रबल अति। यद्यपि नटनागरहु यूथ अति॥ जिनके संग सखाबहु सोहैं। निज स्वरूप आगे जग मोहैं ६७ श्री दामा मधुमंगल नामा। सुबलहुयुत सुबाहु सुख धामा॥ अर्ज्जुन अपरभोज सुखदाई। मण्डल यूथेश्वर बहुताई ६८ पर शीघ्रग अरु लाघवताई। और दूसरी अति अधिकाई॥ पहुँची सहायताहूतहँवां। श्रीवृषभान नन्दिनी जहवां६९आलीपारबती इन्द्रानी। आईचढ़ि विमानसुखखानी॥राधेकी प्रसन्नताजानी। रंगगुलाल पुष्पझरिठानी७०दो०॥तिहिअवसर गोपीसबै धाईआ नँदपाइ।दशदश व्रजपति सखनप्रति घेरिलीनहरषाइ७१चौ०॥ कोई रँगडारैं मनभायो। कोईमलैं गुलाल सुहायो॥ सबके हाथ बन्दकरिदयऊ। करक्रिया लाघवता कयऊ ७२ सुन्दरता अनूप दरशाई। करि कटाक्ष मन्दहु मुसकाई॥ तिरछी चितवनि फांस चलाई। लीन्हें बांधि सखा व्रजराई ७३ नन्दकिशोर काहँ बरजोरी। लीन खैंचि वृषभानकिशोरी॥ गलेमाहँ लियकर लपिटाई। देखतविशाखादि सबधाई ७४ श्रीव्रजराजछुटननहिंपाये। भांतिविधि रंगगुलाल लगाये॥ तब चन्द्रावलि लखियह लीला। रही लाड़िली सो प्रतिकूला ७५ धाइ आइ व्रजपतिहि सुनाई। हम तुमरी सहाय अब आई॥ सावधान हूजै महराजा। मन भावतो कीजिये काजा ७६ चन्द्रावलि सहाय को पाई। पकरि नागरि हि लिय व्रजराई॥ मनभायो बदलो लै लीन्हो। विविध

भाँति फगुवा हमिकीन्हो ७७ ऐसे धूमधाम रँगवरषा। ठट्ठाहँसी करत मन हरषा॥ यह शोभा समाज सुखदाई। भक्तन के मन रही समाई ७८ ताचण श्रीव्रजनागरि की छवि। जियालाल किमि कहै मन्दकवि॥ मानहुशोभा निज वपुधारी। कोटिन रतिहि लजावनहारी ७९ कोटिन अम्बुज शोभाहारी। वारिज शोभा डारिय वारी॥ गोरे मुखपर विथुरी अलकैं। चन्द्रिकाहु शिरफूलहु चमकैं ८० तिलक भाल में शोभित नीका। केशर कस्तूरी कर टीका॥ झुमक जड़ाउदार मनमोहै। कानन करनफूल अति सोहै ८१ सोहत नथ नासिका सुनीका। झीन दुकूल स्वर्णतारीका॥ लहँगा अमित रंग का सोहै। चमक दमक निरखत मन मोहै ८२ अंग अंग सब भूषण साजे। सब द्युतिवंत देखि द्युति लाजे॥ एकहाथ व्रजपति गलडारे। सुभग गुलाल एक करधारे ८३ श्रीव्रजराजहु तन अति साजे। कोटिन मदन शोभ लखिलाजे॥ सुन्दर श्यामस्वरूप सुहावन। अलकैं विथुरीं मुख छविछावन ८४ शीश मुकुट अरु कुण्डल कानन। झूमक झूलत उपमा आनन॥ अंग अंग भूषण छविमूला। कमर कसेहैं झीन दुकूला ८५ व्रजनागरि गलकर लपटाये। दूजे हाथ गुलाल सुहाये॥ यह छवि प्रीतम प्रिया सुहाई। जियालाल अति सुखद महाई ८६ ब्रह्माशिवकी कौन चलावे। और देवताकीकोगावे॥ यह स्वरूप निरखत निज नैना। असको सुधि बुधि जासु हरैना ८७ श्रीव्रजराज कि-शोर किशोरी। आपुहि आपु विलोकित जोरी॥ भये मग्न आनँदमें भारी। आपसमें तनदशा विसारी ८८ प्रीतम प्रिया ध्यान यह गायो। भक्त जननको सुख दमहायो॥ जो यह ध्यान हिये में धरिहै। गोपद इव भवसागर तरिहै ८९ जो यह पढ़ै सुनै मनलावै। अन्तसमय गोलोक सिधावै॥ ऐसे चरित श्रवण नित कीजै। छांड़ि विषय अमृतरस पीजै ९० निष्ठा श्रवण महा सुखदाना। वरणी अरु कछु करत बखाना॥ भये

लीन या निष्ठा जोई। तिनके नाम कहौं कछु सोई ९१ दो०।
अर्जुन पितु तनुजापती तापितु तनुजास्वामि। जियालाल
तिहि सुतसुवन तास्वो ताहि नमामि ९२ रुक्म मातु पति
तात पितु तातियधर सुखखानि। जियालाल तांशुक पतिहु
भजन विना बड़ि हानि ९३ सो०। धारिरामपद माथ सीता
लक्ष्मण नौमि पद। श्री नारद शुभगाथ वरणौं विष्टप पावनी
९४ चौ०। भगवद्भक्ति कि निष्ठन माहीं। अग्रणीय नारदजी
आहीं॥ धर्म भागवतकेर प्रचारक। भगवत कीर्त्तन के विस्ता-
रक ९५ मिलो तिनहिं उत्तम पद जोई। भगवत चरित श्रवण
करि सोई॥ ताते तिनहिं श्रवण निष्ठामें। वर्णन कियो अमित
सुखजामें ९६ दो०। नारदभगवत मन अहैं ब्रह्माके सुतजोइ।
जगउपकारम प्रीति अति थिरतनु वढ़ि घटिदोइ ९७ वालमी-
कि रामायणौ श्रीभागवत समेत। द्वैजहाजजग जलधि में जीव
पारके हेत ९८ चौ०। वने सुनारद के उपदेशा। जिनपर कृपा
करी सुखवेशा॥ भये सुभगवतरूप सुहाये। ध्रुवप्रह्लाद पुराण
नगाये ९९ साठिहजार पुत्रवड़भागी। दक्षप्रजापतिके अनुरागी॥
अपर प्रचेताआदिक लाखन। कौन सकै गणनाकरि भाखन
१०० जापर नारद क्रोधहु कयऊ। सो भगवत को प्रापतभय-
ऊ॥ हैं तिनके चरित्र वहुभाई। पूर्व चरित्र कहौं अवगाई १०१
जासों यानिष्ठा में गाये। सो श्री मद्भागवत वताये॥ प्रथमकल्प
दासीसुत सोई। दुःख परे तिनमाता जोई १०२ निज मनटहल
ऋषिन की धरई। सुत समेत निजपालन करई॥ जव कहुँ
कामहेत सो जावै। ऋषिन समीप पुत्रतजि जावै १०३
तहां कथा सतसंग अपारा। ज्ञानविराग भक्ति सुखसारा॥ होत
सुनत नारद मनलाई। ताको प्राप्तभये सुखपाई १०४ जव उन
की माता तनुत्यागा। तव वनजाइ सहित अनुरागा॥ लागे
करन ध्यान तहँगूपा। एकवार हरिरूप अनूपा १०५ प्रगटि
हृदय अन्तरहित भयऊ। तव नारद अतिशयदुख कयऊ॥

सोई रूपम प्रेम लगाई। भगवत भजन करत मनलाई १०६
ताको अन्तम यह फल लयऊ। कीइहिकल्प ब्रह्मसुत भयऊ॥
महिमाहोत भई अमितासू। ब्रह्मा कहि न सकत यशजासू १०७
दो०। इहिबिधि नारदकी कथा कही महासुखदाइ। गरुड़कथा
अवबर्णऊं श्रीरामहिंशिरनाइ१०८दो०।गरुड़पार्षद बिष्णुके सेवा
निष्ठामाहिं। उचितरहो तिनबर्णिबो परयासो कहयाहिं १०९
भयो एकवैमोहतिन कागभुशुण्डी पाहिं। सुनी कथा भगवान
की भयोज्ञान उरमाहिं११०चौ०।निष्ठाश्रवणमाहँ तिहि कारण।
तिनकीकथाकहीदुखदारण॥ जबश्रीरामलीनअवतारा। रावण
बधन उपाय बिचारा १११ सेतु बांधि लंकाप्रभुगयऊ। नाना
भांति समरतहँभयऊ॥ वारिदनाद समरलखिआयो। नानाअ-
स्त्रशस्त्र भरिलायो ११२ बहु छलबल करि मायासाधी। नाग
फांस महँ रामहिं बांधी॥ जिनको नाम सुमिरि संसारा। भव बं-
धन छूटहिं दुखभारा ११३ तिनको नागफांस बशदेखी। नारद
गरुड़ पठाव विशेखी॥ ब्याल बरूथ सकल तिनखाये। बंधन
छुटे रामसुखपाये ११४ करत विचार जात उरवीशा। कस अव
तार भयो जगदीशा॥ अलख अगोचर अव्यय जोई। ताको
बांधिसकै किमि कोई ११५ छूटे भव बंधन जपिनामा। बांधत
भो निशिचर सो रामा॥ त्रिविध भांति इमि हृदय विचारी। प्रग
टित भयो मोह अति भारी ११६ व्याकुल गये आतमूपासा।
वरणी सब आपनि इतिहासा॥ सुरजेष्ठ सुनि खगपतिवा-
नी। रघुपति मायाके वश जानी ११७ पठवतभये तिनहिं शिव
पाहीं। तिहिवैशिव कुबेर गृह जाहीं॥ कहीसकल तिनसो इ-
तिहासा। सुनि गुनि हरहरि प्रकृति प्रकाशा ११८ पठयो काग-
भुशुण्डि कि पासा। चले गरुड़ मन सहित हुलासा॥ देखत
नीलाचल अस गयऊ। काग समीप जात पुनि भयऊ ११९
तहां समस्त सुनी रामायण। नित्य ज्ञानभये पारायण॥ सत्य
पवित्र चरित भगवाना। मोह तिमिरभास्कर अनुमाना १२०

दो० । जियालाल कामद चरित सुरतरु सम सुरगाय ॥
सर्वकाल सबकाम ताजि कहिय सुनिय मन लाय १२१ ॥
दो० । कथा परीक्षित नृपति को श्रवण निछमें जोइ । रहेपु-
त्र अभिमन्युके अर्जुन नाती सोइ १२२ चौ० । अग्रणीय इहि
निछ प्रकारा । श्रीभागवत जगत विस्तारा ॥ जो सुनि जीव
परम पदलायक । भये होत हैं हैं सुख दायक १२३ जबहिं पांडवन
जगतजिदयऊ । नृपति परीक्षित को तब कयऊ ॥ जबहिं परी
क्षित नृपता पाई । पालत प्रजा नीति मनलाई १२४ एकसमय
आखेट सिधाये । तहां चरित यह देखन पाये ॥ एकधेनु वृषभा-
गत आवत । तिनहिं शूद्र पीछे रपटावत १२५ जब समीप सब
पहुंचे आई । शूद्रहि भूपति निकटबुलाई ॥ कोतू इनहिं हेताकि-
हिमारै । काह अर्जुनहि गयो निहारै १२६ इमिनहिं पांडु वंशमें
पैहै । जासु राज्यगो विप्रसतैहै ॥ यह कहि नृपति खड्ग कर लय-
ऊ । ठाढ़ो सौहँ शूद्रतब भयऊ १२७ बोलि निकटगो वृषभहि
लीन्हा । पूंछो हाल सकल कहि दीन्हा ॥ कहवृषशूद्र सुकलि-
युगहोई । धावत धेनु भूमियह सोई १२८ मेरोअहै धर्मकर रूपा ।
कीन्हो व्याकुल कलियुग भूपा ॥ तप अरु सत्य दया शुचिजोई ।
मेरेचारचरण हैं सोई १२९ सतयुग में रह चारौ चरणा । त्रेता
त्रै द्वापर द्वै वरणा ॥ कलियुग माहँ रहो पद एका । तासों चलि
न सकत नृपनेका १३० पुनि पृथ्वी बोली नृप पाहीं । रहि न स-
कत मैं या युगमाहीं ॥ शूद्र नृपति मोपर वहु हैहैं । नानाभांति
पापसो कैहैं १३१ मोसों बोझसहो नहिं जाई । ताकारण भागत
दुख पाई ॥ सुनिनृप कलिसों वचन उचारत । अबहीं तोहिंमारि
हम डारत १३२ तब कलियुग अतिही भयखाई । कहो दीजिये
ठौर बताई ॥ ब्रह्मा रचे चारियुग जोई । मेटेमटे जात न सोई १३३
नृपति परीक्षित वचन प्रकासा । एते ठौर करसि तैं वासा ॥ जूप
झूंठ अरु मदकी हाटा । वेश्याघर हत्याके वाटा १३४ सुवर्णचो-
री येथल दीन्हो । कलियुग सुनत वास निज कीन्हो ॥ निज

मनमें धर्महि नृपआनी । उरवी अपने रूप समानी १३५ आवत भये भुवन निज राजा । धर्म समेत करत सब काजा ॥ बीतत भे कितने इक दीना । गये अखेटहि नृपति प्रवीना १३६ लागी तिनहिं तृषा अतिभारी । कलियुग बास मुकुटमें कारी ॥ तिहिंबै निज प्रभाव सो ठाना । राजाको कीन्हो अज्ञाना १३७ व्याकुल तृषित गये तिहि ठामा । ऋषिशमीक बैठेतप धामा । बोले देखि ध्यानमें तिनहीं । तप घमण्ड आयो अति इनहीं १३८ हमहिं विलोकि मूंदि चख लीन्हा । यह कहि मृतक उरग गलदीन्हा ॥ जब घरजाइके मुकुट उतारा । भयोज्ञान तब करत बिचारा १३९ यह मैं जाइकर्म का कीन्हो । कलियुग मोसों पलटा लीन्हो ॥ मुकुट माहँ सो रहो छपाना । मैं तौ यहकछु भेद न जाना १४० मैं मुनिको कीन्हो अपराधा । छूटैगो किमि पापअगाधा ॥ इत शोचत इहिभांति नृपाला । उतमुनि तट खेलत बहुबाला १४१ तिन ऋषिसुतसों जाइ पुकारा । तुव पितु गले सांपको डारा ॥ सुनि शृंगीऋषिअति रुट करिकै । जल कौशिकी हाथ निज धरिकै १४२ दीन्हो नृपति काहँ यह शापा । सप्तमदिवस डासिहि तुहिं सांपा ॥ शापदेइ निज पितु पहँ आये । सर्प उतारिपिताहि जगाये १४३ अब पितु आपनि देह सँभारो । दीन्हींशाप सर्प जो डारो ॥ सुनिशमीकऋषि नयन उघारे । पुत्र वचन सुनिभये दुखारे १४४ ऐसुत महा अकर्महि कीन्हा । शाप धर्म मूरति नृपदीन्हा ॥ जासुराज्य नहिं कोउदुखारी । रहत संगहरि धेनु सुखारी १४५ पाप बिचारन मनमें कीन्हा । गुण तजि अवगुणको गहिलीन्हा ॥ शील स्वभाव साधुको चहिये । सबकी सुनियन निज कछु कहिये १४६ इहिविधि भाषि चुके मुनिजबहीं । लीन्हो बोलि शिष्य इक तबहीं ॥ नृपति परीक्षित के ढिग जाईं । दीजै शृंगी शापबताई १४७ लोग दोषतौ देहिं बनाई । परवह सावधान हुइजाई ॥ यह सुनि शिष्य नृपति पहँ गयऊ। सब वृत्तान्त बतावत भयऊ १४८ सुनिनृप ठाढ़भयो करजोरी ।

ऋषिमोपर किय कृपा घनेरी॥ बूड़त रहो शोकनिधि माहीं। ऋ-
षिमोकहँ काढ़ो गहिबाहीं १४९ जब ऋषि शिष्य बिदा ह्वै गय-
ऊ। तबराजा विराग मन भयऊ॥ जन्मेजयको राजा कीन्हो।
अरु बहुभांति नीति सिख दीन्हो १५० बहुरिजाइ रनिवास विलो-
का। पुनि समुझायो देखि सशोका॥ धनजन कुटुम मोह तजि
दीन्हा। गंगातीर निजासन कीन्हा १५१ जो यह हाल सुनो दुख
माना। बहुरि सुनत आये मुनिनाना॥ आये सहस अठासी ऋषि
गन। सर्वकाललागो हरिजिनमन १५२ छन्दबरवा। आये व्यास
वशिष्ठहु भारद्वाज। कात्यायनहु पराशर नृपके काज॥ वामदेव
अरु नारदविश्वामित्र। अरुजमदग्निहु आदिक परम पवित्र
१५३ सो०। बैठेसकल बिछाइ आसन आपन आपने। राजाको
समझाइ धर्म सुनावति भांतिबहु १५४ चौ०। इतने में श्रद्धानृप
देखी। पुस्तक कांखमलिये विशेखी॥ भेषदिगम्बर श्रीशुकदेवा।
आवत उठ सकल हितसेवा १५५ नृप करजोरि वचन कहिदीना।
नाथ कृपाअति मोपर कीना॥ पुनितिनको आसन शुभदयऊ।
बहुरि मुनिन सन बूझन लयऊ १५६ व्यास पुत्रहैं ये शुकदेवा।
पौत्र पराशर जानिय एवा॥ तिनहिं विलोकि उठेसबकोई। यह
आश्चर्य्य हृदय मम होई १५७ तबहिं पराशर कह सुखपाई।
राजासुनिय बचन मनलाई॥ जे हम बड़े बड़े मुनिआहीं। ज्ञान
म शुकदेव कि समनाहीं १५८ ताते तिन सेवाहित लागी। उठे
सकल मुनिवर बड़भागी॥ अहो नृपति तेरो बड़भागा। जो
शुकदेवा बखानुरागा १५९ धर्मन में धर्मोत्तम कहिहैं। जन्म
मरण तेरो दुख दहिहैं॥ सुनत नृपति अतिशय सुखपायो।
श्रीशुकदेव चरण शिरनायो १६० मोसों कहौ जगतसुखपांती।
कर्म ग्रंथि छूटै किहिभाँती॥ पुनि मेरो है पापमहाना। सात
दिवसकी अवधि निदाना १६१ दो०। सुनिभूपति के वचन
इमि श्री शुकदेव कृपाल। कहो सातादिन बहुत हैं शोचत कि-
मि महिपाल १६२ एकघड़ीमें होत है मुक्ति सकल सुखखानि।

तेसेतो हैं सात दिन तूजनिहिय दुखआनि १६३ श्री नारदव-
द्रवाङ्ग को दीन्हो ज्ञान बताइ। द्वैघटिमें पावत भयो मुक्ति महा
सुखदाइ १६४ चौ०। सुनि मुनिबचन सुखी नृपभयऊ। बहुरि
इविधिते पूंछन लयऊ॥ सब धर्मनमें उत्तम जोई। कहिय बुझा-
इ मोहिं सुनि सोई १६५ कह मुनि सुनिय नृपति मनलाई।
उत्तम बैष्णव धर्म सदाई॥ बैष्णव धर्मोत्तम जिमि धर्मन।
श्रीभागवत पुराण सुसर्बन १६६ जहँ हरिकथा भक्त हरिगावैं।
तीरथ सकल तहां चलिआवैं॥ सकल धर्म अरु वेद पुराना।
बासकरत ताही अस्थाना १६७ परभागवत समान न कोई।
ताते मैंबरणौं नृपसोई॥ हैंद्वादश स्कन्ध सुखदाई। महापुराण
सुनै मनलाई १६८ कहि शुकदेव सुनावन लागे। लागे सु-
नन नृपति सुखपागे॥ उद्भव पालन प्रलयकहानी। कहतभये
सुन्दर सुखखानी १६९ पुनि हरि चतुर्विंश अवतारा। बर्णनकी-
न्हे ब्यास कुमारा॥ कर्म भक्ति योगहु विज्ञाना। बरणे अपर
सरिण विधिनाना १७० राजा सुनि सारांश विचारी। करि
समाधि तनदशा बिसारी॥ भयोप्रगट तच्छक तिहि बेरा। पूरण
कियो बचन मुनिकेरा १७१ तनतजि नृपति जातभे तहवां।
घूमतबहुरिनजाइक जहवां॥ यहश्रीमद्भागवत पुराना। अर्था-
दिकदायक सुखनाना १७२ जियालाल हरिचरितन माहीं।
मनलगाउ गुनि सकल वृथाहीं॥ यह नरदेह बिषय हितनाहीं।
मिलो पोत भवसागर माहीं १७३ दो०। खरकूकर शूकरसहित
अपरजीव जगजोइ। मैथुननिद्रा अशनहू जानत बहुबिधिसोइ
१७४ हरिचरित्र जानत नहीं सुनहु सुजन दैकान। गावनहरि-
यशविपयवश तेनरइनहिं समान १७५ कालपाइ ये करतहैं मैथुन
तपवनदाह। विषयीनर दिनप्रति करत किमिहोवै निर्बाह १७६॥

चौ०। अब श्रीरामचरण शिरनावों। लालदास की
कथा सुनावों॥ ऐसे भगवत भक्त सुहाये। भगवत कथा सदा
चित लाये १७७ भगवत में अति प्रीति सुहाई। गुरुपदराखत

नेह सदाई ॥ त्रिपमें रहतसुविप जिहि भांती । तिमि जगमाहँ रहे सुखपांती १७८ कुण्डलियाछंद । जो श्री मद्भागवत की कथा महासुखदाइ । होतबघेरा ग्राम में सुनतरहे मनलाइ ॥ सुनतरहे मनलाइ भईपूरण जबगाथा । तबहीं धारिसमाधि ध्यान कीन्हो रघुनाथा ॥ त्यागिदेहसुख सहित गयेतिहिथल सुखदाई । घूमतनाहिं बहोरि जौन थलमें जोजाई १७६ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्मानेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठासंख्येचतुर्थमाहात्म्यश्रवणनिष्ठायांवेद भक्तकथावर्णनभक्ताम्बुनिधौपष्ठस्तरंगः ६ ॥

दो० ॥ कुम्भसुवन अरिकी सुता तापति कोमल गात । जियालाल उरध्यानकरु त्यागि कपट अहरात १ सीपीसुतभपु जासु है सोबाहन है जासु । जियालाल तिहिपति चरण हृदय लाइये आसु २ हरिसुत पितु पितु तात तिय ताबाहन युत नारि । जियालाल अस्तुति करत चरणन में शिरधारि ३ छंद बरवा । निष्ठापंचम कीर्तन अति सुखदाइ ॥ वर्णनपन्द्रह भक्तनकथा सुहाइ ॥ श्रीसीतापतिरेखापद जब जोइ । बन्दौं दत्तात्रैवपुधारीसोइ ४ कूटचित्र गिरि ऊपरधरि अवतार । अत्रि अपेश्वर के घरअति सुखसार ॥ अलर्कअरु प्रह्लादहि दीन्हो ज्ञान । बंधन जगत छुटायो दयानिधान ५ चौ० । यद्यपि कीर्तिन शब्द जु सोई । आवतहै कहनेपर जोई ॥ शास्त्रपुराण परन्तु बतावैं । हरिचारित्र यहनादलखावैं ६ मिथ्या वादमनाहिं बखाना । भगवतकीर्त्तिनहै विधिनाना ॥ नाना भांति चरित हरिकेरे । भाषिय सुनिय प्रेमरुचितेरे ७ मानकरन अथवा गुणगाथा । विरचनकाव्य भक्तिरससाथा ॥ रचनाकाव्य अमितसुखदानी । परहरिहरिजनके रससानी ८ काव्यरचन मन अनत न जावै । रात्रिदिवस तामें हिरहावै ॥ रहतनिरारत दिन औ राती । हरबर लिखतजात सुखपांती ९ सुन्दरछंद प्रबन्ध बनावत । मनहु स्वर्गसो पानलगावत ॥ जोईतामें चित

स उपदेश किय दया धारि सप्तर्षि। सीयराम सुमिरण करतजा-
तभये हियहर्षि ४० चौ०। रामराम विस्मृत है गयऊ। तायत
मरा कहन तिन लयऊ॥ करि एकाग्र चित्त तहँ जोई। लागे
जपन नाम वह सोई ४१ कछु दिन गये सप्तऋषि आये। बाल-
मीक अन्वेषण लाये॥ लीलादेखत भे तिनकेरी। ऊपर भइ
बामी बहुतेरी ४२ जात निकट पशु पच्छी जोई। रामराम रट
लावत सोई॥ जानि चिह्न इहि भांति निकारा। शुद्ध सिद्ध
मुनि सकल प्रकारा ४३ वेद शास्त्र धर्मकर्महुँ काहीं। शिक्षाक-
रन प्रयोजन नाहीं॥ नाम प्रताप जानि सब लीन्हा। हर्षित
गमन ऋषिन तब कीन्हा ४४ बामीजमोदेह तिनकेरी। सर्पादि-
क जहँ भये बसेरी॥ तासों बालमीक असनामा। धारणकरतभ
येतप धामा ४५ जबत्रिकालदर्शी मुनि भयऊ। तवविचारानिज
मानस कयऊ॥ सो यह जाके नाम प्रभावा। तासुचरित्र चहिय
कछुगावा ४६ दो०। एकक्रौंचवी विहरतो सहितकाम मदचाव।
दया हीन इक वधिक लखि तासुसमीप सिधाव ४७ क्रौंचीपति
मारतभयो मासस्वादी सोइ। देखि मृतक निज पति बिकल
उच्चस्वर सों रोइ ४८ देखि बिकल बाल्मीक तिहि क्रोधित वधि-
कहि आप। सुरसरिजल आचमन करि लगेदेन इमिशाप ४९
श्लोक। मानिषादप्रतिष्ठात्वंमगमःशाश्वतीसमाः। यत्क्रौंचमि
थुनादेकमवधीःकाममोहितम् ५० चौ०। सो अश्लोक शापके
देता। चारु चारिपद ललित समेता॥ यह सुनि कहे महीसुर
ज्ञाना। धन्य धन्य तुम साधु सुजाना ५१ शापदेत तुम्हरेमुख
माहा। आईसरस्वती गुणगाहा॥ तिहिश्रश्लोक प्रबंध बनाओ।
तिहि प्रसाद निजलोक सिधाओ ५२ यामें संगृह अहे अनूपा।
हम किहि भांति कहैं सुनि भूपा॥ बाल्मीक सुनि आनंद पाये।
सुरज्येष्ठ तिहि अवसर आये ५३ लिये संग सुत कहलोकेशा।
धन्य धन्य तुम धन्यमुनीशा॥ प्रथमश्लोकरचो सुखदाई। रा-
मायण विरचहु मनलाई ५४ परम रम्य पदरचहु विचारी। बरण

मधुर अति आनँद कारी ॥ यासों निर्मल सुयश तुमारा । कल्प अंत लगहोइ अपारा ५५ धन्यतासु वाणीजग बीचा । तरुयश राम प्रेम रससींचा ॥ ताके छन्द प्रबंध बनावैं । रामसमीप अंत वैजावैं ५६ बहुरि सोइ सुनि चरित वदारा । हावैजगत जनन उद्धारा ॥ इहिसमान उपकार न दूजा । तपनहिं जपनहिं पाठन पूजा ५७ दो० । कामकथा जे वर्णहीं तिनते अधम न आन । सूतक अघलागैं तिनहिं कीन्हो सत्यबखान ५८ चौ० ॥ ताते रामचरित मुनि कहिये । प्रेमसहित अघ संशय दहिये । अब्ज योनि इहिभांति बखाना । त्रिदसन सुतभे अंतरध्याना ५९वा-लमीकमन करत विचारा । जो इहि वैकःवचन उचारा ॥ विरचौं रामायणिकिहि भांती । वरणौं सुनी न सोसुख पांती ६० कहि सुरसरिके कूल मझारा । लागे करन ध्यान तिहिवारा ॥ तिहि बेला मुनि हृदय मझारा । प्रगटे श्री दशरत्थ कुमारा ६१ नील कंजघन श्यामल अंगा । लाजत वपुलखि अमित अनंगा ॥ दृगराजीव लजावन हारे । मुखछविकोटि इंदुद्युति दारे ६२ क्रीट मुकुट शिरऊपर धारे । पीतवास चपलाछवि दारे ॥ सुन्दर उर वनमाल बिराजत । बहुभूषण कौस्तुभ मणिराजत ६३ कम्बु कण्ठ उरआयत शोभा । बाहुअजान देखि मनलोभा ॥ नाभि गँभीरभ्रमर यमुनासी । कटि कृशहरिसमान सुखरासी ६४ जन्हू रंभासरिस सुहाई । पादांगुली अमितसुखदाई ॥ तिनमहँ सोह-त द्युतिनख पांती । चन्द्र किरण सोहत जिहि भांती ६५ कोश गुलाब पादतल शोभा । मुनिमन भ्रमरसदा जहँ लोभा ॥ एंड़ी नारंगी समसोहत । निरखत मुनि जनको मनमोहत ६६ धनुप बाण दोऊकरधारी । कटिभाथाजन विपति विदारी ॥ मन्द मन्द मुसुकात कृपाला । सोहत भृकुटि कामधनु चाला ६७ जिया-लाल शोभा किमि गावै । शारदअहि अज पार न पावै ॥ इहि विधिध्यान मांझमुनि देखा । उपजा उर आनन्द विशेखा ६८ भूत भविष्य चरित सुखसारा । बहुरिहृदय निजमांझ निहारा ॥

रामकृपा निजऊपर देखी। पायोमुनि आनन्द विशेखी ६९ बर्ण-
न लागे रामचरित्रा। बिच बिच कथा अनूप पवित्रा॥ कहेकांड
षट आनँद पाई। प्रथमहि बालकाण्ड सुखदाई ७० दूसर किय
आरण्य बखाना। तीसर किष्किंधा सुखदाना॥ चौथो सुन्दर
अति सुखदायक। पंचम युद्धकाण्ड सबलायक ७१ छठयोंउत्तर
अति सुखराशा। इहिप्रकार मुनि कीन्ह प्रकाशा॥ अबसंक्षेप
कहौं कछुगाई। काण्डन प्रति मुनि जिबिधि बनाई ७२ बालम
दशरथसुत के हेता। बोलेशृंगीऋषि सुख केता॥ बिधिवत यज्ञ
कीन्ह नृपराई। परब्रह्मतिनसुत भे आई ७३ दो०॥ गाधिसुव-
नकी यज्ञते गेसानुज इकबार। मारीचहि इकशरहयो सदल
सुबाहु सँहार ७४ चौ०। तारिअहल्या नगर विदेहा। नृपमद
खण्ड धनुषयुत नेहा॥ सीताव्याहि नगर निजआये। घरघर भे
आनन्द बधाये ७५ नृपति देनलागे युवराजू। सुनि केकईदिये
बनसाजू॥ सिययुत गवनत भे द्वौ भाई। सुरसरितरि मुनि बेष
बनाई ७६ चित्रकूट पहुँचे रघुराई। इतमें भरत अवध पुरआई॥
रामगमन बन सुनि दुखपाये। चित्रकूट युतबंधु सिधाये ७७तब
रघुनाथ भरत समुझाये। घूमें पादपीठ प्रभुपाये। नन्दिग्राम
बास तिन लयऊ। मुनिवर बालकहतइमि भयऊ ७८ पुनिआर-
ण्य कहनसुनि लागे। अत्रि आदि मुनिवर बड़भागे॥ तहँ
तहँ रामलषण सियगयऊ। शूर्पणखा विरूप पुनि कयऊ ७९
दो०। खरदूषण त्रिशिरादि खल सहसचतुर्दश आव। श्रीरघु-
नंदन एकशर सबको मारि खसाव ८० कपटकुरंग निपातिसिय
हरिदशास्य रघुनाथ। सहसिय विरहकबंध हति गृद्धहि कीन
सनाथ ८१ चौ०। शवरी मिलि पंपासरजाई। हनुमत मिले
अगूचलि आई॥ इमि आरण्यकाण्ड मुनि गावा। किष्किन्धा
अब कहत सुहावा ८२ प्रथमसुकंठ मिलाप्रभु आई। सप्तताल
बेधे रघुराई॥ बालिहि बधि सुकंठ कियराजा। बरषागुनि निवसे
रघुराजा ८३ लषण सुकण्ठहि भयदरशायो। सो सभीत कपि

भालु बुलायो ॥ सीयखोज हितदिगन पठाये । हनुमदादि वारिधितटआये ८४ मे विलोकि सम्पाति सभीता । सो दिखाइ दीन्हों तबसीता ॥ लांघ महोदधि तब हनुमाना । इमि किष्किंधा काण्ड बखाना ८५ पुनि सुन्दर वरणों मुनि राई । रजनि लंक हनुमानमझाई॥ लखि अशोकबाटिकाम जाई। सियहि दीन मुद्रिका सुहाई ८६ प्रभुकी कथा कहत पुनिभयऊ। कानन भंग बहुरिकपि कयऊ ॥ बंधन सहि लंका कपिजारा । सिय प्रबोधिगे सागरपारा ८७ मिलिकपि सकल रामपहँआये। सीता सुधि रघुबरहि सुनाये ॥ सानुज राम जलधि तट आये । मिले विभीषण सुख सरसाये ८८ दो० । सेतु बांधि प्रभु पारसँग मैस्रू खिर्श महान । शुकसारन दरशाव दल इमि सुंदर किय गान ८९ चौ० । लंकाकाण्डम दश शिर मारा । कटक समेत न एक उबारा ॥ जनकसुता समेत सुखपाई । पुष्पक चढ़ि गमने रघुराई ९० उत्तर माहँ अवध प्रभु आये । घरघर भे आनंद वधाये ॥ पुनि अगस्ति कर आयसु पाई । अश्वमेध कीन्हो रघुराई ९१ येषटकाण्ड सकल जग जाना।बालमीकि मुनिप्रथम बखाना ॥ संख्या चौविस सहस सुहाई । जियालाल संक्षेपहि गाई ९२ दो० । पढ़ै सुनै मन लाइ जो नाशैं तीनों ताप । जाइ अंत रघुपति निकट दारि सकल जग पाप ९३ चौ० । अब जो यह षटकाण्डन माहीं । वर्णन कीन प्रथमकी नाहीं॥प्रथमहि श्री वाल्मीकि सुजाना । किय शतकोटि सुयश प्रभु गाना ९४ ताहि सदाशिव त्रैथल कीन्हा । स्वर्ग मृत्यु पातालम दीन्हा ॥ ताकी संख्या कहौं बखानी । सुनहुमंत जन मानस आनी ९५ तेंतिस कोटिहु लच्च सब सोइ सहससैतीनि ॥ तेंतिस ऊपर वर्णदश द्वै अच्चर शिवलीन९६चौ०बांटि दीन इमि तीनिहु लोका ॥ पढ़त सुनतजन होत विशोका।वर्ष सहसदश प्रथम उचारा॥ पीछे भयो राम अवतारा ९७ देखिय करिविचार इहि भांती । नाम प्रताप प्रगट सुख पांती ॥ प्रथमहिं जिन वाल्मीकि कि छाया । नहिंअ-

स्पर्श करत मुनिराया ९८ सो बाल्मीकि नाम परतापा। प्रगटो सुयश जगत हरतापा॥ रामनामको अमित प्रभावा। भाषि न पार सहसमुख पावा ९९॥

दो०। कथा कहत शुकदेवकी अघगिरितूल कृशान। ऐसो को कवि जगतमें तिन यशकरै बखान १०० छन्दरामगीतिका। कहो निजमुख भागवत जिन अमृतकी सरिताहि। पानकरतै अमरहोवै जगत जालनशाहि॥ एक वैतियकरत मज्जन आवशुक तिहिकाल। कीन ब्रीड़ा देखिव्यासहिकीनलज्जाबाल१०१लीन अम्बर देखि तिनसों पूछियो तबव्यास। गयोमोसुत अग्रकाहेकी नलज्जातास॥ दीयउत्तरतीयते गुनजगत भगवतएक। आपतौ वहुरूप जानत ज्ञानभांति अनेक१०२ दो०। ताते तवलज्जाकरी सुनहु व्यासमनलाइ। यहगाथा इमिजन्मशुक सुनहुसंतसुखदाइ १०३ चौ०। मातुगर्भ शुकदेवसुजाना। भगवद्भक्तिज्ञान सबजाना॥ ताकोकारण कहौं बुझाई। जोसुनि जगभ्रमआसु नशाई १०४ शिवसों पार्वती इकबारा। ज्ञानतत्त्व पूंछासुखसारा॥ तब शिव आश्रम जीवभगाई। लगेकहन गिरिजहि समुझाई १०५ कछुसुनि आवनींद गिरिजाहीं। रहो एकशुक बालक ताहीं॥ भगवत इच्छा अति बलवाना। सोई पारवती जब जाना १०६ देनहुँकारिलाग शुक जोई। भयोअमर सुनि ज्ञानहिं सोई॥ नीलकंठ जानो यहहाला। क्रोधवन्तधाये ततकाला १०७ गंगाधरहि क्रोधयुतजाना। भागि व्यासतिय उदर समाना॥ बधन हेतु तहऊं शिव गयऊ। व्यास प्रार्थना ते तजि दयऊ १०८ द्वादश वर्षजन्म नाहिंलीन्हा। सुरऋपि आइबिनय बहुकीन्हा॥ तब जन्मे शुकदेव कृपाला। बनको चलि दीन्हो ततकाला १०९ तिनपाछे धाये मुनि व्यासा। हेसुत हेसुत वचन प्रकासा॥ मोह विवश आवतलखि धाये। वृक्षनद्वारा वचन सुनाये११०मैं तुम सुख दुखजग भ्रमजानौ। सुतपितु वचन मृषापुनि मानौ॥ तुमपितु भे बहुबार हमारे। पितुभे हमबहुबार तुमारे १११ देखत

सुनत जौन जगमाहीं। भगवत रूपआन कछुनाहीं॥ विद्या भगवत जानन हेता। ताको पाइन छूटै द्वैता ११२ दो० । सो विद्या निष्फल अहै सुनि उत्तर इमिव्यास। पुत्रमोहमें मनबँधो आये भुवनउदास ११३ चौ० । परविचार इमि मानसधारा। जिमि आवैं शुकदेव उदारा॥ श्रीमद्भागवते अश्लोका। बहु-बालकन पढ़ाइविशोका ११४ बसत जहां शुकदेव कृपाला। तिहिवन दिय पठायबहुबाला॥ श्रीशुक इकादिन इकशिशुसु-खते। यह अश्लोक सुनत भे सुखते ११५ पापात्मापूतनाम हाई। विषलगाइ हरिमारन आई॥ ताको जननीकी गति दी-न्हा। अतिआश्चर्य सुनत शुककीन्हा ११६ दूसरको दयालु जगमाहीं। जाकी हमशरणागत जाहीं॥ श्रीशुकबँधे प्रेमकी फासा। पूंछोआइ बालकन पासा ११७ दो० । पढ़ोकासु ढिग तिनकहो पढ़े व्यासके पास। पढ़नहेतु शुकव्यास ढिगआये साहितहुलास ११८ पुनि श्रीमद्भागवत को पढ़तभये सुखपाइ। इच्छाभैको प्रेमिको दीन्हो चहिय सुनाइ ११९ छन्दबरवा। पर देखोअधिकारी नाहींकोइ। योग्य विचारि नितान्तपरीक्षित सोइ॥ गंगातट तिनकाहीं दियो सुनाइ। सप्तदिवसमहँ कीन्हों मुक्तबनाइ १२० दो० । सुनि जिनजिन तिहि सभामहँ भेभग-वतमय गात। अजहुँसुनत जो प्रेमयुत हर्षिपरमपद जात १२१ गाथा श्रीशुकदेवकी इविधि प्रेमरस लीन। जियालाल शठ किमि कहै अति मतिमन्दमलीन १२२ दो०। अबबरणौं जय-देवकी कथामहासुखदान। मण्डलीक कवि नृपनमें चक्रवर्त्ति नृपजान १२३ सो०। रचो गीतगोविन्द तिहिप्रकाश तिहुँलोक इमि। तापहरण जिमिइन्दु कोककाव्य नवरससहित १२४ चौ० । अरु शृंगार समुद्र महाई। जाकी अष्टपदी सुखदाई॥ प्रेम समेत पढ़त जो कोई। निश्चय बहुशास्त्रज्ञसुहोई १२५ पढ़त जहां कोई मनलाई। भगवत आपसुनत तहँ आई॥ भगवद्भक्त प्रसून समाना। भगवत भगसम तिनसुखदाना १२६ है शृंगार

स्पर्श करत मुनिराया ९८ सो बाल्मीकि नाम परतापा। प्रगटो सुयश जगत हरतापा॥ रामनामको अमित प्रभावा। भाषि न पार सहसमुख पावा ९९॥

दो०। कथा कहत शुकदेवकी अघगिरितूल कृशान। ऐसो को कवि जगतमें तिन यशकरै बखान १०० छन्दरामगीतिका। कहो निजमुख भागवत जिन अमृतकी सरिताहि। पानकरतै अमरहोवै जगत जालनशाहि॥ एक वैतियकरत मज्जन आवशुक तिहिकाल। कीन ब्रीड़ा देखिव्यासहिकीनलज्जाबाल१०१लीन अम्बर देखि तिनसों पूछियो तबव्यास। गयोमोसुत अग्रकाहेकी नलज्जातास॥ दीयउत्तरतीयते गुनजगत भगवतएक। आपतौ बहुरूप जानत ज्ञानभांति अनेक१०२ दो०। ताते तवलज्जाकरी सुनहु व्यासमनलाइ। यहगाथा इमिजन्मशुक सुनहुसंतसुखदाइ १०३ चौ०। मातुगर्भ शुकदेवसुजाना। भगवद्भक्तिज्ञान सबजाना॥ ताकोकारण कहौं बुझाई। जोसुनि जगभ्रमआसु नशाई १०४ शिवसों पार्वती इकबारा। ज्ञानतत्त्व पूंछासुखसारा॥ तब शिव आश्रम जीवभगाई। लगेकहन गिरिजहि समुझाई १०५ कछुसुनि आवनींद गिरिजाहीं। रहो एकशुक बालक ताहीं॥ भगवत इच्छा अति बलवाना। सोई पारवती जब जाना १०६ देनहुँकारिलाग शुक जोई। भयोअमर सुनि ज्ञानहिं सोई॥ नीलकंठ जानो यहहाला। क्रोधवन्तधाये ततकाला १०७ गंगाधरहि क्रोधयुतजाना। भागि व्यासतिय उदर समाना॥ बधन हेतु तहऊं शिव गयऊ। व्यास प्रार्थना ते तजि दयऊ १०८ द्वादश वर्षजन्म नहिंलीन्हा। सुरऋषि आइविनय बहुकीन्हा॥ तब जन्मे शुकदेव कृपाला। बनको चलि दीन्हो ततकाला १०९ तिनपीछे धाये मुनि व्यासा। हेसुत हेसुत वचन प्रकासा॥ मोह विवश आवतलखि धाये। वृक्षनद्वारा वचन सुनाये११०मैं तुम सुख दुखजग भ्रमजानों। सुतपितु वचन मृषापुनि मानौ॥ तुमपितु मे बहुवार हमारे। पितुमे हमबहुवार तुमारे १११ देखत

सुनत जौन जगमाहीं। भगवत रूपआन कछुनाहीं॥ विद्या भगवत जाननहेता। ताको पाइन छूटै द्वैता ११२ दो० । सो विद्या निष्फल अहै सुनि उत्तर इमिव्यास। पुत्रमोहमें मनवँधो आये भुवनउदास ११३ चौ० । परविचार इमि मानसधारा। जिमि आवैं शुकदेव उदारा॥ श्रीमद्भागवते अश्लोका। बहु-वालकन पढ़ाइविशोका ११४ वसत जहां शुकदेव कृपाला। तिहिवन दिय पठायवहुवाला॥ श्रीशुक इकादिन इकशिशुमु-खते। यह अश्लोक सुनत भे सुखते ११५ पापात्मापूतनास हाई। विषलगाइ हरिमारन आई॥ ताको जननीकी गति दी-न्हा। अतिआश्चर्य सुनत शुककीन्हा ११६ दूसरको दयालु जगमाहीं। जाकी हमशरणागत जाहीं॥ श्रीशुकवँधे प्रेमकी फासा। पूंछोआइ वालकन पासा ११७ दो० । पढ़ोकासु ढिग तिनकहो पढ़े व्यासके पास। पढ़नहेतु शुकव्यास ढिगआये सहितहुलास ११८ पुनि श्रीमद्भागवत को पढ़तभये सुखपाइ। इच्छाभैको प्रेमिको दीन्हो चहिय सुनाइ ११९ छन्दवरवा। पर देखोअधिकारी नाहींकोइ। योग्य विचारि नितान्तपरीक्षित सोइ॥ गंगातट तिनकाहीं दियो सुनाइ। सप्तदिवसमहँ कीन्हों मुक्तवनाइ १२० दो० । सुनि जिनजिन तिहि सभामहँ भेभग-वतमय गात। अजहुँसुनत जो प्रेमयुत हर्षिपरमपद जात १२१ गाथा श्रीशुकदेवकी इविधि प्रेमरस लीन। जियालाल शठ किमि कहै अति मतिमन्दमलीन १२२ दो०। अववरणों जय-देवकी कथामहासुखदान। मण्डलीक कवि नृपनमें चक्रवर्त्ति नृपजान १२३ सो०। रचो गीतगोविन्द तिहिप्रकाश तिहुँलोक इमि। तापहरण जिमिइन्दु कोकक्काव्य नवरससहित १२४ चौ० । अरु शृंगार समुद्र महाई। जाकी अष्टपदी सुखदाई॥ प्रेम समेत पढ़त जो कोई। निश्चय बहुशास्त्रज्ञसुहोई १२५ पढ़त जहां कोई मनलाई। भगवत आपसुनत तहँ आई॥ भगवद्भक्त प्रसन्न समाना। भगवत भगसम तिनसुखदाना १२६ है शृंगार

स्पर्श करत मुनिराया ९८ सो बाल्मीकि नाम परतापा। प्रगटो सुयश जगत हरतापा॥ रामनामको अमित प्रभावा। भाषि न पार सहसमुख पावा ९९॥

दो०। कथा कहत शुकदेवकी अघगिरितूल कृशान। ऐसो को कवि जगतमें तिन यश करै बखान १०० छन्दरामगीतिका। कहो निजमुख भागवत जिन अमृतकी सरिताहि। पानकरतै अमरहोवै जगत जालनशाहि॥ एक वैतियकरत मज्जन आवशुक तिहिकाल। कीन ब्रीड़ा देखिव्यासहिकीनलज्जाबाल१०१लीन अम्बर देखि तिनसों पूछियो तबव्यास। गयोमोसुत अग्रकाहेकी नलज्जातास॥ दीयउत्तरतीयते गुनजगत भगवतएक। आपतो बहुरूप जानत ज्ञानभांति अनेक१०२ दो०। ताते तबलज्जाकरी सुनहु व्यासमनलाइ। यहगाथा इमिजन्मशुक सुनहुसंतसुखदाइ १०३ चौ०। मातुगर्भ शुकदेवसुजाना। भगवद्भक्तिज्ञान सबजाना॥ ताकोकारण कहौं बुझाई। जोसुनि जगभ्रमआसु नशाई १०४ शिवसों पार्वती इकबारा। ज्ञानतत्त्व पूंछासुखसारा॥ तब शिव आश्रम जीवभगाई। लगेकहन गिरिजहि समुझाई १०५ कछुसुनि आवनींद गिरिजाहीं। रहो एकशुक बालक ताहीं॥ भगवत इच्छा अति बलवाना। सोई पारवती जब जाना १०६ देनहुँकारिलाग शुक जोई। भयोअमर सुनि ज्ञानहिं सोई॥ नीलकंठ जानो यहहाला। क्रोधवन्तधाये ततकाला १०७ गंगाधरहि क्रोधयुतजाना। भागि व्यासतिय उदर समाना॥ बधन हेतु तहऊं शिव गयऊ। व्यास प्रार्थना ते तजि दयऊ १०८ द्वादश वर्षजन्म नहिंलीन्हा। सुरऋषि आइबिनय बहुकीन्हा॥ तब जन्मे शुकदेव कृपाला। बनको चलि दीन्हो ततकाला १०९ तिनपीछे धाये मुनि व्यासा। हेसुत हेसुत वचन प्रकासा॥ मोह विवश आवतलखि धाये। वृक्षनद्वारा वचन सुनाये११०मैं तुम सुख दुखजग भ्रमजानौ। सुतपितु वचन मृषापुनि मानौ॥ तुमपितु मे बहुबार हमारे। पितुमे हमबहुबार तुमारे १११ देखत

सुनत जौन जगमाहीं। भगवत रूपआन कछुनाहीं॥ विद्या
भगवत जानन हेता। ताको पाइन छूटै द्वैता ११२ दो० । सो
विद्या निष्फल अहै सुनि उत्तर इमिव्यास। पुत्रमोहमें मनबँधो
आये भुवनउदास ११३ चौ० । परविचार इमि मानसधारा ।
जिमि आवैं शुकदेव उदारा॥ श्रीमद्भागवते अश्लोका । बहु-
वालकन पढ़ाइविशोका ११४ बसत जहां शुकदेव कृपाला ।
तिहिवन दिय पठायबहुवाला॥ श्रीशुक इकादिन इकशिशुमु-
खते। यह अश्लोक सुनत भे सुखते ११५ पापात्मापूतनाम
हाई। विषलगाइ हरिमारन आई॥ ताको जननीकी गति दी-
न्हा। अतिआश्चर्य सुनत शुककीन्हा ११६ दूसरको दयालु
जगमाहीं। जाकी हमशरणागत जाहीं॥ श्रीशुकबँधे प्रेमकी
फासा। पूंछोआइ वालकन पासा ११७ दो० । पढ़ोकासु ढिग
तिनकहो पढ़े व्यासके पास। पढ़नहेतु शुकव्यास ढिगआये
सहितहुलास ११८ पुनि श्रीमद्भागवत को पढ़तभये सुखपाइ ।
इच्छाभैको प्रेमिको दीन्हो चहिय सुनाइ ११९ छन्दबरवा। पर
देखोअधिकारी नाहींकोइ । योग्य विचारि नितान्तपरीक्षित
सोइ॥ गंगातट तिनकाहीं दियो सुनाइ। सप्तदिवसमहँ कीन्हों
मुक्तबनाइ १२० दो० । सुनि जिनजिन तिहि सभामहँ भेभग-
वतमय गात। अजहुँसुनत जो प्रेमयुत हर्षिपरमपद जात १२१
गाथा श्रीशुकदेवकी इविधि प्रेमरस लीन । जियालाल शठ
किमि कहै अति मतिमन्दमलीन १२२ दो०। अबवरणौं जय-
देवकी कथामहासुखदान। मण्डलीक कवि नृपनमें चक्रवर्त्ति
नृपजान १२३ सो०। रचो गीतगोविन्द तिहिप्रकाश तिहुँलोक
इमि । तापहरण जिमिइन्दु कोकक्काव्य नवरससहित १२४
चौ० । अरु शृंगार समुद्र महाई। जाकी अष्टपदी सुखदाई ॥
प्रेम समेत पढ़त जो कोई। निश्चय बहुशास्त्रज्ञसुहोई १२५ पढ़त
जहां कोई मनलाई। भगवत आपसुनत तहँ आई॥ भगवद्भक्त
प्रसन्न समाना। भगवत भगसम तिनसुखदाना १२६ है शृंगार

कोक जो यामें। बिषयिन मन बेधतनहिं तामें ॥ बिषयिन मन बर्त्तत है जोई। है बरणो यामें नहिंसोई १२७ यामें वरणो सो शृंगारा। भगवत शोभा अगम अपारा ॥ है रसराज जासु को नामा। जासों प्राप्तहोत सुखधामा १२८ दो० । होतभये कुंड विल्व में श्री जयदेवकवीश। रसनृप रसशृंगार के मूरतिबिस्वा- वीश १२९ चौ० । तासुस्वाद निजमन में जाना। रहे इबिधि वैराग्य निधाना ॥ पादपछांह करन निशि वासा। गुदरिकम- राडलु अपरनपासा १३० कियो प्रतिज्ञा ब्राह्मण कोई। यहमेरी तनुजाहै जोई ॥ जगन्नाथजी कोसो देहौं। इतनो सुयशजगत में लेहौं १३१ पुनि तनया निज ब्राह्मण लायो। तब श्री जग- न्नाथ ससुझायो ॥ है जयदेव स्वरूप हमारा। तिहि कन्यादेविप्र उदारा १३२ सुनि जयदेव निकट सो आयो। तिनको सब बृत्तांत सुनायो ॥ सुनि जयदेव कहो द्विज पाहीं। कन्या देन योग हम नाहीं १३३ कन्या देन धनी को चाहीं। हम बिरक्त फकड़नक नाहीं ॥ तबब्राह्मण बोला तिनपाहीं। भगवतआज्ञा मम बश नाहीं १३४ कह जयदेव जो कि प्रभु वे हैं। शोभित लाखन तिय उनकोहैं ॥ मोहिं पहारसमान लखावै। तब ब्राह्मण तिनको समुझावै १३५ नाहिंमानो जयदेव सिखावा। द्विज निज कन्यहि धर्मबतावा ॥ धर्म सिखाइतहाँ तजि गयऊ। तब जयदेव कहन इमि लयऊ १३६ तू निज पितु के भवनसिधावै। मेरेसंग दुःख अति पावै ॥ तिहि जयदेव बिबिध समुझायो। पर कन्या नाहिंचित्त डुलायो १३७ दो० ।भगवत आज्ञा जानिकै कुटीबनायो एक। भगवतको पधरायकै पूजत सहितविवेक १३८ रचत गीत गोविन्द तहँ अष्टपदी इक माहिं। प्रियाभाव को ध्यान इमि लिखन चहे लिखि नाहिं १३९ चौ० । की श्री- कृष्ण स्वामि सुखकारी। प्रियहि मनाव दीनता धारी ॥ दूरकरन वालो विपकामा। तव पद कमल पवित्र ललामा १४० मम म- स्तक धारण करुआनी। लिखि नहिं सके ढिठाई जानी ॥ द्वि-

तिय भाव चिन्तामणि देता। चलेगये अस्नानकि हेता १४१
तब भगवत जयदेव स्वरूपा। सोई पद लिखिदीन अनूपा॥ म-
ज्जनकरि जयदेवजु आये। प्रथम विचारित पद लखि पाये १४२
पद्मावति सन बूझन लयऊ। यह पदअत्र कौन लिखिगयऊ॥
कहतिय अबहिं आपु लिखिदयऊ। बहुरिआइ पूंछतका भयऊ॥
१४३ भगवत चरित जानि तब लीन्हा। गोविंदगीत धन्यकरि
चीन्हा॥ यहजो सुखदगीतगोविन्दा। अघगिरिदारन आनँद
कन्दा १४४ राजा जगन्नाथपुरि जोई। गोविंद गीत रचो पुनि
सोई॥ गीत नृपति जयदेव उदारा। जगन्नाथ मन्दिरमें धारा
१४५ तब श्री जगन्नाथ हरपाई। लिय जयदेव गीत उरलाई॥
राजा लखि लज्जित मनहोई। बूड़न चलो जलधि कहँ सोई
१४६ जगन्नाथ कह नृप सुनिलीजै। बूड़िय नाहिं न्याव मन
कीजै॥ श्री जयदेव भक्ति कविताई। अग्रन पहुँचत तव नृप
रोई १४७ जो तुम यह हठ करत महीपा। तौ सुनिलेहु क्षत्रि
कुलदीपा॥ सर्गप्रति तिन गीत मझारा। रहिहै एकश्लोक तु-
म्हारा १४८ पर जयदेवकेरही नामा। रहिहै ख्यात सकल गुण
धामा॥ बारह सर्ग गीतगोविंदा। गायक घायक दुख सुख
कन्दा १४९ एकसमय इक मालिकि कन्या। पञ्चम सर्ग अष्ट-
पदि धन्या॥ बैंगन तोरत गावत जाई। जगन्नाथ स्वामी
सुखपाई १५० जहांजात मालीकि कुमारी। तहांजातपीताम्बर
धारी॥ फटोझँगा कंटक बहु लागी। दर्शन हित आयो नृप
भागी १५१ झँगा देखि चकृत चित भयऊ। तब पंडनसों पूंछन
लयऊ॥ काहू ने कछु नाहिं बतायो। जगन्नाथ तिहि उर दर-
शायो १५२ राजा करि निश्चय मन भारी। डौंड़ी फिरवायो
पुर झारी॥ की गोविन्द गीत पढ़ जोई। पढ़ै पवित्रस्थानम
सोई १५३ शुद्धगात ह्वै पढ़ै बनाई। भगवत आप सुनत
मनलाई॥ मुग़ल एक करि प्रेम अपारा। पढ़त सदा यह पोथि
सुखारा १५४ एक दिवस सो वाजि सवारा। प्रेम भाव से मगन

अपारा ॥ अष्टपदी गावत युत नेहा । भगवत दर्शन दे कह
एहा १५५ सुनत साथ हम अहैं तुम्हारे । गावत चलौ अहो
सुख सारे ॥ गोबिंद गीत महात्म अपारा । बरणि प्रताप लहै
को पारा १५६ स्वर्ग लोक सुर कन्या गावैं । नाना भांति भाव
दरशावैं ॥ एक समय जयदेव कृपाला । मारग चले जात तिहि
काला १५७ लागे ठग मन कीन बिचारा । पाप मूल धन रोग
अहारा ॥ दुख का मूल नेह गुनिलीजै । इन तीनों को त्यागन
कीजै १५८ दो० । यह बिचारि निज पासजो दियो ठगन कहँ
सोइ ॥ ठग बिचार उत्पात अति याके पीछे होइ १५९ चौ० ।
ठगन कियो बहुभांति बिचारा । कर पद काटि कुआं में डारा ॥
भगवत इच्छा इकनृप आयो । तिनहिं देखि तत्क्षण निकरा-
यो १६० हाथ पावँ देखो नाहिं जबहीं । तिनते पूंछत भो नृपतब-
हीं॥तब जयदेव कहत इमि भयऊ । माता गर्भ जन्म इमिलयऊ
१६१ राजा निज मन माहिं बिचारी । अहै प्रतापी कोऊभारी॥
भगवद्भक्त भाग्य ममभारी । दर्शनदैकै कियो सुखारी १६२ अ-
पनी राजधानि को लायो । हाथ जोरि यह बिनय सुनायो ॥
कुछ सेवाहित आयसु दीजै । कहो साधु सेवा नृप कीजै १६३
राजासो करि अंगीकारा । सेवा साधु करत सुखसारा ॥ सुनि
ठगसाधू रूप बनाई । राजा भवन पहूंचे आई १६४ लखि जय-
देव नृपहि समुझाई । ये सबहैं हमार बड़भाई ॥ महापुरुष इन
को गुनिलीजै । बिबिध भांति सेवा नृप कीजै १६५ राजासुनि
वैसाही कीन्हा । ठगन जानि जयदेवहि लीन्हा ॥ ताते त्रास
युक्त अति डरहीं । बिदाहेतु बिनती नित करहीं १६६ तब इक
दिन बहु द्रव्य दिवाई । तिनको बिदा दियो करवाई ॥ पठये
सेवक घर पहुँचावन । ते तिनते बोले बचपावन १६७ किमि
सम्बन्ध स्वामि अरु तुमते । बाणी सत्य कहौ सो हमते ॥ जो
ऐसे मर्य्याद समेता । भई बिदाई आनँद देता १६८ कह ठग
कहन योग नहिं एहा । तब दिय सेवक बचन सनेहा ॥ काहू

सों कहिहैं हम नाहीं। तब ठगबोलतभे तिनपाहीं १६९ इक नृपघर हम सब जो अहईं। तब स्वामीयुत नौकर रहईं॥ तिन कछु नृपति अकारज कीन्हा। हमसों बधन नृपायसु दीन्हा १७० करपद काटि छोंड़ि हम दीन्हा। तासों अधिकमान उन कीन्हा॥ यह अपवाद भक्तकर जोई। सहि नहिंसकत भये प्रभु सोई १७१ धरती फाटिगई तिहिकाला। गे ठग हुतसमाइ पाताला॥ अनुचर घूमि नृपति पहँआये। जयदेवहि सबचरित सुनाये १७२ सुनि जयदेव दयासों पागे। कंपितकर पद म-र्दन लागे॥ मर्दत जामि पूर्ववत आये। नृपहि अनुगयहहाल सुनाये १७३ स्वामिहि नृप बहु पूंछन लीन्हा। तिन वृत्तांत सकल कहि दीन्हा॥ सुनि राजा मनकरि विश्वासा। सेवा करनलाग सहुलासा १७४ सत्य सदा भक्तनकी रीती। दुष्टहु संगकरत वेप्रीती॥ चूकतदुष्ट दुष्टता नाहीं। तिहिविधि साधु साधुता माहीं १७५ नृपसोंकह जयदेव सुनाई। देशजान चा-हौं नृपराई॥ तब राजा बहुविनती कीन्हा। तिनको तहांजान नहिंदीन्हा १७६ आपुजाइ पद्मावति पासा। स्वामी पतिपति-अतवासा॥ करिविनती निज मन्दिर लायो। सेवाहित रानीहि दृढ़ायो १७७ मरतभयो रानीकर भ्राता। भईसतीतातिय हरषा-ता॥ इकदिन रानी बातचलाई। निज मनमें बड़अचरजलाई १७८ सुनत हँसीं पद्मावति जबहीं। रानी कारण पूंछा तबहीं॥ उत्तरदेतभई सुखपाई। यह नहिं प्रीतिकि रीति सुहाई१७९मुख्य प्रीति इहिभांति कहावै। पतिकी मृत्यु जबहिं सुनिपावै॥तत्क्षण प्राण निछावरि करई। सुनिरानी इहिविधि उच्चरई १८०इहिवैस-तीआप है एका। कहि उरमांझ बातयह छेका॥ पीछे परीपरी-क्षा हेता। बचन कहो राजासों एता १८१ स्वामिहि वाटिका-हि लै जैये। सकल नगरयह बात जनैये॥ स्वामी आजुमृत्यु को पायो। सुनि राजारानिहि समुझायो १८२ रानीके मनएक न आई। तब राजा रचौरचो उपाई॥ अचिअम्बुरानी निज

आनी । पद्मावति ढिगरोदन ठानी १८३ दुखित देखि पद्मावति कहई । ममस्वामी आनंद युत अहई ॥ सुनि रनीलज्जा को पायो । कछुदिन में पुनि बात चलायो १८४ पद्मावति मन गुणिगुणकेतू । रानी परीपरीक्षा हेतू ॥ सुनि पतिमृतक रानि मुखबानी । तत्क्षण कुनप तजो गुणखानी १८५ लखि नृपरानि दशातिन केरी । श्रीहत भै जिमि दिनशशि केरी ॥ व्याकुल अमित भये नृपरानी । विरसन समजीवन निजजानी १८६ दाहन देह चिताबनवायो । स्वामी समाचार सबपायो ॥ तत्क्षणआइ लखो नृपकाहीं । जलनहेत उद्यतमन माहीं १८७ विविध भांति राजाहि समुझायो । परातिनके मन एक न आयो ॥ तब स्वामी निजमानसहेरे । बिना जिये पद्मावति केरे १८८ जीवैगो यह नृपन कदाई । गोविंदगीत अष्टपति गाई ॥ ताक्षण पद्मावतिजी जागीं । उठिपतिके संग गावनलागीं १८९ सावधान नृपतबहुँ न भयऊ । स्वामि बुझाइबोध तिनकयऊ ॥ कछु दिनगये ग्राम निजआये । कुण्ड बिल्वपुर शोभापाये १९० दो० । रहीं कोसअष्टादशै विष्णुपदी सुखदानि । तहांजात जयदेव नित मज्जनहित गुण खानि १९१ चौपाई । तिनकी जरा अवस्थादेखी । कीन्ह शैलजा दयाविशेखी ॥ एक धार तिनकुटी समीपा । लागी वहनतिमिर जगदीपा १९२ जयदेईगंगाकरि नामा । अजहूं वहतधार सुखधामा ॥ इमि जयदेव कथा सुख खानी । जियालाल द्विजकहा बखानी १९३ छन्दबरवा तुलसि दासकी गाथा अति सुखदाइ । कहौं बरणि कैसो उर तिन पद लाइ ॥ भक्तमालके कर्त्ता कियो प्रकास । वालमीकि अवतार सु तुलसीदास १९४ दो० । यामें कछु सन्देह नहिं वाणिप्रभा बलखात । राम चरित अमृत सरिस हियेमांझ चुमिजात १९५ चौपाई । राम चरित अमृत रसधारा । पूरमानकलि कीन्ह अपारा ॥ चौदह रामायाणि सुखदाई । वरणी तुलसीदास गुसाईं १९६ छन्दबरवा । विनयपत्रिका गीतावली सुहाइ । कवितावलि दो-

हावलि सुखदमहाइ॥ रामशलाका हनुमतजाहुक नाम। जानकि गिरिजा मंगल अति सुखधाम १९७ कड़का छन्दहुशोड़ा बरखा छन्द। छन्द भूलना आदिक आनंद कन्द॥ निश्चय भक्तन सुख सोहै यह बात। पढ़त नित्य रामायण जो सुखदात १९८ चौ०। निश्चय श्री रघुनन्दन स्वामी।वासकरैं ताउरजगनामी॥ को फल हेत पाठ कर जोई। ताको प्राप्त आशु अति होई १९९ दो०। रामशलाका मध्य में प्रश्न करै जो कोइ। होने वाली बात जो ज्ञात तुरत सो होइ २०० चौ०। तुलसी कृत रामायण जोई। ताहित काशिक पण्डित सोई॥ आदि अंत सब निरखि निदाना। निगमागम पुराणमय जाना २०१ अंगीकार सजन करि माना। को करि द्वेष बाद बहु ठाना॥ जब विश्वेश्वरनाथ कृपाला। अंगीकार कीन सुरपाला २०२ तब सबको अंगीकृत भयऊ। सकल सार गुनि कै लिखि दयऊ॥ कान्यकुब्ज ब्राह्मणके धामा। लीन्हजन्म राजापुर ग्रामा २०३ रहो नेहदारासोंभारी। गई पितुगृह इकदिन नारी॥ सहि नहिं सके वियोग अपारा। गे ससुरारिहि तासु पछारा २०४ ताहि देखि लज्जा अतिआई। क्रोधवन्त इमिवचन सुनाई॥ अस्थिमांसके तनहित लागी। लज्जा सकल लोक मधि त्यागी २०५ है अनित्य यह देह सदाई। नित्य विकार रहित रघुराई॥ पूरण ब्रह्म सच्चिदानंदा। अलख अगोचर आनँद कन्दा २०६ इतोनेह तिनसों किनकीजै। दोनों लोक लाभ अतिलीजै॥ इहिविधि वचन सुनत निजतीके। उघरे हिये नयन तुलसीके २०७ उदय भयो पूरबको भागा। प्रगटो हृदयज्ञान वैरागा॥ धरि उरहरि काशीमेंआये। कीर्त्तन भजन राम मनलाये २०८ नितमें हंत कृत्तमें जाइ। शौच शेषजल रहत सदाई॥ ताको देत एकथल डारी। रहत प्रेतलहि होत सुखारी २०९ बोलत भयो एक दिन सोई। मांगो वर जो इच्छा होई॥ कहो गुसांईजी सुखपाई। रघुनन्दनको देहु मिलाई २१० दो०। कहोभूत सामर्थ्य नहिं मोमें एनीतात। परसो थल

भाषतजहां आवतमारुत जात २११ चौ०। रामायण शुभ अमुक स्थाना। होत सुनन आवत हनुमाना॥ सब सों प्रथम कुरूप बनाई। लखि भय घृणाहोत अधिकाई २१२ सब सों पीछे जात सदाई। यह पहिचानि गुसाईं पाई॥ पीछे मारुत सुतके गयऊ। बन में जाय चरण गहि लयऊ २१३ चल सुतदीन्हे दरश सुहाये। कहे कौन हित मम ढिग आये॥ सुनि सबिनय कह तुलसीदासा। रघुनन्दन दर्शन ममआसा २१४ अनिलातमज बोले सुख पाई। चित्रकूट मिलिहैं रघुराई॥ सुनि तुलसी अति आनंद पाये। चित्रकूट दरशन हित आये २१५ एक दिवस दर्शन इमि पाये। श्रीरघुनंदन स्वामि सुहाये॥ राजकुमार स्वरूप उदारा। सुन्दर श्याम बपुष सुकुमारा २१६ भूषण वसन अमोल बिराजत। बाम दहिन कर शर धनु साजत॥ अश्व सवार महासुख राशी। तिमि सौमित्रहु प्रभा प्रकाशी २१७ एककुरंग पृष्ठ लगि धावत। निरखत महा मोद उपजावत॥ चक्षुनमूरति गई समाई। पर पहिंचानो नाहिं गुसांई २१८ तिन पीछे आये हनुमाना। पूछादरश लहो भगवाना॥ तुलसिदास बिनती करि बोले। गे द्वै राजकुमार अमोले २१९ दो०। राम लषण वेईरहे कह हनुमान सुनाइ। धरे ध्यान चित्त तुलसि तब युगलरूप सुखदाइ २२० छन्द रामगीतिका। कतहुं इक हत्यार प्रथमहि रामनाम पुकार। बहुरि भिक्षादेहु पतितहि इबिधिबचन उचार॥ सुनत मन आश्चर्य्यकीन्हों तुलसिदास सुजान। कि विधि यह नर भाषि रामहिं निजहि पतित बखान २२१ चौ०। ताहि शुद्धगुणि निकट बुलायो। साथ आपने अशन करायो॥ वाराणशी बुधन लखिपायो। करीसभा तुलसीहि बुलायो २२२ तिनसों बुधजन वचन सुनाये। पापिहि किविधि अपापबनाये॥ याकोपापदूरिकिमिजाना। तुलसिदाससुनि इबिधिबखाना २२३ रामनाम इक वार उचारा। ताको का माहात्म्य बिचारा॥ देखो शास्त्रन माहँ बिचारी। यह तो कोटिन नाम उचारी २२४ शास्त्र

वचन विश्वास न जोई। तो अज्ञान दूर नहिं होई॥ यद्यपि बुधन शास्त्रको माना। पर विश्वास न मानसआना २२५ सब मिलिकै यह बात दृढ़ाई। तुलसिदास सों कहो बुझाई॥ विश्वेश्वरवाहन है जोई। करै अदन याकर को सोई २२६ तो हम सत्य वचन करि मानैं। कियो खदन नंदी दिय तानैं॥ पण्डित भे लज्जित सब देखी। नाम कि महिमा गुनी विशेखी २२७ दो०। श्री गुसाईं की भक्तिपर निश्चय कीन महान। नाम प्रताप अपार अति जियालाल उरआन २२८ तुलसिदास के भवन में चोरीहित इकबार। आवतभे तस्कर तहा लखो चरित्र अपार २२९ चौ०। चोरी करनचोर जहँ जावैं। गोशरधरे पुरुष लखि पावैं॥ चोरीकरन चोर नहिंपाये। निजनिज भुवन घूमि सब आये २३० तुलसिदास ढिग प्रातहिआये। विस्मित या विधि वचन सुनाये॥ महाराज वह सुन्दर श्यामा। रूप किशोर मनोहर कामा २३१ चौकीदेत रात को जोई। कहिय कौन सुन्दर वपुसोई॥ तुलसीदास सुनतयह बाता। बूड़े प्रेम भूलि सुधिगाता २३२ पुनि विचार कीन्होमनमाहीं। राखो यह सामग्रि वृथाहीं॥ जाके हेत सहो श्रमभारी। रघुनन्दन स्वामी सुखकारी २३३ मनमें कीन्हो शोक महाई। सबधन दीन्हो तुरित लुटाई॥ चोरन लखो जबहिं यह हाला। गृह परिवार तजो तत्काला २३४ भगवत शरण भये सुखपाई। एकदिवस कर चरित महाई॥ मरोरहो इक ब्राह्मण कोई। तातिय सतीहोन हित सोई २३५ जातरही तुलसिहि किय बन्दन। कह सौभाग्यवती सुखकन्दन॥ ममपति मरोअहो सुखरासी। होनेसती जात यह दासी २३६ ममसौभाग्य कहां अब अहई। सुनत गुसाईंजी यह कहई॥ भगवद्भक्तवन्श सबहोई। सुनि तिय कीन प्रतिज्ञासोई २३७ दीन जियाइ तुलसि ततकाला। बादशाह जानो यह हाला॥ तिनको आदर सहित बुलायो। अरघुच्चासन पर बैठायो २३८ करि विनती इहि भांति

सुनाई। कछु सिद्धाई देहु दिखाई॥ कहतुलसी कछु सिद्धिन जानौं। केवल रामनाम मनआनौं २३९ तजि श्रीरघुनन्दन पद काहीं। झूठे खेल प्रयोजन नाहीं॥ कहो मालिक निजप्रभुहि दिखावौ। झूठेखेल न जो मनलावौ २४० यहकहि तिनहिं बन्दकरि दीन्हो। तब मारुति को सुमिरण कीन्हो॥तत्क्षण मर्कट सेन अपारा। बादशाहके क़िले मँझारा २४१ करनलागे उत्पात महाई। मानहुँ प्रलयकाल दिखराई॥ उलटोगयो पलँग तिहि केरा। शुद्धज्ञान भयो तिहि बेरा॥ २४२ तुलसिदास की शरणहि आयो। चरणन परि अति बिनय सुनायो॥ अंतरध्यान भई कपि सैना। तुलसिदास बोले इमिबैना २४३ द्वितियभवन तुमलेहु बनाई। यह मन्दिर भो श्री रघुराई॥ शहरयार तुरितहि तजि दीन्हों। काशिहिं गमन गुसाईं कीन्हों २४४ कोऊ भक्तन शत्रु महाना। तुलसी हित मारण जपठाना॥ यह बृत्तांत गुसाईं जाना। शिव हित इक पद कीन्ह बखाना २४५ ताको कियो भयो कछु नाहीं। लज्जित होत भयो मनमाहीं॥ पुनि तुलसी बृन्दावन आये। नाभा जी सों मिलि सुख पाये २४६ भक्तमाल तिन रचना देखी। पायोमन आनन्द बिशेखी॥ पुनिकिय दरश मदन गोपाला। तहँपायो आनंद बिशाला २४७ यह जोबात प्रकट जगआहीं। कीगुसाईंदरशनके माहीं॥ कहो कि धनुषबाण जब धरिहो। तब मैं दरश रावरे करिहौं २४८ सो यह मिथ्या बात सदाई। कहते यह कब बचन गुसाईं॥ जिन निजकृष्णावली बनायो। तामें सुयश कृष्णकर गायो २४९ जिनगुनि प्रभु जगशीश नवायो। रामायण में याविधि गायो॥ सियाराम मय सबजग जानी। करौंप्रणाम सुप्रेमसु बानी २५० दो०। प्रगटबात जो जगतयह ताको कारण एह। जासु उपासक जौनहै करत ताहि सोंनेह २५१ चौ०। जौनै देवके मन्दिर जाई। करतइष्टको ध्यान सदाई॥ है यह बात शास्त्र अनुकूला। सो गुसाईं आनंद की मूला २५२ श्रीरघु-

नन्दन सुखद महाना। धनुषबाण धरको किय ध्याना॥ तिहि अनुकूल कृष्णसुखदाई। तिनको दीन्हो दरश दिखाई २५३ तिनसंग जो दरशन हित आये। तेऊ सोईरूप लखिपाये॥ तासों प्रगट बातयह सोई। और कछू कारण नहिं होई॥ २५४ कोउएक बृन्दावन माहीं। कीन्हो प्रश्नगुसांई पाहीं॥ की श्रीकृष्णचन्द्र महराजा। पूरणब्रह्म सकल सुखसाजा २५५ वामन कालपरशवध धारी। रामचन्द्र नरहरि दैत्यारी॥ कच्छपमत्स्य आदि हैं जेते। तिनकी अंशकला सब तेते २५६ दो०। करत उपासन नाहिंकस उनकी अति सुखदाइ। तुलसिदास इमि वचन सुनि बोले आनंद पाइ २५७ चौ०। श्रीरघुनायक दशरथ नन्दन। अंग मनोहर आनंद कन्दन॥ अति कमनीयवयस सुकुमारा। लागि गयो मनदेखि हमारा २५८ सोनहिं छूटत अहै कदाई। अबतुव वाचापरो जनाई॥ कीकछु ईश्वरता है उनमें। तातेअधिक धरों मैं मनमें २५९ दो०। यद्यपिशास्त्र प्रमाण से उत्तरदेन समर्थ। रहेगुसाईं नहिं दियो प्रेम भक्ति के अर्थ २६० इहिविधि तुलसीदास की कथामहा सुखसार। जियालाल द्विज भाषियो निजमति के अनुसार २६१॥

सो०। रामचरण मनलाइ संतपद्म पदरज सुमिरि। सुन्दर कथासुहाइ सूरदासकी अबकहत २६२ दो०। विष्णुस्वामीसंप्रदा माहँहोतभे सोइकृष्णचरित्र न विरचियो सूरससमुद्रम जोइ २६३ चौ०। सो सुनि ऐसोको जगमाहीं। प्रेममगन होवै जोनाहीं॥ अर्थभावयुत स्वादु अपारा। भगवत प्रेम सलिल की धारा २६४ भगवत चरितकहे इहिभांती। मानहुँ लखतरहे सुखपांती॥ जिन उरइविधि विमल सुखदाई। बाहरआपु दीन भक्तकाई २६५ हरिके जन्म कर्मगुण गाये। ऐसे सुन्दररूप लखाये॥ की जो पढ़त सुनत है जोई। निश्चय विमलबुद्धि तिहि होई २६६ दो०। महाराज श्रीकृष्ण के सखा महासुख सार। जिनको उद्धव नामरह भे तिनके अवतार २६७ छन्दरामगीतिका॥

बालचरितन माँहजिनकी रहीअति चितचाह। प्रेमप्रीति शृंगार निष्ठासखा भाव अथाह ॥ रहोतिन संकल्प हरिपद लक्षरचना हेत। पंचसप्ततिसहस रचिकै गये परमनिकेत २६८ छन्दहरि गीतिका ॥ रहशेष सहसपचास ताको रचतभे हरि आपहीं। निजभक्त कियसंकल्प पूरण नमत जेजन पापहीं ॥ पुनि सूर- श्याम कि नामसों रचिदीन भोगबनाइकै। तिहि कीन अकबर शाह पूरण पत्रतंत्र मँगाइकै २६९ दो०। नामखानखाना रहो किशवरसितांवज़ीर। बुध संस्कृत भाखाबिषे अरुकवि रहे गँभीर २७० चौ०। तिनपद सूर इकट्ठ कीन्हे। पदप्रति मुहर देन कहि दीहें ॥ जो को एक सूरपद लावै। तिनके पासमुहर इक पावै २७१ मुहरलोभ सोंतब बहुलोगा। भजन बनाइसूर धरिभोगा ॥ लावन लगेभीर भै भारी। तब वज़ीर मनमाहँ वि- चारी २७२ एक सूरपद बांट बनायो। पद नवीन तौलन मन लायो ॥ केतौ बड़ो भजन जो होई। तासु समान तुलतनहिं सोई २७३ दो०। सूरसागरहि पूर्ण किय याविधि मलिक वजीर। हरिचरित्र अमृत उदधि ताको पूरगँभीर २७४ ॥

चौ०। नंददासकी कथा सुहाई। बरणौं रामचरण मनलाई ॥ विप्रवंशमें उद्भव पाये। चंद्रहासके पुत्र कहाये २७५ ग्रामरामपुर नाम बखानी। भगवद्भक्त प्रेम कीखानी ॥ क्षणक्षण भगवतमें मन लाये। करिकविता बहु ग्रंथ बनाये २७६ रुक्मिणि मंगल पंचाध्यायी। दशमस्कंध महासुखदायी ॥ अनेकार्थ अरुनाम हुमाला। दानमान लीलासुख शाला २७७ सहसन विष्णु चरण जिनगाये। जगमें भक्तिसारण दरशाये ॥ अष्टछाप के भक्तसुहाये। येऊ तिनके मध्यकहाये २७८ जासु रचितहरिचरण सुहाये। व्रजहरि सन्मुख जात सुगाये ॥ मंगलरूप नाम तिन केरे। बरणौं जगमें सुखद घनेरे २७९ छंदरामगीतिका। सूर- दासहु कृष्णदासहु छीतस्वामी नाम। नंददासहु व्यास जी हरिदासहू सुखधाम ॥ नामपरमानंद अपर चतुर्भुजौसुखरूप।

जियालाल जहाज विटप जलधि परम अनूप २८० ॥

चौ०। कहौं चतुर्भुज कथा सुहाई। भक्तिपूर गंभीर महाई॥ भगवद्भक्तिम रसिक अपारा। वृंदाबन हरि भुवन मँझारा २८१ नित्यप्रति यदुनंदन आगे। नृत्यत महामोद सों पागे॥ एक दिवस नृत्यत अरु गावत। दोऊ करसों झांझ बजावत २८२ दो०। खुली लँगोटी तिहि समय देखि सँभारो नाहिं। झांझ बजावत करन गुनि तालभंग मनमाहिं २८३ लोक लाज की चिंता आई। तब श्रीहरि यह रचो उपाई॥ अपर भुजा द्वै प्रगटित कीन्हा। लज्जा भक्त केरि रखिलीन्हा २८४॥

चौ० मथुरादास कि उत्तमगाथा। बरणों नाइशमपदमाथा॥ वृद्धमानके शिष्य कहाये। भक्तिशरण में निपुण महाये २८५ नँदनंदनकर दृढ़विश्वासा। भगवद्भक्त धर्मसुखवासा॥ प्रेमभक्ति निजमानस लाई। रासचरित शृंगारमहाई२८६कीन्हों करतसदा मन लाई। भगवत चरित मधुर सुखदाई॥ दरशावन हरिसुखद चरित्रा। भे जनकुमणि मयूषपवित्रा२८७दो०। आयो वृंदागहन में साधु भेष करि कोइ। गये लोग देखन सबै चेटक जानत सोइ २८८ शालिग्राम तासुसंग जोई। डोला करत सिंहासन सोई॥ शिष्यन केरि विनय मनलाई। मथुरादास लखो तिहि जाई २८९ चेटक बन्द भयो तिहिकाला। इनपर मूढ़ मंत्र सो चाला॥ सोऊ उलटि ताहिके लागा। भयोमृत्यु वश तुरित अभागा २९० दो०। मथुरादास जियाइयो ताको दया निधान। जियालाल शठ सकल तजि संतचरण मनआन २९१

दो०। सुखानन्दकीकल्पना अबबरणों सुखदाइ। दूरकरन संसार भय आवागवन महाइ २९२ चौ० तिनकी काव्य इविधि सुख दाना। तंत्र शास्त्र गुरुमंत्र समाना॥ जहँ निजनाम भोगमें राखा। नामाच्युत सुखसागर भाखा २९३ चन्द्र सखी जिमि बालकृष्ण घर। मीराजी गिरिधरनागरकर॥ भगवत गुण चरित्र सुखदाई। कीर्त्तन भजन प्रेम मनलाई २९४ दो०। करत

भक्ति अरविन्दके सेवक सरसममान। हरिचरित्र जल मीनमन कबहुँ नाहिं बिलगान २६५॥

चौ०। अब श्रीभट्टकथासुखदाई। वर्णनकरौं सुमिरि रघुराई॥ राधाकृष्ण सुयश अतिनीको। सुमिरण भजन विषय रसफीको २६६ ताको दृढ़कीन्हों संसारा। भे नौसम जग जलधि मँझारा॥ उपासना के मधुर चरित्रा। रचे युगल शत आदि पवित्रा २६७ तिनमें मधुर ललित पद जोई। द्रवी भूत सुनतै मन होई॥ युगल किशोर रूप में लागै। निष्प भीति पलक में भागै २९८॥

चौ०। वर्द्धमान मंगलदै भ्राता। दोनौं भीष्मभट्टके ताता॥ दोनौं भयेभक्त अतिनीके। भक्ति दृढ़ावन जगरस फीके २९९ हरिचरितन में अति मन दीन्हा। पाप रहित निर्मल जग कीन्हा॥ हरि कीर्त्तन की नदी बहाई। भक्तन सों अति प्रीति सदाई ३०० निशिदिन करतभजन गिरिधारी॥ करतदया दीननपर भारी॥ इहिविधि तिनकी कथासुहाई। जियालाल संक्षेपहि गाई ३०१॥

चौ०। कृष्णदासकी सुंदर गाथा।वरणौं नाइ रामपद माथा॥ जिन चालक रचि आप बनाये। चंचरिछंद विष्णुपदगाये ३०२ गुरुधन चरितहु पंचाध्याई। रुक्मिणि मंगलजन सुखदाई॥ भगवत भोजनविधि सुखपांती। रचना ग्रंथकिये इहि भांती ३०३

दो०। भगवत सन्मुख करनको भो मानहुं अवतार। आससुद्र कीरति विदित सुखदायक संसार ३०४॥

चौ०। कथा मिश्रनारायणकेरी। वरणौंसुखदायक बहुतेरी॥ नवलावंश प्रगटभे जोई। परमभक्त भगवत के सोई ३०५ जिनहिं बद्रिकाश्रमसुखदाई।दत्तदीनभागवतपढ़ाई।कीर्त्तनमेंकिहिभांति बखानौं॥उनहीं जन्मलीन जगमानौं ३०६ जिनं ढिग भक्तनकेरे समाजा। दिनप्रति रहतमहासुखसाजा॥नवधा भक्ति भलीविधि जाना।शास्त्र तत्त्व चुनिकै उरआना ३०७ नारद सनकादिक अरु

व्यासा । दत्त बृहस्पति हृदय प्रकासा ॥ सोइ ज्ञाननिज उर विस्तारा । जासुदरश सुरसरिकी धारा ३०८ ॥

चौ० ॥ वन्दि राम सियपद मुदढेरी । कहौं कथा कमलाकर केरी ॥ भट्टपद्म कर भक्त सुजाना । अति शास्त्रज्ञ भक्त भगवाना ३०९ पाये भक्ति विरोधीजेते । शास्त्रारथ महँ जीतेतेते ॥ भक्तिमार्ग पर तिनहिं चलाये । अति आनंद जगतमें छाये ३१० भेये माध्व संप्रदा माहीं । गुण माधवाचार्य सम ताहीं ॥ श्रीभागवत केर जो टीका । किय माधवाचार्य अतिनीका ३११ सो दिग्विजय नाम सुखमूला । कीर्त्तन करत तासु अनुकूला ॥ स्मृति पुराण तत्त्व गुनि मनमें । शंखचक्र चिह्नित कियतनमें ३१२ दो० । भगवतके अवतार सब जानेपूर्ण समान । काहूमें कछु भेदनहिं न्यूनाऽधिक उरआन ३१३ ॥

चौ० ॥ परमानन्द कि कथा सुहाई । वरणौं रामचरण उरलाई ॥ जासुप्रेमगोपिकन समाना । कृष्णप्रेमरस मग्नमहाना ३१४ द्वादश वर्षके कृष्ण चरित्रा । कीर्त्तन कीन्हे परम पवित्रा ॥ शोभा सुन्दरतासुख खानी । माधुरीय लीलासुददानी ३१५ नट नागरकर सुन्दररूपा । वरणौं प्रेम समेत अनूपा ॥ है आश्चर्य कछू यह नाहीं । रूपसमानोचक्षुनमाहीं ३१६ प्रगटे मानस चरित सुहाये । प्रेमवारिमिन मीनडुबाये ॥ नेत्रन प्रेमवारि ढरकावत । ह्वै रोमांचक्षणहि च्चणआवत ३१७ शोभाधाम शोभमेंपागे । तिन रँगरँगे प्रेम अनुरागे ॥ श्रीभगवत करसारंगनामा । धारत निज कविता सुखधामा ३१८ तिनकी कविता अतिसुख दाई । देततुरित हरिमांझ लगाई ॥ भगवत ध्यान प्रकाशन हारी । जियालाल जन आनँदकारी ३१९ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येपंचमकीर्त्तननिष्ठायांपंचदशभक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौसप्तमस्तरंगः ७ ॥

दो० । सुरसरिपति सुतसुत सुवन तासुन माता भ्रात ।

जलमाहीं। निजप्राणन भयभीत तहाँहीं ३० लीन्हो मृतिका तिलक लगाई। जालकि दानामाल बनाई। साधुरूप सोबैठो जहँवां। राजाआइ लखत भे तहँवां ३१ दण्डप्रणाम साधुगुनि कीन्हो। आगे कछुक भेंटधरि दीन्हो॥ गयोनृपति निजमंदिर काहीं। कालूभे हरिशरणतहाँहीं ३२ गृह परिवार तुरिततजि दीन्हो। मनलगाइ हरिचरणन दीन्हो॥ पुनिमन में अति आनंद पाये। यह दोहा तिहिठांव बनाये ३३ दो०। बाना बड़ो दयालको तिलक छाप अरु माल। यम डरपै कालू कहै भय मानी भूपाल ३४ चौ०॥ ताते प्रथमपञ्च संस्कारा। हरिप्रिय धारिय वेष उदारा॥ ऊरध पुण्ड्र तिलकहै जोई। भगवत चरण कहावत सोई ३५ हैं कछु तासु परस्पर भेदा। सो मैं बर्णत जो कह वेदा॥ श्रीसम्प्रदा रीति सुखदाई। भगवत पद आकार बनाई ३६ सिंहासन भ्रूमध्य बनावत। मध्यज्योति सम रेख लगावत॥ रोलि पीत वा अरुण लगावै। हरिप्रिय श्रीतिहि नाम कहावै३७श्रीलगाइबे को यह कारण। की अनुक्षणश्रीपद जग तारण॥ तजत न संग सदा कर सेवा। माध्व सम्प्रदा को यह भेवा ३८ सूक्ष्मरेख द्वै ऊर्ध्व लगावत। भ्रूअध सिंहासनहि बनावत॥ सिंहासन अधनासाताई। फल कटार आकार लगाई ३९ अब निम्बार्क सम्प्रदा गावत। सूक्ष्मरेख द्वैऊर्ध्व लगावत॥ मध्यमविन्दी श्याम बनावत। वा पुष्कल तिहि कमल बतावत ४० सूक्ष्महि सिंहासनहु बनावत। अब विष्णुस्वामी को गावत॥ सूक्ष्मरेख द्वै अध सिंहासन। मध्यशून्य नहिं कछु तिहि आसन ४१ चारि सम्प्रदा जो संन्यासी। नाम त्रिदण्डी तासु प्रकासी॥ एक पलाश दण्ड कर राखत। दोसर दण्ड शिखा अभिलाषत ४२ तृतिय यज्ञ उपवीत सुहावै। इमि मारग संन्यास कहावै॥ गिरि अरु पुरी तीर्थ मुनि नामा। गेरु सिंदुर की वस्त्र ललामा ४३ स्मार्त्त सम्प्रदा कहौं विचारी। चारौं सम्प्रदान सों न्यारी॥ शंकरस्वाम्या चारय तामें। तिलकरीतिया

विधिहै जामें ४४ की त्रिपुण्ड्र वट पत्र समाना । चन्दन भस्म
तीर्थरज आना॥है संन्यास रीति इमियामें। शिखासूत्रराखतनहिं
तामें ४५ दण्डकाष्ठइक करमेंराखत । दश विधिनाम जासुमें
भाषत ॥ शंकर स्वामि कि कथा मगाये। गेरुसिंदुरफी,वस्त्रसुहाये
४६ श्रीरघुनन्दन स्वामि कृपाला। हरिहौ कबहुँ जगतदुखजाला॥
कबहूँ रावरि शरणम ऐहौं। प्रभुको जनजग माँझकहैहौं४७युगल
किशोर रूपसुखकारी। कोटिन रति रतिपति छविहारी॥ भूषण
वसन विविधतन सोहैं । देखत रूप चराचर मोहैं ४८ दो०।
मन चकोर शशि छविवसै केकीघन जिहिरीति । श्रीरघुवर
तव पद कमल तथा रहै ममप्रीति ४९ यानिष्ठाम भये
हैं जोई। वर्णन करत कछुक मैंसोई॥ प्रथमहिं अवर सखान
कि गाथा। वरणौं नाइ रामपद माथा ५० भये भक्त भगवत के
जोई। प्रथमहि मुसल्मान रह सोई॥ चलत रहेनिज मारग मा-
हीं। पीर विना कछुजानत नाहीं ५१ एक समय वृन्दावन
आये। उगेपुण्य वहु जन्म सुहाये॥ दरशन तहां कृष्णके पाई।
तवतन दशा और कछुआई ५२ सुन्दर रूप विलोकि सुहायो।
मोहित गिरोभूमि मुरझायो॥ उनकी पीर पीर नहिं जानो।
मूर्च्छा आई यह मन आनो ५३ कीनपुकार चक्षु तव खोले।
पुनि रसखान वचन इमि बोले॥ खोलौं नेत्र कवन विधितेरे।
वह मूरति समान उरमेरे ५४ भे सव विघनकेर निधाना। वहु
रिपीर इहि भांति वखाना॥ कावेकाहँ चलौ सुखपाई। तववोले
रसखान सुनाई ५५ मैं गो व्रजके हाथ विकाई। सो तजि अन
त नकहूँ लखाई॥ हौंजु उपल तौ गिरपतिकेरा। मनुज जोग्वाल
कृष्णकर चेरा५६पशुजु नन्दधेनुन विचचरऊं।व्रजवृक्षन पक्षीतनु
धरऊं॥ चहो पीर रथपर लैजाहीं। भाजि छिपे वृन्दावन मा-
हीं ५७ इहि विधि किय वृन्दावन वासा । सहसन कवित रचे
सहुलासा॥ जिनहिं सुनत हरिजन मन लोभा। कथन प्रिया
प्रीतमकी शोभा ५८ विविध विहारकहे जिन माहीं। सुनतहिं

हरिजन मन चुभिजाहीं ॥ वैष्णवि भेष सदा रह कीन्हे । माला बहुत रहत उर पैन्हे ५९ पूंछत भयो कोउ इकबारा । किहिहित माला पहिन अपारा ॥ सुनत वचन रसखान उचारा । करतमाल भवसागर पारा ६० जो छोटेपत्थर जगमाहीं । तिनहिं माल चहिये बहुनाहीं ॥ मैं हौं भारी शिला समाना । ताते अमितमाल उर आना ६१ दो० । इविधि कथा रसखानकी जगत जनन सुखकार । जियालाल संक्षेपही बरणीमति अनुसार ६२ ॥

चौ० ॥ अब भगवान दासकी गाथा । कहौंनाइ हरि जनपद माथा ॥ मथुरा में मन्दिर सुखकारी । भगवद्भजनभाव दृढ़भारी ६३ अति गुणज्ञ हरियशके प्रेमी । हरि मन्दिर मार्जनमें नेमी ॥ सुखद रहस्यरसज्ञ निदाना । हरिभक्तन विश्वासमहाना ६४ सुन्दर वपु अति बुद्धि निकेता । तहँ शालार परीक्षा हेता ॥ डौंड़ी इमि दीन्हो फिरवाई । ताको शीशलेउँ कटवाई ६५ जोकोउ तिलक मालतन धारी । सुनिबहु लोगन वेष उतारी ॥ नहिं भगवान दास भयमाना । अति आनन्दहिये निजआना ६६ सुन्दर तिलक ललाटम करिकै । दाम निवीत धारि मुद भरिकै ॥ बादशाहके सन्मुख गयऊ । देखत मलिक कहन इमिलयऊ ६७ आज्ञा उल्लंघन किमि कीन्हो । सुनत वचन इमि उत्तर दीन्हो ॥ हमरे दीनमहै यह बाता । तिलक मालयुत प्राणजुजाता ६८ तौ उद्धार जगत सों होई । जानाहम बेलायह सोई ॥ तातें तिलक माल शुचिधारा । विना परिश्रमहै उद्धारा ६९ बादशाह लखिदृढ़ विश्वासा । है प्रसन्न यह वचन प्रकासा ॥ इच्छाहोइतौन अबलीजै । जोमांगौ तुमको हमदीजै ७० कह भगवानदास सतिभांऊ । कबहुँन मथुराबाहरजाऊं ॥ बादशाह लिखिवचन उचारा । मनचाहै जब लगे तुमारा ७१ करौ आमिली मथुराकेरी । याविधिकीन्ही कृपाघनेरी ॥ तिनबहु दिवस आमिली कीन्हा । राधाकृष्णचरणचितदीन्हा७२ दो० । मंदिर श्रीहरदेवको मानासिगंगा नाम । श्री गोवर्द्धन पोखरा वनवायो सुखधाम ७३ चौ० ॥

कथा चतुर्भुज नृपति सुहाई। वरणौं रामचरण शिरनाई॥ भगव
द्भक्त साधुसेवी अति। भगवतचरणन मैंलागी मति ७४ जासु
समान द्वितिय नाहिं कोई। आवन भक्तसुनै जब सोई॥ ताको
लेन इविधि सोधावैं। जिमिसेवक स्वामी पहँ जावैं ७५ करि
विनती ताको घरलावैं। चरण धोइ आसन बैठावैं॥ रानी सहि-
त करैं नृपपूजा। भगवत समगुनि भेदन दूजा ७६ पुरचहु दिशि
योजन परमाना। चौकीराखी नृपति सुजाना॥ माला धारी
जो कोउ आवैं। तिनके समाचार पहुँचावैं ७७ कोउ दोसर नृप
सुनि यह हाला। इहि विधि कहो वचन तत्काला॥ योग अयोग
समझ नाहिं जोई। तौ नहिं भक्ति बड़ाई होई ७८ तब तिहि प-
ण्डित कह तिहि पाहीं। समुझिलेत है हैं मन माहीं॥ तब राजा
इकभाट बुलायो। लेन परीक्षा हेत पठायो ७९ तिहि बुझाइ बो-
ले पुनिराऊ। माला तिलक धारिकै जाऊ॥ बनिकै जाउ स्वामि
हरिदासा। लेउ परीक्षा नृप के पासा ८० सुनत भाट तत्क्षण
तहँ आयो। भटई रीति तहां फैलायो॥ नृपपहँ जान कठिन क-
रिजाना। निजनृप शीप तबहिं उरआना ८१ धरिस्वै रूपचलो
नृपपाहीं। द्वारपाल रोंकोतिहि नाहीं॥ गयो नृपति के संमुख
जबहीं। राजा किय आदर बहुत तहीं ८२ पुनिभगवत परसाद
जिमायो। भगवत चरचा कछुक चलायो॥ ह्वांहां करत रहो सो
ताहां। राजा जानि लियो मन माहां ८३ राजा निज मन में
गुनिपायो। लेन परीक्षा कोउ पठायो॥भग्न वराटिकाका सम्पु
ट धरि। ऊपर तिहि बहुभांति रचित करि ८४ सम्पुटयुत तिहि
दीन बिदाई। चलोभाट मन आनन्द पाई॥ अपने नृपति पास
सो आयो। भक्ति चतुर्भुज नृपकी गायो ८५ पुनिसह सम्पुट
धरी बिदाई। राजा के आगे सुखपाई॥ तबनृप सम्पुट खोलि
सुहावा। देखो कछू भेद नहिं पावा ८६ तब पण्डित राजहि समु-
झायो। भेदचतुर्भुज नृपसब पायो॥ है तन भीतर में यह तुच्छा।
ऊपर भेप कियो अति स्वच्छा ८७ की यह भाट भक्ति उरनाहीं

यहै अर्थ इहि सम्पुट माहीं ॥ सुनत नृपति अति लज्जा पायो। तिन पण्डित को तहां पठायो ८८ पण्डित चले चतुर्भुज पासा। आनन्द मगन महासुख बासा ॥ पण्डित आवत सुनि नृपराई। आगे मिलि घरगये लवाई ८९ बहुत दिवस कीन्हो सतसंगा। सुखपायो द्वौ जनन अभंगा ॥ पण्डित चलन कि इच्छा कीन्हा। तब भण्डार खोलि नृप दीन्हा ९० पुनि कह जो इच्छा सो लीजै। पण्डित कह मैना ममदीजै ॥ मैनापच्छी नृपहि पियारा। ताको देत न लाये बारा ९१ पण्डित मैना पाइ सिधाये। निज राजा कि सभा चलि आये ॥ मैना नृपकी सभा निहारी। भगवत बिमुख बैठ सबभारी ९२ तब तिनसों इमि बचन उचारा। राम राम किन करत पुकारा ॥ जिमि होवैतुम्हार उद्धारा। इहि जग सार न सकल असारा ९३ रामभजन बिन नहिं उद्धारा। वेद पुराण सकल श्रुतिसारा ॥ तब पण्डित सों कह नरराई। कहौ चतुर्भुज कथा सुनाई ९४ नृपसों पंडित कहा बखानी। या मैना सों लीजे जानी ॥ कोटिन मुख सों सकत न गाई ॥ नृपति चतुर्भुज भक्ति महाई ९५ सुनि इमि भयो नृपहि बिश्वासा। तजि जगजाल भयो हरिदासा ॥ भाव भक्ति नृप गयो दृढ़ाई मैना बहुरि नृपति पहँआई ९६ दो० । सुनत चतुर्भुज नृपति इमि मन सुख लहो महान। जियालाल शठ सकल तजि हरि चरणन मन आन ९७ ॥

सो० ॥ एक नृपति की गाथ अत्युत्तम सुख दानि जग। नाइ रामपद माथ सोई अब वर्णन करौं ९८ दो०। जिनजग सुख ऐश्वर्य्य को गुनि अनित्य सबकाल। सदा भजन सुमिरण करत सियपति दशरथलाल ९९ चौपाई ॥ कण्ठी तिलक जासु तन देखत। भगवतरूप तासु मन लेखत॥करत दण्डवत बिबिधि प्रकारा। पूजा करत महासुखसारा १०० जो कछु धन निजकर में पावैं। हरिजन हरि उत्साह लगावैं ॥ भांड़ आदि हरिबिमुख जुकोई। तहवां नहिं पावतकछु सोई १०१ भांड़न मिलि यह

मंत्र दृढ़ायो। सबहुन साधू भेषबनायो ॥ जुरिमिलि कै राजा ढिग गयऊ। लखिनृप पूजन बन्दन कयऊ १०२ तब भांड़न मिलि साज बनाये। रागकुतूहलादि मनलाये ॥ ह्वै प्रसन्नराजा तब बोले। धन्य धन्य हरिभक्त अमोले १०३ नाचगान करि ढोल बजाई। सेवक करत कृतार्थ सहाई ॥ इमि आदरयुत अशन करायो। भरिकै मुहरथार धरवायो १०४ विदा समय तिनको दै दीन्हो। भांड़न अति अचरज मनकीन्हो ॥ भक्तन में लखि दृढ़ विश्वासा। भांड़न उर अनुराग प्रकासा १०५ दो०। केवलनृप सतसंग ते गोभांड़न को राग। जियालाल शठ विषय तजि रामचरण में लाग १०६ ॥

चौ० ॥ गिरिधर ग्वाल कथा अबभाखौं। रामचरण निज मानस राखौं ॥ गिरिधर ग्वाल महासुख खानी। सखाभाव हरि में निज आनी १०७ अनुक्षण भगवत के ढिग जाई। हँसी खेल में रहत सदाई ॥ सदा प्रेमनिज रहत छिपाये। जिमि शिखि अन्तर दारु दुराये १०८ हरिचरित्र कीर्त्तन मनलावैं। गद्गद बचन शिथिल ह्वै जावैं। जानैं प्रीति न छिपत छिपाई। कीर्त्तन नृत्य करैं बनजाई १०९ एक समय अति आनँद पायो। भगवत रास चरित्र करायो। मग्न प्रेमरस में अति भयऊ ॥सब धन हरि अर्पण करिदयऊ ११० प्रीति रहो इमि भक्तन माहीं। मोसन कहत बनत सो नाहीं ॥ साधु भेषजो कोऊ देखत। भगवत रूप ताहि करि लेखत १११ मरो साधुइक देखतभयऊ। ताहू को चरणोदक लयऊ ॥ और ब्राह्मणन इहि विधि देखी। वारण किय अयोग्य यह लेखी ११२ तिनके बचन श्रवण नहिं कीन्हा। या विधि ते प्रत्युत्तर दीन्हा ॥ मृत्युहोति भक्तन कीनाहीं। यह विश्वासन तुमउर माहीं ११३ दो० ताते जानत मृतकहौ येहैं सदा अनाश। या विधि गिरिधर ग्वालउर भगवद्भक्ति प्रकाश ११४ ॥

दो०। संत चरण शिरनाइकै तिन पदरज मनलाइ। लाला-

चारय की कथा बरणौं शुभ सुखदाइ ११५ चौ० । स्वामी रामानुज कि जमाती । भगवद्भक्त भये इहि भांती ॥ जिनकी कथा सुनत सुखदायनि । निश्चय प्रीति होइहरि पायनि ११६ तिन गुरुदिस आज्ञा इहिरीती । कीजौ हरिभक्तन अति प्रीती ॥ बड़े भ्रातृ सो न्यूनन जानब । अहनिशि याविधि निजमन आनब ११७ चलत सदा ताही अनुकूला । एकसमय अति मंगल मूला ॥ तिलक मालतन अति सुखदाई । तटिनी पूरवेग शव जाई ११८ तिहि आकर्षिधिष्ण निजलाये । सुन्दर सुभग विमान बनाये ॥ तापर धारि करत हरिगाना । दीपवती तटकीन पयाना ११९ दाह क्रिया कीनी तहँ जाई । बहुरि तिलक दीन्हो सुखपाई ॥ करिमज्जन निज मन्दिर आये । ता उत्सव द्विजगोत्रि बुलाये १२० नाहिं निमंत्रण बिप्रनमाना । याबिधि कीन्हों वचन बखाना ॥ इनको कोउ रहो नहिं एहा । ना जानैं किहि जाति कि देहा १२१ लालाचार्य्य सुनत इमिभयऊ । चिन्ता करत गुरूपहँ गयऊ ॥ वे लिवाय रामानुज पासा । जाइकीन सब हाल प्रकासा १२२ स्वामी रामानुज कह एहा । करौ न कुछ मन में सन्देहा ॥ नाहिं वे लोग निमंत्रण मानत । हरिप्रसाद महिमा नहिं जानत १२३ दो० । भोजनकी सामग्रि तुम सकल बनावो जाइ । हरिपार्षद बैकुण्ठसों भोजन करि हैं आइ १२४ चौ० । यह सुनि सामा सदन बनाये । तिहि अवसर पार्षदगण आये ॥ सुन्दररूप अनूपम सोहैं । शोभादेखि जन्तु मन मोहैं १२५ सुभग निवीत वनसृज धारे । चारिभुजा सोहत सुखकारे ॥ गदा चक्र दरवारिज धारी । तड़िताम्बर मोहांध विदारी १२६ विष्णु समान सकल गुण भीने । केवल इक भृगुचरण विहीने ॥ लालाचार्य्य दण्डवत कीन्हो । चरणधोय चरणोदक लीन्हो १२७ बहुरि शुभासनपर बैठाये । रुचिसमेत भोजन करवाये ॥ ब्राह्मण लखि मन अचरज लाये । ऐसे विप्र कहांके आये १२८ पुनि कुमंत्र मन में ठहरायो । सब मिलिकै यह बात दृढ़ायो ॥ भोज-

नकरि घूमैं जब सोई। हँसीकरो इमि लज्जित होई १२९ जानि गये हरि पार्षदतत्रा। जो मन में उन कीन कुमंत्रा॥ सो आकाश मार्ग है गयऊ। लखि चरित्र द्विज लज्जित भयऊ १३० दो०। त्यागि मान लज्जित वदन नीचे नैन नवाइ। लालाचार्य समीपगे वचनकहो नहिं जाइ १३१ चौ०। जहां पार्षदन भोजन कीन्हो। सो पत्तल उठाय पुनि लीन्हो॥ सीथ प्रसाद रहो तहँ जोई। भोजनकरत भये सब सोई १३२ लालाचार्य्य शरण पुनि आये। करि दण्डवत विनय बहुगाये॥ अब सेवक निज हमको करिये। और कछू चितमें नहिं धरिये १३३ कह लालाचारज तिन पाहीं। भगवत कृपा भई तुम माहीं। पाये दरश पार्षदनकेरे॥ चाहत काह अधिक तिहि तेरे १३४ पुनि ब्राह्मणन विनय बहु कयऊ॥ अरु इमि वचन उचारत भयऊ॥ अब हमको लज्जित नहिं कीजै। शरण चरण अपने की दीजै १३५ या विधि सब हरि शरणहि आये। भगवत चरणन में मन लाये॥ इमि हरि भक्ति भेष परतापा। सब संसार माहँ अति व्यापा १३६॥

चौ०। मधुकरसाह कथा अब गावत। सन्तपद्मपद शीश नवावत॥ मानस भगवद्भक्ति प्रकासा। साधु भेष में अति विश्वासा १३७ नाम समान रहे गुण जाही। होत पडंघ्रि सुसारग्राही॥ तिमि सारग्राही रहसोई। तिलक मालयुत देखें कोइ १३८ परिक्रमा करि शीश नवावें। चरणधोइ चरणामृत पावें॥ यह आचरण नृपति जो लावें॥ बन्धु कुटुम्बिनको नहिं भावें १३९ गर्धभ एक पकरि ते लाये। करिशिर तिलक माल पहिराये॥ महल नृपति मधुकरके पठायो। राजा साधु भेष लखिपायो १४० उठिकै झटितहि चरणपखारे। परिक्रमाकरि वचन उचारे॥ आजु निहाल हमहिं करि दीन्हो। अशनकराइ बिदा पुनि कीन्हो १४१ दुष्टनके लज्जा मत आई। विश्वासहु प्रकटी दरशाई॥ करन निहाल कहो नृपबानी। ताको अर्थ लेहु यह जानी १४२ दो०। धन्यभाग मेरेभये जो गर्धभ सम्रराज। तिलक माल

धारण किये जो साधुन के साज १४३ तिलक माल जे धरन तन ते गर्धभ ते नीच। रहत बिषय मल मलिननित ज्यों जल निर्गम कीच १४४॥

चौ०। हंस प्रसंग कथा अति नीकी। बरणौं नाक भक्ति युवतीकी॥ कुष्ठीरहो कतहुँ इकराजा। बहु औषधकिय भिषक समाजा १४५ रोग नृपतिकर नाहिंनशाना। एकवैद्य तबइबिधि बखाना॥जाइ हंस कोऊलैआवै।तौ यहतत्क्षण रोगनशावै १४६॥ सुनिनृपव्याध समीप बुलाये। हंसगहन हिततुरित पठाये॥ पहुंचे मान सरोवरजाई। मिलन हंसकिय विविध उपाई १४७ तब साधुनकर भेषबनाये। पकरन हेत हंस ढिगआये॥ हंसन यदपि कपट यहजाना। परलखि साधुभेष सुखसाना १४८ आपन भागय निंद्यविचारी। बंधनतर आये तिहिवारी॥ बांधि व्याध राजा ढिगलाये। वैद्यरूप धरिहरि तहँआये १४९ छन्द रामगीतिका। भक्तवत्सल दीनबंधु विचारियह मनमाहिं। हंस वध होतहिरहै मरयाद भेषकिनाहिं॥ पत्रमहँ निजभेषजी वि-स्तार कीन्होआइ। सुनतनृप वृत्तांत लीन्हो तुरित निकटबुलाइ १५० दो०। निजगदको वर्णनकियो पुनिजिमि हंसमँगाव। कहोवैद्य आमयनाशिहि नृपजनि शंकालाव १५१ चौ०। देहुछोड़ि इन हंसनकाहीं। बंधनसों कछुकारज नाहीं॥ दिय लगाइ औषध कहिएहा। होतभई द्रुतनिर्मल देहा १५२ अवि-लम्बित नृपहंस छुड़ायो। हाथजोरि इमिवचन सुनायो॥ अहो वैद्य नृपयह ममधामा। राष्ट्रकोस अरु कटक ललामा १५३ सो सब आपुकेर यह अहई। सुनि नृप वचन वैद्य इमि कहई॥ सब हमार है निस्सन्देहा। परमम वचन सुनौ अब एहा १५४ भगवद्भक्ति धरौ मनमाहीं। साधूसेवा करौ सदाहीं॥ मिली कठिन ताते नर देहा। ताते सुफल करौ तुम एहा १५५ यह संसार अमान असारा। केवल राम नाम तहँ सारा॥ ताको भजन अहरनिश कीजे। अहं त्वां मन सों तजि दीजे १५६

इमिसमुझाइ विदा हरिभयऊ। राजा सोइ आचरण कयऊ॥
यहजो हंस प्रसंग सुहावा। समुझन योग्य सुजन मनभावा
१५७ निष्ठाभेष द्विजन इहिभांती। नहिं जिन मनुजन किमि
कहिजातीं॥ ज्ञानी कहवावत जगजेई। जीवत बृथा भक्ति
बिन तेई १५८ दो०। जियालाल बानाकिये नामहोत मजबूत।
किहि कहवावैं भेष बिन ज्यों गणिकाके पूत १५९॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते
चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येपष्ठाभेषनिष्ठायामष्टभक्तकथा
वर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौअष्टमस्तरंगः ८॥

दो०। अन्तकभ्राता पितुसुता पुनि ताको जो स्वामि।
जियालाल वसुपाद जिहि सोदेकरत नमामि १ अर्जुन पितु
तनुजापती तापितु तनुजा स्वामि। जियालाल तिहिसुत सुवन
तास्यो ताहिनमामि २ छन्दबरवा। निष्ठासप्तम महिमा गुरु सुख
दाइ। कथारुद्र भक्तनकी कहौं बुझाइ॥ रामकमल पदरेखागो
पदनौमि। करि प्रणाम अवतारहि पृथुपुरु सौमि ३ प्रगट अ-
वधपुर माहीं जो सुखधाम। धर्मलीक प्रगटाइ नई ललाम॥करि
समान भूभेषज सर्वनिकाल। जियालाल द्विज धारततिन पद
भाल४चौ०।कहत शास्त्र इहिभांति सुनाई।तीनिप्रकार गुरू सुख-
दाई॥ प्रथम जनेता पुनि उपनेता। तृतियगुरू हरिमंत्र जुदेता॥
५ भगवद्धर्म बहुरि समुझावै। हरिपदाब्ज सूरति उपजावै॥
हियेमोह तमदेइ भगाई। ज्ञानारुण उरदेइ जगाई ६ जागत
कामादिकखलचोरा। भागन पाव मोहतमठोरा॥ निर्मलभयो
हृदय क्षणमाहीं। गुरुकृपाते अचरज नाहीं ७ युवती गुरु वि-
शेष पतितासू। ईश समान करै विश्वासू॥ यद्यपि सबकी लोक
समाना। महिमा सबसमान करिजाना ८ परइहि निष्ठामें है
सोई। भगवत मिलन हेतहै जोई॥ सो यह जानहु बात सुहाई।
वेदपुराण कहत सबगाई ९ भेदगुरू भगवतमेंनाहीं। यहविचा-
रिलीजै मनमाहीं॥ कहो भागवत महँ यदुराई। गुरुजानौ मम

रूप सदाई १० ग्रंथ आदिसो लिखो विचारी। भक्तिभक्त गुरु भगवत चारी॥ अहैंचारि कहिबेमें सोई। परयह सत्यएक बपु होई ११ दो०। कामक्रोध लोभादियुत बुद्धि विहीन कुरूप। ऐसहुँ गुरुकहँ जानिये भगवतरूप अनूप १२ चौ०। इहिविधि कहत पुराण बखानी। सुनहु सुमति जननिज उरआनी॥ कामीगुरू होइ अतिजोई। कृष्ण समान जानिये सोई १३ जोगुरु होइ क्रोध अधिकारी। तौ जानै नृसिंह अनुहारी॥ जो लोभी तौ वामन जाना। धर्मातमाराम पहिचाना १४ करत भागवत इबिधि बखाना। अन्यमनुज समगुरुहि जुजाना॥ करी समान बुद्धि तिहि केरी। करिमज्जन रज डारत फेरी १५ भयेजुसिद्ध जगत विख्याता। बिन गुरुकृपा न दोसरिखाता॥ जेती बिद्यायें जगमाहीं। गुरुकृपा बिन प्रापति नाहीं १६ तौ हरि गुरु बिन प्राप्ति होई। जन्म अनेक मरै पचि कोई॥ गुरु बिन शुद्ध कर्म नहिं होवैं। गुरु बिन प्राणिनरक महँ रोवैं १७तीरथ जपतप ब्रत अरु दाना। गुरु बिन एकौसिद्धि न जाना॥ गुरुकी कृपा सुलभ सब साजा। गुरु बिहीन नहिं एकौ काजा १८ बिनगुरु नारदमुनिसे ज्ञानी। तिनकी गाथ सकल जगजानी॥ दुख लह चित्रकेतु गुरुहीना। दुखी जगत गुरु बिन दिनदीना १९ भवबन्धनते गुरू छुड़ावै। हरिपद नित अनुराग बढ़ावै॥ देइ काल भय गुरू छँड़ाई। ऊँचि अँटारी देइ चढ़ाई २० उहां न काल सकत नियराई। गुरू कृपारह अचल सदाई॥ ऐसे गुरु की बलिबलि जैये। रजपदाब्ज उरनैनन लैये २१ कहत वेद इहिभांति पुकारी। जो सुरपूजनादि सुखकारी॥ निष्फलहोत गुरू बिन सर्वा। चितधरि सुनौ सुजनतजि गर्वा २२ तौ सबकहँ उचित यहहोई। भगवद्भक्ति चहै जो कोई॥ सद्गुरु की शरणागत होवै। मायाजाल पलकमें खोवै २३ करै एक गुरुबोध न होवै। दूजेपहँ जाइसो जोवै। यहनहिं लीन्हे कान फुँकाई। निजपुरको मारग बिनपाई २४ काहूसों पूछत कछु

नाहीं। अति अभिमान किये मनमाहीं ॥ यद्यपि गुरुसमान सबअहई। किंचित भेद वरणिसो कहई २५ एकमकान अधिक अँधियारा। धरो तहां तिलगर्त सँस्कारा॥ एकगुरू निज शिष्य पठायो। तिल ढूंढ़िबेहेत सुखछायो २६ धरो सुवन भीतर तिल होई। जानत गुरु शिष्यहि कहसोई ॥ सो ढूंढ़त बहुकाल विताये। मन्दिरमांझन वह तिलपायो २७ दोसर गुरु निज शिष्य बुलाई। तिल ढूंढ़नहित दीनपठाई ॥ तासों यहिविधि दियो बताई। है जिहिओर सुतिल सुखदाई २८ ढूंढ़नलागसु अति सुखपाई। मिलो मिलो नहिं फिरो मँझाई ॥ तृतियगुरू निजशिष्य बुलायो। गृहतिल अलँग सगर्त बतायो २९ चलो शिष्य सो अति सुखपाई। पायोसो तिलगर्त्तम जाई ॥ यहि प्रकारके गुरूअनूपा। जानो सुजनभेद यहरूपा ३० भक्ति दृढ़ावन गुरू सुहाया। सोई गुरु ईश्वर समगायो ॥ जबलग निज मारगन लहीजे। तबलग गुरुकरिकै गुरुकीजै ३१ दत्तात्रय चौबिस गुरुकीन्हा। भलीभांति निजपथ लखिलीन्हा ॥ सोई गुरु हरिमग दरशावै। कानफूंकि नहिं गुरूकहावै ३२ यथा भागवत भाषत सोई। सो गुरुसोन स्वजन जगहोई ॥ मातु पिता सुर स्वामिन सोई। यहि जगसोंन छुड़ावत जोई ३३ गुरू शिष्य यदि धर्मअपारा। भाषत शास्त्र विविध परकारा ॥ चारधर्म पुनि चहिय विशेषी। गुरुके चार शिष्यके लेपी ३४ भगवद्भक्त शास्त्रकोज्ञाता। समदरशी श्रुतिपथ मनुराता ॥ अरु यहिभांति लिखो सबठामा। गुरु अज्ञानहरण सुखधामा ३५ तो गुरुको यह वाजिबहोई। शिष्यहि पंथ देखावै सोई ॥ जिहि मगसों श्रीहरिको जानै। छलबलछाँड़ि प्रेम प्रणठानै ३६ पुनि शिष्यहुके धर्मसुहाये। चारि चारुबरणौं मनभाये ॥ तनमन सेवा गुरुकी करई। दुखसुख स्वाद दूरि परिहरई ३७ सकलगर्व गुरु सन्मुखत्यागै। गुरु विश्वास हियेमहँ जागै ॥ वेदश्रुती क-रत इमिगाना। कीजो हरि गुरुसम करिजाना ३८ सकलसनो-

की ममगुरू सत्यकरि भाखा। यह बिश्वास अचल उरराखा॥ भोजन पान नींद सब त्यागा। अचल चित्त हरि दरशन लागा ६९ इत उत ढूंढ़त फिरत कृपालहिं। भक्त जनानँद कन्द दयालहिं॥ जड़वत मूक बधिरवत डोलत। हाँकहु दिये बचन नहिं बोलत ७० श्रीवृन्दाबन बिपिन बिहारी। याबिधि ताकी दशा निहारी॥ दर्शन दिये प्रगट नँदलाला। सुन्दर अद्भुत रूप बिशाला ७१ कुण्डल मुकुट पीतपट धारे। बैजयंति बनमाल सँवारे॥ कमल नयन मुख पंकज शोभा। नखमणिलखि न मोह असकोभा ७२ सुभग कटाक्ष सुजन मनहारी। जाहि मोक्ष श्रुति कहत पुकारी॥ अलककेश सुन्दर सुखपागे। बारिद जाल देखि लघुलागे ७३ उरभृगुपाद चिह्न मणिनीकी। शोभित भक्तजनन के जीकी॥ रूप अपार मार मदमोचन। दर्शन करत रहत उरशोचन ७४ लखि स्वरूप बालक बनवारी। शीश नाइ अस्तुति अनुसारी॥ जै वृन्दाबन बिपिन बिहारी। जै गोपी जन आनँदकारी ७५ जै गोबर्द्धन धारणहारे। जयति यशोदा नंददुलारे॥ जै बकारि जैबकी विदारण। मणिग्रीव नलकूबर तारण ७६ जै अघसूदन जैनरकारी। जैसच्चिदानन्द असुरारी॥ जै गोविन्द इन्द्र मदमोचन। तव मुख विधु चकोर जग लोचन ७७ दो०। करिअस्तुति इहिबिधि बहुरि कहत भयो सो बाल। ढूंढ़ो मैं दर्शन दियो सोइतुम नँदलाल ७८ सो०। सुनतअहो यह बात की छलिया हैं नंदसुत। मननाहीं पतियात चलौ गुरू ममके निकट ७९ चौ०। गुरु पहिचानिलेइँ जब तुमहीं।। तब बिश्वास होइ दृढ़ हमहीं॥ सुनि इमितासु बचन यदुराई। निजजन आनँद कन्द सदाई ८० चले तासु सँग आनँद पाई। गयो गुरू ढिग तुरित लवाई॥ अर्द्धरात्रि महँ पहुँचो तहवां। कोठेपर गुरु सोवत जहवां ८१ दीन्हो हांक गुरुहि सुखपाई। जागौ उठौ लखौ यदुराइ॥ सुनि यह बात चकृत गुरु भयऊ। खिरकी खोलि बिलोकन लयऊ ८२ सुखार

कास प्रकाशित आसा। करपकरे बालक है पासा ॥ सुन्दररूप अनूपम शोभा। लखिस्वरूप मोहन असकोभा ८३ गुरुहि देखि बालक कह बानी। येहैं कृष्ण लेहु पहिंचानी ॥ करत ढिठाई तू गुरु भाखा। कृष्णहि हाथ पकरि क्यों राखा ८४ येहैं नंदनँदन सुख-दाई। आवत हौं मैंहूं उत धाई ॥ यह कहि गुरु जबलग उत गयऊ। बालकयुत अंतर हरिभयऊ ८५ जाइ तहां देखो हरि नाहीं। अति धिक्कार कियो निज काहीं ॥ निज शिष्यहि सु-मिरण पुनि कयऊ। उपजो ज्ञान विरागहु भयऊ ८६ पुनि निज काहँ धन्य बड़जानी। दिये दरश मोकहँ हरिआनी ॥ इहिविधि निज शिष्यकि विश्वासा। पायो अचल सुखद सुख बासा ८७ चाहिय याविधि गुरुविश्वासा। तरियभवार्णव विनहिंप्रयासा ॥ रेमन तू कब याविधि ह्वैहै। भवदुख विन प्रयासही ख्वैहै ८८ ब्रह्मा शिव नारद मुनि योगी। साधक सिद्ध प्रपंच वियोगी ॥ जासु चरण रज शिरपर धारत। द्वंद्व जाल सब दूरिविदारत ८९ तामें तू आलस कस कीन्हों। दुर्लभ लाभ मनुजतन लीन्हों ॥ तेरी दशा अभाग्य महाई। ताते भूलिगयो यह भाई ९० सोतू अजहुं समुझु मनमाहीं। विना प्रतीति होत कछुनाहीं ॥ वहगुरु सर्वोपरि श्रुति गावै। नेति नेति कहि वेद बतावै ९१ निशिदिन करसि चिंतवन मनमें। बाधाहोइ न शत्रु गणनमें ॥ रेशठ का मानुष तनुपाई। मोह अंध ह्वै रहो भुलाई ९२ तनु असार कारज यह सारत। क्षणभंगुर क्षण विपति निवारत ॥ पर जब होइ विगत दुर्भाऊ। जिमि खट्वांग परीक्षित राऊ ९३ नत असार यह अति दुखदाई। जीवन मरण कलेश सदाई ॥ अस्थि मांस त्वग शोणित पात्रं। विष्टापूय मूत्रमल गात्रं ९४ तामें मोह काहँ तू पायो। वर्णनहीं सो समुझ सुहायो ॥ उत्तम हर्म्य शरीर सुहायो। स्थूण अस्थियुत शोभा पायो ९५ चर्म भीति आमिष सोलेपन। अति विस्तृत नवद्वार सुहेमन ॥ स्नायू वेष्ठित मंदिर ऐसो। चेतन पुरुष नृपति तहँ वैसो ९६ मंत्री तासु बुद्धितहँराजन।

हैमन शत्रुकपटयुतगाजत।तिहि नृपकर चाहतहैं नाशा।शत्रुचारि अति तेज प्रकाशा। ९७ काम क्रोध अरु लोभ समेता। जोराजा वह होइ सचेता ॥ बैठेरोंकिद्वार निज सोई। तदा सुस्थचित बलयुत होई ९८ जो कहुँ द्वार खुले करिपावै। राग नाम द्वेषी उठि धावै ॥ तीनि शत्रु तिहि पीछे धावत। तिनके नाम बर्णि बतरावत ९९ सर्वब्यापी एक कहायो। महायाम दूसरो महायो ॥ पंचद्वार प्रवेश न एका। जाइ करतये बिपति अनेका १०० इंद्री संज्ञक द्वार न जाई। इंद्री मन बश करत बनाई ॥ निजबशद्वार जबहिंकरिलीन्हा। प्राकारहू नाश करिदीन्हा १०१ तिहि के आश्रित मनकहँ देखी। नाश बुद्धि ह्वैगई बिशेखी ॥ मंत्री बिन त्यागे पुरलोगा। पायो बिबर शत्रु लहि योगा। १०२ राजाहू नाशो तिहि ठामा। इहि बिधि लोभ क्रोध अरुकामा ॥ मोहादिक ये राग बिशेषी। नरमति नाशक दारुण द्वेषी १०३ क्रोध रागते प्रकटि सुसोहा। क्रोधते लोभ लोभते मोहा ॥ मोह तेस्मृति बिभ्रम मानो। बुद्धि नाश तासों पहिचानो १०४ बुद्धि नाशते नशतबनाई। इहिबिधि नष्ट बुद्धि समुदाई ॥ रागलाभ अनुवर्ती जेते। भ्रमतरहत निशि बासरतेते १०५ ताते चिंता करसि घनेरी। आगे नाव जाइ भवतेरी ॥

चौ०। कहौंकथा पद्माचार्यकी। गुरु निष्ठ जगदुख दायकी। १०६ गंगानिकट गुरू तिनकेरे। बास करतसेवत तिन नेरे ॥ एकसमय तिनके गुरु जोई। तीरथ काहँ चलत भे सोई १०७ इनको देखि मलीन महावा। कहत भये गुरु वचन सुहावा ॥ मम स्वरूप गंगाको जानो। सेवहु काय वचन मन वानी १०८ यह कहिकै गुरुकीन्ह पयाना। इन गंगा कहँ गुरु करि, जाना ॥ दिन प्रति कूप करहिं अस्नाना। पूजन करहिं गंग सुखदाना। १०९ चरण धरत गंगा में नाहीं। गुरुभाव निश्चल मन माहीं ॥ इमि आचरण और जन देखी। नहिं प्रसन्न मनमाहँ विशेखी ११० जब इन गुरु तीरथसों आये।

तब सब निन्दा करि जन गाये ॥ यह गुरु करि विचार मन करिकै। जानि प्रेम मन आनंद भरिकै १११ देखि सबनके मन सन्देहा। रचो उपाय गुरुतब एहा ॥ अस्नान करत गंगा के माहीं। मांगत भये अँगौछा ताहीं ११२ इन विचार कीन्हों मन माहीं। गुरुरूप गंगा ये आहीं ॥ इन में चरण कौनविधिदीजे। गुरुआयसु उत किमि न करीजै ११३ यह विचार आवत तिन के मन। प्रगटे वारि कमल फूलनगन ॥ तिन पर चरण धरतसो धाये। गुरुहिंअंगोछा दै फिरिआये ११४ लखि विश्वास प्रभाव सुहावा। वार वार गुरु हृदय लगावा ॥ नाम पाद पद्माचारय धरि। गुरु मनमाहँ महान कृपाकरि ११५ दो०। यह गुरुनिष्ठामें कथा सुन्दर कही सुहाइ। विष्णु पुरीकी गाथशुभ श्रवणों मन लाइ ११६ चौ०। भगवद्भक्त रहे अति सोई। द्वितिय धर्मभावत नहिं कोई ॥ श्रीकृष्ण चैतन्य सुहाये। महाप्रभू के शिष्य कहाये ११७ एकसमय पुरुषोत्तम धामा। भई परस्पर बातललामा ॥ काशी माहँ मुक्तिके हेता। करतवास आनंद समेता ११८ तिन के गुरू कहे मुददेता। हैं काशी सतसंगति हेता ॥ तिनकोआश मुक्तिकी नाहीं। यह गुरु कहत भये सबपाहीं। ११९ केवल हरि चरणन अनुरागत। तिनको मन न कहूं अरु लागत ॥ पर काहूके मन नहिं आई। तब श्री गुरु यह रचो उपाई १२० विष्णुपुरी ढिग पत्र पठायो। माला भेजन हेत सुहायो ॥ मनकी बात जानि इन लीन्ही। मन विचारि रचना यह कीन्ही १२१ श्री भागवत समुद्र मँझारा। रत्न समान श्लोक निकारा ॥ रत्नावलि तिहि नामबखाना। शुभ श्लोक शतपंच प्रमाना १२२ दीन्हों भेजि गुरूके पासा। देखि सबन मन भो विश्वासा ॥ जाकेपढ़त सुनत सुखहोई। सुभगभक्ति हरिचरणन जोई १२३ जगत जनन हित कीन्ह प्रचारा। जिहि सुनि नाशत पाप पहारा ॥ इहिविधि कथा परम सुखदाई। विष्णुपुरी की वरणि सुनाई १२४ ॥

दो०। वरणि कहौं शुभगाथ अब पृथीराज की जोइ। वासिंदे अजमेरके कछवाहे रह सोइ १२५ चौ०। द्वारावति पति दर्शन पाये।वरबैठ अति परम सुहाये॥ शंख चक्रके छापसुहाये। तिन शरीर पर प्रगटि जनाये १२६ निज गुरु कृपा भये बिख्याता। धर्मउपासनान के ज्ञाता॥ भीष्म पितामह सम पुण्यात्मा। भये युधिष्ठिरसम धर्मातमा१२७ भेपूजक प्रह्लाद समाना। कृष्णदास के शिष्य सुजाना॥ एक समय हर्षित मनमाहीं। तिन गुरुचले द्वारिका काहीं१२८चलनसाज पृथिराजहु कीन्हा। तबमंत्रिन गुरुसों कहि दीन्हा॥ हाथ जोरि भाषे यह काजा। जो इतसों जैहै उत राजा १२९ बाढ़त भक्ति अहै इहि देशा। इन बिन होइहि चीण अँदेशा। सुनि गुरुनृप सों कहो बुझाई। रहौ आपनी राज्य सभाई १३० हाथजोरि बोले नृपएहा। गुरु सों छोड़ि न सकत सनेहा॥ आपुसंग दर्शनभगवाना। बहुरि गोमतीसें अस्नाना १३१ भगवत शस्त्र चिह्न तनमाहीं। एतौ लाभहोहिं इतनाहीं॥ सुनि गुरु कहो धरौ मनधीरा। यहसब तुमहिं होइ इतवीरा १३२ यहकहि गुरूचले जब गयऊ। अति व्याकुल राजा तब भयऊ॥ तीजो दिवस महा सुखदाना। अर्द्धरात्रिकेसमय महाना १३३ गुरूपुकार नृपति सुनिपाई। शय्याते दौरे उठिधाई॥ तहांजाय देखे भगवानहिं। नंदनँदन ब्रज आनँद दानहिं १३४ पुनिअस्नान गोमतीकयऊ। शंख चक्र चिह्नित तनभयऊ॥ बारबार बिनती हरिकेरी।राजाकीन्ह मुदित मनहेरी १३५ पुनि राजाकी आयसुपाई। रानिहुमज्जन किय हरषाई॥ अति कृतार्थतनु आपनजानी। पुनि पुनि हरि चरणन रतिआनी १३६ प्रगटितभयो जगत यह हाला। नृपहि दरश दीन्हे नँदलाला॥ राजहि भेंटदेत सबआई। दरश करत जनपद सबधाई १३७ आवन लाग साधु तिन भेंटन। दरशन पाइ दुसह दुखमेटन॥ गुरूभक्ति भगवत पद आसा। सबकेहोत भयो बिश्वासा १३८ पुनि नृप हरिमन्दिर बनवायो। निशि

वासर पूजा मनलायो ॥ एक द्विजांध महादुखपाई । वैद्यनाथ द्वारेपर जाई १३९ परो रहो सूझन हित लागी । तबबोले शिव परम विरागी ॥ पृथीराजके ढिग नृपजैये । तासु अंगौछा नयन लगैये १४० खुलिहिं नयन कछु संशय नाहीं । सुनि ब्राह्मण आयोचलिताहीं ॥ हाल कहो राजासों जबहीं । राजा दीन अंगौछा तबहीं १४१ जबहिं अंगौछा अखिन धारा । चहुँदिशि देखि परो उजियारा ॥ अम्बकलहि द्विजआलय गयऊ । यहवृत्तान्त जगत महँ भयऊ १४२ सो० । पृथीराजकी गाथ मैं वरणी सुख पाय कै। अबवरणौं सुख साथ तत्वाजीवाकी कथा १४३ ॥

चौ० । तत्वाजीवा ब्राह्मणदोऊ । पद्मनाभ देशम रह सोऊ ॥ कमल समान देश सुख वासन । ये रवि किरण समान प्रकाशन १४४ भगवद्भक्ति समुद्र समाना।ताके दोऊ कूल महाना॥ जिन प्रताप कोटिन जनलोका । पाइ भक्तिपथ भये विशोका॥ १४५एककाष्ठ सूखो अति जोई।दीन्होगाडि द्वार निज सोई॥ होइ हरोचरणोदक जाके । होवैं शिष्यमानि ताजि ताके १४६ साधु चरण धोवत सुखपाई । डारत वारि काष्ठमहँ लाई ॥ एक समय कबीर तहँ आये । तिनके चरण धोइ सुख छाये १४७ डारो नीरं काष्ठमहँ लाई । तत्क्षण काष्ठ चलो हरिआई ॥ देखि चरितद्विजवर सुखपाई । परे कबीर चरण में आई १४८ ॥ मंत्र कबीर पाहँ तिन लयऊ । अति आनन्द मगनमन भयऊ॥ चलत बार इमि कहो कबीरा । समयपरे पर सुमिरेहु वीरा १४९ बाहर पांति ब्राह्मणन कीन्हा । इनतौ मंत्र जुलाहक लीन्हा ॥ तिनकी कन्या ब्याहन योगा । अंगीकार करत नहिं लोगा १५० छन्दबरवा । कीन्ह द्विजन जब नाहीं अंगीकार। तब इन पूँछी गुरुसों जाय विचार ॥ सुनि कबीर यह बोलतभे तिनपाहँ । निज बालकन परस्पर करौ विवाह १५१ ते सुनिके घर आये मनहिं हढ़ाइ । लगे साज सब साजन उमग बढ़ाइ ॥ यह सुनिकै सम्बन्ध कुटुम्बी लोग । अति विरुद्ध मत

गुणिके कीन्हों शोग १५२ सब जुरिमिलि तहँ आइ कहो तिन पाहिं। यह कारज तुम ठानो उत्तम नाहिं॥ ते दोऊ सुनि सबके या विधि बैन। कहे कि गुरुके बचन टारिबे हैन १५३ चौ०। तिनकी विनय करत सब भयऊ। तब दोऊ कबीर ढिग गयऊ॥ कहो सकल वृत्तान्त सुनाई। तब कबीर बोले सुखपाई १५४ उनसों भक्ति लेउ कबुलाई। तब तिन सों तुम करउ सगाई॥ वैहैं भक्तिहीन नरजाते। करहु सगाई प्रथम नताते १५५ सुनि द्वौ बंधु तहां चलि आये। वरणि सकल वृत्तान्त सुनाये॥ सबहुन भक्ति ग्रहण तब कीन्हीं। हरि चरणारविन्द मति दीन्हीं १५६ होनलाग सम्बन्ध सुहायो। सबके मन आनँद अति छायो॥ भक्तनको प्रभाव इमि देखी। भये भक्तियुत सकल विशेखी १५७ दो०। तत्त्वाजीवाकी कथा इहिविधि कही बुझाइ। अब बरणों उत्तम कथा खोजीकी सुखदाइ १५८॥

चौ०। खोजी गुरू निष्ठ अति भयऊ। तिनके गुरू चरित यह कयऊ॥ घंटा एक टँगा अस्थाना। करहिं प्राण मम जबहिं पयाना १५९ यह घंटा बाजैगो तबहीं। इमि समुझायो शिष्यन सबहीं॥ जबहीं गुरु शरीर निज त्याजा। तिहि क्षण घंटा नाहिंन बाजा १६० शिष्यन मन चिंताभै भारी। तब खोजीआये तिहिबारी॥निज समाधिमहँ कीन्ह बिचारा। चूत मध्यफलकीट निहारा १६१ तत्क्षण तोरि सोईफल लीन्हों। भिन्न खण्ड ताके करिदीन्हों॥ जो वह कीट दृष्टितरआयो। तजो देह घंटाठहनायो १६२ तब सबके मन निश्चय आई। गुरुदीन्हो उपदेशमहाई॥ अंतकाल जामें मनलागत। सोई होत कलेवर त्यागत १६३ खोजीकेरिकथा इमिगाई। गुरूनिष्ठकी कहौंबुझाई॥गुरूनिष्ठइक अति बुधिवंता। कोमल चित्त दयायुतसंता १६४ गुरुसेवातजि और न जानत।द्वितियसाधुकी सेवनठानत॥निजमनमाहँकहत गुरुदेव।करै औरहू साधुनसेवा १६५ तो यह सुंदर बातसदाहीं। इहिविधि गुरुविचार मनमाहीं॥ इहिविधि गुरू करत बहुइक्षा।

आयसु दीन्ह न बिना परीक्षा १६६ तीरथ चलो सोइ इकबारा। तब गुरु या विधि वचन उचारा॥ तीरथ घूमि जबहिं तुम ऐहौ। तब मोसों शिक्षाइक पैहौ १६७ सुनि गुरुनिष्ठ तुरित चलि गयऊ। करि तीरथ आवत पुनि भयऊ॥ जादिन गुरू निष्ठ इत आयो। तादिन गुरु परधाम सिधायो १६८ जात रहेशव दाहन लोगा। चेलहि देखि भयो उरशोगा॥ आगे जाइ रोंकि तनु राखा। शिक्षादेन गुरू ममभाखा १६९ तिनके वचना सत्य न होहीं। है प्रतीति अतिशय करि मोहीं॥ ताते मृतक दग्धनहिं कीजे। तुरित उतारिविमानति दीजे १७० लीन्ह उतारि मृतक तिहि बारा। शुभ सिंहासन पर बैठारा॥ पुनि या विधि ते बोले बैना। सुनहु कृपालु बुद्धि गुणऐना १७१ मोहिं देन उपदेश जु भाखा। सो काहेकारि गुप्तहि राखा॥ या विधि प्रीति शिष्यकी देखी। चेतिउठे गुरु तबहिं विशेखी १७२ सेवासाधु करन के हेता। देतभये उपदेश सचेता॥ तबगुरुनिष्ठ कहो करजोरी। सुनहुनाथ विनती इकमोरी १७३ परमधाम जो जाहु सिधारी। तौको सेवा लखै हमारी॥ सुनि प्रिय वचन गुरू मुदपागे। एक वर्षतनु औरन त्यागे १७४ इमिगुरु निष्ठ कथा अतिनीकी। वरणीसुभग विषयरस फीकी॥

अब घाटमकी कथा सुहाईवर्णन करौं सुजन सुखदाई१७५ घाटमरहे जातिके मीना।जयपुरमें थोड़ी सुखभीना॥ वास करत तिहि गांव सदाई।ठगी वृत्ति निजयानमलाई १७६ कुछ मनमाहँ विवेक विचारी।कोउ भक्तढिग ग तिहिवारी॥तिहिं यह कहो ठगी नहिंकीजै।औरैकछु विचारि मनलीजै १७७ घाटमकहो जीविका एही।किहि विधि त्यागकरैं हमतेही॥तब वह साधुकहो सुखपाई। वचन एक सुनिये ममभाई १७८ चारि वचन मेरे सुनि लीजै। धारिहृदय सो दिन प्रति कीजे॥ एकसत्य बोलिय निजबानी। द्वितिय साधु सेवा मन आनी १७९ भोग लगाइक भोजन पैये। आरति समय भुवन हरि जैये॥ घाटम कीन्हो अंगीकारा।

किये रहतनित हृदय बिचारा १८० सो० । दीन्हो तबहिं बताइ घाटम को हरिमंत्र शुभ । शिष्यहि दियो चिताइ बातैंचहूंदृढ़ाइ कै १८१ एक समय तिन भौन आये साधुन अशन कछुकीन्ह तुरित तिनगौन चोरी कीन्हीं आफरे १८२ चौ० । तहँते लैगो धूम्र सिधाये । भययुत तुरित भवन निजआये ॥ कीनपृष्ठ पीछे उठिधावै । सेवासाधु मबाधा लावै १८३ इहिबिधि सो निज मंदिर आये । साधुन काहँ अदन करवाये ॥ तब श्री हरियह रचो उपाया।आंधीचली मेह बरषाया१८४ चरण चिन्ह मेटतत्काला। श्री हरितापर भये दयाला ॥ जियालाल तू कबमग ऐहै । साधु सेइ हरिपदरति पैहै १८५ दो० । एकसमय तिनके गुरू बोलि पठाये पास । तिन समीप कछु द्रब्य नहिं मनगुनि भये उदास १८६ चौ० ॥ पहुंचे एक नृपति के द्वारे । तिनहिं देखि बोले प्रतिहारे ॥ कोतू कहां जाइगो भाई । सुनि घाटम बोले सुखपाई १८७ घाटम नाम चोर मैं भारी । सुनि द्वारप यह बात विचारी ॥ हमसों हँसी करत नहिं चोरा । घाटमजाइ अश्वइक छोरा १८८ सुंदर कसि तिहिभये सवारा । बहुरिद्वार तिमि वचन उचारा ॥ चले गुरूकी ओर सिधाई । पथ संध्याआई सुख दाई १८९ इक हर्य्यालय देखि सिधाये। आरति होति महासुद पाये ॥ कोतवाल तिहिच्छण नृपकेरा । आइ तुरित मंदिर सो घेरा १९० श्रीहरिदेखि दया अति कीन्हा । रंग तुरंग फेरिद्रुत दीन्हा ॥ कोतवाल देखो वह घोरा । रंग बिलोकि भयो मन भोरा १९१ बार बार मन करत विचारा । यह कस चरित कीन्ह करतारा ॥ अहै तुरंग वहै सुखदाई । परवह रँग न परत लखाई १९२आये घाटमतबलगि तहँवां । संभ्रम कोतवाल है जहँवां ॥ लखि घाटमको लज्जा धारी । नृपभयसो पायो भयभारी १९३ नृपसो भीत ताहि मनजानी । दियबताइघाटम निजवानी ॥ मैंहौं चोर छोरिहय लायो । परश्रीपति यह रंग बनायो १९४ सो भय अब कीजै नहिं भाई । चलिहौं मैंतुव नृप ढिगधाई ॥ अस

कहि चले तुरित तिहि संगा। पहुँचे नृपढिग सहित उमंगा १६५
सब वृत्तान्त तुरित कहि दीन्हा। सुनिराजा अति विसमय कीन्हा ॥ घाटमसों बोले सुखपाई। जो चाहौ सो लीजैभाई १६६
घाटमकहो कछू नहिं लेहौं। लेहौं अश्व इहै मन देहौं ॥ सुनि राजा तिनकाहँ सहेता। दीन्ह द्रव्य कछु अश्व समेता १६७
दो०। दीन्ह आइ निज गुरुकहँ द्रव्य समेत तुरंग। जियालाल हरिकृपालखि भोमन मुदित अभंग १९८ चौ० ॥ इहिविधि घाटम कथा सुहाई। जियालाल संक्षेपहि गाई ॥

अबनरवाहनकीशुभगाथा। कहौंनाइ रघुनाथहि साथा१६६
नरवाहनहरिभक्त सुजाना।रहभौगांवबाससुखदाना॥हितहरिवंश किशिष्य सुहाये। भगवद्भक्त महा सुखछाये २००गुरूभक्त साधू सेवी अति। राधा वल्लभ में लागी मति ॥ एक समय इकशाहूकारा। नौकालियेजात सुख भारा २०१ नरवाहन लखि तासु सिधाये। नौकालूटि महामुद पाये ॥ औरौ द्रव्य लेनके हेता। ताहि पकरिलाये सुनिकेता २०२ दीन्ह ताहि कारागृह डारी। शाहूकार लहो दुखभारी ॥ नरवाहन की चेरी एका। रही दया युत सहित विवेका २०३ भोजन देत दिवस प्रतिलाई। पुनि छूटन विधि दियो बताई॥ आधीरात समय जब आवै। तू राधा वल्लभ गोहरावै २०४ हितहरिवंश नाम पुनि लीजौ। नरवाहन पूंछें कहि दीजौ॥ हितहरिवंश गुरूमम सोहत। तिनको नाम सुमिरि सुख जोहत २०५ सुनि उपदेश सुखद सुख छावा। कीन्हो तैसोही मन भावा॥ सुनि नरवाहन सुखसों पागे। धाइ शाहके चरणन लागे २०६ हालपूछि लज्जा अति पाई। तुरितहि सबधन दियो मँगाई॥ हाथजोरि बहु विनती कीन्हा। इहि विधि वचन कहन पुनि लीन्हा २०७ मैं अपराध कीन्ह अति जोई। जानि गुरू पावैं जनि सोई ॥ हाथजोरितब शाहू पुकारे। तुमबड़भाई अहौहमारे २०८ यह अचरज लखि शाहूकारा। पायो मन आनन्द अपारा॥ हितहरिवंश शरण तकि

धि हीराधरतनिहाई ॥ टूटतनाहिं घुसरितिहि जावै। हीरादेखि निकसि पुनिआवै २३७ तिमि सुखदुख तिनको नहिंव्यापे। क्षुधातृषा शीतोष्णनतापे ॥ मिलतआइ सतसंगतिलेखी। हीरा को हीराजिमि देखी २३८ सो०। जियालाल मनमूढ़ तूकसमग भूलोफिरत ॥ संतचरित अतिगूढ़ ताको कछूबिलोकुतौ २३९॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायकाजियालालजन्माग्रेणबिरचितेत्र त्रुविंशतिनिष्ठामध्येसप्तमगुरुमाहात्म्यनिष्ठायामेकादशभ क्तकथावर्णनभक्ताम्बुनिधौनवमस्तरंगः ९ ॥

छन्दबरवा॥निष्ठाअष्टमप्रतिमा अर्चाजाहँ।बर्णनपन्द्रह भक्तन कथा सुताहँ॥शंखरेखरघुनन्दन चरणनकेरि। करों हंस अवतार दण्डवत फेरि १ भयोकमलभवपुरीम यहअवतार। प्रश्नोत्तर सनकादिन दियोउदार॥दीन्हो ब्रह्माजीको पुनिउपदेश। बहुरि जाइनिज मन्दिरकीन्ह प्रवेश २ दो०। कहतशास्त्र सिद्धान्तयह भगवतप्रापतिहेत। भगवतहीकोपूजिकै होवै सबसुखकेत ३ मंत्र जापसाधनआमितपूजा अर्चाजौन।इनहिंजोन साधनकियो हरि हिंमिलावै कौन४ भगवतकीन्हाबिचारयह ममपूजासों मुक्ति।मेरो रूप कि देखिहैं यहगुनिकीन्हीयुक्ति५होइहिकिमि उद्धारजग जी वनको।यह जानि।भक्तनहित अवतारलिय मूर्तिरूपजगआनि६ जिमि बद्रीनारायणहु रंगनाथ छबिखानि। स्वामिगोबिन्ददेवजी जगन्नाथसुखदानि७बरदराज आदिकसुखद प्रतिमासुंदररूप। ब्रह्माशिवादिक थापियो पुनिजेऋषिमुनिभूप ८ थापित प्रतिमा इनहुँको भगवत देखिबिचार। प्रापतनाहीं जननको देखोदुख के पार ९ शालग्रामक भेषधरि प्रगटभये बहुरूप। तबहूंप्रासन दीखियो कियमह चरितअनूप १० आज्ञाइहिविधिकरतभे शास्त्र वचन सों भाखि। शैलदारुआयसमयी चित्रपत्रपरराखि ११ चौ० ॥ चन्दनादि लेपनकरिजोई। प्रतिमालेप्य कहावत सोई॥ सैकति मूरति बालूकेरी। मनोमयी मणिमय सुखढेरी १२ इहि विधि प्रतिमा आठप्रकारा। वेद मंत्रसों पूजन सारा ॥ जो पूजन

कीन्हो मनलाई। ताकोफल तत्काल दिखाई १३ जो अनन्य है सेवाकीन्हा। सो निर्वाण चरण फललीन्हा ॥ जो कौ चित्र लीन लिखवाई। पूजत हरि विश्वास लगाई १४ प्राप्तहोत भग वत पदमाहीं। जियालाल यह मिथ्यानाहीं ॥ करुणा करकी दया महाई। कोकवि वरणि पार जोजाई १५ या भगवत वपु पूजन जोई। दर्शनादि भगवत प्रियसोई ॥ मान्योभक्तन विवि ध प्रकारा। जियालाल पावै किमिपारा १६ पैहैपार न संशय यासें। संतविशांघ्रि भ्रमर मनजामें ॥ प्रतिमाको भगवत तनु गुनिकै। या प्रकार पूजनकरु पुनिकै १७ मानसि पूजन अधिक सुहायो। ताको करत कोउमुद छायो ॥ कोऊताही प्रतिमा का हीं। वर्णतजाहि वेद गमिनाहीं १८ पूरणब्रह्म सच्चिदानन्दा। मानत सुखदायक सुखचन्दा ॥ मानसि पूजनादि नहिं तहँवाँ। मूरति भेदभावहै जहँवाँ १९ वहुरि तृतीय वचन है एहा। वरणौं सोऊ सहित सनेहा ॥ वास्तव मूर्ति सच्चिदानन्दा। सदा सर्व गत आनँद कन्दा २० निर्गुण अगम अनूप सुहायो। निराकार जिहि वेद बतायो ॥ शीघ्र ध्यानमें आवन एहा। ताते जासों बढ़ै सनेहा २१ मूरतिको पूजत मनलाई। जाते श्रीहरि करैं सहाई ॥ जो जैसी निश्चय मनलावै। ताहीभांति तौन फल पावै २२ जबयह बात प्रगट मन देखत। भगवत प्रतिमा भेद न लेखत ॥ भये जगत कोटिन उद्धारा। प्रतिमा के परभाव उदारा २३ श्रीभागवत कहत इहिभांती। प्रतिमाको प्रभाव सुखपांती॥ भगवत मूरति दरश सुहावा। दरश मूर्ति दरशन करिआवा २४ चढ़े मूर्त्ति फूलनको सूंघन। तुलसिदलासन हरिगृह कूज न ॥ नमस्कार आदिक सुखदाई। हियधारत भगवतपुर जाई २५ नारद पञ्चरात्र करगाना। शालिग्राम वारि अस्नाना ॥ होवै जौनपात्र सुखदाना। सप्तमधोवन गंग समाना २६ ति नके दर्शनको फलभारी। जियालाल किमि कहै पुकारी ॥ पर यह बात सलिल अतिनाहीं। राहचलत उत्तम पदजाहीं २७

उत्तम चरणजात कठिनाई। जहांगये दुखजात नशाई॥ सुंदर शास्त्रनके अनुसारा। सर्वोपरि भगवत सुखसारा २८ व्यापक अगुण अनूप सुहायो। नेतिनेति जिहिवेद बतायो॥ तामेंलाये विन विश्वासा। भांतिभांति विनतजे दुरासा २९ छोड़े मनकी विना कचाई। भगवत कैसे परैं लखाई॥ ऐसामन लागै जब भाई। तब काहेन हरिहोइँ सहाई ३० कीनहिं द्वितिय ओर मन जावै। शरणदूसरेकी नहिंलावै॥ रहिएकांत इविधिमतिसाधी। जिमि पनिहारि घड़ागति बाधी ३१ श्री हरिइहिबिधि बचन उचारा। श्री भागवत माहँ सुखसारा॥ उद्धवनिश्चल मनइमि होई। जैसेइषु निर्माणक कोई३२ मारग निकट बनावत बाना॥ गयो नृपति इक सहित निशाना॥ कोटिन शुभचतुरंगिनि सैना। गई सो न जानो बुधि ऐना ३३ रहीदृष्टि नाराचम ताकी। ऐसी होइ सुमति दृढ़जाकी॥ जिमि चकोर चित चंदम धारा। तिहि सनेह वश भषत अँगारा ३४ जरत पतँग दीपकरिनेहा। तजत न नेह तजैवरु देहा॥ काम बिवश जिमि तियमनलावै। निजतन सुधिबुधि काह भुलावै ३५ इहि बिधिनेह भये बिन-भाई। भगवत दर्शन दुलभमहाई॥ इहि विधिप्रेम सूर्त्ति मोंधरिके। आवागमन तरै मुद भरिकै ३६ छन्दगोपाल। बाइएकदेश गुजरात। भगवतसोंजोरयोनिजनात॥ धारिभाववात्सल्यअनूप। सेवाकरतसदासुखरूप३७बासकरतसोबाईजाहीं।भईप्रबलनावृक्कन किताहीं॥बहुबालक उठाइवृक लीन्ह। तवबाई मनचिंताकीन्ह३८ चौ०॥ममबालकवपुश्रीभगवान॥तिनहिवृकाजनिग्रसैअयान॥ दिन पूजत भगवत सुखपागत। तभी पाहरू करलै जागत ३९ भगवत देखि दया अति कीन्हा। दरशन आइ ताहि निशि दीन्हा॥ देखि झमझमाहट सुनि काना। आभूषण भूपितभ-गवाना ४० पूंछो कोतू है कित जावै। मोसों सब वृत्तान्तवता-वै॥ श्रीहरि कहो अहों मैं सोई। पूजत है मूरति तू जोई ४१ इच्छा होइ मांगु सो मोहीं। देहौं मनवांच्छित द्रुततोहीं॥ कह-

बाईप्रसन्न जो मोपै। यहवर मांगतहों मैं तो पै ४२ ममबालक वपुश्री भगवाना। तिनहिं ग्रसै जनि वृक अज्ञाना॥ ऐसीप्रीति होइ जब मूरति। क्षणपल विपल टरै नहिं सूरति ४३ कोऊ सेवक जौन प्रकारा। सेवत स्वामिहिंप्राण पियारा॥ नाना भांतिवस्तु तिहिआगे। धारतअधिक प्रेमअनुरागे ४४ तिमिपूजै मूरति सुख पाई। नानाविधि सेवा दरशाई॥ पूजनषोड़श विधिसुख छायो। मानसिपरगट दुहुनबतायो ४५ सामग्री परगटपरगटमें। शुभवस्तु पूजन मानसमें॥ षोड़शमाहँप्रथमहै एहा। आह्वानजो सहित सनेहा ४६ निजस्वामीको प्रातजगावन। करिदण्डवच्छ्लोक पदगावन॥ दोसरमन्दिरशुद्धबनावन। सिंहासनपर बैठबिछावन ४७ तृतियपाद्य भगवतको देनो। पोंछि अंघ्रिअंशुक सोंलेनो॥ अर्घचतुर्थहाथसुखधोवै। पंचमदंतधावनीदेवै ४८षष्ठमुगंधसलिल अन्हवावै। पोंछैदेह वस्त्रपहिरावै॥ सप्तमशुभवस्त्रालंकारा। भूषितकरै अनेक प्रकारा ४९ अष्टमयज्ञोपवीत सुहावै। स्वर्णपाटके सूत्रगहावै॥नवमसुगंध देहमेंलावै। चंदन केशरमृगमदक्रावै ५० दशमपुष्प फूलनकी माला। झूमकुसुकटादिकसुरमाला॥ धूपधूमएकादश गायो। द्वादश दीपक सुभग सुहायो ५१ त्रयोदशम नैवेद्य अपारा। व्यंजन स्वाद अमित नहिं पारा॥ सो भोजन कराइ सुख पाई। जल पियाइ आचमन कराई ५२ पोंछैकर मुख सुन्दर वासा। दै ताम्बूल सुखद मुख वासा॥ चतुर्दशम दक्षिणा सुहाई। आगे भेंट धरै सुखपाई ५३ पंचदशम नीराजन जानौ। प्रदक्षिणा पुष्पांजलि मानौ॥ अहै विसर्जन षोड़श जोई। शयन जबहिं भगवत कर होई ५४ शुभ पर्य्यंक बिछावन जामें। भगवत काहँ सोवावै तामें॥ चापै चरण महा सुखसारा। इमि पूजन षोड़श परकारा ५५ इहिविधि पूजन विविध विधाना। मूरतिको सुखदायक नाना॥ नरनारायण गोविंद देवा। रंगनाथ स्वामी जगसेवा ५६ शालग्राम मूर्ति सुखदायक। पुष्कर निम्बषार सबलायक॥ द्वादशद्वादशकोश

प्रमाना। करत शुद्ध सबभांति महाना ५७ देवन थापित मूर्त्ति विचित्रा। योजनैकलगि करत पवित्रा॥ सिद्ध ऋषेश्वर थापित जोई। योजनार्द्ध पावन कृत सोई ५८ शास्त्र विहित मंत्रन अनुसारा। थापित मनुजन सब सुख सारा॥ एक एकसो कोश प्रमाना। करत पवित्र प्रभाव महाना ५६ जो मूरति अवसथमें राजत। ताही मन्दिर में सुखसाजत॥यामन लागन केर उपाई। ईश्वर बहुबिधि दीन्हबनाई ६० य।हूपरलागे जो नाहीं। धृगधृग आतम हतगति जाहीं॥ खरशूकर कूकर अति नीके। सीता राम न भावतजीके ६१ औरेतनकृत पाप न ब्यापत। संचितपाप शरीर न तापत॥ विनाभजन या मनुजशरीरा। कोटिन पापदेत अतिपीरा ६२ कबित्त॥ मोरपँखा शिरऊपर राजत केशर खौरदिये रचिभालहि। अंजनसे दोउरंजित कीनेजु खंजन कंजसे नैन विशालहि॥ गोलकपोलनपै कलकुण्डल रूपअनूप प्रताप रसालहि। रेमनमंद अनंदको कंदतू क्योंनभजै नँदनन्द गोपालहि ६३ दो०। मूरतिनिष्ठा सुभग अति वर्णन कीन्ही जोइ। तामें जे निष्ठितभये वरणिकहौं कछुसोइ ६४॥

चौ०। प्रथमहिं नाम देवकी गाथा। बरणौंनाइ रामपद माथा॥ ज्ञान देवके शिष्य कहाये। भक्तिमार्ग जगमगफैलाये ६५ बालापनसों तनमन दीन्हा। भगवतको निजबश करिलीन्हा॥ जासु जन्म भगवतके अंशा। जाको श्रुति नितकरहिं प्रशंसा ६६ ताको यह वृत्तान्त सुहायो। पंडरपुर जो ग्राम कहायो॥ वामदेव छीपी इकरहई। भगवद्भक्ति वचनमन गहई ६७ ताकी कन्याबुद्धि प्रवीना। बालापन विधवा विधिकीना॥ द्वादश सम्वतकी शुनिबाला। वामदेव कह वचन रसाला ६८ पुत्री सुनौ वचन ममयेहा। भगवत सों कीजै निजनेहा॥ जो इच्छाकरिहौ मनमाहीं। तिन प्रताप कछु दुर्लभ नाहीं ६६ सुनि कन्या मनभो विश्वासा। हरिपद सेवत सब सुखवासा॥ अल्पकालहर्पितहरिभयऊ। सकल मनोरथ पूरणकयऊ७०भोगेच्छा भगवतसों कीन्हा॥

तुरतहि आइ सुरति हरि दीन्हा ॥ ताके भयो गर्भको वासा ।
सब पुरमहँ यह भयो प्रकासा ७१ वामदेव सुनि नगर चवाऊ।
आयो मन संसारीभाऊ ॥ कन्यासों बोले रिसपागी। काहभयो
यह मंद अभागी ७२ कह कन्या सुनिये पितु ज्ञानी । जो तुम
प्रथमहिं कहा बखानी ॥ इच्छा तव मनमें जो होई। पूरणकरहिं
सकल हरि सोई ७३ ताते पितु सन्देह न कीजे। भयो सो भग-
वतसों गुनिलीजे ॥ वामदेव या विधि सुनि बानी । मग्न प्रेम
तन दशा भुलानी ७४ भयो पुत्रको जन्म सुहायो । वामदेव
निज भवन लुटायो ॥ धन सम्पति जेती गृह माहीं । हर्षविवश
राखा कछु नाहीं ७५नामदेव असनाम बखाना । प्राणति अधिक
तिनहिं प्रियजाना ॥ जिन अयोग्य यह निजमन जानी। वे वि-
श्वास हृदय निजआनी ७६ वामदेव निज मनमें सोधा । कीन्ह
पुराणनसों पुनिबोधा ॥ जोजिमि भगवतमें मनलावै। सो तिहि
भांति अवशि फलपावै ७७ वामदेव निज मनयह गुनिकै ।
कियसन्देह दूरितम धुनिकै ॥ भगवत धरत भक्तहित देहा।
जियालाल यहनाहिं सन्देहा ७८ नाम देवको जन्म सुहावा ।
मैं वर्णन कीन्हों सुखछावा ॥ अब वरणौं तिन चरित सुहाये।
भांति अनेक भक्त मनभाये ७९ नामदेव जी अति सुखदाये ।
बालापन सों हरि मन लाये। हरिआराधन खेल सुहाये ॥ खेल
त भगवत मूर्त्ति बनाये ८० पूजत महामोदसों भरिकै। नाना
विधि आभूषित करिकै ॥ पूजत वामदेव को देखी। दिन प्रति
मांगत मूर्त्ति विशेखी ८१ पर न देत सो बालक गुनिकै। प्रेम
बढ़ावत सो पुनि पुनिकै ॥ एक दिवस की बात सुहाई। वाम-
देव बोले सुख पाई ८२ कोऊ ग्राम जातहौं अहऊं। चारि
दिवस तामों थिर रहऊं। तुम सेवा पूजा नित कीजो ॥ भगवत
को भोजन शुभ दीजो ८३ करैं भोग तुव अंगीकारा । तौपूजा
सौंपौं सुखसारा ॥ नामदेव सुनि आनंद पाये । भगवत सेवा
में मन लाये ८४ वामदेव सब रीति बताई। भगवत सेवा

की समुझाई ॥ आपुगये तिहिग्राम सिधाई। नाम देव पूजामन लाई ८५ संध्या समय सहित अनुरागा। भगवत सेवामें मन लागा ॥ जबतक गौबनसों नहिंआई। तबतक आपुगये तहँ धाई ८६ हर्ष सहित ताको गृहलाये। अविलंबित तिन दुग्ध लगाये ॥ सुंदर छानि उष्णद्रुत कीन्हा। मिश्रीडारि पात्र धरि लीन्हा ८७ लैभगवत के सौंहीं गयऊ। पर बहु भांति डरत मन भयऊ ॥ मोसनभयो नहो अपराधू। जो मनधारैं बुद्धि अगाधू ८८ इहिविधि डरतडरत तहँ गयऊ। आगे धरतकटोरा भयऊ ॥ पर भगवत पीन्हों नहिं जबहीं। भये उदास अमित मन तबहीं ८९ हाथ जोरिकरि विनय सुनायो। पीजै पय सुन्दर मैं लायो ॥ मिश्री अधिक परी है यामें। सुन्दर स्वाद प्रगट है जामें ९० निजसेवक गुनिपीजै स्वामी। बारअनेकनमा मिनमामी ॥ पीन्हजबनतबरोवन लागे। अमित भांतिकरुणा रसपागे ९१ इहिविधिबीति गयेदुइदीना। सन्मुखठाढ़ेरहे मलीना ॥ तीसर दिवस भयोइमि जबहीं। अधिक उदासभयो मनतबहीं ९२ नामदेव मनकीन्ह बिचारा। नाना मम ऐहै इहिबारा ॥ जो नहिंछीरपियैं भगवाना। पूजाकरनदेइनहिंनाना ९३ बारबार बिनती पुनिकीन्हा। मानाजबनछुरी तबलीन्हा ॥ छूरीलैचहकंठ लगावन। निरखि हाथपकरो मनभावन ९४ अतिविश्वासभक्त करदेखी। लागेपीवन दूधबिशेखी ॥ एकहाथछूरी गहिलीन्हा। दूजे हाथकटोराकीन्हा ९५ दो० । पीवतमें भगवानके रहोस्वल्पज-क्षीर। नामदेवतबमुदितमन कहेवचनधरिधीर ९६ चौ० ॥ त्रिदिनक्षुधित बीतेमोकाहीं। इतनाहूदेहौअमनाहीं ॥ हँसिभगवानाति-नहिंसोदीन्हा। नामदेव द्रुतकरगहिलीन्हा ९७ अधरामृतसमेत हरिकेरा। कीन्होपानदूधतिहिबेरा ॥ इहिविधि नामदेव सुखसा-रा। कियप्रसन्न दशरत्थ कुमारा ९८ आयोनामदेवको नाना। सुनिचरित्र अतिशय सुखमाना ॥ नामदेवसों कहो बुझाई। हमहूं को हरि देहु दिखाई ९९ नामदेव सुनि मन सुख कयऊ।

लै पय हरि के सौहीं गयऊ ॥ कछुक विलम्ब कीन्ह हरि जबहीं। लीन्हों काढ़ि छुरी वह तबहीं १ देखि छुरी हरि पीवन लागे। वामदेव निरखे सुख पागे ॥ धन्य धन्य निज जीवन जाना। वामदेव अतिशय सुखमाना १०१ प्रगटितभई दूरि लगि बाता। नामदेव मिश्रित हरि जाता ॥ यह सुधि बादशाह सुनि पायो। नामदेव कहँ तुरत बुलायो २ कहो कि ईश्वर मोहिं दिखावौ। जाके दर्शन तुम नित पावौ ॥ निज सिद्धाई मोहिं दिखैये। बहुरि आपने मन्दिर जैये ३ नामदेव बोले सुनि एहा। महाराज सुनु सहित सनेहा ॥ जो मोमें होती सिद्धाई। छीपी कर्म कि करते भाई ४ द्वार हमारे आवत कोऊ। करते अशन बाँटि जन दोऊ॥सो सुनि आरहु लीन्ह बुलाई। और न मोमें कछु सिद्धाई ५ बादशाह कह यह न बसाई। मरी गऊ यह देहु जियाई ॥ नाहिं त काटि तोर शिर लेहौं। जीवत भवन जान नहिं देहौं ६ नामदेव सुनि हर्ष बढ़ायो। तुरितहि एक विष्णुपद गायो ॥ गावत उठी गऊ सुख पाई। बादशाह मन अचरज लाई ७ आयो नामदेव की शरणा। शीश नवाइ परो पुनि चरणा ॥ बोला हाथ जोरि तिन आगे। नाना भांति वचन अनुरागे ८ मांगहु राज कोश धन धामा। गज रथ हय पालकि सुख सामा ॥ सो मैं देहुँ रहित सन्देहा। नाम देव बोले सुनि एहा ९ दो०। हमहिं कछू नहिं चाहिये विदा मात्रकी चाह। सुनि सुवरणमय पलँगइक दीन्हो शाहन्शाह १० चौ० ॥ पठवन हेत भृत्य बहु दीन्हे। विनय समेत विदा पुनि कीन्हे ॥ नामदेव मारगमें आई। सब लोगनको दीन्ह घुमाई ११ दीन्होडारि पलँगसो सरिता। आपु गये मन्दिर मुदभरिता ॥ बादशाह या विधि सुनिपायो। सोई पलँगा मांगि पठायो १२ नामदेव मनकीन्ह विचारा। सरित जाइ बहु पलँग निकारा ॥ नाना रङ्ग रूप बहु भांती। जेमनुजन पहँ गढ़िन जाती १३ लोगन पहँ बोले यह बानी। आपन पलँग लेहु पहिचानी ॥ बादशाह सुनि या विधि हाला। चरणन

परो आइ ततकाला १४ दो० नामदेव कह सुनहु यह अब न बुलाउब मोहिं। दुख न दीजियो संतको यहौ सिखावौं तोहिं१५ नामदेव इक दिन सुखकारी। पंडरपुरको गये सिधारी॥ ठाकुर द्वार दरश हित गयऊ। तहँ बहु लोग देखि भ्रम भयऊ १६ कटितट बांधि उपानह लयऊ। दरश हेत मन्दिर बिच गयऊ॥ कोऊ लीन्ह उपानह देखी। मंदिरसों दिय काढ़ि विशेखी १७ मंदिर पृष्ठ बैठ सो जाई। दरश न पाये मन बिकलाई। हाथ जोरि किय विनय महाना। कीर्त्तन पुनि कीन्हो सुखदाना १८ कीर्त्तन सुनिहरि अति अनुरागे। कान लगाइ सुनन सो लागे॥ नामदेव दिशि मन्दिर भयऊ। कीन्हो दरश सकल दुख गयऊ १९ देखि महन्त आदि सब लोगा। चरणन परेआइ सहसोगा॥ कहे कि क्षमियो मम अपराधू। तुमहरिजन मति बुद्धि अगाधू २० दक्षिण मुख मंदिर तब तेरे। भक्त हेत करुणानिधि फेरे॥ करुणानिधिकी कृपा महाई। जियालाल किमि बरणि लहाई २१ एक दिवस यह भयो चरित्रा। नामदेवके भवन पवित्रा॥ लागी अनल कराल विशेखी। नामदेव हरषे यह देखी २२ बचीवस्तु घरमें कछु जोई। दीन्हो डारिशिखीमधि सोई॥ कहो करौ सब अंगीकारा। सुनि बिहँसे भगवत सुखसारा २३ कह मोको तेजहु मो जोहै। अपरदोसरो तुम बिन को है॥ प्रभु बिहँसे प्रसन्न अति भयऊछाइ भवन निजकर सों दयऊ२४लोगन देखि कीन्ह सन्देहा। याविधि को छायो घर एहा॥लेत मँजूरी सो किहि भांती। नामदेव बोले सुख पांती २५ लेत मँजूरी कड़ी महाना। प्रथमहिं तनमन चहत निदाना॥ तिहि पीछे दरशन वह देवै। कारज सकल सिद्धि करिलेवै २६ जियालाल जेहरि मन देवैं।तिनके कार्य सिद्ध किन होवें॥एक समयको चरित उदारा। पंडरपुर इक शाहूकारा २७ तुलादान किय सुवरण केरा। बाँटो सकल नगर चहुँफेरा॥ नामदेवहू काहँ बुलायो। नामदेव यह कहि पठवायो २८ हमको चाह द्रव्यकी नाहीं। बांटौ तुम

सब औरनकाहीं॥बेरतीसरी फेरिबुलाये। तब तो नामदेवचलिआये २९ शाहूकारा नंदित भयऊ। वचन वहोरि कहन इमिलयऊ॥ कछुक आपहू सुवरण लीजै। महामोद मेरेमन दीजै ३० नाम देव मनकीन्ह बिचारा। यामनभो श्रीगर्व अपारा॥ ताकोदूरि करौं मैं आजू। प्रगटौं रामभक्ति करसाजू ३१ यह मनगुनि तुल सीदल लीन्हा। लिखिरकारता ऊपर दीन्हा॥ याभरि सुवरण मोकहँ दीजै। शाहूकार जगत यशलीजै ३२ शाहूकार प्रथम इमिबोले। जिमिबलि वामन वचन अमोले॥ वारिधि मथन सुराऽसुर कीन्हा। चौदहरत्न काढ़ितहँ लीन्हा ३३ श्रीमणिरंभा वारुणि नामा। अमिय शंख गजपति सुखधामा॥ शशिधनु धेनु कल्पतरु जोई। धन्वंतरि हय गरलहु सोई ३४ तेरह रत्न बांटिसब लीन्हा। अमृतदेखि विषममति कीन्हा॥ धन्वंतरि कर अमिघट देखी। धाये असुर लिप्सि विशेखी ३५ अतिबल स-हित छीनि तिनलीन्हा। बहुरि विवाद परस्पर कीन्हा॥ बली अवलसों लेत छुड़ाई। तासों अपर लेत द्रुतधाई ३६ यह चरित्र देवन अवलोका। मन में प्रगटभयो अतिशोका॥ जाइ विष्णु सों कहो बुझाई। अमित दीनता प्रगटि जनाई ३७ कहो विष्णु धीरज मनदीजै। मन में कछु शोचजनि कीजै॥ हम अपनी मायाको रचिकै। साधहिं कार्य सकल सुख सचिकै ३८ भये विष्णु कहि अंतर ध्याना। प्रगटे योषिद्रूप सुजाना॥ परमाद्भुत वपु वरणि नजाई। जियालाल कविमति सकुचाई ३९ श्यामो त्पलसम अंग सुभग अति। कर्ण समाना भरण हरतमति॥ सुभगानन कपोल कुचनासा। कृशोदरी नवयुवा प्रकाशा ४० सुखकी सुरभिपाइ अलि धावत। नयन कटाक्ष सुभग दरशा-वत॥ सोहत केश सुभग अतिनीके। धारितमाल मल्लिका जीके ४१ कंठाभरण ग्रीव शुभ राजत। सुभुजांगद भूपित अति साजत॥ विरजाम्बर संवीत सुहाये। कांची सहित नितम्ब महा ये ४२ किंचिद्धास ब्रीड़युत राजत। भ्रूविलास अति शोभा

साजत ॥ चितवनि कामोद्दीपन करणी । सकल दैत्य यूथप मन हरणी ४३ लरत असुर सब अमृतकाजा । तबलौंतीय लखी शुभसाजा ॥ अहोरूप सुन्दर वयजासू । पूंछतभये निकट गत तासू ४४ कोतुम कमल नयनि सुकुमारी । कहांजाहु काइच्छा धारी ॥ किहि बामोरु काकी जाई । मथत चित्त मन्मथ बरिआई ४५ दो० । सिद्ध सुरासुर चारणन गंधर्वनके माहिं । नरन मध्य किमि रूपयह लोकेशन के नाहिं ४६ सो० । निश्चय हम यह जान हेसुभ्रू देहिन हितै । पठई हंस विमान·तुमहिं इन्द्रिमन वश करन ४७ चौ० । सो हम तुमसों भापन एहा । सुनहु वचन सो सहित सनेहा ॥ एकवस्तु कारण हमलरहीं । ज्ञातिवद्ध वैररुट भरहीं ४८ हम कश्यपके तनय सुहाये । सबमिलि श्रम करिकै सोलाये ॥ दीजैबाँटि न्याययुत सोई । जामें रंचभेद नहिंहोई ४९ सुनिवाणी हरि योषिद्रूपा । हँसिबोले शुभ वचन अनूपा ॥ कैसे तुम कश्यप सुतह्वैकै । किय विश्वास पुंश्चली ज्वैकै ५० करत न पण्डित तिय विश्वासू । शालावृक समान हियजासू ॥ जेतीस्वैरिणि तिय जगमाहीं । कोऊमित्र अहै तिननाहीं ५१ त्यागहिं पुरुष करत रतिजोई । पुरुष नवीन माहँ मनहोई ॥ यह कहिकै किय किंचिद्धासा । नयन कटाक्षहु भौंह विलासा ५२ भये असुर मोहित तिहिबारा । लै अमृत घट हरि कर धारा ॥ पायो अमृत घट हरि जबहीं । या बिधि वचन कहत भे तबहीं ५३ साधु असाधु कराहिं हम जोई । सबको ग्रहण करनहै सोई ॥ भये असुर मोहित तिहिकाला । अंगीकृत किय वचन रसाला ५४ करि अस्नान हिये व्रत धरिकै । अनल होम कीन्हों मुद भरिकै ॥ दिय गोदान द्विजन सुख पाई । कियस्वस्त्ययन विप्र समुदाई ५५ पहिरि अंग निज वस्त्र सुहाये । बैठ कुशासनीन सुखपाये ॥ असुर देव पूरुब मुख करिकै । बैठे महा मोद सों भरिकै ५६ धूमा मोदित शाला माहीं । दीप माल शोभित बहुधाहीं ॥ ता माधि बैठ सुरा सुर देखी । किय कटाक्ष

तिय विष्णु विशेखी ५७ सुभग दुकूल श्रोणि तट राजत। मद विह्वल चख गज गति साजत ॥ नूपुर पुरट सोह रव जीकी। कुंभस्तन घट कर गति नीकी ५८ कीन्ह प्रवेश सुरासुर माहीं। अमृत बांटन हेत जहांहीं ॥ देखि रूप सुन्दर तिन केरा। मोह सुरासुर लहतिहि बेरा ५९ असुरन काहँ सुधा को दाना। सर्पन के समान प्रभु माना॥ अमृत यह गुनि तिनहिंन दीन्हों। पंक्ति भेद तिन असुरन कीन्हों ६० पंक्ती पृथक् दुहुनकी करिकै। बांटन लगे सुधा मुद भरिकै ॥ प्रथमहिं देव पंक्ति में गयऊ। तहां अमृत पुनि बांटन लयऊ ६१ दीन्हों वचन समय सो पालत। तूष्णी असुर लखत नहिं चालत ॥ तिय सों करि नहिं सकत विवादा। निंदित जग में अति दुर्वादा ६२ बँधे नेह मोहिनि सब वीरा। कछु न कहत बैठे रणधीरा ॥ यह चरित्र स्वर्भानु जु देखा। गोसुर संसदि करि सुर भेखा ६३ पीवन सोम जबहिं मन लायो। सोम सूर्य द्रुत हरिहि बतायो ॥ हरि यह जानि चक्र झट लैकै। काटो शीश पिवत तिहि ज्वैकै ६४ गिरो कबंधामृत बिन पीन्हें। शीश अमर गुनि अज ग्रह कीन्हें ॥ सोई पर्व पाइ दुखदाई। चंद्र सूर्य पहँ आवत धाई ६५ अमृत पान देवतन कीन्हा। देखत विष्णु रूप निज लीन्हा ॥ असुरन्ह के देखत भगवाना। योषिद्रूप तजो सुखदाना ६६ सो०। सुरनामिय इमि पीन्ह सो फल पाये सकल विधि। पदरज नित मन दीन्ह असुरन ताते दुख लहे ६७ दो०। जे असु वसु मन कर्म वच देहात्मज तिय आदि। गुनत पृथक् इहि असतको तब लग हैं दिन वादि ६८ एक ईश को रूप है द्वितिय कछू है नाहिं। मूल निषेचन के किये जात शाख दल माहिं ६९ अपृथक् सोई जानिये जग जाने हरिरूप। हरि मेंही सब जानिये है यह भाव अनूप ७० जैसे चंद तड़ाग में छाया लखिय अनूप। ऐसेही संसार में जानिय ईश स्वरूप ७१ जैसे चंद तड़ाग में मिथ्या रूप लखाइ। ऐसेही संसार में व्यापे हरि

सब ठाँइ ७२ जिमि शशि अपनी किरण सों औषधीन रस देत। तिमि सत्ता परकाश सों हरिजन दुख हरि लेत ७३ जिमि सर बिधु छाया निरखि नभ बिधु देखै कोइ। सत्ता तिमि लखि जगत में ईश चरण लखु जोइ ७४ या बिधि सुर जानै हरिहि ताते अमृत पाव। हरि करुणा कर दानि मणि जिथालाल तिन गाव ७५ चौ० ॥ या बिधि दैत्यन अमृत न पावा। अपन जानि हरिसुरन पियावा॥ इमि पूरण करि देवन कामा। बैठिवीशगे हरि निज धामा ७६ दैत्यन देखि सुरन की बाढ़ी। उपजी हृदयमहा रिसगाढ़ी ॥ लीन्हे सब आ-युधतिहि बारा। देवनहूं लखि अस्त्रसँभारा ७७ अमृत पिये बली सुरसर्वा। हरिहिसुमिरि रणचले सगर्व॥ लागे करन सुरा-सुरयुद्धा। अस्त्रशस्त्र छांड़त ह्वै क्रुद्धा ७८ भयो तहां देवासुर नामा। दारुण महाकठिन संग्रामा॥ कूलपयोनिधि अति सुख दाई। तुमुल रोमहर्षण कविगाई ७९ तहांपरस्पर क्रोध बढ़ाई। लगे लरन निजधनुष चढ़ाई ॥ नानाअस्त्र शस्त्र विकराला। छोंड़तभये सुरासुरहाला ८० दो०। शंख तूर्य भेरी डमरु शब्द मृदंग महान। करि हय रथ पैदर नदत तिनको प्रगटोजान ८१ रथी रथीसों लरतभे पत्तीपत्ती जोइ। हय हय सों इभसोंकरी उष्ट्र उष्ट्र लखिसोइ ८२ सज्जत संयुग के बिषे याविधि बाहन पाइ। खर चढ़िकोऊ गौर मृग ऋक्षदीपि सहजाइ ८३ कोऊ शाखा मृग सहित कोऊ गृध्रसमेत। कोऊ वककौश्येनयुत भास तिमिंगिल लेत ८४ चौ०॥ सरभसवार कोउ भटभयऊ। कोउ महिषचढ़ि रणमहि गयऊ ॥ कोउ वृष पक्ष गवय चढ़िधाये। शिवाआखु कृकलास सुहाये ८५ शश नरवस्त कृष्णमृग चढ़ि कै। धाये शूकर हंसन बढ़िकै॥ जलथल के खग सत्वमहाना। विग्रह विकृत भयंकर नाना ८६ दोनों सेन सुरासुर माहीं॥ शोभित अस्त्र दिसे चहुघाहीं॥ चित्रध्वज पट अमल सुहाये। आतपत्र सित सुखद महाये ८७ चामर व्यजन महाधन पूरे।

वज्रदंड शोभित अति रूरे ॥ वातोद्धूतोत्तर उष्णीषा। कुंडलवर्म सूक्शुभभूषा ८८ सूर्य्यरश्मिलागत जबआई। चमकि उठन सहास्र समुदाई ॥ दानव देव वीर कटकाई। सागर मधि यादस समगाई ८९ वैरोचन बलितिहि संग्रामा। असुर चमूपति सब गुण धामा ॥ वैहायस विमान तिहिनामा। कामग मयनिर्मित सुखधामा ९० सांग्रामिक सब सहित सुहावा। सर्वाश्चर्य मयी मनभावा ॥ अतर्क्य अनिर्देश्य दृशमाना। बहुरि अदर्शन सर्व गयाना ९१ तापर चढ़ि वैरोचन वीरा। आवृत सर्व अनीकप धीरा ॥ वालव्यजन छत्रअति सोहत। चंद्रोदय इवलखि मन मोहत ९२ दो०। ताके संगहि यूथपति चढ़े असुर बलधाम। आवृत करि तिन के रथहिकहौं कछुनके नाम ९३ चौ०। शंबर नमुचि बाण अति योधा। विप्रचित्ति साजो करिक्रोधा ॥ चलोद्विमूर्द्धयोमुख साजी। कालनाभ इल्वल युतगाजी ९४ हेतिप्रहेति शकुनि युतराजे। बहुरिभूत संतापहुसाजे ॥ वज्रदंष्ट्र सजसहित विरोचन। हयग्रीव अरुचक्र विलोचन ९५ शंकुशिराअरु कपिल सुहायो। मेघ दुंदुभी तारक धायो ॥ उत्कलशुंभ निशुंभ समेता। मय त्रिपुराधिप भट मुदकेता ९६ पुनिपौलो मारिष्टहु आयो। बहुरि अरिष्ट नेमि सुखछायो ॥ कालेया निवात कवचादी। आये सकल वीर रणवादी ९७ अमृत पान सुरन सब कीन्हा। दैत्य न काहँ रंचनहिं दीन्हा ॥ ते सर्वासुर अतिरुट धारी। धाये देवनकाहँ प्रचारी ९८ सिंह नादकरि बारहिं बारा। अतिरव शंख कीन्ह धुधुकारा ॥ याविधि असुरन क्रोधितदेखी। देवराज किय क्रोध विशेखी ९९ ऐरावतादि करिपर चढ़िकै। शुशुभे इन्द्र अग्रदल बढ़िकै ॥ मानहुं सूर्य्योदय गिरि ऊपर। शोभित भे सुरपतिकरि भूपर २०० तिन के चहूं दिशा सुर ठाढ़े। नाना वाहायुध बलबाढ़े ॥ लोकपाल सहगण सबआये। वाय्वग्निहुवरुणादिसुहाये २०१ या विधिरणउत्साहहि धारी। वीरवचन बोलत सुखकारी ॥

आह्वयंतक्रोधित अतिभारी। युयुधुर्द्वन्द्वयोाधिरुटधारी २०२ दो०। तारकेण गुहलरतभे बलिरिंद्रूणयुयोध। हेतीसों जलपति भिरे मित्रप्रहेतियुयोध २०३ चौ०। यमसोंकालनाभ रणठाना। विश्वकर्म मयसों सुखमाना॥ शंबरत्वष्टा लरनसुलागे। सविता सहित विरोचन गाजे २०४ अपराजित अरुनमुत्रि सुहाये। वृषपर्वण अश्विनौ महाये॥ सूरजकीन्हो समर अकूता। बलिसुत वाणज्येष्ठशतपूता २०५ राहुसमेत सोमरणठाना। अनिलपुलोम्नाअति सुखसाना॥ शुंभनिशुंभ समेतमहाना। देवीभद्रकालि रणठाना २०६ जंभ समेत वृषाकपिवीरा। महिषासुर विश्वावसू धीरा॥ इल्वलाख्वातापि समेता। कामदेवअजसुतमुदसेता २०७ उत्कलमातृ समेतसुहाये। बृहस्पतिश्चोशन सुखपाये॥ नरकसमेत शनिश्चर लरहीं। मरुतनिवातकवच रणकरहीं २०८ वसवलरतकालेय समेता। विश्वदेव पौलोमसहेता॥ रुद्रक्रोधवश गणसहलरहीं। नानाभांति पराक्रम करहीं २०९ या विधिसमर सुरासुर जुटिकै। अस्त्रप्रहार करतभट छुटिकै॥ जोरीसों जोरी सब वीरा। भिरिआयुध मुंचतरणधीरा २१० निजनिज विजय मनोरथ करिकै। नानाअस्त्र तजत मुदभरिकै॥ असिभुसुंडितोमरहुनराचा। चक्रगदर्ष्टियागि रणराचा २११ पट्टिशशक्त्युल्सुकादि तजिकै। प्रासपरश्वधादि रणसजिकै॥ परिघभल्लनिस्त्रिंशसमेता। मुद्गर भिंदिपालदुखकेता २१२ त्यागि त्यागिआयुधसुद भरिकै। शिरउरकर छेदनरुटधरिकै॥ गजतुरंग रथकटेअपारा। गिरेपदाति अमित रणधारा २१३ दो०। सहारोहवाहन विविध खंडित परेअचेत। शिरधरबाहूरूकटे रणमहि शोभा देत २१४ करपदांगुली केशनख ध्वजे पताशतनुत्राण। तनुभूपणआदिकसवै भिन्नहोत लगिवाण २१५ रथपदरजकूसो अति धाई। काष्ठावियत रविहिलियछाई॥ अंधकारअतिभयो अपारा। सूझन आपन हाथ पसारा २१६ छन्दरामगीतिका॥ भईपूरित मेदिनी शिरकुंडलन युतताहँ। सहित मुकुटकिरीट झलक जराय

जरितसुजाहँ ॥ हटितदृक्परिदष्टदच्छद सामरण भुजसोह।
सहायुध अँगरागलेपितपरे प्रगटत मोह २१७ चौ०। अमितक
बंधतहां भयकारी। धावतरणविचस्वाशिर निहारी॥ उच्यतअस्त्र
भुजनसों गहिकै। मारतभटनमहामुद लहिकै २१८ बहुतागंडक
बंध कराला। धायेमर्दत कटक विशाला॥ हयगजरथभटअग्रजु
पावैं। करिचूरण महिछारमिलावैं २१६ बलिमहेंद्र अतिशयरण
ठाना। छोड़त नानायुधवर बाना॥ दशशर बलिमहेंद्र के मारा।
ऐरावतहि तीनिखरधारा २२०चारिबाणचहुपदअतिधारा। एकेना
रोहंद्दतकारा ॥ तिनहिं बिलोकि भन्नहरिमारी। काटिभूत धात्री
माधिडारी२२१याविधि कर्म इंद्रकोदेखी। कियदुर्मर्पा मर्प विशेखी॥
शक्तिमहोल्काभांति कराला। ज्वलत अग्निसममहा विशाला
२२२ मारनहेतहस्तनिजधारा। देखत इन्द्रकाटि महिडारा॥ तोमर
प्रासशूल कर लीन्हा। काटिसुरेश डारिमहिदीन्हा २२३ या
विधि जोसो अस्त्र चलावा। तुरित शचीपतिकाटि खसावा॥
इहिविधि आसुर हरिबलदेखी। भोद्दत अंतर्धान विशेखी २२४
प्रगटत भयो आसुरी माया। प्रगटे गिरि सुर कटक निकाया॥
वर्षनलगे वृक्षदल माहीं। जरत अग्निकी ज्वाल भ्रमाहीं २२५
शिलासटंक शिखरबहु परहीं। चूर्णीभूत देव दलकरहीं ॥ महा
उरग पुनि वर्षतभारे। दंदशूक वृश्चिक भयकारे२२६सिंह व्याघ्र
वाराह समेता। मर्दत महा गजन दुखदेता ॥ यातुधानि कर
शूलहि धारी। वस्त्र विहीन शतन भय कारी २२७ छिंधि भिंधि
इति वचन पुकारत। प्रगटे बहुराक्षस दुखकारत॥ छाये महामेघ
आकाशा। परुप स्वनौ भीम कृतत्राशा। २२८ वर्षन लागे विवि
ध अँगारा। तड़कत विद्युत वायु बलधारा ॥ प्रगटित दैत्य महा
शिखि कीन्हा। सांवर्तक इव देवनचीन्हा २२६ तदुपरि बढ़े
समुद्र अपारा। प्रगटत बीचि महा खरधारा॥ अति प्रचण्ड मारु
त तिहिवारी। लागी चलन महा भयकारी २३० याविधि दैत्य
रचित लखि माया। भे व्याकुल सबदेव निकाया॥ तत्प्रति विधि

इन्द्रादिन जाना । जानि झटित प्रगटे भगवाना २३१ सुपर्णांस कृत चरण सुहाये। पीत बसन चख कमल लुभाये ॥ आठभुजा सायुध सुखकारी।कौस्तुभमणिअनर्घ्यमुदधारी २३२ शुभकिरीट कुंडल सुखछावन। आये हरि निजजन मन भावन ॥ जाक्षण हरिता दलमधि आये। माया सर्बा सुरी नशाये २३३ जाबिधि कोउस्वप्न दुखपावै। जागतही सब दूरिबहावै ॥ तिमिहरि देखि सकल दुखभागे। भयेदेव सर्बानँद पागे २३४ सो० । गरुड़ बाह नहिदेखि करि अरिबाहन शूलगहि। मारोतुरित बिशेखि देखि पततहरि गरुड़ शिर २३५ लीलासों गहितौन कालनेमि बाहन सहित । बधिडारो महिजौन देवनको दुखदेत भो २३६ दो० । मालि सुमाली युद्ध हितआये देखतधाइ।प्रेरिचक्र हरिखंडि शिर दीन्हो भूमिगिराइ २३७चौ०।अति हर्षितसुर भये महाना।।निज पर कृपादेखि भगवाना॥ मारनलगे अस्त्रनिज लैकै।नाना भांति पराक्रम कैकै २३८ वैरोचन हित अति रुट करिकै। धाये इन्द्र वज्र निज धरिकै ॥ हाहा कार भयो तिहि बारा । हरि बलिसों इमि वचन उचारा २३९ नटवन्माया मूढ़सवांरी। जीता चहत सकल सुरझारी ॥ माया रचिइच्छा जे करहीं। हम सुरलोकजाइ मुदभरहीं २४० तान्दस्यून्विधुनोमिमहाना । पूर्बस्माच्च पदा दधजाना ॥ सो मैं तव दुर्मायिन काहीं। डारौंकाटि शीशभूमाहीं २४१ याविधि वचन इन्द्रके सुनिकै। बोले बलिहु वचन मनगु-निकै॥ इहि संग्राम भूमिमें आई। प्रेरित कालकर्म बरिआई२४२ कीर्तिजय अरु अजय महाना। मृत्यु आदि सबनुक्रम जाना॥ तौन काल रसना यह सोई। देखत रण पंडित जे कोई २४३ छन्दगोपाल। नहिं शोचत नाहिं हर्षत तौन। तुममूरुष इमिभाख तजौन॥तुम येवचन कहतहौ जोइ । साधु शोच्य हम गुनतन सोइ २४४ दो०।इमिकहि बलिनाराच धनुकर्णलंबित तानि॥ मारो इन्द्रहि लगतहरि लीन्ह वज्ररुट ठानि २४५ चौ० । मारो इन्द्र वज्रबलिकेरे। गिरे धरणि व्याकुल रथतेरे॥ छिन्न पक्षइव

अचलसमाना। आये धरणि वीर बलवाना २४६ जंभासुर बलि सखा सुहायो। मित्रहि गिरो तुरित लखि धायो ॥ सिंहवाहसो गदा सुधारी। जन्तु स्थल हरिके द्रुतमारी २४७ ऐरावतहि गदा पुनि मारा। लागेसो तन दशा बिसारा ॥ गदा प्रहार व्यथित गज भयऊ। ह्वै विह्वल कश्मल अति लयऊ २४८ जानु टेकि धरणी तल आयो। देखत रथ मातलि द्रुत लायो ॥ रथ सहस्र सों आवृत सोई। कांची शब्द तहां अति होई २४९ तुरित त्यागि गज रथ असवारा। होत भये सुरपति तिहि बारा ॥ जंभासुर इंद्रहि रथ देखी। ज्वलितशूल पुनि तजो विशेखी २५० लागो सो मातलि के आई। देखि इन्द्र उर क्रोध बढ़ाई ॥ लीन्ह वज्र अति तीक्षण धारा। मारि काटि शिर उरवी डारा २५१ जम्भहि इन्द्र मृत्यु वश लाये। नारदऋषि उत जाइ बताये ॥ तासु ज्ञाति सुनि नारद बैना। क्रोधारक्त भये द्रुत नैना २५२ नमुचि पाक बल आदिक वीरा। धाये क्रोधवन्त रणधीरा ॥ इंद्रहि परुषवचन अति कहिके। मर्मस्थल मर्दत उर दहिके २५३ बाणन की बरषा अति लाई। गिरि पर मानहुँ मेघ महाई ॥ दशशतबाण तुरित तिनमारा। अतिलाघव अतिगौरुषधारा २५४ शत शर मातलि के तिन मारे। रथ सावयव न रञ्च उचारे ॥ सकृन्मोक्ष सन्धान नराचा। अत्यद्भुत रण मण्डल माचा २५५ बहुरि नमुचि उर क्रोधहि धारी। बाण पञ्चदश हने प्रचारी ॥ स्वर्ण पुंख युत बाण कराला। मारि मेघ सम गरजि विशाला २५६ दो०। चहुं ओर शर कूट सों सारथि इन्द्र समेत। लिये छाइ रथ अश्व युत देवन को भय देत २५७ चौ०। हाहाकार ऋभव गण कीन्हा। नायक बिन धीरज तजि दीन्हा ॥ जैसे वणिक भिन्न जलयाना। भये देव इमि दुखित महाना २५८ छन्द रामगीतिका। बद्ध पञ्जर सों शचीपति भये बाहर देखि। साश्वरथध्वजसाग्रणी सहसेन सुभग विशेखि ॥ रोचयन्निज तेज सूरज इव छपात्यय जानि। दिशाकाश वसुन्धरानृप

प्रजाहि जिमि सुखदानि २५९ चौ०। पृतना लखि शत्रुन सों खण्डित। लिय हरि बज्र क्रोधि रण पण्डित॥ तत्क्षण अष्टधार सो मारी। शिर बल पाक काटि महि डारी २६० दो०। नमुचि तासु बध देखि कै शोकामर्ष समेत। कीन्हों परमोद्यम तहां इन्द्रहि मारन हेत २६१ अश्मसारमय शूल गहि घण्टा बद्ध महान। भूषित हेमप्रगृह्य रुटि हत असि इबिधि बखान २६२ चौ०। त्यागो तुरित इन्द्र बध हेता। निनदन्मृगपति इव रण खेता॥ आवत सजव खमध्य निहारी। किय सहस्रधा हरि इषुमारी २६३ पुनि क्रोधित निज कुलिश सँभारा। ताकि नमुचि शिर मध्य प्रहारा॥ अति बल तजो इन्द्र पवि जोई। बेधि न सको त्वचा शिर सोई २६४ भयो परम अद्भुत यह सोई। त्वचा नमुचि शिर कटो न जोई॥ बज्र न काटिसको शिर काहीं। भे भय भीत इन्द्र मनमाहीं २६५ का यह भयो भूमि मधिआजू। लोक बिमोहन प्रगटो काजू॥ जौन बज्रलै गिरिपर छेदा। सोई आजु कीन्ह उर खेदा २६६ अति तप सार त्वाष्ट्र बलभारी। मारि बज्र सों दिय महि डारी॥ अपर महाबल दैत्य अपारा। मैं बहु बार काटि महि डारा २६७ सोई बज्र आजु मुँह फेरा। असुर अल्प ऊपर इहि बेरा॥ ब्राह्मण काहँ दण्ड नहिं दीन्हा। विप्र वृत्ति नाहिंन हरि लीन्हा २६८ इमि किय शक्र विषादअपारा। तबहिं शारदा काश पुकारा॥ सूखे ओदे सों नहिं मरिहै। वर्ष सहस्रन अति रण करिहै २६९ मैं याको दीन्हों बरसोई। सूखे ओदे मृत्यु न होई। ताते और उपाय विचारौ। हे संक्रन्दन शत्रुहिं मारौ२७० छन्दगोपाल। सुनि आकाश गिरा मघवान। मानसमें कीन्हों तब ध्यान॥ ध्यायन्फेना मनमें आव। करि विचार उर हर्ष बढ़ाव २७१ दो०॥ नहिंसूखो नहिं ओदयह करि मनमांह विचार। इंद्रफेन लै नमुचि शिर मारिकाटि महिडार २७२ चौ०। नमुचिहि इंद्र मारि महिडारा। लखि अस्तुति किय ऋषिन अपारा॥ फूलन की वर्षा बहुलाये। गंधर्वाधिप शुभगुण गाये २७३ देवन पुनि

दुंदुभी बजाई। अप्सरान किय नृत्य सुहाई॥ अपर देवता निज निज जोरी। कीन्हमहारण रारि न थोरी २७४ वायु अगिन वरुणादिक जेते। बली असुरमारे सबतेते॥ जिमि केशरी क्रोध करिधावै। क्षुद्रमृगा घधिभूमि गिरावै २७५ तैसे देव पराक्रम करिकै। असुरन बधत गिरत महि मरिकै॥ या विधिभो संग्राम महाना। जूझे अमित दैत्य बलवाना २७६ दो०। संक्षय असुरनको निरखि विधि नारदहि पठाव। वारण कीन्हो आइतिन पुनि विधि वचन सुनाव, २७७ तुम अमृत पायोसबै नारायण भुजछाहँ। शोभाबढ़ी अपार अब त्यागिय विग्रहकाहँ २७८ सो०। सुनि नारदके बैन क्रोध त्यागि सब देवता। चले समर तजिऐन गीयमान अनुचरनकरि २७९ चौ०॥ रहे वशिष्ठा सुर रण जेते। पाइ नारदायसु सबतेते॥ लैबलिकोहँ अस्तगिरि गयऊ। तहां दैत्य गुरुदर्शन भयऊ २८० अवयव शीश हीन नहिं जिनको। भार्गव तुरित जियायो तिनको॥ बलिरुशनस कृपया सुखदाई। प्रत्यापन्नेन्द्रिय मतिआई २८१ यद्यपि बलि हारे रण भारे। तदपि खेद निज चित्तन धारे॥ लोक तत्त्वके जानन वारे॥ दुखसुख सम जग धिष्ण पनारे २८२ या विधि उशना बलिहि जियायो। तब बलि गुरु सेवा मन लायो॥ भृगुन केरि सेवा अति कयऊ। अर्थ निवेदन करत सुभयऊ २८३ ब्राह्मण भृगव बलिहि इमि देखी। तिनपर कीन्ही कृपा विशेखी॥ द्यो जीतन बलिके मन आयो। विश्वजिता तिन यज्ञ करायो २८४ महाभिषेक, कीन्ह सब विप्रा। भे बलितेज सहित अति छिप्रा॥ तबहिं सुभग कांचन रथ साजो। इंद्र तुरंग सरिस शुभ वाजी २८५ सिंहध्वज शोभित अति नीको। धनु छबि गोर मदाइनि फीको॥ पुरट नद्ध इषुधी द्वौ राजत। कवच दिव्य तन शोभा साजत २८६ माला अमल दीन्हप्रह्लादा। शुक्रजलज युतआशिर्वादा॥ याविधि विप्रार्जित रणसाजा। कल्पित स्वस्त्ययनहु सुरराजा २८७ कीन्ह प्रणाम

प्रदक्षिण कीन्हा। आज्ञापुनि गाह्लाद कि लीन्हा॥ कीन्हप्रणाम बहुरि शिरनाई। रथपर जाइचढ़ सुखपाई २८८ भृगुदीन्हो जो सुरथ महावा। तापर चढ़ि अति शोभा पावा॥ सुभगमाल धनु खड्ग बिराजत। इषुधीहेमांगद छबि छाजत २८६ मकराकृतकुण्डल मनमोहैं। हव्यबाट इवरथ बलि सोहैं॥ तुल्यैश्वर्य बलश्री धारी। यूथप दैत्य सहितभयकारी २९० नेत्रन सोंजनु पियतअकाशा। नेत्र दृष्टि जनुजारत आशा॥ लेइमि असुर सेन समुदाई। पहुँचे बासव पुरीमजाई २६१ मानहुँ रोदसि काहँ कपावत। बलि शचिपति पुर कहँ द्रुतआवत॥ याबिधि बलि देखा पुरआई। नानाशोभा बरणिन जाई २६२ शोभित उपबन अरु उद्याना। नंदनादि शोभित बननाना॥ कूजद्विहंग मिथुन बहुसंगा। गावत मत्तमधुव्रत अंगा २९३ सहित प्रबाल पुष्पफल भारैं। लचीं भूमि अमरद्रुमडारैं। सारसहंसचकोर सुहाये। चक्रवाक कारंडवछाये २९४ नलिनीपत्रमहासुखदाईक्रीड़ा करत देवतिय आई॥ गंगाकाश महासुख कारी। आवृत परिख भूतमुदधारी २६५ अग्निवरणप्राकार सुहावा। साद्दालउन्नतछबिपावा॥ पट्टकपाट रुक्ममयसोहत। गोपुर द्वार फटिक मयमोहत २६६ चत्वरसभारथ्य मनभाये। तहँबिमान कोटिन छबिछाये॥ शृंगाटक मणिमय अतिराजत। विद्रुमबज्रवेदिसुख साजत २६७ विश्वकर्म रचना सुखदाई। जियालाल किमि वरणि सिराई॥ यत्रनित्यबय रूपसुहाई। श्यामा बिरजाम्बर सुखदाई २६८ शोभित रूपवती इमिनारी। आर्चिसमेत अग्नि तनुधारी॥ कवरसुराख्रि भिन्नच्युतमाला। लगिखगलावतसुरभि बिशाला २६६ हेम जाल अच्छनि के द्वारा। धूमागुरु निकरत सुखधारा॥ पांडुर आतपत्र को छावैं। मारगचली अप्सराजावैं ३०० मुक्ताहेम मणिन सुवितानाः। केतु पताका वलभीनाना॥ पारावत अरुभृंग शिखण्डी। सुन्दर नादत नादा खंडी ३०१ वैमानिक तिय मंगलगाना। सुनतश्रवण छूटैंमुनि ध्याना॥

शंखानक डुंडुभिइ मृदंगा। वीणामुरज तालयुत अंगा २०२ अर्थिवे
ण आदिक वहु बाजा। नृत्य लगति युत गान समाजा॥ या
विधि पुरी महा सुख पूरी। निरखत होत सकल दुखदूरी २०३
जहां न पुरुषाधर्मी जाहीं। भूत द्रुह खल शठहू नाहीं॥ मानी
कामी लोभी जेई। यापुरकाहुँ न आवत तेई २०४ नाना देव
धानि सहसेना। गये विरोचन सुत बलसेना॥ चारो ओर घेरि
तिन लीन्हा। शुक्रदत्त दरसो रव कीन्हा २०५ महा शब्द मय
शंख बजावत। इन्द्रयोषितन भयउपजावत॥ जानि इन्द्र बलि
उद्यम एहा। मनमें बहु कीन्ही सन्देहा २०६ सबदेव गण सङ्ग
लवाई। गुरु सों वचन कहे इमि जाई॥ भगवन्पूर्व वैरिबलिरा-
जा। आये करि अविषह्य समाजा २०७ काके तेज बढ़ो बल
भारी। श्रीगुरु मोसों कहोविचारी॥ नाहिन कोऊजीतन वारो।
कौनो भांति महा बलभारो २०८ मुखसों पान करत धोजानो।
रसनासों चाटत दिग मानो॥ दाहत मनहुँ नयनदश आशा।
प्रलय अग्नि जनुकीन्ह प्रकाशा २०९ यह कारण ममकहोवु-
झाई। तेजओज सहबल अधिकाई॥ इहिविधि सुनतइन्द्रमुख
बानी। बोलिदेवगुरु सुखमानी २१० जानो मैं मघवन यहसर्वा।
जासों बलिआयं महगर्वा॥ दीन्होतेज शिष्यकवि जानी।
ब्रह्मवादि भृगुवंशिन ज्ञानी २११ तुमसम तुमससान जोसोई।
जीति न सकतईश बिनकोई॥ यम अरुकाल सदृश चलिआवें।
बलिसों जीत आज नहिंपावें २१२ ताते सकल देवगृहतजिके।
जितनित जाहुस्वर्ग तजिभजिके॥ अजितविक्रमविप्रप्रसादा।
बढ़ोतेज लंघित मर्यादा २१३ जो अपमान करेइन केरा। नासु
वंशनाशै इहिवेरा॥ गुरुके वचन सुनत सुरराजा। चलेजिते
निज जानि अकाजा २१४ जित तित देव भाजि सवगयऊ।
इन्द्रासन शोभित बलिभयऊ॥ जीति त्रिलोक स्ववशकरि ली-
न्हा। पाइ त्रिविष्ट पदस्वर कीन्हा २१५ जग विजयी निज
शिष्यहि गुनिकै। भार्गव यज्ञ कराया पुनिकै॥ शत हयमेधके

संकल्पा । करिक्रिय यज्ञ सहित शुभकल्पा ३१६ दो० । तदुपरि तिहि अनुभाव सो तीनो भुवन अनूप । कीर्त्ति दिक्षु विस्तृत भई शोभा जनु उडुरूप ३१७ सो० । बुभुजे भोग अनेक महीदेव कृपयातदा । तिहूंलोक में एक जानि आपको हर्षयुत ३१८ चौ० । गे सुर इत उत जबहिं पलाई । अदिति देव माता दुखपाई ॥ एक समय कश्यप गृह आये । अदितिहि मलिन देखि तहँ पाये ३१९ दीन बदन लखि पूंछीबाता । काहे मलिन भये तुवगाता ॥ कोऊअतिथि द्वारपर आवा । कागो बिमुख न बांछित पावा ३२० जाके भुवन अतिथि को आवै । अर्चित वार्यादिकहु न जावै ॥ फेरु राजगृह सम गृह तासू । जात पुण्य लै अघ दै जासू ३२१ की नहिं होम कीन्ह लखि बेला । ब्राह्मणाग्नि हरि सुख मख पेला ॥ कहौ कुशल हैं पुत्र तुम्हारे । प्रगटी संशय अमित हमारे ३२२ सुनि पति बचन अदिति कह बैना । सुनिये स्वामि सकल गुण ऐना ॥ बिमुख न ब्राह्मण अतिथि हुताशा । वृत्त सुतन को करौं प्रकाशा ३२३ आइ सपत्न जीति दिव लीन्हा । काढ़ि सकल मम पुत्रन दीन्हा ॥ पुत्रनको दुख देखि अपारा । मैं बूड़न लागी दुखधारा ३२४ शत्रुन सों रक्षा करि दीजे । पावैं पुत्र राज्य सो कीजे ॥ सुनि मारीच बचन तिय केरे । हँसि बोले हरि माया हेरे ३२५ अहोविष्णु मायाबलखानी । कीन्हों नेहबद्ध जगप्रानी ॥ कानात्मा भौतिक यहदेही । कात्मा माया परेसनेही ३२६ काके कौन पुत्रपति जाना । केवल कारणमोह बखाना ॥ आदि पुरुष सुंदर भगवाना । सुमिरौ तिनहिं होइ कल्याना ३२७ सोई कार्य सिद्धि तुव करिहैं । करि मनोर्थ पूरण सुख भरि हैं ॥ सुनिइमि अदिति जोरि कहपानी । पूजन विधि प्रभु कहौ बखानी ३२८ जामें शीघ्र द्रवैं भगवाना । होवै मम पुत्रन कल्याना ॥ सुनि कश्यप बोले सुख पाई । सुनो प्रियाव्रत केर उपाई ३२९ एक समय ब्रह्मा सों जाई । प्रजा कामना हेत उपाई ॥ पूँछा सोई कहव बखानी । केशव तोपण

व्रत सुख दानी ३३० फाल्गुन धवल पक्ष जब आवै। द्वादश दिवस पयोव्रत गावै ॥ भक्ति सहित पूजै हरि काहीं । राखि मनोरथ निज उरमाहीं ३३१ प्रथम दिवस सो या विधि कीजै । भगवद्भक्ति हृदय धरि लीजै ॥ सिनी वालि उठि ऊषसि काला । क्रोड विदीर्ण मृदालै हाला ३३२ लेपै देह माहँ लै सोई । ला-वत मंत्रपढ़ै यहजोई ॥ त्वंदेव्यादिवराहेणरसायाःस्थानमिच्छता उद्धृतासिनमस्तुभ्यंपाप्मानंमे प्रणाशय ३३३ मृदा लगाइ करै अस्नाना । पूजन करै वहुरि भगवाना ३३४ दो० । सूरज गुरु जल अगिन में पूजनसुभगवखान । अथवास्थंडिलके विषे पूजे हरि सुखदान ३३५ नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषायमहीयसे । सर्वभूत निवासाय वासुदेवायसाक्षिणे ३३६ नमोऽव्यक्तायसूक्ष्मायप्रधान पुरुषायच्चचतुर्विन्शद्गुणज्ञायगुणसंख्यानहेतवे ३३७नमोद्विशीर्षे त्रिपदेचतुःशृंगायतन्तवे । सप्तहस्ताययज्ञायत्रयीविद्यात्मनेनमः ३३८ नमःशिवायरुद्रायनमःशक्तिधरायच । सर्वविद्याधिपतये भूतानांपतयेनमः ३३९ नमोहिरण्यगर्भायप्राणायजगदात्मने योगैश्वर्यशरीरायनमस्तेयोगहेतवे ३४० नमस्तेआदिदेवायसा क्षिभूतायतेनमः । नारायणायऋषयेनरायहरयेनमः ३४१ नमोम रकतश्यामवपुषेधिगताश्रियेके शवायनमस्तुभ्यं नमस्ते पीतवा ससे ३४२ त्वंसर्ववरदःपुंसांवरेण्यवरदर्षभ। अतस्तेश्रेयसेधीराःपा दरेणुमुपासते ३४३ अन्ववर्त्ततयंदेवाः श्रीश्चतत्पादपद्मयोः। स्पृहयंतइवामोदं भगवान्मे प्रसीदताम् ३४४ चौपाई । इन मन्त्रन सों पूजन कीजै । आवाहनादि प्रथम करीजै ॥ पा-द्य अर्घ आचमन समेता । गंध माल्य आदिक सुख सेता ३४५ पयसों हरि अस्नान करावै । वस्त्राभरण सुगंध चढ़ावै ॥ धूप दीप नैवेद्य लगावै । द्वादशाक्षर मंत्र सुहावै ३४६ पक्वक्षीर नै-वेद्य बनावै । शाल्यन्नंविभवेसति लावै ॥ सर्पि सगुड़ नैवेद्य लगाई । करै होमपुनि हरिमन लाई ३४७ सो नैवेद्य भक्त कहँ देवै । वा आपै भक्षण करिलेवै ॥ वहुरि हरिहि आचमन करावै।

प्रेम सहित ताम्बूल खवावै ३४८ मंत्राष्टोत्तरशत जपिलीजै। अस्तुति बहुरिप्रदच्छिण कीजै ॥ मस्तक भूमि धारिपरनामा। करै दण्डवति हरिसुखधामा ३४६ धारै मस्तक परपुनि शेषा। करै विसर्जन बहुरिबिशेषा॥ द्वैवर बिप्रन भोजन दीजै। तिन आज्ञा लै भोजन कीजै ३५० या बिधि प्रतिदिन कीजै नेमा। पायस भोजन द्विजन सप्रेमा ॥ पायस भोजन आपहु कीजै। द्वादश दिवस नेमधरि लीजै ३५१ प्रतिपत्तिथ्यारंभण करिकै। त्रयोदशी लगि आनँद भरिकै ॥ ब्रह्मचर्य रहिकरभू शैना। मज्जन त्रिषवण करै सचैना ३५२ असदालाप भोगसब त्यागै। तजिहिंसा हरिपद अनुरागै॥ या बिधि त्रयोदशी जब आवै। पंचामृत सों हर्य्य न्हवावै ३५३ पूजनकरै बिबिध बिधि सोई। जासों हरिप्रसन्न अति होई॥ पूजै पुनि आचार्य्य सहेता। वस्त्राभरण धेनु युत देता ३५४ पुनिप्रसन्न ऋत्विज सब कीजै। स्वाद्वन्न युत भोजन दीजै॥ आवैं और बिप्रजे कोई। दीजै भोजन तिनको सोई ३५५बहुरिदच्छिणा गुरुको दीजै। ऋत्विज सकल सुखी पुनि कीजै॥ स्वपाकादि जे कोई आवैं। मान सहित अन्नादिक पावैं ३५६ पुनि आपहु सब बन्धु समेता। भोजन करै धारि हरिचेता॥ नृत्यगान युत अस्तुति करई।सुनै कहै गाथामुद भरई ३५७ या बिधि नामपयो ब्रत एहा। ब्रह्मा मोसों कहो सनेहा॥ सो यह प्रिये सुभग ब्रत कीजै। शुद्धभाव सों हरिमन दीजै ३५८ सकल ब्रतन उत्तम ब्रतमानौ। यज्ञन परेयाहि मनआनौ॥ तपन माहँउत्तम तपएहा। दानेश्वर तर्पण युतनेहा ३५६ सोई नियम सोइ यमजानौ। तपोदान ब्रत यज्ञहु मानौ॥ जासों हरिप्रसन्न द्रुतहोवै। होइ प्रसन्न मानस दुखखोवैं ३६० सुनि पति बचनादिति हरषानी। ब्रतहि करनदृढ़ मति उरआनी॥ करिमन बुद्धि एकहरि माहीं। कीन्हो तबहिं पयोब्रत काहीं ३६१ कीन्हो अदिति पूर्णब्रत जबहीं। प्रगटे आदि पुरुषहरि तबहीं॥ पीताम्बर शुभ धारण कीन्हे। चारि भुजा

आयुध तिन लीन्हे ३६२ चक्रगदा दरपद्म सुहावा। देखि अदि-ति अतिशय सुखपावा ॥ भुविकायेननमाम बहोरी । बिह्वल गात प्रीति नहिंथोरी ३६३ उठि बहोरि बद्धांजलिसोई । अस्तुति करन चहत नहिंहोई॥आनँद अधिक श्रवण चख आंसू । भईमौन पुलकाकुल भासू३६४दर्शनोत्सव वेपथुगाता । प्रीत्याशनै कही कछुबाता॥उद्दीच्छति पीवति चख सो जनु । अस्तुति करन लागि धरिहरिमनु३६५जैयज्ञेश यज्ञपुरुषाच्युत । तीरथ पादपाप हारकद्भुत ॥ मंगल श्रवण नाम है जोई । लोकनके दुखटारत सोई३६६+ मोपर कीन्ही कृपा घनेरी । दै दर्शन टारी दुखढेरी ॥ विश्व हेत धारत अवतारा । विश्व भवन थिति संयमकारा ३६७ पुरु गुण शक्ति गहत निज इच्छा । लै अवतार देत जग शिच्छा ॥ स्वस्थ रूप अतिही सुख रासी । घट घटांतर बाहर बासी ३६८ दो० । शश्वत उपबृंहित सुयश पूरणबोध महान । व्यापादित आतम तमस हरयेनम सुख दान ३६९ परमायुः बांछितकुणप लक्ष्मी अनगन जोइ । द्योभूरस सब योग गुण त्रिवरग ज्ञानहु सोइ ३७० तुम कहँ नाथ प्रसन्न करि पावत यह सब तौन । औरो मन बांछित सबै शत्रु जयादिक कौन ३७१ याविधि अ-

---

+ शश्वत कहिये निरतर उपवृंहित कहिये बढ़ा है सुयश और पूरण बोध जिनका विश्व भवन कहिये विराट स्वरूप थिति कहिये पालन संयम कहिये नाश ३६७ पुरु कहिये बहुत सुर्कहिये सुंदर अस्थ कहिये स्थित परि पूर्णाचल ब्रह्म खवत् यथाकाश स्थितो नित्य नित्यादि गीतामें भगवत् का वचन है तासों घटांतर बाहर बासी है यथा सर्वगतं सौदम्यादाका शंनोप लिप्यतेत्यादि गीता का वचन है तासो आत्मतम समाया मे न लिप्यते त्यये ३६८ व्यापादित नित्य निरस्त कहिये त्यक्तआत्मनितम कहिये माया लक्षण जिनकरिके तिनके अर्थ ३६९ परमायुःब्रह्मायुः वांछित कुणप कहिये अभिलाषित शरीरब्रह्मेन्द्रादीन् अनगन कहिये अप्रमान द्यो भूरस कहिये आ-काश पृथ्वी पाताल सबयोग गुण कहिये अणिमादि सिद्धयः त्रिवर्ण कहिये अर्थ धर्म काम और ज्ञान जो है मुक्ति दायक ३७० कौन कहिये काहे ३७१ ॥

दितिहि देखिकै कमलेक्षण भगवान । बोले अति आनँद वचन दुखदारक सुखदान ३७२ देव मातु सुनिये बचन जो चिंतसि बहुकाल । शत्रुन करि श्रीहरि गई सुतदुख देखि बिहाल ३७३ दुर्मद असुरन जीतिकै सकल जय श्रीपाइ । पुत्रन युत भोगा चहसि उर आनँद सरसाइ ३७४ इन्द्रज्येष्ठ निज सुतन करि हतविद्धिषरण माहिं । तिन महिलान विलापको चाहत देखन काहिं ३७५ निज पुत्रनकी वृद्धि अति यश अरु श्रीय समेत । नाक पृष्ठ क्रीड़ित लखन चाहत मनहिं सहेत ३७६ तेऽसुरमा प्रायोऽधुना अपारणीया जानि । अनुकूलेश्वर विप्रसो गुप्तन विक्रम मानि ३७७ ताहूपर करिहौं कछू देवि उपाय बिचारि । तव व्रतचर्या ताहि करि हौं प्रसन्न सुखकारि ३७८ नाहिं अन्यथा होतहै मम अर्चन सुख खानि । श्रद्धा के अनुरूप जो फल हेतुकते जानि ३७९ तुम करिकै पूजितजु मैं पुत्रन रक्षा हेत । सो उपेत्य पुत्रत्वको स्वांशेन सुखदेत ३८० उपधाव सुनिजपतिहि अब भद्रेनिर्मल लेखि । हमहूंको ध्यावत रहबयाही रूप बिशेखि ३८१ + चौ० । यह कहिमे हरि अन्तर्द्धाना । अदिति महा आनँद मन माना ॥ दुर्लभ जन्मजनि हरिलेहै । ममदुख सकल दूरि करिदेहैं ३८२ भक्ति सहित सेवन पतिलागी । छल अभिमानालसमदत्यागी ॥ कश्यप लखो समाधि मझारा । निजमें आतम अंश निहारा ३८३ सोगुनि निज वीरज तप खानी । धारो अदिति मांझ सुख खानी ॥

कमलेक्षण कमल नयन दारक नाशक ३७२ महिलान कहियेस्त्रीनका ३७५ नाकपृष्ठ स्वर्गलोक ३७६ हेमा कहिये हे देव माता ते कहियेतौन जो असुर हे सो प्रायः कहिये बहुत करिके अधुना कहिये या समये के विषे अपारणीय कहिये अप्रमाण हैं काहे ते कि अनुकूल कहिये प्रसन्न हे ईश्वर कहिये कान जिनका अथवा अनुकूल ईश्वर कहिये समर्थ विप्र तिन करिके गुप्त कहिये रक्षित है ३७७ पुत्रत्व जो है पुत्र भाव ताको उपेत्य कहिये प्राप्त हो करके स्वांशेन कहिये अपने अंश करिके ३८० उपधाव कहिये सेवा करो सु कहिये सुंदर जो पति है ताकी भद्रे कहिये हे कल्याणरूपे ३८१ +

होइ समाहित मन मारीचा। दारुण्यग्नि यथानिल बीचा ३८४ अदिति गर्भ महँ सुनि भगवानहि। हंसबाइ चढ़ि सुभग विमानहि॥ अस्तुति करन लाग हरिकेरी। बारबार कर बिनय बहोरी ३८५ जै उरुगाय उरु क्रम स्वामी। नमोदेव ब्रह्मण्यसुनामी॥ भगवन्नमो त्रिगुणके हेता। पृश्णिगर्भ देवन सुखदेता ३८६ वेदगर्भ जे बेधस स्वामी। जै त्रिनाभ हरिअन्तरयामी॥ जै त्रिपृष्ठ शिपिविष्ट महाना। तुमहीं आदिमध्य अवसाना ३८७ दो०। कालरूप भगवाने तुम जगताच्छि पति महान॥ जिमि श्रोता गंभीर अति तृणादिकनको जान ३८८ इमि ब्रह्मा बिनवत रहे ताही वै भगवान। अदिति जठर प्रगटत भये संत सुरन सुखदान ३८९ चौ०। चारि भुजा सोहत सुखकारे। चक्रगदा दर पद्महु धारे॥ पीताम्बर कमलेक्षण सोहत। आयत नयन रूप मन मोहत ३९० श्याम स्वरूप झषाकृति कुण्डल। शोभा अमित लसत मुख मण्डल॥ सुभग चिह्न श्रीवत्स सुहावा। बलयांगद किरीट छबि पावा ३९१ कांची नूपुर चारु सुहाये। वनमाला षडंघ्रि छबि पाये॥ कौस्तुभमणि सुकण्ठ छबिछाई। भुवन तिमिर सब दूरिबहाई ३९२ सलिलाशय प्रसन्न दश आशा। प्रजा प्रहृष्टामोद प्रकाशा॥ ऋतव गुणान्वित आनँद रासी। अंतरिक्षद्यो भूसुखबासी ३९३ अग्निजिह्व द्विजगऊ नगादी। भेप्रसन्न परमारथबादी॥ भाद्रशुक्ल द्वादशी सुहाई। श्रवणऋक्ष अतिही सुखदाई ३९४ सुभगमुहूर्त्ताभिजितसुहावा। ताराऋक्ष सुमंगलगावा॥ मध्यदिवस सविता सुखछाये। विजया नाम मुहूरतगाये ३९५ ताहीसमय जन्महरि लीन्हा। शंखध्वनि देवन तब कीन्हा॥ दुंदुभि पणव मृदंगहु बाजे। आनक चित्रबाद्य सुखसाजे ३९६ तूरघोष अतिही सुखदाई। तुमुल शब्द गंभीर महाई॥ नृत्याप्सरस प्रीतियुतकरहीं। गायक गावत अति मुदभरहीं ३९७ अस्तुति करत पितर मुनिदेवा। विद्याधर मनु शिखिसहदेवा॥ किन्नर सिद्ध किंपुरुष जाती।

चारण यक्षरच सुखपांती ३९८ सुपर्ण भुजगोत्तम सबआये। गाइप्रशंसत यश सुखछाये॥ नृत्यत बिबुधानुग सुखपाई। कश्यप आश्रम ऊपरआई ३९९ फूलनकी बरषा सबलाये। पुलकानंद महासुखपाये॥ देखिआदिति संभव निजगर्भा। परमपुमांस मायया अर्भा ४०० जैजैकार प्रजापति कीन्हा। अति बिस्मय मनमें धरि लीन्हा॥ सहित भूषणायुध बपुजोई। धारोहरि बटु बामन सोई ४०१ सबके देखत बामनभयऊ। जैसेनट माया भ्रमकयऊ॥ देखि महर्षि रूप रुचिराई। कीन्हकर्म कश्यप अगुआई ४०२ कीन्हो बिधियुत मखउपबीता। सावित्री दीन्ही तब सबिता॥ ब्रह्मसूत्र सुरगुरु सुखभीना। तबहिं मेखला कश्यप दीना ४०३ कृष्णाजिन उरबी सुखछावा। सोमबनस्पति दंड सुहावा॥ दियकौ पीनादिति सुखपाई। सुरमारग सुछत्र मुद दाई ४०४ पद्मज दीन्ह कमंडलु लाई। बर्हिष सप्तऋषिन सुख पाई॥ सरस्वती दीन्हो अखमाला। याबिधि कियउपवीत बिशाला ४०५ दियधनेश पात्रिका सुहाई। भिक्षाम्बिका उमासुख पाई॥ इमि बटु बामन तेज बिराजा। सेवित सकल ब्रह्मऋषि राजा ४०६ याविधि तेज हुताशनएवा। करहिं सिद्ध ऋषि मुनि गणसेवा॥ बलिकी यज्ञ जानिसुखदाई। बामन चले महासुख पाई ४०७ जाइ नर्मदा उत्तरकूला। देखी यज्ञ महासुखमूला॥ करत भृगव उत्तमक्रतुजाहीं। देखत भे सब बामन काहीं ४०८ देखितेज तिनकेर अपारा। कहतभये सब बारहिंबारा॥ आवत सूर्य बिभावसुत्रापी। सनत्कुमार वाथसुखव्यापी ४०९ या बिधि तर्क कीन्ह सबजनहीं। आइगये बटुबामन तबहीं॥ दंडसछत्र कमंडलु लीन्हे। मारग यज्ञप्रवेशसुकीन्हे ४१० दो०। मौंज्यामेखलया सहित अजिनोत्तर उपवीत। जटिल बामनहिं बटुहिलाखि सेसब तेजातीत ४११ सशिखि सशिष्य भृगवभे ठाढ़े। सहिनहिं सके तेज अतिगाढ़े॥ देखिरूप बलि अतिसुखपावा। सुंदरशुभ आसन बैठावा ४१२ स्वागत पूंछिचरण पुनिधोये। जन्मजन्म

के पातकखोये ॥ चरणधोइ जल शीशचढ़ावा । जो शिव
शंकर शिर नितगावा ४१३ स्वागत तब प्रणाम तव हेता।
काहकरौं तव कृपा निकेता ॥ अति तपतेज विराजत आपू।
कहँ लगिबरणि कहौं परतापू ४१४ आजु पितृ मे तृप्तहमारे।
पावित कुल भो दरशतुमारे॥ आजु स्विष्ट क्रतुभई हमारी।
आये आपु इहांपगु धारी ४१५ जो बटु इच्छाहोइ तुमारे। सो
अबमांगौ अग्रहमारे॥ भूकांचन गुणवत सुखधामा । अन्नपेय
कन्यका ललामा ४१६ ग्रामसमृद्ध तुरंग सुहाये । रथवारण
अर्हत्तम गाये॥ इमिसुनि बैरोचनि मुखबानी । धर्म युक्त सू-
नृत सहजानी ४१७ ह्वै प्रसन्न बोले भगवाना । जो तुम याबि-
धि बचन बखाना॥ सोकुल उचित धर्म यशकारक । यस्यप्र-
माण भृगव सुख धारक ४१८ दो०। कृपण और निस्सत्व नर
भयोन याकुल माहिं। बिप्रहि भाषै देनको देइ बहुरिजो नाहिं
४१९ जाकुल में प्रगटत भयो हिरण्याक्ष बलवान ॥ हरिलेगो
भूकष्टकरि मारो तिहि भगवान ४२० निज भ्राताको बध नि-
रखि हिरण्य कश्यपजोइ। बधन भ्रातृहण को तबहिं गो वैकुं-
ठहि सोइ ४२१ ताको आवत देखि कै शूलपाणि यमरूप।
चिंताकरि मन बिष्णु तब मायाविनके भूप ४२२ जहां जहां
मैंजाउँगो तहँ जैहै बलखानि। यह बिचारिताके हृदय प्रविशे
शारंग पानि ४२३ सोबहोरि तहँ जाइ कै देखो शून्य स्थान।
अति क्रोधित गरजो बहुरि कीन्हों नाद महान ४२४ दसाद्यो
दिशि खंबविर सब गिरिस मुद्रअरु खंड। विष्णुहि ढूंढ़त फिरत
है महाबली बरिबंड ४२५ पितापुत्र प्रह्लाद तव द्विज वत्सल
सुखदानि। बिप्र चिह्नालखि सुरनको दीन्हो आयुजांनि ४२६
तासों मोको दीजिये त्रैपग पृथ्वी काहिं। और कछूनहिं चा-
हिये गुनियभूप मनमाहिं ४२७ याविधि सुनि वामन बचन
बोले बलि सुख ऐन। हमजानी तुम बुद्धि युत पै तुमरे बुधि
हैन ४२८ हमहिं यांचिके पुरुषपुनि यांचन योग्य न होइ।

तासों बृत्तिकरी पुहुमि मांगी हमसों सोइ ४२९ याबिधि सुनि बलिके बचन बोले पुनि भगवान । जेती बिषयाप्रेष्ट जग अजितेंद्रियन सुजान ४३० नहिं समरथ पूरणकरन तेती सब नरनाहँ। असंतुष्ट त्रैपगनसों पूरन द्वीपहुताहँ ४३१ चौ०। द्वीप पाइ इच्छा यह होई। सातद्वीप नव खण्डहु जोई॥ ताकी राज मिलै मोकाहीं। इच्छाधारत इमिमनमाहीं ४३२ बैन्य गदादिक नृपति अपारा। तृष्णा काम अर्थ की धारा॥ रहे मगन पाये नहिंपारा। ताते हमयह बात बिचारा ४३३ ईश्वर प्रेरित जो मिलिजावै। संतोषी तामें सुखपावै॥ असंतुष्ट त्रैलोकहि पावै। तबहूं तिहिसंतोष न आवै ४३४ दो०। असंतोष कामार्थ हित पूरुषको दुखदेत। ईश्वर प्रेरित भोगजो सोई सुखकोहेत ४३५ जैसी इच्छाईशकी तिहि लाभहि संतुष्ट। ऐसे जेमहिसुरजगत सदातेजसोपुष्ट ४३६ तासों दीजियतीनिपग भूमि न चाहियआन। सुनि जलभाजन लीन्ह बलि देन भूमिकेदान ४३७ चौ०। आयो करबामनके दाना। तबहीं कीन्हों रूपमहाना॥ नाप्यो पुनि बढ़ाइ पद दोई। पुहुमी स्वर्गदिशा सब जोई ४३८ पदतृतीय को ठौर न पायो। तब बामन बलि काहँ बँधायो॥ लज्जा पायो साहूकारा। नामदेव लखि बचन उचारा ४३९ अब निज पुण्यधरो दल ऊपर। कीन्हींतुम जेती उरवी पर॥ सुनि तब धारी साहूकारा। पत्र पालराउठो न भारा ४४० तबहिं साह लज्जा अति पाई। नाम देव सो कह शिर नाई॥ जो कछु है सोई प्रभुलीजै। मोपर सदा कृपा पुनि कीजै ४४१ नामदेव बोले सुनि बानी। धन हम नहिंचाहत अज्ञानी॥ धन हरिभक्ति एक सुखदाई। सोई चाहत अपर न भाई ४४२ जिहि आधीन देव सबगाये। उभय लोक ऐश्वर्य सुहाये॥ सुनि बिश्वास युक्त भोवानी। भगवद्भक्ति माहँ मनआनी ४४३ एक दिवस एकादशि दीना। दुर्बल बिप्र रूप हरिकीना॥ नामदेव के मंदिर आये। भोजन मांगत भे मनभाये ४४४ दीन्हो नहिं एकादशि

जानी । तब ब्राह्मण बोला वह वानी ॥ भोजन शीघ्र देहुयाबेरा । नाहिंत प्राण जात अब मेरा ४४५ लोगनहू यह कहा बुझाई । भोजन याको देहुकराई ॥ नामदेवपर वाहि न दीन्हो । एकादशी जानि हठकीन्हो ४४६ सायंकाल विप्रमरि गयऊ । पुरमें अमित शोर पुनि भयऊ ॥ हत्यानामदेव शिर आई । कहत भये इमिलोग लुगाई ४४७ चिंता नामदेव नहिं धारा । प्रात समय यह कीन्ह बिचारा ॥ चिता जलाइ विप्र शवलैके । बैठे चिता जरन चित ज्वैके ४४८ ताही समय हँसे भगवाना । गुनि तिन मन बिश्वास महाना ॥ नामदेव बिश्वास बिचारी । पाये सकल लोगसुख भारी ४४९ परे सकल चरणन में आई । बारबार बिनती बहु लाई ॥ एक दिवसकी बात सुहाई ॥ नाम देव मंदिर सुख दाई ४५० एकादशी दिवस लखिपाये । हेत जागरणके सब आये ॥ होनजागरण लागो जबहीं । लागी प्यास निशामहँ सबहीं ४५१ रहतप्रेतवा बलिहै जहँवां । कोऊ जाइ सको नहिंतहँवां ॥ नामदेव सबकी गति जानी । गये कलश लै लावन पानी ४५२ आधीराति गये चलिजहँवां । आयो प्रेत भयंकर तहँवां ॥ नामदेवजी लखि सुखपाये । लैकर ताल सुपद यह गाये ४५३ आये मेरेलम्बकनाथा । धरती पाद स्वर्ग लगिमाथा ॥ योजन भरिभरि हाथ सुहाये । याविधि नामदेव जबगाये ४५४ भूततरो तिन कृपा महाना । भूतहि सो प्रगटे भगवाना ॥ दरशन नामदेव को दीन्हो । दै दरशन भवभय हरिलीन्हो ४५५ नामदेव गाथा सुख सारा । मैं बरणी निज मति अनुसारा ॥

चन्द्रहास्य की कथा सुहाई । अबबरणौं रघुबर मन लाई ४५६ महा भागवत सोहरि भयऊ । बालापनसो हरिमन दयऊ ॥ फैलो सुयश चद्रकी नाहीं । सप्तद्वीप पुहुमीसबमाहीं ४५७ जैमिनि अश्वमेध विस्तारा।सोईबरणौंसुखकीधारा ॥ केरलपति इक भूपसुजाना ॥ सुकृतमूरति रतभगवाना ४५८ मूलऋक्षसुतजनु

बिधिदीन्हा। कुछुवासरमधि बसुहरिलीन्हा॥ बैरी चहुँदिशि चढ़ि रणधाये। भईसमर धरणी नृपआये ४५९ रानी तजे प्राण तिहिकाला। जरीसंगले देहभुवाला॥ लूटो धाम ग्राम भँडारा। दासी लीन्ह बाल तिहिबारा ४६० गैपराइ कुंतलपुर सोई। रहै नगर जानै नहिं कोई॥ भिक्षामाँगि भूपसुतपाला। बर्ष तृतियभा बेरिहु काला ४६१ दो०। सोऽर्भकरहत्रै बर्षको सुन्दरगौरश्शरीरं। उपलक्षित लक्षणनसो जारक्षकरघुबीर ४६२ चौ०। ठाढ़होहिं बोलैं मृदुबानी। सब हितकरहिं नारि नर प्रानी॥ बाम चरण षटअँगुलि बिराजैं। सुन्दरबदन मदन छबि छाजैं ४६३ कौकामिनि तन तेल लगाई। भूषण रुचिर देत पहिराई॥ भोजनदेइ अकेल निहारी। बाल बिलोकि दयाकरि भारी ४६४ पांच बर्षकर अंग सुहावा। गृहगृहजाहिं सबनमन भावा॥ बाल चरितलखि सब सुखपावैं। भांतिभांतिके लाड़ लड़ावैं ४६५ दो०। मंत्रिप्रवरकुंतल नृपति धृष्टबुद्धितिहिनाम। निवते मुनिगण एकदिन आये चलिते धाम ४६६ चौ०। खेलत खेलतगो तहँ बालक। मदन स्वरूप शत्रु कुलघालक॥ देखि मुनिन मन बिस्मय कीन्हा। बालकसह भोजन मन दीन्हा ४६७ भोजनकरि बैठेमुनि जबहीं। चन्दन सुगंधादि दिय तबहीं॥ बस्त्रालंकारादिक पाई। मंत्रिहि दिय अशीश मुनिराई ४६८ पुनि मंत्रिहि मुनि पूंछनलायो। यहसुतकस्य कहांते आयो॥ मंत्री बोला सुनि मुसुकाई। यहअनाथ बालक मुनिराई ४६९ कहो मुनिन मंत्री सुनिलीजै। अबयाको पालन तुम कीजै॥ निश्चययहोइराज्यधरएहा। तबबसुपालैनहिंसंदेहा ४७० यहकहि बिदाहोत मुनिभयऊ। मंत्री हिये शोच अति कयऊ॥ यहकाभाषिगये मुनिईशा। ह्वैहै तवसंपदा अधीशा ४७१ किमि बिपरीत करै यहबाला। हनिसुनिवचन करौंइहिकाला॥ लीन्हे अंत्यज बृन्द बुलाई। तिनसों कहतभयो समुझाई ४७२ देहु चिह्न बालक हतिआई। तुमहिंदेव महिषी सुखदाई॥ मन्त्री ब-

चन सुनत चण्डाला। हरषित चलतभये तिहिकाला ४७३ बालसमीप गये चण्डाला। गेपराइ निज भवन न वाला॥ निज निज मारग बालक लागे। यह कहँ जाइरहो हठिआगे ४७४ खेलत हरिप्रतिमा लै हाथा। जानो डोमन बालअनाथा॥ लीन्हों बालक संग लवाई। रक्षा करन हाररघुराई ४७५ चला जात संगबलिपशु जैसे। बिना बिष्णुराखै को कैसे॥ गयेसघन वनकोउन जाना। त्राता कौन बिना भगवाना ४७६ लीन्हीं खड्ग कोशसो जबहीं। बोले रामराम मुख तबहीं॥ शालग्राम शिला मुख डारा। करि अस्तुति हरिनाम पुकारा ४७७ छन्दचौपैया। जै जै जगनायक जन सुखदायक वासुदेव दुखहारी। करसित करबाला लै चण्डाला मारन चहत खरारी॥ रक्षाप्रभु कीजे आनँद दीजे जिमि गजराज उबारे। मैं दीन अनाथा पिता न माता तुमहीं बंधु हमारे ४७८ दो०। जो तुम रक्षा नहिं करहु अपर बचावै कौन। पाहिव्यसन सो मोहिंअब सर्बान्तर गुण भौन ४७९ चौ०। निज माया प्रेरीरघुराई। सबके हृदय दया तब आई॥ खड्गबहोरि कोश में धारी। मोहे अंग अनंग निहारी ४८० पाछे कीन्ह पाप हमभारी। तेपातक अब हरहिं मुरारी॥ सबके मत ठहरी यह बाता। छांड़िय जीवन करिय निपाता ४८१ कछुक चीन्ह लै सचिवहि दीजे। जीव त्यागि इहि भंगन कीजे॥ वाम चरण पट अँगुरी आहीं। लेहु काटि इहितजिबन माहीं ४८२ सो लै काटि गये चण्डाला। रघुपति मेटी बिपति बिशाला॥ चीन्ह दीन्ह चंडालन जबहीं। भामन मुदित सचिव शठतबहीं ४८३ दो०। गये डोम निज निज भवन मंत्रीमन उत्साह। बृथा कीन्ह मुनि वचन हमकौन होइ नरनाह ४८४ चौ०। सुनहु सुजन यह कथा सुहाई। रक्षपाल जिहि त्रिभुवनसाई॥ ताकी छांह न चापै काला। रंकहि करै नाथ महिपाला ४८५ काटत अंगुलि भई बड़ि पीरा। बहै रुधिर तननयनन नीरा॥ पीड़ित दुःख रुदन सो कयऊ।

मोहत जनु हरिणीगण भयऊ ४८६ छन्दचौपैया। देवेश कृपाला दीनदयाला राखहु दुखसो स्वामी। ध्रुवदुःख विदारण जन दुख टारन पाहि नमामिनमामी॥ हरिणीगण आये अति दुख छाये चाटत पद शिशु केरा। पक्षी दुखपाये पत्तन छाये छाहँ करत तिहिबेरा ४८७ दो०। देशाध्यक्षकलिन्दतहँ प्राप्त भयो तिहि काल।रक्षाहित तिहि देशकी बनगह्वरमें चाल ४८८ पुनि बालक देखत भये रोवत दुखित शरीर। हरिनामन को जपतहै राम राम रघुबीर ४८६ सो०। त्राहि मोहिं भगवान द्रौपदि राखी जिमि पुरा। बालक जानि अजान किमि देखत माता रहित ४६० दो०। जो नहिं रक्षा करहुगे होइ अयश तुम काहिं। यह प्रभु मैं प्रथमहि सुनी जन दुखपावत नाहिं ४९१ सुनि शिशु बचन कुलिन्दनृप बिस्मययुतभे तत्र। शांति करत बालकभये गह्वरबनहै यत्र ४९२ चौ०। रुधिरधोइ रथपर बैठावा। को तव तात मात कहँ आवा॥ राम राम कह औरन आना। इनकर मात पिता भगवाना ४९३ पुत्र हेत हम सुने पुराना। तासु प्रभाव प्रगट हम जाना॥ संतति दीन्ह दयानिधि मोहीं। बिन गोविन्द न मोर सनेही ४९४ मेधाविनाहि दीन्ह सुत जाई। अति मनमुदित बजाइ बधाई॥ चन्दनवती नगर नर नारी। भये सुखी सबसुवन निहारी ४९५ तब कुलिन्दबुध वृंद बुलाये। याचकदान बिविध बिधि पाये॥ नामकर्ण कर कीन्ह बिचारा। बिप्रन ज्योतिष शोधिउचारा ४९६ चन्द्रहास्य इनकर भल नामा। जितिहैं बहु भूपन संग्रामा॥ द्विजन दानदै बिदा कराये। मन वांछित सु दक्षिणा पाये ४९७ दो०। बाढ़त दिन दिन इंदुजिमि शुक्लपक्ष भलपाइ। चंद्रहास्य तिमिनित अधिक अधिकाधिकसरसाइ ४९८ चौ०। नितनव मंगल मुदित उछाहा। ह्वैहैं चंद्रहास्य नरनाहा॥ सम्बत सप्तभये सुतजबहीं। पढ़न हेत बोले गुरुतबहीं ४९९ अक्षर गुरुपढ़ावैं ताहीं। हरिहरि तजिनहिं आनकहाहीं॥ ...

रिसाना। भणक केति कह बिप्र सुजाना ५०० चंद्रहास्य कहयुग करजोरी ।जिह्वा कहत ककानहिंमोरी ॥ हरिरिति द्वै अक्षर सोंकामा । कामन अन्यशास्त्र सुखधामा ५०१ जिहि पुराण हरिनाम न होई । मिथ्या बिधि वर्णित अपि सोई ॥ गद्गद वचन कहाद्विचारी । बहुरिरामहरिनामपुकारी ५०२ बालापन जिन हरि मनलावा । सो बड़ पण्डित बेदनगावा ॥ हरिपद प्रीति होइ नहिं जाके । निष्फल सकल वेद गुण ताके ५०३ रिसबस गुरु कुलिन्द पहँआये। तव बालक नहिं पढ़तपढ़ाये॥ हरि हरि तजि मुखकैह न आना। सुततुम्हार सबविधिअज्ञाना ५०४ दो०।जाहु बिप्र गृहनृपतिकह हम न पुण्य कछु कीन्ह। सुत बिहीन लखि कृपानिधि बिपिन परामम दीन्ह५०५ चौ०। गुरुगवने गृह अति सुखमानी।सुनहु संत अबकहौं बखानी॥ सम्बत अष्टभयो सुतजबहीं। पुरजन बिप्रबुलाये तबहीं ५०६ दै व्रतबंध वेदबिधि कीन्हा ।मनवांछित दक्षिणा द्विजदीन्हा ॥ याचकसबै अयाचक भयऊ । दै अशीश निजनिज गृहगयऊ ५०७चन्द्रहास्य कछुबासरबीते। पढ़े वेद हरिनाम सप्रीते ॥ विप्र-नवेद पुराण सुनाये। चंद्रहास्यहरिभक्त सुहाये ५०८ हरिबासर जब बासरआवा। करैबरत हरिहरि गुणगावा ॥ षोड़श सम्बत पहुँचा आई। विद्या धनुष सिखे अधिकाई ५०९ भक्तिचाप सात्विक गुणकरिकै। बधहरिलक्ष्य चित्तशर धरिकै ॥ तूणशरीर पंचशर धाये। लक्ष्य जनार्दन माहँ समाये ५१० रहैं रैनिदिन हरिकी शरणा। करैं अहेर बिपुल धनुधरणा ॥ देश देश के भूप प्रबीना । लै लै दण्ड छांड़ि सब दीना ५११ करि हरि भक्ति सदा सुखदाई। हरिप्रताप विद्या सब पाई ॥ धनि धनि चन्द्रहास्य अवनीशा। तजिहरि अपर ननावतशीशा ५१२ वि-ष्णुभक्त की कथा सुहानी ।सुनत सकल पातक की हानी ॥ बिन हरिकृपा न संगति संता। संतदरश कोटिन अघहंता ५१३ ध्रुवहरिभक्त स्वर्ग ते वासी। लंक विभीषण कोउ न जासी ॥

बलि पताल तहँ जातनकोई । जनप्रह्लाददरश किहिहोई ५१४
अब आगे बर्णहुँ इतिहासा । चंद्रहास्य जिमि भूपप्रकासा ॥
जाबिधि बिपयाभयो बिवाहू । भेजिहि बिधि कुन्तलपुरनाहू ५१५
चन्द्रहास्य हरिप्राण समाना । कह पितु जाव समर नृपनाना ॥
कहकुलिन्द बैरी दिशिचारी । करहु न देश तासु पैठारी ५१६
तिन रिपु पीड़हिं देशहमारा । सुनि तव नाम न कर पैठारा ॥
अतिदुर्जय सैन्य युतभारी । किमिअकेल करिहौ रण रारी ५१७
पितावचन सुनि आनँद पाई । रथी पंचयुत कीन्ह चढ़ाई ॥
भूपसहस्रन जीतत भयऊ । भाजि लुकाइ शत्रुबहु गयऊ ५१८
लैगज अश्व रत्न धन नाना । पुरी आपनी कीन्ह पयाना ॥
धृष्ट बुद्धि जो मंत्रि नरेशा । शतग्रामकर दीन्हों देशा ५१९
पुरीचन्दनावतीम आये । मातु पिता पद शीश नवाये ॥
भूप कुलिन्द लाइ उरलीन्हा । माता बहुरि आरती कीन्हा ५२०
दो० । नरनारी आनँद लहे चन्द्रहास्य मुख देखि । सानँद मित्रादिकन मिलि मन्दिर गये बिशेखि ५२१ द्विजवेदज्ञ बुलाइ कै पंचम तिथिनरराइ । चन्द्रहास्य अभिषेक किय निज पद आनँद पाइ ५२२ ध्वज पताक तोरण पुरछाये । भूपद्वार सजि सजि जनआये ॥ चन्द्रहास्य कहँ पूजत पौरा । चन्दन कुंकुम लै करपूरा ५२३ पूजित चन्द्रहास्य असभाषा । पुरजन सुनहु जुमन अभिलाषा ॥ आजुति प्राप्त याम्य दिनमाहीं उत्सव चैक भक्तकर नाहीं ५२४ तथा विष्णु तिथि जो क भोजन । शत्रु महान अहै मम सोजन ॥ एकादशि ति जानि प्रकाशा । पातक सकल अन्न कृत बासा ५२५ ता अन्नन भोजन लीजै । विष्णुभक्ति उरधरि व्रतकीजै ॥ हरि दि जे जागत निशिमाहीं । तिन के दास सदा हमआहीं ५२ जलबुद्बुदवत आयुष एहा । अस्थि खंभ पल लेपित देहा लोभ क्रोध अरि विघ्न अपारा । याविधि यहशरीर दुखभा ५२७ हरिबासर व्रत अति सुखसारा । सुनि पुरजन कियअं

कारा ॥ दशमी तिथि आवै चलि जबहीं। उत्सवरचैं भुवनजन तबहीं ५२८ कनक ध्वजा सब धरहिं दुआरे। चन्दन कुंकुम अंग सँवारे ॥ भोरहैं निर्जल हरिवासर। केवल राम नाम कर आसर ५२९ प्रात दानदै भोजन करहीं। शालिग्राम पूजि सुखभरहीं ॥ पुरशोभा कछु वरणिनजाई। देश देशकी संपति छाई ५३० सुबरणबस्त्र रत्न सुखदाई। देतदुर्बलनकहँनरराई ॥ ब्राह्मण अलंकार युत कीन्हे। मंदिरशुभ तिनके रचिदीन्हे५३१ बिष्णालय शिवआलय नाना। वापी कूप तड़ाग विधाना ॥ योगेश्वर आश्रम सुख दाना। कीन्हो चन्द्रहासमखनाना५३२ प्रपाआदि बहुबिधि बनवाये। प्रजा देश देशनके आये ॥ चन्द्रहास दीन्हे सुखवासा। प्रजा अष्टदश पुरी प्रकासा ५३३ परम पूरणप्रेमप्रकाशित जासो। भये प्रसन्न अधोक्षज तासो ॥ सुवन कुलिन्द भक्त भगवाना। चन्दनवती पुरी सुखदाना ५३४ कह कुलिन्द सुत सुनु असिवाता। पुरि कुन्तल कुन्तल नृपत्राता ॥ निष्कायुत दीजै पठवाई। इतसोयोजन षट सुखदाई ५३५ धृष्टबुद्धि मंत्री नरनायक। अपरराज महिषी सबलायक ॥ गालव उपरोहित महिपाला। बुद्धिज्ञान गुण शील विशाला ५३६ देहु द्रव्य सवकहँ पठवाई। पितुआयसु शिर लीन्ह चढ़ाई ॥ रत्नभराइ शकट बहुतेरे। रथगजबाजिन द्रव्य घनेरे ५३७ लिखो पत्र बहु द्रव्यपठावा। सेवक सुदृढ़ बेगि बुलवावा ॥ पत्रदीन्ह धरि ताके हाथा। मंत्री सहित जहां नरनाथा ५३८ दो०। सो सेवकलै धनचलो मुदितदेह चितचैन। कुन्तलपुर पहुँचा निकट जहँ सरिता सुखदैन ५३९ चौ०। मज्जनकीन्ह हर्ष उरछावा। चन्दन द्वादश तिलक चढ़ावा ॥ शालिग्राम पूजि विधिनाना। बहुरिकीन्ह तिन नगरपयाना ५४० सुमिरि राम मंत्रीके द्वारे। ठाढ़ विलोके बहुप्रतिहारे ॥ वेतपाणि तब खबरि जनाई। धृष्टबुद्धि तिहि लीन्ह बुलाई ५४१ आर्द्रबसन युत सेवक देखी। मंत्री बोलत भयो विशेखी ॥ कहु कुलिन्द पञ्चत्व सिधाये।

धरिकै आर्द्रबस्त्र जो आये ५४२ धृष्टबुद्धि तुम बुद्धि प्रवीना । अनुचित बोलहु बोलमलीना ॥ भावनजाहि कुलिन्द बिभूती । सोबश काल नीच करतूती ५४३ चन्द्रहास्य कुलिन्द कुल दीपा । जिनजीते बहुबीर महीपा ॥ सो सबधन पठवा तुमपाहीं । लेहु मुदित मन हमगृहजाहीं ५४४ धन अनेक लखि सचिव बिचारा । बालक नाहिं कुलिन्द संचारा ॥ सुनि बालक मन संशयकीन्हा । चतुर सुआर बोलि पुनि लीन्हा ५४५ तिनसों कहतभयो सुनिलीजै । भोजन देव अन्न इनदीजै ॥ सादर तिन कहँ सूद बुलाये । तिन ब्रत एकादशी बताये ५४६ हरिवासर ब्रत बिष्णु सुहावा । चन्दनवती देश सब छावा ॥ प्रात समय भोजनकरिलेहैं । पुर मारग बहोरि चित देहैं ५४७ रजनी रहा सेवकन संगा । प्रातहि कीन्ह प्रकाशपतंगा ॥ कोरअन्नलै किय जिवनारा । सुनत सचिवभा क्रोध अपारा ५४८ सो० । पत्री उतर लिखाइ लै सेवकके करधरो । बढ़ी कुमति अधिकाइ भयो शोचबश कुटिलशठ ५४९ चौ० । हृदय आन मुख आनहिं बोला । पुत्रबुलाइ कुमति मनडोला ॥ कह तुमराज काज करु जाई । कहव सँदेश नरेश बुझाई ५५० बिषया कन्या बर के हेता । गये आजु पितु त्यागि निकेता ॥ असकहि आतुर चला अभागी । सुलगै उर आवाजिमि आगी ५५१ द्वैवासर बीततहँ आवा । चंदनवती सुवास सुहावा । देखि कुलिन्द मिले उठि धाई । बालकसहित गेह पदआई ५५२ पूंछत भो मंत्री कुश-लाई । बोलतभे कुलिन्द शिरनाई ॥ नाथ कुशल सब पुण्य तुमारे । दीन दरश बड़भागहमारे ५५३ पुरजन सकल मिले पुनिआई । बैठीसन्तन सुमतिअथाई॥ समयपाइ मंत्रीमृदुबैना । कहत कुटिल अघ अवगुण ऐना ५५४ कब इहि बालक भा-अवतारा । कहौ कुलिन्द सकल व्योहारा ॥ कहकुलिन्द और-सनहिं एहा । आपुहि मिलो भक्ति गुण गेहा ५५५ एकसमय आखेर सिधाये । कौंतल पुर योजन द्वै आये ॥ बामचरण पट

अंगुलि हीना। देखो बालक दुःख मलीना ५५६ पांचवर्ष कर बालक एहा। लायों रथचढ़ाइ निज गेहा॥ तुमरी कृपा मिलो सुतआई। कीजौ मोपर सदा सहाई ५५७ चन्द्रहास्य कह विप्रन नामा। कृपारावरी दीन्हो रामा॥ कह मंत्री बड़भाग तुमारा। मिला पुत्र अस सुन्दर बारा ५५८ कहत मूढ़ करि युक्तिबनावा। इनकायशहमरे पुरछावा॥ चलतहिं मदनकहा असभाषी। देखन चन्द्रहास्य अभिलाषी ५५९ पठवहु कुन्तल पुरयेजाहीं। तबलगि हम रहिहैं तुमपाहीं॥ कह कुलिन्द जो आयसु होई। युतपरिवार करैं हमसोई ५६० शोच विवश मंत्री पछिताना॥ चाण्डालन कर छलबल जाना। वाम चरणषट अंगुलि आनी॥ झूठी शठनदीन्ह सहिदानी ५६१ मुनिके वचनहोन चहसांचा। अजहुँहतौं करि वचनअसांचा॥ जो भूषणआहे वृषकेतू। सोइहि देउँ गरल करिहेतू ५६२ कुटिल कुचाली मन असि आनी। लागो लिखन पत्र निजपानी॥ श्रीसुत मदनभरोस तुमारा। चन्द्रहास्य है जग उजियारा ५६३ पूछौजाति न पांतिकुलीना॥ कहैकोउ किन विप्रप्रवीना॥ और न कछु आनो सन्देहू। दीजौविपनलेहु मत केहू ५६४ लिखि अस पत्र बाँचि पुनिदेखा। कीन्ह मुद्रिका सुदृढ़ विशेखा॥ जोक्को मारग बांचैजाई। ताको हरिहरसरिद्वाई ५६५ चन्द्रहास्य निज माथे राखा। पुनिकरजोरि वचन असभाखा॥ अहै पितामम शरणतुमारी। असनहोइ जिहिहोइ दुखारी ५६६ मृदुवाणी कहिताहि प्रबोधा। संत गनत नहिं अधम विरोधा॥ प्रभुता ऊंच नीच जड़ करनी॥ सचिव कपट उरभरी कतरनी ५६७ जो हरिभक्त ताहिको मारा। त्राता निशिदिन रामउदारा॥ महापुरुष नहिं अनहित जाना। शत्रु मित्र द्वौ सम करिमाना ५६८ चन्द्रहास्य मन्दिर चलिआये। जनक जननि पद शीश नवाये॥ मेधा विनि पुनि दीन्ह अशीशा। राखहिं शरण सदागौरीशा ५६९ अछत दधिदुर्वाहि

मिलाई। कीन्हो तिलक प्रसूहरषाई ॥ नारायण मुख रक्षाकरहीं
मारग माहिंसदा मुद भरहीं ५७० बाहूपातु जनार्द्दन देवा
हृषीकेश वक्षस्थलएवा ॥ माधव पातु उदरके माहीं । पद्मना
भनाभीहिं सदाहीं ५७१ प्रातु नृसिंह कुक्षि सुखदाना । कटिमे
कमल नयन भगवाना ॥ मधुसूदन द्वौ जांघन काहीं । यज्ञभो
क्त जानुनि द्वैमाहीं ५७२ दामोदर गुल्फन में सोई । पातु यु
गांघ्रि सहसपदजोई ॥ सहस्राक्ष अक्षिणिके त्राता। पातुत्रिवि-
क्रमसुत तवगाता ५७३ तुम सम पती मिलै सुहाई । पाइ
अशीश चले शिरनाई ॥ सेवक चारि संगनिज लीन्हे। चढ़िकै
अश्व गमन तिन कीन्हे ५७४ बाहर ग्रामजबहिं चलि आये ।
कुंकुमरंजित तियलखिपाये ॥ गृष्टि नवीन वत्ससहदेखा। पुष्प
मुकुट कोबांधविशेखा ५७५ चंपक मालकोउ लैंदयऊ। वरनवी-
न समशोभित भयऊ ॥ बनाध्यक्ष बहुरौ सुखपाई। दाड़िम फल
दीन्हों लै आई ५७६ चन्द्रहास्य सुमिरत भगवाना । जात
चले नांघत बननाना। लोमानकुल दरशपुनिपावा ॥ मृगाश्रा-
मते दाहिन आवा ५७७ छेमकरी कहछेम सदाई। तित्तुरबोल
वामदिशि धाई ॥ भयेशकुन सबजे जगजाने। चन्द्रहास्य नि-
रखतहरषाने ५७८ बासदोसरे गतयुगयामा। पहुंचे निकटग्राम
सुख धामा ॥ बागतड़ाग रुचिर अति शोभा । जिहि विलोकि
सुरनर मन लोभा ५७९ कुंजहिं चंचरीक तिहिताला। बोलहिं
बोल विहंग रसाला ॥ पुरयनि सघनकंज शुचिनीके। हंससमूह
विराजतहीके ५८० बांधे चहुंदिशिरुचिरकरारा । नीरगंभीर
न पाइयपारा ॥ मधुऋतु सदारहै तहँछाई। मानहुँ मन्मथअनी
सुहाई ५८१ रहैं सदाजलचर सुखमानी । सूखै कबहुँन सरवर
पानी ॥ शंकर मठ शुचि सुन्दर सोहै। उपमा वरणि सकैअस
कोहै ५८२ जहां विराजत शंभु भवानी । जियालाल किमि
सकै बखानी ॥ चन्द्रहास्य शुचि नीर अन्हाये। द्वादश तिलक
सुगंध चढ़ाये ५८३ पूजि सकल विधि शालिग्राम। कीन्हो

वटछाया विश्रामा॥ पंथ श्रमित अति सोवनलागे । वरणौं अपर भयो जसआगे ५८४ तिहि अवसर विषयातहँ आई । सहित सखिन मनमुदित अन्हाई॥ चम्पकमाली राजकुमारी॥ आई संग एक शत नारी ५८५ यौवन सार्द्ध त्रयोदशवरषा। कौसुम्वाम्बर धरे सहरषा॥ चूचुक विल्व फलाभ सुहाये। चंचलांगालंकृत गाये ५८६ दो० । मुक्ता हारा दिकनसों मंडित मारगजात । नूपुरख नाचत सबै गावत हरपित गात ५८७ चौ० । क्रीड़ावन पहुँचीं इमि जाई। कोकिलादि बोलत सुखदाई॥ एक सखी सबसों अलगाई । पुष्प समूह लखन हित धाई ५८८ तिहिलखि कहभययुत इककन्या । एकाकिनी जाहि मति धन्या॥ हेहस्तिनि समुक्त कुच कुंभा । नरकेशरि दलि करै अचंभा ५८९ याविधि हँसत पुष्प वहु लैकै। विरचि मालपहिरे मुदकैकै॥ सहित पुष्प दाड़िमफलदेखी। चंपक मालिनि कहो विशेखी ५९० देखहु विषया अद्भुत वाता । प्रथम पुष्प पीछे फलजाता॥ विल्व फलस्तनि त्वयि विपरीता। कैसे भयोकहोसोगीता ५९१ विषयाकहो भूपजापाहीं । धर्म वनस्पतिके येआहीं॥ लैपुष्पन शिर ऊपर थापी । चंपक मालिनि निद्रा व्यापी ५९२ विषया कहो पुष्प शिरधारी। जानि सोवहु वनमें सुकुमारी॥ कोउ कुण्डली भोगी देखी। गहै आइ तव निकट विशेखी ५९३ सुनि इमिराज कुँवरि गुण ऐना। कहत भई विषया सों बैना॥ तवमुख शोभा चन्द्र लजाये । उरजाकि रति मन्मथ छविपाये ५९४ इनलिङ्गन सोंमांगियएहा॥पूजनहार मिलै युतनेहा॥ दक्षानाल सपूजक जोई। प्राणहु दै कीजिय वशसोई ५९५ सुनि विहँसी विषया मनमाहीं। प्रविशीं सकल वहुरिजलमाहीं॥ कुचमण्डल तकि फूल-चलावैं । फूलनकी वरषा वरषावैं ५९६ गावहिं कोमल नाद नवीना। सकल चन्द द्युति वुद्धि प्रवीना॥ जलक्रीड़ा खेलहिंइकसंगा। मनहुँचमूचतुरंग अनंगा ५९७ तव विषया सव सखिन विहाई। लेन फूल

दलगै फुलवाई ॥ देखि बिटप बट निकट तुरंगा । सोवत मूरति मनहुँ अनंगा। ५९८ दो०। भई मोहबश पुरुष लखि नारि चतुर सुजान। तिन समीप पहुंचत भई कामिनि कोउन जान ५९९ चौपाई। जातहि देखि स्वरूप भुलानी। याविधि मनमें कहाबखानी ॥ करौं प्रणाम जोरियुग हाथा। यहबर मोहिंमिलै रघुनाथा। ६०० बाम अंगतब फरकन लागा। जान्यो मोरभयो बड़भागा ॥ सुन्दर चंदूबिम्ब जनुरेखा। माथे मुकुट पत्र इक देखा॥छोरि मुद्रिका मन सकुचाई। अच्छर निज पितु चीन्हि बनाई ॥ श्रीसुत मदन सुमति बुधिधीरा। चन्द्रहास्य सुंदर बरबीरा ६०१ जानि पूंछब कुल धर्माऽचारा। जाति न पांति न रूप निहारा ॥ जातहि तुम दीजो बिष एही। बरजें कोकिन परम सनेही ६०२ बिष अच्छर बांचत मन शोची। मोरेतात कि बुधि अति पोची ॥ सुंदर अंग अनंग समाना। लिखादेनबिष कौने ज्ञाना। ६०३ शिव गौरी मन क्रम अनुराधे। पायौंना हबरत तप साधे ॥ बिषयाहि बुद्धि आवतिहिबारी। चखकज्जल नख लीन्ह उतारी ६०४ दीन बिषाग्र यकार बनाई। पुनि तहँ तैसिमुद्रिका लाई। तैसे पत्र मुकुट धरिदीन्हा ॥ निरयासास्त्र बहुरि दृढ़ कीन्हा ६०५ लोभा मन नाहिंइत उतजाई। असमन बांछित निज पति पाई ॥ परवश चलिआई पुनि ताहां। चम्पक मालिनि आलिनमाहां ६०६ दो०। भगवतजन सादर सुनहु जिहिहरि होहिंदयाल। होहिंताहिबिष सुधासमसीमनत्रापैकाल ६०७ चौपाई ॥ जाके नहिंपद त्राणनसाजू। तिहि गजराज देत रघुराजू। बिषाहिदेखि विषयाहरि दीन्ही। तिहि चरित्र पावैको चीन्ही ६०८ देनहलाह लपठत्र कुचाली।मिली मरालहिमनहुँ मराली ॥ होइभक्तहरि मनक्रमबानी।जरै कृशानुनबूडे पानी६०९विषया पाहँसखिनमिलिभाखा। येतीदेरकहांमन राखा ॥ताजिनृसिंह सोवतकहँ आई। फिरिफिरिचितवत चित्त लगाई ६१० याविधि करतहास्य परचारा।

निज निज भवन कीन्ह पैठारा ॥ चन्द्रहास्य हरिभक्त सुजाना।
जागे मन सुमिरत भगवाना ६११ मुख पखालि सुमिरि हरि
नामा ॥ आये चलि कुन्तलपुरग्रामा ॥ उतरेद्वार सचिवकेआई।
द्वार पाल सों खबरिजनाई ६१२ सुनिकै द्वारपाल चलिगयऊ।
द्वारदोसरे भाषत भयऊ॥ चन्द्रहास्य द्वारे चलि आये। मदन
हिमिलन चहत सुख छाये ६१३ द्वितिय तृतियसो भाषोजाई।
तृतियचतुर्थेहि कहाबुझाई॥ चौथो पंचमसों कहिदीन्हा। छठयें
पाहँ कहनसो लीन्हा ६१४ छठयों गोससमके पासा। सब
वृत्तांत कीन्ह परकासा ॥ चन्द्रहास्य हरिभक्त सुहाये। तब
पितुलैपत्री चलिआये६१५मदनसिंहासन बैठेजाहीं। करहुखबरि
तिहि मन्दिरमाहीं॥ नामविवेक एकप्रतिहारा। आतुरगयो सघन
दरबारा६१६बेतपाणि जोरेयुगपाणी। शीशनवाइ कहतमृदुवा-
णी॥नाथकुँवर इकद्वारेठाढ़ा। बिष्णुभक्त सुन्दरछबिगाढ़ा ६१७
धृष्टबुद्धि पठयो तुमपाहीं॥ देखा सुना रूपअसनाहीं। सचिव
कुमार सुनतचलि आये॥ सभालोग सबसंगसिधाये ६१८ नि-
रखत रूपसभा सुख पावा। मदनहिये उर आनँद छावा ॥ भेंटे
चन्द्रहास्य उरलाई। रंकभवन नवनिधिजनुआई ६१९ पुरबा-
सी मिलिकहत सप्रीती। जनु इन बदन मदन छबिजीती॥ म-
दन मदन द्युतिबदन निहारा। गेलै सदन कुलिन्द कुमारा ६२०
कौ पूंछत कुलिन्द कुशलाई। दर्शन हेत मिले जनुआई॥ कर
धरि चले मदन बरबीरा। सिंहासन बैठे इकतीरा ६२१ बोले
बिहँसि मदन सुनुनाथा। तुम दर्शन हमभये सनाथा ॥ वहां
गयेहैं जनक हमारे। समाचार तुम तिनहिं निहारे॥६२२ तुमरे
पिताहमहिं बहुचाहा। कीन्ह कृपाबहु प्रेम निबाहा ॥ तिनइक
पत्र लिखा निजपानी। दीन्हा हमहिं हेतु बड़जानी ६२३ बांचन
पत्रैकांतमभाषा। लीन्ह सचिव सुत माथेराखा॥ छोरिमुद्रिका
नैननराखी। बांचत सभा मांझ बुधसाखी ६२४ श्रीसुत मदन
सदन गुणगूढ़ा। चन्द्रहास्य हरिभक्त अगूढ़ा ॥ पूँछहु जातिन

पांति सनेहू। रूपशील गुण कछु न लखेहू ६२५ गुरुजन पुर जन मतजानिलेहू। बचन मानि बिषया इनदेहू॥ मदन मुदित भेसभा समेता। बरणि न जात मोदमनजेता ६२६ बिषयाचढ़ी धौंरहरजाई। गिरिजा की अस्तुति मनलाई॥ हेजगदम्ब अनुग्रह कीजै। मनबांछित बरमोकहँदीजै ६२७ दो०। देवन सबन मनाइ करि बिनय करत करजोरि। मदन बाण भेदेहृदय मदन कदन गतितोरि ६२८ चौ०॥ चीन्हे अच्छर निजपितु पानी। पाई मदन पुष्ट सहिदानी॥ राजकाज तजिगे इहिहेता। सो अब भेसहाइ वृषकेता ६२९ सचिव सुवनमहि सुरन बुलाये। सादर शुभगासनबैठाये॥ लग्नशोधिदीजै तत्काला। शोधि द्विघटिका बेद बिशाला ६३० शोधि लग्न बुध कहाबखानी। गोधूली यात्तण शुभ दानी॥ सुनि हर्षित भो सकल समाजा। दीन्ही बस्तु बिवाहन्न काजा ६३१ बाजनबाजे अति उत्साहा। चंद्रहास्य निशि आजु बिवाहा॥ मण्डफ सुन्दर शोभ अपारा। जनु बिरंचि निज हाथ सवाँरा ६३२ बिषया चन्द्रहास्य अन्हवाये। पटपहिराइ बेदिका लाये॥ बिप्रस्वास्तिवचकहिबे लीन्हा। लै मधु पर्क मदन पुनि दीन्हा ६३३ छन्द राम गीतिका। चन्द्रहासहिभये पूछत मदन आनँद पाइ। नाम पितु पितु तत्पिताकर बदस गोत्र सुनाइ॥ पितु पितामह तत्पिता हरि चन्द्रहास्यबखान। बिन कुलिन्द मदीय गुरु के हैन रक्षक आन ६३४ दो०। इमि अनन्य भावहिं निरखि कहे मदन येबैन। हो प्रसन्न या दानसों लक्ष्मीपति गुणऐन ६३५ चौ० ॥ कीन्ह बेद कुल रीति बहोरी। ग्रंथि जोरि पुनि भामरि फेरी॥ मदन कीन्ह जिमि कन्यादाना। सो न जान कबि पाहँ बखाना ६३६ दाइज दीन्ह रतन भण्डारा। रथगज धेनु तुरंग अपारा॥ द्विजन दान दीन्हे मनमाने। याचक सकल दान सनमाने ६३७ दो०। रत्न पटम्बर को गनै अरुमुक्तन की माल। दाइज दीन्ह अनेक विधि याचक किये निहाल६३८ चौ०॥ वाजहिं

वाजन विविध प्रकारा । गावहिं सुन्दरि मंगलचारा । दीन्हे चंद्रहास्य बहुदाना । बुध जन याचक करि सन्माना। ६३९ नारिन नौछावरि वहु दीन्हा। रँग रँग पाट पटम्बर चीन्हा॥ दीन्ह दान कछु बरणिन जाई । सुखी भये सब लोग लुगाई ६४० हरिजन चंन्द्रहास्य उठि सोहे । पुरनरनारि बिलोकत मोहे ॥ भक्त सत्य जो रामकृपाला। ताकीसीम न चापै काला ६४१ मंत्री मत विषदेने कीन्हा। रामताहि विषया तियदीन्हा॥ कथा भक्तहरि सुनै सुनावै। अभिमत वरबिन जपतप पावै ६४२ ऐसे जनपालक रघुनायक। अल्पकाल तिहिमे सुखदायक ॥ नारायण को भक्त पियारा। निशिदिन होइ संत रखवारा ६४३ दो० । सुत कुलिन्द मंत्री सुता भाइहि भांति विवाह । तीनि तापजाइन सकत रामभक्तके पाहँ ६४४ चौ० ॥ मंत्री वहां कीन्ह अपकारा। बांधि कुलिन्द लीन्ह भण्डारा ॥ लीन्हो दण्ड स-कल पुरवासिन । बारिबारि दहि अनल क्रिासिन ६४५ लैलैं दण्ड छांड़ि सब दीन्हे। बहुरि बचन कहिवे इमि लीन्हे ॥ सुनु कुलिन्द शठ कटिहौं माथा। तुमपठवाधन सेवक हाथा ६४६ खल निज पुत्र विलोकि भुलाना। भावइ गर्व सर्बहम जाना॥ वहुत द्रव्य शठ वृथा बहाये। जहँ तहँ कूपतड़ाग खनाये ६४७ वालापनसो हमनहिं देखा। हरि मन्दिर शिव भवन विशेखा॥ वापी प्रपा विप्र गृहनाना। कबहुँ पुराणसुनो नहिं काना ६४८ सो इत होत भवन प्रति माहीं । मोकहँ सकल समाज लखा-हीं ॥ वे शिल्पी कहँ गयो सिधाई। निखिलमदीय वित्त जिन खाई ६४९ अबकहु तुवबालक है काहां । डारौं मारिसुनौं जहँ ताहां॥ छोरि कुलिन्द बहुरिसोदयऊ । याविधिभय दिखरावत भयऊ ६५० द्रव्यसर्व पुर लै बरजोरी। छोड़े लैलै दण्ड बहोरी ॥ पुरवासिन कह हमतुम शरणा। आयसु होइ सबहिं सो करणा ६५१ करि आपन सब नगर बसावा । द्रव्यसर्व लै भवन सि-धावा॥ मंत्री मूढ़ पंथ जिहि जाही। काग कुचालि शीश मड़-

राहीं ६५२ फणिक एक आकाशमजाहीं। धरिनररूपकंहततिहि-
पाहीं ॥ तवसुबरण घटबासहमारा। तारक्षासुत करततुमारा६५३
दो०। नाशितभो मम धाम वह ताते हैं अब जात। करिय
विपाद न पूर्ण अब स्वस्तिहोइ तवगात ६५४ चौ०। असकहि
ब्याल पताल सिधावा। मंत्री मन संशय बड़ आवा ॥ नगर
सौंह बाजन सुनि पावा। भासंशय मन शोच जनावा ६५५
दो०। संशय बस अशकुन निरखि मनमोकरै बिचार। जिया-
लाल कहि किमि मिटै जो बिधि लिखा लिलार ६५६ चौ० ॥
उर भयभीत नगर नियराना। बाजन बाजहिं हने निशाना ॥
मागध सूत बंदिजन धाये। बर्णत बिरदावलि चलिआये ६५७
पहिरे पट पाटम्बर नाना। करहिं सकल सुत सचिव बखाना ॥
धनि धनि चन्द्रहास्य कुल चन्दा। यहि विवाह परिवार अन-
न्दा ६५८ धन्य धन्य विषयाकर भागा। लहबर चन्द्रहास्य
सुख पागा ॥ अस सुनि सचिव क्रोध उर छावा। अमित विप्र
मानहु मधु खावा ॥ ६५९ आयेयाचक पुरजन लोगा। दण्ड
प्रहार करै उर शोगा ॥ क्रोधवंत लखि सकल पराने। मंत्री
महल आइ नियराने ६६० गावहिं गजगामिनि गण पांती।
सो शर सम लागै शठ छाती ॥ सुनि ध्वनि मंगल धुनि धुनि
माथा। दहै दाहउर मींजै हाथा ६६१ क्रोधवंत बैठा सो आई।
रिस बस कोउ समीप नजाई ॥ मनमों कहै मदन मति मूढ़ा।
यहु कस कारज कीन्ह अगूढ़ा ६६२ दो०। सुत कुलिन्दमंत्री
सुता जोरिग्रंथि चलि आव। पितु सम तिहि अवलोकि करि
चन्द्रहास्य शिर नाव ६६३ चौ० ॥ रिस बस शठ न कहै कछु
बाता। काह कीन्ह करतार बिधाता ॥ आइ मदन चरणनशिर
नावा। क्रोधवंत निरखत भय पावा ६६४ कहै पुत्र कीन्हो कस
काजा। जो तुम पत्र लिखा सो साजा ॥ कह रिस बस जनि
मुख दिखराऊ। लिखा पत्र मम कर सो लाऊ ६६५ पत्र पुत्र
दीन्हो लै आनी। मनही मन बांचै अज्ञानी ॥ जहां नाम विप

विषया चीन्हा। हे विधि किन यकार लिखि दीन्हा ६६६ सो
पढ़ि बहुरिरहा चुपसाधी। और करौं कछु बेगिउपाधी ॥ धीरज
सुत को देइ बहोरी। कह अब करौं रीति कुल मोरी ६६७ हमरे
कुल यह रीति बिवाहा। होइ तबहिं मन मुदित उछाहा ॥ जब
चौथे दिन देविहि जाई। पूजै साज समाज बनाई ६६८ है
देवी मठ कानन मांझा। पूजत संत सबेरे सांझा॥ सुनहु संत
हरिभक्त जुसांचा। ताहिलगै त्रयतापनआंचा॥ ६६९ संतन
अनहित करत अभागे। आवत तासु बंश के आगे॥ जो जो
कूप खनत परकाहीं। गिरत मूढ़ सोआपुहि ताहीं ६७० दो०।
मंत्रि कुमति कुटिलाधम कीन्ह कुमंत्र बिचार। जियालाल जो
दास हरि तिहि को मारनहार ६७१ निशि दिन त्राता भक्त
हरि शठ सचिवहिं ना सूझ। दिष देते विषया दई तबहुँ न
बूझ अबूझ ६७२ चौ०॥ मंत्री कुमति कुबुद्धि बिचारा। चहत
उड़ावन फूंकि पहारा॥ विषया किन बिधवा है जाई। मारौं
हठि शठ झूठि सगाई ६७३ चन्द्रहास्य बुलाइ बैठारे। मृदुल
बचन करि युक्ति उचारे॥ हमरे कुल यहरीति सदाई। बनदेवी
मठ पूजन जाई ६७४ बिन पूजे सुख लहै नकोई। ताते अवशि
पूजिये सोई॥ कहो सचिव करि कपट सयानी। चन्द्रहास्य
शिर ऊपर आनी ६७५ सरल स्वभाव भक्त भगवाना। छलबल
कपट कतहुँ नहिं जाना॥ चन्द्रहास्य पठये पुनि धामा।
बैठोआपु अकेलसकामा ६७६ चण्डालनकहँ बोलिबहोरी। लीन्ह
खड्ग करि बुधि मति भोरी॥ छांड़ो बालक प्रथम न मारा।
वृथा कीन्ह शठ बचनहमारा ६७७ नीचपोच दीन्होमम धोखा।
करहुजाइ अब कारजचोखा॥ बनदेवीमठ पूजनआवै। सोजी-
वत आवै जनिपावै ६७८ नतुतव बाल वृद्ध परिवारा॥ मेलै
भार करौंदहिछारा। नाथ करब अब बिनाविचारे॥ जाइ विपि-
न मठ निकट हमारे ६७९ असकहि विदा कीन्ह चण्डारा। तिन
निज आश्रम शस्त्र संभारा॥ बैठेमठदेवी संभारी। सुनहु

संतजन चरित मुरारी ६८० कुन्तल भूप मंत्रअस ठाना॥ कब-
हुँ न नाम जपो भगवाना। मुनिगालव तुम कहौ बुझाई॥
राजिकोष गजरथ ठकुराई ६८१ ये सब जानहु तरुवरछाया।
रामनाम विन जन्मसिराया॥ सातहुद्वीपप्रियव्रतत्यागी। गेबन
रामहेतबड़भागी ६८२ रामहेत नृप भरतसुजाना। दीन्हीत्यागि
राजिसुखखाना॥सम्बत बहुतकीन्हतपभारी। ध्यानालय हरिरूप
निहारी ६८३ संगकुरंगकेर तिनकीन्हा। तासुप्रभाव हरिणतनु
लीन्हा॥ ताहू तनहरि भजन न भूला॥ रहीपरंतु संगकी शूला
६८४ जन्म तीसरे त्यागा सोऊ। भेनिस्संग जान सब कोऊ॥
ऋषभ देव हरिनाम सँभारा। स्वप्न समान लखो संसारा ६८५
नृपतिययाति भोग बहुकीन्हा। युवा अवस्थालघु सुतलीन्हा॥
कछुक दिवस महँ लज्जा पाई॥ गेबन राम नाम चित लाई
६८६ ऐल नृपति अति विषय भुलाना। संग उर्वशी ठगोम-
हाना॥ कछुदिन माँझ उर्वशीजोई। दीन्हो त्यागि नृपतिकहँ
सोई ६८७ तासुविरह अतिभये दुखारी। जियालाल किमिसकै
पुकारी॥ घूमत महा दुखित दुखपाये। हाउर्वशी रटनि रटलाये
६८८ तासु बचन गंधर्व न ध्याये॥ कछुदिन महँतिहिलोकसि-
धाये। तहां भोग बहु सम्बत कीन्हा॥ भईगलानि सकल तजि
दीन्हा ६८९ बहुरि रामचरणन मनलाये। जिनकी कृपा शां-
ति पदपाये॥ वानरेश निशिचर पति राजा। राम शरण,गहि
साजे काजा ६९० दो०। रामचरणकी रजपरसि तरीअहल्या
नारि। ताते गालवहम भजब रामनामसुख कारि ६९१ चौ०।
अब मोरे मन ऐसी आई। चौथेपनवन शरणगुसाँई॥ बिन
प्रभुभवसागर को तारै। कोयम मारन दुःख उबारै ६९२ दो०॥
गालव मुनि सुनि पुनि कहत कीन्ही नीकि विचार। चौथेपन
जाइय विपिन जपत महेशभुवार ६९३ चौ०॥ सुनुनरेश असि
नीति विचारा। तनधन माया को परिवारा॥ चौथे पनके लक्ष-
णयेहू। सोनरेश सुनुसहित-सनेहू ६९४ जिहि ध्रुव अचल न

देइ दिखाई। सोम छाह क्षिति नाहिं लखाई ॥ जीवै एकसमा
नर सोई। जासु प्रकाश नयन असहोई ६६५ इतउत चितवन
देख प्रकाशा। एक वर्ष जीवन तिहि आशा ॥ किरणि
बिम्ब रवि लखि न पराई। एक वर्षसो जीवै राई ६६६ विन घन
दामिनि दक्षिण ओरा ॥ दमकै सो अति घोर कठोरा। सो
आश्चर्यहोत सुनु राजा। जीवन हायन एक समाजा ६६७
तैलसर्पि दर्पण परछाहीं। देखै धुँधुरा जीवैनाहीं ॥ जिहिन ब-
साइ नासिकावासू। शून्य अंग तिहिकाल निवासू ६९८ करै
जोनर अस्नान सदाई। भालनेत्र जल प्रथम सुखाई ॥ पीवत
जल जिनकण्ठ सुखाना। दिनदश जीवन ताकर जाना ६९९
ये सब कालपरीक्षासाजा। औरो भेदकहौं सुनुराजा ॥ सम्पुट
श्रवण शब्द नाहिंआवै। रूप न ध्यानालय लखिपावै ७००
इड़ा नाटिका चलै न कबहीं। पिंगलरहै अहर्निशि सबहीं ॥
छाया पुरुष मूड़बिन देखै। जानै ताकी मृत्युविशेखै ७०१ स्वप्न
भेद भाषौं सुनुराजा। जो गुनि नरसाधै निजकाजा ॥ वानर
रीछ याम्यदिशिगावै। देखै तासु काल नियरावै ७०२ यूथयूथ
आवत जो बनिता। गावतजात देखनहिंफविता॥ दक्षिणदिशि
असनिरखै कोऊ। जीवन अल्पकाल तिहि होऊ ७०३ नारि
पुरुष सपने करहांसी। होइ अवशि सो यमपुरवासी ॥ बासस
लालधरे पै होई। रक्त गंध लेपन कियजोई ७०४ दो०। केश
मुड़ाये जायचढ़ि दक्षिण दिशि चण्डोल। देखै सपनो कोउनर
ताकर मरण नडोल ७०५ चौ०। सपनकह्यों मैं निज बुधि
बानी। सुनहु अलक्षण कहौं बखानी ॥ पूजारामनभावैजाही।
मातु पिता गुरु द्रोहकराही ७०६ नहिं सतसंगति जाहि सुहाई।
विद्यागुरु द्विजते निठुराई ॥ वेद पुराण न जाहि सुहाना। करै
साधु गुरुको अपमाना ७०७ इष्टदेव पूजानहिं साजा। ये सब
गनौ अलक्षणराजा ॥ औरौ कहौं ज्ञान गुणरीती। जातेहोइ
रामपदप्रीती ७०८ इन्द्री सकल करै बश अपने। लोभ मोह मद

करैनसपने ॥ मनक्रम बचन रामचितधरई। सतसंगति सेवा द्विज
करई ७०९ पढ़ै सुनै नितकथा पुराना। काम क्रोध मद मनहिं
नआना॥ पूजै इष्ट देव मनलाई। मिल सोनीर समीरहिजाई
७१० जीतै आसन श्वास बनाई। जीतै संग इन्द्रि दुखदाई॥
स्थूलरूप भगवत को जोई। मनबुधि तहां लगावै सोई ७११
देह बिशेष थूल यहगाई। यत्र बिश्व सब परत लखाई॥ आण्ड
कोश इहि बपुके माहीं। सप्तावरण सहित हैं जाहीं ७१२ यह
बैराजपुरुष भगवाना। धारण आश्रय सोहमहाना॥ जिनके
पाद मूलपाताला। पार्ष्णि प्रपद रसातल चाला ७१३ गुल्फ
महातल जासुसुहाये। जिनके जंघ तलातलगाये॥ द्वैजानुनी
सुतलमधिसोहैं। बितलातलद्वौउरुमनमोहैं ७१४ जघनमहीतल
शोभापावैं। नाभिनभस्तल माहँ सुहावैं॥ ज्योति अनीक उर
स्थलराजै। ग्रीवा महर्वदन जनसाजै ७१५ आदि पुरुष तप
लोकरराटी। सत्यलोक शीरष परिपाटी॥ इन्द्र भुजादिग करण
सुहावै। श्रोत्रअमुष्य शब्द श्रुतिगावै ७१६ जिननासा अ-
श्विनी कुमारा। घ्राणगंध मुख अग्निप्रचारा॥ द्यो अक्षिणि
अरु चक्षु पतंगा। पक्ष बिष्णु दिन रात्रिअभंगा ७१७ भ्रूविजृंभ
परमेष्ठिमकाना। अप तालू रस जिह्व बखाना॥ छन्द अनन्त
शीश श्रुतिगावैं। भगवत को यम दाढ़ कहावैं ७१८ स्नेह
कला द्विज नाम गनाया। हास जनोन्मादकहे माया॥ जासु
अपांग मोक्ष श्रुति गावै। व्रीड़ा उत्तरओष्ठ कहावै ७१९ दो०।
अधरलोभ अस्तन धरम अधरम पृष्ठबखान॥ मेढ़्रपितामह
तासु के वृषण मित्र सुखदान ७२० जिनकी कुक्षिसमुद्र हैं
पर्वत अस्थि समूह। नाड़ी सरिता जासुकी वृक्षवपूरुहजूह ७२१
गतिवयश्चास समीरहै कर्मगुणन परवाह। अम्बुवाह प्रभु केश
हैं संध्या वाससजाहँ ७२२ है अव्यक्त हृदय जिहि मन चंद्र-
मासुजान॥ पुनिविज्ञान शक्तिजिहि महिमाकहत अमान७२३
अंतःकरणगिरित्र जिन अश्व अश्वतरि जोइ। उष्ट्र गजादिक

जानिये श्रीभगवत नख सोइ ७२४ चौ० ॥ श्रोणि देशसब मृग पशुसोहैं । तिन व्याकरण पक्षिमनमोहैं ॥ मनुमनीपाहैंजि नकेरी । मनुजनिवास जहां सबहेरी ७२५ विद्याधरगंधर्व सुहाये। चारणाप्सरगणसुखछाये॥ स्वरस्मृती जिनको श्रुतिगावैं। असुरा नीकवीर्य्य छवि पावैं ७२६ ब्रह्मानन भुज क्षत्रिकहावा । विडूरु अंघ्रि शूद्र छवि पावा ॥ नाना गण उपपन्न सुहावा । द्रव्या त्मक यहरूप महावा ७२७ यह जोहै ईश्वर का रूपा । मैंतोसों वरणौं नर भूपा ॥ वपुषि यविष्टे जो मनलावै । जाग अनत कहुँ बुद्धिन पावै ७२८ आतमपात सर्वत्र विलोकै । सब हरि हीन गुनै जग शोकै ॥ सत्यानँद निधि श्रीभगवाना । जाइ अखेद लोक धरिध्याना ७२९ आतम योनि पूरुवया भांती । धारो ध्यान असुर आराती ॥ नष्टस्मृति लहि विरचे लोका । जाविधि पूरुवजानि अशोका ७३० शब्द ब्रह्म करमारगयेहा । भाषौं नृपति सुनौ युतनेहा ॥ धीअपार्थध्यायति करिनामन । परिभ्रमतत्र अर्थलहतामन ७३१ मायामयी वासनामाहीं ॥ रहे सोइ तनमन सुधिनाहीं । अर्थमात्र तासोंकवि लोगा । धारत सूक्ष्म विषयउरभोगा ७३२ जबतक सिद्धि होइ नहिंजावै ॥ सिद्धिहेत पुनि रचै उपावै । भरम मात्र सबठामन देखै ॥ यत्न सिद्धिहितकरै विशेखै ७३३ पृथ्वी सुन्दर सहजसुहाई । शय्या हित किमिकरैउपाई ॥ बाहू ईश्वर दीन्हबनाई ॥ उपवर्हण चिंता किमिभाई ७३४ अंजुलि सुभग बाँधिजल पीजै । पात्र हेत उद्यम किमिकीजै ॥ वसनहेत श्रमकरौ कि भारी । करौ उदारा वल्कलधारी ७३५ चीरकाहमारगमें नाहीं । लीजै पहिरि लखौ तुम जाहीं ॥ मांगत भीख किहोइ उदासी । लिये ठाढ़ अंघ्रिप फलरासी ७३६ सुन्दर सलिल सरित बहधारा । कूप हेत किमि करत विचारा ॥ सुभग कन्दरा राम बनाई । मन्दिर हित कि- मि करत उपाई ७३७ शरणागत नाहक नरधरते । काश्री रामन रक्षा करते ॥ धन मद अंध नरन के पासा । नाहक

त्रिशूल खड्ग निशितजवान अंग सुवन सुमंत्रि इमिबचन सुनाइयो ॥ चण्डिके भो बैष्णविलुलाय दैत्यहौं नमातु शुंभहू निशुंभ रक्तबीजहू नगाइयो । कौनहेत मारत त्रिशूल लै सुमातु मोहिं पूजिबे केहेतु भौनतेरे मैं सिधाइयो ७६६ दो० । चन्द्रहास्य की ओरते आयो पूजन अम्ब। लीजै पूजा क्रोधतजि पाहिपाहि जगदम्ब ७६७ चौ० । डोम अधम मंत्रीके प्रेरे । लीन्ह खड्ग उठि काहुनहेरे ॥ किये घात उन मदन कुमारा । प्राण बिहीन अवनि परडारा ७६८ पुनि डोमन चीन्हा तिहिंवारा । सांचो सचिव सुवन यह मारा ॥ करि अनहित हरिभक्त सतावा । ताको फल मंत्री भलपावा ७६९ दो० । अनहित कौकाहू करै ताकर अनहित होत ॥ पर उपकारी पुरुष को दिनदिन होत उदोत ७७० चौ० ॥ चन्द्रहास्य नृप सुता समेता ।चढ़ि गयंदगे मन्त्री केता ॥ प्रथमहि कौकह मंत्री पाही । चन्द्रहास्य नृपसुता बिवाही ७७१ तबलागि चन्द्रहास्य चलिआये । उतरि भूमि मंत्रिहि शिरनाये॥ बहुरि सकल बृत्तान्त सुनाये। पूजन देविहि मदन सिधाये७७२ नृप कन्या विवाह निजगाये । जाविधि भूपति वनहि सिधाये ॥ तुम्हरीकृपा भये हमराजा । पाये सर्बसु राज समाजा ७७३ अस सुनिपुनि मन सचिव विचारा । डोमन अवशि मदनको मारा ॥ जस मैं हरिकर भक्त सतावा । ताकर फल तत्क्षण तसपावा७७४ छन्द रानगीतिका ॥ चलतभो कचबोरिखिलपत ऊर्द्ध बाहु अचेत । प्रेतथलिअवलोकियोज्वल दग्निभय को देत ॥ ताहि लखि बैतालहू कंकालभूतकुतन्त्र । कहत देखिये आइ यो यह अधिक हमसों अन्न ७७५ बोलियो तब प्रेत दूसर अधिक हम सों कौन । बधे ब्राह्मण तीनिपुनि बिश्वास घनहर जौन ॥ मारियोपर निन्दकर जंतुनमोकहँ जान । बिग्रहंताभ्रातममहैपुत्र पथिक जवान ७७६ कहो सुनिके प्रेत तीसर अधिक सबसो एह । मित्र द्रोहिकृतघ्न यह बिश्वासहाकरिनेह ॥ दुष्टहै यह पापि दारुण भागिये तजि अन्न । भागि भैरव भूतगे कहि धृष्ट धीगो

तत्र ७७७ दो०। चिता काठलै ज्वलितसो चलत भयो गहि हाथ। जाइ मदन देखत भयो खण्डित परे अनाथ ७७८ चिता काठ तजि रोइकै मिलत भयो लपिटाइ। चन्द्रहास्य आये इतहि उठहु पुत्र हरषाइ ७७९ धन अपार युत दीजिये विषया कन्या जोइ। भक्त सतायोअर्थ विन मैंफल पायों सोइ ७८० चौ० ॥ विरचित धातु खंभ शिर मारा। परोगतासु भूमि तिहिं वारा ॥ केहरि बाज बधिक खल कोई। मन इच्छा इनकी नहिं होई ७८१ जो हो चीतो चारौ केरा। खग मृग पशु नरनशैं घनेरा ॥ राम भक्त कर तिहुँ पुर शाका। कबहूँ जातबार नहिं बांका ७८२ कौरव कोट कृशानु लगाई। पाँडु सुतन नहिं सके जराई ॥ पुरटकशिपु हरि भक्त सतावा। तनु नृसिंह धरि ताहि नशावा ७८३ भक्त द्रोह कीन्हो दुर्वासा। फिरे भ्रमत बहु चक्रकि त्रासा ॥ सनकादिक जय विजय सताये। तीनि जन्म तामस तनुपाये ७८४ अनहित भक्त केर कर जोई। ताकी गति मंत्री समहोई ॥ या विधि होत भयो भिनुसारा। तापस एक आवतिहि वारा ७८५ देखि सचिव गति सुवन समेता। प्राणहीन भूपरे अचेता ॥ चन्द्रहास्य सो जाय बखाना। मदन परेमंत्री गत प्राना ७८६ मेचकृत सुनि अचरज वैना। यह कस भयो कहतगुण ऐना ॥ पहुँचे जाइ सघन वन माहीं। देखो मंत्रि विकल सुधि नाहीं ७८७ प्राण हीन तहँ मदनहिं देखा। भवन अम्बिका जाइ विशेखा ॥ मोहि गृहाण क्रोधअति जोई। मारो देवि वृथा इन सोई ७८८ करि मज्जन पवित्र सो भयऊ। वाचनस्वस्ति वहुरितहँ कयऊ ॥ चन्द्रहास्य पुनि कुण्डखनावा। होमभवानी भवन करावा ७८९ वलिदीपादिक प्रथमहिं करिकै। पायस सिता आज्य तिल धरिकै ॥ हुतीकाटि भूपति निजदेहा। केवल सचिव कुमारसनेहा ७९० खड्ग वहोरिहाथ मेंलीन्हा। काटन शीश हेत चित दीन्हा ॥ प्रगटि भवानी बोली बानी। मैं नहिं कीन्ह मदन जियहानी ७९१ कोटिन जीव

जंतु जगमाहीं। मारेमहा पापसबकाहीं॥ धृष्टबुद्धिमंत्रीके पापा। मदन मरेनहिं काहू शापा ७९२ जो कुदृष्टि हरिजनको हेरा। सो दुख अवशिलहत बहुतेरा॥ कहदेवी प्रसन्नहमआहीं। जो भावै मांगहु मोपाहीं ७९३ दीजै भक्ति मोहिं हरिमाता। जीवै मदन उठै सहताता॥ देवी तब कहि इविधि पुकारा। भगवत भक्ति लहौ सुखसारा ७९४ पुत्र तुमारे होवैंशूरा। हरिहि प्रसन्न करैं परिपूरा॥ बालापनसे चरित तुमारा। जोनर नारि सुनैसुख सारा ७९५ भक्तिसमेत पढ़ैजोकोई। भगवतभक्ति लहैदृढ़सोई॥ ममआगे आवहु गुणऐना। मूँदहुमुहूर्त्तार्ध निजनैना ७९६ कर शिर वैष्णविधरोविशेखा। बहुरिमदनमंत्री दिशिदेखा॥ दोऊ उठि बैठ तिहिबारा॥ चन्द्रहास्य चखखोलि निहारा ७९७ निर्व्रण निजतनलखोविशेखा। वैष्णविशक्ति तहाँ नहिंदेखा॥नभसोंपुष्प वृष्टिलाखिलीन्हा।पुनि प्रणाम मंत्रीको कीन्हा ७९८ चन्द्रहास्य हरिभक्त सुहाये। भेटि मदनउर आनँदपाये॥रामभक्तकी असि प्रभुताई। लीन्हो मंत्रिसपुत्र जियाई ७९९ दो०। विष्णुभवानीभेद नहिं सुनहु संत बुधज्ञाति। चन्द्रहास्य भूपतिभये मदन जिये याभाँति ८०० चन्द्रहास्य इमि कहतभे धृष्टबुद्धिसोंबैन॥ हरिकी माया जानिये जीवनमरण अहैन ८०१ चौ०॥ भजहु अधोक्षजको मन लाई। यहकहि भवन चले सुख पाई॥ आये सानँद सदन महीपा। भूप सुयशभा सातौ द्वीपा ८०२ सुनै कथा हरि भक्त सुहाई॥ कोटिजन्म अघजाइ नशाई। भोग विलास करै इहि लोका॥अंतकाललह सुरपुर ओका ८०३ पुनि महीप बाजनबजवाये। विपुल दान महिदेवन पाये॥ मंत्री मदन महीपति कीन्हा। याविधि राम राज्यतिहि दीन्हा॥ ८०४ भे इमि चन्द्रहास्य नर पाला। वरणौं अब कुलिन्द कर हाला॥ मंत्री लीन्ह डाँड़िसब साजा। रहो भवन नहिं एकसमाजा ८०५ नारि सहित मनकीन विचारा। रोपिनि चिताजाइ तिहि वारा॥ चन्द्रहास्य उतगयो सँहारा। लीन्हो खल धनस-

कल हमारा ८०६ अब कसजीवन अस दुखदेखी ॥ मरण ठान तिन हृदय विशेखी। हरिबंधन हरगुनि मनमाहीं ॥ दियोशेषध-न विप्रन काहीं ८०७ प्रविशन जबहिं हुताशन लागे । कहो कोउ द्रुत मंत्री आगे॥ तबहित कर कुलिन्द नरनाहा । सहप रिवार होत शिखिदाहा ८०८ पुरजन बचन सुनतसोधावा ॥ हरिप्रेरित कुलिन्द ढिग आवा । माकुलिन्द उरकरिय विषादा ॥ देहुँ देश धनयुत अह्लादा ८०९ करिपरितोषकुलिन्दहि आ-वा। जियालाल प्रभुसकल बनावा ॥ चन्द्रहास्य नरेश बड़ भयऊ । सुनत कुलिन्द दुसह दुखगयऊ ८१० दो० । आये सहित समाज निज कुन्तलपुरहि कुलिन्द ॥ बधुनसहित निज तनय लखि हर्ष उदधि जिमि चन्द ८११ चौ० ॥ मंत्री मन्दिर रहे छपाना । चन्द्रहास्य यश करैं बखाना ॥ मम कर मंत्री पत्र पठावा । तासु प्रसंग राज्य हमपावा ८१२ महापुरुष अवगुण नहिं माना । अपकारहि उपकार बखाना॥ या विधि चन्द्रहास्य युत साजा । वर्ष तीनिसै कीन्ही राजा ८१३ विषया तनय वीर रणधीरा । नाम मकरध्वज पुण्य शरीरा ॥ चम्पक मालिनि कुँवर सुजाना। पद्म अक्ष गुण ज्ञान निधाना ८१४ बालापनते जप हरिनामा । हेत प्रीति अति शालग्रामा ॥ जो नर चह भवसागर पारा । शालग्राम जपे निस्तारा ८१५ दो०। शालग्राम समान है और न दूजो देव ॥ शूलपाणि सनकादि सुर पावत कतहुँ न भेव ८१६ जातनकी छविको निरखि जात न यमपुर कोइ ॥ मनभावन जिहि उर बसै मनभावन फलहोइ ८१७ जबहीं यज्ञ युधिष्ठिरसाजी । विजयहेत छांड़ो वर बाजी ॥ चारौदिशा अश्व फिरि आवा। कुन्तलपुर समीपनियरावा ८१८ चन्द्रहास्य सुत यज्ञ तुरंगा । देखो चन्द्रबिम्ब सम अंगा ॥ बांचि पत्र लैगे जहँ राजा । हर्षितभे सब सभा समाजा ८१९ भूपहि अति आनँद भा भारी। जहां धनंजय तहां मुरारी ॥ बालापन ते हम हरिसेवा । भे सहाय अब सुतबसुदेवा ८२० त्रिहिकारण

कुन्तलगे कानन । जपत जाहि शिव मुनि चतुरानन ॥ सो चलि आपु दरश हरिदीन्हा । तौजनु कोटियज्ञ हमकीन्हा ८२१ अगम अगोचर जिहिश्रुति गावा । सो मम लोचन गोचर आवा ॥ देखौं कमलचरण मन लाई। कोटिजन्म अघ ओघ नशाई ८२२ सुनु मकरध्वज बचन हमारा । अर्जुन सों नहिं युद्ध बिचारा ॥ बड़ हरिजन हरिहैं तिहि संगा । देव युद्ध बिन यज्ञ तुरंगा ८२३ भरि सम्बत इन अश्व फिरावा । पार्थ श्रमित बहु पन्थ गँवावा ॥ एकै पक्ष यज्ञकर बाक़ी । आये जीति पुहुमि चहुँधाकी ८२४ उनहिं राखि होइब हय संगा। जाब सदल जहँ जाइ तुरंगा ॥ धन अनेक देवो सचुपाई । दन्ती अयुतन भार भराई ८२५ दो०। युगलकुमारन सों कह्यो सजहु मिलन सब साज ॥ जन्म सुफल देखिय दरश चरणकमल यदुराज ८२६ चौ० । अस कहि भये सदल असवारा । विष्णुभक्त द्वौ संग कुमारा ॥ चन्द्रहास्य हरिअंग निहारा । अयुत अनंग अंगछबि हारा ८२७ रूप अलौकिक यदुकुल राजू।अयुत अतन तनलाग बियाजू ॥ रथते उतरि परे प्रभु चरणा । सोसुख मोसनजात न वरणा ८२८ हरि उठाय तिहि कंठलगावा । आनँद महाभूप उर छावा॥कुशल पूंछि सादर अतिहेता। कुशल दरश प्रभु कृपानिकेता ८२९ चरण कमल गहि बारहिं बारा । लागे अस्तुति करन भुआरा ॥ अगुण स्वरूप अनंत तुमारा । चरित अमितको पावै पारा ८३० छन्द हरिगीतिका । तनधरो मीन नवीन प्रभु शंखा सुरहि संहारिकै।लैबेद दीन्हेआनि विधिकर बिबिधविधि मनुहारिकै ॥ पुनि रूपकच्छप सिंधुपै चौदह रतन लाये मथी। महिमा तुम्हारी अचल कीरति बिदित युगचारिहु कथी ८३१ घाराह रूपवहोरि धीर हिरण्याक्ष निश्चर क्षयकरो । लाये पुहुमि पाताल ते यश लोक तीनिहुं बिस्तरो ॥ तनधरो वावन यज्ञ पावन बली बलि छलि तल पठै । नरसिंह वहुरिस्वरूप धरि वध कियो हिरणाकुश शठै ८३२ प्रह्लाद को प्रभु इन्द्र

पदवी दीन्ह निज जन जानिकै। सच्चिदानन्द चरित्रमहिमाकहै
कौन बखानिकै॥ बहुरौ परशुधरभये तुम तब बीस एकहिबार-
हीं। क्षिति करी सकल निक्षत्र छीनी सहस बाहुकिबाहहीं
८३३ पुनि राम बपुधरि बधो रावण नृप विभीषण शोभि
यो। अब कृष्णकामदरूप राजत कंसकेशी बध कियो॥ मथुरा
करें हरि उग्रसेनि नरेश यश तिहुंपुर भयो। अब द्वारका कं-
चन बसाई सकल पुरजन अघइयो ८३४ दो०। चरित अमित
महिमा अमित अमित कथा बिस्तार। कहँलगि बरणैं जीव
जड़ शेषन पावतपार ८३५ चौ०। अभिमत बरदै हरिबैठारा।
कुँवर युगल चरणनतर डारा॥ प्रद्युम्न सम हरिजानि उठाये।
दोऊ बीर निकट बैठाये ८३६ प्रभु पार्थहि पुनिलीन्ह बुलाई।
चन्द्रहास मिलि आवहु जाई॥ कहपारथ हँसिहैं सबलोगा।
यह अनउचित नीति नहिं योगा ८३७ प्रभु कह उचित तुम
हिं असि आई। प्रथमहिं ताहि मिलौ तुम जाई॥ मिलहुजाइ
महि पालहि ऐसे। पूजहुमन क्रम हम कहँ जैसे ८३८ गोशत
देइ करै मखदाना। संत मिलन नहि सरसबखाना॥ हरिहर
जन जिन प्रीति बढ़ावा। तिन निज जन्म सुफल करिपावा
८३९ पारथ चले सुनत नृपबासा। प्रेम उमगि मन मुदित
हुलासा॥ आगे आइ जिष्णु नृप लीन्हे। मिले परस्पर निज
निधि चीन्हे ८४० पुनि पुनि मिलहिं चरण गहि दोऊ। राम
भक्त सुकृत तन होऊ॥ पूछत कुशल क्षेम बहु भांती। सोसुख
वर्णत बहुसकुचाती ८४१ दोउ कुंवर गहि पारथ चरणा। नाथ
सदा हम तुम्हरी शरणा॥ सादर पार्थ निकट बैठारे। बभ्रुबाह
समतिनहिंनिहारे ८४२ प्रद्युम्न आदि मिले सबबीरा। बाजन बाजे
महा गँभीरा॥ चले लवाइ नगर महि पाला। दरश देखिहरि
भये बिहाला ८४३ भोजन सकल प्रकार बनाई। बासर तीनि
भई पहुनाई॥ कृष्णपार्थ कीन्ही असि साजा। कीन्ह तिलक
मकध्वज राजा ८४४ हरिजन कथा सुनैं चित दीन्है। तिन

अनंत जनु तीरथ कीन्हे ॥ बाढ़ै आयुर्बल दुखनाशा । चन्द्र-
हास कर सुनै प्रकाशा ८४५ चन्द्रहास अस मंत्र दृढ़ावा ।
बिषया सुतको नीति सिखावा ॥ कीजो देशकोश प्रति पाला॥
हमनतजब अब पद गोपाला ८४६ जौन हेतु कुन्तल तपसा-
धन । जपत जाहि शिव मुनि चतुरानन ॥ जाहि फतहुँमुनि
ध्यान न पावा । सोहरि घर बैठे मम आवा ८४७ अस कहि
पुनि पठवा धन नाना । गज पुर धर्मराज अस्थाना ॥ चन्द्र-
हास तब भे हरिसंगा । त्यागे सकल राज्य के अंगा ८४८
पूजन निष्ठा में सुख साने । चन्द्रहास महिपालबखाने ॥ जि-
यालाल पावै किमि थाहा । भक्तचरित्र उदधि अवगाहा ८४९

चौ० ॥ कहौं अल्ह की कथासुहाई । भगवत भक्त चरित
सुखदाई ॥ भगवत भक्त भये सो ऐसे । बालक निज मातहि
प्रिय जैसे ८५० तीरथ यात्रामें इक बारा । कोउ नृपति करबाग
निहारा ॥ उतरे काम वृक्षतर जाई । भगवत पूजन किय मन
लाई ८५१ बागवान सों मांगे आमा । भगवत भोग लगावन
कामा ॥ सोकह आमचाहिये जेते । लेहु तोरिमनभावत तेते
८५२ ताके कहत भई नहिं बारा । झुकि आई हरि ऊपरडारा ॥
तोरि तुरत सो भोग लगाये । यह अचरज माली लखिपाये
८५३ तुरतनृपति सों जाइ बताये । राजासुनि अबिलंबितआये॥
चरणन परो अल्हजी केरे । अस्तुति कीन्ह प्रेमरस घेरे ८५४
तनधन कोशराज्य परिवारा । अहै नाथ यहसकल तुम्हारा ॥
मोको नाथ जानि निज दासा । कृपा बिशेष करिय लखि
पासा ८५५ जानि नृपति मनकी गति सोई । भगवत भक्ति
दियो सुख मोई ॥ भगवत भक्ति भक्तकी बाता । कहत शेषसन-
कादि सकाता ८५६ दो० । लचीडार अचरज कहा नमत
जिनहिं अजईश । जियालाल किहि बिधि कहै अघवपु सि-
स्वा बीश ८५७ ॥

कथा पृथ्वीराज की ॥

चौ० ॥ पृथ्वीराज नृपति सुखखानी । बीकानेर जासु रजधानी ॥ सो कल्याण सिंह के पूता । भगवत भक्त भये मजबूता ८५८ इन्द्रीजित चख नारि न देखत । ध्यानालय नित हरिको पेषत ॥ भगवत कीर्तन करत सुहाये । विरचत काव्य सुदित सुख पाये ८५९ भगवत सेवा निष्ठा भारी । विविध भाव भगवत उरधारी ॥ गे परदेश नृपति इकबारा । ध्यानालय हरि रूप निहारा ८६० एक समय ध्यानालय माहीं । भगवत वपुष विलोका नाहीं ॥ तबहिं सांड़िनी पुर दौराई । चरित पुजारिन दीन्ह बताई ८६१ होतमरम्मत भुवन प्रकाशा । द्वितियधिष्ण भगवत कर बासा ॥ अब भगवत निज मंदिर आये । नृपति रूप ध्यानालय पाये ८६२ पुनि सुनि नृपति दूत मुख बानी । अति आनँद अचरज जिय मानी ॥ यह अभिलाप सदामन माहीं । मथुरामें त्यागहिं तन काहीं ८६३ बादशाह यह प्रण सुनि पायो । तिनहिं छलन हित द्वेषबढ़ायो ॥ दियआयसु काबुलसंग्रामा । किय यात्रा द्रुत नृपतिललामा ८६४ कल्प समान तासु क्षण जाहीं । यह सन्देह भई मनमाहीं ॥ मरणकाल निज जानि समीपा । कीन्हीं चिंता नृपकुलदीपा ८६५ मरण काल जादिन चलिआयो । तिनको भगवत तुरित बतायो ॥ जानि भये सांड़िनि असवारा । पहुँचे मथुरानगर मँझारा ८६६ दीन्हीं देह त्यागि तिहि भूमी । जहँतनुतजे जन्म नहिं घूमी ॥ हरिप्रण इमि राख्यो तिन केरा । प्रभु पालत भक्तन सबबेरा ८६७ एक और हैं नृपकोहाला । बरणौं सोउ सुमिरि गोपाला ॥ एक समय बन मांझ भुलाने । सदल महीप क्षुधित अकुलाने ८६८ तब सीतापति रचो उपाई । मारग दीन्हो ग्राम बनाई ॥ सब प्रकार को सुख तहँ पावा । राजा हृदय हरो दुख दावा ८६९ या विधि पृथ्वीराज कहानी । जियालाल बरणी सुखदानी ॥

निर्मल सुयश जगतमहँ छाई । गे तनुत्यागि निकट रघुराई ८७०॥

कथा धना भक्तकी ॥

चौ० ॥ धना जाति के जाट बखाने । भगवत भक्त भये सुख साने ॥ बालापन निज घरकर बासा । तहँ ब्राह्मण आयो हरि दासा ८७१ पूजन हरिको करै सुहावै । भोग लगाइक भोजन पावै ॥ धना कहो मूरति इकदीजै । हमहूं हरिको पूजन कीजै ८७२ अति हठ लखि द्विज मूरति दीन्हो । धना लगाइ नयन शिरलीन्हो ॥ प्रथमहिं आपु कीन्ह अस्नाना । मूरति पूजि बहुत सुख माना ८७३ माता लै रोटी जब दीन्हा । भगवत को अर्पण तिन कीन्हा ॥ आंखी मूंदि बैठ तिन आगे । भोग लगावत अति अनुरागे ८७४ बड़ी बेर बीती तिनकाहीं । भगवत भोजन कीन्हों नाहीं ॥ धना बिबिध बिधि बिनती लाई । नहिं भोजन कीन्हों रघुराई ८७५ कीन्हीं बिबिध दण्डवत तबहीं । नहिं भोजन कीन्हों हरि जबहीं ॥ रोटी दीन्हीं ताल बहाई । लागे बहुरि चरावन गाई ८७६ दो० । या बिधि बीते बहुत दिन हरि भोजन नहिं कीन । आपहु भोजन बिन रहे डारि ता लनितदीन ८७७ चौ० । अशन हीन तनु सूखन लागो । करै न भोजन हरि अनुरागो ॥ इन्द्री अबल भई तिनकेरी । निर्बल देह भई बहुतेरी ८७८ क्षुधा विवश तन कांपन लागा । तजो न धीरज सो बड़भागा ॥ भे व्याकुल बहु तजो न नेहा । चाहत प्राण जान तजि देहा ८७९ छूटत प्राण जानि भगवाना । चले भक्त वश कृपानिधाना ॥ भोजन करन लाग हरषाई । धना बिलोको शीश उठाई ८८० आधा भोजन हरि करि लयऊ । तबहीं धना कहत इमि भयऊ ॥ अबसब भोजन आपै खैहो । कै तनको हमहूं को दैहो ८८१ सुनि भगवत हँसि तुरतहि दीन्हा । धना हर्ष युत भोजन कीन्हा ॥ या बिधि दिन प्रति भोग लगावैं । भगवत सह सुख पूरुब पावैं ८८२ या बिधि बहुत

दिवस चालि गयऊ । तब हरि आप विचारत भयऊ ॥ हम याको भोजन नित करते । टहल कछू मन में नहिं धरते ८८३ यह गुनि पूँछि धना सों आई । लागे रोज चरावन गाई ॥ एक बार सोई द्विज आयो । हाल धना तासों सब गायो ८८४ पहिले बहुत दुःख दरशाये । अबतौ गऊ चरावन लाये ॥ सुनत विप्र बड़ अचरज लाई । कह मोकहँ हरि देहु लखाई ८८५ धना ल वाइ तिनहिं दरशाये । देखि विप्र मन आँनद पाये ॥ या विधि धना भक्त सुखदाई । हरि आयसु काशी में आई ८८६ रामानन्द मंत्र तिन लीन्हा । गुरु आयसु मस्तक धरि कीन्हा ॥ घर में आइ साधु की सेवा । लागे करन त्यागि सब सेवा ८८७ हरि को रूप हृदय महँ देखैं । सुमिरण सेवन करत विशेखैं ॥ वापन चल गन्दुम इक दीना । मारग मिलिगे साधु प्रवीना ८८८ सबगोधूम्र तिनहिं दैदीन्हा । खेत जुताइ मयावन कीन्हा ॥ घरको चलेजात भे जबहीं । हरि विचार कीन्हो मन तबहीं ८८९ याको दीजै खेत जमाई । नाहित जगमें होइ हँसाई ॥ यहगुनि सुन्दर खेत जमावा । धनातीर सब लोगन गावा ८९० सुनत धना मनमाहँ विचारी । हँसीकरत ये लोग हमारी ॥ सबकेकहे लखो पुनि जाई । जायो सुन्दर खेत महाई ८९१ हरिकी कृपा अधिक पहिंचानी । डूबनलगे प्रेमरस पानी ॥ हरिकी सेवा में लवलीना । कीन्हो मनहिं भक्ति जल मीना ८९२ या विधि धना भक्त की गाथा । मैं वरणी हिय धरि रघुनाथा ॥ साधु चरित्र उदधि अवगाहा । जियालाल किमिपावै थाहा ८९३ ॥

कथा देवाजी की ॥

चौ० । मंदिर एक उदयपुर नेरा । रूप चतुर्भुज स्वामीकेरा ॥ देवा नाम पुजारी तहँवाँ । भयो वृद्ध पूजाकरि जहँवाँ ८९४ एक दिवसकर हाल सुहावा । राना उदयपूर कर आवा ॥ भगवत सोइ रहे तिहि काला । देवा लिय उतारि जो माला ८९५

लीन्ह लपेटि शीश निज माहीं। राना आइगयो क्षण ताहीं॥
दीन्हो डारि गले सो माला। राना लखो श्वेत इकबाला ८६६
देवाजी से पूँछन लयऊ। का बुढ़ाइ भगवत अब गयऊ ८६७
सुनि देवाजी बोले बानी। गेबुढ़ाइ अब शारँगपानी॥ प्रातः
काल देखब कह राना। सुनि देवा मन विस्मय माना ८६८
अस्तुति करनलाग मनुमारी। जय सीतापति अवध बिहारी॥
जय रघुनंदन जयतिखरारी। दैत्यदमन तारणऋषिनारी ८९९
जय शंकरधनु खण्डन हारे। जयति भक्तजनके रखवारे॥ जय
भृगुनन्दन मान निवारण। शवरी गृद्ध अजामिल तारण ९००
रावणारि खरदूषण नाशक। ज्ञान विराग विवेक प्रकाशक॥
भक्त पक्षके राखन हारे। जयकौशल्यानंद दुलारे ९०१ विनय
काहकरि जानौं स्वामी। नाथ नमामि नमामि नमामी॥ पूजा
बन्दन मैं नहिं जानौं। केवल चरण आश तवआनौं ९०२ अहै
लाज अब रावर हाथा। जस चाहौ तस कीजिय नाथा॥ या
विधि विनयकरत निशिबीती। उठि कीन्हीअस्नान सप्रीती ९०३
गे भगवत मन्दिर युत नेहा। श्वेत बाल देखे प्रभु देहा॥ बढ़ो
प्रेम तन दशा भुलानी। अमित कृपा निज ऊपर जानी
९०४ तिहि अवसर राना तहँ आयो। श्वेत बाल लखि
विस्मय पायो॥ जानो दिय लगाइ कछु देवा। ताहूकर
जानन चहभेवा ९०५ लैचिमटी इक बाल उखारा॥ चली
तहांते रुधिर छछारा। लागो बालउखारन जबहीं॥ नाक
सकोरी भगवत तबहीं ९०६ तदपितजो नहिं विना उखारे।
भये वसन तिहि रुधिर प्रचारे॥ अचरज लखि प्रगटो दुखभारी।
गिरोमोह वश खाइ पछारी ९०७ तबयाविधि बोले भगवाना।
होवै उदय पूर जो राना॥ गद्दी पाइ न मंदिर आवै। रहै बालसो
दरशन पावै ९०८ देवाके चरणन परिराना॥ गयोभुवन निज
उरदुख माना। भक्त कथा याविधि सुख खानी॥ जियालाल
द्विज कहाबखानी ९०९॥

कथा दो लड़कियों की ॥

चौ० । द्वैकन्या क्षत्रीकुलजाई । तिनकी बरणौं कथा सुहाई ॥ नृपके गुरू एक दिन आये । भगवत पूजन में मनलाये ९१० कन्यनकहो कि मूरति दीजै । हमहूंबावा पूजन कीजै ॥ यहसुनि शिल्य एकतिन दयऊ । नाम शिल्यजी कहन सुलयऊ ९११ पुनि कन्यन सों भाषोएहा । पूजौइनको सहित सनेहा ॥ जो मँगि हौ इनसों सो पैहौ । मनक्रम वचन ध्यान जो लैहौ ९१२ ॥ यह सुनिप्रेम सहिततिन लीन्हा । भगवत पूजनमें मनदीन्हा ॥ ऐसा पूजन में मनलाई । जिनउरभगवत परेलखाई ९१३ एक राज कन्याकी बाता । अबबरणौं न्यारी विख्याता ॥ वा कन्या को चचासुहायो । तासु पिता ऊपर चढ़िआयो ९१४ भई लराई तहां अपारा । लीन्हो लूटि सकल भण्डारा ॥ लूटि गईमूरतिहू जाकी । खान पान भूली सुधि ताकी ९१५ हरिबिन देखतजग अँधियारा । प्रगट भयो दुख हृदय अपारा ॥ कोऊ कहोचचा ढिग जाई । मूरतिनिज लावहु किन जाई ९१६ सुनि यहगई चचानिज तीरा । मूरति मांगी होइ अधीरा ॥ ताने कहो ढूंढ़ि कै लीजै । कोऊ कहो हांक किनदीजै ९१७ जो हैं अति प्रिय मिलिहैं आई । सुनि कन्या टेरन मनलाई ॥ अहोशिल्यजी कहां लुकाने । दासीको तजि आइपराने ९१८ दीन्हीहांक कन्यकाजवहीं । प्रगटे आइ अग्रहरि तवहीं ॥ देखत लीन्हो हृदय लगाई । गइमणि मनहुँ भुजंगिनि पाई ९१९ देखत लोगन अचरज माना । करन लाग भगवतगुण गाना ॥ यह इक कन्या चरित सुहावा । वरणौं द्वितियकेरमनभावा ९२० भयो विवाह प्रथम तिहिकेरा । आये लोग लेन तिहि बेरा ॥ कन्या मनमें कीन्ह विचारा । अब पूजन किमि वनिहि हमारा ९२१ विदा कीन्ह माता पितु जवहीं । डोलामाहँ हरिहि लियतवहीं ॥ सेवक सेवाकि संग न लीन्हा । आपुहि गमन तासु सँगकीन्हा ९२२ मारग

चलत भईवह जबहीं। बोलोपति ताको वहतबहीं॥ तिहिबोलन हित उद्यम कीन्हा। तब कन्या कछु उतर न दीन्हा ६२३ तब वह बोलत भोतिहि पाहीं। कौनपीर तुम्हरे उरमाहीं॥ हमको दीजै दरद बताई। ताकी हम कछुकरैं दवाई ६२४ सुनिकन्या बोली तिहिपाहीं। छुवनचहौ जो ममतनकाहीं॥ भगवत भक्ति करौ मनलाई। यह हम तुमते कहा दवाई ९२५ बचन सुनत भो क्रोधितभारी। बढ़े हुताशन जिमि घृतडारी॥ लीन्हो तत्क्षण छीनिपिटारी। सहमूरति तड़ाग बिचडारी ९२६ भई बिकल अति लखि यहबाला। जाउर प्रकटो बिरह बिशाला॥खान पान तत्क्षण तजिदीन्हा। सोहरिबिमुख जतन बहुकीन्हा ६२७ परवह नहिंमानी मनबाला। मन्दिर जाइकहो सोहाला॥ तासु सास बहुकीन्ह उपाई। कछु न सुहाइ बिना हरिपाई ९२८ करि विचार लैगे तिहिबारा। मारग ताल जहां हरिडारा॥ तब कन्या इहि भांति पुकारी। गये कहां हो शारंगधारी ६२६ हे शिल्य जी टेर मम सुनिये। निजदासी अमोल मन गुनिये॥ रूठेकौने हेतु गुसांई। इहिदासी कहँलेहु जियाई ६३० परी कौन मोसों तकसीरा। जो नहिं दूरिकरौ उरपीरा॥ निकरि नीर सों बाहर आवहु। मैं दासी को मरत जियावहु ६३१ जो तुमनाथ निकसि नहिंऐहौ। मोकहँ फेरि जियत नहिंपैहौ॥ प्राणहुगये न दुख यहजाई। देखौ समुझि मनहिं रघुराई ९३२ सदा भक्त दुख दारनहारे। दीनबंधु संतन रखवारे॥ दूषणारि रावण मद मोचन। जैसीतापति वारिज लोचन ६३३ शवरि सुकण्ठ बिभीषण तारण। गृद्ध अजामिल यवन उधारण॥ अंध पुलिन्द हूण सुखदाई १०१३ जैसीतापति जैरघुराई ६३४ आवहु निकरि तुरत जलतेरे। दीन्ह हांक इमि भाखि करेरे॥ उच्चस्वर करि रोवनलागी। हारघुनाथ कौन अघत्यागी ६३५ व्याकुल गिरी भूमि तिहितीरा। जिमि पाठीन विकल बिननीरा॥ तासु दशा देखी हरिजबहीं। आये निकसि तालसों तबहीं ९३६

देखत कन्या अति हरषानी। सूखत भूरुह जिमि लहपानी॥ लीन्हो हृदय शीशनिजलाई। गैमणि बहुरि फणिक जिमिपाई ६३७ जैसे पंगुल निजगति पावै। जिमि दरिद्र गृहननिधि आवै॥ हरषै अंधा लोचनपाई। तिमि कन्या उरसुख अधिकाई ६३८ कन्या केरदेखि यहहाला। भये सकल जन जन गोपाला॥ भगवतमें निश्चय अतिकीन्हा। शुभदृढ़ नेमहृदयधरि लीन्हा ६३६ यह द्वैकन्यनकी इतिहासा। जियालाल द्विजकीन्ह प्रकासा॥ भक्त चरित्र पार को पावै। कहि कहि कोटिन जन्म गवांवै ६४०॥

संतदास की कथा॥

चौ०॥ संतदास हरि भक्त सुहाये। ग्रामनिवाइ वास सुख छाये॥ भगवत पूजनकरहिं सुहावा। एकदिवस तिन भोग लगावा ६४१ दो०। छप्पन विधि को भोग पुनि अर्पण कीन्हो जोइ। जगन्नाथजी हर्षयुत कीन्हो भोजन सोइ ६४२ जबहिं पुजारिन भोगलगावा। तब भगवत यहिभांति बतावा॥ न्योता आजु भक्त ममदीन्हा। स्वाद सहित भोजन हमकीन्हा ६४३ क्षुधारही नहिं तनिक हमारे। यहहम तुमसों कहत पुकारे॥ सुनत पुजारिन अचरजमाना। धन्यधन्यकरि भक्तबखाना ६४४

साखी गोपाल की कथा॥

दो०। गौड़देशमें रहतहे द्वैब्राह्मण अभिराम। वृद्ध कुलीन समान कुल एकयुवा सुखधाम ६४५ तीरथ यात्रा में रहे एक साथ सुखरूप। रोगविवश भोवृद्धद्विज वरणौंकथा अनूप ६४६ युवाविप्र हुतो रहो संगी वाकोजौन। सेवा सों बहुविधिकरी रोग मुक्तभो तौन ६४७ वृद्धविप्र हर्षितकहो सुनिये मेरी बात। कन्या ताको देउँगो जो मेरी अँगजात ६४८ युवा अवस्था जौन द्विज यदपि कहो नहिंलेन। करिसाखी गोपालको तदपिकहो सो देन ६४६ गये आपने देश जबमांगो विप्र सुजान। पूँछि

देआसन भोजन करवावा। राति मांझ तिनके ढिगआई॥ कहो मोहिंलै चलौ लवाई ९७९ सदन कहो मो पै नाहिं होई। चाहौशीश कि काटै कोई॥ ममपति शीश चहत सो जाना। काटि तुरित सोवत गुनि आना ९८० धरिआगे बोली सो एहा॥ अबलै चलौ बिगत सन्देहा। सदन कहो यह कीन्हो काहा। हमहिंन कछू तिहारी चाहा ९८१ सुनतवचन तिय शोर मचावा॥ साधु जानिमैं याहि टिकावा। ममस्वामी के लीन्हे प्राना॥ चाहत मोहिं संगलै जाना ९८२ सुनियह हाकिम पकरि मँगावा। तिनसों सब वृत्तांत सुनावा॥ कहोसदन अपराध हमारी। देहु दण्ड जो इच्छ तुम्हारी ९८३ सुनि हाकिम तिन करकटवावा॥ तदपि सदनमन दुःखनपावा। पूरब फलहि जानि निज देहा॥ कीन्हो भगवत चरण सनेहा ९८४ गेसमीप पुरुषोत्तम जबहीं। जगन्नाथ पालकि निजतबहीं॥ दीन्हीं सदन हेत पहुँचाई। श्रीपुरुषोत्तमजन सुखदाई॥ ९८५ चढ़ेन सदन विनय बहुदेखी। संगाज्ञा गुनिचढ़े विशेखी॥ उतरेजाइ सिंह दरवाजा। दरशदिये हर्षित महराजा ९८६ हरि के दरश सदन किय जबहीं॥ आये जामिपाणि तिन तबहीं। अस्तुति कीन्हमहासुखपाई॥ जियालाल वरणै किमिगाई ९८७ जाति पांतिकी नाहिं विचारा। जो हरिसुमिरै सोइ पियारा॥ या विधि कहिपुराणसब दीन्हा। मैंकपोल कल्पितनाहिंकीन्हा ९८८

कर्म्मानन्दजीकी कथा॥

छन्द रामगीतिका॥ भयेकर्मानन्दचारण जानिमाँहप्रवीन। काव्य रचना करत भगवत माहँ भावनवीन॥ सुनत जिनकी काव्य पघिलत चित्त आनँदहोत। जानजिनजग कूंउ मानस भयोज्ञानउदोत ९८९ चलेतीरथ काहँ शिरपरहरि सिंहासन धारि। छड़ीराखतगाड़ितामहँ देत कुवाडारि॥ करत डेरा राति दिन जहँ तहां को यह कर्म्म। करन डेरालागइकदिन रही छड़ि

कहुँ मर्म ९९० तबहिं मनमें शोच आयो करन लाग विचार। कहत पुनि या भांति लागे ईश ऊपरदार॥ देत आरु असतपानी रचत भोजन तौन। शीश निज असवार करिके चलत पारग जौन ९९१ दासहै बिन मोल को यह रहत सेवामाहिं। नाथ को अधिकार कबहूं दास पावत नाहिं॥ सो टका अवसौंपि दीन्हो हमहिं आजु सुरेश। बचन भाष गूढ़ रावर द्रोह देह प्रवेश ९९२ करन लाग विचार देखें कौनकी तकसीर। जानि मन भगवान जनकी हरीतत्क्षण पीर॥ दीन्हिछड़ीमँगाय कर्सानंदहार्पितपाइ। गाड़िभूमि करंडहरियुत दीन्हहर्पिफुलाइ ९९३

कूल्हजी वा अल्हजी की कथा॥

चौ०॥ कूल्हअल्ह ये दोनों भाइ। रजवाड़े जन्मे सुखदाई॥ कूल्ह बड़े भाई कर नामा। जन्महिते हरिभक्त ललामा ९९४ अल्ह नाम लघु भ्राता जोई। मद्यमांस रत निशिदिन सोई॥ मनुज काव्य में अति सुख पावै। भगवत यश समीप नहिंआवै ९९५ इक दिन बड़ो भाइ कह भालिकै। दर्शन करहिं द्वारका चलिकै॥ दुर्लभ जन्म वृथा यह जाई। यह संसार असार महाई ९९६ यह कहि दोनों बंधु सिधाये। पुरी द्वारका में चलि आये॥ बड़ो बंधु श्री हरिके आगे। रचित कवित्त पढ़न निज लागे ९९७ रहे अल्ह जो छोटेभाई। तिनहिं देखि अति लज्जा पाई॥ नयनन माहँ अश्रुभरिआये। कर्म आपने शोच नलाये ९९८ आवतरहे कवित द्वैचारी। पढ़नलाग हरिओर निहारी॥ भगवत हृदय प्रीति अति देखी। पुनि लज्जित मनमें अवरेखी ९९९ कीर्तनसुनतहुँकारी दीन्हा। पुनि पुजार कहँ आज्ञा कीन्हा॥ मालादेहु गले पहिराई। इनकीर्तनसों हमसुख पाई १००० मालादेन पुजारी लागे। बोले अल्ह तबहिं अनुरागे॥ हैया लायक ममबड़ भाई। माला तिनहिं देहुपहिराई १००१ कहोपुजारी सुनियेभाई। हमआज्ञाप लिकयहदुराई॥ यहकहिमाल गलेबिच दीन्हा। देखत कूल्ह दुःख जिय कीन्हा१००२ निज

मर्याद कूल्ह लघु जानी । डूबनचले उदधिके पानी ॥ कूदेजब बारिधिके माहीं । देखी सुभग द्वारका ताहीं १००३ कीन्हेदरश कृष्ण के जाई । काम कोटि शोभा अधिकाई ॥ देखि कृष्ण कीन्हो बहुमाना । खानपान आसन सनमाना १००४ भोजन द्वै थारा मँगवाये । देखत सो अति अचरज पाये ॥ कहभगवत अचरज नहिं कीजे । थारा एक अल्हको दीजे १००५ तुमबिन भ्राता ब्याकुल भारी । खान पान निज दीन्ह बिसारी ॥ जीव दान ताको अब दीजे । झटित आप यात्रा उतकीजै १००६ सुनत कूल्हहरिबन्दनकीन्हा । मारग निज भ्राताढिग लीन्हा ॥ गयो भुवन सुनि तुरित सिधाये । ग्राम समीप तबहिं चलिआये १००७ जानो अल्ह भ्रात मम आयो । मिलन हेत आगे उठि धायो ॥ मिले परस्पर दोनों भाई । सो सुख कापै बरणि सिराई १००८ निज मन्दिर गमने द्वौ भाई । तबहिं कूल्ह सब कथा सुनाई ॥ कूदि उदधि महँ गयों समाई । तहां दरश पाये यदुराई १००९ द्वैथारा भोजन हित दीन्हा । तबहित गुनि हम मत्सर कीन्हा ॥ तब भगवत यह कथा सुनाई । अल्ह भक्तमम अहै महाई १०१० राजा रहो राज्य निज त्यागी । मम हित कानन गयो बिरागी ॥ राजा और एक तहँ आयो । तासु भोग देखत ललचायो १०११ नृत्य वाद्य दल यान समाजा । चहो बहुरि भोगन सो साजा ॥ ताते लीन्हो जन्म बहोरी । राखत मनहिं सदा सुख बोरी १०१२ जौन बासना है मन जाके । आवत अग्रदेह सहताके ॥ यह कहिकै बोले यदुराई । जाहु शीघ्र तुमरो जहँ भाई १०१३ यह कहि सुनि कै दोनों भाई । काननगे सब तजि सुख पाई ॥ पूरण प्रेमपाइ द्वौ भाई । भक्ति अनन्यम रहे समाई १०१४ ॥

जगन्नाथ की कथा ॥

सो० । थानेश्वर शुभ ग्राम जगन्नाथजी रहत तहँ । परम

भक्त सुखधाम सिरीकृष्ण चैतन्यप्रभु १०१५ चौ०। पूजा मानसि करतसदाई। एकसमय ऐसी मन आई॥ भगवत मूरति मिलै सुहाई। करौं प्रतिष्ठा भुवन बनाई १०१६ सुनि भगवत किय कृपा महाई। निज स्वरूप दिय कूप बताई॥ जगन्नाथ अस्थाप्यो लाई। भांतिन करन लाग सेवकाई १०१७ कबहुं करत भगवत शृंगारा। राग भोग उत्साह अपारा॥ कबहुँ पालनेमाहँ झुलावैं। भांति भांति के लाड़ लड़ावैं १०१८ और काम मन में नहिं आनहिं। आठौ याम करहिं हरि ध्यानहिं॥ जगन्नाथ गाथा इमि गावा। साधु चरित्र पार को पावा १०१९ ॥

रामदास की कथा॥

छंदरामगीतिका। रहतहेडा कौरजीमें रामदासप्रवीन। द्वारका ढिगबड़े प्रेमी भक्त कृष्णनवीन॥रहतएकादशी प्रेमसमेतजागत रात। जात श्रीरण छोर मन्दिर जागिबे हरषात १०२० भये वृद्ध विचारि श्रीहरिकहो भक्तप्रवीन। करहु पूजन घरहि अब इहि भांति हमकहि दीन॥ यदपि आज्ञापाल तद्यपि रहोनाहीं जात। जात दरशनहेत तबहीं चित्त जब हरषात १०२१ देखि गमन कलेश तिनको सहोनहिं भगवान। चलहिंगे तुमसाथ लावहु शकट कृष्णबखान॥ सुनत सो लै गये तापरभये हरि असवार। निशामाहँ पुजारि सोवत जानिचल सुखसार १०२२ गये मारग प्रात मन्दिर देखियो पूजार। जानि छलकी बात तत्क्षण धाइयो तिहिबार॥ रामदास विलोकि चिंता करत भे मनमांहिं। कहो हरियावावली बैठारिये हमकाहिं १०२३ सुनत हरिके बैन बहुरि विलोकि वावलिताहँ। दीन्ह हरि बैठाइ आइ पुजारगे क्षणमाहँ॥ लगे मारन रामदासहि कीन्ह नाहिं विचार। दीन्ह घायल डारिबहुरो शकट मांझ निहार १०२४ लखो नहिं रणछोर टीकम बावलीगे धाइ। तहां अचरज रुधिर पूरी बावली दिखराइ॥ कहोहरि तुम मारु कीन्ही भक्त ऊपरजोन। दीन्ह

ताहि बचाइ लीन्ही आपने परतौन १०२५ पाइ आज्ञा लाइयो है भक्त मैं जिहिनाथ। जाइये घरभूमि हम नहिं जाव तुमरेसाथ॥ करब का घरभूमि कै हम कहतभे पुजार। कीन्ह बहुबिधि बिनय भगवत बचन नाहिं ऊचार १०२६ बिनय बहुबिधिकरी पुनि सुनि कहतभे हरि बैन। लेहु सुबरण सम बराबरि बात अरु कछुहै न॥ लीन्ह मानि पुजार सुनिकह रामदास प्रवीन। हैन सुवरण भवन मोरे आपु जो प्रणकीन १०२७ कह्यो श्री रणछोर टीकम नारि तुमरी कांत। है जुधारे एकबाली तौल मेरिसमान॥ धरि ताको एक पालर तौ लिये मोकाहिं। होयगी वह अधिकबाली घटैगी कछु नाहिं १०२८ सुनत कीन्हा सोइ हरिजन बालि पालरजौन। भूमि त्यागन विष्णु पालरगयो ऊपरतौन॥ देखि चरित्रपुजार लज्जितगये मन्दिरकाहँ। रामदासलवाइ कृष्णहिं गये निज घरमाहँ १०२९ दो०। जियालाल प्रभुभक्त हित सदा सहायक सोइ। तिनहिं त्यागि भटकत फिरै ग्राम सिंह जिमि कोइ १०३०॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माश्रेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येअष्टमप्रतिमाअर्चानिष्ठायांपञ्चदश भक्त कथावर्णनोनाम भक्ताम्बुनिधौदशमस्तरंगः १०॥

दो०। नवमनिष्ठवर्णन करौं लीला महिमा जाहँ। पावनपावन शेष श्रुति जियालाल किनमाहँ १ चौ० मेलहरिपदचक्र सुहाई। कमठरूप सह शीश नवाई॥ मथन सुरासुर वारिधि लागे। ता क्षण रूपधरो अनुरागे २ धारिपीठि मन्दर निज लीन्हा। परउपकार इविधिते कीन्हा॥ लीलानुकरण निष्ठा एहा। यामें लायो जौन सनेहा ३ भगवत भक्त भयो सुख खानी। कोटिन पापन्भेतिहि भ्राती॥ लीलानुकरण प्रिय भगवानहिं। ताको यह वृत्तांत बखानहिं ४ लीलारास कीन्ह भगवाना। भेगोपिन मधि अंतर्धाना॥ भई विरह व्याकुल सबगोपी। लोक लाज डारी सब लोपी ५ तन्मयकृष्ण भई जिहि काला। वर्णौं कछु तिनको

अवहाला ॥ कोइ पूतना तनु निज कीन्हा । कृष्णरूप कोऊ धरिलीन्हा ६ पींवन क्षीर लाग तिहि काला । प्राण समेत पीन पयहाला ॥ कोई गोपि यशोदारूपा । हरिवपुधारो कोऊ अनूपा ७ तहां कृष्ण जी माटी खाई । छड़ी हाथ लै यशुमति धाई ॥ तवश्री हरि निज मुख दिखरायो । तीनो लोक तहां दरशायो८ कोऊ तृणावर्त्तवपु कीन्हा । कृष्ण रूपकोऊ धरिलीन्हा ॥ लै सो चलो ऊर्ध्व गतिधाई । ग्रीव पकरिदिय भूमि गिराई ९ शकटरूप कोऊ तहँ कीन्हा । कोऊ कृष्ण रूप धरिलीन्हा ॥ झूलत पालन क्रोधित गाता । क्षुधा विवश मारी अनलाता १० कोउयशोदा रूप वनाई । कोऊ भई कृष्ण सुखपाई ॥ हरि दधिमाखन दीन्ह बहाई । बांधन हेत यशोदा धाई ११ बांधो सवगृह रज्जु वटोरी । परीतवहुँ द्वै अंगुल थोरी ॥ मातु विकल लखि आपु वँधाये । सहित उलूखलवाहर आये १२ दो० । मणिग्रीवनलकूवरहि शाप विवश गुनितत्र । उन्मूलेयमल।र्जुनहुँ प्रगटे दोऊ यत्र १३ कोऊ गोपि कृष्ण वपु कयऊ । गोपिन के घर भीतरगयऊ ॥ कहूं लीन्ह दधि दूध चुराई । कहुँ माखन मर्कटन खवाई १४ ऊंचे जानिन पावत जवहीं । रचत उपाय तहां यह तवहीं ॥ पीठ उलूखल धारि उतारैं । वाकरिछिद्र पिये नित धारैं १५ जिहि मन्दिर दधि दूधन पावैं । तहांजाइ यह रचैं उपावैं ॥ मूत्रपुरीष करहिं घरमाहीं । सोवत वाल रुदाइ पराहीं १६ हरिरस मगन मत्तइमि ग्वारी । बहुरौ लीलाकरन विचारी ॥ वनीकृष्ण गोपी सुख सेता ॥ वत्स चरावत ग्वाल समेता १७ तहां वकासुर दानव आयो । लीन्हो कृष्णहिलीलि महायो ॥ भे शिखि रूप कंठ जव गयऊ । तत्क्षण उगिलि असुर तव दयऊ १८ देखि कृष्ण राकस वपुभारी । दीन्हो चोंच चीरि महि डारी ॥ गोपी एक वत्स वपुधारी । भई एक श्रीकृष्ण मुरारी १८ वत्सासुर निज वत्सन देखी । श्रीहरि वधो भ्रमाइ विशेखी ॥ ग्वाल वाल सव जुरिकै आये । धन्य धन्य कहि वचन सुनाये ॥ २०

बहुरि अघासुर भई गुवारी । गोपी एक बनी बनवारी ॥ बैठी मारग मुख बिस्तारी । ग्वालन युत आये गिरिधारी २१ करि उपाय निश्चर संहारा । सुमन वृष्टि नभभई अपारा ॥ याविधि लीला हरि की जेती । गोपिन कीन्ह तहां सब तेती २२ तन्म य भई सकल इमि बाला । प्रगट भये तिन मधि गोपाला ॥ यासों प्रगट बात यह आई । लीला नुकरण हरिहि सुहाई २३ मूरति पूजे कीरति गावै । भांति भांति के लाड लडावै ॥ मूरति आठ भांति की गाई । शिला दारुमय लौहि कहाई २४ लेप्या लेख्या सैकति होई । मनोमयी मणिमय है सोई ॥ प्रतिमाआठ भांति सुख खानी । पूजै मनक्रम शारँग पानी २५ मूरति को भगवत करि मानै । नाना भांति भाव उर आनै ॥ लखिशृंगार कबहुं सुख पावै । भांति २ के भोग लगावै २६ वरषाशीत उष्ण ऋतुआवै । तब तैसाही साज बनावै ॥ कबहूंप्रेम मगनह्वै गावै । भगवत रूसे कबहुं मनावै २७ कबहूं बिनयकरैकर जोरी । दीनबंधु सुनु बिनती मोरी ॥ करतपाप दिनप्रतिमैभारी । क्षमिये सो अपराध हमारी २८ कबहुं यान पालकी बनावै । भगवत कोतिहि माहँ चढ़ावै ॥ जलक्रीड़ादिक तहां कराई । नदी तड़ागादिक सुखदाई २९ बहुरि प्रभुहि मंदिर लै आवै । तहां बिविध शृंगार बनावै ॥ पूजन करै महा सुखपाई । घंटाशंख मृदंग बजाई ३० भगवत आशसदा उर राखै । और आश सपने नहिं भाखै ॥ चहै मांगि सो हरि सों लेई । आश और की चित्तन देई ३१ कबहूं नाचै कबहूं गावै । कबहूं प्रेम मगन ह्वै जावै ॥ कबहूं जन्म महोत्सव करई । भगवत जन्म जानि मुदभरई ३२ उत्सव करै जन्म गुनि भारी । गायक नृत्यक लेइहँ कारी ॥ भगवत सन्मुख नृत्य करावै । भगवत को पालनेझुलावै ३३ उत्सव वालजन्मके जेते । धनसमानकीजै सब तेते ॥ निश्चय मूरति भगवतमानै । रंचभेद मनमें नहिंआनै ३४ जबलागि मन विश्वासन आवै । तबलागि हरिस्वरूपनहिंपावै ॥

कहौं एक द्वैकथा सुनाई। जासोंमन विश्वास द्दढ़ाई ३५ भक्त मीरमाधव जोगाये॥ लीलानुकरणहीसों पाये। प्रथम अमीर नाम जिनकेरा॥ महम्मदी मजहव सबवेरा ३६ राह चलत वृन्दावन आये। मुलाकात मुंशीकी पाये॥मुंशी विष्णु उपासक चीन्हा। लीला रासवड़ाई कीन्हा ३७ सुनि अमीर देखन चित दीन्हे॥ मुंशी बोलि समाजी लीन्हे। रासहोन लागोतिहि काला। लखि अमीर मन भयो विहाला ३८ भगवत मोहन रूपनिहारी। तनधन की सब सुरति विसारी॥ पूरण मनानिज दीन्ह लगाई। गेभगवत के रूप समाई ३९ बहुरि समीपरहोधन जेता॥भगवतभेंट कीन्ह तिन तेता॥ गृह परिवारत्याग जग कीन्हा॥ वस्त्रादिकन त्यागि पुनि दीन्हा४० कृष्ण कृष्ण रसनानिज बोलैं। ढूंढ़त हरिहि कुंजवन डोलैं॥ अनुक्षणहरि कोरटत निहारा। नाम मीर माधव जनधारा॥ ४१ गिनती हरि भक्तन में धारी। इनकी कविता ललित पियारी॥ बालकृष्ण केचरित बखाने॥ रहे सदा भगवत रस साने४२सुनन भागवत इच्छा कीन्हा। परको मन्दिर जानन दीन्हा॥तिन मनकीअभिलाष निहारी। कीन्ह घनेरी कृपामुरारी ४३ एक गुसाइँ भक्त हरिकेरे॥ कीन्हाय सुभग वत तिनतेरे। लागे तिनहिं सुनावन सोई॥ श्रीभागवत नाम है जोई ४४ बीतिरात्रि बहु एकदिनाहीं। सोये माधव मीर तहाहीं॥ क्षुधावंत निज भवन निहारा। अर्द्ध निशाहरिकीन्ह विचारा ४५माधवमीर आजु ममपाहुन। इनसत्कार कीन्हहे काहुन॥ इनको जो मैहूँन खवाऊं। वृथा भक्त वत्सल कहवाऊँ॥ यह विचारि मनलै निजथारा। लडुवा अपरजले वीधारा॥ लोटा एक माहँ जललैकै। द्वादशवर्ष वालवपु कैकै ४७ लाइ जगाइतुरितसो दीन्हा। माधवमीरसुभोजन कीन्हा॥ सोये बहुरिभयो भिनुसारा। लगे पुजारी ढूँढ़नथारा ४८ ढूंढ़तथारतहां चलि आये। निकट मीर माधवके पाये॥ मारो तिनहिं बहुत अज्ञाना। गये बहुरि मन्दिर भगवाना ४९

फटे वस्त्र भगवत के देखी। भगवत मूर्त्ति उदासविशेखी ॥ क्रोध युक्त पुनि हरिहि निहारी। कहो गुसाइँ सुनाइ पुजारी ५० सुनि वृत्तांत गुसाँई पायो। नंगेपग दौरो द्रुत आयो ॥ शीश मीर माधव पगधारा। विनय प्रार्थना वहुत उचारा ५१ किय अपरा धक्षमातिन जबहीं। भगवत क्रोध शांतभातबहीं ॥ शिक्षातिन को दीन्ह महाई। मो सम जानौ भक्त सदाई ५२ किय दिनै कलोगन सन्देहा। यमनहि कथा सुनावत एहा ॥ दूर करन तिनको सन्देहा। कहो गुसांई सबनसन एहा ५३ सब जनमो सों कहौ बुझाई। कालिह कथा किहि बिधि मैं गाई ॥ कोऊक छूनाहिं कहि पायो। कहन मीरमाधव मनलायो ५४ श्लोक अर्थ अक्षर भे जेते। कहे मीर माधौ सब तेते ॥ भे लज्जित सब लोग अभागे। बरणौं कथा अपर अबआगे ५५ राजा एक बिहारी हेता। अतर पठायो बिष्णु निकेता ॥ देखि मीर माधव लै लीन्हा। डारितुरंत भूमि में दीन्हा ५६ परत सुगंध भवन मधि छाई। भये वस्त्र तर कुँवर कन्हाई ॥ श्रीनँद लाल अङ्गतर भयऊ। यह अचरज सब देखन लयऊ ५७ डाकू एक सुचन्दा नामा। डाका मारत सो सबठामा ॥ एकदिवसको चरित सुहायो। रासचरित्र कहूँ सुनिपायो ५८ तहां बहुत असबाब बिचारा। लाख रुपैया सुनो हँकारा ॥ करि अभिलाषा तुरत सिधायो। अस्त्र शस्त्र युत जन सँग लायो ५९ योधा साथ पंचशत लीन्हे। लोगन देखि महाभय कीन्हे ॥ हाहा शब्द भयो तिहि काला। भगे तुरत सबलोग बिहाला ६० भगवत रूप रासमें राजैं। कोटि काम छवि निरखत लाजैं ॥ देखि शोर गुल पूंछन लागे। जाघर यहचरित्र तिहि आगे ६१ कहो तौन प्रभु डाकूआयो। सोई यहहलचाल मचायो ॥ सुनि भगवत मूरति कह एहा। आवन देउ नहीं सन्देहा ६२ तिहि अवसर डाकू वह आयो। हरणाभूपण चित्त चलायो ॥ गुणि भगवत मूरति यह हाला। उठि सिंहासन सों तत्काला ६३

पकरिलीन्ह दोऊ कर ताके। मुष्टिकास्य मारी इक वाके ॥ पुनि कह ऐसि ढिठाई तेरी। नेक भीति कीन्हीं नहिं मेरी ६४ डाकू शिथिल चोट कर गाढ़े। संगी चित्रपूतरी ठाढ़े ॥ डाकू जब मूर्च्छा गत भयऊ। भगवत मूर्त्ति शरण को गयऊ ६५ अस्त्र शस्त्र आगे धरिदीन्हे। प्रेम समेत चरण गहि लीन्हे ॥ धारेउर पग त्यागे नाहीं। भयो भक्त तजि जग ममताहीं ६६ और च-रित्र एक अब गाऊं। भगवत लीला चित्त गहाऊं। लीलारास कोउ करवायो। कालिन्दीके कूल सुहायो ६७ काली दमन चरित के काला। लोगन सों पूंछो यह हाला ॥ कमर कसत भगवत वपु देखत। कांफादहिं कालीदह पेखत ६८ भगवत मूरतिहू के काना। परी सनक वह जौन बखाना ॥ बोले सही फांदिहैं यामें। यह कहि कूदि परे यमुना में ६९ ऐसो पकरि एक अहि लाये। विंशति मनुज न उठत उठाये ॥ देखि मनुज वह अचरज माना। हरि प्रकाश लखि चौंकि भुलाना ७० मु-र्च्छित भयो ध्यान हरि पायो। ध्यानमाहँ तन दशा भुलायो ॥ मुर्च्छासों जागो जिहिकाला। चरणधरे निजमानम हाला ७१ भगवत चरण धारि उर माहीं। जगसुख त्यागि दिये पुनि ताहीं ॥ भगवत भक्तभयो तिहिकाला। लीलानुकरणही सोहाला ७२ या प्रकार बहु चरित सुहाये। विश्वासी पुरुषनके गाये ॥ जियालालमनकरु विश्वाशा। त्यागौ जगतअसतकीआशा॥ ७३ भये भक्त या निश्चि जोई। वर्णन करौं कछुक मैं सोई ॥ प्रथम अली भगवान कि गाथा। बरणों वन्दि चरण रघुनाथा ७४ प्रथम भक्त श्रीराम कहाये। एक समय वृन्दावन आये ॥ तहां रास देखाइन जबहीं। भूले इष्ट उपासन तबहीं ७५ कृष्ण भजन पूजन मन लाये। तिनके गुरू जानि यह पाये ॥ वृन्दा-वन आये गुणि येहा। भई शिष्य निज में सन्देहा ७६ आजु रासलखि कृष्णहि गावै। काल्हि मतान्तर कोऊ भावै ॥ चाहिय मन इक ओर लगावै। सबै तर्कना दूर बहावै ७७ देखि शिष्य

गुरु चरणन लागा । अस्तुति कीन्ह सहित अनुरागा ॥ कह
गुरु स्वामी तुम मम सोई । या में भेद और नाहिं कोई ७८
परसन हरि लीन्हो नँदलाला। बरबस कछु उपाय नहिं चाला ॥
देखि गुरुदृढ़ प्रीति ललामा। भक्ति दृढ़ाइ गये पुनि धामा ७६
कथा बिपुल बिट्ठलकी गावों।जिनकीर्त्तन करि हरि रतिपावों ॥
रहे शिष्य स्वामी हरिदासा। निध बनमें जिनकेर सुबासा ८०
विष्णु भक्त माधुर्य्य उपासक। भोदेहान्त स्वामि हरिदासक ॥
तिनके चरण बियोग बिचारी।रहत शोक अतिही उरभारी ८१
रासारंभ एक दिन भयऊ। भक्त न बोलि इनहुँ को लयऊ ॥
जाइ रास देखन तहँ लागे। भगवत रूप देखि अनुरागे ८२
नृत्य कीर्त्तन हरिको देखी। गोमन भाव समाइ बिशेखी ॥ भग
वत रूप मग्न भे जबहीं। गुरुके दर्शन पाये तबहीं ८३ ऐसो
चित्त लगो तिनकेरा। नित्य बिहार मिलेसब बेरा ॥जैसे सरि-
ता उमगि अपारा। जाइ समुद्रन बहुरिउबारा ८४ ॥

रामराय राठौर बखाना। पुत्र नृपति खेम्हाल सुजाना ॥
परम भक्त भो भगवत केरा। प्रगटी भक्ति देशसब बेरा ८५
भक्ति बिहीन निकारोदेशा। किय उपदेश योग उपदेशा ॥
भक्तनको पदवी बाढ़ि दीन्ही।भक्ति वृद्धि पूरण तिन कीन्ही ८६
राजा शिवि सम भक्त कहायो। भरत समान प्रतापी गायो॥
जिनको पुत्र पकरि हरिलावा। कर्ण पकरि बहु नाच नचावा ८७
जिन गन्धर्व व्याहकी रीती। कन्या हरिको दई सप्रीती ॥
ताको यह वृत्तान्त सुहायो। शरद पूरणाको दिनआयो ८८
जानिशिरास कीन्ह ब्रज चन्दा। रासकरायो नृपसानन्दा ॥
भगवत रूप चरित्र निहारी। राग रङ्ग नृत देखि बिहारी ८६
भये प्रेम बिह्वल नृपभारी। मंत्रि विप्र सों कहत बिचारी ॥ काह
भेंट करिये हरि काहीं। मंत्री कहौ शोधि मोपाहीं ९० मंत्री
कहो सुनहु महराजा। जोप्रिय होइ देउ हरिकाजा ॥ सुनिनृप
मन बिचारि वच आदरि। म्हाको छेम्हा की प्रिय डावरि ९१

यहकहि नृपति महलमें गयऊ। कन्या को आभूषित कयऊ॥ करि शृंगार तहां पुनि लाये। व्याहरीति गांधर्व बनाये ६२ भेंट बहुरि भगवंत हित कीन्हा। धनअसबाब विविधिविधि दीन्हा॥ ऐसी द्रव्यदई नरराई। कन्या देह अंत लगिखाई ९३ रामराय कोचरित सुहायो। जियालाल द्विज बरणि सुनायो॥ याको पढ़ै सुनै जो कोई। हरिप्रसन्नताऊपरहोई ६४॥

अबबरणौं भक्तन सुख दाई। खड्गसेनकी कथा सुहाई॥जासु ग्वालियर बासस्थाना। निष्ठीरास भक्त भगवाना ९५ लीला दानादिक जिन गाई। विरचेबहुपद ललित बनाई॥ जन्म प्रयन्तरहे हरिओरा। नेक नहीं कबहीं मन मोरा ६६ हरिके चरित सुनै अरुगावैं। नेक नहीं जग के सुख भावैं॥ दिन प्रतिलीला रास करावैं। देखि चरित्र मगन ह्वै जावैं ६७ प्रीतम प्रिया भाव अवलोकी। यकटक रहे पल रुचख रोकी॥ दीन्हे चरणन प्राण लगाई। मुख्यरास में गये समाई ६८॥

बल्लभ कथा कहौं अबनीके। शिष्य भट्ट नारायणजीके॥ प्रेमी भक्तभये संसारा। परमानन्द प्रेमप्रति पारा ६६ रासमाहँ लीला हरिगावैं। ललित विशाखा रूप बनावैं॥ भगवतको या भाँति रिझावैं। तिनतद्रूप रूप दरशावैं १००॥

नाथ भट्टकर उत्तम चरिता। बरणन करौं मोदकी सरिता॥ सुतगोपाल भट्ट के सोई। ऊंचे गाँव वास निज होई १०१ वेद पुराण शास्त्र के ज्ञाता। तंत्र शास्त्र में अति विख्याता॥ अभिप्राय सब को जो सारा। भगवत भक्ति प्रेम परवारा १०२ दृढ़ विश्वास भक्ति में कीन्हा। रचनाकाव्य मधुर हरिचीन्हा॥ वरणेरस शृङ्गार अनूपा। पूरण चित्त भये तद्रूपा १०३ लीला रास बनावैं नीके। निष्ठारास प्रेम अति जीके॥ रासोपासन में जनजेते॥ इन समान बरणे नहिं तेते १०४ लीलानुकरण भक्त अपारा। जियालाल पावै किमि पारा॥ मशक अन्त

आकाश कि पावै । पंगु कि गिरवर जाइ मँझावै १०५ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालाल जन्माग्रेणविर
चितेचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येनवमलीलानुकरणनिष्ठा
यांपडभक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधा
वेकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

दो०। दशमनिष्ठ वर्णनकरौं दयाअहिंसाजासु । कथाछभक्तन की सुभग पुण्यपुञ्जहै तासु १ श्रीहरिके पुष्कर चरण स्वस्ति करेखानौमि । करि प्रणाम अवतारहरि. धन्वन्तरिजोसौमि २जिन जगके उद्धारहित दयाकरी गुणि खेद। नाश महारुज के हितै प्रगटो आयुर्वेद ३ चौ० ॥ भगवत रूप दयाजगमाहीं । दया समान धर्मकछुनाहीं ॥ जाके हृदयदयाकर बासा । ताकर धर्म्म सदापरकाशा ४ जाके हृदय दयानहिं होई ॥ ताके धर्म प्रकाशन कोई ॥ दयाअहिंसा के समकोई । कहत पुराण धर्म नहिं होई ५ दो० । दया साधुसेवा भवन मुख्य धर्म हैं तीन ॥ दया अहिंसा अङ्ग है हरि नारदकहँ दीन ६ चौ० ॥ दयारूप अबकहौं वखानी । जो सुनि होइ सकल भ्रमहानी ॥ काहूको दुख देखै जवहीं । द्रवै चित्त अवलोकत तबहीं ७ जबलागि दूरिहोइ दुखनाहीं । तब लागि दुखी रहै मनमाहीं ॥ दूरिकरै दुख शक्ति समाना । धनबल बुद्धि पराक्रम नाना ८ मधुरबचन सब सों पुनिभाषै । नाशै क्रोधकरन मन माषै ॥ दया एक संसारीगाई । एक पारलोकिकी सुहाई ६ जाहि कुपंथ चलतलखि पावै । ताहि सुमारगकोदरशावै ॥ नर्कादिक बरणैदुख भारी। ताहि दुःखसों लेइउबारी १० दया प्रकाश सदा उर जासू । महिमा वरणि सकैको तासू ॥ कहौं एकइतिहास बुझाई । जो सुनि मनत्यागै दुचिताई ११ साहूकार एकधनवाला । भयोदरिद्रीपरे दुकाला ॥ चारियज्ञ प्रथमाहिंकरि राखा । तासों एक ऋपेश्वरभाखा १२ धर्मराजके निकट सिधावौ । यज्ञ एक को फललैआवौ ॥ सुनतसाह कीन्हीं मन आसा । भोजन सामग्री नाहिं पासा १३ कालै

जैयैंकरी विचारा। सामग्री कछु भवन निहारा। कीन्ह सिद्धभो जनहित लाई। तबलगि एक शुनी चलिआई १४ बच्चाजनी तुरित की जानी। साहूकार दयाउर आनी ॥ चतुर्थांश भोजन तिहि दीन्हा। तासों तृप्तनाहिं जबचीन्हा १५ दीन्हो दूसर तीसर भागा। क्षुधित जानिदिय सह अनुरागा॥ भोजन सब दै वारि पियाई। पहुँचे धर्मराज ढिगजाई १६ तिनसों या विधि बचन सुनाये। एक यज्ञ फल हित हम आये॥ धर्मराज बोले सुखपाई। साहूकार सुनौमनलाई १७ पांचयज्ञकीन्ही तुमभारी। तामहँ अक्षय एक तुम्हारी॥ कौनयज्ञ फल आशाहोई। आयसु देउदेइँ हमसोई १८ साहसुनतमन अचरजमाना। चारि यज्ञ कीन्ही हमजाना॥ पंचम यज्ञ कबहिं हमकीन्हा। अक्षयजासु कहत प्रभुचीन्हा १९ धर्मराज बोले मुसुकाई। सुनौ यज्ञकीन्ही जो भाई॥ भोजन शुनी काहँ करवाये। आप क्षुधित ममनिकट सिधाये २० निजदुख दै परकोसुखदेई। तीनौलोक जीति सोलेई॥ दया समान धर्म नहिं दूजा। घटघट श्रीनारायण पूजा २१ विद्या विनय सहित द्विजमाहीं। गविहस्तिनि श्वपाक सुनि काहीं॥ समदरशी पण्डितहै सोई। इनआदिक समान लख जोई २२ भगवत सबमें आपु विराजैं। नाना रूप भेष जग साजैं॥ तासों दया सबन में किजै। भगवत बासदेह गुणि लीजै २३ हिंसामन कबहूँ नहिं लावै। मन बचकर्मन जीवसतावै॥ ईश्वर जीवबनाये सबहीं॥ तिनसों द्रोहकरै नहिं कबहीं २४ दो०। बासअहिंसा जब करै हिये मांझमें आय। भगवत रूप विलोकई तबपूरुष सुखपाय २५ यानिष्ठा जेभक्तहैं वरणौं तिन के नाम। जियालालहरिभक्तधनि कीरतिलालित ललाम २६॥ चौ०॥ कथा मयूरध्वजकी गावौं। जासु कृपाहरिपदरतिपावौं॥ सुकृत मूरति नृपति सुजाना। दयानिधान भक्तभगवाना २७ कीन्ह युधिष्ठिर जबमख वाजी। अश्वसंग अर्जुन दलसाजी॥ चलेअमित जीते मगराजा। मणिपुर जीति पुत्र निज साजा२८

अग्र प्रमुक्त अश्व पुनि धावा । कटक महान पृष्ठ चालि आवा ॥ तहँबर्हिध्वज यज्ञ तुरंगा । रक्षत ताम्रध्वज रणरंगा २९ रत्ननगर सोत्यागा जोई । तिहि समीप आवाहय सोई ॥ ताम्र ध्वज अर्चित हय देखी । निज प्रधान सोंकहो बिशेखी ३०बांचहु पत्र मंत्रि वरजाई । किहिमख हेतमुक्त हयराई । सुनि बहुलध्वज हय गहि लीन्हा । बांचि पत्र पूरण कहिदीन्हा ३१ सुनि ताम्र ध्वज क्रोध बढ़ाई । तत्क्षण गहिलीन्हो हयराई ॥ पांडव हय रक्षित यदुराई ।प्रद्युम्नार्जुन बहु कटकाई ३२ हँस ध्वजा नुशाल्व सुबीरा । अनिरुध कर्ण पुत्ररणधीरा ॥ पाल्य मान गत भय गहि लीन्हा । निजदल बोलि इबिधि कहि दीन्हा ३३ दो० । ससयज्ञ कीन्ही पिता अष्टम ह्वैहै येह। अष्टमपायतुरंग यह सहित कृष्ण युतनेह३४चौ०॥कृष्णबिहीनभयेमखसाता।अवशि कृष्णह्वैहै सुखदाता॥हरिसन्मुखहोइयदृढ़ठाढ़े।ह्वैहैमहाबृद्धिरण गाढ़े ३५ सुनि बहुलाश्व कहन इमि लीन्हा। सुनहु नृपतिकिमि शंका कीन्हा ॥ दलअपारतव अर्जुन थोरा । लेहैंझांपिदलहि बरजोरा३६बभ्रुबाहनहिजानकिनाहीं।जोकरदेतपितातवकाहीं॥ अभन अपुष्ट न पौरुष गाता । तुमसों युद्ध करहिं किमिताता ३७ सुनि ताम्रध्वज कहाबखानी । मंत्री तुम यहबात न जानी॥ अपर बीरगणना नहिं धारी । बभ्रुबाहकर्ण जबलभारी ३८ कहो निशा नारद सुख धामा । नरनारायण अर्जुन श्यामा ॥ प्रद्युम्नानिरुद्धयुयुधाना । कृष्णसमान सुभट रण जाना ३९ महा युद्ध ह्वैहै इहि ठामा । रचिये व्यूहअर्द्ध शशि नामा ॥ पाञ्चजन्य स्वनकर भगवाना । देवदत्तरवजिष्णु सुजाना ४० आवत हैं हयार्थ भट धाये । शस्त्र पाणि सबरथी सुहाये ॥ यहकहिभये युद्ध हित ठाढ़े । देखो तिनहिं कृष्ण रणगाढ़े ४१ कहँ अर्जुन सोंहँसि जगवन्दन । लखहु मयूरध्वज को नन्दन ॥ तवमख वाजि गहो वर जोरा । अत्रयुद्ध होवै अति घोरा ४२ मोचय अश्व जोर अति करिकै । जिमि हरि वेद शंख सों अ-

रिकै ॥ प्रद्युम्नादि करहिं संग्रामा । तुम मम सहतजि कै रण ठागा ४३ दीक्षित याको पितुहै जहवाँ । कूल नर्म दा चलियेतहवां ॥ सत्यबाग अतिही भट भारी । अर्जुन युद्ध न करिय विचारी ४४ गृद्धव्यूहरचिये रणएहा । याके सुभटकाल सम देहा ॥ तिनसों करहिं मामका युद्धा । हमहूं युद्ध करहिं अति क्रुद्धा ४५ तुमहौ पार्थ आंतरण जुटिकै । लरहिं सपुत्र पौत्र हम छुटिकै ॥ सब बीरन कर होइ बिनाशा । यहहम तुमसों करत प्रकाशा ४६ यह कहि माधव निज रथ गयऊ । गृद्ध व्यूहरचि शोभित भयऊ ॥ लखे रथस्थ हरिहि सब राजा । गृद्ध व्यूह मुखमध्य विराजा ४७ पुनि अनुशाल्व ग्रीवमाधिराजे । हंसध्वज नृप नेत्र विराजे ॥ पच्छन में यदु नंदन दोऊ । अनिरुध प्रदुमन राजे सोऊ ४८ बर्द्धन भोज सात्यकी दोऊ । दुहु पादन मधि शोभित होऊ ॥ यौवनाश्व धनवर्ण समेता । रक्षा व्यूहर हे चित चेता ४९ हृदय मध्य अर्जुन रण धीरा ॥ तिन के संगरहे बहु बीरा ॥ बभ्रु वाहकर्णज वर वीरा । चंचुस्थितरह तेज गंभीरा ५० एतेबहु बीरनको देखी । देखि अपरपार्थिवन विशेखी ॥ ताम्रध्वज आनिन्दित हाला । कृष्णहिंहांकदीन्ह तिहि काला ५१ यज्ञ बाजि हमहींगहि लीन्हा । जोहरितुम रण उद्यम कीन्हा ॥ तौ राखिय अबपारथ काहीं । बाजिमदीयगहो किमिनाहीं ५२ तुम बिन अपर शक्ति है नाहीं । जोसंग्राम करै हमपाहीं ॥ शारँग धनुष सुदर्शन धरिये ॥ तुमहिं बिलोकिन हम भय करिये ५३ यह कहि पारथ के दल ओरा । अर्द्धचंद्र शर छांड़े घोरा ॥ सप्त तिशर अर्जुनके मारे । तीनि बाण केशवहि प्रहारे ५४ पांच बाण दारुक अँगहयऊ । चारिबाण चहुं अश्वन दयऊ ॥ सात्यकिअंग हनेनव तीरा । अष्ट बाण कृत बर्मा वीरा ५५ हनेसहसशर प्रदुमन अंगा । अयुत बाण अनिरुद्ध अभंगा ॥ तबअनिरुद्ध क्रोध अति कीन्हा । ताम्रध्वजहिं हांक रण दीन्हा ५६ ताम्रध्वज रहिये रण माहीं । अबदेखो मम पौरुषकाहीं ॥ तजहु अश्व ममसहौ प्रहारा ।

अबको तुमको राखनहारा ५७ताम्रध्वज सुनि बोलेबानी। पिता तुम्हार मदन हम जानी ॥ बाणासुर कन्या पति-आपू। किहि बिधि सहौ युद्ध करतापू ५८ बाणासुरं सम हम नहिं करिहैं। बाणन मारि समर भूइरिहैं ॥ अबन बचहु रच्चा निज करिये। कह्न अनिरुद्ध समर चित धरिये ५९ पण्डित बहुनहिं करत बड़ाई तुम बहु बर्णत निज मनुसाई ॥ अस कहि तजे बाण अनिरुद्धा प्रलयानल समान अति क्रुद्धा ६० हने सुचित्र अंग शरनाना। तब सुचित्र किय क्रोधमहाना॥अनिरुध अंगनवाते शरमारोपांच बार शर अपर प्रहारे ६१ अनिरुध तजे बाण बिकराला शिखी समानकियो तिहिहाला॥ चारि बाण चारौ हय मारे॥ एकबाण सब रथी सँहारे ६२ बधेअपर दारुण बहुबीरा। अनिरुध कीन्हो क्रोध गँभीरा॥ भयो कटक अनिरुध शरभिन्ना। भुजांगुली न खकरभे छिन्ना ६३ बक्षस्थल अरु अस्थि समेता। शिररदनेत्रपरे रण खेता॥ भ्रुवरमश्रुकाटे यदुनन्दा। परदलहाति अति लहो अनंदा६४समर सुचित्र मध्यरतिवारा।अक्षौहिणीतीनिदलमारा॥ हनो चतुर्विध दलतिहि काला।शिखि बिधूम समतेज बिशाला ६५ अपर सैन्य पुनिकीन्ह सँहारा।सम पतंगकार्मुक धरजारा॥ रथ विभिन्न गजकानन गयऊ। सारवचीर करणीभटलयऊ ६६ पुनि सुचित्र छांड़ेबहुबाना। खण्डित किय अनिरुधकरयाना॥ तजिरथ अनिरुधले धनुधाये। तबसुचित्रबहुवाण लगाये ६७ विरथ ताम्रकेतुहिकिय हाला॥ दोनौ भये विरथ तिहिकाला॥ तब अनिरुद्धहि मूर्छित कीन्हा। पांडव अनीकाह दुख दीन्हा ६८ पांच बाण प्रद्युम्नहिं मारे। पुनि याविधिसों बचन उचारे॥ क्यों नहिं युद्ध करत हरिआई। उनहींसों हम चहत लराई ६९ सुनिवृषकेतु क्रोध करि धाये। हतिइषु शररथ काटिखसाये॥ चढ़िरथ अन्य चहत शरमारा। सोऊ रथ बृषकेतुसंहारा ७० जारथ चढ़ि सुचित्र रण आवै। सोई हति वृषकेतुखसावै॥ रथ शततीनिदलेइमियोधा। चढ़ो अन्य रथ नृपतिसक्रोधा ७१ ह-

तिशर कर्णज कहँमहि डारा॥ पुनि अनुशाल्व मूर्छिमहिपारा॥ यौवनाश्व कहँ मुर्छित कीन्हा॥ तव सात्यकिर रणउद्यम लीन्हा ७२ सप्त वाण मारेहयचारी। शंखनाद कीन्हो पुनि भारी॥ तवहिंसुचित्र कठिनशरमारा। मुर्छितसात्यकीहिमहिपारा ७३ कृतवर्मा पीड़ितशरघाता॥ पुहुमी पूरित वीर लखाता॥ मुर्छितपरेवीर महिकैसे। क्षीण पुण्यस्वर्गीमहिजैसे ७४ बभ्रुवाह नहिं आवत देखी। हर्षित कहो सुचित्र विशेखी॥ आयेयुद्ध करन हमजाना। तिष्ठमानहोइयक्षण माना ७५ अर्जुन सुवन हने शरपांचा। सप्त खण्ड नृप सुत किय सांचा॥ विरथ बभ्रुवाहन कहँ कीन्हा। मुर्छित वहुरि डारि महि दीन्हा ७६ तिष्ठ कृष्ण कहि सन्मुख धायो॥ वीरन देखि महा भयपायो॥ वाहन छोड़ि भगीबहु सैना॥ पीड़ित हंसध्वज गुण ऐना ७७ अस्त्र शस्त्र तजि भागे वीरा। रुधिर सरित में छिपे अधीरा॥ मुर्छितभूलि अपनपौ गयऊ। तवरणहांक धनंजय दयऊ ७८ खैंचत धनुष समर महि आये। माभयकीजिय वचनसुनाये॥ कहत वीर मुर्छित दुखभाजी॥ काह करब अर्जुन लै बाजी ७९ चहत यज्ञ वध गोत्र निवारण। हम सववधे जाहिं तिहि कारण॥ ऐसी पुण्य करहुलैकाहाँ। याविधि वचनकहतभट ताहाँ ८० सवहि राखि अर्जुनगेआगे। अंगसुचित्र वाणनवत्यागे॥ लगे वाण वक्षस्थलजाई। गिरतभयोसो भूमितवाँई ८१ चढ़ोसुचित्र अन्यरथजाई। पारथपर वरषाशरलाई॥ कीन्हीकिरीटीहूशरवरषा। कियोअदृश्यसुचित्रसहरषा ८२ अर्जुन शंखसहर्षवजायो। तिष्ठ सुचित्रहि वचन सुनायो॥ तिलसमकाटि तस्यरथडारा। सहय सूतयुतकीन्ह सँहारा ८३सरुटसुचित्रअन्यरथआयो। अर्जुनहय सारथीनशायो॥ पुनिअर्जुनसों वचनवखाना।अवतवरथसारथी नशाना ८४ कहँजैहौ निजपुरलैजैहौ। हंससमेतहर्ष उरछैहौ॥ सुनिअर्जुन क्रोधातुरआसू। भग्नसदेहकियोरथतासू ८५ दो०। थिरतापावसुचित्रनहि अर्जुनके संग्राम। एकसहसस्यन्दनदले

चढ़ोक्रोधउरधाम ८६ चौ० ॥ चढ़ोसुचित्र अन्यरथमाहीं। शरन बिंधेधार्जुनतनकांही॥ मुर्च्छितभे अर्जुन तिहिकाला। देखत कृष्णसकल यहहाला ८७ मुर्च्छीतजिअर्जुन तिहिकाला। मारे शर सुचित्रतनहाला॥ पुनिताम्रध्वज अर्जुन याना। बाणन ह तिदक्षिण दिशि आना ८८ योजन भरिहटाइरथ दीन्हा। लखि अर्जुन अतिहीरिसकीन्हा॥ स्यन्दन हते तीनिशर आसू। गगन उड़ाइ गयो रथ तासू ८९ गर्जतभे पुनि सिंह समाना॥ अमित वाहिनी कीन्ह मसाना। बहुरि भूमिताको रथआयो॥ अर्जुन पर बाणन झरिलायो ९० दोनौ चित्र अस्त्र हैं जानत। मंडल चित्रदोउ उरठानत॥ वीरश्री शोभितहैं दोऊ। त्यागत नहीं महारण सोऊ ९१ द्विशताक्षौहिणि अर्जुनमारा। प्रयुत सुचित्र कीन्ह संहारा॥ दोऊसमर परस्पर करहीं। जयकांक्षा दोऊ चित धरहीं ९२ गोध्वज नृप अर्जुन कर काटा। तब अर्जुनबहुशायक छाँटा॥ जिहि रथचढ़ि सुचित्रचलि आवै। सोई अर्जुन मारिखसावै ९३ स्यन्दनसहस काटिपुनिडारा॥ याविधि कीन्हो युद्ध अपारा। उभय युद्ध कीन्हो याभांती॥ गनी नसप्त दिवस दिनराती ९४ निशिदिन युद्ध देखिसबवीरा। भय विस्मय पाये रणधीरा॥ गहि सुचित्र अर्जुन रथलीन्हा। गमनगगन मण्डलमें कीन्हा ९५ दूरिजाइ भूतल तजि दीन्हा। धारिस्वकर देखत हरि लीन्हा॥ लखि ताम्रध्वज बचन बखाना। त्यागो दिवसो यान निदाना ९६ तुम सो हस्त धारि निज लीन्हा। मम पौरुष को पूरण कीन्हा॥ सुनत कृष्ण क्रोधातुर आसू। मारत भये गदा शिर तासू ९७ मारो उरपद यदुकुल दीप। गिरो भिन्न उर कृष्ण समीपा॥ सो उठि बहुरि चढ़ो रथ जाई। हरि ऊपर बाणन झरि लाई ९८ कहोकृष्ण अर्जुन सुनि लीजै। हम तुममिलि यासों रण कीजै॥ जनि अर्जुन शंका उर धारिय। भागत पृतना सकल निहारिय ९९ जिते बभ्रुवा- हादिकजेही। लै गांडीव हतिय रण तेही॥ हमहूँशारँग धनुष

सँभारैं । दोऊ मिलि याको संहारैं १०० यह कहि कृष्ण हतन शर लागे । अर्जुनहूँ क्रोधातुर त्यागे ॥ देखत कहो भूप सुत बैना । सुनिये कृष्ण सकल गुण ऐना १०१ तजि सूतत्व धरो रथि वेषा । यत्व विरंचि चह जीत विशेषा ॥ होइ सारथी लेहु बचाई । नाहिंत अर्जुन जाइ नशाई १०२ सुनि रथतजो कृष्ण सुखपाई । अर्जुनकेसारथिभेजाई॥हांकतभये तुरँगतिहिकाला । कशाघात क्रोधातुर चाला १०३ सरुट सुचित्र कठिन शर लयऊ । दशइषु हनत कृष्ण के भयऊ ॥ षष्टिबाण अर्जुन तन मारे । छत्रकाटि अर्जुन कर डारे १०४ शत शर बहुरि कृष्ण के मारे । अर्जुन तासु खण्डि रथ डारे ॥ बाणन सों बिभेद पुनि गाता । चहूँओर छाये शर ब्राता १०५ पदचर धायो अर्जुन पाहीं । पद परहार हतो हरि ताहीं ॥ पाद घात धरणी तल आयो । पुनि उठि चढ़ि गजमत्त सिधायो १०६ शरझरिकृष्णार्जुन पर लायो । बाणनहति रथस्थ भरमायो ॥ मूर्च्छा त्यागि भिरेभट जेऊ । भे नृप सुत शर मुर्च्छित तेऊ १०७ याविधि युद्ध देखि विकराला । लिय हरि चक्र सुदर्शन हाला ॥ रथसों उतरि क्रोधकरि धाये । तिष्ठतिष्ठ कहि वचन सुनाये १०८ पृथ्वीकांपि उठी तिहि बारा । देवन उर भय भयो अपारा ॥ कंपे सूर्य्यक्षोभ वारीशा । भोदिग्दाह सभय फणि ईशा १०९ देखत ताम्रध्वज गज त्यागा । सन्मुख कृष्ण गयो बड़भागा ॥ तब लगि कृष्ण क्रोध उर भारी । शतअक्षौहिणि सेनसँहारी ११० देखि सुचित्र पतित निज सैना । हर्षित कहो कृष्ण सों बैना ॥ सेना मारि कियो निज काजा । अंतर दायिनि मध्य समाजा १११ क्रोध कराल चक्रकर धारा । या विधि देखिय रूप तुम्हारा ॥ लखि कराल वपु भागहिं नाहीं । तिष्ठमान होइय रणमाहीं ११२ हय रक्षत इमि परे लखाई । ढूँढ़तकांच यथा मणि पाई ॥ पार्थहि प्रथम पुण्य निज दीन्हा । अब वाहन अर्पण तन कीन्हा ११३ गहौं हाथ निज चक्र कराला । बहुरिगहौं अर्जुन को हाला ॥

यह कहि झपटि चक्र गहि लीन्हा। दक्षिण करसों देर न कीन्हा ११४ बायें हाथ चरण गहि लयऊ। निज ललाट महँ थापित कयऊ॥ सो बहोरि अर्जुन पर धायो। हरि पारथ निज काह बचायो ११५ पुनि अर्जुन हरि आयसु जाना। अंग सुचित्र हने शत बाना॥ पद परहार तबहिं सो कीन्हा। हरि पार्थहि बहोरि गहि लीन्हा ११६ तबहिं कृष्ण फेंको तिहिहाला। धरणी जाइ परो ततकाला॥ पाइ क्रोध ताम्रध्वज धायो। कृष्णार्जुन कहँ भूमि गिरायो ११७ नरनारायण मुर्च्छित भयऊ। तबलगि दोउ अश्व पुर गयऊ॥ हतावशेष सुभट लै साथा। निजपुर जात भयो नरनाथा ११८ पुरबाहर मख मण्डल साजा। तहां मयूरध्वज हैं राजा॥ मिलत भये ताम्रध्वज जाई। पुत्रहि लखि नृप कह सुख पाई ११९ बीते वर्ष अश्व पुनि आवा। द्वितिय अश्व काको छबि छावा॥ हाथ जोरि कह बचन सनेहा। धर्मराजकर मखहयएहा १२० संगकृष्ण अर्जुन बलवाना। यज्ञ बाजि रक्षत विधि नाना॥ अपर सुभट बहु साथ विशेखा। पुरीबभ्रुवाहन इमिदेखा १२१ निजहय रक्षत अश्वललामा। गहो तहाँ अतिशो संग्रामा॥ निज प्रधान बहुलध्वज जोई। तिनसों लेहु पूंछि सबसोई १२२ सुनि इमि नृपति पुत्र सुखबैना। मंत्री सों पूंछो गुणऐना॥ कहबहुलध्वज सुनहु नरेशा। प्रद्युम्नादि महाबरबेशा १२३ तिनहिं पुत्र तव मुर्च्छित कयऊ। लरतकृष्ण अर्जुन सों भयऊ॥ तिनसों महा युद्ध सो करिकै। पकरतभयो मोद उरभरिकै १२४ भेद्यौ मुर्च्छित भूमि गिरायो। अश्वनके पीछे इतआयो॥ मुर्छातजि पारथ यदुराई। का अब करहिं न जानतराई १२५ याविधि बचन सुनत कहराजा। आयो सुतकरि महा अकाजा॥ लैहय दोऊ अत्रासिधायो। कृष्णार्जुनहि संग नहिंलायो १२६ तजि कृष्णार्जुन लैहयदोई। मेरो यज्ञ पूर्णनाहिं होई॥ शत्रुरूप यहपुत्र हमारा। घरमें बाधाकियो अपारा १२७ जोतैं हरि अर्जुन कहँदेखा। लायो क्योंनहिं अत्र विशेखा॥

जिमि दुर्भगा नारिपतिपाई । सोवै संध्याही अलसाई १२८ जिमि
तुलसी कानन तजिकोई । विजया वन सेवन चितहोई ॥ चंपक
माला मोहित छराडे । कुसुम धतूरमालहियमरोंडै १२९ तैसे तैंहरि
अर्जुन त्यागा । ममगृह तजि जादूर अभागा ॥ अश्वन खेदि
दूर मैं देहौं । हरिसमीप तजिकै मखजैहौं १३० हे दुर्बुद्धि ठाम
बतलाइय । जहँ हरिविष्णु तहाँ हम जाइय ॥ याविधि हरि
कांची नरनाहा । निन्दतभये पुत्र निजकाहा १३१ उतकृष्णा-
र्जुन मणिपुर जागे । मूर्च्छा अपर सुभट सबत्यागे ॥ तब बोले
अर्जुन हरिपाहीं । कहांगयो नृप हयन लखाहीं १३२ तहँलै
चलिय करहिं संग्रामा । सुनत वचन बोले सुखधामा ॥ दोऊ
अश्व रत्नपुर गयऊ । जात नृपति तिनपीछे भयऊ १३३ हमहूं सब
चलिहैं पुरतेही । बसत मयूरध्वज नृपजेही ॥ हम तुम आगे
चलहिं सिधाई । पीछेते आवै कटकाई १३४ आगे चलिकै देहिं
दिखाई । साहस सुभग शिखिध्वजराई ॥ हस्तपकरि अर्जुनहरि
गयऊ । पीछे गमन कटक पुनिकयऊ १३५ पारथ सों बोले यदु-
राई । लखहु नगर दीक्षित नरराई ॥ तोरण रम्यदिव्य पुरशोभा ।
देखत कस्य चित्त नहिं लोभा १३६ दो० । वृद्धविप्र व पुनिज
करहिं तुमको बालबनाइ । चलहिं मयूरध्वज निकट तबकारजहि-
तलाइ १३७ आवहु प्रविशहिं पुरमहत निशामध्य इहिकाल ।
जननगुप्त विचरहिं निशा देखहिं शोभ विशाल १३८ सकल
निशाविचरेपुरी सुनत वचन नरनारि । बहुरि निकट भूपतिगये
होतहि उदयतमारि १३९ चौ० । सिंहासनपर भूपविराजैं । देश
देश भूपति छविछाजैं ॥ विप्रवृन्द शोभित बहुतहँवां । सौम्रि कु-
पूर गंध बहुजहँवां १४० नानारत्न जहां उजियारी । दीक्षित
नृप शोभित सहनारी ॥ स्वस्ति वचन द्विजप्रथम बखाना । होवै
तव भूपतिं कल्याना १४१ आये लखहु विप्र हमआहीं । शिष्य
सहित मण्डप मखमाहीं ॥ उठि सशिष्यकिय नृपति प्रणामा ।
बोले वचन बहुरि गुणधामा १४२ बोले स्वस्ति प्रणाम बिनाहीं ।

शापसमान भयो हमकाहीं ॥ परे दण्डवत भूपति आई । कृष्ण उठाइ लीन्ह सुखपाई १४३ तबहिं नृपति अति बचन अमोले। हरिश्चन्द्र बिप्रसों बोले ॥ पूज्यपाद किहि कारणआये । शिष्य सहित अति तेज सुहाये १४४ कौनकारिय प्रिय कार्य तुम्हारे। नहिं अदेय कछु अहै हमारे ॥ आप कृपा हमभे धनिआजू । आज्ञादेहु करहुँ द्विजराजू १४५ कहो बिप्र सुनिये नरराई। जिहि कारण आये इतधाई ॥ रम्य धर्मपुर सों हम आये। सुवन विवाह हेत सुखपाये १४६ तवपंणि अत्रसकन्याजोई। तनुजा देइ शील युतसोई ॥ जबलगि मिलो न नगर तुम्हारा। तबलगि मारग सिंह निहारा १४७ क्रोध सहित ममसुत गहिलीन्हा । बचनहेतउद्यमबहुकीन्हा ॥ मोहिंदुखितलखिकेहरि बोला । सुतभयदावच मनुज अमोला १४८ तीक्षणदंष्ट्र पुच्छ विकराला । भय दिखरायो मोहिं विशाला ॥ करत वृथाश्रम सहित निज सुत हेता । कालहुगहि कतहूं तजिदेता १४९ जानिये शिष्य जाइय निजबासा । हिंस्रनआगे नाहिं सुपासा ॥ जेअपुत्र और पुत्र अब जाई । जो परलोक होइ सुखदाई १५० तब मैं कहो मोहिं पूरुष जगमाहीं । हैं परलोक लहतते नाहीं ॥ छन्दबरवा । भपिलीजे । बालक छांड़ि कृपा करिदीजे १५१ व्यर्थ अहै मम जीवन पुत्र अल्पायुष मम खाइय वृद्धालीन । मृत्युग्रस्त हममा विहीन ॥ कहो सिंह सुनिबानी सुनिये विप्र । ता रत पाइ सुक्षिप्र १५२ मृत्युसहायक सबहैं सर्प जलादि । बहुआयुषहैरावरि पुत्रकिथोरि भूसुर कीजिय निज श्रमवादि ॥ कहो सिंहसों तब मैं तातें जाइय मानिय आयसु मोरि १५३ दान तपस चन सुनाइ । बचनहेत याके कछु कहौं उपाइ ॥ भाषोतौन१५ आदिक औरोजौन । सुनिय नृपति जो केशरि भाषत हम माँगतभो कछु तुमसों सिंह कराल । सोनवनतहै कहिय विप्रबर मो हाल ॥ कहो नृपति हे माँगो केहरिजोइ । अति दा देहौंसोइ १५५ कहो विप्रहै माँगो मृगपति जौन ।

नृपवाणी सुनिये तौन ॥ कहोभूपकी लावहु आधीदेह। छाँड़ि देहुँ तव बालक जिहि अतिनेह १५६ तपसादग्ध तुम्हारी देहन चाह। पुष्ट दुग्ध रस आदि नवपुनरनाह ॥ लाइय नृपतनु जाइय शीघ्रगतत्र । तबलगि मैं नाहिं मारौं तव सुत अत्र १५७ कह हरिसों मैं सुन्दर नृपतनु जौन। मैंनजाहुँ परहित देवै किमि तौन ॥ कहो सिंह द्विज जाइय भूपति पाहँ। अवशि विप्रहित देहैं तनुनरनाहँ १५८ जिमिदधीचि निजदीन्हे अस्थि निकारि। दीन्हरविज निज कवचहि अति सुख कारि ॥ देहिं मयूरध्वज तिमितनु युत नेह। यशस्वीन नाहिं होवै अति प्रिय देह १५९ बाहुजरण वपुत्यागैं वाहित विप्र। हीन पुत्र हे भूसुर जाइय क्षिप्र ॥ राज्य बहुत दिन कीन्हीं जन्मेपुत्र। कृपा करहिंगे तुमपर संशय कुत्र १६० दो०। अर्थीमाँगत सकलहैं जन देवैकै नाहिं। ताते जाइय विप्रवर शीघ्र नृपति के पाहिं १६१ या विधि पठयो सिंह इत वचन कहे बहुतत्र। सुतशोकातुर शिष्य युत मैं आयों चलि अत्र १६२ पूर्व विप्र सुत लाइयो रामचन्द्र वरवीर। पुत्रार्थी आयो निकट रामतुल्य गुणिधीर १६३ चौ०। भूपति कहो बैठिये विप्रा। देहौंतनु मण्डप निजक्षिप्रा ॥ यहकहि सुतहि राज्य नृपदीन्हा। जाह्नवितोय सुमज्जन कीन्हा १६४ तुलसीदल माला हँसि-धारा। शंखचक्र अंकितवपुकारा ॥ सभामध्य सबद्विजनसुनायो। श्रीहरि विप्र रूप धरिआयो १६५ पुत्रार्थी लखि पूजन करिहौं। अर्द्ध शरीर देइ मुदभरिहौं ॥ लखहु विप्र सब कौतुक अत्रा। वार्द्धकीक लावहिं करपत्रा १६६ द्वैखंभारोपहिं इत आई। फारहिं मम मस्तक हरपाई ॥ हमकहँ प्रिय जानत जनजोई। कहु-चमापन दूषण सोई १६७ विप्र प्रधानादिक सुनिएहा। कांपित भययुत भये सनेहा ॥ करुणासहित कहत सब तत्रा। कालरूप आयो द्विज अत्रा १६८ निर्दय प्राण हरण नृपकेरे। याचक हम देखे बहुतेरे ॥ परऐसो कबहूंनहिं देखा। यह निर्दय निरपत्रप लेखा १६९ घातक सिंह मांस आहारी। नहिंमानुष इहि

शापसमान भयो हमकाहीं ॥ परे दण्डवत भूपति आई। कृष्ण उठाइ लीन्ह सुखपाई १४३ तबहिं नृपति अति बचन अमोले। हरिप्रच्छन्न बिप्रसों बोले॥ पूज्यपाद किहि कारणआये। शिष्य सहित अति तेज सुहाये १४४ कौनकरिय प्रिय कार्य तुम्हारे। नहिं अदेय कछु अहै हमारे॥ आप कृपा हमभे धनिआजू। आज्ञादेहु करहुँ द्विजराजू १४५ कहो बिप्र सुनिये नरराई। जिहि कारण आये इतधाई॥ रम्य धर्मपुर सों हम आये। सुवन बिवाह हेत सुखपाये १४६ तवपंणि अत्रसकन्याजोई। तनुजा देइ शील युतसोई॥ जबलगि मिलो न नगर तुम्हारा। तबलगि मारग सिंह निहारा १४७ क्रोध सहित ममसुत गहिलीन्हा। बचनहेतउद्यमबहुकीन्हा॥ मोहिंदुखितलखिकेहरि बोला। सुतभयदावच मनुज अमोला १४८ तीक्षणदंष्ट्र पुच्छ विकराला। भय दिखरायो मोहिं विशाला॥ करत बृथाश्रम निज सुत हेता। कालहुगहि कतहूं तजिदेता १४९ सहित शिष्य जाइय निजबासा। हिंस्त्रनआगे नाहिं सुपासा॥ जानिये और पुत्र अब जाई। जो परलोक होइ सुखदाई १५० जेअपुत्र पूरुष जगमाहीं। हैं परलोक लहतते नाहीं॥ तब मैं कहो मोहिं भपिलीजै। बालक छांड़ि कृपा करिदीजै १५१ छन्दबरवा। अलपायुष मम खाइय बृद्धालीन। व्यर्थ अहै मम जीवन पुत्र विहीन॥ कहो सिंह सुनिबानी सुनिये विप्र। मृत्युग्रस्त हममारत पाइ सुक्षिप्र १५२ मृत्युसहायक सबहैं सर्प जलादि। ताते भूसुर कीजिय निज श्रमवादि॥ बहुआयुषहैरावरि पुत्रकिशोरि। ताते जाइय मानिय आयसु मोरि १५३ कहो सिंहसों तब मैं बचन सुनाइ। वचनहेत याके कछु कहौं उपाइ॥ दान तपस्या आदिक औरोजौन। सुनिय नृपति जो केशरि भाषोतौन १५४ माँगतभो कछु तुमसों सिंह कराल। सोनबनतहै भाषत हमसों हाल॥ कहो नृपति है माँगो केहरिजोइ। कहिय विप्रबर मोसों देहौंसोइ १५५ कहो विप्रहै माँगो मृगपति जौन। अति दारुण

नृपबाणी सुनिये तौन ॥ कहोभूपकी लावहु आधीदेह। छाँड़ि देहुँ तव बालक जिहि अतिनेह १५६ तपसादग्ध तुम्हारी देहन चाह। पुष्ट दुग्ध रस आदि नवपुनरनाह ॥ लाइय नृपतनु जाइय शीघ्रगतत्र। तवलगि मैं नाहिं मारौं तव सुत अत्र १५७ कह हरिसों मैं सुन्दर नृपतनु जौन। मैंनजाहुँ परहित देवै किमि तौन ॥ कहो सिंह द्विज जाइय भूपति पाहँ। अवशि विप्रहित देहैं तनुनरनाहँ १५८ जिमिदधीचि निजदीन्हे अस्थि निकारि। दीन्हरविज निज कवचहि अति सुख कारि ॥ देहिं मयूरध्वज तिमितनु युत नेह। यशस्वीन नाहिं होवै अति प्रिय देह १५९ बाहुजरण वपुत्यागैं बाहित विप्र। हीन पुत्र हे भूसुर जाइय क्षिप्र ॥ राज्य बहुत दिन कीन्हीं जन्मेपुत्र। कृपा करहिंगे तुमपर संशय कुत्र १६० दो०। अर्थीमाँगत सकलहैं जन देवैंके नाहिं। ताते जाइय विप्रवर शीघ्र नृपति के पाहिं १६१ या विधि पठयो सिंह इत वचन कहे बहुतत्र। सुतशोकातुर शिष्य युत मैं आयों चलि अत्र १६२ पूर्व विप्र सुत लाइयो रामचन्द्र वरवीर। पुत्रार्थी आयो निकट रामतुल्य गुणिधीर १६३ चौ०। भूपति कहो वैठिये विप्रा। देहौंतनु मण्डप निजक्षिप्रा ॥ यहकहि सुतहि राज्य नृपदीन्हा। जाह्नवितोय सुमज्जन कीन्हा १६४ तुलसीदल माला हँसि-धारा। शंखचक्र अंकितवपुकारा ॥ सभामध्य सवद्विजनसुनायो। श्रीहरि विप्र रूप धरिआयो १६५ पुत्रार्थी लखि पूजन करिहौं। अर्द्ध शरीर देइ मुदभरिहौं ॥ लखहु विप्र सव कौतुक अत्रा। वार्द्धकीक लावहिं करपत्रा १६६ द्वैखंभारोपहिं इत आई। फार रहिं मम मस्तक हरषाई ॥ हमकहँ प्रिय जानत जनजोई। कहु-त्तमापन दूषण सोई १६७ विप्र प्रधानादिक सुनिएहा। कांपित भययुत भये सनेहा ॥ करुणासहित कहत सव तत्रा। कालरूप आयो द्विज अत्रा १६८ निर्दय प्राण हरण नृपकेरे। याचक हम देखे बहुतेरे ॥ परऐसो कवहूंनहिं देखा। यह निर्दय निर पत्रप लेखा १६९ घातक सिंह मांस आहारी। नहिंमानुष इहि

भांति निहारी ॥ ब्राह्मण जाति ज्ञान को लयऊ। स्वार्थनिष्ठ कैसे यह भयऊ १७० कौन उपाय करहिं अबभाई। कछू न हम को परत लखाई ॥ सत्यबादि अतिथ प्रिय जिनको। करहिं निवारण काबिधि तिनको १७१ काब्राह्मण बपुहरितौ नाहीं। जिमि बामन बलिके मख माहीं ॥ याबिधि कहत सकल जन भयऊ। राजा सबहिं निवारण कयऊ १७२ हर्षितनृपतिबहुरि तिहिबारा। दीन्हेंदान अनेक प्रकारा ॥ बार्द्धकीक तिहि अवसर आये। द्वै खंभा तहँ सुभग बनाये १७३ तिर्य्यक् काष्ठ कियो तहँ एका। रज्जु बद्ध दृढ़ किय सबिबेका ॥ राजा कहो लेहु करपत्रा। मम मस्तक धारहु लै अत्रा १७४ हर्षित नृपति बिप्र पद धोये। बहुरिबचन बोले सुख मोये ॥ अर्द्ध शरीर देत हमदाना। होइँ प्रसन्न यज्ञ भगवाना १७५ चाहत शुभ अपने कुल केरा। यौबन धनहिदेत इहिबेरा ॥ अर्द्धगात्र लीजै समाबिप्रा। होइप्रसन्न सिंह जिहि क्षिप्रा १७६ आजु धन्य भूतल मैं भयऊ। मोकहँधन्य बिप्रबर कयऊ ॥ सादर सुनहु लोग ममबैना। तनधन जासु हेत पर हैना १७७ शोचनीय सोहै जगमाहीं। तातेहर्ष करिय हम पाहीं ॥ याबिधि सुनि मुख बचन कृपाला। हाहाकार भयो तिहि काला १७८ नृपहि बिलोकि राष्ट्र सब कैसे। क्रन्दमान कुररी गण जैसे ॥ तब महीप महिषी तहँआई। याबिधि कहतभई समुझाई १७९ अति हर्षित सब बिप्रनआगे। बैनकुसुद्रति कह सुखपागे ॥ हेनृपसुना बिप्रहितआजू। अर्द्धदेह देहैं महराजू १८० दो० । सत्यबाग्भव देइमम मैंतवार्द्ध तनुनारि। जीवत दीजिय दानप्रभु भिन्नगतासु बिचारि १८१ लेइ नहीं पर भिन्नहरि मम मन आवतएह। चतुर्थांश जोदेहु नृप बृथा नशैतवदेह १८२ मांगी आधीदेहहरि नारिरूपसो जान। प्राणतजै पतिअग्रतिय धन्य न तासु समान १८३ उत्तम गतिसो पावई अत्रबिचारन और। याबिधि रानी बैनखुनि कहे बिप्र शिरमौर १८४ मन एकाग्र बिलोकिकै कहो सुनिय नृपअत्र। वामअंगनारी अहै

भाषो के हरितत्र १८५ दक्षिणांग नृप दीजिये वामलेइ नहिं सोइ। जो नहिं दीजिय अंगनिज जाहिं आश विनशेइ १८६ सोइ पठायो आपुढिग जाइकहौंगो तत्र। सुखसमेत भक्षणकरिय मेरे सुतको अत्र१८७याविधि भाषत विप्रवर सुनत सभासद ताहँ। तिहि अवसर कौतुकनिरखि आयो सुतनरनाहँ १८८तिहि ब्राह्मणहि सशिष्य सों कोमल गिराउचार। संपादत पितुके यशहि आनन्दित सुखसार १८९ पुत्र पिताही समअहै भाषत वेदबखानि।पितुसम दीन्हो अर्द्धवपु ब्राह्मणको हितजानि १९० पितुको अर्द्धशरीरहै पुत्र समग्र शरीर ॥ मांस पुष्टमोकहँनिरखि हो प्रसन्न हरिधीर १९१ होइ महद्यश पुत्रको सुनिय विप्रवर बैन। भीष्मराम आदिककिये पितावाक्ययशऐन १९२ सुनिताम्रध्वज के वचन कहो विप्रवर तत्र। जाविधि भाषो सिंहसम सुनिय पुत्रसो अत्र १९३ मुण्ड मयूरध्वज नृपति पुत्र नारि कर भिन्न ॥ द्विधा जात तनु लाइये दक्षिणांगमति पिन्न १९४ करैं अन्यथा कौनविधि तिहि अवसर नृपतत्र। वारण कीन्हो तिय सुतहि देतभये करपत्र १९५ अति हर्षित भूपतिभये। जपत रामकेनाम॥ वासवादिसुरलखत हैं विप्रतेजके धाम१९६ जवहि धरो कर पत्रलै निजमस्तक महिपाल ॥ ग्लानि महातम न उरभई पौर दुखित तिहि काल १९७ भूप वचन गहि पुत्र तिय गहतभये करपत्र ॥ राम राम कहि रानितब कहो विप्र सोतत्र १९८ सुनहु विप्रहम भेदहीं निजपति को इहिभांति ॥ जिमिनृसिंह तनुधारि कै खंभहि दैत्याराति१९९ कियोविदारण दैत्यपति तिमिनाथहि इहिकाल। तिहि अवसर निजरानिसों कहतभयेमहिपाल २०० तवकरस्थकरपत्रयह सुखद प्रिये इमि मान। कोमलकेतकिपत्र जिमि सुखद शरीरबखान २०१ मम शिरभेदिय शंकताजि संगमकर जसमान॥ यथानपीड़ातत्रमम तिमि इहिदंतन मान २०२ कोमल कमल समानये रदकर पत्र लखात। शिरविभेद करपत्रसों तवरानी सहतात २०३ चौ०।

भयो भिन्नमस्तक महिपाला। हाहाकार मची तिहिकाला॥ वाम चक्षुमहँआयोवारी। भूपतिसोंकहबिप्रनिहारी २०४ लेवनरोइदेत जोगाता। दानभावबिन लेतनज्ञाता॥ रुद्धस्वर्ग ममपुत्रबिहीना। होवै होइन संशयपीना २०५ इच्छासहित सिंहअबजावै। लै बालक मम आनँद पावै॥ रोइ शरीर देत महिपाला। हम किमि लेवैं बिप्र बिशाला २०६ यहकहि भूपहि त्यागि मुरारी। अर्जुन सहित गये तिहिबारी॥ ब्राह्मण जातबीक्ष्य तिहिकाला। कुमुद्वती नृप शिरगहि हाला २०७ मस्तक भिन्नगहो दुहुँहाथा। सुमुखी कहे बचन नरनाथा॥ महाबुद्धि सत्यब्रत स्वामी। सकल वदात्य शिरोमणि नामी २०८ ममकर भिन्न तुमहिं तजिच्चिप्रा। बारयनाहिंत जात सुबिप्रा॥ होवै कीरति बिफल तुम्हारी। जो ब्राह्मण जावै इहिबारी २०९ भद्र भिन्न शीश धृत पानी। ताते कहत बिप्रसोंबानी॥ सुनिमागच्छ सुनिय ममबैना। तापीछे जाइय गुणऐना २१० जाते तोय बामचषआयो। दक्षिणांग मुनि हित सुखछायो॥ पतित भूमि बामांग बिशेखी। वृथा जात रोवत यहलेखी २११ दो०। तीक्ष्णदंत करपत्र मम तादृश व्यथानहोइ। बिप्र बिमुख बामांगसो यादृश ब्राह्मण सोइ २१२ चौ०। भूपति बचन सुनत इहिभांती। भये प्रसन्न असुर आराती॥ आपन रूप नृपहि दरशाई। समालिंग्य बोले यदुराई २१३ धन्य मयूरध्वज महिपाला। दीन्ह परीक्षा कठिन कराला॥ कीजिय यज्ञसपुत्रसनारी। कर्त्ताकर्महोव इहिबारी २१४ अर्जुन हमतोषित संग्रामा। तव सुतन ताम्रध्वज नामा॥ मुर्च्छित कीन्ह सैन्य युत एहा। अतिप्रसन्न हम नहिं सन्देहा २१५ देखि हमहिं किमि दुखलह प्रानी। तुम दिय अर्द्धदेह मम बानी॥ तवसुत जीतत भोरणमाहीं। लीजै अश्व युधिष्ठिर काहीं २१६ दो०। जातें भक्ताधीन हम अश्व हवनकरि दोइ। शोभन कीरति लीजिये उभय लोक यशहोइ २१७ मेरे देखत किमि भयो रावर भिन्न शरीर। याविधि सुनि श्रीहरि

वचन बोलत भे नृपधीर २१८ परमधाम तव विष्णु जो बाह्य स्थित सुखरूप। मम शरीर को भिन्नकरि कीन्ह प्रवेश अनूप २१९ आजुधन्यमोकहँ कियो वासुदेव भगवान। यज्ञ किये का होइगो जबप्रसन्न सुखदान २२० जगन्नाथ तव दरशकरि अमित पुण्य श्रुति बैन। कोटि यज्ञकृत पुण्य हो यामें संशय हैन २२१ कर्म करन हित जो कहो आपुकीजिये सोइ। दोउ अश्व मम पुत्रमम प्रीय महाजन जोइ २२२ कारकमख अरु यज्ञहित सामग्रीहै जोइ। सब लै अपने हाथसों धरियहृदय निजसोइ २२३ तुमहिं पाइ जो मख करौं हँसहिं बिप्रबर जौन। गंगाजलको त्यागिकै गह नीहारहि कौन २२४ महत अग्निको छोड़िकै बिष्फुलिङ्ग हिमयुक्त। कहिय जनार्दन कौनअस जो होवैअनुरक्त २२५ मूरुख दोहयपाइकै तुमहिं त्यागि सुखसार। हयमेधन सो पूजई सोतन लह यममार २२६ ममसुत आवत भो इतै रणतजिशोभासाज। भाग्योदय सो मैंलखों नरनारायण आज २२७ छन्दशिखरणी। नमस्ते कंसारी मनुज वपुधारी यदुपते। जगद्धंत्रे गोप्त्रे सकल जगकर्त्रेजगपते॥ नमस्तुभ्यं पूर्ण जगत गुरवे पद्मनयनं। अपारंशान्ताङ्गं कलित वपुषं ज्ञान अयनं २२८ छन्दमनहरण। श्वास सो करण वेदहरणजगत खेद दरण शरण भेद असत जोगायोहै। निजजन भरण धरण निजभक्ति उर मरण जनम सोंहँ होतही नशायोहै॥ कालहूके कालचक्र कमल रसाल भुज युगल बिशाल जनस्ववश बसायो है॥ मुखचन्द्र सों प्रकाश मनहर शुभहास जनउर करवास ममछवि दरशायो २२९ छन्दशुभगीत। लहत जाको पारवेदन भेद और कि पावई। व्यास शुक सनकादि शंकर जासुकीरतिगावई॥ शेष सुमिरण करत नारद शारदा धुनि तानसों। नई कीरति होत दिन दिन कहत शास्त्र पुरानसों २३० दो०। याबिधि नृपअस्तुति सुनत श्रीहरि आनँद पाइ। तीनदिवस तहँरहतभे निजजन आनँददाइ २३१ नृपति मयूरध्वज कथा

याविधि बरणी एह । जियालाल दुखहारिणी दायक श्री-पति गेह २३२ ॥

चौ० । कथा भवनबरणौ सुखपाये । राजपूत चौहानकहाये ॥ नौकर राना की सरकारा । रूपकदोलख मास गुजारा ॥ भगवत भक्त दया की मूरति । हरिजनसेवक हरिपद सूरति २३३ गये अखेट एकदिन राना । भवनसाथ गे आयसु माना ॥ मृगी एक भागी लखिपाये । अश्व तासु पीछे दौराये २३४ जाइ समीप खड्ग तबमारा । काटिखण्ड युग भूपरडारा ॥ गर्भवती ताको ल-खि पाये । अमित गलानि हिये निज लाये २३५ हमऊपरहरि भक्त कहाई । अंतर कपटी मलिन सदाई ॥ दीन्हो त्यागि खड्ग वहभारी । दारु खड्ग इक लीन्ह सवाँरी २३६ राना सभा नित्य लै जावैं । लोह मूठिऊपर चमकावैं ॥ हीसेदार एक दिन कोई । राना सों बरणो सबसोई २३७ रानाके मनमें नहिं आयो । हेत परीक्षा वर्ष बितायो ॥ पीछे परो बहुत वह जबहीं । राना किय बिचार यह तबहीं २३८ सभामध्य बैठेइकबारा । देखन हित नि-ज खड्ग निकारा ॥ वारीसोसब के लखिलीन्हे । बहुरिभवन को आयसु दीन्हे २३९ खड्गआपनहु आप दिखावैं । सुनत भवन इमि बचन सुनावैं ॥ कीबे सोइ करौनरनाहा । दारुखड्ग मम कहिबे चाहा २४० हरिइच्छा वाणीयहबोले । सारुखड्ग ममकौ-शति खोले ॥ जो खैंची तलवार सुहाई । विद्युच्छटा सहस जनु आई २४१ क्रोध कियो राना लखि तबहीं । काटौ शीश युगल कर अबहीं ॥ बोले भवन तबहिं कर जोरी । राना सुनहु विनय यह मोरी २४२ याको कछू दोषनहिं होई । खड्ग अवश्य काष्ठ की सोई ॥ हरिकृपा भई यह ऐसी । रही प्रथम वरणी उन जैसी २४३ सुनि राना अचरज मन आनो । धन्य धन्य करि भक्त ब-खानो ॥ कछुक भूमि दीन्ही तिनकाहीं । कहोरहौ घरहीं निज माहीं २४४ दर्शन देन हमहिं नित ऐये । चाकर मोरन आप कहैये ॥ जियालाल प्रभुजन सुख कारी । सदा भक्त की विपति

निवारी २४५ दारु खड्ग कीन्हीं अति चोखी। सदा भक्तपर कृपा अनोखी॥ जो हरिचरण शरण गहि लेई। ताहि त्रिलोक कौन दुख देई २४६॥

शंका की कथा॥

चौ०॥ कथा भक्त शंका की गावैं। जासु कृपा हरिपदरति पावैं॥ शंका कुंभ कारकुलजाये। भगवतभक्ति मोदउरछाये २४७ जो कछु द्रव्य कमाई पावैं। भगवत भक्तन काहँ खवावैं॥ हरिकी कथा सुनैं अरु गावैं। हरि सुमिरण तजि औरनभावैं २४८ एक समय वहु पात्र वनाये। निशा समय आवांबिच लाये॥ एक पात्र मार्जारि बियानी। शंका यह वृत्तान्त न जानी २४९ आवां वरनलाग वह जवहीं। जानो हालतासु तिनतवहीं॥ भयो शोच तिनके उरभारी। त्राहित्राहि हरि वचन पुकारी २५० दो०। जहँ जहँ दासनदुखपरो तहँ तहँ रक्षाकीन। मार्जारी सुतराखिये जानि मोहिं अति दीन २५१ छन्दमाधवी। जव हाटक कश्यप दीन दुखै प्रहराद जनैनहिं देरकरी। प्रगटे झट खंभ विदारि सभामहँ रूपकराल मनुष्य हरी॥ पुनि आशरमारि भगाइ निशाचर राजि दई प्रहराद जनै। यशगावत ब्रह्म सुरेंद्र सवैचल अग्नि धनेश जलेशभनै २५२ चौ०। लाक्षागढ़ पाण्डवनवचाये। दुर्वासा को मान लचाये॥ चल सुतसो अर्जुनहि उवारा। ब्रजजनहित गोवर्द्धन धारा २५३ द्रुपद सुताकी राखी लाजा। दावापान कियो यदुराजा॥ वालि त्रास सुग्रीव वचायो। जल बूड़न गजराज न पायो २५४ मेरीटेर सुनौ अव स्वामी। वार अनेक नमामि नमामी॥ मार्जारी शिशुलेहु उवारी। जाउँ नाथ चरणनवलिहारी २५५ अस्तुति करी वार वहुनाना। तवलगि आवांसुलुगिसिराना॥ आवां वह खोलतभे जवहीं। मार्जारी शिशु देखे तवहीं २५६ आवां पात्रपकेसव जोई। शिशुजामें पाको नहिं

सोई ॥ देखत शिशुपायो सुख भारी । गृह दरिद्र आवै निधि भारी २५७ दो०। याविधि रांकाकीकथा जियालाल कहसोइ। सुनै जौन जनचरित यह दयाहियेमधि होइ २५८ ॥

चौ०। केवलरामकथासुखकारी । वरणौंश्रीहरिपगउरधारी ॥ भगवत भक्ति प्रवर्त्तक भयऊ। विमुख लगाइ चरणहरि दयऊ २५९ दुखसुखशत्रु मित्र नहिं जानैं । समदरशी घटघट हरि मानैं ॥ विमुख जानि हरि ताहि सिखावैं। करि उपदेश सुमारगलावैं २६० माला मूरति देइँ बुलाई । जपौ नामहरिसेवौ भाई ॥ बिनहरिकोऊ काम न ऐहै। इतको साज इतै रहि जैहै २६१ नागा नीक करत तुमजोई । प्रगट धर्म पुरमें है सोई ॥ गुजरत हाल नित्य तहँ जाई। चित्रगुप्त सो लिखत बनाई २६२ याविधि करि उपदेश घनेरे। कोटिन अघी कीन हरि नेरे ॥ अवसर एक एक बनजारा। कोड़ा वृषभ आपने मारा २६३ केवल राम गिरे भूमाहीं। देखत रही देह सुधिनाहीं ॥ देखत लोगन दौरि उठायो। कोड़ा घात देह लखि पायो २६४ ऐसी दया जासु तनभारी । वृषभचोट उपघन निजधारी ॥ दया मूल सब धर्मन माहीं। धारत हरिजन हिये सदाहीं २६५ ॥

चौ०। अवहरिव्यासकथाशुभगावों । भगवतभक्तिकृपाजिन पावों ॥ ऐसे निज मानस हरिचीन्हा। देवनकाहँ शिष्यकरि लीन्हा २६६ एकसमय चरथावलग्रामा । वागव्यास कीन्हो विश्रामा ॥ तहां रहै दुर्गा अस्थाना । कोऊ कीन्ह छागबलि-दाना २६७ लखिहरिव्यासदया उरआई। शोचविचारकीन वहुताई ॥ भोजन तहां कीन्हकछु नाहीं । आई दुर्गा निशात-हाहीं २६८ सहै कौन हरिजन दुखभारी। आइ देवि इमि कहा पुकारी ॥ भोजन आप करौ किमि भूखे। आई लखि रावर को रूखे २६९ सुनि हरि व्यास कहो इमि बानी। होइ अनीति जहाँ हम जानी ॥ तहँ भोजन कौनी विधि कीजै। बाढ़ै पाप पुण्य तन छीजै २७० देवी कहो क्षमा अब कीजे। अब उपदेश

मंत्रकरदीजै ॥ करौ पवित्र नगर यह आपू । भगवतभक्त बड़ा परतापू २७१ सुनत व्यास हरिहिये बिचारा। देवी शिष्यहोत इहि बारा ॥ देवी शिष्य होइजो जाई । सकल नगर हरिभक्त कहाई २७२ यह विचारिकीन्हो उपदेशा । देवीनृपगृहकीन्ह प्रवेशा ॥ राजा रहै ग्रामकरजोई । तासों कहो स्वप्न में सोई २७३ गहिये शरण जाइ हरिव्यासा । नाहित करौं नगर सहनासा ॥ दीन्ह उलटि पर्यंक समेता । उठो भूप निद्रागत चेता २७४ पुनि हरिव्यास शरण को आयो । सकल ग्रामहरिभक्त कहायो ॥ ऐसे संत पवित्र चरित्रा । महापातकिन करत पवित्रा २७५ ॥

चौ० । राजा शिविकी कथाबखानौं । पूरण दया जासु उर मानौं ॥ भूपति यज्ञ करत इकबारा । जहाँ विराजत विप्र अपार २७६ हरि शिखि भूपति यश सुनिपाये । दोऊ लेन परीक्षा आये ॥ वह्निकपोतवपुषतनकयऊ । श्येनरूपवासव धरिलयऊ २७७ भजो कपोत बाजरपटायो । भूपति यज्ञ करत तहँ आयो ॥ नृप की गोद कपोत लुकाना । घेरिबाज इमि वचन बखाना२७८ दो० । अहो भूपधर्मज्ञ तुम हमहुँ सुनी यहबात । मोह कृपणताहै नहीं नेकरावरेगात २७९ चौ० । पालतआप सबहिं भूपाला । ऊँच नीच यावत नरवाला ॥ गुणधारत अवगुणहिं दुरावत । विमुख नजात द्वारजो आवत २८० धर्म छाँड़िये भूपति नाहीं । अपयश छाइ रहै जग माहीं ॥ यह कपोत भोजन है मेरा । तैं किमिलिय छपाइ या बेरा २८१ क्षुधित अहौं नृप बहु दिन केरा । दीजै मोहिं याहि याबेरा ॥ भूपति कहा बाज सुनि लेहू । आश कपोत छोंड़ि तुम देहू २८२ सभय कपोत शरण ममआयो । त्यागौं ताहि न तुमहिंबतायो ॥ शरणागत त्यागै नर जोई । दोष ब्रह्म बध पावै सोई २८३ हित अनहित विचारि जो त्यागै । नाशै पुण्य पाप तन जागै ॥ नाशै पुण्य तासु मुख देखै । धर्मी मुख लखि बढ़ै विशेखै २८४ ताते याहित जौं नहिं कबहूँ । कोऊ ममशिर काटै तबहूँ ॥ सुनत बाज बोला

इमि बानी । हमतौ तुमहिं सुना बड़दानी, २८५ सो अब छूटत हमहिं लखाई । अमर नहोउ जगत माधि राई ॥ दिये अहारहोइ वड़ काजा । लीजै मानि शीष ममराजा २८६ बिना अहार रहै नहिं प्राना । त्यागि कलेवर करै पयाना ॥ मेरेमरे बहुत तजिआशा । जननि जनक सुत नारि बिनाशा २८७ एक जीव की रक्षा करिहौ । हत्या शीश बहुत की धरिहौ ॥ बिना विवेक करै जो कोई । पछितावा पीछे ते होई २८८ भीन धर्म कर मारग सोई । पुरायहु करत पाप कहुँ होई ॥ ताते नृप मानौ ममबानी । देहु अहार मोर यहजानी २८९ दो० । शरणागत रक्षा करहिं कह शिवि सुनहु शचान । हिये बिचारो आपने यासम धर्म न आन २९० पण्डित सोई धर्म पर सत्यवादि मतिधीर । सोई ज्ञानी शीलयुत हरै पराईपीर २९१ चौ०।इच्छास्वर्गकरौंमैंनाहीं । नहिंबैकुण्ठबास मनमाहीं ॥ भुक्ति मुक्ति चाहत हमनाहीं । नरक जान भयनहीं कदाहीं २९२ है अभिलाष सदा मनएही । आवै शरण तजौंनहिं तेही ॥ जो मोपर प्रसन्न भगवाना । यहबर मांगौं चाह न आना २९३ तन धन धाम बाम सुतजावै । तजौं न ताहि शरण जो आवै ॥ यहकपोत मोकहँ प्रियलागा । कौनीभांति जाइ सोत्यागा २९४ मांगौ और कछू मनआनी । सुनिशचान बोला तबबानी ॥ भूमि धाम धन चाहतनाहीं । उपधन चाह न है मनमाहीं २९५ भोजन रहै कपोत हमारा । सो न दीजिये सुनिय बिचारा ॥ पललापनो खवावोमोहीं । जानौं दयावन्त तबतोहीं २९६ दो० । धरौ कपोतहि एकदिशि तुला मांझ मतिधीर । तासम धरिये मांसनिज हरौ क्षुधाकृतपीर २९७ छन्दतोटक । सुनि हर्षित भे शिविराउतबै । धनि देहलगी परहेत जबै ॥ रुजशोक जरायुत देह सदा । धिक काज परावन साधकदा २९८ चौ० । सुनिशचान इमि बचन उचारा । दीजिय मांसन करिय बिचारा ॥ प्राण जानहै क्षुधिन हमारा । वृथा वाद अबकरत भुवारा २९९ भूपति

सुनत तुला मँगवायो। पलरा इक कपोत बैठायो ॥ दूजे ओर मांस निज धारा। पलरा निज कपोत गुरुकारा ३०० बहुरि काटि नृपमांस चढ़ायो। पलश नहिं कपोत समआयो ॥ काटि काटि जांगल नृपधारा। उठो न भूते नेकु निहारा ३०१ राजा आपु चढ़ोहरषाई। देखत शिखि हरिरहे लजाई ॥ चढ़े विमान लखैं सुरएहा। कहैं भूप दीन्ही निजदेहा ३०२ धन्यधन्य जैजै नृपगावैं। वर्षि पुष्प निज निज पुरजावैं ॥ हुतभुक इन्द्रकपट निजत्यागे। प्रगटे रूप भूपकेआगे ३०३ ह्वैप्रसन्न बोले तबवानी। धन्यधन्य भूपति हमजानी ॥ तुमसम जगत मांझ नृपनाहीं। प्रणकिय यशहोइहि जगमाहीं ३०४ सन्तमही द्रुम जलघनजोई। प्रगटे परमारथ हितसोई ॥ संतन में नृप आपु सरीखे ॥ ऐसे भूप नयन नहिं दीखे ३०५ वृद्धावस्थाजाइ तुम्हारी। होइ नवीन अंग सुखकारी ॥ हमशठ नेक दयानहिं कीन्हा। मतलब विना तुमहिं दुखदीन्हा ३०६ क्षमाकरहु अपराध हमारे। यहकहि हरि शिखि स्वर्ग सिधारे ॥ पूरण यज्ञभई या भांती। भूपति हर्षकहो नहिं जाती ३०७ या विधि शिविनृपकथा सुहाई। जियालाल बरणी सुखपाई ॥ जो यह कथा सुनै अरुगावै। यमकिंकर ता निकट न आवै ३०८ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकंजियालालजन्मायेणविरचितचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येदशमदयाअहिंसानिष्ठायांपञ्च भक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौद्वादशस्तरङ्गः१२॥

दो० निष्ठाव्रत एकादशौ कथाभक्त द्वै केरि। कुलिशामृत रेखा सुभगनौमिचरण हरिकेरि१ वरणौं नरहरि चरणभजिधारिभयंकर देह। कियरक्षाप्रह्लादकी दीन्होंराजिसनेह २ भयेदेश मुलतान में हाटककश्यप तार। देवनके दुखटारिकै हरो भूमि को भार ३ भगवत प्रापति के हितै व्रत समर्थकहवेद। एकादशिजन्माष्टमी रामनवमि हरखेद ४ जोविधि माहातमकहों होइ असित विस्तार। न्यारे न्यारे ग्रंथहैं माहातम सुखसार ५ निर्णय के बहुग्रंथ हैं ता-

हूको नहिंकाम। मैं केवल वर्णन चहत श्रीहरियश अभिराम ६
चौ०। अम्बरीष की कथासुहाई। वरणौं बन्दि चरण रघुराई॥
भयेचक्रवर्त्तीसो राजा। भगवतभक्त महासुखसाजा ७ जिनगु-
ण दान यज्ञ यशभारी। बरणोंमुनि पुराण विस्तारी॥ इन्द्रादिक
दुर्लभ सुखजोई। पायो अम्बरीष नृपसोई ८ परकबहूं नहिंचित्त
लगायो। भगवत सुयश अहर्निश गायो॥ भगवतकी किंकर-
ताजेती। निजकरकरैं भूपसब तेती ९ काहुसेवकहि करन न दे-
ता। एकादशी करै ब्रतहेता॥ नवमीसो साधैं नृपनेमा। दशमी
काहँकरैं पुनिप्रेमा १० एकादशी करैं ब्रतनीके। करैं जागरण
भावत जीके॥ तिथिद्वादशी जानि नृपतेई। विप्रन द्रव्याम्बर
धनदेई ११ बहुरिकरैं कोटिन गोदाना। विप्रबुलाय करैं सनमा-
ना॥ भोजन व्यंजन विविध करावैं। तापीछे पारण मनलावैं
१२ एकसमय दुर्वासाआये। करिप्रणाम भूपति बैठाये॥ किय
सत्कार बहुतविधि राजा। कहोअशन कीजैमहराजा १३ कह
दुर्वासा नृपति सुनिलीजे। मज्जन करि भोजन हमकोजै॥ यह
कहिगये करन अस्नाना। दण्ड द्वादशी नृपद्वैजाना १४ पारण
हित चिन्ता मनकयऊ। विप्रनसों पुनिपूछन लयऊ॥ विप्राज्ञा
चरणामृतपायो। करिमज्जन दुर्वासाआयो १५ यहवृत्तान्तसुन-
तभेजवहीं। बाढ़ो क्रोधहिये तिनतबहीं॥ राजाके मारनहितसो-
ई। पटको भूमिजटा निजजोई १६ कृत्याकाल प्रगटभैतासों।
अग्निज्वाल प्रगटीअतिजासों॥ भस्मकरनराजाकेधाई। भगवत
दीन्हो चक्रपठाई १७ देखतचक्र सुदर्शन धाये। कृत्याको क्षण
माँझनशाये॥ पुनि दुर्वासाको रपटाये। दुर्वासाभागेभयपाये १८
भागे तीनोंलोक विशेखा। चक्रसुदर्शन पीछेदेखा॥ ब्रह्मलोक
भय संयुतआये। त्राहित्राहि कहिबचनसुनाये १९ ब्रह्माकहोसु
नौ ऋषिराई। भागौनतु पुरमोरनशाई॥ हैमम आयुपहर द्वैकेरी।
तिन आयुध समर्थ नहिं मेरी २० सुनत बचन दुर्वासा भागे।
पहुंचे शिवशंकरके आगे॥ चक्रताप तापित हमभारी। हौं

शंकर अबशरण तुम्हारी २१ सुनत शंभुबोले इमिबैना। इनसों राखि सकतहौंमैना॥ जिनमाया बहु मोहिंनचाई। तिनआयुधसों कौन बचाई २२ रमानाथ के शरण सिधावो। तब तुम जीवदानको पावो॥ बेमनभये सुनत दुर्बाशा। चलेधारि श्रीहरिपद आशा २३ पहुँचे जाइ विष्णुके आगे। अस्तुतिकरन लाग अनुरागे॥ रक्षाकीजे नाथ हमारी। निज आयुध सों लेउ उबारी २४ कहो विष्णु सुनिये ऋषिराई। यद्यपि मैंहौं सकत बचाई॥ ममआधीन तदपि नहिं बाता। दुखदीन्हो मम भक्तहि ताता २५ सबतजि ध्यान हमारो धारैं। राजि पुत्र धनतीयबिसारैं॥ तिनको हम त्यागैं किमि भाई। रहत भक्त आधीनसदाई २६ भक्त भजैं मोकहँ मैं तिनहीं। प्राणसमान सदाप्रिय जिनहीं॥भक्तिआश राखत मनमाहीं। मुक्तिनिरादर सदाकराहीं२७ आये आपशरण मम जासू। कहत उपाय बचनहित तासू॥ अम्बरीष शरणागत जैये। तौ तुम प्राणदान को पैये २८ सुनि दुर्बासा भये निरासा। पहुँचे अम्बरीष के पासा॥ त्राहि त्राहि कर बचन सुनाये। करिदण्डवत क्षमा करवाये २९ अमितदया भूपति उरआई। हरिआयुध को विनय सुनाई॥ कीन्हो तेज शांत तिन जबहीं। मुनि आदर कीन्हो बहु तबहीं ३० विविध भाँति भोजन करवाये। दुर्बासा दुखदूरिबहाये॥ वर्षप्रयंततिनहिं चलि गयऊ। अम्बरीष जल अन्ननकयऊ ३१ जहँसो दुर्बासा हैं भागे। ठढ़े रहे भूप पग नांगे॥ दुर्बासा दुख देखि अपारा। शोच करत नृप बारहिंबारा ३२ धन्यभक्त रघुपति के जेई। परदुख सहि न सकत हैं तेई॥ उनको देइ कोउ दुखभारा। वेकबहूँ नहिंबैरसँभारा ३३ विदा भये दुर्बासा जबहीं। भोजन करत भये नृप तबहीं॥ ऐसे नृपहरिभक्त सुजाना। पूरण सुयश पुराणबखाना ३४ कोऊएक नृपतिकी कन्या। यहप्रण करतभई सोधन्या॥ अम्बरीपसोंकरों बिवाहा। औरभूपतिकीनहिं चाहा३५ सुनि राजा इमि बचन प्रकाशा। हमको नेक नहीं अवकाशा॥

नहिं विवाह इच्छामन आवत। हरिपूजन अह निशा गँवावत ३६ अतिशय हठ बिलोकि नरराई। दीन्ह आपनो खड्ग पठाई॥ तिही खड्ग सँग भयो बिवाहा। भयो नगर में अति उत्साहा ३७ न्यारो भवन बनो तिहि केरा। तहँ रानी वह करत बसेरा॥ पूजा जहाँ करत नरराई। एक दिवस तिहि मन्दिर आई ३८ सोवत नृपतिरहे तिहि बारा। रानी मन्दिर सकल बहारा॥ लेपनसेकन मन्दिर कीन्हा। पात्र शोधि तदुपरिधरिदीन्हा ३९ बहुरि पवित्र नीरधरि दयऊ। सामग्री पूजा सब कयऊ॥ आसनादि पुनि दीन्ह बिछाई। रानी निजमन्दिर पुनिआई ४० याप्रकार रानी नित जावै। पूजाके सब साज बनावै॥ राजा यह मनमाहँ बिचारी। जागे एक दिवस निशि सारी ४१ समय जानि रानी तहँ आई। पूजा साज करन मनलाई॥ लखि राजा बोले सुख पाई। तूको मोसों कहै बुझाई ४२ ममसेवा चोरी तू कीन्हा। दिन बहु गये आजु लखिलीन्हा॥ सुनि रानी बोली वह सोई। दासी नई आपकी होई ४३ देखि भक्ति बोले नरराई। पूजाअलग करौ सुख पाई॥ आज्ञा पाइ सुपूजन लागी। भगवतपूजन में अनुरागी ४४ लखि भगवत प्रसन्न अति भयऊ। राजा महामोद मनकयऊ॥ या रानीकी कथा सुहाई। निष्ठाप्रेम सुविस्तृत गाई ४५ राजा की प्रसन्नता जानी। लागीं हरिसेवै सब रानी॥ पुरवासी हरिसेवन लागे। भे प्रसन्न भूपति सुख पागे ४६ सब रानिन के मन्दिर जावैं। पुरवासिन के भवन सिधावैं॥ सबसों करैं अमित उपदेशा। हरिसुमिरे सबकटत कलेशा ४७ या विधि अम्बरीप रजधानी। घरघरभक्ति प्रगट सुखदानी॥ चलेपरम पद जब नरनाथा। वासी अवध गये सब साथा ४८ अम्बरीष की कथा सुहाई। सुनत भक्ति आवत उरधाई॥ जो फल यज्ञ किये नहिं आवै। जियालाल सोई फल पावै ४९॥

दोहा। रुक्मगांद भूपतिकथा अववरणों सुखखानि। भक्ति पुराणनमें विदित जियालाल मुददानि ५० पुष्पवाटिका तासु

की शोभागंधसमेत। देवबधूटी आवहीं तहँ विहरनके हेत ५१
एकसमयकी बात देवदारआई तहां। कंटक बदरीजात लागो
ताकी देहमें ५२ चौ० । भई अशुद्ध न सकी उड़ाई । बोली
माली सुता बुलाई ॥ कियोब्रतैकादशि होकोई । देउ दिवाइ
हमैं फल सोई ५३ तौहम स्वर्गलोकको जाई । यह बृत्तान्त
सुनो नरराई ॥ आइकहोता देवीपाहीं । हमएकादशि जानत
नाहीं ५४ सुनत सुरीमन आनँदपाई। ब्रत विधि माहातम सब
गाई ॥ सुनिनृप नगरमशोधकरायो । चेरीएक तहां सुनि
पायो ५५ मारीगई न भोजन कीन्हा । दिन निशि निद्राहू
तजिदीन्हा ॥ ताहि बोलि पुनि पुण्य दिवाई । देवी गईस्वर्ग
तबधाई ५६ देखिभूपअचरज मनकीन्हा । आज्ञा देश नगर
सबदीन्हा ॥ एकदशी करौ सब कोई । ब्रतउत्तम यासम नहिं
होई ५७ ऐसोभयो व्रत परचारा। हस्त्यश्वन पावतआहारा ॥
कन्यानृपति निष्ठव्रत भारी। तापति आनत भो इकबारी ५८
एकादशी केर दिन होऊ । देखादेखि रहो व्रतसोऊ ॥ लागी
क्षुधा बिकल अति भयऊ । तबहिं चाहभोजन की कयऊ ५९
कन्यामाहातमको जानै। भोजन देनकियोनहिं कानै ॥ कछुक
बेर में तन तजि दयऊ। भगवत धाम काहँ सो गयऊ ६०
कन्याअतिप्रसन्न मनकीन्हा। भगवत अस्तुतिमें मनदीन्हा ॥
सोऊ प्राणतजो सुखपाई। यति समीप हरिलोक सिधाई ६१ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माख्येणविरचिते
चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येएकादशव्रतनिष्ठायांद्वैभक्तकथावर्णनो
नामभक्ताम्बुनिधौत्रयोदशस्तरङ्गः॥ १३ ॥

छन्दबरवा ॥ निष्ठाद्वादश महिमा महाप्रसाद । कहौं कथा
युगभक्तन युत प्रहलाद ॥ चरण कमल हरि रेखाजम्बू नौमि ।
हयग्रीव अवतारहि बन्दौं सौमि १ देशकामरूधारो यहअव
तार। सुरसहायताकीन्ही दुष्टन मार ॥ याविधि वाणीभगवत
गीतामाहँ । मखतप जप भोजन अरपै मोकाहँ २ दो० । भो-

जनादि सामा जिती होइनई तय्यार। करिअर्पण हरिके हितै पुनिकर अंगीकार ३ कहभगवत गीताविषे पत्रपुष्प फलवारि। देइ भक्त जो भक्तियुत भोगौमैं सुखकारि ४ चौ०। भोजन हरिप्रसाद के कीन्हे। शास्त्र विहित कर्मन चित दीन्हे॥ अन्तःकरण अमल तिहिसोई। नेहचरण भगवत के होई ५ कहत पुराण वरणि यह सोई। हरिप्रसाद महिमा अति होई॥ कोटिन बरत केर फलआवै। हरिप्रसाद किणकाजो पावै ६ हरिप्रसाद भोजन करकोई। मानसरोग नाश सब होई॥ जे भगवत प्रसादको पावैं। ते भगवत के लोक सिधावैं ७ भोजन कर बिन अरपे जोई। बिष्ठासम पुराणकह सोई॥ रुधिर समान बारिवह होई। भगवत हित अरपो नहिं जोई ८ यमयातनालहत नहिं सोई। हरिप्रसाद पावत नरजोई॥ मूरति पूजै भोग लगावै। हरिजिमाइसो जूठनि पावै ९ होइन मूरति ध्यान लगावै। ध्यानमहहरिभोजन करवावै॥ धारत ध्यानयदा नहिं बनई। नामोच्चारमंत्रसुख भनई १० हरिनारायण भोजन कीजे। पुनिमोकहँ जूठनि निज दीजे॥ या विधि हरिप्रसाद सुखदाई। भोजन करै महामुदपाई ११ याहू भांति बनै ना पूजा। तासम भाग्यहीन को दूजा॥ होत प्रसाद नाम के लीन्हे। प्रेम सहित अर्पण के कीन्हे १२॥

चौ०। अंगद कथाकहौं सुखपाये। राजपूत हरिभक्त कहाये॥ भगवत विमुख प्रथमये भारी। भगवत भक्त रही तिननारी १३ एकसमयआये गुरुवाके। कथाकहन हरि ताघर लागे॥ ताही क्षण अंगद तहँ आये। देखि क्रोध मानस उपजाये १४ खेदि दीन्ह तियके गुरु काहीं। दारादुखितभई मनमाहीं॥ भोजन त्यागि दीन सो नारी। गुरुअपमान शोक उरधारी १५ अंगद की वह नारि पियारी। दुखितदेखि कीन्हो दुखभारी॥ बोले बिना कछु नहिं भावै। बोलन हित बहु किये उपावै १६ नानाभांति ताहि समुझावा। रानी उरनहरा दुखदावा॥ अंगद माथ

चरणमें आना। परताको कछुनाहिं सुहाना १७ अंगदजोरि कहो कर दोई। आज्ञाहोइ करौं मैं सोई॥ बोली सुनतहरो उर तापू। गुरुकी शरण जाइये आपू १८ तौहम तुमसों नेहलगावैं। नाहित सुरपुर प्राण पठावैं॥ भक्तिकरौ पुनि अंगीकारा। नाहित प्राण जात इहि बारा १९ सुनि अंगद गुरुके ढिगगयऊ। मंत्र श्रवण तिन सों करि लयऊ॥ मालातिलक धरो निजदेहा। लाये गुरुलवाइ पुनि गेहा २० सेवा करन लाग गुरुकेरी। उपजी मानस भक्तिघनेरी॥ गुरुसेवामाहात्म्य अपारा। अंगद हियो बिमल वपु धारा २१ दो०। एक समय राजाचढ़े विजय हेत इक देश। विजय तहां पावत भये लीन्हों जीति नरेश २२ लूटि राजधानी विषे होत भई तिहि काल। अंगद पायो ताजवरशतैक हीराजाल २३ चौ०। शतहीरावेंचेघरआई। साधुन भोजन दीन्ह कराई॥ रहो एक सो बांधोपागा। जगन्नाथ अर्पण अनुरागा २४ हीरा प्रगट भयो रजधानी। सुनि यह हाल भूप कहज्ञानी॥ लूटिमाफभव भई तुम्हारी। हीरा हम चाहत सुखकारी २५ परहीरा अंगद नहिं दीन्हो। लोगन कहो कान नहिं कीन्हो॥ अंगद कहत वचन इमि भयऊ। हीरा जगन्नाथ कहँ दयऊ २६ ताको पाइसकै नहिं कोई। यह कहिकै घरआये सोई॥ इनकी एक वहिन रहजोई। करत रसोईनितप्रति सोई २७ ताकीकन्या इन संग खावै। विना संगताको नहिं भावै॥ यह वृत्तान्त एक दिन भयऊ। राजातातिय लालच दयऊ २८ लालचके फन्दा परिसोई। दियोहलाहल डारिरसोई॥ अंगद जब जेवनकोआये। वहिनसुताको तबहिंबुलाये २९ राखोतिहिचुराइवहनारी। अंगदहू ताजिभोजन थारी॥ लखिहठहाल सकल कहिदीन्हा। अंगदसा भेंटनपुनि लीन्हा ३० हरिभोजन गुनिक्रोधबहिधारा। घरसोंतत्त्वण ताहि निकारा॥ हरिभोजन कीन्हो यह जानी। खायो आपहु अमृतमानी ३१ अंगद कीन्हों भोजन जबहीं। राजा महा मोद लह तबहीं॥ दूत लखन आये बहु बारा। अंगद चिन्तन म-

लिन निहारा ३२ बाढ़त तेज जात अधिकाई। रक्षा करत भये रघुराई॥ हरिप्रसाद अमृत सम जाना। अमृत तिनहिं भयो सुखदाना ३३ तेज गरल कर नेक न व्यापा। यह बिश्वास पूर्ण परतापा॥ राजा मन में रहो लजाई। तब अंगद बिचार मन आई ३४ दो०। जगन्नाथ जीके हितै वह हीरा सुख खानि। चले मार्ग ले सुभट नृप घेरत भे तहँ आनि ३५ बोले हीरा दीजिये नाहित करिये युद्ध। क्षण बिलम्ब करिये इतै अंगद कह चित शुद्ध ३६ जाइ तड़ाग समीप पुनि बोले या बिधि बैन। हीरा लीजै आपनो राखि सकत अब मैन ३७ यह कहि फेंको जल विषे भक्त बचन सुनि नाथ। कोस सप्तशत आइके लीन्हों हीरा हाथ ३८ राजा सुनि वृत्तान्त यह उलचायो जलकाहँ। हीरा तहँ पायो नहीं भो लज्जित मनमाहँ ३९ अंगद घर आवत भये हरि आज्ञा पूजार। दीन्ह रसीद पठाइकै हीरा की तिहि बार ४० अंगद सुनि हर्षित भये गये पुरी जगनाथ। हीरा हरि भुज देखिकै तिनहिं नवायो माथ ४१ जगन्नाथ के भुजा मधि अबहूं शोभित सोइ। ऐसो हीरा सुनिपरत नाहीं दूसरकोई ४२ अंगद कीन्हों बास तहँ सुनि पायो नृप एह। दूत पठायो लेन हित तिनके सहित सनेह ४३ अंगद तहँ आये नहीं सुनि राजा दुख पाइ। दीन्ह अन्न जल छोड़िकै राज काज बिसराइ ४४ बिप्रन सुख अंगद सुनो राजा दुखी महान। तबतापुर आये सुनत राजा आनँद मान ४५ मिले अगारी आइ कै लाये भवन सनेह। चरणन शिर धारत भये मिलत भये भरि देह ४६ चौ०। अंगद देखन हिये लगायो। भगवत भक्ति तहाँ प्रगटायो॥ अंगीकार करायो एहा। सेवा साधु करौ युत नेहा ४७ भगवत भक्ति सहरि उर धारौ। नर शरीर तब सुफल बिचारौ॥ सुनि राजा धन सम्पति लीन्हा। अंगद पर नौछावरि कीन्हा ४८ राजा भये शरण हरि केरी। भये कृतार्थ दारि दुख ढेरी॥ या विधि अंगद कथा सुहाई। जियालाल बरणी मुददाई ४९॥

छन्द्रामगीतिका॥ कथा पुरुषोत्तम पुरी के नृपति की शुभ एह। भये भगवत भक्त हरिप्रसाद में अति नेह॥ थोरही अपराध सो जिन काटियो निज हाथ। कहतहौं विस्तार संयुत तौ नहीं शुभ गाथ ५० रहे खेलत चौसरै भूपाल सो इक बार। जगन्नाथ प्रसाद तात्क्षणलाइयो पूजार॥रहो दक्षिण हाथ पासा वाम आगे कीन्ह। तिरस्कार बिलोकि हरि परसाद नाहिं दीन ५१ चलो क्रोधित घूमि पीछे धाइयो भूपाल। क्षमा करि अपराध मोहिं प्रसाद देहु दयाल॥ दीन्ह तबहिं पुजारि लै परसाद आये गेह। कीन्ह हम अपमान भूप बिचार कीन्हीं एह ५२ भुजा मेरो अधिक पातकि छिन्न कीजिय ताहि। काटिहै को हाथ मेरो कहौं काटै काहि॥ छाँड़ि भूपति अशन दीन्हों शोक अति मन जासु। देखि अमित उदास भूपति कहो मंत्री तासु ५३ कौन दुख है रावरे मन कहो मोसों तौन। सुनत भूप प्रकाश कीन्हों त्रहत मानस जौन॥ एक आवत भूत निशि में करत शोर महान। हाथ डारि गवाक्ष में यह शोच है नहिं आन ५४ आप बैठिय राति में वह आव जबहीं भूत। हाथडार गवाक्षमारियखड्गतत्र अकूत॥ कहो मंत्री मारिहौं यह भाषि बैठो तत्र। हाथडारो भूपताथलभाषिराखो यत्र ५५ मरियो तब खड्गमंत्रीकटोभूपति हाथ। कीन्ह तडुपरिशोकमानस जानिकरनरनाथ॥ कीजिये न बिचार अब कछु मोरिइच्छा एह। होइ भगवत विमुख जानिय भूतमानसतेह ५६ जगन्नाथ विलोकियाविधि भक्त प्रेम अपार। तेजमहाप्रसाद संयुत तासमै पूजार॥ कह पुजारिन सो बहुरि भगवान आनँद पाइ। नृपहि दे परसाद ताकर भग्नलावहुधाइ ५७ चले नृप उतकरन दर्शन जगन्नाथ निकेत। इतहि धावत जात सेवक लैप्रसाद सहेत॥ मिले मारग बीच दोऊ देतभे परसाद। पाइ आनँद भूपमानस लेनयुत अहलाद ५८ चहो दोऊ करउठावन प्रगट दूजो हाथ। प्रेम युत परसादलीन्हो हरिहि नायो माथ॥ जाइ हरिके कीन्ह दर्शन कहैसो

सुख कौन । कटो जो नरनाथकर मँगवाइकै हरितौन ५९ कहो देउलगाइ मेरी बाटिका सुखसार । होइ मरुवापुष्पको तरुजासु गंध अपार ॥ दीन्ह तुरित लगाइ सोकर बाटिका में जाइ । चढ़त प्रति दिन माथ श्रीहरि पुष्पआजहुँआइ ६० दो० । माहातम परसाद इमि निन्दतपापी जौन ॥ कोटिन नरक मँझाइकै नीचयोनिगत तौन ६१ ॥

सो० । कहौं सुरेश्वरनन्द गाथाअघसुख दायिनी ॥ चेला रामानन्द । भगवतभक्त महानभे ६२ दो० । महिमा महाप्रसाद की प्रगट कियो संसार । जिहि प्रभाव तारे अमित दुष्टजनन भवपार ६३ एकसमय मारग चले जातरहे हे सोइ । मद्यमांस धरिपात्र में आगे लायोकोइ ६४ कहो महापरसादयह सुनत लियो तिन खाइ । चेला तिन आये बहुरि उनहूँलीन्होंपाइ ६५ चेलन सों पूँछत भये काखायो तुम एह । कहो आपुजो खाइयो सोई धारिसनेह ६६ कह स्वामी यह मांस है हमखायो परसाद । कियो बमन यह भाषिकै तिनहिं करावन याद ६७ तामें तुलसीदल गिरे गंगरेणुका और । देखिशिष्य लाज्जित भये जानि भक्त शिरमौर ६८ समरथ को विषअमृत है अमी गरल असमर्थ । हर विप आभूषण भयो अमृत राहु अनर्थ ६६ ॥

दो० । वासी श्वेत द्वीपके भगवत भक्त नवीन । जहँ विहार अस्थान है भगवत का सुख भीन ७० चौ० । एकसमय नारद तहँ आये । ज्ञान सिखावन को मनलाये ॥ कहभगवत येभक्त सदाई । ज्ञानान्यत्रसिखावहुजाई ७१ सुनि नारद मनभये उदासा । गेवैकुण्ठधाम हरिपासा ॥ तिनसों कह वृत्तान्त सुनाई । कहो विष्णुमन आनँदपाई ७२ वासीसत्य तहाके ऐसे । चलो लखावैं तुमकहँ जैसे ॥ आइ लखोतहँ पक्षी एका । जल समीप बैठोहरिटेका ७३ नारद सों भगवत कहि दीन्हा । वर्षहजार गतन जल पीन्हा ॥ हरिप्रसाद कर वारिन पायो । तासों

यह बहु दिवस गँवायो ७४ यह कहिहरि प्रसाद जल डारा। पक्षी लखत चोंच निजधारा॥ आगे चले चरित यह देखी। भगवत मन्दिर लखो विशेखी ७५ ताक्षण होन आरती लागी। सुनत लोगधाये अनुरागी॥दर्शन हेतभक्तइकधावा। बन्दकिवारे विष्णु सुनावा ७६ सुनतहि तुरततजे तिहि प्राना। पुहुमी गिरो निराशानिदाना॥ तिहिअवसरनारीतिहिआई। देखि विष्णु बोले सुखपाई ७७ याकी क्रियाकरै किनजाई। सुनतदारबोली ताठाई॥ कोतूहै हरिविमुख महाई। हरिदर्शन तजिक्रिया बताई ७८ का विधि दरश करौ हरिभाखे। बन्द किनार विष्णु करि राखे॥ सुनि महिलाहू तनतजि दयऊ। तासु पुत्र तापीछे गयऊ ७९ बन्दकिवारकहे हरिताहीं। सोऊ गिरो मृतक भूमाहीं॥ हरि नारद देखत सुखपागी। आरति होन दूसरी लागी ८० घंटा शंख बजे तिहि काला। धाये प्रेमी सुनत बिहाला॥ सो सुनि उठ मरे जन सोई। पहुँचे जहँ आरति हरिहोई ८१ नारदलखि अचरज मनआना। धन्यभक्त निज मानस जाना॥ धनि यह श्वेत द्वीप कहावा। जाजन प्रेम थाह नहिं पावा ८२ हरि नारद वैकुण्ठ सिधाये। भगवत भक्त भवननिज आये॥ श्वेत द्वीप कथा यह नीकी। भवभय हरणि विषयरसफीकी ८३॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायक जियालालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येद्वादशमहाप्रसादमहिमानिष्ठायांवेदभक्त कथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौचतुर्दशस्तरङ्गः १४॥

दो०। कहत त्रयोदश अब सुभग निष्ठाभगवतधाम। जामें वसुभक्तन कथा वरणी सुभग ललाम १ अर्द्धचन्द्र रेखासुभग हरि हल्लक पदनौमि। पुनिवामन अवतारहरि विनयसुनावों सौमि २ देवनकी रक्षाहितै लेप्रयाग अवतार। बलिहिछलो धरिदेह लघु पुनि कीन्हो विस्तार ३ चौ०। भगवत धाम अर्थ अतिभारी। ताको कौन सकै विस्तारी। भगवत देह धाम है सोई॥ तामें निष्ठाधारत कोई ४ सार्ष्टि मुक्ति को तेनर जावें। जगको आवा-

गमन नशावैं॥ धाम बहुरि हरिलोक बखाना। तामें निष्ठा कोऊ आना ५ सो सामीप्य मुक्ति को पावैं। बहुरि न यह जगजाल मँझावैं॥ भगवत चेत्र धामहैं सोई। जगन्नाथ पुरुषोत्तमजोई ६ बदरीबन नारायण जहँवाँ। नरसमेत शोभितहैं तहँवाँ॥ लक्ष्मी जहाँ प्रसाद बनावैं। करिपूजा नारद गुणगावैं ७ उद्धव अपर धनेश बिराजैं। ध्यानधारि मानस तपसाजैं॥ सन्मुख गरुड़ जोरिकर ठाढ़े। हरिसेवा हित आनँद बाढ़े ८ जय अरु विजयपार्षदराजैं। दर्शन करत अखिलअघ भाजैं॥ परशुराम मुचुकुन्द समेता। भगवत सुमिरण करत सचेता ९ दो०। कोटिन मुनि राजत जहां जियालाल सुखदाइ। महिमा अगम अपारहै पारलहै को गाइ १० चौ०। बहत द्वारजिन सुरसरिधारा। देखत होत पापजरिछारा॥ तप्तकुण्ड राजत तहँसोई। मज्जन करि निर्मल वपुहोई ११ कोटिन तीरथ तहां सुहाये। मैं बिस्तार हेतनहिंगाये॥ कोटिनपर्बत तहाँ बिराजत। गंगधारकोटिन छबि साजत १२ औरौकोटिन चेत्रसुहाये। धामनिष्ठपुरुषन हितगाये॥ धामतेजको नामकहायो। कोऊतानिष्ठा में गायो १३ ज्योतिरूप हरि तेज कहावै। अगम अपार वेद जिहि गावै॥ सूरज चन्द्रानल जहँ नाहीं। ध्यानमांझ योगीजन जाहीं १४ पटचक्रन भेदैं तेशूरा। उतरैंघाटत्रिवेणीपूरा॥ त्रिकुटी धामकरैं पुनिवासा। तबहिं ज्योति कर लखैं प्रकासा १५ सो सायुज्य मुक्तिजन पावैं। तिनके भाग कौन कविगावैं॥ ज्ञानध्यान निष्ठाहै आगे। यहां न बरणों मैं तिहिलागे १६ भक्तधाम निष्ठाजे गाये। बरणौं तिनके नाम सुहाये॥ कागभुशुण्डि प्रथमयहगाथा। बरणौं नाइ माथरघुनाथा १७ दो०। महिमा कागभुशुण्डिकी कोकविकरैबखान। लिखी पुराणन में जिती लिखी न जात प्रमान १८ कथा कछुक वर्णन करौं या निष्ठामेंसोइ। जाको सुनि दुखनाशई पुनिविवेक उरहोइ १९ चौ०। प्रथमहि भये अवधपुर माहीं।

शूद्रवर्ण धारो तनकाहीं। एकसमय तहँ परोदुकाला॥ गये भाजिउज्जैन विहाला २० कछुदिन तहां बास पुनि कीन्हा। पुनि उपदेश मंत्रकरलीन्हा॥ गुरुदीन्हो जो मंत्र बताई। जपत शिवालय में नित जाई २१ एक समय तिनके गुरु आये। साभिमान नहिं शीशनवाये॥ शंकर देखि क्रोधमनकयऊ। ताको शाप देत इमि भयऊ २२ दश सहस्र संवत लगि देहा। धारै सर्प्पयोनिशठएहा॥ गुरुहि प्रणाम कीन्ह शठनाहीं। अजगर समधारोतनकाहीं २३ यद्यपि गुरुके स्वल्प न क्रोधा। दीमैंशाप तदपि हित बोधा॥ सुनतगुरू हाहाकरि धाये। अस्तुतिकरि बहु विनय सुनाये २४ नमोनमश्शंकर सुखराशी। ईशेशान शंभु अविनाशी॥ जै सर्वज्ञ कृपा सुख सिंधो। दीनदयाकर आरत बंधो २५ जैगिरिजापति जैकामारी। जैजनपातक तिमिरतमारी॥ भालचन्द्र शोभित शिर गङ्गा। व्याल विभूति विराजत अङ्गा २६ दो०। क्षमाकरहु अपराध प्रभु ममविनती सुनिकान॥ शापानुग्रह कीजिये चाह न मानसआन २७ वाड़वाग्रकेवचनसुनि बोले शंकरबैन॥ अवशिधारिहै उरगतन यामें मिथ्या हैन २८ जन्ममरण दुखहोइ नहिं सुनिये विप्र प्रवीन॥ जिमिजीरण पट परिहरै धारै कोउ नवीन २९ यह कहिबोले शूद्रसों सुनहुवचनपरमान॥ विप्रनिरादर नहिंकरिय तापर गुरु सुखदान ३० ब्रह्मकमण्डलु चक्रहरि ममत्रिशूल यमदण्ड॥ वरुणपाश हरि वज्रहू करै न जातन खण्ड ३१ विप्रक्रोधवरहीप्रबल भस्महोइतनतासु॥ अवनानिरादरकीजियो विष्णुबास है जासु ३१ जन्म अवधपुरमें भयो ताकारणको पाइ॥ व्यासभक्ति शुभ होइ है तवमानस रघुराइ ३२ मम कृपयासुनिये बहुरि अवधपुरी परभाव॥ अक्षयगतिको पाइहौ आवागमन नशाव ३४ कालपाइ पुनि शूद्रवर अहितन कीन्हप्रवेश॥ तनधारत्यागेबहुरि शंभुवचनउपदेश ३५ पायो सुन्दर विप्रतनु शापअन्तकोपाइ॥ मातुपिता तिनकेमरे लखि

बनगये सिधाइ ३६ देखिऋषिनको बनबिषे पूछतातिनसोंजाइ ॥ सुन्दर मोसों बरणिये ॥ श्रीचरित्र रघुराइ ३७ मिले बहुरि लोमशतहां तिनसों पूछनलीन ॥ रामकथा बरणियकछुक हे ऋषि परमप्रबीन ३८ सुनि लोमश बरणी कछुक सरगुण लीलाहेत । पुनि निर्गुण बर्णन लगे सुन्दर सुखद सचेत ३९ सुनिये ऋषिजन्माग्रकह राम चरित जलपाइ ॥ सुखी सदा मनमीन सो कैसे बिलगाइ ४० सुनि लोमश बर्णन कियो सगुणरूकछु और ॥ पुनि निर्गुण बर्णन लगे ज्ञानि शिरमौर ४१ सुनत बिप्र खण्डन कियो निर्गुण सगुण थाप ॥ लोमश खण्डत सगुणहि निर्गुण थापत आप ४२ बाद परस्पर होतही प्रगटो तहां बिवाद । क्रोधहिये लोमश भयो या बिधि बचन जगाद ४३ काग सरिस तव बुद्धिहै कांवकांव लगिजात ॥ सत्य बचन मानेनहीं राखे अपनी बात ४४ तासों धारिय कागतन कहत न लागी बार ॥ सपदि लहो तिन कागतन भय न हिये कछुधार ४५ करिप्रणाम लोमश चरण तत्क्षण चलेउड़ाइ ॥ देखि दयाकीन्ही हिये मुनिबर राघवराइ ४६ लखि लोमश लज्जित भये धीरज तिन उरदेखि ॥ लीन्ह समीप बुलाइ कै किय आश्वास बिशेषि ४७ बालरूप भगवत वपुष दीन्हो तिनहिं लखाइ ॥ राममंत्र उपदेश पुनि दीन्हो श्रवण सुनाय ४८ राम चरित्र सुनाय पुनि दीन्हो आशीर्वाद ॥ राम भक्ति दृढ़होय उर दायक मन अहलाद ४९ होउ सदा रघुबरहि प्रिय इच्छा पूरण होइ ॥ मृत्यु सदाआधीन तवजबचाहो तबसोइ ५० बसें ज्ञान बैराग्य उर बहुरिकरो जहँ बास ॥ योजन एक प्रयंतलो माया आव न पास ५१ श्री रघुनन्दन के चरित गुप्तकरैं उर बास ॥ सुनत कागहर्षित भयो जानि आपकोदास ५२ बियत बाग भै तावसर सत्य बचन ऋषि एह ॥ यह अनन्य ममभक्त है कीन्हो अधिक सनेह ५३ कागभुशुण्ड प्रसन्न उर ऋषिको कीन्ह प्रणाम ॥ नीलाचल पर्वत बहुरि जाइ कीन्ह निज

ठाम ५४ बीते कल्प अनन्त तहँ अबहूं करत निवास ॥ जिन सतसंगति पाइकै अधम भये हरिदास ५५ हंस रूप शंकर गये सुनी कथातहँ जाइ ॥ गरुड़मोह प्रगटो महा नाशोकथा सुनाइ ५६ यद्यपि ऐसेभक्तवर कागभुशुण्ड सुजान ॥ माया व्यापी तदपिउर किय कछु रामकृपान ५७ अहंकार आवत जबहिं भक्तहिये हरि जान ॥ माया दरशावत तबहिं हरण तासु उरमान ५८ ऐसोजो हरिनाकरैं उभयलोक सोजाइ ॥ माताज्यों शिशुको लखत तिमि भक्तन रघुराइ ५९ ॥

दो० । कथाकहों भगवंत की भगवत भक्त सुजान ॥ रहे आगरेके बिषे सूबा के दीवान ६० प्रीति प्रिया प्रीतम बिषे जिनकी रही अपार ॥ भजन भाव दिन प्रति करत प्रेम रूप उरसार ६१ बिधि निषेध न्यारे सदा धारेवैष्णवभेष । युगुल माधुरी रूप रस छके सदाहि विशेष ६२ चौ० । वृन्दावनवासी जो आवैं । भगवत समताको चितलावैं॥भोजन मधुरताहिकरवावैं। देहिं भेंट उर आनँदपावैं ६३ एकसमय तिनके गुरुआये । जेहरि दासनामकरिगाये॥ जिनसोंदूधभातहरिमांग॥जिनभगवतचरण नअनुरागा ६४ गुरुआगरे आये जानी । बोलत भये प्रियासों बानी ॥ ऐहैंआजगुरुममजोई । तिनको भेंटदेनकाहोई ६५ सुनि दाराकह हर्षिबहोरी । सुनियप्राणपतिबिनतीमोरी ॥ बस्त्रएकतन पररखिलीजै । सारोभुवनगुरुहितदीजै ६६ सुनिभगवंतमोदमन आना । धन्यभाग आपनकरिजाना ॥ महिलाकीबहुकरीबड़ाई । धन्यकामिनी तू जगआई ६७ दम्पतिमंत्र जानिमनमाहीं । गुरु गयेतिनके घरताहीं ॥ भक्तिदेखि आनँद मनमाना । बस्तु लेन यह अनुचित जाना ६८ यह बिचारि बृन्दावन आये । सुनि भगवन्त महा दुख पाये ॥ सूबासों पुनि मांगि बिदाई । वृन्दावन पहुंचे सो जाई ६९ यात्रा आदिकरी सुखपाई ॥ भगवत चरित सुनै मनलाई । बिरचे भगवत चरित सुहाये ॥ नानाभांति पुराणन गाये ७० एक समय ब्रजबासी कोई । लीन्ह चुराइ बस्तु

सब जोई ॥ लखि भगवंत हर्ष अति पाये । याविधिसों पुनि वचन सुनाये ७१ जिन चुराइ गोपिन दधिखायो । माल हमारो आजु चुरायो ॥ चोरीको मग छांड़तनाहीं । हम नीके जानत मनमाहीं ७२ ऐसो प्रेम भावसरसाना । जियालाल किमि जाइ बखाना ॥ याविधि प्रेम धारि सुखपाये । भगवतको मानस अपनाये ७३ ॥

चौ० । अब हरिदास कथा सुखदाई ॥ बरणों रघुनन्दन शिर नाई । बर्ण तृतीय जन्म जिनकेरा । भगवत भक्ति हिये सब वेरा ७४ काशी निकट बास जिनहोई । प्रण पूरण कीन्हो निज सोई ॥ यह प्रणकरत भये मनमाहीं । वृंदावन त्यागौं तनकाहीं ७५ ज्वरसंयोग विवशतिनआवा । भिषगौषधमें मन नहिंलावा ॥ बृन्दावनहि चले चढ़ियाना । मारग प्राण न कीन्ह पयाना ७६ सोपरन्तु पूरण प्रण कारण । दोसर देह कीन्ह तनुधारण ॥ अति प्रसन्न वृन्दावन आये । गुरुहिमिले पग शीश नवाये ७७ सुन्दर दास गुरू जिनकेरे । प्रेमभाव सों नयनन हेरे ॥ पुनि सत्सङ्ग कीन्ह तहँ नाना । भगवत चरित सुने किय गाना ७८ तदुपरि चीरघाट चलिआये । करिमज्जन अतिशय सुखपाये ॥ दीन्ही देह त्यागि तिहि तीरा । साथीआये बहुरि अधीरा ७९ देह दग्ध करि रोदत आये । तिन गुरु सों वृत्तान्त सुनाये ॥ सुन्दर दास कही सुनि बानी । यह चरित्र निज मानस आनी ८० मम समीप आये हरिदासा । अबकीन्हो श्रीहरिपुर बासा । प्रण अपनो पूरण उन कीन्हो । यमुना कूल देह तजि दीन्हो ८१ सुनि सबकेमन निश्चयआई । धन्यभक्त इमिकरत बड़ाई ॥ सदा भक्त प्रणराखनरामा । विदित पुराणन कीर्त्तिललामा ८२ जो यह कथा सुनै अरु गावै । भगवत भक्ति तासु उर आवै ॥ धन्य सङ्ग संतनकोगायो । जासुप्रताप विदित श्रुतिगायो ८३ ॥

दो० । मधुगुसाईंकी अबकथा बरणौं सुन्दरएह । रसिक प्रिया प्रीतमविषे धारो पूरणनेह ८४ बङ्गाले सों चलि तबै वृन्दावनमें आव । दर्शनकी आशाकिये ढूँढ़त ब्रजसबगांव ८५ खान

पानत्यागे सबै निद्रादिक तजिदीन ॥ भक्तिभाव श्रीपति निरखि कृपावलोकन कीन ८६ बंशीवट यमुनानिकट दर्शन दीन्ह मुरारि ॥ सुन्दरश्याम स्वरूपशिर मुकुटायुध भुजचारि ८७ मणिगण आभूषणसजे लकुट मुरलिकर सोह ॥ सखा सङ्ग शोभित बपुष निरखत जनमन मोह ८८ देखिरूप सुंदर सुखद भये ब्रह्ममयतौन ॥ चरणगहे पुनि प्रीतियुत भाग कहै कविकौन ८९ जिन पदरज ब्रह्मादिकन दुर्लभ वर्णतवेद ॥ कृपाकीन्ह जिन भक्तपर दै दर्शन हरखेद ९० ॥

छन्द रामगीतिका ॥ कथा यह भूगर्भजो हरिमधुर लीला धार । छांड़िसब घरबार कीन्हों भक्तिअंगीकार ॥ आइ वृन्दा विपिन कीन्हो बास निश्चलताहँ । कुञ्ज गोबिन्देवधारा भाव मानसजाहँ ९१ ॥

दो० । काशीश्वरजी की कथा बरणौं रहे गुसाइँ । प्रथम रहे अवधूतये पुरुषोत्तम पुरजाइ ९२ श्रीकृष्ण चैतन्यप्रभु के चेलेभे सोइ । वृन्दावन आये बहुरि गुरुआज्ञा लैजोइ ९३ मग्नप्रेम आनन्दमें भये कृतारथरूप ॥ सेवा गोविन्देवकर धरिहिय भावअनूप ९४ ॥

छन्दबरवा ॥ कथा प्रबोधानन्द कि यहसुखदाइ । सरस्वती संन्यासी शिष्य कहाइ ॥ श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुकेर । परमरसिक प्रिय प्रीतम बिहारहेर ९५ रचना काव्य बनाई ललित अपार । कोटिनपूरुष पढ़िसुनि आनँदधार ॥ युगुलकिशोर बिलोकत आनँदपाइ । जिमिचकोर विधु सन्मुखरहै लुभाइ ९६ ॥

छन्द ॥ लालमतीकी गाथा सुन्दरएह । चाहिय लाभजुपाये मानुषदेह ॥ लालमतीसो पायोलाये नेह । चरणकमल अन्यत्रन चाहत गेह ९७ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायक जियालालजन्माग्रेण विरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्ये त्रयोदशभगवतधामनिष्ठायां वसुभक्त कथावर्णोनोनामभक्ताम्बुनिधौपंचदशस्तरङ्गः १५ ॥

छन्दबरवा ॥ कहौं चतुर्दश निष्ठा भगवत नाम । कथा पांच भक्तन की अति सुखधाम ॥ कोणषट्कपदरेखा श्रीपति नौमि । परशुराम अवतारहि बन्दौं सौमि १ माधवशुक्ल तृतीया लै अवतार । परशुधार खरकर धरिहरभूभार ॥ प्रकृति २१ बारभूकीन्ही क्षत्रि बिहीन । सादर विप्रन छोणी लैलै दीन २ यद्यपि नामोच्चारण कीर्त्तन माहँ ॥ पर सुमिरणसम्बन्धम जानिकयाहँ । निष्ठा भिन्न सुथापित कीन्ही एइ ॥ वेद पुराण बड़ाई करत सनेह ३ महिमा नाम कि भारी पारन जासु । नित्यनये सहसानन गावत आसु ॥ शंभुसदा उर धारे त्यागत नाहिं । सनकादिक जिहि सुमिरत नितमन माहिं ४ नारद शारद गावत गणप दिनेश । बरुणकाल यमधारे हिये हमेश ॥ मुख अनन्त भक्तन के राजत सोइ । जियालाल सुख जानत कोटिन कोइ ५ यमन हराम पुकारो गोहरि धाम । बालमीकि जगजाना उलटे नाम ॥ जगत उधारन गायो नामप्रताप । है दोसरि विधि नाहीं दारन पाप ६ जाने बिन जाने सुमिरै हरि नाम । लहि पारस अमृत गुणलह हरि धाम ॥ नामोच्चारण कीन्हे भाव कुभाव । भगवत के पदजावै बेदबताव ७ जिमि औषध गुणकारी जानअजान । नाम प्रतापहुताविधि लीजै मान ॥ प्रलयानल जिमि नाशत सब संसार । नामहुताविधि नाशत पाप अपार ८ दो० । सोज्ञानीसोई तपी जपी कहावत तौन । श्री रघुबर के नाममें निश्चय लावत जौन ९ राम नाम सुमिरण किये पापास्पर्श न होत । होत कामना सिद्धहैं दिनदिन अधिक उदोत १० राम नाम आधारिबो पूर्ण सिद्धि कीमूल । श्वास बृथा खोवै नहीं भजहरि दारक शूल ११ सहस एक विंशति सहित षटशत ऊपरजान । नाम नित्य एतेजपै एती श्वास प्रमान १२ साढ़े तीनि शरीर पर रोमा कोटि प्रमान । एतेहू नामन जपै देहधारि सुखदान १३ सो० । नाम जपनकेहेत येदोऊ विधि जो कहीं । जेननामचित देत तिनमन

करि अंकुशहिते १४ नामामिय फल एह मुखसों त्यागन योग नहिं। दुर्लभ मानुषदेह पायो गायो वेदधनि १५॥

चौ०॥ श्रीरघुनन्दनपद शिरनाई। कथा अजामिल कहौं बुझाई॥ पूर्बजन्म कर ब्राह्मण एहा। कानन तपकीन्हो युतनेहा १६ किय चाण्डालि एककोध्याना। जादिन प्राणन कीन्हपयाना॥ याहू जन्म विप्रभे आई। पापकर्मरत रहतसदाई १७ एक समय कानन चलिगयऊ। शूद्रीएक बिलोकत भयऊ॥ ताहि बिलोकि चित्त ललचाना। करिआदर निज मन्दिर आना १८ दीन्ही त्यागि सुकुल की नारी। माता पिता तजे सुखकारी॥ भयो मोह बश दार भुलाना। दीन्हों त्यागि कर्म निज नाना १९ खगमृग पलल हेतु बहुमारे। मद्य पान चोरी उरधारे॥ खेलन चूप जीविका एहा। लावत द्रव्य कुनारिनेहा २० भगवत भक्त एक दिन तहँवाँ। गे घर अजामील को जहँवाँ॥ बिन जाने आये तिन गेहा। अजामील कीन्हो अति नेहा २१ प्रेम सहित भोजन करवाये। पुनि आपन बृत्तान्त सुनाये॥ सुनतदया कीन्ही तिनभारी। अजामीलसों कहो बिचारी २२ अबकी होवै पुत्र तुमारो। तासु नाम नारायण धारो॥ कहि हरिभक्त पंथ निज लीन्हा। अजामील सोई बिधि कीन्हा २३ नारायण सो पुत्र पियारा। अजामील को भयो अपारा॥ खान पान ताबिन नहिं करहीं। ताहि बिलोकि सदा मुदभरहीं २४ अन्त समय तिनकेर बिचारी। शमनदूत गल बंधन डारी॥ व्याकुल भये अजामिल जबहीं। पुत्राह्वान करत भे तबहीं २५ हो नारायण आवहु धाई। मैं अति दुखित बिलोकहु आई॥ मुख सों नारायण कह जबहीं। आइगये पार्षद हरि तबहीं २६ गल सों डारो पास निकारी। खेदि दीन यमदूतन मारी॥ या बिधि चरित अजामिलदेखी। मनमें आनँदलहो बिशेखी२७ अति प्रसन्न निज नयनउघारे। कहांगये ममराखनहारे॥ प्राण राखि लीन्हो जिन मेरा। सो न लखातमोहिं या बेरा२८ मैं आति

अधमकुपथमनलाई। परिहौं घोरनर्कमेंजाई॥धन्यधन्य हरिनामसु पावन। धिगधिग मैं अति अधम अपावन २९ धोखेनाम लीन जिनकेरा। प्राण दान पायो याबेरा॥ तिनकी शरण जाइ अब रहिहौं। संचित पाप कुणपके दहिहौं ३० गंग द्वार यह कहि चलिआये। करि समाधि हरिध्यान लगाये॥ पंचभूत मयतनुतजि दीन्हा। हरिसमीप पार्षदतनु लीन्हा ३१ भगवतनाम जानि बिनगावा। भगवत धाम जाइ तिन पावा॥ भगवत नाम प्रेम युत गावै। सो कैसे हरिलोकन पावै ३२ भगवत दूतजबहिं तहँआये। यमदूतनकहँ मारि भगाये॥ यमके दूतगये यमपासा। अजामीलकर चरित प्रकासा ३३ महाराज सुनिये मन लाई। अतिअचरज किमि कहैं बुझाई॥ अजामील अति पातकिभारी। नारायण कहि पुत्र पुकारी ३४ ताके सुनत पुरुष शुचिआये। बय किशोर सब भांति सुहाये॥ हमहिं देखि भे क्रोधित भारी। दीन्हो खेदि बहुत बिधि मारी ३५ सुनिय नाथ अब लगिहम जाना। आपहिंईश अहैंनहिंआना॥ आजुदोसरोपरो लखाई॥ काहूलेन व्यर्थ हमजाई ३६ दूतनकेर बचन सुनिकाना। द्युमणिसुवन या भांति बखाना॥ जोस्वामी हमार सुखछाये। तिनके दूत बचावन आये ३७ जानेबिन जानेहरिनामा। पावत लिये अचल बिश्रामा॥ अनखालसहु नाम जो लेई। ताहि कि दुख मम किंकरदेई ३८ तुम अपराध कीन्ह अतिभारी। क्षमाकरहिं श्रीपतिबनवारी॥ अबतुम याबिधि काम न करियो। मेरी सीख सदा उरधरियो ३९ याबिधि सुनि किंकर यमबानी। महिमा नाम धन्यकरि मानी॥ यमपायक ताहित भयकीन्हे। भागत अबहुँ नाम के लीन्हे ४०॥

सुन्दर कथा एक नृपकेरी। बरणौं दारक पातकदेरी॥ अन्तर भगवत प्रेम अपारा। विषय बुद्धि ऊपर बिस्तारा ४१ भगवत भक्तदार तिनकेरी। सोऊ अन्तर प्रेम न हेरी॥ ईश मनावत बारहिं बारा। कबहूँ नामकरहिं उच्चारा ४२ सोवत में भूपति

इकबारा। भगवन नाम कीन्ह उच्चारा॥ रानी सुनिमन आनँद कीन्हा। दानामित विप्रनकहँ दीन्हा ४३ विविध भांति बजवाये बाजा। हैयह आजुकाह कहराजा॥ रानी दिय उत्तर सुखपाई। तब सुखकदो नामरघुराई ४४ कहनृप सुखद नाम कढ़िगयऊ। किहिकारण शरीर रहिगयऊ॥ त्यागीदेह तुरित कहिएहा। गयेपहुँचि श्रीपतिकेगेहा ४५ रानी या विधि चरित निहारी। मनमलीन कीन्हा अति भारी॥ मैं अति अधम भक्तनहिं जाना। कहि पति पीछे कीन पयाना ४६ ब्राह्मण एक भक्त रघुराई। मैके सोतिय चलो लवाई॥ तिनकहँ मिलेमार्ग ठगआई। पूछो कहांजातहौ भाई ४७ सीधो मगजानत हम एहा। हमहूँ जाब आपने गेहा॥ हम तुम साथ चलैं सुखपाई। सुनि ब्राह्मण मन चिंता आई ४८ ठगन कहो यामें छलनाहीं। रामचन्द्र साखी इहिमाहीं॥ सुनत विप्र दारा कह बानी। चलिय सङ्ग अब होइन हानी ४९ सब मिलि चले स-घन वनमाहीं। मारो विप्रहि ठगनतहांहीं॥ लीन्हो धन योपि-तासमेता। आनन्दित निजचले निकेता ५० नितम्बिनी पीछे फिरि देखत। ठगन कहो अबकाको पेखत॥ खसम तिहारो तौ मरिगयऊ। सुनि महिलातब उत्तर दयऊ ५१ साखी की नर-है तुमजाको। मैं पीछे फिरि देखत वाको॥ कहो ठगन झूंठी ये बातै। रामचन्द्र अबकहां लखातै ५२ इतनीकहतभई नहिंबारा। प्रगटे राम कृपाल उदारा॥ धनुष बाण दोनों करधारे। अश्व सवार आइ ललकारे ५३ तुरित ठगन कोमस्तक काटा। विप्र जियाइचले लै बाटा॥ जब वाउन गृहकीन्ह पयाना। आपुभये तब अंतर्द्धाना ५४॥

चौ०। अब कबीरकी कथासुहाई। वरणौं रामचरणशिरनाई॥ काशी में जिनवास अनूपा। भगवत भक्त महासुख रूपा ५५ भक्ति प्रकाश जासुजगजाना। जासम और कर्म नहिं माना॥ योग यज्ञ व्रत दानहु जेते। भजन विहीन वृथा सबतेते ५६ शून्य

समान साधना जाना। भगवत नाम अंक सममाना॥ वृथा शून्यहै अंक बिहीना। सांकदहाइ बृथांकिकि बीना ५७ भगवत भक्ति सदाउरमाहीं। बर्ण धर्म को मानत नाहीं॥ जाह्मण जन्म भयो तिनकेरा। वर्णाश्रम त्यागो ताबेरा ५८ भगवत भजन माहँ मनदीन्हा। नेकलाज कुलकी नहिंकीन्हा॥ तिन हित भई बियत सो बानी। माला तिलक धरौ सुखदानी ५६ शिष्य होउ रामानँदकेरे। सुनि कबीर बिनती करिहेरे॥ यमन जातिमें जन्म हमारा। मारग रामानन्दाचारा ६० मोकोशिष्य करहिंगे कैसे। कह आकाश गिरा बिधिजैसे॥ सोई शीषाहिये निज धारी। पुनि अरुणोदय समयबिचारी ६१ रामानँद मज्जनजहँ जाहीं। पौढ़े तामारग के माहीं॥ परो चरण तिन ऊपर जवहीं। राम राम बोले मुख तबहीं ६२ सुनि कबीर मन गुनि उपदेशा। माला तिलक बनायो भेषा॥ लागेजपन मंत्रपुनि सोई। लखिकबीर माता वहजोई ६३ कुलआचरण भिन्न सो देखी। समुझायो बहुभांतिबिशेखी॥ परकबीर मानीनहिं बाता। राखो रामचन्द्रसोंनाता ६४ प्रगटी बातनगरतिहिवेला। हैं कबीर रामानँदचेला॥ रामानन्द सुनत बुलवायो। मैं ताको कब मंत्र सुनायो ६५ अंतरपट पूँछीयहबाता। सुनिकबीर बोलेहरषाता॥ मंज्जन हित जब आपसिधाये। रामनाम मगमोहिं सुनाये ६६ वेद पुराण सकलयहकहहीं। रामनाम सममंत्रनअहहीं॥ महा मंत्र जिहिजपतमहेशा। काशीमुक्तिहेत उपदेशा ६७ पारबती सो शिवसमुझायो। सहस नाम समनामबतायो॥ महामंत्र रामाक्षरदोई। तंत्र ब्रह्म वपु भाषतसोई ६८ सोई मंत्र मोहिंप्रभु दीन्हा। अब सन्देह कौन विधि कीन्हा॥ गुरू आपु मैं शिष्य तुम्हारा। यामें नहिं कछु औरविचारा ६६ सुनि प्रसन्न रामानँद भयऊ। हिये लगाइ कबीरहिलयऊ॥ भांति भांति उपदेश बताये। बिदाकिये निज मन्दिर आये ७० बीनि किंचिदं शुकलें सोई। याही विधि उद्यम नित होई॥ बेंचन हाटगये इकबारा।

मांगो साधु ताहि दैडारा ७१ भय सों भवन गये नहिं सोई। तिन मनमें चिन्ता अति होई॥ तिनहिं तीनदिन वीते जबहीं। भगवत सहिनसके यह तबहीं ७२ बनजारे कर भेषबनाई। वृष-भनलादि वस्तु बहु लाई॥ घर कबीर के दीन्हों लाई। ढूंढ़ेपर कबीरघरआइ ७३ दो०। देखिवस्तु हरिकी कृपा उरआनँद अधि-कान। प्रेमोदधि बूड़न लगे पायो पोत तहांन ७४ साधुन दीन्हों बांटि सब सुनि काशीके बिप्र। लेबे हेत कबीर ढिग आइ गये सो क्षिप्र ७५ तहां कछू पायो नहीं बोले क्रोध शरीर। बांटो बैरागिन सबै सुनहु जुलाह कबीर ७६ हमहूं को दीजै कछू की काशी तजिजाहिं। भवन राखि बिप्रन गये जब देखो कछु नाहिं ७७ जाइ छपाने शोकयुत कालै दीजै विप्र। भक्तदुःख अवलोकिकै प्रगटे भगवत क्षिप्र ७८ सो०। धरिकबीर को रूप आये तिन मन्दिर सुखद। प्रगटी द्रव्यअनूप दीन्हे बिप्रनअन्नधन ७९ दो०। पूरण काशीमेंभयो यशकबीर कोजोइ। कहकबीर सो जाइपुनि विप्ररूप हरिसोइ ८० द्रव्यलुटा-वत आजुहै घरकबीर निजमाहँ। भाग्यहीन पहुँचै न किमि इहाँ भुलानो काहँ ८१ चौ०। सुनि कबीर मन आनँदपाये। अविलम्बित निजमन्दिर आये॥ भगवतकृपा विलोकी जबहीं। प्रेमानन्द मगनभे तबहीं ८२ यहसिद्धता कबीर कि देखी। होन लागि तहँभीर विशेखी॥ भजन भंग मनजानि कबीरा। निन्दा हेत करीततबीरा ८३ वेश्याएक गलेकरडारे। गंगतोय शीशा करधारे॥ मदिरा भरमसबन उपजाये। गणिका सह घूमतसुख पाये ८४ भक्तन लखि चिन्तामनकीन्ही। विषयी निन्दाकरिबे लीन्ही॥ निन्दा करनलाग जबलोगा। मेरेबहुत ताके संयो-गा ८५ तब कबीर यह रचा उपाई। पहुँचे राजसभामें जाई॥ बैठे मध्यसभाकेमाहीं। पूर्वसमानादरभोनाहीं ८६ उठि भूमध्य कछुक जलडारा। रामनाम वहुबार पुकारा॥ पूँछो नृपति हाल यह काहा। कहकबीर सुनिये नरनाहा ८७ जगन्नाथ श्रीकर

भण्डारा। लागोजरन रहै या बारा॥ गंगाजलसों ताहिबुझायो। सुनि राजामन अचरजलायो ८८ दूत पठाइ हाल मँगवायो। सत्यजानि मनमें शरमायो॥ रानीसहित गहेपद आई। पुनि अपराध क्षमाकरवाई ८९ दो०। क्षमाकियो अपराध पुनि भक्ति शीषदै ताहि। तहाँसो चले कबीर पुनि धरेनाम हियमाहि ९० सो०। रहो सिकन्दर नाम बादशाह तासमयमें। आयो काशी धाम यमन न बिप्रनसों सुनत ९१ बोलि कबीरहि लीन कहो सलामहि कीजिये। सुनि कबीर कहिदीन हमसलाम जानत नहीं ९२ नाहिं हमार कछु काम बादशाह सो जानिये। हमसुमिरत नित राम कामद श्री सीता रमण ९३ चौ०। बादशाह सुनिक्रोध बढ़ावा। बांधि जँजीरन गंग डरावा॥ डूबे नहीं अग्नि डरवावा। जरे नहीं करिवर रौंदावा ९४ भागो करी देखि चिल्लाई। बादशाह आयो शरणाई॥ चरणन परो भयातुर भारी। मैं किंकर यह बचन उचारी ९५ जो चाहौ हम सों लैलीजे। यह अपराध क्षमा अबकीजे॥ राज कोश धनधाम तुम्हारा। मैं किंकर समेत परिवारा ९६ दो०। कह कबीर चाहौं नमें राज कोश धनधाम। चरणकमल सुमिरण करौं सदा हिये श्रीराम ९७ चौ०। कहि कबीर निजमन्दिर आये। काशी के बिप्रन सुनिपाये॥ पुनि अपकार करन मन गुनिकै। साधू वेष बिप्र इक बनिकै ९८ सब साधुन सों जाइ पुकारा। अमुकदिवस कबीर भण्डारा॥ देश देश के साधूनाना। दिन गुनिगे कबीर अस्थाना ९९ दो०। भारी भीर बिलोकि कै जाइछपान कबीर। भक्त शोच देखिन सकल प्रगट भये रघुबीर १०० रूपकबीर बनाइ कै साधुन भोजन दीन। ऐसो भण्डारादयो बिना रामको कीन १०१ नाना बिधि सत्कारकरि गे कबीरके पास। साधू वेष बनाइकै प्रगट कियो यशजास १०२ सुनि कबीर आनँद लहो जानिकृपा रघराइ। सो सुख बरणो जाननहिं गूंगमधुर ज्यों खाइ १०३ए ह

अप्सरा स्वर्ग सों आवपरीक्षाहेत । मोहनि रूप बनाइकै कामिनको सुखदेत १०४ नहिं कबीर मोहे निरखि छकेप्रेम रघुबीर। रूप चतुर्भुज धारि हरि दिये दरशहर पीर १०५ बोले बहुरिकबीर सों देह सहित ममधाम। चलिये मेरेसाथही जहांअचलविश्राम १०६ चौ० । तबहिं कबीर भक्ति दरशावन । मगह वेद जिहि कहत अपावन ॥ तहांजाइ तन युत हरिधामा । जात भये दरशावन कामा १०७ कीजहँ मरि गर्दभ तनुपावै । कर्म्मकाण्ड जो कुरत रहावै ॥ भगवत भक्त पुरुषहै जोई । काशी कोटि सकल भूसोई १०८ यमन आइ सबहिन यह चाहा । देहैं क़बुर कबीर जुलाहा ॥ साधू सबन आइ यहचाहा । साधू ये करिहैं हम दाहा १०९ भयो बिबाद बस्त्र तब टारा । निकसे सुन्दर पुष्प अपारा ॥ दोनों गये देहनहिं पाई । इमि कबीर की कथासुहाई ११० ॥

चौ० ॥ पद्म नाभ की कथा सुहावनि । बर्णन करौं सुजन मनपावनि ॥ राम नाम के रसिक सुहाये । केवल राम नाम चित लाये १११ नीकी भांति परीक्षापावा । कुष्ठीएक तहांचलि आवा ॥ देखो बिकल ताहि अति भारी । बोलत भये दयाउर धारी ११२ रामनाम कहि मज्जि त्रिबारा । उत्तम अंगहोइअघ छारा ॥ सुनि ताही बिधि मज्जन कीन्हा । सुन्दर रूपरास करि दीन्हा ११३ पद्मनाभ लखि आनँद पायो । गुरु कबीर सों जाइ सुनायो ॥ सुनि कबीर बोले यह बानी । यह बड़ि बात कौन अज्ञानी ११४ तीनिबार जो राम पुकारा । ताकी महिमा अगम अपारा ॥ एकबारजो नाम प्रकाशै । कोटि जन्म के पातक नाशै ११५ दो० । यहसुनि दृढ़विश्वासकरि नाम जपत युतनेह । रामतोय मन मीनकरि धरोप्रेम निज देह ११६ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणबिरचिते चतुर्बिंशतिनिष्ठामध्येचतुर्दशभगवतनामनिष्ठायांपंचभक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौषोडशस्तरङ्गः १६॥

सो०। श्रीरघुबर पदनौमि पंचदशम निष्ठाकहत। ज्ञानध्यानजहँ सौमि द्वादश भक्तनकी कथा १ हरिपद कमलानूप मत्स्यरेख बन्दन करौं। सनत्कुमार सुरूप धारो ज्ञानाम्बुधिसुखद २ ब्रह्मलोक अवतार भगवत यह धारत भये। तिनपद निज हियधार यह निष्ठावर्णन करौं ३ ब्रह्म ज्ञान बिशेख जिन याजग प्रगटित कियो। मुकुर कोउजिमिदेख निजअवयव पूरण सबै ४ मुक्ति बिना नहिंज्ञान वेद कहत याबिधि सबै। श्रुतिन मध्यपरमान एक अहौं मैं बहुत पुनि ५ जिमि सूरज आकाश एक अहौं दूजेनहीं। देखिय अमित प्रकाश रूपजल स्थाननबिषे ६ जिमि मारुत है एक व्यापिरहो संसार सब। तैसे ईश अनेक व्यापे घट घट एक नतु ७ जिमि घटमें आकाश प्राप्त भयो लखि परत है। घटनाशे घटनाश बियताव्यय जानिय सदा ८ अजरामर तिमिईश जगनाशे नाशै नहीं। भाषत वचन ऋषीश – ज्ञान चक्षु अवलोकिये ९ ज्ञान ध्यानकी रीति ग्रंथन में बहुबिधि कही। धारिहिये परतीति पाइय मारगको अवशि १० चौ०। सुजन प्रिया ग्रंथमें गावा। ज्ञानध्यान मारग दरशावा॥ अरु संसार विमोचनि नामा। बरणी ज्ञान ध्यान की सामा ११ ताते इहाँ नवरणौं सोई। देखिलेउशुचि सज्जन जोई॥ यानिष्ठा जेभक्त कहाये। बरणौं तिनके नाम सुहाये १२॥

चौ०। कथा बशिष्ठ केरि शुभएहा। बरणौंधरि रघुबर पदनेहा॥ ब्रह्माके दशपुत्र मँझारा। भगवत भक्त भये सुखसारा १३ ज्योतिष आयुर्वेदहु सोई। अरु सांगीत कहावत जोई॥ तिन में बहुसंहिता बनाई। जगदानन्द हेतु सुखपाई १४ पर बिशेष उनका अधिकारा। धर्मशास्त्र ज्ञानहु अपारा॥ भक्ति शास्त्रमें अधिक कहाये। अन्तरिक्ष हरिध्यान लगाये १५ पुनि दूजे ब्रह्माण्डम जाई। ब्रह्माणी कीकरी सहाई॥ हेतधर्म परवर्ति सहाई।

तीनिरूप निज लीन्ह बनाई १६ ब्रह्मलोक में एक रहावैं। दूजे धर्म सभा सुखपावैं॥ तीजे सप्तऋषेश्वरमाहीं। धर्म प्रकाश करैं बहुधाहीं १७ विश्वामित्र देखि तपभारी। राज्यछोड़ि मानसतपधारी॥ नहिं नन्दिनी धेनु जबपायो। नहिं बशिष्ठ ब्रह्मर्षि सुनायो १८ सोई बैरधारिमन लीन्हा। बधशत अंगज तिनके कीन्हा॥ तबहूँ नहिं बशिष्ठ मन माहीं। रंचक्रोध कीन्हों तिन पाहीं १९ ब्रह्मा सों सुनि पायो सोई। श्री सच्चिदानन्द घन जोई॥ सूर्यवंश लेहैं अवातरा। सुनि बशिष्ठ आनँदउरधारा २० प्रोहित भये जाइ तिहि बंसा। दरश लागि रघुकुल सर हंसा॥ जब अवतार लीन्ह हरि आई। पूरण सिद्धि जन्मकी पाई २१॥

चौ०। श्री रघुबर पद शीशनवाई। कहौं गाधिसुत कथा सुहाई॥ क्षत्रीबंश जन्म तिन लीन्हा। चाह धेनु नन्दिनिकी कीन्हा २२ गे बशिष्ठ ऊपर सो धाई। सेना प्रबल लीन्ह सजवाई॥ हरी गई सेना तिन भारी। विश्वामित्र रहे मनुमारी २३ प्रबल प्रताप विप्र कर देखी। आपुहि जानो तुच्छ बिशेखी॥ भगवत भक्ति प्रताप महाना। राज्य छोंड़ि मनगुणि तपठाना २४ भगवत भजन करन सो लागे। लाखन वर्ष मन अनुरागे॥ ऐसो कियो घोर तप काहीं। भे ब्राह्मण क्षत्रीतन माहीं २५ ऐसो भयो भक्ति बल जिनके। इच्छा होत भई यह तिनके॥ की दोसर ब्रह्माण्ड बनावैं। या विधि जग निज नाम चलावैं २६ एकसमय विधि सो रुट धरिकै। लागे रचन अण्ड मुद भरिकै॥ बहुत बस्तु बिरची तिन जबहीं। आये सकलदेव मिलि तबहीं २७ क्रोध शांत कीन्हों तिनकेरा। चित्त तबहिं रचना सों फेरा॥ भूप त्रिशंकु अवधपुरमाहीं। स्वर्ग सदेह पठायो ताहीं २८ देखि इन्द्र मन क्रोधबढ़ाई। दीन्ह त्रिशंकुहि भूमि गिराई॥ कीन्ह पुकार गिरन जब लागा। विश्वामित्र सुनी ता बागा २९ तप बल धारि गिरन नहिं दीन्हो। निराधार महँ आस्थिर कीन्हो॥ स्वर्गति इन्द्र निकारन चाहा। सुरन

आइ बिनती बहु काहा ३० बिश्वामित्र दया मन आई । देव गये निज भवन सिधाई ॥ एकसमय बहुपरो अकाला । भोजन कछु न मिलो तिहिकाला ३१ बहुदिन तिनहिं बीति जब गयऊ । इक चाण्डाल मांस लै दयऊ ॥ खाद्य बिचारि ताहि लै आये । करि मज्जन चह भोगलगाये ३२ ध्यानम हरिअर्पण चित दीन्हा । लखि निजभक्त दया हरि कीन्हा ॥ तिन समाधि लागी तिहिबारा । भगवत बर्षा करी अपारा ३३ भये हरित बन बाग सुहाये । बिबिध धान्य फल फूल महाये ॥ भयेपल-लकुजपनस नवीना । त्यागि समाधि गाधिसुत दीन्हा ३४ कीन्ह प्रणाम हरिहि सुखपाई । क्षुधा शांत कीन्हो फल खाई ॥ याबिधि हैं तिन चरित माहना । जियालाल संक्षेप वखाना ३५ ॥

चौ० । भरत नृपतिकी कथासुहाई । यहबरणौं भक्तन सुख-दाई ॥ ऋषभदेवके पुत्रसुहाये । भगवत भक्त श्रेष्ठ कहि गाये ३६ भरतहि राज्यदीन्ह सुखपाई । ऋषभदेवगे बनहिसिधाई ॥ राजा भरतभये सुखखानी । पितासमान प्रजाहि मुददानी ३७ बिश्वरूप कन्या सुखधामा । उपयेमेसु पंचजनिनामा ॥ जनयामास पुत्रता माहीं । निज प्रतिबिंब मनहुतेआहीं ३८ दो० । सुमतिसुदर्शन राष्ट्र भृतधूम्रकेतुआवरण । पांचपुत्र गुण शीलयुत सकल लोक आभ-रण ३९ धर्म सुयश नृप भरतकोछायो भूमिअकाश । अजहुँ बर्ष यह करत हैं ताको सुयश प्रकाश४० चौ० । प्रजाप्रवर्त स्वकर्म सदाई । ह्रास स्वधर्मन होत कदाई ॥ तिनहिं सबहु छिन्नृ-पसवकाला । उरुवत्सलता सो प्रतिपाला ४१ यज्ञरूप भग-वन्तहिइजे । +उच्चावचक्रतुसो मुद भीजे ॥ अग्निहोत्र की-न्हे युत श्रद्धा । पूर्ण मास दर्शहु पुनि अद्धा ४२ चातुर्मास्य सोम पशु नामा । प्रकृति-विकृतिकरिकै सुखधामा ॥ †मृदित

+उच्चावचमहदल्पश्चोतिक्रतवःसयूपाः -प्रकृतिविकृति अग्निहोत्रादयोद्विविधाः सकलांगयुक्ताः प्रकृतयः विकलांगाविकृतयः †यज्ञाःअल्पःमृदिनाःक्षीणाः ॥

* कषाय नृपति यामांती। किये यज्ञदियहरि सुख पांती ४३ एवं कर्म शुद्ध बुधिकरिकै। हृदयाकाश सत्त्वसुद भरिकै॥ भगवंत ब्रह्मरूप सुख खानी। वासुदेव जिहि वेद बखानी ४४ तासु रूप देखो सुखधामा। कौस्तुभ मणि श्रीवत्स ललामा॥ वनमाला उर मध्यसुहाई। चक्रगदा † दरजन सुखदाई ४५ वर्षा युतसहस्र पर्य्यन्ता। हरि भजि राज्य कियो श्रुति यन्ता॥ पुनि संपति सों मन बिलगाई। निज पुत्रन दिय भागलगाई ४६ नृपैश्वर्य्य तत्क्षण तजि दीन्हें। पुलहाश्रमहि गमन पुनि कीन्हे॥ तहँ वासीजन के हितकारी। अजहुं वसत जहँ रमाबिहारी ४७ करत पवित्र चक्रनहिं जहँवां।जाइ वास कीन्हो नृप तहँवां॥ पुलहाश्रम उपवन अति सोहै। विविध कुसुम तरुवर मनमोहै ४८ किशलय तुलसिअम्बु सुखरासी। कन्दमूलफल प्रभाप्रकासी॥ वास विविक्त विषय उपरामा। पायो परम निर्बृत्ति ललामा ४९ इमि भगवत परिचर्य्या माहीं। उरानुराग प्रवर्द्ध सदाहीं॥ वेग प्रहर्ष शिथिलता करिकै। रोमपुलक उत्कण्ठा भरिकै ५० अरुण चरण अरबिंद सुहाये। ध्यान भक्ति सौमानस लाये॥ परमाह्लाद गँभीर सुहावा। हृदय हृदासुपूर्ण करिआवा ५१ ऐसे भगवत ध्यान लुभाने। हरि परिचर्य्या काहँ भुलाने॥ घृतएेणे या जिन सुखराशी। कपिश कुटिल कच प्रभा प्रकाशी ५२ प्रात उदय सूर्यनको देखी। या विधि बोले बचन विशेखी॥ हे सूरज मैं शरण तुम्हारी। रजस प्रकृति पर वेद विचारी ५३ शुचि सत्त्वात्मक रूप तुम्हारा। तेज स्वरूप भूत सुखसारा॥ हे सविता कर्मन फलदायक। मनसों रचिजग प्रकट सहायक ५४ करि प्रवेश या जगत मँझारा। चेतन शक्ति ‡ हंसप्रतिपारा॥ इमि तपकर समोद सहभावा। एक समय कर चरित सुहावा ५५ कूल महानदिके सो गयऊ। ॥ नैयमिका

---

* कषाया रागादयो यस्य † दरशंख ‡ हंसो ॥ नैयमिकंनित्यनैमित्तिक विधिमात्रं

* वश्यक नृपकयऊ ॥ कृताभिषेक प्रणव मनधारा। त्रयमुहूर्त्त मध्युदक बिचारा ५६ तहँ प्यासी हरिणी इकआई । अम्बुपियनलागी सुखपाई ॥ सिंहनाद ताही क्षणकीन्हो । लोक भयंकर सुनिभय चीन्हो ५७ प्रकृति बिक्कवा मृगी सदाई । चकितानिरीक्ष्य सिंह भयपाई ॥ व्यग्रहृदय † पारिप्लवदृष्टी। ‡ अगत तृषा बिलोकि भयवृष्टी ५८ लांघतभै सो नदी अपारा। गर्भवती व्याकुल तनभारा॥ कूदि गिरी सरिता मधि जबहीं। गर्भ पपातयोनि मगतबहीं ५९ गई मृगी सरिता के पारा। स्वगण विशुज्य मान दुखभारा॥ गिरीदरीमहँ मरीसशोका। यह चरित्र नृप भरत बिलोका ६० बहतधार मृगि बालक देखी । तिनउर उपजी दया बिशेखी ॥ ताहि निकारि निजाश्रमलाये । गुनि अनाथ अति प्रेम बढ़ाये ६१ ॥ पोषण ¶ पालन § लालन † प्रीड़न। करत जानि बालक सँग क्रीड़न ॥ आत्म नियम यमछूटनलागे । हरि परिचर्य्या पुनि कछुत्यागे ६२ कछुक दिवस महँ सबताजिदीन्हा । पूरण प्रेम हरिण सों कीन्हा ॥ शयनाशनाशनाटन जोई । सह मृग करत नेह युतसोई ६३ दो० । समित कुसुम फल मूलकुश पत्रतोय हितजाहिं। बृकसाला वृकभय निरखि संग ताहिलैजाहिं ६४ चौ० । याविधि जीनन भे बहुकाला। एक दिवसकर भो असहाला॥ मृगगण

भे तजि संगहू दुखदान । श्रवण कीर्त्तन मननकीन्ह अपराध नाहरि ध्यान ६८ तबहुँ दुख यहपरतभो दुखदानि संग सदाइ। त्यागिहौं अब सकल संगन पुनि नहोइकदाइ ॥ गूढ़ दुख या भाँति तत्क्षण मृगी मातर त्यागि । त्यागि कालंजरगये सो पुलह आश्रम भागि ६९ पुलह आश्रमहूविषे अतिसंग सों भय खात। शुष्कबीरुध तृणहु भोजन करत सूखेपात। वर्त्तमान मृगत्व चाहत नित्यही अवसान । उत्ससर्ज शरीर तीरथ पाथ धरिहरि ध्यान ७० दो० । द्विजआंगिर प्रवरके मृगशरीर तजिसोइ । पुत्र होत भेविप्रकुल शमदम धारकजोइ ७१ द्वेजायाङ्गिर प्रवर केजेठी के नवपूत । भये कनिष्ठाके मिथुन तजि एणाङ्गासूत ७२ कन्या दूजीहोतभै इमिलहि विप्रशरीरा।स्वजन संग सों नित्य भय करत विप्रबरधीर ७३ चौ० । भगवत चरण चित्त निजलाये। सुमिरण श्रवण नित्यगुणगाये॥निज प्रति घाताशंकमान पुनि। पूर्वजन्म अवलीमानसगुनि ७४ समउन्मत्त जडांधबधीरा । दरशायो निज लोक शरीरा ॥ किय सँस्कार पिता पुनि तबहीं। शौचाचार सिखायो सबहीं ७५ कछु दिनमाहँ पितातजदेहा । ता गतिगई मातु युतनेहा ॥ भ्राता तिन प्रभाव नहिंजानैं । जड़वत बधिर मूकवतमानैं ७६ छन्द रामगीतिका। तिरस्कारहु करनलागे भोजनादिक माहिं । तबहुँ येकछु इन्द्रियादिक सुख न को गननाहिं॥ मिष्ट अन्न * कदन्न अल्पहुखात आनँदपाइ। नित्य सिद्ध विशुद्ध अनुभव रहो सुखउरछाइ ७७ स्वात्मलाभहि प्राप्त सुखदुख द्वंद्व गत अभिमान । शीतउष्णहु वातवर्षा वृषभ इवपाहिंचान ॥ अनावृत है अंग जिनको † पीनहै सबकाल। ‡ रजस मज्जन महामणिरिव ‖ ब्रह्मवर्चसपाल७८ ¶ कुपट आवृत § ऊरुमपिणा ब्रह्मबंधुलाखत । गुनाभाइन नित्यहीयहवृथा भोजन खात ॥ अशन लोभीदेखाइ तिन † केदार कारजहेत। कियो

* कदन्नं कुत्सितान्नं † पीनस्थूल ‡ रजःधूलिः ‖ ब्रह्मवर्चसब्रह्मतेज ¶ कुपटकुत्सितवस्त्र § ऊरुमषिणाअतिमालिनेन † केदारकारजशालिक्षेत्रेकर्दम विलोडनार्थं

थापित करत सोसम बिषमचित्तनदेत ७९ दो० । * फलीकरण † पिण्याकहू ‡ कण ॥ कुल्माष समेत। ¶ थालि पुरीषादिक अशन देत लेत अतिहेत ८० छन्द रामगीतिका । § एकवै इक वृषलपति कौ कामना सुतहेत । भद्रकालयै मानियो पशुपुरुष भक्तिसमेत ॥ पुरुष ढूंढ़न दूतधाये तासु आयसुपाइ । मध्यनिशि महँ ढूंढ़ि बहु केदार आये धाइ ८१ हरिलीला छंद । बीरासनेन द्विजमुख्यवि· लोकि पायो । बाराह रक्षण मृगादिक चित्तलायो ॥ दूता तहां सुपति कार्य बिलोकि भारी । बद्धातिन्हैं रसनयासु चले सुखारी ८२ चौ० । विकसित बदन देवि गृहलाये । वृषलपतिहि पुनि खबरि जनाये ॥ * पणय कियोतिनकर अभिषेका । भूषण पटपहिनाइ अनेका ८३ लेपास्त्रक तिलकादि सुहावन । अपर उपस्कृत बहुमन भावन ॥ † अशन कराइधूप अरुदीपा । माल्य लाजकिशलय सुखरूपा ८४ अंकुर फलोपहार उपेता । ‡ वैशस संस्थया सु सुलहेता ॥ गीतस्तुति मृदङ्ग बहुबाजे । पणवघोष अतिशय सुखसाजे ८५ छन्दरामगीतिका । पुरुष पशुलैभद्रकालि समीप कीन्होठाढ़। पुरुष पशुबलिदानके हितकोससो असिकाढ़॥ असि करालहि मंत्रिकर मोलेतभो तहँजौन । भद्रकालिबिलोकि धन मदप्रकृतिरजतमतौन ८६ भगवत्कलाकुलबीरको पुनितिरस्कारहि देखि। जीवहिंस्रक कृत्यदारुण कर्म उत्पथ लेखि॥ स्वैरबिहरत वैरकाहुन ब्रह्मभूत अमान। ब्रह्मऋषिसुतसुहृद भूतन नाहिं तेज प्रमान ८७ देखिसूना उचितनाहीं आलभनअनुरागि। ब्रह्मतेज करालसों जनुजरनदेवीलागि ॥ ॥ उच्चचाट सुसैवदेवी भद्रकालि तहांन। ¶ रभसरोषावेश बिलसित भृकुटिलजहान ८८ § भृशामर्ष *

---

* फलीकरणतुषाः † पिण्याकं तैलयंत्रोद्धृतं तिलकिट्टम् ॥ ‡ कणाश्चूर्णतंडुलाः ॥ ॥ कल्माषाः कीटदष्टमाषाः ¶ थाली पुरीष थाली लग्नं दग्धान्नम् § एक वै एक समय * पणय पुरोहित † अशन भोजन ‡ वैसंस्थया हिंसा विधानेन ॥ ॥ उच्चचाट प्रतिमात्यक्त्वाबहिर्निर्गता ¶ रभसवेग § भृशाश्र मन * आमर्षक्रोध ॥

कराल दंष्ट्रा अरुण ईक्षणजासु। अति भयानक वदन इच्छाह-
ननकी मनतासु ॥ महा अट्टाहास देवी कीन्ह क्रोधितहाल।
¶ उत्पत्य पुनिहतन दुष्टन छीन लियकरवाल ८९ काटि मस्तक
खलनको पुनि रुधिरकीन्हो पान। गणनसहपुनि नृत्यकीन्हो
घ्पपरकीन्हो गान ॥ शीशकन्दुक खेलविह्वलपान मद सो होइ।
आपहीको फलतहै अभिचार ऐसोसोइ ९० दो०। नृपति सिंधु
सौवीरको नामरहूगणजोइ। कपिलाश्रमकोजाततहो तत्त्वजानिवे
सोइ ९१ शिविकामाहँ सवारसो इक्षुम तीतट आव। कुलपति
शिविका वाहकन पुरुषान्वेषणधाव ९२ उपसादित पुनि दैव
करि द्विजवर परोलखाइ। पीवायुवाविलोकिकै गहिलायो ता
ठाइ ९३ तिन उवाह शिविका तवहिं मनआनन्दबढ़ाइ। कूदि जा-
तइषुमात्र लखि पृथ्वी सत्वलखाइ ९४ शिविका विषम विलोकि
कै कहो रहूगणहेत। यान विषमकिमिचलतहै हेवोढ़ारस चेत ९५
सुनतरहूगणकेवचन वाहकवोलेवैन। अवहींआयोकर्मतिहियामें
कोजैहन ९६ शीघ्रनहींयहचलतहैयासँगजाहिंनपार। सुनतरहू-
गणवचनये करिमनमाँहविचार ९७ ॥ सोरठा ॥ सांसर्गिकजो
दोष एककेलागेसवन ॥ गुनिकियकिंचितरोष रजसावृतमति
कहत से ९८ ब्रह्मतेजनहिंजान भस्माच्छादितअनलइव। यदपि
वृद्धमतमान तदपिभुलानोनृपतितहँ ९९ अहोकष्टकीवात वहु-
तथके तुमवहुतचलि। अतिजीरणतवगात ऊहिचानतुमहींसकल
१००जरसा विकलशरीर विमलध्यभाँतिवहु। सुनेवचनधरिधी-
जानि अविद्या विहित जग १०१ मिथ्या सकल विचारि तू-
ष्णी। यानो वाहपुनि। कूदे सत्व निहारि विषम यान पुनि होत
भो १०२ दो०। देखि विषम शिविका वहुरि कियो रहूगण
क्रोध। किमिद मरेत्वं जीवतहि मरो तजोइमिवोध १०३ आज्ञाउल्लं-
घन करत नृपति मोकहँ जानि। तूप्रमत्तअतिहीअहै करौचिकि-
त्सा आनि १०४ दण्ड पाणि जिमि जनन को शिक्षादेत

¶ उत्पत्य काटये कूदकर ॥

सदाइ। इमि नृदेव अभिमान वश बचन कहे दुखदाइ १०५
तिरस्कार मय बचन बहु सुनि जड़ भरत सुजान। योग मांझ पर-
बीन अति कहे बचन सुखदान १०६ कहे बचन जे नृपतिबर
सत्य सकल हैं सोइ । भारपीव आदिक कथन ज्ञानिन मूर्खन
होइ१०७स्थौल्य कार्श्य निद्रा रतिहु आधि ब्याधि भय जोइ।
क्षुधा तृषा इच्छाजरा कालि शोकहु युत सोइ १०८ अहंकारअरु
क्रोधहू सुख दुख आदिक जौन। सकल देहके जानिये मोमेंहैं
नहिं तौन १०९ जीवनमृत जो नृप कहो सोऊ सत्य प्रमान।
आद्यंतवत देह यह क्षण प्रति वेद बखान ११० स्वामी आज्ञा
भंगकर जो यह कियो बखान । स्वामि भाव ध्रुवनहिं लखत
राज्यादिक मन आन १११ राज्यकरत तुमहम तजौ गुनिमिथ्या
व्यवहार ।ईश्वर जानत मोहबश करिअे बचन उचार ११२
करन चिकित्सा जोकहो सुनिय बचन ममसोइ। शिक्षास्त ब्ध
प्रमत्तकी पिष्ट पेष नहिं होइ ११३ जड़ोन्मत्तवत हम फिरत मुक्त
रूप सबकाल । होइ चिकित्सा कौन बिधि सुनिय बचन मम
हाल ११४ इमि उत्तर दैनृपतिको योगाभ्यास प्रवीन। कर्मभोग
मन जानिकै राज यान मचिलीन ११५ सुनत सिंधु सौवीर
पति बचन योगमयजौन।राज गर्व तजि यान तजि पादमूल
गत तौन ११६ क्षमापयन कर जोरि कै कहो बचन इमि सोइ।
कौन गूढ़ तुम फिरतहौ धरेसूत्र द्विजकोइ ११७ दत्तात्रेयादिक-
नमें अथवा तुम अवधूत। अथवा कपिल मुनीशहौ चले करन
ममपूत ११८ इद्र वज्र सों शंक नहिं त्र्यक्षशूल यम दण्ड। सो-
माग्न्यर्ककुवेर चल अस्त्र महापरचण्ड ११९ ब्राह्मण कुल अप-
मानते जैसो भय उरमाहिं। तासों मोसन वर्णिये गुप्त राखिये
नाहिं १२० जड़वत फिरतअसंगहौ गूढ़वीर्य विज्ञान। योगग्रथि-
त तव वचनहैं हमसम किमि पहिचान १२१ ज्ञान पूछिबेकेहितै
जात रह्यों मैं यत्र। ज्ञान कला अवतार तुम कहा कपिलहौ
अत्र १२२ लोक निरीक्षण अर्थसो बिचेरततज अपार। गृहा-

सक्त बुद्ध्यंहम किमिपावैं तत्रपार १२३ आपुकहो मम भारनहिं देह कर्म है तत्र। परो भारयह आपको हम जानतहैं अत्र १२४ यथा अग्नि के ताप सों थाली तापित होइ। तासों पय-पय सों बहुरि तण्डुल जानिय सोइ १२५ देहेन्द्रिय असु आश यहु निदाघादि को पाइ। क्रमसों तापित होत हैं या विधि मोहिं लखाइ १२६ मैं नृदेव यह गर्व निज धारिहिये विच जोइ। तिरस्कार किय आपको करिय क्षमापन सोइ१२७ यद्यपिरहित बिकारप्रभु रंचक्रोध उरनाहिं। महदपिमानति आपुहीं मादृक क्षणहिं नशाहिं १२८ सुनत विप्रवर कहतभे अति दुख यदपि नरेश। बात कहत विदुषन सरिस हैंन सत्य कर लेश १२९ यासों व्यवहारहि कहत लौकिक सत्यबखानि। सूरिनतत्त्वविचार में कहत सत्य यहजानि १३० वैदिक कर्महु सत्यनहिं हैव्यवहार समेत। गार्हमेध विस्तारजहँ तत्त्व बादन-हिंहेत १३१ त्रैगुण सों * अनुरुद्ध मन पूरुषको जबताइ। धर्मा-धर्म बढ़ावई † चेता कृतिन पाइ १३२ नामरूप बहुविधि लहै सोइ वासना धारि। तिर्यगऊंचहुनीचहू योनि जहँ दुखकारि १३३ सुख दुख बहु विधि भोगई कालप्राप्तफल सोइ। संसृति चक्र सुकृटमें भ्रमत सदादुखहोइ १३४गुणानुरक्ताहिव्यसनहै नि-र्गुण में सुखहोइ। घृतपाये दीपकबरै ताबिन ज्योतिनसोइ १३५ चौ०। गुणकर्मानुबद्धपदजोई। गहमन वृत्तितत्त्व ताजिसोई॥ एकादश मन वृत्तीजानो। धियाकृति अभिमान बखानो १३६ ‡ कर्मेन्द्री आकृती पांचा। ज्ञानेन्द्री धिय जानिय सांचा॥ एका-दश अभिमान सिखाई। तिन भूमी एकादश गाई १३७ गंध रूप रस स्पर्श शब्द पुनि। विषय ज्ञान इन्द्रियन पांचगुनि॥ कर्मेन्द्रियन पांचपुनि जानिय। रति विसर्ग गति भाषण मा-निय १३८ शिल्प समेत पाँचहैं जोई। सहाभिमानैकादश सोई॥ इनएकादश को स्वीकरणा। अहंकार शय्यावत बरणा

---

* अनुरुध वशीकृत † चेतज्ञानेंद्री ‡ आकृतिकर्मेंद्री॥

१३९ मम इतिभोग भुवन गह जोई । द्वादश बृत्ति कहावत सोई ॥ सोवत जीवतहाँ सुखपाई । अहँकार युत पुरुष कहाई १४० मन विकार पुनि बिबिध प्रकारा । शतसहस्र कोटिनैअपारा ॥ नाहिं मिथा अपनहु सोनाहीं । ईश्वर कृपा प्रवृद्धरहाहीं १४१ क्षेत्रज्ञात्मा पुरुष पुराणा । स्वयंज्योति अज बेद प्रमाणा ॥ नारायण परेश भगवाना । बासुदेव जिहि बेद बखाना १४२ स्थाप्यमान मायाकरि सोई । जीव बिषे परकाशित जोई ॥ सोमाया स्वाधीन सदाई । व्याप्तभयो इच्छासोआई १४३ यथाअनिल व्यापित जगएहा । चेष्टाकरत अङ्गअंगदेहा ॥ बासुदेव एवं पहिचानो । व्यापित सकल जगत सुख सानो १४४ जब लागि ज्ञानोदय नहिं होवै । माया जीतिन सुख सों सोवै । मुक्त सङ्ग षट शत्रुन मारै । आतम तत्त्व नहिं जानि बिचारै१४५ तबलागि भ्रमतरहै जगमाहीं । पुनि जबलगि जीतै मननाहीं । बिपयारत अनरथ करहेतू । मन संसार तापकर खेतू १४६ आत्मोपाधि भूत मन एहू । शोक मोह आमयकर गेहू । राग लोभबैरादिक जोई । ममता धारकहै मन सोई १४७ यह अति शत्रु घोरहै राजा । ताहि मारि सारिय निज काजा ॥ बढ़ो शत्रु मिथ्या पुनि जोई । आत्मा काहँ चुरावत सोई १४८ गुरु हरि चरण उपासन जोई । लीजिय धारि अस्त्र दृढ़ सोई । तब तुम्हार होवै कल्याना । या विधि नृपसों विप्रबखाना १४९ सुनत रहूगण युग कर जोरी । लागे अस्तुति करन बहोरी ॥ नमोनमः * कारण तन स्वामी । हे † अवधूत नमामि नमामी १५० दो० । परमानन्द प्रकाश करि जानत तुच्छशरीर । समदरशी सबकाल में रहत एक रसबीर १५१ चौ० । ‡ ज्वरामयार्त्त ॥ अगद जिमि पावै । दग्धनिदाघ ¶ हिमांभ सुहावै । तिमि § कुदेह मानाहि

* कारण मीश्वरः तस्यैव लोक संरक्षणार्थ तनुः † अवधूतयोगेश्वर ‡ ज्वरामयार्त ज्वर रोगसों पीड़ित ‖ अगद औषध ¶ हिमाम्भ शीतल जल वागंगोदक § कुदेह कुत्सिते देहेमानः अहंकारसएवाहिः तेन विशेषेशाद दृष्टदंशितात वेद वचःभून तुल्यमौषधं ॥

विदष्टा। वचनामृत औषध हरकष्टा १५२ है मेरे उरसंशय जोई।
प्रथमहिं दूरिकरिय प्रभुसोई ॥ योगाध्यात्म ग्रथित तत्त्वबानी।
अति दुर्बोध जातनहिं जानी १५३ होइ सुबोध कहियमोपाहीं।
कौतूहल मेरे उरमाहीं ॥ हे योगेश्वर कहाजुसोई। दृश्यमान
कर्मन फल जोई १५४ है व्यवहार मूल वहसोई। तत्त्व विचार
हेत नहिंहोई ॥ तासों अमित भ्रमत मनमोरा। भाषि सुबचन
दीजिये छोरा १५५ बोले विप्र क्षिप्र यह सुनिकै। पार्थिव बचन
सुनिय मनगुनिकै ॥ भूविकार भूचरहैं सिद्धा। भारवाह किमि
नाम प्रसिद्धा १५६ भूपर पाद गुल्फ हैं आगे। जंघा जानू ऊरु क-
टिलागे ॥ उरशिर अरुधरांसहैं तहँवाँ। शिबिका दारवोराजत ज-
हँवाँ १५७ जामें आप युक्त अभिमाना। हमसौवीर राजयह
जाना ॥ दुर्मदांध अतिही तुमराई। सिन्धु देशके नृपति कहा-
ई १५८ दयाहीन अतिही तुम राजा। जनगोसा हम कहत न
लाजा ॥ वृद्धसभानहिं सोहियताता। औरौ सुनहु कहिय कछु
बाता १५९ दो०। भूमीहीमें जन्म अरु नाश चराचरहोइ। नाम
मात्रहै अलग सब सकल भूमिहैसोइ १६० सत्य मृत्तिकाही अहै
वाचारंभण और। यथा पुरटकंकण कँड़ाअहै स्वर्ण सबठौर १६१
बाह्याभ्यंतर शून्य जो ज्ञान सत्यहै सोइ। भगवच्छब्दप्रशांत
पुनि वासुदेवहै जोइ १६२ चौ०। तपसोंमिलै ज्ञाननहिं एहा।
यज्ञकिये नहिं त्यागेगेहा ॥ वेदपढ़े मौनसनहिंआवै। रविजला
ग्निसंये नहिं पावै १६३ महत्पादरज शीशचढ़ावै। नाना-
विधि सेवामनलावै ॥ सुनहु रहूगण तुमहिं बतावत। तिनकी
कृपा ज्ञान उरआवत १६४ भगवत कथा जहाँ सुखदाई। ग्राम्य
कथाकर नामनभाई ॥ सेवत ताहि मुमुक्षुसदाई। वासुदेव म-
ति देतलगाई १६५ दो०। भरत नाम राजारहे पूर्वकाल हमजो
इ। भगवत आराधनहिते राज्य तजी वहसोइ १६६ तहाँ मृगाके
संगसो लही मृगा की देह। रहो ज्ञान मृगदेहहू भगवत चरण
सनेह १६७ शंकमान मैं सङ्गसों तबहींते महिपाल। सङ्गसों रह-

वित्तपरस्पर देत कबहुँ पुनिलेत बैरकरि । करत परस्पर व्याहकबहुं अतिचाह मोदभरि ॥ अध्व दुरत्यय वित्त बाध तहँकष्ट महाने । द्वेषादिकन समेत विहर होवै गत प्राने ॥ कहि जियाखाल गत असुन तजि गहै जातही जातनव। न- हिं लहत अध्वपरयोग जो बरणिकहो यहतात तव १८५ छन्द बरवा । दिग्गजेन्द्र जिन जीते सूर सुदेह । वृद्धबैर यह भाषत भुवि ममएह ॥ मृधशयीत नहिं जावैं तदपि तहांसु । न्यस्तद- ण्ड जहँजावैं गतबैरासु १८६ लताभुजाश्रय गाहिकै कहुँथिर होइ। पदाव्यक्त तिहिआश्रय चहखग सोइ ॥ लहै त्रास हरि- चक्रकि कबहूँ तौन । सख्य करत बककंकन गृद्धन जौन १८७ चौ० । तैवंचित सुहस कुल जावै । नहिंरोचत बानर कुलधावै ॥ तासु जाति के रासविशेखी । विस्मृत अवधि परस्पर देखी १८८ प्रिय सुत दार द्रुमन रमसोई । विवश स्वबंध दीन रति जोई ॥ पत प्रमाद कन्दर गिरिजाई । रहवल्ली गहि गजभय

यदुस्तर सुख दुःखराग द्वेष भयाभिमान प्रमादोन्माद शोकमोहलोभ मात्सर्ये- र्ष्याऽवमान क्षुत्पिपासाधि व्याधिजन्मजरा मरणादयः जातही जातनवीन नवीन देहों को ग्रहण करे है तात हे रहूगण १८५ वृद्धकहिये बढ़ाजो है बैर मृधसंग्राम न्यस्तदण्ड संन्यासी जहँ कहिये जहां विष्णु पदको जात हैं १८६ पुनर्भवाटवामेवानुवर्त्तयति लता भुजा जो हैं शाखा तिनवत् जो हैं सुकुमार स्त्रीणां भुजास्तदा श्रयान पदाव्यक्त कहिये अस्फुटाक्षराःकल भ पिणोये द्विजाःपक्षिणस्तत्तुल्येषु स्त्री संग प्रसक्तेषु स्पृहायस्य हरिचक्र सिंह- समूहस्तत्तुल्यकालचक्र ताकीत्रास जन्ममरणादि तत्परिहाराय कैश्चित्प्र- लोभिनो बकादिवद्वंचकैः क्षुद्रैः क्रूरैश्चपाखंडैःसहसख्यं करोति अर्थात् पाखंड धर्म को धारणकरैहै १८७ तैवंचित तत्र फलाभावं ज्ञात्वाहंसानां ब्राह्मणानां कुलंपुनःप्रविशन् तेषांशान्तं प्रायश्चित्त पूर्वकं पुनरुपनयनाद्याचार नहिंरो- चत अप्रिय जानकर वानर कुलधावै वानरतुल्यजो हैं भ्रष्टाचार शूद्र तामधि प्रवेश करै है तासु जाति के रास वानरवत् क्रीड़ा मैथुन और परस्पर मुख देखना इत्यादि करि विस्मृत है जीवित अवधि जाको १८८ द्रुमवत्गृह रति दीन कहिये मैथुन में कृपण होकर निज बंधन को विवश कहिये छुटाइबे में असमर्थ है गिरि कन्दरवत् भयानक जो रोगादिहैं तिनमें जो पतमान अर्थात् रोगादिकन सों ग्रसित गज तुल्य जो है मृत्यु तासों भयभीत वल्ली तुल्य जो

पाई १८९ छूटैं आपदसों विधि कोई। बहुरि प्रवेश करैं तहँ सोई॥ दुस्तर अध्यनिवेशित माया। भ्रमत अजहुँ जन जानि न पाया १९०॥

तुमहु रहूगण मारग एहा। न्यस्त दण्ड कृत भूत सनेहा॥ आतम असज्जित श्री हरि सेवा। असित ज्ञान असिलै तर एवा १९१ याविधि वचन रहूगण सुनिकै। बोलत भे उर आनँद गुनिकै॥ अहो नृजन्म अखिल जनु नीको। अपर जन्म देवादिक फीको १९२ जहाँ न हृषीकेश यश गाना। नाहिं समागम आपुसमाना॥ त्वच्चरणाब्ज रेणु गतपापा। करि हरि भक्ति पूर्ण उर व्यापा १९३ एक मुहूर्त्त समागम भयऊ। मम अविवेक सकल नाशि गयऊ॥ उन्मूलन समस्तदुस्तर्का। मोह तिमिर नाशक वच अर्का १९४ शिशु बटु रूप युवा वपुजोई। बार बार विनवौं पद सोई॥ विचरत ब्राह्मण भू अवधूता। तिन सों नृपन भव्य उर पूता १९५ दीन रहूगण को इमि ज्ञाना। तिहि पद बन्दित कीन्ह पयाना॥ आपूर्णार्णव इव सुखदाना॥ निभृतकर्णउर्म्याशय नाना १९६ विचरन बहुरि धरणिसों लागे। ब्रह्मामृत आनँद रस पागे॥ आतम तत्त्व लहि नृप सौवीरा। देहम मत्व दीन्ह तजि धीरा १९७॥

यह+ भागवत सभाजित चरिता। गुण अवदात कर्म मुद सरिता॥ धानि स्वस्त्ययना युष्य सुहावा। श्री राजर्षि भरत कर गावा १९८ स्वर्ग्य यशस्या पवर्ग्य सोई। आख्यास्यति शृणोति नर जोई॥ अभिनन्दति पूर्णाशिष पावै। स्वत एवाशाकाहु न लावै १९९॥

हैं प्राचीन कर्म तिनको गहिनाम ग्रहण करि रहनाम स्थितहोत हैं १८९ कोई विधि किसीप्रकार आपदासों छूटिहूजाइ तथापि बहुरिकहिये फिरि मायावश होकर ताही में प्रवेश करै हैं १९० अर्थ आत्म असज्जित विषय सों चित्तको न्यारो करि आसित तीक्ष्ण एव अमुनाप्रकारेण १९१ जनुजन्मनके विषे १९२

+भागवत जो हैं भगवद्भक्त तिनकरि सभाजित कहिये पूजित हैं औ भरत भगवान कहिये शुद्ध गुण और कर्म जिनके॥

दो० । कथा अलर्क सुवाहुकी मन्दा लसा समेत । बरणौं संकट दारिणी अघ हारिणि मुद मेत २०० नाम शत्रुजित प्रथम भे भूप महा बलवान । सोम पान तोषित भयो जासु यज्ञ मघवान २०१ तस्मात्मजयुनिह्वेतभो शत्रुविडारणनाम । बुधि विक्र गुरुशक्रसमधीरजशोभाधाम २०२ बुद्धिमान बयजासुसम औरनृपनकेबाल । रहतासंग सुनित्यही आनन्दितसबकाल२०३ चौ० । कबहूँशास्त्र बिबेक बिचारैं । नृत्यगीतकहुँ काव्यप्रचारैं ॥ कबहुँअस्त्रशस्त्रास्त्रप्रकाशा । स्यन्दनाश्वरण गजअभ्यासा २०४ क्रीड़ादेखि शुभग सबकाला आवहिं बैश्यबिप्र नृपबाला ॥ नाग अश्वतर के द्वै बाला । क्रीड़ा लखि आये इक काला २०५ ब्राह्मण रूप युवा धरि भेषा । क्रीड़ा बहु प्रकार तिन देखा ॥ पुनि सब बाल न सह अस्माना । करि किय मधुर अशन अरुपाना२०६ बस्त्राभरण गंध तनधारी । लहे बालकन आनँदभारी ॥ याबिधि नित बालक तहँ आवैं । नाग कुमारहु अति सुख पावैं २०७ नृप सुत नाग सुवन अति नेहा । तिन बिन सुखी रहत नहिं एहा ॥ करतनतिनबिहीन अस्माना । गंधबस्त्र भोजन मधुपाना २०८ नाग पुत्र ताबिन दुख पावैं । निशा रसातल दुखितगवांवैं एक दिवस कह मातु पिताहू । नित सुतमृत्युलोक तुम जाहू २०९ कासो परमप्रीतिअतिभारी । पुत्रबचन ममकहौ बिचारी ॥ सुनि पितु मातुबचन करजोरी । नागसुवन कहबचन बहोरी २१० दो० । पुत्र शत्रुजित नृपतिको नाम ऋतुध्वज सोइ । रूपवान आर्जव गुणी शूरप्रियंबदहोइ २११ अनापृष्ट सब कहतसो मैत्र महाविद्वान । मानी मानहिदेतहै ह्रीयमान धीमान २१२ तासुप्रीति संभोगसो हरोहमारो चित्त । नागलोक मम सुखनहीं रहमन ताढिगनित्त २१३ नहिं शीतल पातालहै तद्वियोग सुनुतात । यदिरव्यहता पितकरत तासँगलह सुखगात २१४ पुण्यवान धनि पुत्रसो यश एवंविध जासु । कहत परोक्षहु गुणनको तुमसमान गुणितासु २१५ होतशास्त्रविद शीलबिन मूर्खशीलयुतहोइ ।

शास्त्र शील दोनोंजहाँ पुत्रधन्यहै सोइ २१६ कहैं मित्रगुण जा-
सुके शत्रु पराक्रम यस्य। धन्यपितासो जानिये धन्य पुत्रसो त-
स्य २१७ तासुकरण उपकारको चहत पुत्रहौकौन। मनवांछित
मोसनकहौ होइचित्तमें जौन २१८ जीविततोको धन्यहैं धन्य
जन्महै तासु। मित्रअर्थ दुर्बल नहीं नहिं अदेय कछुजासु २१९
मेरेगृह सुबरण रतन वाहन आसनजौन। मित्रतुम्हारो जो चहै
बांछित दीजिय तौन २२० धिकजीवन तिहिपुरुषको मित्रनको
उपकार। करैनहीं जीवनचहै याअसत्य संसार २२१ सुनत पि-
ताके वचन इमिबोले पुत्रसनेह। सर्वसु पूरण मित्रमम नहीं देय
ममगेह २२२ सबकामन पूजित सदा सर्वार्थी जागेह। जौनरत्न
तागेहमें नहिंपाताल न एह २२३ वाहन याना सनबसन भूषण
बुधिविज्ञान। तत्र जौनहम देखियत लखतनहीं थलआन २२४
तासु एक कर्त्तव्यहै हैअसाध्य पितुतौन। बिनईश्वर गोविन्दके
और करैगो कौन २२५ सुनिपुत्रनके वचनइमि कहापिता पुनि
बैन। सुनिवेकी इच्छाअहै करन योगयादहैन २२६ साध्य असा-
ध्यहु होतजो विपश्चितनको नाहिं। सुरपद सुरपति पदपरे
बांछित मानुष जाहिं २२७ ताविज्ञातागम्यहू अप्रापित कछु
नाहिं। उद्यत मनुज जितेन्द्रियन दिविइह लोकहु माहिं २२८
चलत सहस्रनयोजनहु लघु पिपीलिका जात। बिनाचले ख-
गपति सरिसपाद एकनाहिं तात २२९ कहँ ध्रुवपद कहँ भूमियह
प्रासभय ध्रुवजाइ। ताते सुत वर्णनकरिय कारज सुतनर राइ
२३० चौ० ॥ पिता बचन सुनिकै द्वौभाई। वर्णन लाग कथा
नरराई ॥ पूरववृत्तसानय पितुसोई। कौमारके मित्रकरजोई २३१
गालव एकबुद्धके धामा। लिये अश्व आयेनृप ठामा ॥ बोलत
भये नृपतिसो बैना। दैत्याधमको ऊममएना २३२ करत उपद्रव
पापघनेरा। धारत रूपसिंहइभ केरा ॥ ध्यान समाधि मौनजब
धारत। करिकैविघ्न चालि मनटारत २३३ छन्दरामगीतिका ॥
एक दाहमहोइ व्याकुल तजतमै विश्वास। भयोदेखत अनुर

मोहित गिरो अश्वअकाश॥ भई अम्बर बाणिहू पुनि सुनिय सोमहिपाल। रहैगो अश्रान्त यह हय सकल भूमे चाल २३४ तोय अम्बरहू पतालहु विहतगति है यस्य। जाइगो सब दिशन कानन भयन गिरिहूतस्य॥ जाहिसो अश्रान्तभूमे चैरे गोहय एह॥ नामकुबलय लोकमें परसिद्ध होवैतेह २३५ दान-वाधमदेत पापी दुक्ख तुमको जौन। शत्रुजित भूपाल सुनकर लहैगो बधतौन॥ समारुह्य सुअश्वया परऋत ध्वजबरबीर रत्नहय लहिजाइ ख्यातिहि हरैगोऋषि पीर २३६ दो०। भाग भागिनृप होत हैं तव समीप महिपाल। ताते हम आये करिय असुर तपघ्नक काल २३७ पुत्रहि आज्ञा दीजिये लीजिय हय यहसोइ। कीजियनृपति बिचारिमन धर्मलोपनहिं होइ २३८ सुनि भूपति गालव बचन पुत्राहि अश्वचढ़ाइ। कीन्हो मंगलबिबिध बिधि आनँदहिये बढ़ाइ २३९ गालवसंग पठवत भये भूपति धर्म्म शरीर। निज आश्रम लावत भये भूपसुतहि सुनिधीर २४० कहो अश्वतर नागपुनि सुनि पुत्रनके बैन। काहऋत ध्वज करतभे जाइ ऋषयबर ऐन २४१ कहो पुत्रपितु बचन सुनि गालव आश्रम जाइ। रहेअसुर जानत नहीं आयो अवसर पाइ २४२ सन्ध्योपासन करत मुनि धरि शूकरकोरूप। बिघ्नहेतु आयो निरखि चढ़ि हयनन्दन भूप २४३ तापीछे धावत भये लिये शरासन हाथ। चन्द्र अर्द्ध आकारइषु मारो सुत नरनाथ २४४ बाण लगे भागत भयो गिरिवन महीअपार। कुबलयाश्वहूजात भे धनुष बाण करधार २४५ चौ०। भागि बाराह जहाँ वहजावै। पीछे नृपति सुवन लखियावै॥ सहसन योजन महीमलाना। निज मनसो उवार नहिंजाना २४६ भाजि धरणि सो गर्त्तसमाना। गयरे ऋतध्वजहू बलवाना॥ अंधकार तहँ कछु न लखाई। दैत्यहु तहाँ न परो दिखाई २४७ आगे दीख पतालहि जाई। तहाँ प्रकाश परोदिखराई॥ शतसंकुल प्रासाद बिलोका। सुवरण रचित मनहुँ हरिओका २४८ प्रविशि लखोनर कोउन तहँवाँ।

भ्रमत लखी प्रमदा इक जहँवाँ ॥ पूँछतभे तासों सुखपाई। तूसु-
भ्रूकाविधि इतआई २४९ सो तिनसों उत्तरनहिं दीन्हो। जाइ
प्रवेश भुवन मधि कीन्हो ॥ इनहूँ बाँधे तुरङ्गहि दीन्हा। जाइ
प्रवेश सुमन्दिर कीन्हा २५० तहाँ जाइ कन्या इक देखी। सुंदर
रतिसों रूप विशेखी ॥ स्वर्णरचित पर्य्यंक विराजत । मुखकी
प्रभा देखि विधु लाजत २५१ भौंहन लखि धनुगुणकियन्यारी।
नयन विलोकि मीनगे वारी ॥ काननजाइ कुरंगलुकाने। खंजरीट
भूरुहन भुलाने २५२ कचश्यामता अमानिशि लाजी। शि-
खादेखि नागिनि बिलभाजी ॥ नासा देखि कीर रटिलयऊ। दे-
खि गला दरउर फटिगयऊ २५३ ओष्ठबिम्बकी शोभाहारन।
रदविलोकि उरफटो अनारन ॥ श्रीफल सेव क्षोजसुहाये । पा-
णि कमलपल्लव छविछाये २५४ चलदलपत्र उदरकी शो-
भा। कटि मृगराज देखि वनलोभा ॥ नाभि गँभीर भ्रमर जनु
सोहै। जंघा लखि रंभा छविकोहै २५५ सुश्रोणीशोभित या
भाँती। पाद नखनमणि प्रभालखाती ॥ पुष्पगुलाब पादतलसो-
हत। एंड़ीनारंगी छवि मोहत २५६ कोमलाङ्ग शोभित सु-
कुमारी। देखिऋतध्वज भये सुखारी ॥ देखि ऋतध्वजको वहक-
न्या। तनमन भूलिभई वशधन्या २५७ उठतभई तत्क्षण तहँ
सोई। प्रापक्षोभ लज्जा अतिहोई ॥ चिंताकरन चित्त निजला-
गी। देवयक्ष को यह बड़भागी २५८ है गंधर्व उरग वा कोई।
विद्याधर अथवा नर होई ॥ इमि विचिन्त्य लै ऊरधश्वासा। वैठीभू
मूर्च्छयाप्रकासा २५९ प्रापितभयो कामशरघाता। भयेऋतध्व-
ज कंपित गाता ॥ ताहि बहुरि समभावन लयऊ। कछु भय
नहिं काहे भय कयऊ २६० प्रमदातौन तहां चलिआई। प्रथम-
हि लखी सूनुनरराई ॥ तालवृंतलै बीजनलागी। मोहित देखि
प्रेमसोपागी २६१ तासों कहन ऋतध्वज लयऊ। याहिमोहका-
रण किहि भयऊ ॥ सुनि किञ्चिल्लज्जान्वितबाला। कहतसु-
भई सखी निज हाला २६२ विश्वावसुगन्धर्वनभूपा। मदालसा

कन्या सुख रूपा ॥ गई एकदिन सो फुलवाई । शोभा देखत फि-
रतमहाई २६३ वज्रकेतु दानवसुतजोई । गोपा तालकेतु तहँ
सोई ॥ करिमाया इतकोहरिलायो । हौंहू तहां जानि नहिंपायो
२६४ करे विवाह त्रयोदश दीना । तालायक नहिं नारिनवी-
ना ॥ वेदश्रुती शूद्र जिमि कोई । चाहत दैत्यरमणि यह सोई
२६५ प्रथमहि देह तजन यह लागी । समुझायो सुरभी बड़भा-
गी ॥ पावै तुमहिं दैत्य यह नाहीं । जो मारिहि शरघातनमाहीं
२६६ मर्त्यलोकसोऐहैसोई । भर्त्ताअल्पकालमेंहोई ॥ मैं कुराडला
सखी हौं याकी । पत्नी पुष्कर मालिन ताकी २६७ जबते मम
पति शुभविदारा । तीर्थनफिरौं किये आचारा ॥ चरौं दिव्य गति
हित परलोका । यासखिहेत रहौं इहिओका २६८ यह पाताल-
केतु अघधामा । वाणविद्ध आयो याठामा ॥ तापीछे आपहुइत
आये । करधनुवाण अश्वसहधाये २६९ दो० । मुनीनां रक्षाकर-
ण कोऊवाणप्रहार । यहजो मूर्च्छागतभई सुनियेतौनविचार २७०
चौ० । तुमहिं देखि अतिही सुखपायो । देवपुत्र समरूप सुहा-
यो ॥ वाक्यादिक गुण शील सुभाऊ । देखतभई सकल सति-
भाऊ २७१ मारोवाण असुरके जोई । भार्य्या अवताकी यहहो-
ई ॥ आयोमोहताहिके कारण । जीवतभरि नहिं सकिहिउवारण
२७२ तुमसों लगो अधिक नवनेहा । भर्त्ता अन्यहोइ दुखएहा ॥
जीवतभरिरहिहै दुखसोई । सुरभीवचन नान्यथा होई २७३ मोसों
यासों प्रीति महाई । तनद्वै एकैचित्तलखाई ॥ सखी चीर पावै
पति मनको । तपहित जाव तबहिं हमवनको २७४ तुम कोहौ
किमर्थ इतआये । देव दैत्य गंधर्व सुहाये ॥ पन्नगकिन्नर कोवा
कहिये । इत न आव नर वपु नहिं लहिये २७५ करिये मोसन
सकल प्रकाशा । जो सुनि होइ सकलभ्रमनाशा ॥ कुवलयाश्व
सुनिकै तियवानी । कहतभये निजकथा बखानी २७६ नृपति
शत्रुजित पुत्र कहाये । पिता कहे मुनि रक्षण आये ॥ अब
काऊ शूकर वपु तहँवां । रक्षा करत रहे हम जहँवां २७७

दो०। चन्द्र अर्द्ध आकार शर मारो तेज अपार। ता लागे भागत भयो गये पृष्ठ हय डार २७८ कूदि धसे सो गर्त में हौं हूँ अश्वसमेत। भ्रमन लगे अति तिमिरमें लह्यो प्रकाश पुनि एत २७६ इहाँ आइ तुमको लखो पूँछे कहे न बैन। आइ छपानी भवन में हमहुँ आव यो ऐन २८० जो मोसन पूँछत भई सो मैं कियो बखान। नहिं गन्धर्व न देव हम मानुप लीजिय मान २८१ नागपुत्र इमि कहत भे सुनो कथा पितु एह। देखत कन्या हृष्टमन सखी मदन अतिनेह २८२ लज्जावश बोलत नहीं देखि कुण्डला तौन। कहे ऋतध्वजसे वचन सुरभी भाषे जौन २८३ सुमुखी सुभ्रूचन्द्रते अधिक कांतिहै जासु। हनो बाण तुम असुरतन करो करग्रहतासु २८४ मैंपरवान सुराज सुत कहत भयो इमि बैन। चिन्त कुण्डला तुम्बुरहि त्वत्कुलगुरु गुणऐन २८५ चौ०। प्राप्तभयो तुम्बुर तहँ आई। लिये समित्कुश आनँद पाई॥ पावक वारि हवनसो कीन्हा। कन्यादान ब्याह विधि दीन्हा २८६ पुनि सो जात भयो तपहेता। कह कुण्डला सनेह समेता॥ मैं कृतार्थ सखि भई विशेखी। इन सुत सहित तुमहिं अवरेखी २८७ हेसखि अवतपहित मैं जैहों। तीर्थ तोय तनपापनशैहों॥ जातसमय बोली मृदुबानी। राजसुवनसों आनँद मानी २८८ नहिं उपदेश योगहैं आपू। बुद्धिमान अतिप्रकट प्रतापू॥ तद्यपि अरि सूदन कछु भाषिय। भार्य्या भरिय रच्छि गृहराखिय २८९ सिद्धि धर्मकामार्थहु हेता। भार्य्यासदासहायक देता॥ तिय पति प्रीति होइ अति अज्ञा। तब धर्म्मार्थ काम कर संज्ञा २९० होइ धर्म भार्य्या बिन कैसे। पतिबिन अर्थ काम नहिंतैसे॥ पतिबिन तियात्रिवर्ग किमि साधा। पूजन अतिथ भतिय बिन बाधा २९१ लावै अर्थ पुरुष गृहजोई। भार्य्याबिना नाश सोहोई॥ बिन दोनों त्रिवर्ग सिधि नाहीं। तातेमैं चरणों तुमपाहीं २९२ धन सुख पुत्रबढौयासंगा। यहकहि परिष्वज्य सखि अंगा॥ करि परनाम दिव्यगति धाई। सूनहु पिता।

अब कथा सुहाई २९३ तामारूप्य तुरङ्गमऊपर। चाहो चलन ऋ-
तध्वज भूपर॥ दैत्यन जानितिही चणपाये। सदल पतालके-
तुसहधाये २९४ तिष्ठतिष्ठलै तिय कहँ जाता। यह कहि करतभये
शर घाता॥ गदा शूल शर परिघ अपारा। मारत भये एकहीबा
रा २९५ देखि ऋतध्वज अस्त्र अपारा। निज शरजाल काटि म-
हि डारा॥ अस्त्र शस्त्र संछन्न अपारा। चणमहँ पूरितभयो पता-
रा २९६ हँसि हँसि बाण तजत रणधीरा। कटि कटि गिरत सु-
कोटिनबीरा॥ त्वाष्ट्र अस्त्र पुनि लैबलधामा। बधतभयो दान-
वसंग्रामा २९७ ज्वालमाल अति बाण कराला। दैत्य अस्थि
पूरेपाताला॥ सातिय ऋतध्वज अश्वसवारा। सह पातालकेतु
बधिडारा २९८ मारगनिही भूमिपुनिआये। गेपितुपुर तिययुतअ-
वि छाये॥ शीश पिता चरणन में नायो। बहुरिसकल वृत्तान्तसु-
नायो २९९ लखीकुण्डला जाइपताला। पाई मदालसा सुखशा
ला॥ जाबिधिभयो असुरसंग्रामा। मारोदैत्यन को बलधामा ३००
जाबिधि घूमि बहुरि घरआये। बरणि पितासों सकल सुनाये॥
सुनत पिता अति आनँद पायो। बारबार सुत कंठलगायो ३०१
कीन्ह बड़ाई बिबिध प्रकारा। भुवन प्रवेश कराव भुवारा॥ रेमे
सह भार्य्या पितुपुरमें। बनोद्यान सानुषु गिरिवरमें ३०२ बोले
नाग सुवन मृदुबैना। सुनहुकथा पितु आनँद ऐना॥ याबिधि
बहुत दिवस चलि गयऊ। कहत नृपति सुत सनपुनि भयऊ
३०३ रक्षा विप्रनके हित जैये। अश्वारूढ़ जगत यशपैये॥
शतसो दानवपापनधारी। तिनकरि विप्रनहोइँ दुखारी ३०४
सुनत ऋतध्वज आनँद पायो। पूरण पुहुमी जाइ मँझायो॥
मुनिन काहँ दीन्हो सुखभारी। कोटिन पापी असुर संहारी
३०५ परिक्रम्य पुहुमी घरआये। पिता चरण में शीशनवा-
ये॥ याबिधि नृपति सुवन सुखभारी। रेमे सहमदालसा
नारी ३०६ एकदिवस यमुना तट गयऊ। आश्रम एक
विलोकत भयऊ॥ रह पातालकेतुकरभाई। तालकेतु जिहि

नाम कहाई ३०७ मायावी दानव मुनि रूपा । बोलत भयो देखिसुत भूपा ॥ राजपुत्र तुमसों कछु कहिये । इच्छाहोइ करिय मुद लहिये ३०८ वरुण यज्ञ चाहत मनकीजै । ताहित आभूषण निज दीजै ॥ जल में जाइ यज्ञ हमकरिये । रक्षाइत तबलगि चित धरिये ३०९ ग्रीवाभूषण दैपरनामा । करिबोलत भे वचन ललामा ॥ जाहुयज्ञ चितदै तुम करिये । तबलगि हम रक्षा चित धरिये ३१० जबलगि तुमएहौ इतनाहीं । तबलगि कतहूँ ना हम जाहीं ॥ सो सुनतै मन आनँद लीन्हा । सुमिरण पूर्व बैरको कीन्हा ३११ इन देखत जलगयो समाई । मदालसा ढिगगो सो धाई ॥ तिनसों वचन कहत इमि भयऊ । कुवलयाश्व मम आश्रम गयऊ ३१२ आश्रम निकट असुर बरजोरा । आयो भयो युद्ध अतिघोरा ॥ मायावी त्रिशूल उरमारा । मरत भयो तहँ भूपकुमारा ३१३ व्याकुल होत भयो अतिजबहीं । दियो मोहिं आभूषण तबहीं ॥ दाहशूद्र तापसतहँ कीन्हो । दुखित अश्व अति दानव लीन्हो ३१४ यह मैं निज नेत्रन सों देखा । कृत्य होइ सो करिय विशेखा ॥ निश्चयार्थ आभूषण लीजै । हमलै कहा सुवर्णहि कीजै ३१५ नागसुवन बोले सुख पाई । सुनहु पिता यह कथा सुहाई ॥ कण्ठाभूषण धरिभूमाहीं । जात भयो निज आश्रम काहीं ३१६ मूर्च्छितलोग गिरे भूमाहीं । तन धन भूलि गेह सुधिनाहीं ॥ राजा रानि विकल अतिभयऊ । शोक समुद्र नगर भरि गयऊ ३१७ मदालसा पति माला देखी । निहत पतिहि पुनि सुनोविशेखी ॥ दीन्हों त्यागि तुरत निज प्राना । शोक व्याघ्र नृप भवन समाना ३१८ जाविधि शोक भूपगृह छावा । ताही विधि घरघर अधिकावा ॥ राजा सुनत भये दुख पागे । विन पति मदालसा तनुत्यागे ३१९ शोकाकुल जन सकल निहारा । भूपति वचनकहे तिहिवारा ॥ नाहिंरोवहु सुनिये मम वैना । शोचनीय सुत तियचुत हैना ३२० मम सेवक मम आज्ञाकारी । अनिनतरर विप्रन रखवारी ॥ पा-

य मोहिंहै एहा। त्यागौं योषित भोग सनेहा ३३५ ताउपकार तुल्य यह हैना। निपुर उपकारहि सममैना॥ यासदर्थ त्यागे निज प्राना। ताके अर्थ अल्प यहजाना ३३६ बोले पुत्र अश्वतरनागा। यविधिकरि निश्चय बड़भागा॥ उदक दान आदिक करि सोई। बोलत भये ऋतध्वज जोई ३३७ मदालसायादि तनु तजि दीन्हा। यहसंकल्प तदा हम कीन्हा॥ नान्यास्मिन्जन्म निसहचारिणि। ता विनहोवे अपर विहारिणि ३३८ धर्मसवारणी पत्नी त्यागी। गजगामिनि पिकबैनि सभागी॥ काञ्ची आङ्गी करिहौं नारी। सत्यवचन निज हिये सँभारी ३३९ बोले नागपुत्र पितु पाहीं। ताविन तजे भोग सबकाहीं॥ क्रीड़ा करत वयस्यन संगा। बरणौ हमसो सकल प्रसंगा ३४० यहकारज ताको है जोई। करै कौन ईश्वरविन सोई॥ या बिधिसुनि पुत्रन मुख बानी। नागराजबोल्यौ सुखमानी ३४१ दो०। करैकर्म आरंभनर निजपौरुष अनुसार। हान्याहानि सुशक्यहनहिंअशक्यविचार ३४२ ताते करिहैं यतनहम सुनहु पुत्रमम बैन। तपचर्य्या मनलाइकै यह असाध्यकछुहैन ३४३ या विधि कहि नागेन्द्र पुनि तीरथ हिमवत जाइ। दुश्चरतपतेपतहाँ बाणी पदमन लाइ ३४४ तन्मन नियताहार पुनि करत्रिशार अस्नान। नागे अश्वतरकरतभो हंसयानिगुणगान ३४५ छन्दरामगीतिका। देवि आराधनकरत हमजगद्धात्रिसुखेन। बारबारप्रणामशिर सोस्तोत्र पाठसुखेन॥ यथाअंतर दारुपावक प्रकटनाहिं लखात। तथा सतअरुअसतजगयहआपुहीके गात ३४६ हौत्वमक्षरपरसरस्वति सब प्रतिष्ठितयंत्र। परम अक्षर देविथित परमाणुवत हृतत्र॥ त्वमोंकार स्वरूपसंयुत तीनिवर्ण सुजौन। लोकतीनहुँवेदतीनहुँ पावकत्रयतौन ३४७ तीनिविद्यातीनियोतिप तीनिवर्णहुधर्म्म। तीनियमगुणकाल आश्रम अवस्था त्रयपर्म॥ शब्द अहनिशि पितरतारागणग्रहादि अनूप। इन्द्रवरुणकुबेर रविशशि अनिलहैं तवरूप ३४८ येअर्थनित्यविनाशहैजे स्थूलसूक्ष्महुजौन। भूमि

दूजेअन्तरिक्षहुप्राप्तितुमसो तौन॥ जोअमूर्तहु मूर्तिमानहु एकहू बहुजोइ। दिव्यहूभुवि अन्यथलहू प्राप्त तुमसों सोइ ३४९ दो०। व्रचनगिरा बचशारदा हंसजानिजै देवि।इलाब्रह्मरानी सुखदब्रदब्राह्मिसुरसेवि ३५० वाक्यभारतीसरस्वतीगीर्वाणिजय हेत। जलजमाल शोभितगले भालबिन्दु छबिदेत ३५१ कमल नयन राकेशमुख कनक देह छबिऐन। बीणापुस्तकधारिणी जियालाल सुखदैन ३५२ अगम अपार समुद्रजग पूरण नौका जौन। अभिलाषा पूरण करिय मोउरमें है तौन ३५३ या बिधि अस्तुति सुनतही सरस्वती तिहिकाल। प्रगटि अश्वतरनागसों बोली बचनरसाल ३५४ चौ०। चाहौवर उरगाधिप जोई। मांगौदेव आजु हमसोई॥ कहो अश्वतरगी सुनिलेहू। कम्बल भ्रातासहवर देहू ३५५ स्वरसम्बन्ध सकल ममदीजै। एती कृपा इलाअब कीजै॥ सरस्वती कह दीन्हो सोई। ग्रामराग सप्तस्वर जोई ३५६ गीतक सप्त मूर्च्छना साता। दिय उञ्चास ताल पुनि ताता॥ ग्रामत्रयदीन्हो सुखदाई। कम्बल सहगाता युग भाई ३५७ ताल तीनि चहुपद लयतीनी। तोद्यचतुर्विधयतित्रयदीनी॥ याकेपरे अपर है जोई। मत्प्रसादजानहु तुम सोई ३५८ सबके प्रणेतार द्वौहवै हौ। भूपाताल स्वर्ग यश छैहौ॥ या विधि वरदै पुनि सुखदानी। अंतरधान भईतहँ बानी ३५९ दोऊनाग भये उठिठाढ़े। तालस्वर आनँद उरबाढे॥ गे कैलास शिखरसुखपागे। तन्त्रीलय सहगावन लागे ३६० अनङ्गाङ्गहरहरअवराधन। यत्न समेत करत भे साधन॥ प्रात निशा मध्याह्नहुमाहीं। संध्यनमहँ पुनि गान कराहीं ३६१ दो०। स्तूयमान बहुकाल में आनन्दित वृषकेतु। बोलतभे वरमांगहू जो चाहौ निज हेतु ३६२ करिप्रणाम सुनि अश्वतर कम्बल सहित सुखेन। कहत भये शितिकंठसन जो चाहत बरलेन ३६३ जो प्रसन्न त्र्यम्बक अहौ दवदेव त्रिपुरारि। अभिलाषितवर दीजिये कुवलयाश्व की नारि ३६४ चौ०। मरीमदालस जाकर

नाम। तैसियहोइ शीलगुणधामा ॥ सोइ अवस्थामें तनुधारी। होवैकन्या आइ हमारी ३६५ कह शिव सुनु पवनाशन बानी। तेही भांति होइ सुखदानी ॥ मत्प्रसाद कछु नहिं सन्देहा। सुनहु परन्तु वचनममएहा ३६६ जौने दिवस श्राद्धतुम करिऔ। मध्यम पिण्ड भक्तिमुदभरिऔ ॥ यहीकामना करिमन ध्याना। तर्पण पितृ करिय सुखदाना ३६७ प्रगट होइहै सो कल्याणी। मध्यम फण प्रसाद ममबाणी ॥ शिववाणी सुनि दोनों भाई। गे पाताल लोक सुखपाई ३६८ करत श्राद्ध उरगाधिप भयऊ। मध्यप पिण्ड अशन पुनि कयऊ ॥ सोई कामध्यान मन लयऊ। पुनि निश्वसत मध्यफणभयऊ ३६९ तासों प्रकट भई सुकुमारी। मदलसाअतिसुन्दरनारी ॥ काहूसों नाहीं तिनभाखा। मन्दिर गुप्त तियन करिराखा ३७० नागपुत्र दोऊ नितआवैं। नृपसुतसाथ क्रीड़िघरजावैं॥ एकदिवसबोले अहिराई। निजपुत्रन सों आनँद पाई ३७१ तुम सों कहा पूर्व हम जोई। अब कारज कीजिय किन सोई ॥ युवयोरुपकारी नृप वारा। लाइय किन अवहित उपकारा ३७२ दो०। कुवलयाश्व कहँ लाइये मम समीप सुत जाइ। सुनत हर्षयुत नाग सुत गे नृप भुवनसिधाइ ३७३ चौ०। कछुक कथा कहि तहँ अति हितसों। निज गृह चलन कहो नृप सुत सों ॥ सुनत ऋतध्वज कहसमुझाई। यह घर तुम्हरोहीहै भाई ३७४ धन वाहन वस्त्रादिक जोई। मम तुम्हार यह भेद न होई ॥ हम कहँ दीन्ह चहौ तुम जोई। इतहीं सो लैदीजिय सोई ३७५ मद्गृह जो न अपन करि मानत। मत्प्रिय अपर अनुग्रह ठानत ॥ तौ ममत्व मम गृह धनकरिये। तब मम मम निज धन चित धरिये ३७६ तुम दोऊ मम प्राण समाना। भिन्न अर्थ जनि करिय बखाना ॥ सुनि सनेह युत नागकुमारा। कहत सत्य जो आपु उचारा ३७७ अस मन्मनसि सदाहै एहा। मम तवएक न कछु सन्देहा ॥ पितु समीप रावर यश गायो। सुनत पिता अति आनँदपायो ३७८ मोम-

यदिदर्शय ऐ मोहिंपर गुनोअनुग्रहसोइ ४०७ चौ० । कहो अश्व-तरसुनियेएहा । मायालखन चहतयुतनेहा ॥ तातेतुमहिंलखावों सोई । गुरुसमान अभ्यागतहोई ४०८ लायेकहि मदालसाताहीं । कहकछु नृपसुत मोहन काहीं ॥ देखिय राजसुवन युतनेहा । है मदालसाकीनहिं एहा ४०९ लखि निर्लज्ज ऋतध्वज धाये । प्रिया प्रियाकहि सन्मुखआये ॥ देखत नागराज कह बैना । माया छुवन योगयह हैना ४१० मैंतुमसों प्रथमहिकह सोई । अन्तर्द्धान छुवत यहहोई ॥ सुनि भूमुर्च्छि ऋतध्वज आये । हाप्रियेति कहि बचन सुनाये ४११ नागनरेश देखितहँजाई । कहो ऋतध्वजको समुझाई ॥ मृतसंजीवन कथा सुनाई । सुनत प्रहृष्ट उठोनरराई ४१२ कान्तापाइ भयो सुख जोई । ताको वरणिसकै किमिकोई ॥ कीन्हप्रणामनागपति काहीं । चढ़िहय सतियगयो पितुपाहीं ४१३ तिनसों जाइकहो यह हाला । आनँद अमित लहो महिपाला ॥ मदालसा चरणन शिरनायो । श्वश्रू श्वशुरमहासुखपायो ४१४ स्वजन समाज मिली पुनि सोई । पूजन यथान्याय किय जोई ॥ पुरमहँ भये महोत्सव नाना । जियालाल किमि करै बखाना ४१५ पाइ ऋतध्वज निजवर नारी । रमे महा मोद उरधारी ॥ निर्झर शैल नदी बहुकानन । रम्यभूमि निरखत बिधुआनन ४१६ भूप शत्रुजित बहुदिनएहा । पालीभूमि तजी पुनि देहा ॥ नाम ऋतध्वज जो सुतराई । कीन्ह तिलक पुरवासिनआई ४१७ भये ऋतध्वज जबमहिपाला । पुत्रसमान प्रजानितपाला ॥ तिनके प्रथम पुत्रजब भयऊ । विक्रान्ताभिधकहन सुलयऊ ४१८ मदालसा सुनि नाम जहासा । पुनिताके कियज्ञान प्रकासा ॥ सुतोत्तानशायी कहँ देखी । कहतभई इमि बचन बिशेखी ४१९ छन्द रामगीतिका । शुद्ध है रेताततूतवनाम है रचनैव । देह पंचात्मकमिदं तव अस्यतूहै नैव ॥ रुदतहै किहिहेत तूनहिं भूपसूनुकदापि । त्रिविध गुणतें प्रगट कीन्हे अगुण रहत तथापि ॥ ४२० ॥

भूत भूतनसों जुदुर्बल वृद्धिजातसदाइ। अन्नजल दानादि नहिं तववृद्धिहानिकदाइ ॥ कंचुकेतन शीर्य्यमाणे मूढ़तामागच्छ। कर्म शुभ अरु अशुभ सञ्चित मिलत तनुमालि स्वच्छ ४२१ तात किञ्चितनयअम्वादयित कबहुँ ममेति। भूतसङ्घ सुमान्य है तू कथनजोहैनेति॥ दुःखको दुखनाशके हितभोगसुखकोजान। सोइ सुखदुखहोइ प्रगट गुणतनहिंअज्ञान ४२२ दो०। हास्यनारि लखि नैनयुग अत्युज्ज्वल सुखदान। पीनकुचादिक पिशिततन तारतिनरककिआन ४२३ यानभूमि गत यानतनु अन्यपुरुष बसदेह। करत ममत्वन देहवत महामूढ़है एह ४२४ चौ०। या विधि वर्द्धमान सुतकाहीं। दिय उपदेश विविध विधि ताहीं॥ जन्म प्रभृति बोधित सुखपागो। निर्म्मगाहस्थ्यमति त्यागो। ४२५ दूसर पुत्रभयो पुनितासू। नामसुबाहुधरो पितुजासू॥ मदालसापुनि कीन्हो हासा। ताहूके किय ज्ञान प्रकासा ४२६ पुत्रतृतीय भयो पुनि जबहीं। भूप शत्रु मर्दन कह. तबहीं॥ हँसी मदालसाति सो सुनिकै। दीन्हों ज्ञान पूर्ववत पुनिकै४२७ पुत्र चतुर्थहोत जब भयऊ। नाम विचार करन नृप लयऊ॥ किंचिद्धास मदालस देखी। बोलतभे भूपाल विशेखी ४२८ जबहम नाम सुतनको धारा। तुमकिय हास्य देखि तिहिबारा॥ अरि मर्दन विक्रान्त सुबाहू। शोभन नाम कहे सउछाहू ४२९ क्षत्रिन योग्य कहे हम सोई। कहिय हास्य कारण जोहोई॥ असतहोइँ जो एते नामा। याकर नाम कहो तुमभामा ४३० सुनत मदालसाति हर्षानी। भूपति सों बोली इमि बानी॥ आज्ञा जौन आपुकी होई। करिब हमहिं शीश धरि सोई ४३१ नाम अलर्क होइ याकेरा। जगमें प्रगटिहि सुयश घनेरा॥ हँसि कै भूपकहो तिहिबारा। अर्थनामको कौन विचारा ४३२ महाराज सुनिये कहसोई। हैं बिनअर्थ कहे तुम जोई॥ क्रान्ति नाम गतिकेर कहावै। देशान्तर महँ जोफिरि आवै ४३३ दो०। देहेश्वर सर्वगसदा करै कबहूँनहिं गौन। नामअसत विक्रान्तयह

ताते धारोजौन ४३४ कहो सुबाहुजुनाम तिहिसोऊ नाथनिरर्थ । जबअमूर्त्त पूरुषअहै ताहिसुबाहुकि मर्थ ४३५ चौ० । नाम तृतिय अरिमर्दनजोई । सोभूपालअर्थ बिनहोई ॥ पूरुषएकबसतसबदेहा । राजन शत्रु मित्रको एहा ४३६ प्राणिनसों प्राणी नशिजावै । है असूर्त्त सो कहानशावै ॥ पृथकभाव क्रोधादिक सोई । ताते नाम अर्थ बिनजोई ४३७ असतनाम जोहित व्यवहारा । किमि अलर्क बिन अर्थ विचारा ॥ याबिधि सुनि महिषी मुखबानी । तथेत्याह भूपति सुखदानी ४३८ ताहू को सिख देबे लागी । पूर्व सुतनवत सो बड़भागी ॥ यह लखि कहै नृपति युत धर्म्मा । मूढ़ काहकरत यह कर्म्मा ४३९ पूरबपुत्र जौन बिधि भयऊ । ताहीभाँति करन पुनि लयऊ ॥ मतिप्रियकारजको जो कीजै । तो प्रवृत्ति मारग इहि दीजै ४४० है प्रवृत्ति मारग नहिंजहँवाँ । देवपितृ कारज नहिं तहँहाँ ॥ क्षत्रयोनि के कारज जेते । तत्सम्यक प्रतिपादयएते ४४१ मदालसा सुनि पतिबचजोई । कहोल्लाप बादिदि सुत सोई ॥ सुतबर्द्धस्व भर्त्तुमम मनको । आनन्दयं विभुकरि कर्म्मन को ४४२ मित्रन को कीजिय उपकारा । दुर्हृदनाश करिय असिधारा ॥ धन्यपुत्र बसुधा अरिहीना । पालयतासि चिरैकप्रवीना ४४३ तत्पालनते लह सुख भोगा । पुनि अमरत्वधर्म के योगा ॥ तृप्त प्रथम बिप्रनको करियो । तर्पण बन्धु बहुरिमन धरियो ४४४ परब्रह्म चिन्तन चित कीजो । चित्तपरस्त्री में मतिदीजो ॥ यज्ञन सों देवन मुद भरियो । रण महँ शत्रुनको बध करियो ४४५ बान्धव आनन्दयबयबारा । गुरु आज्ञा पालहू कुमारा ॥ भूपित युवादार सुख दीजै । वृद्धो वासखास वनकीजै ४४६ राज्य करत मित्रन सुख दीजै । रक्षा साधुसदा सुत कीजै ॥ गो ब्राह्मण के कारज लागी । दीजिय तात देह यह त्यागी ४४७ इमिलाहिपूर्ण ज्ञानसम अर्का । प्रापित वयकौमारअलर्का ॥ कियउपनयन ऋतध्वजताको । आइप्रणामाकियो माताको ४४८ दो० । मयाअत्र कर्त्तव्य यत तनक-

हिये मोपाहिं । प्रश्रयअवनतजानिकै जासों सुख सरसाहिं ४४९ मदालसा कहसुनिय सुत राज्यतिलक को पाइ । रञ्जे प्रजासमेतनय पूर्णस्वधर्म बढ़ाइ ४५० चौ० । मंत्रिनके गुण दोषनजानै । चरसों चर अरु शत्रु विधानै ॥ मित्र बंधु विश्वासनदेई । अरि विश्वास कार्य्यहितलेई ४५१ प्रागात्मा मंत्रिण नृपजीतै । ततो भृत्य पौरन युतनीतै ॥ पुनिविरोध शत्रुनसों करई । सो राजा अतिआनँद भरई ४५२ तातें कामादिक सुतजेई । प्रथमहिंजीति नृपतिसोलेई ॥ कामादिक करिजित नृपजोई । ताकरनाश अवशि सुतहोई ४५३ कामक्रोध मदलोभहु जेते । मानहर्ष वैरीनृप तेते ॥ कामासक्तपाण्डुवध भयऊ । क्रोधादनुह्रादसुतहयऊ ४५४ लोभति ऐल नृपति बधपावा । मदसों वेनहि द्विजन नशावा ॥ अनायुपा पुत्रहियुत माना । हर्षातपुरंजयं बलिजाना ४५५ या विधिजीति पुत्र सुखपावै । भूलेभूपति अवशिनशावै ॥ शक्रअर्क यम सोमसमीरा । पाँचरूपधारैनृपधीरा ४५६ दो० । उत्पथगामी धर्मगत मूढ़मनुजहैं जौन । धर्म्ममार्ग नृपलावई जातस्वर्गहै तौन ४५७ वर्णधर्म आश्रमतथा सीदतजासुनराजि । वत्सधन्य सो भूपहै जातस्वर्ग सुखसाजि ४५८ या विधिकछु वर्णनकिये धर्म नृपनके पर्म । सुनिअलर्क पूछतभये वर्णाश्रमके धर्म ४५९ मदालसा कह हर्षयुत सुनिये पुत्रप्रवीन । यज्ञाध्ययनहु दानहू विप्रकर्म्म हैं तीन ४६० याजन अध्यापन सहित शुद्ध प्रतिग्रह जौन । तीनि जीविकाहेतहैं मैं वरणीसुत तौन ४६१ दानाध्ययनहु यज्ञहू क्षत्री के अपि तीन । भूरक्षा कर धर्म्म युत शस्त्र जीविका कीन ४६२ यज्ञाध्ययनहु दानहू वैश्यस्यापि त्रिधैव । पशु पालन वाणिज्य कृषि है जीविका सदैव ४६३ दान यज्ञ सह शूद्र कर सेवा अपर द्विजाति । कारुकर्म्म है जीविका अंभिज्ञ धर्म्म लखाति ४६४ वर्ण धर्म सेवन किये पावत सिधि सब काल । नर प्रतिषिद्धनिषेवनै प्रेत्य नरक गत हाल ४६५ नहिं व्रतबंध द्विजन्म कर होवै यावत्काल । काम चेष्टोक्ति भक्षण

नेहयुत देवा। पुष्प सुगन्ध अर्पिकर सेवा ४८१ अगिन हवन करिपुनि बलि देवै। गृहमधि विश्वदेव अजसेवै ॥ धन्वन्तरि बलिदे ईशाने। पूरुवशक्र याम्ययम जाने ४८२ दो०। पश्चिम वरुणहिदेइ बलि सोमायोत्तरदेइ। धात्रविधात्रहि द्वारगृह बहिरर्य्यम्णहि सेइ ४८३ नक्तंचर भूतन हितै देवै बलि आकाश। दक्षिण मुख पितृन यजन करि आचमन प्रकाश ४८४ चौ०। एवं गृह देवन बलि करिकै। गृहपति शुचि होवै मुदभरिकै॥ श्वपचश्वपाक प्रादिकन काहीं। याविधि बलि दीजै भूमाहीं ४८५ बहुरि अतिथि पूजन को कीजै। अन्नवारि आदरयुत दीजै॥ जो अज्ञात नाम कुल होई। श्रान्त बुभुक्षुअकिंचन सोई ४८६ कहत अतिथि बुध ब्राह्मण काहीं। पूछिय गोत्र धर्म तिहि नाहीं॥ यथा शक्ति पूजन मनलावै। पूजेबिना महा अघ पावै ४८७ श्राद्ध नित्य गृहपालक करई। भोजन विप्रदेइ मुदभरई॥ ज्ञाति बंधु पुनि भोजन दीजै। क्षुधित वृद्ध बालक लखिलीजै ४८८ याचकान भिक्षानित दीजै। सबन पूजि भोजन पुनि कीजै॥ गाथाश्राद्ध अत्रि जो गाई। सोईमैं वरणौं सुख पाई ४८९ नित्य अपर नैमित्तिक दूजी। बहुरि नित्य नैमित्तिक तीजी॥ पञ्चयज्ञ जो प्रथम बखाना। सो सुत नित्यश्राद्ध सुखदाना ४९० पुत्र जन्म कर्म्मादिक जोई। नैमित्तिक जानिय सुत सोई॥ पर्व श्राद्धआदिक सुखदाना। सोइ नित्य नैमित्तिक जाना ४९१ नैमित्तिक नांदीमुख कीजै। पिण्डा यवदधि मिश्रितलीजै॥ एकोद्दिष्टमृताहिजानिय। पुनिपूर्णाब्द सपिण्डी मानिय ४९२ तिर्यग्योनि पुरुषहित जाना। विधियुतश्राद्ध करै यजमाना॥ जाजावस्तु तृप्तते होई। कहौं बखानि सुनियसुत सोई ४९३ भोजनान्न पुहुमी जो परई। छालतवृक्ष अंबुकण झरई॥ तृप्तिपिशाच देहगत करई। वृक्ष योनिगत नर मुद भरई ४९४ गात्र अम्बुकणिकाभूजावैं। जेसुर योनिलहे सुख पावैं॥ ये बालक अदग्ध कुलमाहीं। क्रिया अयोग्या संस्कृत आहीं ४९५

बिकिर अन्न सोते मुदभरई। संमार्जन जल भोजन करई ॥ भों
जन करि आचमन जुकरई। अपर अंघ्रि सेचन भूपरई ४९६
ब्राह्मण योन्यादिकगत जोई। पावैं तृप्ति श्राद्धवत सोई।
अन्यायोपार्जित धनजोई। तासों श्राद्धकरै नरकोई ४९७ यो
निपुष्कशादिक चाण्डाला। प्रापितहोयँ तृप्त तिहिकाला॥
शाकहु श्राद्धकरै युत श्रद्धा। कुलकश्चित्सीदति नहिं श्रद्धा४९८
प्रतिपच्छ्राद्ध किये धनहोई। द्विपद प्रदाद्वितीया सोई॥बरअर्थिनी
तृतीयाजानौ। नाशक शत्रुचतुर्थी मानौ ४९९ श्रियप्राप्नोति पं-
चमीकाहीं। षष्ठीनर पूजित जगमाहीं॥ गणाधिपत्य सप्तमीपावै।
उत्तमवृद्धिअष्टमी लावै ५०० नवमी श्राद्धकिये लहनारी। दशमी
पूर्णकामना कारी॥ एकादशी श्राद्धमनलावै। वेदाभ्याससकल
सोपावै५०१द्वादशि श्राद्धकिये जयपावै।मेधाप्रजा पशूबढ़िजा-
वै॥तेरसि श्राद्धकरै जो कोई। दीर्घायु ऐश्वर्य्यहु होई ५०२ युवा
पितृ आयुध तनत्यागा। श्राद्धचतुर्दशि कर बड़भागा॥ श्राद्ध
अमावसको करजोई। स्वर्ग कामना लह सबसोई ५०३ स्वर्ग
कृत्तिकाकरि नरपावै। रोहिणि पुत्र कामना गावै॥ओजमृगशि-
रामेंलहसोई। आर्द्राशौर्य्य श्राद्धकरि होई ५०४ क्षेत्रादिकन
पुनर्वसु लहई। पुष्ये पुष्टि श्राद्ध करिअहई॥ अश्लेषा सुन्दर
सुतदाई। मघा स्वजनकर वृद्धि सदाई ५०५ पुनिसौभाग्य फा-
ल्गुणीदेवै। श्राद्धोत्तराशीलनर लेवै॥ हस्ते श्राद्ध श्रेष्ठता होई।
चित्रारूप युक्त नर सोई ५०६ पुनि वाणिज्य लाभदा स्वाती।
कामद पुत्र विशाख लखाती॥ चक्रवर्ति कारक अनुराधा। ज्ये-
ष्ठा आधिपत्य देश्राधा ५०७ मूलेरोग्य लहै नरसोई। पूर्वापाढ़
सुयशयुत होई॥ ऋक्षोत्तरा शोकहर जानौ। श्रवणे शुभलो-
कनमनआनौ ५०८ लहै धनिष्ठामें धनभारी। वेदवित्त्व अभि-
जितसुखकारी॥ भिषक् सिद्धिवारुणे सुहाई। प्रौष्ठपदे जाविक
सुखदाई ५०९ विन्दद्गावतथोत्तर माहीं। रेवतीपु लहकुप्यसदा-
हीं॥ अश्विनीपुलह अश्वसुहाये।भरणीष्वायुलहैमुदपाये ५१०

काम्य श्राद्ध या विधिते करिये । पाइय तौन जौन मन धरिये ॥ सुनि अलर्क बोले सुखपाई । सदाचार कहिये अबमाई ५११ ताबिन इतउत है सुखनाहीं। दुराचारि हीनायु सदाहीं ॥ सुनि मदालसा कह हर्षाई । सदाचार सुनिये मनलाई ५१२ यत्न त्रिवर्ग सधनहितकरई । तासिधि इन उतहू मुदभरई ॥ चारि भाग निज अर्थ कि करिये । हितपारत्र्यभाग इक धरिये ५१३ आतम भरण द्वैभागन लीजै। मूलभूत वर्द्धन इककीजै ॥ अर्थ सुफलता हो या भांती। करै बहोरि धर्म सुखपांती ५१४ ब्रह्म मुहूरत जागै सोई । कर आचमन पूर्व सुख होई ॥ संध्या पूर्वतारसहकरई । पश्चिम सूर्य देखि मुदभरई ५१५ करै उपासन न्याय समेता। तजै अनापदि नहिं सुत चेता ॥ असतानृत पारुष्यन बोलै । असच्छास्त्रमहँ बुद्धि न डोलै ५१६ सायं प्रात होमनित कीजै। उदय अस्तरविहष्टि न दीजै ॥ केश साधना दर्शजुदेखै। दंतधावपूर्वाह्णविशेखै ५१७ तर्पणहूपूर्वाह्णेजानौ। सुनिय पुत्र कछु और बखानौ ॥ आसावसथ तीर्थ मग खेता। गो बृजनो विरसूत्र करेता ५१८ नग्न परस्त्रीको नहिं देखै। नहिं आत्मानहु शकृत विशेखै ॥ रजस्वलाहि छुवनकह वानी। नहिं देखै श्रुति कहत बखानी ५१९ मूत्र पुरीपनाप्सुकर सोई । मैथुनादि वर्जित तहँ होई ॥ पितृदेवनर पूजन करिकै। कर आहार गृही मुदभरिकै ५२० पूर्वोदङ्मुख भोजनकीजै। अन्तर्जानु राखिकर लीजै ॥ पुनि पवित्र वाग्यतसोहावै। नहिं प्रत्यक्ष लवण को खावै ५२१ नहिं अत्युष्ण अशनको कीजै। किंचिद्द्याचमन करीजै॥ खड़े चलत विरसूत्र न करिये। चचनोच्छिष्ट कदानाचरिये ५२२ स्वाध्याय वर्ज्जित पुनि तैसे। छुवै न गो विप्रानल ऐसे ॥ मस्तक निज नोच्छिष्ट छुईजै। रविशशितारा दृष्टि नहिं दीजै ५२३ भिन्नासन शय्यातज भाजन। गुर्वासन देकर अभिवादन ॥ गुरुअर्चनेकांशुक तज भोजन। नाण्णायीतनग्न ह्वैकैजन ५२४ मेहन विप्रानलना वाहिय । द्रोपाणिन

शिरनहिं खजुआइय ॥ नचाभीक्ष्णशिरसो अस्नाना। स्वाध्या-
यानध्यायन ठाना ५२५ अहोत्सर्ग उत्तर निशि दक्षे। सुप्तन-
ग्न नहिं नरग्रहपक्षे ॥ गुरुसों कहन कबहुँ कटुवादै। क्रुद्ध जा-
निकै ताहि प्रसादै ५२६ औरनसों न सुनै अपबादा। विप्रन
पथदे नृपदायादा ॥ मत्तोन्मत्त बधिर सहभारा। मूक अन्ध
विद्या आधिकारा ५२७ गुर्विणि अपरयवीयसजोई। पुंश्चलि
सहकृत बैरहुसोई ॥ बालक पतित देव अस्थाना। भूरुह चैत्य
चतुष्पथ नाना ५२८ बुध गुरुदेव आदि गृहिदेखी। करै प्रदक्षि-
ण हर्षि विशेखी ॥ बस्त्रोपानन्माल्य समेता। धृतमन्यैर्नधार
चितचेता ५२९ अलङ्कार उपवीतहु जोई। धृतमन्यैर्नधार नर
सोई ॥ पूर्णपर्वनस्वेन्द्र विचारी। तैलाभ्यङ्गनभोगेनारी ५३०
मूर्खोन्मत्तदुखी न्यूनाङ्गा। मायी अरु बिरूप अधिकाङ्गा ॥ इन
हिंदेखि उपहासन कीजै। शिष्यपुत्र बिनदण्डन दीजै ५३१
बैठिय आसन पादनटारी। कृशरमांस संयावविचारी ॥ ये
अपने हितकबहुँ न कीजै। भोजन अतिथि सदासुतदीजै ५३२
दन्तधाव पूर्वोत्तरकीजै। वचनोच्चारण तहँ न करीजै ॥ नोद-
क्प्रत्यक्शिर करि सोवै। दिक्यमेन्द्र शिर करि सुख होवै
५३३ अन्तर्जल मन्दिर वल्मीका। शौच शेष थल मूष मृती-
का ॥ वर्जित पञ्च मृदा शुचि हेता। इन तजि अन्य मृदा को
लेता ५३४ स्वप्नाध्ययनासनहु समेता। सन्ध्यन माहँ करैनहिं
एता ॥ मैथुन प्रस्थान हू न कीजै। उदकी चारि निशा तजि
दीजै ५३५ पञ्चमिहू सुत हित तज सोई। सम निशि पुत्र
विषम तिय होई ॥ निज मंगल वपु सदा बनावै। धवलाम्बर
सित पुष्प सुहावै ५३६ मूलांगुष्ठ रेख सविपाणी। ब्राह्मतीर्थ
अचमन हित प्राणी ॥ तर्ज्जन्यंगुष्ठहु माधि जोई। तीरथ पितृ
कहावत सोई ५३७ ता माधि पितृनको जलदीजै। वर्ज्जितनां-
दीमुख में कीजै ॥ अंगुल्यग्रे तीरथ देवा। तहां सुरन की क-
रिये सेवा ५३८ तीर्थ प्रजापति मूल कनिष्ठ। पूजन तिनकी

तहां वरिष्ठा ॥ कर युगपज्जलं अग्नि न लीजै। गुरु देवान्प्र-
तिपादन कीजै ५३९ बसिय तहां न चारिन जहँयदी। भिप-
गृण प्रदश्रोत्रिय नदी ॥ बसै धर्मधारक नृप जहँवां। राज्य कु-
भूप सुखकिलह तहँवां ५४० वर्ज्यावर्ज्य इत्रिविधि सुख छाये।
जियालाल संक्षेप गनाये ॥ पाइ ज्ञानमा मोसमअर्का। प्रापित
यौवन भये अलर्का ५४१ कीन्ह विवाह ऋतध्वज राजा। ति-
नके भये पुत्र सुख साजा ॥ पितु सेवा आज्ञा प्रतिपालत। भू-
लेहू अधर्म्म नहिं चालत ५४२ या विधि अमित काल चलि
गयऊ। सुत कहँ राज्य ऋतध्वज दयऊ ॥ भार्य्या सह तप हेत
सिधारे। मदालसा सुत वचन उचारे ५४३ वन्धुवियोगज दुःख
प्रकाशै। बाधा अरि अथवा धन नाशै ॥ देत अंगुलीयक तुम
काहीं। सूक्ष्माक्षर बँचियो तब ताहीं ५४४ यह कहि रत्न मुद्रिका
दीन्हों। आशिष दीन्ह गमन पुनि कीन्हों ॥ सोप्यलर्क अति
न्याय समेता। सुतवत प्रजापाल अति हेता ५४५ दुष्टन दण्ड
शिष्ट परिपाला। कीन्ही यज्ञ अमित महिपाला ॥ एवं बहुत
काल चलि गयऊ। मानहुँ एक दिवस नहिंभयऊ ५४६ या वि-
धि भूलि विषय में गयऊ। नहिं वैराग प्रगट उर भयऊ ॥ तिन
भ्राता सुबाहु सुनि एहा। जो वनबास करत तजि गेहा ५४७
तासु बोध हित कीन्ह बिचारा। शत्रु द्वार करि तौन निहारा ॥
तब सुबाहुलै काशि नरेशहि। करीचढ़ाई सदलस्वदेशहि ५४८
दूत पठायो काशि नरेशा। देहु सुबाहु काहँ अबदेशा ॥ सुनत
अलर्क दूत मुख बानी। तासों याविधि कहो बखानी ५४९
ममअग्रज मो ढिग चलिआवैं। करि सौहार्द कहै तब पावैं ॥
भय करिकै यह राज्य न देहौं। क्षत्री कुल में अयश न लेहौं
५५० मांगो नहिं सुबाहु तापाहीं। क्षत्रीधर्म होत इमि
नाहीं ॥ तबहिं सैन्य लै काशि नरेशा। घेरतभये सकल सो
देशा ५५१ दुर्गपाल चाटकी समेता। कीन्हें बश भूपति नय
वेता ॥ साम दाम दण्डहु मन धरिकै। कीन्हे स्ववश भेद

धि करिकै५५२ रहो अलर्क अल्पदल सोई। कोशक्षय दिन
हुन तिन होई॥ आरेसोपुर आवृत पुनिदेखा। मानसउपजो
शोक बिशेखा ५५३ सो मुद्रिका समुझि दुख लीन्ही। माता
मदालसा जो दीन्ही॥ करि अस्नान पवित्र सुहोई। बांचतभे
सूक्ष्माक्षर सोई ५५४ त्यागैसङ्गसकै नहिंत्यागी। तौ सत्सङ्गकरै
हितलागी॥ त्यागै सकल कामनासोई। त्यागे त्यागयदा नहिं
होई ५५५ काश्जकरै मुमुक्षाहेतू। पढ़िबिचार किय नृप कुलके-
तू॥ गुनिमुमुक्षु सतसंगातितेरे। निकट जानअह साधूकेरे ५५६
पीड़ित दत्तात्रेय समीपा। जातभयो भूपति कुलदीपा॥ हाथ
जोरिकह वचन नृपाला। दुःखनाश ममकरिय कृपाला ५५७
दत्तात्रेय कह्यो मुनिबानी। कौनदुःख निजकहिय बखानी॥ या
बिधि सुनत दत्तमुखबानी। बोले मनविचारि सुखमानी ५५८
नोर्वीजलख अनिल शिखिदुक्खा। किन्तु चहत शारीरिक सु-
क्खा॥ या पञ्चके सुखा सुख जेते। यांतिन्यून अतिरिक्तां ते-
ते ५५९ दुख सुख एकौ मोमे नाहीं। दुखसुखहैं केवल मनमाहीं
हीं॥ अहंकार मनबुधि हमनाहीं। अन्तष्करणज दुखमनमाहीं
५६० सोपारक्यन कदालखाती। मौनिज दुःखगुणौं किहिभाँ-
ती॥ अग्रजकरै राज्यकीइक्षा। कामन अत्रभई मनदिक्षा ५६
नहिं शिरमांस अस्थिकरजाके। किमि नागाश्व रथादिकताके
तातें रिन्नमैस्ति सुख दुःखा। पुरचल कोशादिक जेसुःखा ५
यथा कमराडलु घटि घटमाहीं। एकविषयत बहुभाँति लखाहीं
तथा सुबाहु काशिपति हौंहौं। देहभेद शरीर न जोहौं ५
यह कहिकरि दत्ताहि प्रणामा। बोलतभे पुनि वचन ललाम
तुमहिं देखि सबदुःखपलाने। सुखसमुद्रमहँ आइ भुलाने
पुरुष जहँ जहँ बुद्धिलगावै। सो सोपाइ महादुखपावै॥ प्र
परे हम सुखि दुखिनाहीं। भूत तिरस्कृत गुनि दुखआहीं
दत्तात्रेय कह्यो मुनिबानी। सत्यनृपति जोकह्यबखानी॥दुः
ममइतिहै जोई। निर्ममेति निर्वृति सुखसोई ५६६ दो०

हमारीतें भयो प्रगट तुम्हारेज्ञान। ममइति प्रत्यय जिहिनशो शाल्मलि तूलसमान ५६७ अहमित्यङ्कुर होतभो स्कन्धममेति बखान। शाखा क्षेत्रगृहादिकहु पत्रनारिसुत जान ५६८ चौ०। महापत्र धन धान्यसुहाये। पुण्यापुण्य पुष्पछविछाये॥ सुख दुख फलतहँ परतलखाई। बाढ़ो वृक्षकाल बहुपाई ५६९ संसारा ध्वथके नरजोई। छाया चहत तासुकी सोई॥ भूलिज्ञान सुख कारणधावैं। सोनर आत्यंतिक किमिपावैं ५७० जेसत्सङ्गकुठार बनावैं। ममता वृक्षकाटि सुखपावैं॥ प्राप्य ब्रह्म वनशीतलकाहीं। परे बुद्धि निर्वृतिलहताहीं ५७१ दत्तात्रेय वचन इमिसुनिकै। कहोअलर्क भूपमन गुनिकै॥ भगवंस्त्वत्प्रसादको पाई। प्रगटो ज्ञानहिये ममआई ५७२ परथिरचित्त विपयसो नाहीं। छूटै किमि बंधन ममसाहीं॥ काविधि जगत जन्मनहिं होई। निर्गुणता आवै किमिसोई ५७३ ब्रह्मैकत्व होइ किहिभाँती। कहिय योग मोसन सुखपाँती॥ याचतप्रणत मोहिंगुनिस्वामी। सम्यग्ब्रूहि ज्ञाननिधि × आमी ५७४ याविधि सुनि अलर्क के बैना। बोले दत्तज्ञान सुखऐना॥ राजन सुनहु योगहम कहिये। शाश्वत ब्रह्म जाहिसो लहिये ५७५ दो०। आत्मासो आत्मा प्रथम जीतै नृपति सचेत। तिहि जीतनहित कहतहौं यत्नसुनहु अतिहेत ५७६ प्राणायामैदोंपदह किल्बिप धारण जान। विषयन प्रत्याहार करि गुणा * नीश करि ध्यान ५७७ धाम्यत दाहत दोप जिमि पर्वत धातु न जान। दोप तथेन्द्रिय नशत हैं प्राणाया मतिमान ५७८ प्रथमहिं साधन को करै प्राणायाम सुबोध। प्राणायामकहावई प्राणापान निरोध ५७९ लघुमध्युत्तम जानिये प्राणायाम त्रिधैव। तिहि प्रमाण वर्णन करों सुनु अलर्क विधि सैव ५८० लघु मात्रा द्वादश कहत मध्यम चौबिस जान। छत्तिस उत्तम मानिये प्राणायाम प्रमान ५८१ निमेपोन्मेपण कहत मात्राकी परमान। संख्या प्रा-

× आमीमोसोबंगालभापा * अनीशमाया॥

णायाम हित द्वादश मात्रिक जान ५८२ प्रथमहिं जीतै स्वेद को मध्यम वेपथु जौन। जीतिय तृतिय विषाद को क्रमते जानिय तौन ५८३ कोमल सेवा के किये हरि कुञ्जर बश होइ। जैसे तैसे प्राणहू योगिन के बश सोइ ५८४ हस्तिप नागहि बशकरत तिमियोगी निजप्रान। तस्यावस्था चारिहैं सोऊकरत बखान ५८५ ध्वस्ति प्राप्ति संवित अपर है प्रसाद सुखदान। सुनिये ताको रूप अब सोई करत बखान ५८६ कर्म इष्ट जिन के अहैं तिन फल संक्षय होइ। सोई ध्वस्ति कहावई सुनहु प्राप्ति जिमि सोइ ५८७ ऐहिक आमुष्मिक सहित कामादिकहैं जौन। रोंकि सदा योगीरहै प्राप्ति कहावत तौन ५८८ आगत अर्थ अतीतहू प्रगट गुप्त हैं जोइ। सूर्य सोम गृह गति लहै संवित सिधि है सोइ ५८९ मन प्रसन्न जासोंरहै पञ्च प्राणयुत जौन। इन्द्री इन्द्रिन अर्थ सह है प्रसाद सिधि तौन ५९० लक्षण प्राणायाम के सुनहु भूप मनलाइ। योग युक्त होते समय आसन जो सुखदाइ ५९१ पद्मासन अर्द्धासनहु स्वस्तिकआसनजान। बैठियोग जोरै तहां प्रणव हिये मधि आन ५९२ सम सम आसन होइकै उभयचरण हर सोइ। लिंग वृषणयुत पार्ष्णिनै दाबिथाणुवत होइ ५९३ किंचिदुन्नामित शिरै परसै दन्तन दन्त। नासिकाग्र अवलोकई दिशिन विलोकै सन्त ५९४ रजसों तम सत सों रजहिं जीति सत्व थिर होइ। इन्द्रिन इन्द्रिय अर्थ सों प्राणादीन्मनसोइ ५९५ कच्छपाङ्ग इव कामना हरिहर एक सदैव। आत्मा में आत्मा लखै सो शुचि नैवकदैव ५९६ सकल दोष तिहि नाशई स्वस्थ होत है तौन। परब्रह्म प्राकृत गुणन न्यारे देखत जौन ५९७ श्वास खैंचि अङ्गन प्रथम हृदि उर लावै फेरि। कण्ठ वक्र नासाग्र पुनि नेत्र भौंहँ मधि हेरि ५९८ पुनि मस्तक में लावई कछु तदुपरि लै जाइ। प्राप्य दशैता धारणा साम्यन्तर सुख पाइ ५९९ नाध्मात व्याकुल क्षुधित श्रान्त सुयोगी जौन। योग युक्त होवै कदा योग सिद्धि

हित तौन ६०० शीत उष्ण दुख वायुमें सशब्दाग्नि जलतीर।
जीर्ण गोष्ठ चौराहमें धरै ध्यान नहिं धीर ६०१ शुष्क पर्णचय
सरि तटै चिता भूमि अहिवास। सभय चैत्य वल्मीक ढिग अ-
पर कूप के पास ६०२ इन अस्थानन के विषे करै न योगाभ्याश।
तहाँ विघ्न करि होत हैं सो मैं करत प्रकाश ६०३ वाधिरत्व
जड़तांधता बुद्धिलोप मूकत्व। ज्वरहू वाधत इन थलन जे
ढूंढ़त हैं तत्व ६०४ तिन दोपन के नाश हित कहत उपाय
बखानि। योगिन के कर्त्तव्य यह लीजै मानस आनि ६०५
वात गुल्म के नाश हित उदावर्त्त हित सोइ। वात विकार अपा-
रहित खाइ यवागूसोइ ६०६ शीतौषधकर उष्णरुज शीतउष्णकर
सोइ। काष्ठ कील शिर ताड़िये लुप्तस्मृति जब होइ ६०७ सत्व
अमानुष योगितन करै प्रवेश कदाइ। वायु अग्नि की धारणा
दाहै ताहि तदाइ ६०८ याविधि रक्षा कीजिये आतम की सब
काल। मोक्ष काम धर्मार्थहित यह शरीर महिपाल ६०९ आलो-
ल्या रोग्या निठुर स्वर शुभ कान्ति प्रसाद। सुगन्धाल्प मल
मूत्रहू चिह्न योगके आद ६१० शीतोष्णादि भिरुग्रसो विचलति
वाधन यस्य। औरन सों भयभीत नहिं सिद्धि योग की तस्य
६११ योगिन हित उपसर्ग जे प्रगट होतहैं तत्र। तिनको मैं
वर्णन करहुँ सुनहु भूपमणि अत्र ६१२ काम्यक्रिया अरुकामना
यांचत मनुजन पाहिं। विद्या माया दान फल दारादिवधन
काहिं ६१३ देव देह अमरेश तनु यज्ञ रसायन जौन। मरुतउड-
नजल शिखि विशन श्राद्धादिक फल तौन ६१४ सुरपूजन व्रत
नियम फल पूर्त्तादिक यह सोइ। योगी चित्तहि जीतई जब या
विधि ते होइ ६१५ उपसर्गन सों छूटई ब्रह्मसङ्गि मन कारि। इन
उपसर्गन के तजे आवत अपर प्रचारि ६१६ त्रिगुणमयी सोजा-
निये प्रातिभ श्रावण दैव। भ्रमावर्त्त योगिन हितैं धावत पांच स-
दैव ६१७ विघ्नहेत ये योग के वरणौं तिनके रूप। काव्यशास्त्र
वेदार्थहू शिल्पादिकहु अनूप ६१८ प्रगटहोत हियमांझये प्रातिभ

तातेनाम। योजन सहसन की सुनै शब्द गुणै गुण धाम ६१९ श्रावण सोइ कहावई पुनि आठौ सिधि देख। देव दृष्टि उपसर्ग यह जानिय दैवविशेख ६२० निरालम्ब जिहिदोषकरि भ्रमतसुयोगिनचित्त। नाशहोत आचारसब भ्रम उपसर्ग सुमित्त ६२१ जलावर्त्त जिमिकोउपरि व्याकुलहोवै जीव। तमावर्त्त उपसर्ग शुनि नाशक चित्तातीव ६२२ योग विनाशक येसकल हैं उपसर्ग महान। मनमय कम्बल ओढ़ई शुक्लबर्ण मतिमान ६२३ करैचिन्तवन ब्रह्मको प्रणवहिये मधिधार। लघ्वाहार जितेन्द्रिहू करै योगपरचार ६२४ भूम्यादिकहैं धारणा सूक्ष्मसप्त शिरधार। धारि धरित्री धारणा पावै सौख्य अपार ६२५ आत्मानं उरवी लखै बंधन ताकोत्यागि। अप्सु सूक्ष्म रसकोलखै अग्निरूप सुख पागि ६२६ स्पर्शवायुमें जानिये शब्दाकाशेभ्रीन। सूक्ष्मत्यागि थूलनगहै ब्रह्माम्बुधि मनमीन ६२७ होत सूक्ष्म या भांति मन बुद्धिसूक्ष्म पुनिहोत। सप्त सूक्ष्म याबिधि तजै होवैयोग उदोत ६२८ दृष्ट्वा दृष्ट्वा सूक्ष्मये त्यक्त्वा त्यक्त्वा सिद्धि। परमगतिहियोगीलहै होइ योगकीबृद्धि ६२९ जहँ जहँ भूतनके बिषै करत राग महिपाल। तहँतहँ लहि आसक्ति को नाश होत है हाल ६३० ताते सूक्ष्मन जानिकै सक्त परस्पर त्याग। देही या विधि जो करत जात परे बड़भाग ६३१ सप्त धारणा एकही योगी त्यागत जौन। सूक्ष्म भूत लयजात है तौन तौन में तौन ६३२ अणिमाहू महिमा सहित लघिमा गरिमाजौन। प्राप्तिहु प्राकाम्येशित्वं वशित्वहू येतौन ६३३ अष्टसिद्धि येआवहीं जो सूचक निर्वाण। ताते नाहिं आवैं बढ़ैं होय नाशनहिं जाण ६३४ सप्तधारणा जानिकै योगियुक्त नहिं होइ। कनकखण्ड द्वै अग्नि दहि हो जिमि एकहि सोइ ६३५ अग्नि मिलाये अग्नि में यथा एकहीतौन। योगी या मारगचलै होतब्रह्ममय जौन ६३६ जलमेलै जल में यथा जलएकै द्वैनाहिं॥ योगीयुक्ति विचारिकै तिमि परमात्मा मा-

हिं ६३७ कह अलर्क भगवन कहिय योगीमारग जौन। चलि सीदति नहिं ब्रह्ममग सुनन चहत हमतौन ६३८ सुनत दत्त नृपसों कहो जो मानहु अपमान। अमृत सम अपमान है त्रिप सममान बखान ६३९ चक्षुपूत पादन धरै वस्त्रपूत जल पेइ। सत्यपूत वाणी कहै बुद्धिपूत चितदेइ ६४० श्राद्धयज्ञ आतिथ्यमें सुरयात्रोत्सव जोइ। सिद्धि महाजनके अरथ योगी जाइ न सोइ ६४१ करैं यथा अपमान जन चलिये मारग तौन। सतमारग भूषण करत चरै योगयुत जौन ६४२ भिक्षा लेइ गृहस्थ गृह श्रद्धधान जोहोइ। श्रोत्रिय दान्तहु होइजो अपर महात्मा सोइ ६४३ भैक्ष्य यवागू तक्रहू पावकफल औ मूल। कण प्रियंगु पिरायाकहू शक्तव योग्यनुकूल ६४४ प्रथम कछुक जल पानकरि होवैमौन सचेत। तदुपरि स्वाहा दीजिये पाँचप्राणके हेत ६४५ प्राणापान समानहू है उदान अरु व्यान। इनहित स्वाहा देइकै भोजन शेष बखान ६४६ करै वहुरि आचमनसो धरै पञ्चव्रततौन। ब्रह्मचर्य्य आस्तेय युत त्यागा लोभहु जौन ६४७ अपर अहिंसा पंचमी वहुरि नियमहैंपाँच। शौचा क्रोधाहारलघु गुरुशुश्रूपा साँच ६४८ स्वाध्याय पंचमअहै याविधि साधै ज्ञान। जोकारज साधकअहै सारभूत तिहिमान ६४९ इदंज्ञेय यह ज्ञेय है नृपित चरत इमिजौन। कल्प सहस्रहुके विषे ज्ञेय न पावततौन ६५० त्यक्त सङ्गजितक्रोधहू मूँदिबुद्धिके द्वार। लघ्वाहार जितेन्द्रिहू ध्यानमध्य मनधार ६५१ शून्य स्थल अवकाश में गुहामध्य वन माहिं। नित्ययुक्त योगीरहै धरि उर ध्यान सदाहिं ६५२ वाग्दण्ड मनदण्डहू कर्म्मदण्ड येतीन। नियत दण्ड हैं यस्य ये सत्रिदण्डि परवीन ६५३ सदसज्जग सबआत्मसम गुणअवगुणमय यस्य। याविधि देखत जौन है प्रिय आप्रियको तस्य ६५४ काञ्चन लोष्ठहु जासुसम शुद्धबुद्धि है जौन। सबभूतन में एकमति जात परमपद तौन ६५५ वेदश्रेष्ठ पुनि यज्ञ हैं

वर्ष गत अस्य ७३० कीन्हों कारज सकल मैं तवसंश्रयको पाइ । जातसिद्धिके हेतपुनि सुनिय भूप मनलाइ ७३१ त्वत्स-ङ्गमते यह किया महत्कार्य महिपाल । स्वस्तितेस्तुअबजातहौं लहौंज्ञान नरपाल ७३२ काशिराज कहकीन्हअति अलर्क को उपकार । ममउपकारन करतकिमि कीन्हींकहा विचार ७३३ ॥

दो० । फलदायक सत्सङ्गहै अफलहोतसो हैन । ताते कहिय विचारिकै महाज्ञान गुणऐन ७३४ कह सुबाहु धर्मार्थ जो काम मोक्ष हैं चारि । तीनि ह्रास को जाइहैं मुक्तिहोइ सुखकारि ७३५ कहत सोइ संक्षेप ते सुनहु नृपति मनलाइ । सुनिकै करहु बि-चार पुनि यत्न करहु सुखदाइ ७३६ मम इति प्रत्यय नाकरिय अहमिति त्यागिय सोइ । सम्यग्धर्मालोच्य कै रहै निराश्रय होइ ७३७ कस्याहंइति जानिकै आत्मा करि आलोच्य । वाह्या-न्तर्गतहू वहुरिहो आलोच्या शोच्य ७३८ अव्यक्तादिबिशेष पर अविकारी चैतन्य । व्यक्ता व्यक्तहि जानिकै जानन को नहिं अन्य ७३९ इहि जाने विज्ञात सब वरणों तुमसों जोइ । तुमसों पूँछे जात अब ज्ञान हिये तव होइ ७४० काशिराज सो भाषि इमि गे सुबाहु तिहिकाल । पूजि अलर्कहि निजपुरहि गे पुनि काशि नृपाल ७४१ पुत्र ज्येष्ठको राज्यदै गे अलर्क बनकाहँ । सिद्धि हेत सबसङ्गतजि यत्नकरतभे ताहँ ७४२ तदुपरिकाल म-हानमें ह्वै निर्द्धन्द्वसचेत । पाइ योगकी सिद्धिको लहानिर्वाण समेत ७४३ सब यह जग देखतभये सुरनर असुरहु खर्व । गुण मयपाशनमेंबँधे वध्यमान नित सर्व ७४४ पुत्र भ्रातृपर अपर य याविधि भाव विचारि । आकर्षित करणन सदा दुखित भिन्न द शिधारि ७४५ अहो कष्टकी वातहै पूर्वराज्य सुखमान । योगा सुखहै नहीं यह पीछे मैंजान ७४६ मदालसाहु सुबाहुकी क अलर्कसमेत । जियालाल वर्णनकियोदायक बुद्धिसचेत ७४७

चौ० । अवधूतदेव विप्रकीगाथा । वरणौंनाइरामपदमाथा ... ... वहलाभवखानी । याहीमें कहिहौं सुखदानी ७

दो०। दोऊ मिथिलापुर बसत दोऊ प्रिय भगवान। कृष्ण भक्ति धारण कियेपूर्णशांतगतमान७४६ तिन प्रसन्नताकेहितैरथपरचढ़ि भगवान। ऋषिन संगलै जनकपुर जातभये सुखदान ७५० वामदेव नारद सहित अत्रि कृष्णयुतराम। असित अरुणि शुकदेवहू देवगुरू सुखधाम ७५१ करावच्यवनमैत्रेययुत मगपूजित मुनिसाथ। भक्तसुखद शुभ जनकपुर पहुँचतभे यदुनाथ ७५२ ते अच्युत आये सुनत परे चरण में धाइ। श्रुतदेवहु बहुलाश्वहूतनकी दशा भुलाइ ७५३ पुरवासी आये सकल जनपद वासि समेत। लैलैभेंटै करनमें सौहँठाढ़ अतिहेत ७५४ हाथजोरि ठाढ़ेभये दोनों विप्र नरेश। हरि तिनकी गति जानिकै कियघर दुहुँन प्रवेश ७५५ निजगृह हरिआये निरखि भूपति आनँद पाइ। शुभआसन बैठाइकै धोयेपग सुखदाइ ७५६ चौ०। लोक पवित्र करन पगवारी। छिरके शिरकुटुम्ब सुदधारी॥ पूजन करत भये तिनकेरी। मालाम्बर सुगंध बहुतेरी ७५७ धूपादिक आरतीलखाये। मधुरअन्नलै अशन कराये॥ पादअङ्कलै दाबन लागे। बोलत भये प्रेमरस पागे ७५८ सब भूतानामात्मा जोई। द्रष्टा साक्षिकहावत सोई॥ सत्यकरन निज वचन सुहाये। अस्मद्दृग्गोचर प्रभुआये ७५९ जो याविधिभाषो भगवाना। मम एकांत भक्त जे नाना॥ तिनसम रमा शेष प्रियनाहीं। अज आदिक तिनसम न कदाहीं ७६० दो०। या विधि चरणांभोज युग को स्यागैमतिमान। शांतजनन निष्किंचनन मुनीनांसुखदान ७६१ योवतीर्य यदुवंश में दारुण मनुज कलेश। दुख नाशन त्रैलोकके यश छायो सब देश ७६२ तीक्ष्ण बुद्धि हे कृष्णजी है प्रणामतवहेत। नारायण अति शांतिवपु पुनि सब ऋषिन समेत ७६३ बास करिय ममधाम में कछुक दिवस यदुनाथ। चरण रेणु निज डारिकै निमिकुल करिय सनाथ ७६४ विनय सुनत भूपाल की बासकीन हरितत्र। करत सकल कल्याणभे नर नारिनके यत्र ७६५ एकरूप श्रुतदेवघर जानभ-

वर्त्म गत अस्य ७३० कीन्हों कारज सकल मैं तवसंश्रयको पाइ । जातसिद्धिके हेतपुनि सुनिय भूप मनलाइ ७३१ त्वत्सङ्गमते यह किया महत्कार्य महिपाल । स्वस्तितेस्तुअबजातहौं लहौंज्ञान नरपाल ७३२ काशिराज कहकीन्हअति अलर्क को उपकार । ममउपकारन करतकिमि कीन्हींकहा विचार ७३३ ॥

दो० । फलदायक सत्सङ्गहै अफलहोतसो हैन । ताते कहिय विचारिकै महाज्ञान गुणऐन ७३४ कह सुबाहु धर्मार्थ जो काम मोक्ष हैं चारि । तीनि ह्रास को जाइहैं मुक्तिहोइ सुखकारि ७३५ कहत सोइ संक्षेप ते सुनहु नृपति मनलाइ । सुनिकै करहु बिचार पुनि यत्न करहु सुखदाइ ७३६ मम इति प्रत्यय नाकरिय अहमिति त्यागिय सोइ । सम्यग्धर्मालोच्य कै रहै निराश्रय होइ ७३७ कस्याहंइति जानिकै आत्मा करि आलोच्य । वाह्यान्तर्गतहू वहुरिहो आलोच्या शोच्य ७३८ अव्यक्तादिबिशेष पर अविकारी चैतन्य । व्यक्ता व्यक्तहि जानिकै जानन को नहिं अन्य ७३९ इहि जाने विज्ञात सब वरणों तुमसों जोइ । तुमसों पूँछे जात अब ज्ञान हिये तव होइ ७४० काशिराज सो भाषि इमि गे सुबाहु तिहिकाल । पूजि अलर्कहि निजपुरहि गे पुनि काशि नृपाल ७४१ पुत्र ज्येष्ठको राज्यदै गे अलर्क बनकाहँ । सिद्धि हेत सवसङ्गतजि यत्नकरतभे ताहँ ७४२ तदुपरिकाल महानमें ह्वै निर्द्वन्द्वसचेत । पाइ योगकी सिद्धिको लहानिर्वाण समेत ७४३ सब यह जग देखतभये सुरनर असुरहु खर्व । गुणमयपाशनमेंबँधे वध्यमान नित सर्व ७४४ पुत्र भ्रातृपर अपर यह याविधि भाव विचारि । आकर्षित करणन सदा दुखित भिन्न दृशिधारि ७४५ अहो कष्टकी वातहै पूर्वराज्य सुखमान । योगपरे सुखहै नहीं यह पीछे मैंजान ७४६ मदालसाहु सुबाहुकी कथा अलर्कसमेत । जियालाल वर्णनकियोदायक बुद्धिसचेत ७४७ ॥

चौ० । अवश्रुतदेव विप्रकीगाथा । वरणौंनाइरामपदमाथा ॥ कथा नृपनि बहुलाश्वबखानी । याहीमें कहिहौं सुखदानी ७४८

दो०। दोऊ मिथिलापुर बसत दोऊ प्रिय भगवान। कृष्णभक्ति धारण
किये पूर्ण शांतगतमान ७४९ तिन प्रसन्नताके हितै रथपर चढ़ि भग-
वान। ऋषिन संगलै जनकपुर जातभये सुखदान ७५० वा-
मदेव नारद सहित अत्रि कृष्णयुतराम। असित अरुणि शुकदे-
वहू देवगुरू सुखधाम ७५१ कण्वच्यवनमैत्रेययुत भगपूजित
मुनिसाथ। भक्तसुखद शुभ जनकपुर पहुँचतभे यदुनाथ ७५२
ते अच्युत आये सुनत परे चरण में धाइ। श्रुतदेवहु वहुलाश्व-
हूतनकी दशा सुलाइ ७५३ पुरवासी आये सकल जनपद
वासि समेत। लैलै भेंटै करनमें सौहँठाढ़ अतिहेत ७५४ हाथजोरि
ठाढ़ेभये दोनों विप्र नरेश। हरि तिनकी गति जानिकै कियघर
दुहुँन प्रवेश ७५५ निजगृह हरिआये निरखि भूपति आनँद
पाइ। शुभआसन बैठाइकै धोयेपग सुखदाइ ७५६ चौ०। लोक
पवित्र करन पगवारी। छिरके शिरकुटुम्ब मुदधारी॥ पूजन क-
रत भये तिनकेरी। मालाम्बर सुगंध बहुतेरी ७५७ धूपादिक आ-
रतीलखाये। मधुरअन्नलै अशन कराये॥ पादअङ्कलै दाबन
लागे। बोलत भये प्रेमरस पागे ७५८ सब भूतानामात्मा जोई।
द्रष्टा साक्षिकहावत सोई॥ सत्यकरन निज वचन सुहाये। अ-
स्मदृग्गोचर प्रभुआये ७५९ जो याविधिभाषो भगवाना। मम
एकांत भक्त जे नाना॥ तिनसम रमा शेष प्रियनाहीं। अज
आदिक तिनसम न कदाहीं ७६० दो०। या विधि चरणांभोज
युग को त्यागै मतिमान। शांतजनन निष्किंचनन मुनीनां सुख-
दान ७६१ योवर्तीर्य यदुवंश में दारण मनुज कलेश। दुख
नाशन त्रैलोकके यश छायो सब देश ७६२ तीक्ष्ण बुद्धि हे कृ-
ष्णजी है प्रणामसतबहेत। नारायण अति शांतिवपु पुनि सब ऋ-
षिन समेत ७६३ वास करिय ममधाम में कछुक दिवस यदुना-
थ। चरण रेणु निज डारिकै निमिकुल करिय सनाथ ७६४
विनय सुनत भूपाल की वासकीन हरितत्र। करत सकल
कल्याणभे नर नारिनके यत्र ७६५ एकरूप श्रुतदेवघर जातभ-

ये भगवान । निजगृह आये जानिकै पूजे जनक समान ७६६ मुनिन काहँ पूजनाकियो नृत्यकियो सुखपाइ । बिबिधभांति पुनि पूजियो शुभ आसन बैठाइ ७६७ पुनि सभार्घ्य धोये चरण चरण सलिल सुखसार । निज मस्तक सेचन किये छिरको गृह परिवार ७६८ दर्भांबुज तुलसी मृदा सुरभि मधुर जल जौन । फल उशीर आदिक दिये यथा शक्तिलै तौन ७६९ सत्व विवर्द्धन अन्नलै तदुपरि अशन कराइ । पुष्पमालताम्बूलहू देत भये सुखपाइ ७७० कृतातिथ्य बैठेसकल तवश्रुतदेव द्विजाति । सतिय चरण दाबन लगे बचन कहे या भांति ७७१ नाथ हमहिं दर्शन भये भयेलु किन्तु तदैव । यहींदं शक्तिन बिरचि प्रविश समस्त यदैव ७७२ चौ० । जेतव कथा सुनैं अरु गावैं । पूजन करैं बन्दि सुखपावैं ॥ जे या विधि अमलात्माआहीं । करत प्रकाश तासु उरमाहीं ७७३ तुम हृदिस्थ दूरहु तिन हेता । है विक्षिप्त कर्म जिन चेता ॥ आत्म शक्ति अहमादि कहाई । तिनसों हौ अग्राह्य सदाई ७७४ जानै को तुम्हारि गति स्वामी । नाथ नमामि नमामि नमामी ॥ आयसुनाथ हमहिं कछु दीजै । धरि निज शीश तौन हम कीजै ७७५ यद्भवान्चखगोचर ऐये । नृणां क्लेश अंत तब गैये ॥ ताते शिक्षा देहु कृपाला । धारि शीशसुमिरौं सबकाला ७७६ सुनि इमि विप्र वचन सुखदानी । करकरगहि बोले हँसिबानी ॥ ब्रह्मन्कृपा करन तव हेता । हम आये सब मुनिन समेता ७७७ पादरेणु सों करत पवित्रा । को जानै इन मुनिन चरित्रा ॥ तीरथ देव क्षेत्र बहुकाला । सेवा करि फलदेंयेहाला ७७८ दो० । ब्राह्मणसो मम प्रिय नहीं रूप चतुर्भुज एह । सर्व वेदमय विप्र हैं सब सुरमय मम देह ७७९ ताते ब्रह्म ऋषीन को पूजिय मम वपु जानि । इन पूजें पूजित सदा हम होवैं सुखदानि ७८० इमि प्रभु आयसु पाइकै राजा विप्र समेत । आराधन कीन्हे बहुरि एकभाव युत हेत ७८१ इमि भक्तन गृहवास करि मतमार-

गहिवखानि। द्वारवती कहँजातभे सकलप्रजासुखदानि ७८२ ॥

चौ० । उद्धवजी की कथा सुहावनि । अब वरणौं संतन मनभावनि ॥ कृष्णचन्द्र के अति प्रिय सोई। मंत्री मित्र सगे हित जोई ७८३ खान पान सङ्गहि सँग करहीं । एकहि सङ्ग वैठि मुद भरहीं ॥ यदुवंशीनय निपुण उजागर। ज्ञान मान शोभा के सागर ७८४ वृन्दावन ते जब हरि आये। कंसमारि निज धाम पठाये ॥ उग्रसेन मथुराके राजा । करत भये श्रीहरि सुख साजा ७८५ पुनि वसुदेव देवकी पाशा। जाइ कीन्ह आनन्द प्रकाशा ॥ मथुरा वास कृष्ण इमि कीन्हा। पुर नर नारिन आनँद दीन्हा ७८६ कीन्ह सुरति गोपिन की जबहीं। आनँद मगन भये हरि तबहीं ॥ उद्धव जी को लीन्ह वुलाई । गोपिन बोधन हेत पठाई ७८७ चढ़ि रथगे उद्धव पुनि तहँवां। गोपी वृन्द विराजत जहँवां ॥ रथ विलोकि गोपी उठिधाई। कृष्ण समान जानि सुख पाई ७८८ कोऊ कहत आव घनश्यामा। पीताम्बर धर तन सुखधामा ॥ कोऊ कहत श्याम किमि आवैं। कुब्जा के सँग आनँद पावैं ७८९ याविधि रहीं सकल बतराई। तब लगि रथ आयो नियराई ॥ हरि नाहीं यह धौं को हैरी। किमि अक्रूर क्रूरसम वैरी ७९० लैगो प्रीतमश्यामहमारे। अबधौं करिहै आइकहारे ॥ हमहिंमारि किमिमांस न लैहै। कंसहि जाइ पिण्ड उनदैहै ७९१ यमुना तट झूले नँदलाला। वृन्दावन की कुञ्जरसाला ॥ गोपिनसंगविविधसुखकीन्हे। तौनभुलाइसकल हरिदीन्हे ७९२ याविधि सुमिरि सुमिरि गोपीगन। राधा कृष्ण विहारगयो मन ॥ घर बाहर कछु नाहिं सुहाई। भईं मत्त गोपी समुदाई ७९३ भजन । श्रीश्यामावर नागर नटरस रूपनयन मनलाइ रहीहैं । भईं युगल रसवश सबगोपी लाजशंक दुरिआइरहीहैं ॥ दुविधा दूरिभई मतिकाची सत्यप्रेम प्रगटाइ रहीं हैं । जागीं सब सोवतते मानहुँ प्रातकमल छविछाइरहीं हैं ॥ जियालाल प्रभु नटवरनागर कला सकल ब्रज आइरहीहैं ७९४

हरे सबनमन नवलाबिहारी ॥ नयन श्रवण रसना अंगनप्रति वासकियो गोवर्द्धनधारी। बैठत उठत चलत सोवत निशि क्षण क्षण नहिं बिसरत बनवारी ॥ गृहजन कहैं करैं कछुऔरै सासु ननँदलखिदें बहुगारी । जियालाल प्रभु युगलरूपरस मगन मत्तनहिं सुनैं गुवारी ७६५ चौ० । उद्धव तिनकी यह गति देखी । बूड़े ब्रह्मानन्द विशेखी ॥ पुनि गोपी रथ ढिग चलि आईं । सकुचीं सखाजानि यदुराईं ७६६ आसन दीन्हों हरि प्रियजानी । बोलतभईं मनोहरबानी ॥ हरि सन्देश कहो हम पाहीं । जिन समान कोऊ प्रियनाहीं ७६७ अब घनश्याम कहौ कबऐहैं । बदन दिखाइ हमहिं सुखदैहैं ॥ जिन दीन्हे हम को सुखनाना । कहाँ लुभाइरहे भगवाना ७६८ याविधि पूर्ण प्रेम तिनदेखी । उद्धव बोलतभये विशेखी ॥ तुमहित कहो जौन भगवाना । सुनहु तौन हम करत बखाना ७६६ भजन । ऊधो श्याम सँदेश सुनावैं ॥ कहियो जाइ गोपि ग्वालनसों करि समाधि अन्तर ममध्यावैं । सदा एकरस बसत सर्वघट हौं अनादि निर्गुण गुणिगावैं ॥ आगम निगम पुराण बखानत बिनाज्ञान को मुक्ति न पावैं । जियालाल प्रभुको सँदेश सुनि गोपीजन उर विरह बढ़ावैं ८०० उद्धव कठिन सँदेश सुनायो ॥ श्याम विरह तनजारि कोइलाभो तापर खेहकग्न तुमआयो । ब्रजकी जीवनमूल साँवरो योगि यत्नकरि ध्यान न पायो ॥ शुकसनकादि आदि मुनि नारद जिहि रसमें तनदशा भुलायो । जियालाल प्रभु सोइ कृपाकरि ब्रज वनवीथिनमाँझ बहायो ८०१ दारन कारण श्याम पठायो ॥ निर्गुण निराकार अव्यय अज व्यापक अगह गहावन आयो । आगम निगम जासु यश गावत सोइ श्याम यहभेद बतायो ॥ जो समदृष्टि समान एकरस तौ कत मोहन चित्त चुरायो । जियालाल प्रभु कृष्ण इष्ट जिहि उद्धव तिहि यहमत किमिभायो ८०२ युवतिन हेत योग तुम लाये ॥ क्षण क्षण सुरति कराति दृग भरि भरि चहुँदिशि चि

तवाति विरह बढ़ाये । कल नहिं परत पलक नहिं लागत मन चकोर हरि शशि विनुपाये ॥ अवधि आशकी थाह जीव तन चाहत अगुण अथाह बहाये । हमतनभरो वियोग विरह दुख तुम सँदेश कहि अति अधिकाये ८०३ द्वितिय सखी सुनिकहो बुझाई ॥ सुनुरी सखिदूषण नहिं याको याहि कूबरी दियो पठाई । जैसी कही कहतयह सोई सुनि सुनि शूल उठत अधिकाई ॥ यहसबहै विधवनको कर्त्तव युग युग जीवहु कुंवर कन्हाई । जियालालप्रभुइमि कवभाषैं यह सब कुब्जा रचो उपाई ८०४ याविधि सुनिमहिलन मुखवानी ॥ सकुचि नाइशिररहे मौनह्वै पूरण प्रेम मगन मनजानी । पुनि विचारकीन्हों मनमेंयह येचरित्रहरिके सुखखानी ॥ पठयो मोहिं हेत याहीके यहविचारि गोपिन गुरुमानी । जियालाल प्रभुकी प्रिय गोपी तिनहिं नौमिउद्धव रतिआनी ८०५ चौ० नन्द यशोदाहि मिलि सुख पाई । तिनसों लहि सत्कार महाई ॥ पुनि जहँ क्रीड़ा कीन्ह कन्हाई । तहँ तहँ गे उद्धव सुख पाई ८०६ क्रीड़ा थल विलोकि सुख पावैं । करि दण्डवत मोद उरलावैं ॥ पुनि आनँद उमगो उरभारी । यह अभिलाप हिये निज धारी ८०७ धन्य धन्य गोपी व्रज माहीं । इन सम कोउ भुवन में नाहीं ॥ जिन हरि सङ्ग महासुख कीन्हे । तनमन जिन अर्पणकरि दीन्हे ८०८ तिन पगरेणु होउँ मैं दासा । होउँ कि वृन्दादिक सुखवासा ॥ निज कुटुम्ब परिवार विहाई । कृष्ण चरणमन दीन्ह लगाई ८०९ याविधि कछुक दिवस करि वासा । उद्धव मन आनन्द प्रकासा ॥ पुनि सब सों तिन आयसुमाँगा । मथुराचलेसहित अनुरागा ८१० चले पठावन गोपीग्वाला । सुरति करावत श्रीनँदलाला ॥ घूमे दूरि पठाइ बहोरी । बारबार करजोरि निहोरी ८११ उद्धव चलि मथुरामें आये । कृष्ण चरण पुनि शीशनवाये ॥ पुनि गोपिन की प्रीति बखानी । प्रेममगन भे शारँगपानी ८१२ इमिवृन्दावन गमन सुहावा । श्रीउद्धवकर वर्णि सुनावा ॥ श्री उद्धवकर

कथा सर्वानँदकी खानि । जियालाल वर्णनकियो अतिसंक्षेप बखानि ८४२ ॥

दो०। बालमीकि श्वपचहुकथा याहीनिष्ठामाहँ । परप्रथमहि वरणीकथा रामानँदकीजाहँ ८४३ ॥

चौ०। ज्ञानदेवकीकथा बखानी। कहतसकल आनँदकीदानी॥ जिनके शिष्यभये शुभदोई। नामदेव तीलोचनसोई ८४४ इनकी काव्यमहासुखदाई । तेजबृद्धि मनहरि सिवकाई ॥ ज्ञानदेव गे विप्रनपाहीं । पढ़न विचारिवेद मनमाहीं ८४५ बाहर जाति विप्रगुणि इनहीं। वेद पढ़ावतभे नहिं तिनहीं ॥ ताको कारण है याभाँती। इनके पिता सकल गुणपाँती ८४६ लेतभये संन्यास सुजाई। पीछेगई नारि तिनधाई॥ कीन्ह कलह संन्यासी पाहीं। निजपति घरलाई गहिबाहीं ८४७ नामदेव सुतज्येष्ठ कहाये। ताहित विप्रनवेदपठाये॥ नामदेव हरिभक्त सुहावन। किय विचार तिनमान नशावन ८४८ आज्ञा एक लुलायहि दीन्हा । वेदारंभ पढ़नहित कीन्हा ॥ शाखा अमित पढ़ी कछुकाला। सब विप्रन जानो यहहाला ८४९ भगवतभक्तमाहँ विश्वासा । करतभये ताजिकै जगहासा ॥ ज्ञानदेव कीन्हीं अतिदाया। भगवत सेवाहेत सिखाया ८५० ॥

दो०। लड्डू स्वामीकीकथा यहजग मंगलमूल। जियालाल वर्णन करत हारकभवनिधिशूल ८५१ चौ० । भयेपरम भगवत प्रियसोई। लखत चराचर हरि वपुजोई॥ विचरत भये धरणि शुभवेशा। देवाधीनगये तिहि देशा ८५२ भगवत भक्तिनकोऊजानैं। देवी सेवाको हितमानैं॥ देतनित्य नरको बलिदाना। इनहिं विलोकि हर्ष उरमाना ८५३ देवीसौंहँ गये लैतबहीं। चाहतभये देनबलि जबहीं॥ भगवत भक्तकेर यहहाला। देखि नसकी देवि तिहिकाला ८५४ गईमूर्त्ति दुर्गा की फाटी। धारि खड्ग दुष्टन शिर काटी ॥ कीन्ह नृत्य दुर्गा तिनआगे। कीन्हीं विनयदेखि सुखपागे ८५५ देवीचरण लागि हितकरिकै।

नानासुख मानमनिज भरिकै ॥ देवीकरि सेवा तिनदेखी। वासीआये शरण विशेखी ८५६ भगवतभक्ति तिनहिं तिनदीन्हा। गमन वहोरितहाँ सो कीन्हा ॥ विचरन नानादेशनलागे। हरि सुखरँगे प्रेमरस पागे ८५७ ॥

दो० अवनारायण दासकी कथाकहौं सुखदानि। जिनको वदरी वननिकट वासलीजियेमानि ८५८ चौ० ॥ भगवत भजन निष्ठ गुणखानी। अनुक्षण सुमिरतशारँगपानी ॥ भगवत चरितगुप्त वहुतेरे। भक्तिभाव तिनकहे घनेरे ८५९ भगवतसम भगवत जन चीन्हा। हरि पद धारि पूर्ण चित दीन्हा ॥ दर्शन हित मथुरा चलि आये। केशव देव भुवन सुख पाये ८६० लागे वास करन सो तहवाँ। कीन्ह विचार एक दिन जहवाँ ॥ की दर्शन हित जो जन आवैं। जूता काढ़ि द्वारपर जावैं ८६१ लागो रहत होइ चित तिन को। ताते हमहिं बचावें इनको ॥ लगे बचावन यह गुणि सोई। विन पहिचानि न वरजो कोई ८६२ दुष्ट एक कोऊ दिन एका। मोट धरायो छांड़ि विवेका ॥ मारग माहँ चले लै सोई। किय दण्डवत जानि तिन कोई ८६३ सो मूरख देखत पछितायो। हाथ जोरि बहु विनय सुनायो ॥ तिन तेहि देखि कृपा अति कीन्ही। अनपावनी भक्ति हरि दीन्ही ८६४ तासों कहो करिय जनिशोचा। परकारज विन यह तनुपोचा ॥ आखिरदेह नष्ट यहहोई। तव कारज आवैनहिं कोई ८६५ या विधि तासु बोधकरि दीन्हा। विदाभक्तिपूरण दै कीन्हा ॥ याविधि हरिजन दयावड़ाई। वेदपुराण सदायशगाई ८६६ ॥

चौ०। किन्हर दास कथा सुखदाई। मैं वरणों मनआनँद पाई ॥ भजनानन्द सत्य रसपागे। सदारहत हरिपदअनुरागे ८६७ काहूसों दुर्वचन न वोलैं। नितही हरि शरणागत डोलैं ॥ सर्वजीव भगवत वपुजाना। जगत धर्म छांड़ि मदमाना ८६८ झूठ सांचतजिसार असारा। भगवत भक्तिहिये निजधारा॥यानि

धि बीति काल कछु गयऊ। जीवन मुक्त प्राप्त पद भयऊ ८६९॥

चौ०। पूर्णदास की कथा सुहावनि। अब बरणौं संतन मन भावनि॥ जिन हिम गिरि समीप सुख पाई। सुमिरों हरिहि समाधि लगाई ८७० ध्यान मध्य मन दीन्ह लगाई। प्राणायाम कीन्ह सुखदाई॥ प्राण बायु अपने बश कीन्हा। जीवन मरण भीति तजि दीन्हा ८७१॥

इतिश्री भगवद्भक्तानुरागदायक जियालाल जन्माग्रेण विरचिते चतुर्विंशातिनिष्ठामध्ये पंचदशज्ञानध्याननिष्ठायांद्वादश भक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौसप्तदशस्तरङ्गः १७॥

दो०। षोड़शवींनिष्ठाकहौं वर्णन शांत बिराग। चौदहभक्तन की कथा वरणौं युत अनुराग १ रामचरण अरबिन्द में करिदण्डवत करोरि। नारायण अवतारकोबन्दनकरौं बहोरि२ सो०। लैपुहुमी अवतार वसत बद्रिकाश्रमबिषे। तपके मधिमन धार जगप्रवृत्तिवैराग्यकिय ३ छन्दनरेन्द्र। नारायण अरविन्द स्वच्छपद जन पदांघ्रि सुखकारी। मधुकैटभ नाशन जलसायन माया तिमिरतमारी॥ नाभितामरस अण्डजउद्भव लहि बिलोकि चहुंओरा। चलजल कमल अपर कछुनाहीं लखो तिमिर पुनिघोरा ४ प्रगटे हमयह कमल कहांसों किय बिचार मनमाहीं। तरवर नाल चालपुरुपायुपपारलहो तिननाहीं॥ आपे घूमि कमल कमलासन भ्रम अपार मन भयऊ। कृपा रावरी तप तपेति यह शव्द श्रवण पुनि लयऊ ५ कीन्हो तप अपार तिनपायो बुद्धि पराक्रम भारी। चौदह भुवन रचे क्षणमाहीं अपर जगत बिस्तारी॥ भये प्रसन्न आपतिन करगहि गे निजलोक सिधाई। जहाँ न जराशोक माया भ्रम जियालाल सुखदाई ६ भजन। केशव शरण गहे सुखपावै। नाना भोगकरै या जगमें अंतकालवैकुण्ठ सिधावै॥ जासु नाभिसों पंकज जामो प्रगटे ब्रह्मा जगत उपावै। जाको ध्यान धरत योगी नित लै बीणा नारद गुण गावै॥ शारद शेष महेश जपतजिहि जियालाल चरणन शिरनावै ७

छन्द मनहरन । जासुपाद पद्मधोइ जन्म जन्म पापखोइ धारिशीश आस्यहोत विदित जगतमें। जौन त्रयलोकहूँ उबारतहै कालहू सों दारत सकलदुख फन्दन लगतमें॥ जासु नाम जपत कपत यमराज भट चपत उलूकजिमि द्युमणि उगतमें। जियालाल सोईराम दायक सकल काम रहतशरण किन सोवतजगत में ८ यमन किरात भील शवरी पिशाचकपि गणिकाक्कबन्धगीधतारोदीन हेरो है । दारिद सुदामाछीनो गोपिन सनाथकीन्हो गज प्रहलाद बीच सुयश घनेरोहै॥ पाण्डु पुत्रराखिलीन विप्र सुत आनिदीन बूड़त सोराखिलीन गोपनको खेरोहै। ऐसे समरत्थ नरनाथनके नाथ नाथ जियालालनावै माथ केतो पाप मेरोहै ६ भजन। रघुवर पाद कमल विनजाने। पाइ सुगंधमृगासीम्नीजिमि ढूंढ़त फिरत अनत कहुँमाने॥ लखि मरीचि मृग तृषावियाकुलधावत बुद्धि जलाशयआने । भटकत फिरत मोह वशइत उत तियसुत स्वजन मध्य सुखमाने। मृगवाटिका भ्रमर पुष्पन लखि जियालाल वृक व्याध न काने १० रघुबरनेह पास जनितोरिय। निजजन जानि कृपाप्रभु कीजिय ममंमन मीन पाथपद जोरिय॥ काम क्रोध मदलोभ मोहमद मत्सरमान पास दृढ़छोरिय। महा विषयवन भ्रमत चित्त नित निज अरविन्दचरण मुखमोरिय। करि अतिकृपा पतित वहुतारे जियालाल तारियकरिथोरिय ११ आश्रय दुःख सहेहौकवलों। ममगुण लखिनिस्तारनकवहूँ वीतहिं इन्द्र चतुर्दश जबलौं॥ जेती पुत्रसृष्टि तवसिय पति तामहँहौं कुपूतअधि सवलौं। मानुपदेह भजनहित भापत सोनहिं कीन्हमोहवश अवलों। जबलगि कृपाकरहु नहिं रघुपति जियालाल सुखपाव न तबलौं १२ छन्दमनहरन। जहँ जहँ लखत रखताचित मोरिमोरि वखत वितइये नसारकछूपाइये। दीनबन्धुदीनानाथ सुखद अनाथ नाथ प्रगट सुदास साथ वेदगाथ गाइये।औरसोंनकाम जेतेजीवहैं जहानराम ममउरधाम निजफेरियेइहाइये। वीतिहैं सकलदिन एही भाँतिकेधौंनाथ जियालाल

हैदयाल कृपादृष्टि लाइये१३ चौ० । जबपरिपक्कहोइवैरागा । तब हिं शांतिपावै बड़भागा॥बिनाशांति भगवतहिनपावै.। सबकेपरे शांति श्रुति गावै १४ है वैरागकेर यहरूपा । तजि असार गह सार अनूपा ॥ सब संसार स्वर्ग सुख जोई । लघुलख ब्रह्मलोक लगसोई १५ सत रज तम मायागुणत्यागै । पूर्णब्रह्मभगवत मन लागै ॥ मत्तकरी सम यहमन जोई । ज्ञानांकुशरोकैलै सोई १६ सबसुख स्वाद तजैनर जबहीं । प्राप्तहोत भगवत उर तबहीं ॥ सुख दुख सो पूरण मनजबलौं । भगवंत प्राप्त होत नहिं तबलौं १७ पूरितबस्तु पात्र जिमि होई । दोसरिबिस्तुधरै किमि कोई ॥ ताते चहजो मनहरि लावन । आशा अपर तजै मनभावन १८ पूरण शांति तबहिं उरआवै । देह दशा क्षणमाहँ नशावै ॥ जिमि निर्वात दीपछबि राजै । दमित करी कानन नहिंभाजै १९ गतउर्मी बारिधि छबि जैसे । लखत चकोर चन्द्रकहँ तैसे ॥ अर्द्धनिशा सोवत जिमि प्रानी । बिगतप्रबाह लखिय जिमि पानी २० सदा अचल गति क्षोणी जैसे । मैथुनकाल पुरुषमन वैसे॥ पनिहारी मनघट जिमि होई । नटिनी बांस चढ़ै गति जोई २१ गायक पुरुष बजावत जोई । शूर समर क्रोधित जिमि होई ॥ निमि सूरति ईश्वरमेंलावै । पाइ शांति पूरणसुख पावै २२ रहशीतोष्ण ज्ञान नहिं देहा । जानत क्रोध न गुनत सनेहा ॥ वर्षाबात क्षुधा नहिं ज्ञाना । तृप्त अतृप्त मान अपमाना २३ या निष्ठाजे भक्त कहाये । बरणौं तिनके नाम सुहाये ॥ प्रथमहिं रंतिदेवकी गाथा । कहौं नाइ रघुपति पदमाथा २४ रंतिदेवहरिभक्त सुजाना । विप्रन दीन खवाइ खजाना ॥ मंत्रिन सौंपि राज्य सह अंगा । कानन गये दारसुत संगा २५ लागे सुमिरण करन मुरारी । तनमन धन तिन ऊपरवारी ॥ अन्नादिकअटवीजोपावें। ताहि भांति भिक्षुकन खवावैं २६ अट्ठाईस दिवस इक वारा । बीते अन्न अग्र कलुधारा ॥ प्रथमहिं भगवत भोगलगाई । तीनिभाग सुततिय निजलाई २७ ताही समय विप्रइक

आयो। भाग आपनो दै सुख पायो॥ ब्राह्मण गये शूद्रतहँ आ-वा। क्षुधावंत मैं वचन सुनावा २८ सुत हर भाग देत नृपभयऊ। शूद्रगमन भोजनकरि कयऊ॥ आयो एक म्लेच्छ तिहिकाला। दीन्हो दाराभाग नृपाला २९ भोजन हीनरहेजन तीनो। धारि चित्त भगवतमें दीनो॥ भगवत देखतभे यह हाला। सहित विराग दयाल नृपाला ३० तिन समीप प्रगटे निजरूपा। कोटि काम छवि रूप अनूपा॥ कीन्ही दया नृपतिपर भारी। कह मांगहु वरजो मनधारी ३१ हाथजोरि कह नृपति प्रवीना। नहिं चाहत वरभक्ति विहीना॥ ताते हमहिं भक्ति निज दीजे। दोसरि कृपा नाथ यह कीजै ३२ नाना दुखन दुखित संसारा। सो दीजै मेरेशिरभारा। मेरीपुण्य कछू जोहोई। ताते सुखपावैं जन सोई ३३ सुनि भगवत अतिशय सुख पायो। देखि दया उपकार सुहायो॥ देतभये निजपद निर्वाना। जो योगी पावत करि ध्याना ३४॥

चौ०। गाथा परशुराम सुखदाई। अब वरणौं रामहिं शिर नाई। जिनको भक्ति प्रताप महाना॥ कीन्ह वनस्थन आपु समाना ३५ जिमि चन्दन तरु पवन सुहाई। करै सुगन्धित वन समुदाई॥ अन्धकार वहुकाल घनेरा। दीपक जरतहि करै उजेरा ३६ परम्परा मारग नहिं त्यागा। भगवत कीर्त्तन में अनुरागा॥ माला तिलक प्रवृत्ति चलाई। पूरण सर्वैश्वर्य्य सदाई ३७ तुच्छ परन्तु सकल सुखजाना। पूरण ब्रह्महिये निज आना॥ अति वैराग्य हिये परकाशा। मायामोह तिमिर सब नाशा ३८ लेन परीक्षा साधू कोई। याविधि वचन कहतभो सोई॥ कहँ ऐश्वर्य भक्ति हरिकाहा। तुमको कौन काम धन चाहा ३९ परशुराम सुनि साधूवानी। तजि घर गिरिकन्दर रह आनी॥ तहाँ एक बनजारा आयो। परशुराम कहँ शीशनवायो ४० वहुधन देतभयो सुखपाई॥ नृपसामा जाविधि सुख दाई॥ इमिदै भेंटगयो बनजारा। वहसाधु मनमाहँ विचारा ४१

इनको है धनकी नहिं आसा। भगवत कृपा तजत नहिं पासा॥ यह विचारि अति लज्जापाई। चरणनपरि बहु विनय सुनाई ४२ मम अपराध क्षमा प्रभु करिये॥ ममकृत निज मानस नहिं धरिये। जानो भक्ति प्रताप तिहारो॥ और न कारज कछू हमारो ४३॥

राँका बाँका कथा सुहाई। वरणौं सन्तचरण शिरनाई॥ अति वैराग्य जासु उरमाहीं॥ जे धनि भगवतभक्त न आहीं ४४ बाँका राँका नारि सुहाई। तिनसों अधिक भक्त छबिछाई॥ नामदेवजी को घर जहँवाँ। पण्डरपुरहि रहत ये तहँवाँ ४५ काष्ठवीनि काननसों लावैं। ताहि बेंचि निजकार चलावैं॥ सुमिरण भजन करैं दिनराती। और कछू जिननाहिं सुहाती ४६ एक दिवस भगवतको देखी। नामदेवकह वचन विशेखी॥ वड़े शोचकी बात गुसाईं। राँका बाँका दुखित महाई ४७ कछू पास धन इनके नाहीं। रहत सदा मन आपुहि माहीं॥ भगवत कहा कीजिये काहा। धनकी इनहिं नेक नहिं चाहा ४८ चलिय तुमहिं हमदेहि लखाई। यह कहिगेकाननहिलवाई। रांका बांका जिहि मग आवत। काष्ठ लेनजासों सुखपावत ४९ मुद्रा स्वर्ण जाल तिनआगे। दीन्हडारि भगवत सुखपागे॥ तासमीपरांका जबआये। देखि अमित चिंतामन लाये ५० पाछे आवत दार हमारी। जानिदेखै यह चित्त विचारी॥ धूरिडारि ताऊपर दीन्हा। आगे गमन वहुरि तिनकीन्हा ५१ जव समीप बांका चलिआई। कहकाधूलि विलोकतसाईं॥ मुद्रास्वर्ण मूंदि उतदयऊ। लोभन तव चित यहमन भयऊ ५२ तव बांकाइमि भाषि सुनावा। स्वर्ण धूलि अंतर किमिगावा॥ धूलिधूलिसें झांपन जोई। हैमतमोर वृथा सवसोई ५३ सुनिरांका प्रसन्न मन कयऊ। बांका नाम धरत तवभयऊ॥ पुनिबोलतभे याविधि बानी। तव वैराग्य सुमुखि सुखदानी ५४ ममवैराग्य तुच्छ करिदीन्हा। यहकहि गमन अग्र पुनिकीन्हा॥ हरि कहनाम देवसोवानी। देखिय यहविराग

सुखखानी ५५ नाम देव हरिआगे जाई। काष्ठ बटोरत में सुख पाई॥ रांका बांका तहँ चलिगयऊ। परिश्रम देखिलेत नहिंभयऊ ५६ खालीहाथ घूमिघर आये। यहविचारि निजमानस लाये॥ आजु स्वर्ण मुद्रा हमदेखा। ताते काष्ठ न मिलो विशेखा ५७ जो मुद्रावे ममघर आवत। तौ दुख हमहिं कठोर सतावत॥ हरि वहदारु भुवन पहुँचाये। हरि पठयो रांका गुनिपाये ५८ भगवत दियो जानि तिनलीन्हा। बहुरि आइ दर्शन हरि दीन्हा॥ पुनि रांका सों बोले बानी॥ ग्रहण करिय कछु आयसु मानी ५९ रांका रूप देखि सुख पाये। जासु पार वेदहू न गाये॥ हरि आयसु निज मस्तक आनी। लीन्ह प्रसाद रूप हरि जानी ६० नाम देव सों रांका बोले। कोमल सुन्दर वचन अमोले॥ ऐसे हरिकोमल अँगवारे। लै कांटन में तिनहिं सिधारे ६१ दीन्हों व्यर्थ परिश्रम इनको। यह नीको लागो किमि तुमको॥ बाल रूप में इनको ध्याना। सोई रूप धरो भगवाना ६२ रांका बांका कथा सुहाई। यह वरणी सन्तन सुखदाई॥ संत चरित्र अगाध अपारा। जियालाल पावै किमि पारा ६३॥

दो०। कथाकहौं रघुनाथकी रहेगुसाईं जौन। भगवतभक्त महानभे पारलहै कहिकौन ६४ बासीबाडे से नगर उत्कल देशप वित्र। धन सम्पतिपूरित भवनगावत ईशचरित्र ६५ सकलअसार अनित्य गुनि पुरी जगत पतिजाइ॥ बासकरन लागे पिता दीन्हो द्रव्य पठाइ ६६ कीन्हो अंगीकारनहिं छकेनेह भगवान। महाप्रभूगुरुकीसदा सेवामेंहितमान ६७ शीतकाल आयो जबहिं शीत शरीर समान। जगन्नाथजी देखिके कीन्हीं कृपा महान् ६८ ऊर्णवस्त्र निजदेतभे शीत विभंजनकार। एक समय तिनके प्रकट होत भयो अतिसार ६९ जगन्नाथ सेवाकरी बालक रूप बनाइ। पुनिवृन्दावन जातभे गुरुआज्ञाको पाइ ७० राधा कुण्ड समीप सो बास करत भे आइ। नित मानसि पूजन करत

भगवत पद मन लाइ ७१ दूध भात को एक दिन मानसि भोग लगाव। ध्यान मध्य परसाद सों किय भोजन युत चाव ७२ भक्तगरिष्ठ सुउदरमधि पीड़ा अधिक जनाव। भक्तोपद्रवनाटिका देखि वैद्य बतलाव ७३ ताकी औषध कीजिये सुनि गुसाईं कह वैन। जासों प्रगटो कष्ट यह सोई है सुख दैन ७४ सो अमृत जीवन हितै औषध मूल महान। मोहिं सुखद सब कालहू औषध गम्य तहाँन ७५ सुनत वैद्य चरणनपरो भयो हिये विश्वास। जियालाल करिहौ कबहिं या विधि निजपद दास ७६ ॥

चौ०। श्रीधर स्वामीकी शुभगाथा। वरणौंनाइ रामपदमाथा॥ श्रीमद्भागवते सुखदाई। टीका विरचो शुभग बनाई ७७ टीका बहुविद्वज्जन कीन्हे। पक्षपात निजनिज लिखिदीन्हे॥ श्रीधर स्वामिन यहकछु कीन्हा। यथातथ्य वर्णन करिदीन्हा ७८ परमानन्द गुरूमाति लैकै। टीकालिखो सुपूरणकैकै॥ सभाभई काशीमें तबहीं। निजनिज टीकालाये सबहीं ७९ निजनिज तिलक श्रेष्ठ बतलावैं। एकबात कोउ न ठहरावैं॥ श्रीधरस्वामि गर्व नहिंधारा। पुनिसब परिडत कीन्ह विचारा ८० छन्दरामगीतिका॥ बिन्दमाधव भुवन में सबधरे टीका जाइ। करैं अङ्गीकार जाको सोइ देहु चलाइ॥ धरे मन्दिर मध्य में करि दीन्ह बन्द किवांर। कछुक धारि बिलम्ब बहुरो खोलियो तिन द्वार ८१ भये हस्ताक्षर सुटीका स्वामि श्रीधर माहिं। अपर बहु टीकान ऊपर भये अक्षर नाहिं॥ भयो अति विश्वास सबके तिलक प्रगटो सोइ। कीन्ह अंगीकार सब वह श्रीधरी है जोइ ८२ रहे श्रीधर स्वामि प्रथमहिं भक्त भगवत जोइ। त्यागियो घरबार जा हित चरित वर्णत सोइ॥ आगरे सों द्रव्य लीन्हे जात कतहूं तौन। मिले तस्कर मार्गही में पृछ कीन्हों गौन ८३ पूंछियो को संग तेरे कहां को तू जात। कह्यो श्रीधर स्वामि कोशलनाथ कोमल गात। कीन्ह ठगन विचार मिलिकै यह अकेलो जात। मारि याको द्रव्य लीजै बचन मानिय तात ८४ जबहिं मारनको चहे

तिनअस्त्रलैनिजहाथ । करनरच्छा धनुपशरकरदेखियोरघुनाथ ॥ यहीविधिसों मार्गपूरण रहो उद्यमएह । कहतभे पुनिसकल तस्कर जबहिं पहुँचेगेह ८५ कौनवह सुकुमार सुन्दर नयोयौवन जौन। करत रच्छामार्ग तेरी लखतभे हमतौन॥सुनतश्रीधरस्वामि पुलकित अंगभे तिहिकाल। छोंड़िघर धनसंपदाको दीन्हतब- हीं हाल ८६ सो०। याविधि देखिचरित्र हरि सन्मुख तस्कर भये। श्रीधरकथा विचित्र जियालाल कहमति सरिस ८७॥

दो०। कामध्वज की अत्रकथा वरणौं सुखदमहाइ । क्षत्रीकुल मेंहोतभे चारिबंधु इकमाइ ८८ छन्द रामगीतिका। भयेभक्त अनूप भगवत करत भे वनवास । भजन सेवा करत कीर्त्तन होइ रघुपति दास ॥ जात भगवत भोग के हित नगर को इक काल। लै तहां सो अन्न दिनप्रति जात वनको हाल ८९ एक दिन तिन बंधु बोले साथ हमरे जाइ। हाजिरी सरकार राना देइ जाइय भाइ ॥ लियो मासिक जाइ तुम्हरो यही हमरो काम । दियो उत्तर सुनत या विधि रति पतिध्वज नाम ९० रहत हा- जिर जासु के हम तासुहीसों काम । गैरहाजिर होब नाहीं नहिं लिखाउब नाम ॥ कहो बन्धुन मरौगे जब दाहकरिहै कौन। दास मैं हौं जाहिको वह करैगो सब तौन ९१ गये या विधि भापि कानन आश श्री भगवान । कछुक दिन महँ त्याग तनु हरि भेजियो हनुमान ॥ आइ हनुमत अगर चन्दन काष्ठ सों किय दाह। चिता धूमहिं परसि तरिगे प्रेत वनकेता- हँ ९२ एकप्रेत न रहो ताच्छण आइयोगतकाल। परमपदको गे सजाती सुनतभो यहहाल ॥ चिताभस्म सुलोटिकै गतिलही उत्तमतौन। जियालाल दयाल श्रीरघुनाथ समहैकौन ९३ भक्त को कछु अगम नाहीं कहत बाणीवेद। करतही सतसंग जिन्न को हरतपूरणखेद ॥ करत तीरथ आशजिनकी धारिमान सने- ह। आइहैं कबसंतहारक पाप हमरे गेह ९४ ॥

छन्द रामगीतिका। अबगदाधर दासकी बरणौं कथाशुभ

एह । भे बिहारीलाल के शृंगार धारक नेह ॥ देइ तन मन करत सेवा हरि चरित्र बखान । भे अनन्यन चित्त दोसर देव स्वप्नहु आन ६५ बैठ आइ सुबाग में बुरहानपूर कि तौन । कहतभे पुर जानके हित लोग बासी जौन ॥ गे नहीं भगवान ध्यानम चित्त है जिन लीन । एक दिन जल बहुतबरषो देख भगवत दीन ९६ एक साहूकार सों भगवान बोले बैन। भक्त मम यह दुःख पावत करहु विरचित ऐन ॥ सुनत साहूकार मन्दिर देत भो बनवाइ । बिनयसंयुत गदाधर को दीन्ह बास कराइ ९७ अपर मन्दिरहू बनाये अतिथ साधुन हेत । गदाधर भगवान मूरति थापियो मुद सेत ॥ करन सेवा साधु लागे आव खरचत तौन । एक दिन निशि काल साधू कछुक आये भौन ९८ साधु भोजन हेत कह भण्डारि बुद्धिनिकेत । कछुक है सामग्रि भगवत भोग प्रातहि हेत ॥ कह गदाधर करहु तासों साधु सेवा काहँ । प्रात भगवत भोग के हित आइ है पुनियाहँ ९९ कियोसोलह प्रातनाहीं तीसरेलों याम । क्षुधित चेला कहत व्याकुल कछु न आयोधाम ॥ खरच या अत्यंतसो यहभयो हमरोहाल । नाहिंजानिय कबहिंछूटब गदाधर चपुजाल १०० आइयो तिहिकाल साहूकार एकतहांइ । युग्मशतजे रजतमुद्रा देतभो सुखपाइ ॥ कह गदाधर मारिये इन असंतोषिन शीश । सुनत साहूकार भयलह करी सोसनरीश १०१ सकलतब वृत्तान्त तासोंकहतभे समुझाइ । भयो भगवत शरण सोऊ चित्त आनँदपाइ ॥ करी याविधि साधुसेवा बहुरि मथुराजाइ । ब्रजकिशोर स्वरूप छविछकि दीन्ह आयुविताइ १०२ ॥

छन्द रामगीतिका । कथा माधवदासकी शुभकरत वर्णनसोइ । जासु भक्तिप्रताप महिमा वरणिकह किमिकोइ ॥ शांतअरु वैराग्य वर्णन भावकरिसक कौन । व्यासको अवतारलै जनु भक्ति प्रगटी तौन १०३ शास्त्रसारनिकाल जगमें करतभे विख्यात । पारजगत समुद्रकीन्हे कोटि जन सुखदात ॥ भये

ब्राह्मण वंशमें धनि मरी इनकी नारि। छोंड़िनिजघर देतभे संसार असत विचारि १०४ छोंड़ि जगत विकार सबविधि अलग तासों होइ। पुरीजगपति जाइकै करिदरश बहुरो सोइ॥ बैठ वारिधिकूलमें मन धारि भगवतरूप। भूखप्यास भुलाइ दीन्हीं धारि ध्यान अनूप १०५ तीनिदिन याभांति बीते कियनभोजनताहँ। कीन्ह भगवत शोच बहुविधि कहत भे मनमाहँ॥ बनतव्यंजन बहुत हमरेहेत मधुरस भोग। हाय मेरोभक्त भूखो तीनि दिन को होग १०६ एकदाना तक न पहुँच्यो कहत हरि बहुवार। तुरितभेजो रमाकर परसादसोने थार॥ होइकै बेचैन भगवत भक्तवत्सल जोइ। चलीं लक्ष्मी लै सथाल प्रसाद करधरिसोइ १०७ करन बहुरि विचार लागीं इविधि माता कौन। होइ बालक अल्प दिनको ताहि पालन जौन॥ भक्तिकेघर जन्मलीन्हों दासमाधवबाल। लाज आज अनन्त हमको जाहि नेक न पाल १०८ पिता रहत सुचित्त बालक पालनै माति बात। नाहिं सुचित बिलोक कबहूं पुत्र पालनमात॥ जाइ लक्ष्मि सलज्ज माधव दास पीछे ठाढ़ि। नेत्र खोलन दासमाधव भीति ध्यानमबाढ़ि १०९ यदपिमालुम होत भोमुखचन्द्रको परकास। सुनत आभूषणनकीझनकारहूभेखास॥ थालधरि तहँ दीन्ह लक्ष्मी बहुरि आईं गेह। देखिमाधवदास भोजन करतभे युतनेह ११० धन्यभाग सराहआपन थालको दियडार। पत्रविरचित पात्र जाविधि देइको उपचार॥ प्रातमंदिरमें पुजारी लगेढूंढ़नथाल। जहां माधवदासबारिधिकूलआये हाल १११ पकरि माधवदास को बहुबेतमारे तौन। थाललै पश्चात पूजक भवनकीन्हों गौन॥ चोट वह भगवान निज कटिलेत भे तिन केरि। पूजकनसों कहत भे इमि वचन बोले फेरि ११२ हमहिं वह परसाद भेजो थाल लक्ष्मीहाथ। मारियो अपराधबिनहीं जासु के हम नाथ॥ लगी सोननचोटमेरे क्रोध हमकोतौन। सुनतसभय पुजारिव्याकुल करनभे तहँ गौन११३

परेमाधवदास चरणन बिनय करि बहुबार। क्षमातिन अपराध कीन्हीं बिदित यह संसार॥ कृपा अति भगवान तिनपरभक्त लहसुनिचैन। नहिंसमात शरीर आनँद सुमिरिहरिगुणऐन ११४ भयो माधवदासको अतिप्रेम भगवतरूप। लखतभगवत रूप बेसुधिहोतकबहुँ अनूप॥ रहत मन्दिर मांझ कबहूँ लखि न पूजकपाव। एक दिन तहँ दासमाधव शीतअमित सताव ११५ कहो भगवतपूजकनसों शीत हमको लागि। देतभे पूजार सुन्दर बसनआनँद पागि॥ बस्त्रआपन दीन्ह माधवदासको भगवान। आपु बस्त्रनवीन धारो जासुमोलमहान ११६ एक बेला प्रगट तिनके अतीसार महान। परेबारिधिकूलजातन बिकल जी अकुलान॥ शौचकरनसमर्थ जबनहिं रही तिनकी देह। आइ शौचकराव भगवत मनुजबपु अति नेह ११७ कीन्ह चित्त बिचार माधव दास यह है कौन। करतहै बहुभांतिसेवा इ-बिधि मेरीजौन॥ कीन्हध्यान बिचार जबहीं जानियो भगवान जोरिकर कह असपरिश्रम उचित नाहीं जान ११८ कहोसुनि भगवान मोसन रहो नाहीं जात। आपहीमैं चलो आवत दुःख लखिजनगात॥ कहो माधवदास करिये दूर रोगहि क्योंन। देत हमको कष्ट आपहु पावतेलखि जौन ११९ भोगयह प्रारब्धकोहै रोगउतपति जोइ। दूरकरनो उचित नाहीं भोगनोहै सोइ॥ कर्म भोग विरुद्धपद्धति परत है जियजान। भोगईममभक्तसुख सोध्वंशिये किमिमान १२० रोगहूकरि दूरि दीन्हों भाषिइमि भगवान। बात यह विख्यात जगमें होतभई निदान॥ तब सहस्रनमनुज तहँवांजान आवनलाग। लाग माधवदासमांगन भीखयुत अनुराग १२१ भीर दूरीकरण प्रगटन सिद्धताकेहेत। मन्दिरन प्रति भीखमांगत गये एकनिकेत। देत चौकारहीर-मणी शब्द सुनिकरिक्रोध। पोतनाशिर दासमाधव मारियो गतबोध १२२ दयायुत तब दासमाधव धोइपोतनकाहँ। वर्त्तिका करि बारियो जगनाथ मन्दिरमाहँ॥ भवनदारा हृदय प्रगट

समानभो परकाश। भक्ति प्रगटी तासुहीमें चन्द्र जिमि आकाश
१२३ गयेदूजे दिवस माधवदास ताकेद्वार। परी चरणन आइ
तिनके वन्दिवारहिंवार॥ एकअतिविद्वान पण्डित फिरत जीतत
देश। लिये वहुजयपत्रकिय जगनाथपुरि परवेश १२४ सुनत
भोपाण्डित्य माधवदासजी की सोइ। कहो चर्चाकरहु हमसों
शास्त्रकीहै जोइ॥ कियो चर्चानाहिं माधवदास यह लिखिदीन।
हारमाधवदास पण्डित जीतियो जयकीन १२५ गयोकाशीमाहँ
पण्डित कह्योसवसोंजाइ।मांगियो वहपत्र विद्वपनदेतभोहरपाइ॥
लिखोतामहँ हारपण्डित जीतमाधवदास। सुनत पुरुषोत्तम
पुरीको जातभो गुनिहास १२६ कहतभो दुर्वचन माधवदासकों
वहुसोइ। करन वहुउतपात पण्डित लाग क्रोधित जोइ॥ कहो
माधवदास कहिये देइँ लिखिसोफेरि। धूर्त्तहै तूकहत पण्डित वार
वारहिंहेरि १२७ अवहिंतोहिं चढ़ाइगर्द्दभ देउँ नगरघुमाइ। कहो
माधवदास कछुनहिं रहे सुनतचुपाइ॥ जातभो असमान यह
कहिजवहिं पण्डितसोइ। मिलतभे भगवान आगेतवहिं पण्डित
होइ १२८ जीति लीन्हों वादकरिकै मार्ग पण्डितयत्र। वहुरि
ताहि चढ़ाव गर्द्दभ वालकन सहतत्र॥ वहुरि नगर घुमाव वहु
विधि छारझोंकतवाल। दैववशगे दासमाधव लखतभे यहहाल
१२९ कीन्ह भगवत विनय वहुविधि दया हियमेंयस्य। अतिहि
यह विद्वान भंजन मान उचित न अस्य॥ कहोहरिहै उचित
एहीमूर्खके हितमाहँ। भक्तमोर चढ़ाइगर्द्दभ ममचढ़ावत याहँ
१३० सुनतगर्द्दभ सोउतारो दासमाधवताहि। क्षमानिज अप-
राध वहुरिकराइयो चितचाहि॥ एकदिवस विचार माधवदास
कीन्होंएह। गानव्रजके चरित वहुइतहोतहैं युतनेह १३१ तासु
दर्शन करिय यहकहि चलतभे सुखपाइ। अशनहित इकमार्ग
वाईगईभवनलवाइ॥ जवहिं भोगलगाव जगपति आइयो तिहि
काल। उमर लघुसुकुमार वाई देखियो वहवाल १३२ पूँछियो
यह कस्य वालक लाइयो निजसाथ। जीवहीं पितुमातु काविधि

पुत्रहीन अनाथ ॥ श्रीवफेरि बिलोकि माधवदास लखभगवान । कृपा लखि भगवान की भे प्रेममग्न अमान १३३ चले अग्र बहोरि माधवदास तिहि समुझाय । एक साहूकार मन्दिर माहँ पहुँचे जाइ ॥ कहो जासों प्रथमहीं हम आइहैं तबभौन । मि-लीं ताकी तीयपदगहि साह किय कहुँ गौन १३४ करतरहे महन्तएकरसोइ मन्दिर माहँ । कहो नारी अशनकरिहैं येउ साधू याहँ ॥ सुनतक्रोधित कहमहन्त न गुजरहोवे अत्र । कहो माधवदाससों करजोरि नारी तत्र १३५ लेहुसामग्री ब-नाइय स्वकरही परसाद । देहु भोजनयोग्य कछुकरि लेहिंयुत अहलाद ॥ उष्ण पय तिय लाव माधवदास पायो सोइ । च-लतभे आनन्द संयुत बिदातासों होय१३६ आवसाहूकार ताक्षण सुनत भो यह हालगयो मारग माहँ पायो गहे चरण बिहाल ॥ कीन्ह बिनती जान मन्दिर कहो माधवदास । धन्य तुम्हरी नारि दिनदिन होइ भक्ति प्रकास १३७ गयो साथ महन्त सोऊ की-न्ह बिनय महान । क्षमाप्रभु अपराध कीजै आपको नहिंजान ॥ कहो माधवदास जाइय हरिद्वारहि आप । भक्त शीतप्रसादि पाइय जासु अति परताप १३८ बिदामांगि महन्त साहूकारहू किय गौन । देखि वृन्दाबिपिन आँनद पाइयो कह कौन ॥ भवनगे बांकेबिहारी चणक पायो ताहँ । लिये आँनद सहित आये कूलयमुनाजाहँ १३९ कहो यद्यपि द्वारपालन भोगलाग-नचाह । सुनो माधव दास होवै तृप्तियेहीमाह ॥ बने व्यंजन छरसलै करथार गे पूजार। लगो तहँवाँ भोग नाहीं गीसिहरिउचा रि १४० चणक भोगलगाय माधवदास भूखन तासु । सुनत इमि पूजार धाये गये तिन ढिग आसु ॥ बिनय संयुत तिनहिं लाये भोग लागो तत्र । बहुरि बनभाण्डीर आये खेम साधू य-त्र १४१ तासु मन्दिर टिकन चाहे टिकन दीन्हों नाहिं । बैठ अ-लगहि परतभ क्षमि तासु भोजन माहिं ॥ तबहिं साधूशरण आयो दास माधव जाहँ । क्षमा तिन अपराध कीन्हीं दया करि

मनमाहँ १४२ आवपुनि हरिआन आगमरहत साधू यत्र। कथा भगवत होत दिनप्रति सुनतभे रहितत्र ॥ धेनुवहुते तौन मान्दिर करत कारज एह। सकल गोमयकरिइकट्ठा उपलपाथ सनेह १४३ एक दिन इकसाधु आयो कियप्रणामहिं जानि। देखि भवन महन्त माधव दास को पहिचानि ॥ परे चरणन आइ विनती करतभे वहुसोइ। रहे माधवदास कछुदिन तहां आनँद होय १४४ स्थान को वरदानदैकै साधु सेवा हेत। चलतवेला जातभे जहँ जन्म भूमि निकेत ॥ मातु सुत तिय भक्ति दैकै जातभे पुनि तत्र। पुरी पुरुषोत्तम विराजत जगत के पति यत्र १४५ भजन सुमिरन ध्यान आदिक करन लागे तौन। चरित माधव दास वहुविधि पारपावै कौन ॥ जियालाल वखानकीन्हों जानि पायो जौन। साधुचरित अगाध धारत वानिवेदहु मौन १४६ ॥

नारायणदासकी कथा ॥

दो०। अल्हभक्तके वंशमें भेनारायणदास। चारन जाति कहावई भक्ति विरागप्रकास १४७ भ्रातावड़ो कमातहो खर्च करत येतौन। भोजन हितगे एकदिन परसत भाभीजौन १४८ शीत अशन कीन्होंनहीं मांगो उष्णतहांइ। सोकह क्यातुम अल्हसम जोसेवैं चितलाइ १४९ लगीवात तिनके हिये मनमें कियो विचार। भगवतभक्ति विहीनतनु पशुसमान संसार १५० जीवनभस्म समानहै कीन्ह जगत गुनित्याग। जाइ द्वारकाके विषे हरिसुमिरत वड़भाग १५१ कियो भक्तिसो हरिहिवशदीन्ह दरश भगवान। कृपाकरी तिनपर अमित मानो अल्ह समान १५२ ॥

जीवगोसाईंकी कथा ॥

चौ०। जीवगुसाईं भक्तसयाने। जगत असत्य सत्य हरि जाने ॥ वास करत वृन्दावन सोई। दिनप्रति नईप्रीति उरहोई १५३ एकसमय तिनयश सुनिपायो। अकवर वादशाह वुल-

वायो ॥ तिनसों कहतभयो सुखपाई। कहिय यमुन माहात्म्य सुनाई १५४ वर्णन कीन्ह बिबिध बिधि ताही। वृन्दाबन आये पुनिचाही ॥ एकसमय बृन्दाबन आये। अकबर बादशाहसुख पाये १५५ तिनसों मिलि आनन्दित भयऊ। बाणी कहन मलिक इमिलयऊ॥ मांगिय कछु मोसन जो भावै। कहगुसाइँ मन एकनआवै १५६ बादशाह बहुतैहठ कीन्हा। तब याबिधि इन मांगन लीन्हा॥ शास्त्र पुराण स्मृतिहैंजेते। वृन्दाबन मँगवाइय तेते १५७ बादशाह जन तुरित पठायो। खोजि खोजि लघु दिनन मँगायो॥ पुनि मन्दिराहित बिनती कीन्हा। सुनि गुसाँइ इमि उत्तर दीन्हा १५८ नेत्रमूंदि देखिय सो देखा। वृन्दाबन की भूमि बिशेखा॥ मणिमय मन्दिर कोटिन सोहत। सुबरण खचित मुनिन मन मोहत १५९ खोलि नयन मन बिस्मय पायो। बादशाह अति विनय सुनायो॥ बिदामांगिनिज भवन सिधारा। इमि गुसाइँ कर चरित उदारा १६० ॥

सुरसुरीजीकी कथा॥

चौ०परमसतीसुरसुरि सुकुमारी। जोसुरसुरानन्दकीनारी ॥ पति समेत बृन्दाबन जाई। भगवत भजन ध्यानमन लाई ॥ १६१ रहो रूप सुन्दर जिनकेरा। कुटी समीप यमन कियडेरा॥ तिनसरदार देखि तहँपायो। रूपदेखि सुधि बुधि बिसरायो १६२ निज दासन सों कहो बुझाई। लावहु पकरि नारि यहजाई॥ जबजानो सुरसुरियह हाला। भगवत ध्यानधरो तत्काला १६३ व्याघ्ररूप प्रगटे भगवाना। सबदुष्टन को कियो निदाना। जासोंनेक न लागैबारा। यह विचारि हरि तनु हरिधारा १६४ लीन्हों लाज राखि भगवाना। जियालाल हरि समको आना। आवत तुरित भक्तदुख देखी। शरणागतपर कृपाबिशेखी१६५

द्वारकादासजीकी कथा॥

छन्दरोला। रहे द्वारकादास कील्हचेला सुखदाई। पर

भक्त भगवान राम छवि हिये बसाई। ध्यान करत जल मांझ रामचरणन शिरनाई॥ भवबन्धन सब काटि रहे दृढ़ चितहरि लाई १६६॥

राघवदासजीकी कथा॥

चौ०। राघवदास भक्त अति नीके। विषय भोग जाने सब फीके॥ काम क्रोध अरु लोभ अपारा। जानो जीति वृथा संसारा १६७ भगवत भक्तन में विश्वासा। प्रिय दर्शन सहिष्णुहरिआसा॥ सेवासाधु गुरू अतिकरहीं। मीठेवचन भाषिमुद भरहीं १६८॥

हरिवंशजीकी कथा॥

छन्दरामगीतिका। भक्त हरि हरिवंश नीके चरण हरि विश्वास। वस्तुसब करिदान दीन्ही त्याग कीन्हीआस॥ घटी एकहुजात व्यर्थ न भजन बिन भगवान। वचन कबहुँ कठोर बोलन सहन शील निधान १६९॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्विंन्शतिनिष्ठामध्येषोड़शशांतविरागनिष्ठायांचतुर्दशभक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधावष्टदशस्तरंगः १८॥

दो०। हरिसेवा माहात्म्ययह सत्तरहीं शुभनिष्ठ। दश भक्तन की गाथजहँ वर्णन अहै वरिष्ठ १ ऊर्ध्वरेखको बन्दऊँ राम कमल पदजौन। करिप्रणाम अवतारबुध धरोगया में जौन २ सेवादास्य कहावई स्वामीकी है जौन। अनुक्षण सन्मुखही रहे आलसकरै न तौन ३ मनसा वाचा कर्मणा जाने निजकोदास। जिमि प्रसन्न स्वामीरहै भगवत रमा विलास ४ निजदुखको समुझै नहीं प्रभुकारज हित लागि। तन धन कुल परिवार सुत अरपै मनअनुरागि ५ चौ०। महिमा सेवा निष्ठाजोई। कोविधि वरणि सकै कविकोई॥ सकल सुरासुर नरगंधर्वा। किन्नर यक्ष

पितर गणसर्वा ६ या निष्ठासों हरिको पावत। स्वर्ग मोक्षनाना सुखपावत ॥ बर्णन करौं कछुक मैं सोई। या निष्ठामें तत्पर जोई ७॥

लक्ष्मीजीकी कथा॥

चौ०। जगत जननि लक्ष्मी गुणखानी। श्रीनारायणकी पटरानी॥ हरिसेवा तनमनदैकरई। आज्ञासदाशीशपर धरई ८ हरिलक्ष्मी वपु एकबखाना। शब्द अर्थ जलबीचि समाना॥ जेते विष्णुचरित्र सुहाये। तेते लक्ष्मीके सुखछाये ९ सीता राधा रुक्मिणि जोई। शक्ती सकल रमाकी सोई॥ जेतेहैं इनआदिचरित्रा। जानिय लक्ष्मी केर पवित्रा १०॥

शेषजीकी कथा॥

चौ०। शेषअनन्तचरित्रअनन्ता। बर्णनकरत बेदबुधसन्ता॥ रक्षा धर्म करत सब काला। दुष्ट विनाश संत प्रतिपाला ११ भगवत भजन करत उपदेशा। वेद श्रुति उपदेश विशेशा॥ पिंगलादि प्रगटे सुखपाई। छन्द प्रबन्ध प्रगटभे आई १२ धर्म हेत धारतअवतारा। दुष्ट बिनाशन जग सुख कारा॥ भगवत रूप शेष सुखदाई। वेद चरित्र कहत सकुचाई १३ भगवत नये नाम नित गावत। द्वैसहस्र रसनासुख पावत॥ भगवत सिंहासन शिर सोहत। रूप देखि रतिपति मन मोहत १४ करसों हरिपरिचर्य्या करहीं। नयनन रूप देखि मुद भरहीं॥ हरिप्रसाद रसना सों चाखत। तुलसि गंध नासा अभिलाखत १५ कहिनसकत महिमा जिनकेरी। वेदपुराण शास्त्र मुददेरी॥ जियालालसो किहिविधिगावै। पर्वत पारपंगु किमिजावै १६॥

षोडशद्वारपालपार्षदोंकी कथा॥

चौ०। षोडशद्वारपाल हरिजोई। वर्णनकरौंनामतिनसोई॥ विष्वक्सेन सुसेन सुहाये। बलजय विजय प्रबल सुखछाये १७ भद्रसुभद्र नन्द अरु चण्डा। कुमुद सुनन्द सुशील प्रचण्डा॥

शील अपर कुमुदाच्छ कहावत। भगवत रूप देखि सुख पावत १८ हैं असंख्य पार्षदहरि आना। तिनहिं कौन करिसकत बखाना॥ षोड़शपार्षदये सुखधामा। हरिसेवातजि और न कामा १९ छन्दशमगीतिका। प्रीति संयुत सेव भगवत समय व्यर्थ न जात। सहितआनँद निरख भगवत रूप कोमलगात॥ रहत भगवत प्रेमरसमें मग्नअलग न होत। पुष्ट हृष्टबलिष्ठ सब विधि अङ्ग तेज उदोत २० चहैं तो ब्रह्माण्ड कोटिन करैं विरचित तौन। करैं पालन सकल भांतिन विष्णु के सम जौन॥ करैं नाश बहोरि जग को सत्य है यह बात। विष्णु के समविष्णुके जन सदा सुकृतगात २१॥

हनुमान्‌जीकी कथा॥

चौ०। श्री मारुतसुत कथा सुहाई। बरणों रामचरण शिरनाई॥ अंजनिपुत्र महाबलवाना। रामचन्द के भक्त सुजाना २२ रघुवर कथा पोत जग सरिता। बादवान सम हनुमत चरिता॥ हनुमत कथा कही किमि जाई। धन्य धन्य कहलोग लुगाई २३ सीतहि जाइ सँदेश सुनायो। पुनि मधुवन भीतर फल खायो॥ अक्ष सँहारि लंक कहँ जारी। कूमबुझायो वारिधि वारी २४ चूड़ामणि लै प्रभुपहँ आये। रघुवरचरण शीश तिन नाये॥ रघुनन्दन लीन्हो उरलाई। सीताकेरि पूछि कुशलाई २५ लक्ष्मण हित संजीवनि लाये। भरतहि रामागमन सुनाये॥ सब शास्त्रनके जानन वारे। श्री रघुनन्दन के अति प्यारे २६ उर विश्वास नाम प्रभु भारी। सोकाविधिमें कहौं विचारी॥ जब रावणहिं रामसंहारी। अवधपुरी आये सुखभारी २७ सिंहासन रघुनाथ विराजे। छविदेखन सुरनायक लाजे॥ भेंटदेन सबभूपति लागे। देश देश के आनँदपागे २८ तबहिं विभीषण आनँदपाई। मणिमाला दीन्ही छविछाई॥ जोनारिधिसों लाये मांगी। ताहि देखि सबश्री सति

लागी २९ तब रघुबर सबकी गतिजानी। माला एकचहतसब आनी॥ ताते मालदेउँ यहताही। इहि चाहनाजासु हियनाही ३० यह बिचारि हनुमंत बुलाई। मालादेतभये सुखपाई॥ हनूमान माला वहदेखी। जामें प्रगटन भक्ति बिशेखी ३१ रामनाम ऊपरनहिंदेखा। तबभंजी मणि एकबिशेखा॥ ताअंतरहु नाम नहिं पायो। तबहिं द्वितिय मणि फोरनलायो ३२ सुरनर कहत भये इमिबानी। रामकाहिदिय यहसुखदानी॥ जगतमांझ अस मालन देखा। ताको तोरत जात बिशेखा ३३ या बिधि कहत मनहिं मनसबहीं। रह्योनगयो एकसोतबहीं॥ भंजत किमिदुर्लभमणि माला। मोसन सत्यकहियसो हाला ३४ कहकपिराम नाम अवलोकत। सोकहकपि मुखओर बिलोकत॥ राम नाम इन बस्तुन माहीं। होतकतहुँ गुनियेमनमाहीं ३५ कह हनुमान नाम जोनाहीं। तौ यह मालामणिन वृथाहीं॥ सो कहजो याविधि बिश्वासा। चाहिय तब तननाम निवासा ३६ चाहिय सत्य कहा हनुमाना। यह कहि निजबक्षसित्वक भाना॥ राम नाम रोमाप्रतिदेखा। वहजन लज्जितभयो बिशेखा ३७ ओबिश्वास सबन मनसोई। नहिं सेवक हनुमत समकोई॥ ऐसेकोटिन चरितअपारा। जियालालपावैकिमिपारा ३८॥

जगतसिंह की कथा॥

दो०। बेटा आनँदसिंह के जगतसिंह महिपाल। भगवत भक्तिहि धारिहिय कियो साधुप्रतिपाल ३९ सत्य प्रेमसों करतभे भगवतसेवा माहिं। भयोनमनडग मगकबहिं भक्तिघटी उरनाहिं ४० चौ०। भक्ति सोंहँ सब प्रजालगाये। सोहत धनसंपति सुख पाये॥ दिनादिन उदयराज्यकरहोई। प्रजानन्द पावत सबकोई ४१ याविधि सेवा में मनदीन्हा। लक्ष्मीनारायण वशकीन्हा॥ जात नृपति पुर बाहर जबहीं। हरिपालकी अग्रचलतबहीं ४२ किंकर सहस्र जात तहँराजा। चढ़त शत्रुपर जबजयकाजा॥

मालिक तहाँ होत भगवाना॥ आपु करत दलकारज आना ४३
हरिसेवा करकारज जेता। निजकर करतनृपति सबतेता॥ निज
शिर जलभगवत हितलावत। हरि सुमिरण रसना सुखपावत
४४ सबराजन के राजकहाये। शाहजहाँनाबाद सुहाये॥ जल
लावनके अवसरमाहीं। देखनचहये नृपतिनकाहीं ४५ नृपयश-
वंत सिंह सुखछाये। उदयपूर के भूपकहाये॥ जयपुरके जय-
सिंहनृपाला। नृपकी भक्तिकेर सुनिहाला४६ शेषनिशाद्वैघटिका
देखी। जात भये तिहि मार्ग विशेखी॥ दर्शन होतभये तिनका-
हीं। सायुध बहु पैदलसँगमाहीं ४७ सेवक साथचले बहु आवत।
कुलसेवक बहुआनँद पावत॥ राजाशीशस्वर्ण घटलीन्हे। रसना
रामचिह्न जन कीन्हे ४८ नाँगे पगन नृपहिं लखि पावा।
दोनों नृपन न धीरज आवा॥ किय दण्डवत नृपति के चरणा।
हाथ जोरि बिनती बहु वरणा ४९ जीवन को सुखजौन बखा-
ना। सो तुमहीं को दिय भगवाना॥ इत हरिभक्ति राज्य सुख
कारण। उत हरिलोक मिलै दुख दारण ५० जगतसिंह सुनि
कहो सनेहा। मैं करि सकत सेवका एहा॥ है अवश्य इमि ब-
हिन तुम्हारी। जाकी संगति है अति प्यारी ५१ नृप जयसिंह
सुनी यह बाता। दीप कुंवरि तन हरिसों नाता॥ अति आन-
न्द लहो नरनाथा। जगतसिंह की यानिधि गाथा ५२॥

कुंवरकिशोरकी कथा॥

छन्दनरेन्द्र। नृप खेमाल पौत्रहरि सेवक कुंवरकिशोर कहा-
यो। भगवत भक्ति बिराजत जाउर प्रेम चरण प्रगटायो॥ की-
न्ह स्वभाव विवश सब काहुन मधुर वचन कह सोई। शिक्षा
मानि पितामह निज की कीन्ह भली विधि जोई ५३ ताको
यह वृत्तान्त कहत जब मरन लाग खेमाला। शोच युक्त भो
नयन नीर भरि पूंछत भे तब बाला॥ राज समाज कोश परि-
पूरण करिय चहिय जो दाना। कारण कौन शोच जिय लावत

सुनि खेमाल बखाना ५४ कीन्हों सकल दान धर्मादिक केवल कियो न एहा । हरि हित जल शिर धरि नहिं लाये नृत्यान्न युत नेहा ॥ कुंवर किशोर जोरि कर बिनयो आज्ञा मो कहँ दीजै । जब लगि जीवरहै तन जनको आयसु शिरधरि कीजै ५५ सुनि खेमाल लाइ उर हर्षित द्वौ हित आयसु दीन्हा । तनतजि परम धाम मग लीन्हा इन आयसु शिर लीन्हा ॥ आयसु कियो निवाह जौन बिधि बरणि कौन सो जावै । भगवत पद लगाव इन्द्रीगण तन मन धन सति भावै ५६ ॥

नरहरिआनन्दकी कथा ॥

दो० । भे नरहरि आनन्द जी भगवत भक्त सुजान । भगवत सेवा में रहत राति दिवस सुखदान ५७ अति बर्षा इक दिन भई काष्ठ रसोई हेत । मिलो नहीं ताहित गये दुर्गा तत्र निकेत ५८ छत्ति बिदारण लाग जब दुर्गा बोली बैन । नहिं मन्दिर खोदिय मिलिहि काष्ठ नित्य तव ऐन ५६ फिरि मन्दिर आये लखो काष्ठ रसोई कीन्ह । भगवत भोग लगाइ पुनि सेवा में मन दीन्ह ६० एक नारि जानो चरित कहतभई पति पाहिं । खोदौ दुर्गा भुवन नित मिली काष्ठ तुम काहिं ६१ सो मन्दिर खोदन लगो देवी टांगो ताहि । शिर नीचे पद ऊर्ध्व करि तब कह दुर्गा त्राहि ६२ कह देवी बचिहौ तबहिं मोसन कहिये एह । लै जैहौं मैं काष्ठ नित नरहरि आनँद गेह ६३ कीन्हों अंगीकार सो गो दुर्गा को भार । भगवत जन महिमा अमित को कवि पावै पार ६४ ॥

प्रेमनिधिकी कथा ॥

छन्दरामगीतिका । प्रेमनिधि भे विप्र वंशम आगरे अस्थान । रहेअंतर बाह्य सब बिधि शुद्धजन भगवान ॥ मधुर सुन्दर वचन बोलत भक्ति नवधा धार । संग भगवतभक्त को कर शुद्ध भाव उदार ६५ उठतब्रह्ममुहूर्तदिन प्रति विष्णुसेवा हेत । तोय

यमुना कलश शिरधरिजात नित्य निकेत॥ एकदिन अतिभई वर्षा कीचभोबहुराह। कीन्ह चिंता परसदिन नर निशिकि होइ निवाह ६६ चले निशिमेंबरपतेही ठीकहिये विचारि। छुवेदिनमें नीच कोउ कलश भगवतवारि॥ अतिअँधेरी रातवर्षत मेघआयेह्वार। भक्तवत्सल कृपावारिधि रूपजन हितधार ६७ वर्षद्वादश वालवपुकरि लिये हाथ मसाल। चले आगे प्रेमनिधिने लखो रूपरसाल॥ घूंघरारी जासु अलकैं मदन मोहन रूप। आरसी ले नयनमन हरवपुपशोभा नूप ६८ देखि सुन्दर रूपमोहित होत भे तिहि काल। गयो अंतर वाह्यकोतम लखिप्रकाश मसाल॥ कीन्हमनहिं विचार स्वामिहि भेजिनिज घरजात। यदपितद्यपि जातपीछे लखि मनोहर गात ६६ गये यमुना कूल मज्जन कीन जल भरि लीन। शीशधरिजल कलश तत्क्षण गमन मन्दिर कीन॥ कलश धरि भगवान मन्दिर गये ढूंढ़न तस्य। लियो मन जिन केर हरिकैं कृतहुँ पावन यस्य ७० जानिगे असरूप वाला चित्तहर विन कौन। व्रजकिशोर दयाल करुणासिंधु पालक जौन॥ थोरिये सेवकाइ ऊपर कियपरिश्रम तौन। लहत वेदन पारजासम कृपा सागर कौन ७१ समुझियह मन करन सेवा लाग भगवत केरि। लहत जब अवकाशतासों कथा वर्णत फेरि॥ जातश्रोता बहुतपीछे होतकीर्त्तन गान। होत नित्य समाज पापिन देखि अघ हिय आन ७२ दो०। बादशाह सों कहत भे अति अनर्थ है एह। जमा करत तरुणी सकल कथा वहाने गेह ७३ चोपदार पठयो मलिक गयो प्रेमनिधि गेह। जल प्यावन भगवानको जातरहे युत नेह ७४ चोपदार जल्दी करी भूल गये निहिधार। कहत भये वृत्तांत सब जाइ मलिक दरबार ७५ बादशाह कहभात तासु कह लोगन हैंयाहँ। ताको समुझैंगे कियो भाँपिनन्द तिन काहँ ७६ बादशाह सोयो निशा तासु इष्ट धरिदेह। लागि तृषा भगवत कहो सो बोल्यो युत नेह ७७ धरेघड़ा बहुतै यहां आपकरें जल

पान। यह सुनि भगवत क्रोधयुत या बिधि वचन बखान ७८ पीवत तब घट कौन जल सुन तन मेरी बात। बादशाह करजोरि कहभययुत कंपित गात ७९ जाको आज्ञादीजिये प्यावै पानी तौन। कह भगवत तिहि बन्द किय प्यावत पानी जौन ८० खुले नयन तब मलिक के तिनहिं बुलायो तत्र। पग शिरधरि करिबिनय कहक्षमिय पाप ममअत्र ८१ तृषा दूरसबकी करत लगी तृषा है ताहि। जाहु शीघ्र लीजिय मुलुक माल जौन चित चाहि ८२ लियो कछू नहिं होबिदा गये भुवन निज काहँ। जल अर्पण हरिको कियो मिटी तृषा क्षणमाहँ ८३॥

जयमलकी कथा॥

दो० मीरथ के जयमलनृपति भगवत भक्त सुजान। कोई मीरा को करत छोटाभ्रात बखान ८४ दश घटिकापर्य्यंत दिन पूजत हरिसुखदान। कोऊसेवाके समय पासन पावतजान ८५ रहो हुक्मयाभाँतिसो वधपावै जोजाइ। अरिसुनिपायोहालयह तत्क्षणआयोधाइ ८६ सदलघेर पुरआइकै मचोअमित गुलशोर। कहतनकोऊ नृपतिसनाहियै मरणभयघोर ८७ तबनृपमाताजाइ कै कहतभई सबहाल। बोलेनृपकछुभयनहीं भयनाशकनँदलाल ८८ पूजन सों मननाटरो जानोयह भगवान। नृपति अश्वचढ़ि शत्रुदल नाशोजाइमहान ८९ करिपूजन भूपति उठेलगे समर सामानास्वेद पूर्णनिजहय निरखि अति अचरज जियआन ९० अश्वदूसरे नृपति चढ़ि गयेकटकयुततत्र। सदल शत्रुभूपतिपरो व्याकुलपहुमीयत्र ९१ जयमलसोंपूछतभयोहै तबदल वहकौन। श्यामस्वरूप अनूपछविममदल नाशोजौन ९२ कहजयमलतत्र भागसों प्रगटभयोसो आइ। मोहिंदरशदीन्हो नहीं सोवतहू में भाइ ९३ वहवैरी गुनि चरितहरि लहआनन्द अपार। श्रीहरि भक्तिसुहावनी कीन्हो अङ्गीकार ९४ ग्रीषमऋतु आई तहां जयमलकियो विचार। अविश्वास अरुढीठता मेरीअहै अपार ९॥

नेक पवन प्रविशै नहीं जहँ सोवत भगवान। हवादार में हम रहत सुन्दर सुखदमकान ९६ रचो तिमहला एकगुनि बँगला सुभग मकान। छत्तचांदनी फर्श शुभ परदे झालर तान ९७ एकपलँग सुवरण रचित तोशकादि सजवाइ। तकिया चादरि डोरिकसि दियबाँगले बिछाइ ९८ शयन साज तैलादिशुभ धरे मिठाईपान। शयनकरावत भे हरिहि धारिमानसीध्यान ९९ आपलिये हथियारकर चौकी ताकीदेत। साजसजतकर आपने हरिसेवायुतहेत १०० कीन्हों अङ्गीकार सब हरिसेवा सामान। खातमिठाईपयपियत दलतसेजघटपान १०१ प्रेम जलधि बूड़त नृपति गयेनकछुदिन गेह। नारिबुलावत बांगले नृपरानी कह एह १०२ भेदलेनऊपरचढ़ी लखोबांगले तत्र। बालक परमकिशोरवय सोवतसुन्दरयत्र १०३ पीताम्बर पहिने सुभग श्याम रूपछविऐन। रानिसुलानीआपको लगेबाण उरमैन १०४ प्रात कहो नृपसो सुनत कियो क्रोध गुनिफेरि। धन्य नारि हरि दरशादिय कृपादृष्टिसों हेरि १०५॥

आसकरनकी कथा॥

छन्दनरेन्द्र। आसकरन नरवरगढ़राजा भीमसिंहसुत जोई। जाति कछाह कील्हके चेले परमभागवत सोई॥ शूरउदार बुद्धि गुणधारक बोलतमधुरे बैना। सेवासाधु चित्तदृढ़धारण भगवत जन सुखऐना १०६ दशघटि दिनपरतकहरि सेवा करत नृपति वरसोई। आयसु वेत्रपाणिकहँ सन्मुख आवन पावन कोई॥ बादशाहता अवसर आये पठये नृपहि बुलाई। घूमिगयो हलकारानिनको कोउन खबरिजनाई १०७ बादशाह करिकैनइक्कोधासाजिके फौजपठाई। लिखो पत्र सेनापति बहुरो भूपतिखबरि नपाई॥ बादशाह आपुहि चलिआयो गयो भूपढिगधाई। द्वारपाल जन संगिन रोंको मन्दिर मलिकपठाई १०८ पूजा कीन्हे करत दण्डवत बादशाह लखि लीन्हा। खड़ेभेरतक रहे उठनहिं

खड्ग घात पद कीन्हा ॥ लागो खड्ग न भूपति जानो हरिसमीप मन जासू। बादशाहगे बाहर संशयकीन्ह देखि बिश्वासू १०९ करि दण्डवत भूप जब आये सुनो मालिक हैं आये । नानाभाँति करी पहुनाई बादशाह सुख पाये ॥ निज कुसूर पुनि क्षमा कराये लाज असित उर आई। श्रीमोहन जी राग भोगहित दिय जागीर लगाई ११० ॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठासध्येसप्तदशभगवत्सेवामाहात्म्यनिष्ठा यांदशभक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधावेकोन विंशस्तरङ्गः १९ ॥

दो०। श्रीरघुबरपद कमलकी चन्द्र रेखको नौमि। ऋषभदेव अवतार पद करौं दण्डवत सौमि १ निष्ठा कहत अठारहीं दास्य निष्ठ जिहि नाम। षोड़श भक्तनकी कथा है बर्णन सुख धाम २ यद्यपि भगवत भ्राशहित बहु निष्ठा सुखदानि। सबन केर परिणाम यह तद्यपि लीजिय मानि ३ सब भावन में मूल है दास्यभाव सुखधाम। भाषत वेद पुराण यह नाना बचन ललाम ४ यानिष्ठा जे भक्तहैं बरणौं तिन के नाम। जियालाल जन सुनि सुमिरि पावत भगवत धाम ५ ॥

प्रह्लादजी की कथा ॥

चौ०। अब प्रह्लाद कथा सुखदाई। बरणौं रामचरण शिर नाई ॥ अग्रणीय दासनमें जोई। भगवत धर्म प्रकाशक सोई ६ विदित पुराणन में विस्तारा। इनकी कथा अहै सुख सारा ॥ ताते मैं संक्षेप बखानौं। भगवत भक्त चरण उर आनौं ७ हिरण्याक्ष कहँ जब हरि मारा। धरिबाराहरूप अति भारा ॥ कश्यप हिरण क्रोध अति कीन्हा। एक चत्र हित तप मन दीन्हा ८ सूनो जानि इन्द्रतहँ आये। लूटन भंजन गृह मनलाये ॥ पकरोनारि गर्भ प्रह्लादा। लेकर चले सहित अह्लादा ९ नारद आइ छुड़ा-

वत भयऊ। तिहि उपदेश विविध विधि कयऊ॥ सो प्रह्लाद सुनो मुद गहिकै। आव हिरणकश्यप मुद लहिकै १० तीनों लोक जीति सो लीन्हा। सुरन जीति कारागृह दीन्हा॥ पुनि प्रह्लाद जन्मतहँ लीन्हा। विप्रासीशत यहकहिदीन्हा ११ सुनहु दैत्यपति वचनरसाला। कुल पवित्रकरिहै यह वाला॥ पुरुषा भये परमपदभागी॥सुनिहिरण्यकश्यपअनुरागी १२ विप्रनदानविविध विधिदीन्हा। लालन पालन सुतकर कीन्हा॥ पांचवरपकरसुत जवभयऊ। पढ़नहेतु आयसुसो दयऊ १३ शुक्रसुवनढिगपढ़नपठायो। सादरतोन पढ़ावनलायो॥ रामनाम प्रह्लादपुकारा। सुनतगुरुकि यक्रोधअपारा १४ नानाभाँति नीतिवतरावत। पर प्रह्लादहि एकनभावत॥ कहहिरण्यकश्यप इकवारा। कासुतपढ़े करियउचारा१५ रामनाम प्रह्लादसुनावा। सोसुनिकै अतिक्रोधबढ़ावा॥ यहहै नामशत्रुममजोई। तोकहँ कौनपढ़ायो सोई १६ सुनहु पिताहै अति सुखधामा। यहै नाम नाशिनदै नामा॥ सब धर्मनमें धर्मकहावै। सवविद्यों में शोभा पावै १७ तुमहूँ नाम जपौ पितुएहा। याकेजपे न कछु सन्देहा॥ सुनि हिरण्यकश्यप करिक्रोधा। लीन्ह बुलाइ तुरित निजयोधा १८ कहो मारिडारहु यह बालक। जपत शत्रु मम यह उरशालक॥ सो सुनि करिकरि क्रोधअपारा। हनतभये आयुध खरधारा १९ नेक अंगमहँ चोट न आई। योधा सकल रहे शिरनाई॥ दीन्ह शिखीमधि तिनहिं डराई। जर न सरिता दीन्ह डुवाई २० बूड़े नहिं पर्वतसो डारा। तहां राखि लीन्हों करतारा॥ करिहारो नहिंचलो उपाई। बहुरि पढ़न शालाहि पठाई २१ पाठक कहुँ कारजहित गयऊ। बालक सकल बोलि तिन लयऊ॥ तिनसों कहत भये समुझाई। यह संसार असार महाई २२ नश्वर है ताको व्यवहारा। यामें रामनाम है सारा॥ है सर्वत्र सर्वगत सोई। सोइलखी ता विसुख जुहोई २३ भगवत भजन हेत तनु एहा। नाहिंत पशु पक्षी समदेहा॥ नारदजी जो मोहिंवतायो।

सो तुमको मैं सकल सुनायो २४ भगवत शरण गहे कल्याना। जाति पांति नहिं लखत निदाना ॥ मैंहूंहौं कुलजाति तुम्हारे । देखौ हरि संकट किमिटारे २५ तिन उपदेश पाइ अनुरागे। भगवत भजन करन सो लागे ॥ गुरूआइ देखत भे जबहीं। भूपति पाहँ कहो सबतबहीं २६ सुनत भूप किय क्रोध अपारा। तीक्ष्ण खड्ग हाथ निज धारा ॥ प्रह्लादहि मारन सो चाहा। पुनि इमि कहत भयो नरनाहा २७ कौन अहै रक्षक अब तेरा। ताको नाम कहिय या बेरा ॥ कहो कुंवर रक्षकमम सोई । व्याप्तचराचर में है जोई २८ है खंभाहू कह तू जौन । कहप्रह्लाद अवशिहै तौन ॥ मुष्टिक एक खम्भ में मारो । ताक्षण हरिनृसिंह बपु धारो २९ अररररखम्भा फटि गयऊ । तमिचरत्रसे शोर अति भयऊ ॥ चौंकि उठे दशहू दिगपाला । कमठ शेष भूभूधर चाला ३० बिकटरूप धारो भगवाना। देखि शकान असुर बलवाना ॥ लपलपात जिह्वा बिकराला । मनहुँ कराल कालकर बाला ३१ बिकट आस्यरददंष्ट्र कठोरा । मानहुँ ग्रसहिं जगत बरजोरा ॥ आग्नि ज्वालसम नयन कराला । असुरन भस्मकरन चहहाला ३२ सटाक्षेप घनमाल भ्रमावत । संभ्रम सुर बिमान उपजावत ॥ नख बिकराल महा भयकारी । नरशार्दूल अर्द्ध बपुधारी ३३ सभा मध्य लखि रूपकराला । कश्यप पुरट लियो करवाला ॥ पुनि क्रोधित इमि बचन सुनायो । बहुदिन ढूंढ़ि आजु इहिपायो ३४ यह कहि युद्ध करन सो लागो । नानादावँ पेंच रिसपागो ॥ दोनों कीन्हों क्रोध अपारा। प्रलय होन चह जनु संसारा ३५ क्रोधित गरजहिं दोउ अपारा । सो धुनि पूरिरही संसारा ॥ इमि क्रीड़ित नृसिंह भगवाना । मारत भये असुरबलवाना ३६ जहँ मुलतान देश रजधानी । सभा स्वर्ण कश्यप सुखदानी ॥ युद्धारम्भ भयो मध्याना । सायंकालवधो भगवाना ३७ ऊरुपछारिनखन उरफारा। ब्रह्मबचन कीन्हों प्रतिपारा ॥ हर्षित देव सकल तहँ आये।

करि जयशब्द सुमन बरषाये ३८ अस्तुति सकल दुरितेकरहीं। जातन निकट रूपलखि डरहीं ॥ तब प्रह्लाद विनय सुरकरिकै। आगे करि आये मुद भरिकै ३९ श्री प्रह्लाद नभय कछु लीन्हों। निकट जाइ अस्तुति बहु कीन्हों ॥ हेप्रणतारति भंजन स्वामी। करौं जोरिकर कोटि नमामी। ४० क्रोध पूर्ण तवरूप कराला। देखि भयातुर देव विहाला ॥ कांपत गात बात नहिं आवै। कृपासिंधु बिन को अपनावै ४१ सुनि प्रह्लाद वचन भगवाना। अभय दान दै सुर सनमाना ॥ कह प्रह्लाद पाहिं वर लीजे। अनपावनी भक्ति प्रभु दीजे ४२ जहँ जहँ जन्म लेउँ मैं स्वामी। होउ तहां रावर अनुगामी ॥ वरके हेत भुलाइय नाहीं। जग के सुख दुख सकल वृथाहीं ४३ जो वर देन चहियममनाथा। तौ यह दीजिय नावों माथा ॥ पातक अमित पिता ममकीन्हा। कुवचन कहन आपुकहँ लीन्हा४४ कृपा करिय सो नरकन जावै। सुनि नृसिंह इमि वचन सुनावै ॥ धन्य पुत्र जाके तुम भयऊ। पिता तुम्हार परमपद लयऊ ४५ यह कहि प्रह्लादहि उरलाये। धन्य भाग हरिभक्त सुहाये ॥ वह शोभा कछु वरणिन जाई। श्री नृसिंह छवि अद्भुत गाई ४६ कोटि सूर्य शोभा नहिं तेती। भगवत मुख छवि देखिय जेती ॥ रुधिर बुन्द सोहत अतिनीके। नेत्रारुण भयदायक जीके ४७ भृगी मूछ सटा अति पीले। कहुँ कहुँ देखि परतहैं नीले ॥ कर वलिष्ठ दोऊ अति राजें। नखकराल तीक्षण छवि साजें ४८ वक्षस्थल तीक्षण अतिसोहै। अंतमाल अरिचित्त विमोहै ॥ लपलपात जिह्वा मुख चाटत। पुच्छ शीश जनु अरिकुल दाटत ४९ याविधि हरि समेत आह्ल-दा। लागे तिलक करनप्रह्लादा॥ अस्तुति करनलाग सवदेवा। वरषैं पुष्प जनावैं सेवा ५० लगे दुन्दुभी बजन अकाशा। नृत्य अप्सरा करहिं प्रकाशा ॥ गन्धर्व गान करत सुखदाई। जैजै कार रही तहँ छाई ५१ कीन्ह तिलक याविधि भगवाना। आपु भये पुनि अन्तरधाना ॥ सबसुरगे समेत आह्लादा।

लागे राज्य करन प्रह्लादा ५२ देशन भगवत भक्ति चलाई । कोऊ बिमुख न परत लखाई ॥ नीति समेत बसे रजधानी । पुत्र समान प्रजा सब जानी ५३ ॥

अंगदजी कपिकी कथा ॥

चौ० । अङ्गदनाम बालिसुतजोई । भगवत भक्तरहो अतिसोई ॥ युवा अवस्थामें सबलायक । प्राप्त्यैश्वर्य्य राज्य सुखदायक ५४ मनकी वृत्ति तदपि हरि चरणा । नेक न तजी रहत नितशरणा ॥ लखि सुग्रीव दुखी रघुनन्दन । बाली कहँ जबकियो निकन्दन ५५ पर अङ्गद तहँ धर्म बिचारी । हियसों नेकन भक्ति बिसारी ॥ बल्कि प्रसन्न भये मन माहीं । राज्य योग बाली रहनाहीं ५६ सीता खोजनके हित गयऊ । नानाक्लेश सहत तहँ भयऊ ॥ बाली सुतको चरित सुहावा । हैरामायण में बहुगावा ५७ कछु-क इहांपर कहौं बखानी । भक्त कथा अतिआनँद दानी ॥ राव-णसभाजबहिं चलिगयऊ । पठव बसीठराम सुखभयऊ ५८ प्रश्नो-त्तर बहुबिधितहँ भयऊ । रावण कहन बचन इमिलयऊ ॥ सब म-नुष्य जिमि राम बिचारा । सुनिअङ्गद किय क्रोध अपारा ५९ असुर चचाल काल वपुदेखी । रावण काँपतभयो बिशेखी ॥ गि-रतभयो सिंहासन तजिकै । गिरेमुकुट अङ्गदलिय गजिकै ६० कछु उठाइ रावण शिरलाये । कछुअङ्गद प्रभुपास चलाये ॥ उत्तर प्र-त्युत्तर पुनिभयऊ । चरणरोपि अंगद तब दयऊ ६१ रावण सो कीन्हींप्रण एहा । बचन कहत हमनहिं सन्देहा ॥ चरण उठावै यह ममकोई । घूमहिं रामसिया बिनसोई ६२ यह सुनि उठेउर्पि बलवाना । इन्द्रजीत आदिकभट नाना ॥ हारिगये नहिं उठेउठावा । जनुसू संगविरंचि बनावा ६३ कामी बचन सतीमनव्यापै । ह-रिजन मन आपत्तिनचापै ॥ जिमिकोरे बिनाभजन भगवाना । दुखसंसार नछूटै नाना ६४ बैठतभे लजाइ सबबीरा । उठरावण करिक्रोध गंभीरा ॥ चरण उठावन हितचल जबहीं । शिक्षाक-

रिअंगद कह तबहीं॥ गहिये जाइ चरण रघुराई। ममपद गहे न होइ भलाई॥ बैठोगवर्ण लज्जापाई। ऐसो भक्तअङ्गदरघुराई ६६ ऐसो भगवत में विश्वासा। भणुके करतनकीन्हीं त्रासा॥ लंका जीति रामघर आये। तिलकपाइ जगआनँद छाये६७ तब अङ्गद प्रभु आज्ञापाई। गेघर हियधरि पद रघुराई॥ सुमिरण भजन करत इमि भयऊ। हरिपद तजिमन अनतनगयऊ ६८॥

पीपाजीकी कथा॥

चौ०। पीपाभगवतभक्त सुहाये। भक्ति प्रताप सकल जग छाये॥ गागरौनगढ़ भूपति सोई। दुर्गा भक्त प्रथम रहजोई ६९ भगवतभक्त एकदिन आये। भोजन सामातिनहिं दिवाये॥ उन भगवत परसाद बनायो। हरि अर्पण करि वचन सुनायो ७० राजाभक्त होइहरिकेरो। इमि दियआशीर्वादघनेरो॥ ताही निशा स्वप्नके माहीं। कोउ भिखायो भूपति काहीं ७१ तहँ नृप मतिमन्द अपारा। भगवत विमुख चहतउद्धारा॥ प्रेतएक तदनन्तर आगो। रूपभयंकर प्रगट दिखायो ७२ पुनि भूपति कहँ लियो उठाई। पटक्यो भूमेअधिक अगाई॥ ताहीक्षण सो नृप यशखंभा। भगवत भक्ति कीन्ह आरंभा ७३ सबरचना जगकी हैजेती। नाशमानदेखी सबतेती॥ दुर्गा प्रगटभई तिहिकाला। पीपाजी पूँछतभे हाला ७४ भगवत भक्ति प्रासकिमि होई। कह दुर्गा सुनिये नृपसोई॥ रामानन्द गुरुनृपकीजे। शिक्षा पाइ भजन मनदीजे ७५ अन्तरधानभई इमिभाषी। पीपारामानँद अभिलाषी॥ काशीकहँतुरित चलिआये। रामानन्दहि विनय सुनाये ७६ रामानन्द कहो समुझाई। यह घरहै त्यागिन कर आई॥ राजाकेर काहइत कामा। सुनि भूपति आये फिरि धामा ७७ त्यागीरूप धारि पुनि गयऊ। रामानन्द कहत इमि भयऊ॥ कूप माहँ गिरिये अबजाई। पीपाचले सुनत सुखपाई ७८ गिरत देखि शिष्यन गहि लीन्हा। रामानन्द मंत्र तब दीन्हा॥

भगवत भक्ति दियो सुख पाई। याबिधि कहत भये समुझाई॥
७६ सेवा साधु करौ घरजाई। एकवर्ष महँ सुनि सिवकाई॥
भक्तनसह आउब तवगेहा। पीपाघर आये सुनि एहा ८० बीते
वर्षपत्र लिखराजा। आइयं राखि बचनकी लाजा॥ रामानन्द
चले सुख पाई। सँगकबीर रैदासलवाई ८१ चालिस शिष्यसंग
लैगयऊ। पीपा लखि अतिआदर कयऊ॥ नगर निकट पहुँचे
जब आई। पीपामिले अग्रसुनि धाई ८२ सहित समाज भवन
निज लाई। सेवाकरत भये सुखपाई॥ रामानन्द कछू दिन
माहीं। चाहे जान द्वारका काहीं ८३ पीपा बिकलभये अति
भारी। तबरामानँद कहो बिचारी॥ रहिये इतचहिये सुखजोई।
सँगचलिये भिक्षुक तनुहोई ८४ अंगीकार कियोसो राजा। साथ
चलनहित कीन्हों साजा॥ बारहरानी तिनसँग लागी। फेरोनृप
बुझाइ बड़भागी। ८५ छोटी रानी फिरि न सोई। कहसहिहौं सँग
दुख सुख जोई॥ कमली पहिरौं नग्नरहाऊं। पति बिहीन नाहिं
पलक बिताऊं ८६ रामानन्द सौगंद दिवाई। तब ताको सँग
चले लवाई॥ ब्राह्मण एक चलो सँग तबहीं। खायो गरलमना
किय जबहीं ८७ त्यागत प्राणभयो दुखकैकै। लिय जियाइ
चरणामृत दैकै॥ ब्राह्मणबहुरिघूमि घरआयो। यह समाज द्वा-
रका सिधायो ८८ पहुँचे सकल द्वारका जाई। दर्शन यात्रा
किय सुख पाई॥ काशी कहँ रामानँद गयऊ। पीपारहत द्वारका
भयऊ ८९ एकदिवस मनमें यह आई। कृष्णदरश करिये सुख-
दाई॥ वारिधि कूदिपरे यह भाखी। सीतासह भगवत उरराखी
९० देखी तहां द्वारका जाई। सुवरण रचित महासुखदाई॥
अद्भुत रचना लखि सुखपाये। कृष्ण दरश पुनि लहेसुहाये ९१
रहे सातदिन आनँद पाये। भगवत आज्ञा सो पुनि आये॥
दीन्हछाप भगवत तिनकाहीं। मुक्तिदानि ममसम जगमाहीं
९२ जोकोउ यह छाप छपैहै। निश्चय मुक्ति पदारथ पैहै॥
लैपीपा सीतासह आये। लोग देखि मन अचरज लाये ९३

पीपाछाप पुजारिन दीन्हा। याविधि वचन कहन पुनि लीन्हा ॥
जिहि शरीर यह जाइ लगाई। होइ मुक्त जगजन्म न पाई ६४
यह प्रताप पीपा कर देखी। लागि भीड़ तहँ होन विशेखी ॥
तब पीपा तहँ सो चलि गयऊ। पथमञ्जिल जब पहुँचत भयऊ
९५ लश्करमिलो पठाननकेरा। सुन्दरतन सीताकोहेरा ॥
पीपापाहँ छीनि उनलीन्हा। हरिसुमिरण सीतातब कीन्हा ९६
तुरतहि आइगये भगवाना। दुष्टनहति सीता कहँ आना ॥
पीपाकह सीतापहँ तबहूं। मन्दिरघूमिजाहु तुमअबहूं ६७ होत
उपद्रव तुम्हरे हेता। तबसीता कह न्याय समेता ॥ कबदुख
सहे आपु ममहेता। कवनकृपाकिय कृपानिकेता ६८ मम आ-
पहुको भई परीक्षा। तबहूंनाथ देत यह शिक्षा ॥ लखिनिश्चय
पीपा सुखपाये। मार्ग दोसरे बहुरि सिधाये ६६ तापथ मिलो
व्याघ्र इकआई। ताको चेलालियो बनाई ॥ भगवतभक्ति ताहि
उपदेशा। अजहूं व्याघ्र जौन तिहिदेशा १०० गोब्राह्मण कहँ
मारत नाहीं। चलतभये आगे मगमाहीं ॥ पहुँचतभये ग्राम
इकजाई। तहां हाटदेखी सुखदाई १०१ लाठी बेंचत रह नर
कोई। मांगत एकभये तहँ सोई ॥ सोकह कानन काटहु जाई।
सुनि पीपा दिय सकल जमाई १०२ शाखा पत्र भये तिहि-
काला। हरित बेणु बनभयो रसाला ॥ लाठी एक काटि तहँ
लीन्हा। गमनभक्त चीधर घरकीन्हा १०३ चीधर लखिलह
आनँद भारी। पूजेपग सानँद सहनारी ॥ रहोअन्न नहिंभोजन
हेता। तियलहँगाबेचे धर्मनिकेता १०४ बेंचिहाट सामग्री लाये।
प्रेम सहित भोजन बनवाये ॥ जब पीपा हरि भोगलगायो।
भक्तन भोजनहेत बुलायो १०५ चीधर भक्त प्रेमयुत आये।
तब तिनकी तियकाहँ बुलाये ॥ चीधर कह पाइय परसादा।
पीछेलेहै शीतप्रसादा १०६ पीपाकह सीताहि बुलाई। काह
हाल देखहु तुमजाई ॥ सीताजाइ लखी वहनारी। काटी बेंठी
नग्न बिचारी १०७ सीताकहो काहयहहाला। चीधर नागि

कहो तत्काला ॥ होनोबस्त्र न होनो जोई । सुख दुख परम अहै नहिं सोई १०८ भगवतरूप चिंतवन जोई । सेवा साधु परम सुखसोई ॥ सीता सकल हाल तबजाना । तिनकी भक्ति धन्य करिमाना १०९ आपनि भक्ति महालघुमानी । अर्द्ध बसन दीन्हों निजआनी ॥ ताहि पहिरिसो बाहर आई । एकसाथ भोजन चितलाई ११० सीता पीपा लखि सिबकाई । तिन मनमें बिचार यहआई ॥ देइँ विशेष द्रव्य इहिबारा । सीतापीपा गेबाजारा १११ सीता वेश्या जातिबताये । विषयी अमित तहां चलिआये ॥ देखिसकोपरको इनतामें । तेज अपार भक्ति हरि जामें ११२ कोउनकहो हँसीकी बातैं । ताकत करि नेत्रनकी घातैं ॥ कोऊ अन्नस्वर्ण लैदयऊ । देतरूपया कोऊ भयऊ ११३ याबिधि बहुत द्रव्य तहँ पाई। देत भये चौधरकहँलाई ॥ चौधर द्रव्य देखि वहलीन्हों । बांटि तुरित भक्तनकहँ दीन्हों ११४ जैसेरह तैसे रहिगयऊ । बिदाहोइ पीपा चलिगयऊ ॥ ठोडा शहर पहुंचेजाई । गमज्जन पुष्कर इकदाई ११५ मुद्रास्वर्ण भरो घटदेखा । निशि सीतासो कहो विशेखा ॥ सुनिकै चोर गये तहँ धाई । घटमहँ चकी परो लखाई ११६ कहचोरन डारियतहँएही । हमकोचहो दसावन जेही ॥ लीन्हों चोरन घड़ा उठाई । डारतभे पीपाढिग आई ११७ मुहर सातसौबीस सुहाई । पीपालीन्हीं सकल उठाई ॥ तीनदिवसलागि आनँद भारा । साधुनकर कीन्हों भण्डारा ११८ सूरसेन तहँ भूप बिराजा । पीपाढिग आयो तजि लाजा ॥ चरणन परि यह विनय सुनाई । मोहिं आपनो लेहु बनाई ११९ पीपा कहो राज्यधन जेता । रानी कोशदेहु सब तेता ॥ भूपति कहो नाथ सब लीजे । मोको मंत्र कृपाकरि दीजे १२० यहकहि नृप रानी बुलवायो । राज्यादिक दै शीशनवायो ॥ तब पीपा दीन्हों उपदेशा । दियो फेरि रानीसहदेशा १२१ कहत भये पुनि भूपति पाहीं । परदा करिय भक्त सों नाहीं ॥ भक्तनकी सेवा नितकरियो । आज्ञासदा शीशपरधरियो १२२ भाई बंधु नृपति

केजेते। पीपासों मन क्रोधित तेते ॥ वृषभखरीदनको बनजारा। फिरत एकनृप बंधु निहारा १२३ कहो बैल पीपापहँ नीके। लीजिय जाइ भावते जीके ॥ सुनि बनजारा तहँ चलिआयो। वृषभलेन हित द्रव्यगनायो १२४ पीपा जानि हाल तिहिपाहीं। कह वृषचरनगये वनमाहीं॥ कछुकबेरमहँ आइय भाई। तबहिं वृषभहमदेव हँकाई १२५ यह सुनि जातभयो बनजारा। पीपा तासों किय भण्डारा॥ साधु सहस्रन भीर अपारा। ताक्षण आवत भो बनजारा १२६ विनय कियो वै तन हित जबहीं। पीपा कहत भये इमि तबहीं ॥ ठाढ़ वृषभ सहस्रनएई। चाहिय जौन लीजियेतेई १२७ बड़भागी बनजारा गायो।साधुन दरशपाइ सुखपायो ॥ भगवत शरण भयो सुखपाई। साधुन कहँ दिय अम्बर लाई १२८ एकसमय पीपा मुदधारी। गये अश्वचढ़ि मज्जनवारी ॥ दीन्ह तुरङ्ग छोड़ि तटमाहीं। इरून लियो चोरि तिहिठाहीं १२९ जब पीपा मज्जन करिभयऊ। चलिबेकीइच्छा मनकयऊ॥ ठाढ़ो भयो अश्वहय आई। भे सवार तापरसुखपाई १३० एकसमय पीपा कहँ गयऊ। भक्तनको समाज तहँ भयऊ॥ साधू आइगये गृहमाहीं। भोजन की सामग्री नाहीं १३१ सीता तबहिं हाटमें आई। वणिक एकसों कहो बुझाई॥ हमहिं देहु भोजन की सामा। आवोंगीनिशिमें तवधामा १३२ सुनत वणिक दीन्हीं सबमामा। साधुन लाइ दीन्ह निजधामा॥ ताही क्षण पीपा चलिआये। सीता भक्ति देखि सुखपाये १३३ पीपासों सबहाल बतायो। निशा समय शृंगार बनायो ॥ ताही समय मेघझरिलाई। पीपा लीन्हीं पीठिचढ़ाई १३४ मन्दिर वणिक पहूँचे जाई। सीताश्रणिक समीप सिधाई॥ देखत वणिक जानभो हाला। सूखे पाद लखे तिहिकाला १३५ कह माता का विधि चलिआई। स्वामी लाये पीठिचढ़ाई ॥ ठाढ़ेअहै द्वार पर जोई। सुनत धाइ पहुँचो तहँ सोई १३६ चरणन गिरिविस्मित अति भयऊ। पीपा कहत वचन इमि लयऊ ॥ लज्जाकरन

काज कछु नाहीं। भोगहु नारि भवननिजमाहीं १३७ सुनत लाग रोवन सो भारी। पीपा हिये दया विस्तारी॥ दीक्षा दीन्ह दुःखसब टारे। सीता सह पुनि भवन सिधारे १३८ यह वृत्तान्त नृपति सब जाना। सूरसेनहो वश अज्ञाना॥ बे बिश्वास भयो तिहि काला। पीपाने जानो यह हाला १३९ आइद्वार बोलायो जबहीं। पूजा करत- कहो नृप तबहीं॥ कह पीपाहै मूरुख राजा। मिथ्या भाषतहै किहि काजा १४० जूतीहित गो भवन चमारा। कहत कि पूजा करत गवांरा॥ सुनत भूप आ-तुर उठिधायो। चरणन परि बहु बिनय सुनायो १४१ नृपति भवन बन्ध्याइकरानी। लावहु पीपा कहा बखानी॥ सुनत भूप मन्दिर निज गयऊ। तहँ इक व्याघ्र बिलोकत भयऊ १४२ घूमे नृप कह भयो बहाना। पीछे व्याघ्र लखत भे आना॥ पीपा की जानी सिद्धाई। मन्दिर माहँ गये नरराई १४३ रानी गोद बिलोको बाला। जन्मत भयो जौन तत्काला॥ नृप बिश्वास भयो उरभारी। गुरुपद परे नयन भरिबारी १४४ तब पीपा बालक तनजाई। नृपसों कहत भये समुझाई॥ अरे मूर्ख बिश्वास घटायो। चाहिय दिन दिन होत बढ़ायो १४५ गुरु बिश्वास जासुउर नाहीं। उभयलोक सुखतासु नशाहीं॥ दैशिक्षा बहुभांति बुझाये। पीपा बहुरि भवन निज आये १४६ विषयी एक तहां चलिआयो। ऊपरसाधू वेषबनायो॥ तमभिरे को सीतहि मांगा। पीपा दियो सहित अनुरागा १४७ सीता सँगलै भागतभयऊ। कलनहिं कतहुँ निशाभरि लयऊ॥ गयो दूरिभागतलै सोई। पीपासों जिहि भेंटनहोई १४८ चलीनिशा पति वचन बिचारी। बैठी सीता प्रात निहारी॥ ग्रामहि गयो यानहित सोई। सीतारूप लखीतिय जोई १४९ भयो ज्ञान फिरिकैसो आयो। सीता चरणन शीशनवायो॥ चेलाहोत भयो खिसिआई। सीता पुनि पीपा ढिग आई १५० वि-षयी चारि एक दिन आये। सुन्दर साधू वेष बनाये॥ पीपा

सों सीता कहँ मागा। पीपा दियो सहित अनुरागा १५१ सी-
ता बैठिकोठरी जाई। विषयी जात भये हरपाई ॥ व्याघ्री एक
बैठितहँ देखा। आये पीपा पास विशेखा १५२ तुम कैसे साधू
छलकारी। मन्दिरमें बाघिनि बैठारी ॥ कह पीपा बाघिनि है
नाहीं। वह सीता बैठी घरमाहीं १५३ जा विधि है चित वृत्ति
तुम्हारी। ता विधि सीता परत निहारी ॥ शुद्ध भाव सों देखहु
जाई। तुम कहँ सीता परिहि लखाई १५४ सुनत वचन चारहु
चलि आये। सीता के शुभ दर्शन पाये ॥ बैठेचरणन शीश न-
वाई। चेलाहोत भये शरमाई १५५ दो०। तेलिन बेंचत तेल
इक पुनि पुनि कहत पुकार। तेललेउ पीपा सुनत कहे वचन
श्रुतिसार १५६ रामनाम यामुख कहौ कैसी शोभाहोइ। क्रोध
सहित बोलत भई पीपा जी से सोय १५७ राम नाम तब कहत
हैं मरत भवन जब कोइ। बेंचि भवन जवहीं गई लखो मरोपति
सोइ १५८ रोवत पीपा पहँ गई परी चरण बिलखाइ। ज्यायो
वृद्ध सवालकन राम कहन सरवराइ १५९ आई महिपी एककहुँ
साधुन सेवा हेत। चले चोर ले छोरि तिहि पीपा जागि निकेत
१६० बच्चा लै पीछे चले कहइमि वचन सुनाइ। या बिन देहैं
दूधनहिं लिये जाइये भाइ १६१ सुनत चोर आधीन भे महिषी
ग घर राखि। जियालाल हरिजन चरित को कविपावै भाखि१६२
लीन्हे आवत एकदिन शकट भरेसो अन्न। मुद्रारजत समेतलखि
तस्कर भयप्रसन्न १६३ चौ०। लीन्हों तत्क्षण शकट हँकाई। तब
पीपा बोले सुख पाई ॥ मुद्राहू लै जाइय भाई। लीजौ चीनी घृतहु
मँगाई १६४ सुनि बटपार शरण तिनआये। गाड़ी पीपा घर
पहुँचाये ॥ रुपया एक महाजन केरा। साधुहेत भो करजघ-
नेरा १६५ कईबेर मांगत भो जोई। यह वह कहि टारत भे
सोई ॥ एकसमय कीन्हीं कठिनाई। कहपीपा हमचहत न भाई
१६६ तब वहचलि हाकिम पहँ गयऊ। कागद सब हिसाबकरि
दयऊ ॥ अक्षर एक लिखानहिं देखा। हाकिमकीन्हों क्रोधवि-

शेखा १६७ दण्डदेन हित कियो उपाई । तब तिहि पीपा लियो बचाई ॥ कागद फेरि सकल लिखिगयऊ । पीपा सब रुपया दै दयऊ १६८ ब्राह्मण एक गऊ बधकीन्हा । तिहि निकारि घर लोगनदीन्हा ॥ सोपीपा शरणागत आयो । तिहि भगवत परसाद खवायो १६९ राममंत्र तिहि दियो सुनाई । बिबिध भांति उपदेश बताई ॥ तबहूं जानभवन नहिं पायो । तब पीपा सबको समुझायो १७० रामनाम माहात्म्य अपारा । ग्रंथन माहँ कहो बिस्तारा ॥ एकहुबार राम कहजोई । कोटिन गोबध अघबध होई १७१ धोखे रामनाम सुखआवै । कोटिजन्म के पाप नशावै ॥ यागोबध की केतिक बाता । नशै पाप कोटिन इहिगाता १७२ सुनि सब के मन निश्चयआई । वाको लेतभये अपनाई ॥ एकादशी दिवस इकबारा । होत जागरण आनँद भारा १७३ पीपाहाथ मलो तिहिकाला । लोगन कहो काह यह हाला ॥ कहद्वारावति देशरसाला । हरिचँदवा लगि आगिबिशाला १७४ ताको लगे बुझावन भाई । सुनि भूपति सांड़िनी पठाई ॥ कहो पुजारिन सतिहै बाता । औरौ एकबातहै ताता १७५ एकादशि व्रत काहँ सदाहीं । पीपा रहइत जाग्रण माहीं ॥ धावन कहो आइनृपपासा । सुनि भूपति आनन्द प्रकासा १७६ दो० । मिलन हेत श्रीरङ्ग के गे पीपा इकबार । माला पहिरावन चहत मानसि रंगाचार १७७ अटकत है सो मुकुट में कहपीपा सुखपाइ । काविधि पूजाकरत हौ सकनमाल पहिराइ १७८ यह सुनि उठिधावत भये मिलत भये लपिटाइ । कीन्हों आदर बिविध बिधि शुभआसन बैठाइ १७९ अपरबहुत पीपाचरित अतिबिचित्र सुखसार । जियालाल लहपार किमि अति मतिमन्द गवांर १८० ॥

कथा प्रयागदास की ॥

चौ० । कथाप्रयाग दासकी एहा । वर्णन करौं चरण करि

नेहा ॥ अग्रदास के शिष्य कहाये । भगवत भक्तन में धनि गाये १८१ रघुनन्दन चरणन रति आनत । हरिभक्तन भगवत समजानत ॥ भगवत मन्दिर ग्राम कियारा । कलश हेत उत्साह अपारा १८२ भगवत मन्दिर अपर सुहावा । आडिव वलिया ग्राम कहावा ॥ ध्वजा चढ़न उत्साह अपारा । तब इन निज मनमाहँ विचारा १८३ दोनों जगह साधु ह्वै आये । द्वै स्वरूप निज तुरित बनाये ॥ कलशध्वजा निजहाथ चढ़ाये । साधुन सहित महासुद पाये १८४ रासहोन लागो तिहिकाला । देखो भगवत रूपविशाला ॥ रूप माधुरी देखो जबहीं । विह्वल होइ तजो तनु तबहीं १८५ दो० । जाइ परमपद प्राप्तभे जौन अचल सबकाल। सूर्यादिकनहिं देखिये है निजधामविशाल १८६ ॥

भगवान्‌की कथा ॥

चौ० । भगवतभक्त नामभगवाना । सोनेपतमें वासस्थाना ॥ हरिसों विमुख जहां सुनि पावैं । तहांजाइ हरिभक्त बनावैं १८७ पड़रीग्राम एक सुख पांती । योगिन की तहँ रहत जमाती ॥ भगवतभक्त तिनहिं करि दीन्हा । निज सिद्धता प्रगट तहँ कीन्हा १८८ करामात तिन लखन महाई । बादशाह दिय जहर खवाई ॥ भगवत कृपा व्यथा नहिं दयऊ । बादशाह सुनि लज्जित भयऊ १८९ ॥

रामराय की कथा ॥

चौ० । रामराय हरिभक्त सुजाना । साधू सेवा में हित माना ॥ साधुसमाजरहै इकबारा । बैठरहे तहँ संत अपारा १९० पुरुष कोऊ चित्त मलीना । रामरायकी निन्दा कीना ॥ भगवन्त सो यह सहा न गयऊ । यह आश्चर्य होत तहँ भयऊ १९१ जनु कोऊ करतल शिरमारा । तिहि उष्णीष तुरित महि पारा ॥ सो तत्क्षण लज्जा अतिपाई । बाहरजातभयो खिसिआई १९२ ॥

शेखा १६७ दण्डदेन हित कियो उपाई। तब तिहि पीपा लियो बचाई ॥ कागद फेरि सकल लिखिगयऊ। पीपा सब रुपया दै दयऊ १६८ ब्राह्मण एक गऊ बधकीन्हा। तिहि निकारि घर लोगनदीन्हा ॥ सोपीपा शरणागत आयो। तिहि भगवत परसाद खवायो १६९ राममंत्र तिहि दियो सुनाई। बिबिध भांति उपदेश बताई ॥ तबहूं जानभवन नहिं पायो। तब पीपा सबको समुझायो १७० रामनाम माहात्म्य अपारा। ग्रंथन माहँ कहो बिस्तारा ॥ एकहुबार राम कहजोई। कोटिन गोबध अघबध होई १७१ धोखे रामनाम सुखआवै। कोटिजन्म के पाप नशावै ॥ यागोबध की केतिक बाता। नशै पाप कोटिन इहिगाता १७२ सुनि सब के मन निश्चयआई। वाको लेतभये अपनाई ॥ एकादशी दिवस इकबारा। होत जागरण आनँद भारा १७३ पीपाहाथ मलो तिहिकाला। लोगन कह काह यह हाला ॥ कहद्वारावति देशरसाला। हरिचँदवा लगि आगिबिशाला १७४ ताको लगे बुझावन भाई। सुनि भूपा सांड़िनी पठाई ॥ कहो पुजारिन सतिहै बाता। औरौ एकबार ताता १७५ एकादशि ब्रत काहँ सदाहीं। पीपा रहइत जाग माहीं ॥ धावन कहो आइनृपपासा। सुनि भूपति आनन्द कासा १७६ दो०। मिलन हेत श्रीरङ्ग के गे पीपा इकब माला पहिरावन चहत मानसि रंगाचार १७७ अटकत है मुकुट में कहपीपा सुखपाइ। काबिधि पूजाकरत हौ सक ल पहिराइ १७८ यह सुनि उठिधावत भये मिलत भये टाइ। कीन्हों आदर बिबिध बिधि शुभआसन बैठाइ १७ परबहुत पीपाचरित अतिबिचित्र सुखसार। जियालाल क किमि अति मतिमन्द गवांर १८० ॥

कथा प्रयागदास की ॥

चौ०। कथाप्रयाग दासकी एहा। वर्णन करौं च

नेहा ॥ अग्रदास के शिष्य कहाये । भगवत भक्तन में धनि गाये १८१ रघुनन्दन चरणन रति आनत । हरिभक्तन भगवत समजानत ॥ भगवत मन्दिर ग्राम कियारा । कलश हेत उत्साह अपारा १८२ भगवत मन्दिर अपर सुहावा । आडिव वलिया ग्राम कहावा ॥ ध्वजा चढ़न उत्साह अपारा । तव इन निज मनमाहँ विचारा १८३ दोनों जगह साधु हैं आये । द्वै स्वरूप निज तुरित वनाये ॥ कलशध्वजा निजहाथ चढ़ाये । साधुन सहित महासुद पाये १८४ रासहोन लागो तिहिकाला । देखो भगवत रूपविशाला ॥ रूप माधुरी देखो जवहीं । विह्वल होइ तजो ततु तवहीं १८५ दो० । जाइ परमपद प्राप्तभे जौन अचल सवकाल। सूर्यादिकनहिं देखिये है निजधामविशाल १८६ ॥

भगवान्‌की कथा ॥

चौ० । भगवतभक्त नामभगवाना । सोनेपतमें वासस्थाना ॥ हरिसों विमुख जहां सुनि पावें । तहांजाइ हरिभक्त वनावें १८७ पड़रीग्राम एक सुख पांती । योगिन की तहँ रहत जमाती ॥ भगवतभक्त तिनहिं करि दीन्हा । निज सिद्धता प्रगट तहँ कीन्हा १८८ करामात तिन लखन महाई । वादशाह दिय जहर खवाई ॥ भगवत कृपा व्यथा नहिं दयऊ । वादशाह सुनि लज्जित भयऊ १८९ ॥

रामराय की कथा ॥

चौ० । रामराय हरिभक्त सुजाना । साधु सेवा में हित माना ॥ साधुसमाजरहे इकवागा। वैठरहें तहँ संत अपारा १९० पुरुष कोऊ चित्त मलीना । रामरायकी निन्दा कीना ॥ भगवत सो यह सहा न गयऊ । यह आश्चर्य होत तहँ भयऊ १९१ जनु कोऊ करतल शिरमारा । तिहि उष्णीष तुरित महि पारा ॥ सो तत्क्षण लज्जा अतिपाइ । वाहरजातभयो खिसिआई १९२ ॥

कृष्णदास के शिष्यकहाये। रहत देश पंजाब सुहाये २०५ परम भक्त भगवत के सोई। युत सन्तोष भजन कर जोई॥ पीवत भांग सरुचि सबकाला। बादशाह जानो यहहाला २०६ दिय पिलाइ धतूर मिलाई। कछुनहिं भयो कृपा रघुराई॥ मतको द्वेप धारि उरमाहीं। दीन्हों विष पिलाइ तिनकाहीं २०७ भयो नकछु उरलज्जा पाई। चरणन परि अपराध क्षमाई॥ है कछु बात द्वेप पर नाहीं। भंगत्याज्य सबकालन माहीं २०८॥

रैदास की कथा॥

चौ०। भगवतभक्त परम रैदासा। जासु वचन जगदीप प्रकासा॥ जासु काव्यहै सूर्य समाना। अन्धकार नाशक उर नाना २०९ तजोअसार सारगहिलीन्हा। इहितन गमन परम पद कीन्हा॥ बड़े बड़े वर्णाश्रमजेई। तिनपद शीशनवाये। तेई २१० ब्रह्मचारि प्रथमोद्भव जोई। रामानन्द शिष्य रहसोई॥ भिक्षा मांगिनित्य सोलावैं। गुरुआगे धरिशीशनवावैं २११ वरषा भई एकदिन भारी। ब्रह्मचारि मनमाहँ विचारी॥ गये एकबनियां घरकाहीं। नितप्रति कहतरहो इनपाहीं २१२ तासों लै समाग्री आये। भोजन रामानन्द बनाये॥ जबभगवत कहँ अर्पण कीन्हा। भगवत रूप दरश नहिं दीन्हा २१३ पूंछो अन्न कहाँ सों लाये। तिन बनियांको भवन बताये॥ रामानँद देखो करिध्याना। अन्नचमार भवन को जाना २१४ ब्रह्मचारि कहँ दीन्हों शापा। होउ चमार लहो कुलतापा॥ जन्म चमार भवन तिनलीन्हों। गुरुदीक्षा बिन दूध न पीन्हों २१५ तबआकाशगिरा सुखदाई। रामानँद सों कहो बुझाई॥ दण्ड ब्रह्मचारिहि अति दीन्हों। जन्म चमार भवन तिनलीन्हों २१६ तिनपर दयाकरिय अबजाई। सुनि रामानँद गये सिधाई॥ कीन्हों मंत्र श्रवण परकासा। धारत भये नाम रैदासा २१७ आज्ञा दूध पियनकी दयऊ। जब रैदास सयाने भयऊ॥ सेवा

श्रीरंग की कथा ॥

चौ० । जयपुर राज्यदेव साग्रामा । तहँ श्रीरंगभवन सुखधा-
मा ॥ रह सरावगीके सुत सोई । मरतभयो तिन सेवककोई १९३
सोयमदूत भयो तिहिकाला । नगर माहँ आयो सो हाला ॥
टिको एक तहँ रह बनजारा । ताके प्राणलेन पगुधारा १९४
इनसों मिलो प्रीति पहिचानी । सकल कथा निज कही बखा-
नी ॥ सुनतरंगके इच्छा आई । देखन हेत गये तहँ धाई १६५
तब यमदूत तहां चलि आयो । वृषभ एकको पुनि भड़कायो ॥
बैठो तासु शृंगपर जाई । बनजारा कहँ लियो उठाई १६६ पेट
फारि तत्त्वण तिहि मारा । देखि रंग अतिही भयधारा ॥ तासों
पूंछत भये उपाई । या बिधि मरण बचै किमि भाई १६७ भग-
वत भक्ति बिना सुखकारी । पीड़ा होत यही विधि भारी ॥ भग-
वतभक्त जौन जगमाहीं । तिन समीप यमदूत न जाहीं १६८ या
बिधि सुनत दूतमुख बानी । भगवत भक्ति हिये निज आनी ॥
शिष्यानन्तानँद के भयऊ । धर्म सरावग निज तजि दयऊ
१६६ अलपकाल महँ हरि पहिंचाना । जन्म मरण भय तजो
महाना ॥ एक प्रेत नित तिन घर आवै । रंगपुत्र को तौन
लखावै २०० दुर्बल होत जात नित सोई । जानो रंग हाल यह
जोई ॥ पौढ़ेतासु खाट इकदीना । आवत भो तहँप्रेत प्रवीना २०१
देखत ताहि लियो रपटाई । भगो प्रेत आतुर भय खाई ॥ कहत
भयो मैं अहौं सुनारा । यही ग्राम है भवन हमारा २०२ परतिय
गमनहु चोरि झुठाई । कुत्सित कर्म प्रेत भे आई ॥ निज उद्धार
हेत नित आवत । और न कछु कारज मन लावत २०३ सुनि
श्रीरंग दया उर आई । हरि चरणामृत दीन्ह पियाई ॥ तासु
प्रभाव दिव्य तनु धारा । सद्गति प्राप्त भयो जग]पारा २०४ ॥

हठीनारायण की कथा ॥

चौ० । कथाहठीनारायण एहा । वरणौं धारि संतपद नेहा ॥

कृष्णदास के शिष्यकहाये। रहत देश पंजाब सुहाये २०५ परम भक्त भगवत के सोई। युत सन्तोष भजन कर जोई ॥ पीवत भांग सरुचि सबकाला। बादशाह जानो यहहाला २०६ दिय पिलाइ धत्तूर मिलाई। कछुनहिं भयो कृपा रघुराई ॥ मतको द्वेष धारि उरमाहीं। दीन्हों विष पिलाइ तिनकाहीं २०७ भयो नकछु उरलज्जा पाई। चरणन परि अपराध क्षमाई ॥ है कछु बात द्वेष पर नाहीं। भंगत्याज्य सबकालन माहीं २०८ ॥

रैदास की कथा॥

चौ०। भगवतभक्त परम रैदासा। जासु वचन जगदीप प्रकासा ॥ जासु काव्यहै सूर्य समाना। अन्धकार नाशक उर नाना। २०९ तजोअसार सारगहिजिन्हा। इहितन गमन परम पद कीन्हा ॥ बड़े बड़े वर्णाश्रमजेई। तिनपद शीशनवाये। तेई २१० ब्रह्मचारि प्रथमोद्भव जोई। रामानन्द शिष्य रहसोई ॥ भिक्षा मांगिनित्य सोलावैं। गुरुआगे धरिशीशनवावें २११ बरषा भई एकदिन भारी। ब्रह्मचारि मनमाहँ विचारी ॥ गये एकबनियां घरकाहीं। नितप्रति कहतरहो इनपाहीं २१२ तासों लै समाग्री आये। भोजन रामानन्द बनाये ॥ जबभगवत कहँ अर्पण कीन्हा। भगवत रूप दरश नहिं दीन्हा २१३ पूँछो अन्न कहाँ सों लाये। तिन बनियांको भवन बताये ॥ रामानँद देखो करिध्याना। अन्नचमार भवन को जाना २१४ ब्रह्मचारि कहँ दीन्हों शापा। होउ चमार लहो कुलतापा ॥ जन्म चमार भवन तिनलीन्हों। गुरुदीक्षा बिन दूध न पीन्हों २१५ तबआकाशगिरा सुखदाई। रामानँद सों कहो बुझाई ॥ दण्ड ब्रह्मचारिहि अति दीन्हों। जन्म चमार भवन तिनलीन्हों २१६ तिनपर दयाकरिय अबजाई। सुनि रामानँद गये सिधाई ॥ कीन्हों मंत्र श्रवण परकासा। धारत भये नाम रैदासा २१७ आज्ञा दूध पियनकी दयऊ। जब रैदास सयाने भयऊ ॥ सेवा

साधुकरत सुख पाई। जो कुछ मिलत देतसो लाई २१८ देखिपिता क्रोधातुर भारी।तिनहिं भवन सोंदियो निकारी॥ पीछे भवन रहेसो जाई। नारी सहित महासुखपाई २१९ छप्पर एकलीन्ह तहँ डारी। तहँ भगवत मूरति बैठारी॥ सेवाकरन लागसुखपाई। आपुरहत बाहर तिहिजाई २२० तिन पितु भवनरहो धनभारा। परनहिं दीन्हा रंचगवांरा॥ जूतीबेंचिजीविकालावैं। साधुदेखि बिनगथ पहिनावैं २२१ यद्यपि दुखरंकताधिकाई। तदपि रहत भगवत मनलाई॥ ध्यानानन्द मग्न सुखभारी। भगवत यहरंकतानिहारी २२२ दूरिकरन वपुसाधु बनाई। गेरैदास भवन सुखपाई॥ लखिरैदास कीन्ह अतिसेवा। भोजन दिये जानिहरि देवा २२३ साधू जबहिं चलन वहलागा। पारसास्मादिय युतानुरागा॥ गुणवर्णन करि तिनहिं सुनायो। राखनकी पुनि यत्न बतायो २२४ कहरैदास चाह कछु नाहीं। रामनाम चाहत मनमाहीं॥ रामनाम धन सम्पतिजानौं। अपर सकल मिथ्या करिमानौं २२५ तबसाधू निजमन अनुमाना। इन पारस प्रभाव नहिं जाना॥ लोह छुवाइक सोन बनायो। लेनहेत पुनिपुनि समुझायो २२६ कहरैदास जोपि हठकीजै। तौ वा छप्परमें धरिदीजै॥ सो सुनिकै साधू धरिदीन्हा। मासतेरहें आगम कीन्हा २२७ ताहीबिधि देखौ रैदासा। कहँ वह पारस वचन प्रकासा॥ कह रैदास धरोतुम जहँवां पारस धरो होइगो तहँवां २२८ भय आवत मम हाथ लगाये तासों मैं नहिं ठौरछुटाये॥ सुनि भगवत सोलेकरगयऊ। ए दिवस अस अचरज भयऊ २२९ पूजाकेरि पिटारी देखा। हरै पांचधरी तहँ लेखा॥ होनलाग भय भगवत पाहीं। लर काहस्त्रप्नके माहीं २३० भगवत आइकही यह बाता। य हैतव लोभन गाता॥ परअब देइँकछू हमजोई। लीजिय सहित तुम सोई २३१ आज्ञा शिरधरिमानत भयऊ। धर्म इक विरिचित कयऊ। भगवत भक्तन हेत सुहावा॥ पुनि

वत मन्दिर बनवावा २३२ भांति भांति के साज सजाये । शुभ चन्दोये तहँ लगवाये ॥ झालर शुभ मुक्तन की सोहै । तोरण पुरट रचित मनमोहै २३३ रत्नदीप सुन्दर उजियारी । दीपवृक्ष सोहत छविभारी ॥ भगवत साज विविध विधि कीन्हा । छवि अनूप मानस धरिलीन्हा २३४ निजहित महल एकबनवायो । तहां बैठि हरि ध्यानलगायो ॥ करत विप्र भगवत वपु पूजा । है रैदास काज नहिं दूजा २३५ बहुत विप्र गन गुनि अरिभावा । भूपति सो इमिजाइ सुनावा ॥ यह रैदास चमार नृपाला । पूजत भगवत मूर्त्तिकृपाला २३६ कोई शास्त्रमाहँ नहिं लेखा ॥ अस आश्चर्य कबहुँ नाहिंदेखा ॥ याको दण्ड दीजिये राजा । नाधिकार श्रुति आवत लाजा २३७ सुनि राजा रैदास बुलायो । तेज देखि कछु वचन न आयो ॥ रानी नृपझाली जिहिनामा । भई शिष्य सुनि तेज ललामा २३८ रहत विप्र जे रानीपासा । देखत या विधि वचन प्रकासा ॥ भई भ्रष्टधीरानी तेरी । जातहै चमारकी चेरी २३९ याविधि कोपित वचन सुनाई । भूप समीप कहा पुनि जाई ॥ तबरानी रैदास बुलाये । ब्राह्मण बहुरि तहां सब आये २४० जाति बड़ाई विप्रनराखा । तब रैदास वचन इमिभाखा ॥ भगवत काहँ भक्ति है प्यारी । है कुलजाति दृष्टि नहिं न्यारी २४१ कहत कहत ठहरी यह बाता । सोई है अति उत्तम गाता ॥ भगवत मूर्ति जासु ढिगआवै । जो सिंहासन शोभापावै २४२ पढ़न वेद लुनि ब्राह्मण लागे । दीर्घ काल लागि अति अनुरागे ॥ मंत्रजाप कीन्हों मनदेई । भगवत मूर्त्ति न आयेनेई २४३ जब रैदास बात चलिआई । तब ये बोले विनय सुनाई ॥ पावन पतित नाम सब करिये । और कलूमानस जनिधरिये २४४ पुनि दो एक भजन तिन गाये । सुनि भगवत मूरति चलि आये ॥ सिंहासन सों उठि तत्काला । गे रैदास गोद जन पाला २४५ सब के होन भये दिखवासा । भे आधीन सकल रैदासा ॥ रानी झाली आनँद पाई । राज-

धानि चित्तौरम जाई २४६ यज्ञ करन की इच्छा कीन्हा। पत्र भेजि रैदासहि दीन्हा॥ संयुत बिनय पत्र सो देखी। जात भये रैदास बिशेखी २४७ रानी देखि महा सुख पायो। कीन्ह दान बहु द्रव्य लुटायो॥ यह भल जिय ब्राह्मणन बिचारा। रानी कोहै गुरू चमारा २४८ सूखअन्न लाये सब जाई। कीन्ह रसोई आनँद पाई। भोजन हेत बैठि जिवनारा॥ द्वैके मधि लखि परो चमारा२४९निश्चय भो सब के मन माहीं। चेला बहुत भये तिन पाहीं॥ दूरिकरन विप्रन सन्देहा। कियरैदास चरित शुभ एहा २५० खाल चीरिउपवीत दिखावा। पूर्व जन्मकी कथा सुनावा॥ करिइमिमोह दूर सबकेरा। लीन्हों भगवत लोक बसेरा २५१॥

गोपालभट्टकी कथा॥

चौ०। भे गोपाल भट्ट हरिभक्ता। भगवद्भजनकीन्ह अहनक्ता॥ भक्ति प्रताप जासुतन छायो। भक्त सभानित शोभा पायो २५२ बागड़ देश भक्तकरि दीन्हा। दासभाव मानस निज चीन्हा॥ भगवत बिमुख जाहि लखिपावा। तत्क्षण नवधा भक्ति लगावा २५३॥

दिवाकरकी कथा॥

चौ०। भये दिवाकर आनँद मूला। करमचन्द घरदारक शूला॥ तिमिरहरण जगजनसम पूषण। भगवत भक्त सभाके भूषण २५४ फलित बृक्ष जाविधि लचिआवै। तासु फलनजग जन सुखपावै॥ कृपापात्र ताविधि ये भयऊ। कोटिन विमुख शरण करिदयऊ २५५॥

खेमगोसाईंकी कथा॥

चौ०। खेम गुसाईं आनँद छाये। राम दासके शिष्य कहाये॥ दास अनन्यभये रघुनाथा। धनुशर चिह्न धरे निजहाथा २५६ उभय लोकमहँ काहुन जानत। केवल रामशरण उर आनत॥ उभयलोक सुखको नहिं चाहा। केवल रामनाम अवगाहा२५७

कल्याणसिंहकी कथा ॥

चौ० । ये कल्याणसिंह हरि चेरा । शहर नोनिरेखर जिन केरा ॥ दानि शिरोमणि भगवत दासा । भगवत भक्ति हिये परकासा २५८ दो० । नहिं अदेय हरिभक्त हित प्राणहुदेय स-हेत । रामनाम रसनारटत हियहरिध्यान सचेत २५९ ॥

राजाखेमालकी कथा ॥

चौ० । राजपूत खेमाल कहाये । परम भक्त राठौर सुहाये ॥ अचल भक्ति कीन्ही कुलमाहीं । रामभक्ति तजिजानत नाहीं २६० संतन देखि सुखी अति होवै । जिमि चकोर चन्दामुख जोवै ॥ वारिधि बढ़े यथा विधुदेखी । तिमि आनँदलखि भक्त विशेखी २६१ ॥

केशव की कथा ॥

चौ० । केशव जिन लटेर उपनामा । है लटेर दुर्बल कर नामा ॥ पर ये भक्ति भाव में मोटे । विषय भोग सों दिन दिन छोटे २६२ मानस भगवत चरित उदारा । जिह्वा सों हरि नाम पुकारा ॥ बूड़त भगवत प्रेम सदाई । हरिपद सुरति टरन कदाई २६३ ॥

सोतीजी की कथा ॥

चौ० । सोतीजी हरिभक्त सुहाये । भक्त सभा में श्लाघ्य महाये ॥ वन्दनीय भक्तन के आगे । श्री अवधेश चरित अनु-रागे २६४ रहत मगन भगवत के ध्याना । दास भाव भगवन में आना ॥ नरहर जीके शिष्य सुहाये । निजकुल प्रगट भक्ति रस छाये २६५ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुगदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येअष्टदशदास्यनिष्ठायांषोड़शभक्तक थावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौविंशस्तरङ्गः २० ॥

दो०। राम कमल पद रेख धनु करि दण्डवत सुखेन। हरि अवतार प्रणाम करि धारो करि सुखदेन १ बिंशैकोन निष्ठायह भक्त मीन सुखपाथ। वातसल्य महिमा सुखद नवभक्तनकी गाथ २ भजन। हे रघुनाथ शरणहौं तेरी। गज कहँ ग्राहगहो जल भीतर आकुल प्रभु कहँ टेरी॥ आरत शब्द सुनत हरिधाये कीन्हों नेक न देरी। गहिकर चक्र ग्राह शिर काटो कृपा दृष्टि गज हेरी॥ जियालाल यह बिनय करत है तब कर प्रभु ह्री मेरी ३ दो०। बात्सल्य महिमा सुखद यह भगवत आकर्षि। प्राप्त करत जन मन बिषे प्रेमानँद को बर्षि ४ या निष्ठा अवलम्ब सों प्राप्त अवशि हरि होत। कारण निश्चय प्रेम है सो यह करत उदोत ५ बाल्यावस्था पुत्रकी देखि होत बश तात। बोल तोतरे प्रेममय लखि लीलायुत गात ६ बालक लीला देखि कै बशी बटोही होत। क्यों न होइ यह ध्यान करिजासें अमित उदोत ७ कोमलाङ्ग तोतर बयन सुन्दर श्याम स्वरूप। शीश मुकुट लघु शोभिजै रतिपति शोभ अनूप ८ जरतारी की झँगुली गोटे पट्ठदार। लघु कुण्डल रोचन तिलक भाल मध्य छबिकार ९ छन्दमनहरण। नाक में बुलाक सोहै कठुला गले मँझार व्याघ्र नख यंत्रहू पदिक छबि छाई है। पहुँची चरण अरबिन्द सोहै घूँघुरूहु चंचल चपल यशुमति सुखदाई है॥ कबहुँ यशोदा गोद नन्द गोद जातकहूँ किलकि खिलोना देखि लेन चाह लाई है। कबहुँ पखेरू देखि गहन चहत मन मातुहू बुलावै पच्छी बोलत कन्हाई है १० कहन चहत तात मात कभी बात कछू तोतरे वचन कहि आनँद बढ़ावहीं। चलत ठुमुकि गहि मातु की अँगुरियन मातहू चलावैं धीरे चालको दृढ़ावहीं॥ खेलत अँगन सह सखन नचत कहुँ करै लँगराई ताहि तुरित कढ़ावहीं। जियालाल मोद सों सयाने सखा खेलैं साथ आपुबनैं अश्व कृष्ण ऊपर चढ़ावहीं ११ दो०। यह छबि मानस ध्यान करि भगवत भजै सनेम। उभय लोक सुख त्यागि कै रहै मगन हरि प्रेम १२

यानिछामें भक्तजे भये कहौं तिनगाथ । तिन चरणन की वन्दि रज पुनि पगनावों माथ १३ ॥

कौशल्याजी की कथा ॥

चौ० । प्रथमहि कौशल्या की गाथा । कहौं नवाइ रामपद माथा ॥ कहौं तासु किमि भाग्य बड़ाई । भगवत भये पुत्रजिन आई १४ एक समय कौशल्या रानी । पालन सुत सुलाइ सुख दानी ॥ कुल सुर के पूजन हितजाई । नानाविधि पकान्न बनाई १५ ताही क्षण अर्पण मनलाई । नेत्र मूँदि तहँ ध्यान लगाई ॥ नेत्रखोलि देखो पुनिआगे । भोजनकरत रामसुखपागे १६ संभ्रमचलि पालन ढिगआई । सोवत लखो रामसुखदाई ॥ बहुरि आइ देखो तहँ सोई । याविधि लखो रामवपुदोई १७ कौशल्या मन करत विचारा ॥ तब भगवत माया विस्तारा ॥ रोम रोम ब्रह्माण्ड लखाये । सकल चराचर तहँ दरशाये १८ नानाभाँति लखे बहुदेवा । बहु विधि प्रभुकी लावहिंसेवा ॥ ब्रह्मादिक जोरे करठाढ़े । अस्तुति करहिं प्रेमरसबाढ़े १९ माया सभय जोरि कर ठाढ़ी । जो जगजन्म नाश हितगाढ़ी ॥ कौशल्या लखि विभव अपारा । आरत चरण गहे तिहिबारा २० हँसि भगवत मातहि समुझाया । अबन तुमहिं व्यापिहि मम माया ॥ यामें प्रगट भई यह बाता । हमहिं त्यागि सुर कौन लखाता २१ मेरेभक्तय-जनसमठानै । मोहिं त्यागि सुर अपरन जानै ॥ पतिव्रता जिमि पति पहिचानै । अपर सकल नारीवतमानै २२ याविधिहि चरित्र तिन नाना । जियालाल संक्षेप बखाना ॥ भगवत मातु प्रबंधअ-पारा । कोकविवरणि लहे जोपारा २३ ॥

नन्दयशोदाजीकी कथा ॥

चौ० । बाबानन्द यशोदारानी । भाग्यसकैकविकौन बखा-नी ॥ पुत्रहेत प्रथमहि तपकीन्हा । हरि शिशु चरित लखन तिन दीन्हा २४ भये नन्द वसुके अवतारा । धरानारि यशुमति ननुधा-

रा॥ भगवत पूर्णकरन तिनआशा। बालचरित ब्रजकीन्ह प्रका-
शा २५ लखि नँदयशुमति बाल कन्हाई। बिबिधि भाँति केला-
डलड़ाई॥ जीवन प्राणजान हरिकाहीं। आपुहि जानत धन्य
सदाहीं २६ बालचरित्र करत भगवाना। मातु पिता सुखलहैंनि-
दाना॥ पुनि बहुचरित करत वहिभावै। जाबिधि मनसबको ल-
गिजावै २७ नन्द यशोदा सो नहिं मानै। भोले कृष्णसदा यह
जानै॥ गोपिन घर माखन जबखावैं। ग्वालन दै बानरनलुटावैं
२८ ऊंचे देखि उलूखल धारैं। तापर चढ़ि दधिपात्र उतारैं॥ताहू
सों ऊंचलखिपरई। मूल छिद्र लकुटीसों करई २९ कोनेमाहँ धरी
दधिजानै। मणिगणके प्रकाश लखिआनै॥ जाके भवन कछू
नहिं पावैं। सोवत बालक मारिजगावैं ३० सुन्दर मन्दिर परैल-
खाई। बिष्ठामूत्रकरै तहँजाई॥ चोरीदेखि इबिधि ब्रजनारी। जाइ
यशोमति पासपुकारी ३१ हरिदरशनकी मनअभिलषा। सकल
हाल यशुमतिसों भाषा॥यशुमति सुनत नेकनहिं माना। गोपिन
सों याभाँति बखाना ३२ तुमतौहौ मदकी मतवारी। यौबन जो-
रनसकौ सँभारी॥ मेरो कान्हबालहै अबहीं। घरको माखनखात
न कबहीं ३३ घरघरसों बनिकै तुमआई। यह गतिजानै काहक-
न्हाई॥ गोपिनकहो सत्यकहबाता। सांचहुहमहिं फिरत अँठि-
लाता ३४ यह कहि निज निज भवनसिधाई। यशुमति कृष्ण
लियेउरलाई॥एक समय वन नन्दकुमारा। प्यारीसहनिशिकरत
विहारा ३५ निशाजानि घर आतुरआये। सोइरहे लखिकाहु न
पाये॥ पीताम्बर रह प्यारी पाहीं। नीलाम्बर लैगेघरकाहीं ३६
प्रातहि लखो यशोदा माता। मनमें जानिगई यह बाता॥ हैब-
लभद्र केर पटएहा। नखक्षत पुनिदेखे तिनदेहा ३७ लगे स्रवग
नख कानन माहीं। यशुमति रोइ कहै हरिपाहीं॥ ऐसे बनहिं
लालमति जैये। शाखामृगसों जहँ दुखपैये ३८ विप्रन बोलि
दान बहुदीन्हे। नौछावरि हरि ऊपरकीन्हे॥ यदिबहुदासी दास
निकेता। स्वकर जमावदही हरिहेता ३९ ठौर ठौर माखनधरि

राखै। कबहूँ श्याम देखि यह चाखै॥ पण्डित साधु कोउ चलिआवै। तासों मंत्र यंत्रबनवावै ४० इत उत घूमत लला हमारे। धरि कूबरी अवारसवारे॥ दृष्टिमुष्टि लागे नहिंताके। इमि नितनई प्रीति यशुदाके ४१ याविधि यशुमति चरित अपारा। को कवि बरणिलहै जोपारा॥ निष्ठा वात्सल्य महँ जाना। जियालाल संक्षेप बखाना ४२॥

विट्ठलनाथकीकथा॥

चौ०। विट्ठलनाथ गुसाईं जोई। सुत वल्लभाचार्य्यके सोई॥ वात्सल्य निष्ठा सुदृढ़री। पूरण प्रीतिभई जिनकेरी ४३ उठि प्रातहि भगवतहि जगावैं। सुख धुलाइ अस्नानकरावैं॥ आभूषण पोशाक समेता। पुनि शृङ्गार कराव सहेता ४४ षटरस व्यंजन भोगलगावैं। सुभग सेज भगवत पौढ़ावैं॥ कीर्त्तनकरैं विविध हरिकेरे। सदाचित्तरह भगवतनेरे ४५ नन्द समय गोकुलमें जैसो। इनसमाज करिदीन्होंतैसो॥ निजसेवकन हिये प्रगटायो। कलियुगमें द्वापर जनुआयो ४६ साक्षात दर्शनसम इनहीं। यद्यपि होतरहैं प्रतिदिनहीं॥ भइतथापि इच्छाइकवारा। बालचरित देखिय सुखसारा ४७ दो०। पूर्णमनोरथ करनहित कहतभये भगवान। रूपावेश लखावहीं बालचरित सुखदान ४८ चौ०। बड़ोपुत्र गिरिधर जब भयऊ। प्रविशिकला वपु भगवत गयऊ॥ बालचरित्र तिनहिं दरशाये।विट्ठलनाथ महानँद पाये ४९ हाय न पाँच उपर जब भयऊ। भगवत कला अलग तबगयऊ।याविधि सातपुत्रतनमाहीं। बालचरितहितगेहरि ताहीं ५० एकसमय मर्कट इक आयो। भगवत देखि महा भय पायो॥ धाइ गोद विट्ठल महँ गयऊ। विट्ठल देखि कहत हँसि भयऊ ५१ दो०। कोटिन मर्कट काल सम चढ़े लंक सँगधाइ। तब न डरे अब भय करत लघु बनचर को पाइ ५२ चौ०। कारण कहिये कौन बुझाई। सुनि भगवत बोले सुख पाई॥ या

बिधि जो चित वृत्ति तुम्हारी। मम ईश्वरता ओर मिहारी ५३
बाल उपासन तौ किमि कीजै। मम ईश्वरताही चित दीजै॥
बाल चरित्र हिये यदि धरिये। तौ चिंतवन प्रभुत्व न करिये ५४
मम चरित्र अरु रूप सुहाये। कीन्ह कृपा तिहि हिये लखाये॥
भक्त चाह अनुकूल सदाई। नाहिंत हम कतहूँ न कदाई ५५
रहत सदा इन बातन न्यारे। माया गुणन सदाहैं पारे॥ निर्गु-
ण निराकार अज जोई। अव्यय अलख अगोचर सोई ५६ बि-
ट्ठल नाथ कृपा गुनि भारी। अति आनँद पायो तिहि बारी॥
सातौं पुत्रन नाम सुहाये। बल्लभाचार्य्य संप्रदा गाये ५७ सवा
बेश अवतार सुहाये। गादी सात माहँ छबि छाये॥ आजहुँ
गोकुल में छबि पावैं। जग बारिधि में पोत सुहावैं ५८ बिट्ठल-
नाथ बल्लभाचारी। सात पुत्र बिट्ठल सुखकारी॥ भगवत
मूर्ति सात पधराई। एक मूर्ति तिन में सुखदाई ५९ जिन
श्री नाथ नाम छबि छायो। राना आइ बिनय बहु गायो॥
आलमगीर मलिक तिहिकाला। राना देश गये सुखपाला ६०
उदय पूरके उत्तर ओरा। अजहुँ बिराजत नन्दकिशोरा॥ गो-
कुल चन्द्रमाहु पुनि नामा। मूरति दोसरि सुखद ललामा ६१
आलमगीर शाह रह जबहीं। जयपुर भूप गयो लै तबहीं॥
जयपुर माहँ अजहुँ सो राजत। दर्शन करत अखिल अघ
भाजत ६२॥

कर्म्माबाई की कथा॥

चौ०। कर्म्माबाई हरिरंग छाई। परमभक्त भगवतकी गाई॥
बालरूप भगवतकर ध्याना। बालचरित्र सदाकर गाना ६३
जिमि प्रातहिं बालक उठि कोई। मासों भोजन मांगत सोई॥
प्रथमहिं बालक जागन तेरे। चिंताहोत हियेमाकेरे ६४ तिमि
कर्म्माबाइ उठि प्राता। करैं खीचरी होत प्रभाता॥ बिनाहाथ
मुख धोये पावैं। भगवत बाल भुखाइ न जावैं ६५ देखि प्रीति

भगवत नित आवैं। जगन्नाथजी आनँद पावैं॥ बैठिगोदनित भोजन करई। कर्माबाइ हिये मुदभरई ६६ साधू एक एकदिन आयो। सो तिनसों आचार बतायो॥ कहाकरत तूबिना अन्हाये। भगवतको इमि भोगलगाये ६७ लगींकरन सुनिकै विधि सोई। भोजन माहँ देर अब होई॥ कम्र्माबाइ गोद इकबारा। खिचरी खात रहे सुखसारा ६८ की पुरुषोत्तमपुरी मँझारा। राज भोगहू भयो तयारा॥ बिन मुख हाथधोइ क्षणगयऊ। पण्डा तबहिं बिलोकत भयऊ ६९ मुख में लगी खीचड़ी देखा। पण्डा चक्रित भयेविशेखा॥ पूछतभये बिनयकरि जबहीं। भगवत कहत भये इमि तबहीं ७० कम्र्माबाई सुकृतगाता। करत खीचरी रही प्रभाता॥ प्रेम सहित वेभोग लगावैं। तिनके भवन नित्य हमजावैं ७१ एकदिवस साधू इकआई। तिनहिं गयो आचार बताई॥ तबते नित्य देरह्वैजाई। वासाधूसों कह्यो बुझाई ७२ करि उपदेश प्रथमकोदेई। सुनि पण्डा ढूंढ़तभेंतेई॥ सुनि साधू तिनके घरआयो। भगवत शिक्षाको बतलायो ७३ सुनि कम्र्माबाई सुखपावा। जामन रहे प्रथम पछितावा॥ कीमम बालकहै अतिबारा। भूखसहै सो किमि सुकुमारा ७४ करत सदा लघुभोजनजोई। भूखो रहत देरलगसोई॥ शिक्षापाइ मोदसोपागी। खिचड़ी प्रातबनावनलागी ७५ अजहूँ सबभोगनके आगे। खिचड़ी भोग प्रातको लागे॥ जगन्नाथजी आनँद लावैं। जियालाल प्रेमातुरपावैं ७६॥

गोकुलनाथकी कथा॥

चौ० हरिजन गोकुलनाथ सुहाये। बिट्ठलनाथपुत्रसुखछाये॥ पौत्र बल्लभाचारय केरे। परमभक्त भगवत के चेरे ७७ सुन्दर धीर सहिष्णु उदारा। गिरिधर राय भक्ति दृढ़धारा॥ भक्ति प्रताप बिलोकि महाई। बड़बड़ भूप आवशरणाई ७८ कान्हा श्वपच रहो इकजोई। झारन भवन जात नितसोई॥ भगवत

रूप अनूपम देख । रहैं प्रेमरस मग्न बिशेखे ७९ श्रीगुसाइँ चित इकदिन आई । दृष्टि सवन परिबो न भलाई ॥ भित्यावरण एकबनवाई । परत न भगवत दूरलखाई ८० तबकान्हा दरशन नहिं पायो । यहभगवतके मनहिं न भायो ॥ कान्हापाहँ स्वप्न में गयऊ । याबिधि बचन कहन पुनि लयऊ ८१ करियो बिनय जाइ तुम एहा । गोकुलनाथ पाहँ नतदेहा ॥ नई भित्ति देवैं गिरवाई । दूरलखन मम बाधादाई ८२ तब कान्हा मनमाहँ बिचारा । मैं उत जैहौं कौनप्रकारा ॥ द्वारपाल यह देखि ढिठाई । पीटहिंगे मोकाहँ बनाई ८३ छन्द रामगीतिका । लालजी महराज मोसन कहतहैं बिनकाज । समुझि यह चुपरहत भो सो मनहिं आई लाज ॥ तीनिदिन भगवान याबिधि करी आज्ञा जाइ । शीशधरिकै द्वारपालन कहो कान्हा आइ ८४ चौ० । गोसाईं सो कहो न कोई । कोई मनुज हालकह सोई ॥ सोई सुनिकान्हाहि बुलाई । हरिजन गोकुलनाथ गुसाँई ८५ पूंछत भे तासों पुनि हाला । काआज्ञा दिय गिरिधर लाला ॥ सुनि कान्हा सबहाल बतायो । गोकुलनाथ हिये तिहि लायो ८६ इंगित प्रथमहि परी लखाई । भये मग्न प्रेमाम्बुधि पाई ॥ बेसुधि होत भये तिहि वारा । जनु मदमत्त कोउ मतवारा ८७ ॥

गुंजामाली की कथा ॥

चौ० । हरिजन गुंजामाली एका । वात्सल्यनिष्ठा दृढ़टेका ॥ गुंजमाल प्रतिदिवस बनावै । श्रीब्रज भूषणको पहिनावै ८८ मृत्यु बिवशभो सुत तिनकेरा । वहूबुलाइ कहो तिहिबेरा ॥ धन सम्पति घरबार तुम्हारा । मालिक श्रीगोपाल उदारा ८९ जो मनभावै सोलैलीजै । भगवत सेवामें मनदीजै ॥ सोकह मोहिं चाहकछु नाहीं । भगवतसेवा रतिमनमाहीं ९० गुंजामाली आनँदपाई । भगवतसेवा तिहिसौंपाई ॥ धन सम्पतिदै दाराकाहीं । आवतभो वृन्दावन माहीं ९१ श्रीव्रजवल्लभपद अनुरागे । सु-

मिरण भजन करन तहँलागे॥ सेवाकरन वहू उतलागी। विफ लक्षणन होवैसुदपागी ६२ बालक बहुत तहां नितआवैं। नाना विधिके खेलमचावैं॥ दिनइक वाल ढिठाई कीन्हा। धूलिडारि भगवतपर दीन्हा ६३ देखि वहू अतिशय रिस कीन्हा। बा- लक सकल खेदि तहँ दीन्हा॥ आगे धरा भोग लै जबहीं। भोजन कियो न भगवत तबहीं ९४ अनमन होइ कहन इमि लीन्हों। सखाहमार खेदितैंदीन्हों॥ तेरो भोजनहू नहिं करिहैं। सखन बिनाकिमि धीरज धरिहैं ६५ बहुत मनायो कियोदुलारा। भगवत कियो न अङ्गीकारा॥ सरुट वहू याभांति पुकारा। बिगरैगो कालन्हाहमारा ९६ तुमरीही पोशाक बिगारी। कही मानलो आजहमारी॥ कालिदेउँगी धूलि झुकाई। जेतीकहिहौ श्रीब्रजराई ९७ एकहु मनमें बात न आई। वहू बोलि बालन तबलाई॥ भोजन करत भये भगवाना। जियालालप्रभु कृपानिधाना ९८॥

गिरिधरकी कथा॥

चौ०। गिरिधर परम भक्त भगवाना। बिट्ठलनाथ पुत्र सुख- दाना॥ पौत्रवल्लभाचारय जोई। सुरतरु अधिक होतभे सोई ६६ केवल अर्थ कल्पतरु देवै। कोउकामना करिजब सेवै॥ गिरिधर महाराज सुखमानी। अर्थादिक चारिहु के दानी १०० बिनाचाहना देवैंहीके। वेदसारजानो अति नीके॥ जहँबैठैं हरिचरित प्रकाशैं। दरशन करत अखिल अघनाशैं १०१॥

तिपुरदासकी कथा॥

चौ०। तिपुरदास कायस्थ बखाने। बात्सल्यनिष्ठा रससाने॥ रहै शेरगढ़ बासस्थाना। भगवत भक्तात्यन्त सुजाना १०२ शीतकाल प्रति सम्वत माहीं। जिनके या विधि प्रीति सदाहीं॥ महाराज श्रीनाथ कि हेता। जरदोजी पोशाक सुदेता १०३ अथवा और भांति बनवावैं। आनँद सहित तहां पठवावैं॥

बश संयोग नृपति धनजोई। लीन्हों करि निरोध सबसोई १०४
पासरह्योइनकेकछुनाहीं। लागेशोचकरन मनमाहीं॥ कछूउपाय
न चलतहमारा। वह जड़ातहैहै सुकुमारा १०५ रोवनलगेमहा
दुख पागे। बहुरि जाइघर ढूंढ़नलागे॥ एकपात्रमसिको लखि
पाये।मुद्रा एकबेंचि सो लाये१०६ मोटा थान एक पुनि लीन्हा।
ताहि कुसुम सों रंजित कीन्हा॥ भेजन को मन माहँ बिचारी।
पुनि पुनि देखत ताहि निहारी १०७ परम मनोहर अति सुकुमारा।
ताहित भेजौं कौन प्रकारा॥ हाय न यह है भेजनयोगू। पुनि
पुनि करत भये उर शोगू १०८ कोई भक्त जान ब्रज लागा।
ताको दीन्हों युत अनुरागा॥ ह्वै आधीन बिनय बहु कीन्हा।
तासों बहुरि कहन इमि लीन्हा १०९ गोसाईं जानैं नहिंबाता।
दासी दासिन योगन ताता॥ दीजे कहुँ भण्डार मडारी। सो
लै दीन्ह जाइ भण्डारी ११० तिरस्कार युत सो लै लीन्हा। बस्त्र-
न तरे डारितिहि दीन्हा॥ जब ओढ़ायो श्री गोसांईं। श्रीनाथ-
हिलै सुभगरजाईं १११ जो तोशेखाने सों आई। श्रीनाथ-
हि अति शीत सताई॥ श्री गोसाईं कांपत देखा। लै लिहाफ़
ओढ़ाव बिशेखा ११२ जाड़ा नेक गयो नहिं जबहीं। अपर
बसन ओढ़ाये तबहीं॥ बहु रूमाल रजाईं नाना। कांपत रहे
तबहुँ भगवाना ११३ आगि जलाइ अँगेठी धारा। कीन्हबहुरि
तिन बन्द किवारा॥ जाड़ा नेक दूरि नहिं भयऊ। तबहिं बोलि
भण्डारिहि लयऊ ११४ कह काकी है प्रीति महाई। भेजो को
को भक्त रजाई॥ तब भण्डारी लै सब आयो। जो नृप साहूकार
पठायो ११५ तब गोसाइँ उढ़ावत भयऊ। किंचिच्छीत दूरि
नहिं भयऊ॥ भण्डारि हि सुमिरण ह्वैआयो। गोसाईंसों बरणि
सुनायो ११६ तिपुर दास दारिद्री भयऊ। भेजन मोट थान इक
लयऊ॥ बांधन हरि पोशाकन हेता। धरो अहै भण्डार निके-
ता ११७ सुनि गोसाईं तुरित मँगायो। चुनि सो भगवत काहँ
उढ़ायो॥ तत्क्षण शीत दूरिसो भयऊ। भक्त मान राखन प्रभु

लयऊ ११८ जियालाल ऐसे भयवाना। तिनहिं भूलि सुखचह अज्ञाना॥ प्रेम सहित जल पत्र चढ़ाये। मानत मणि सुवरणके भाये ११९ तण्डुल विप्र सप्रेम चबाये। शवरीके जूठ फल खाये॥ ग्वालन जूठि छाक जिन खावा। माखन ब्रजघरनीन चुरावा १२०॥

कृष्णदासकी कथा॥

चौ०। कृष्णदास हरिभक्त सुहाये। वात्सल्य निष्ठा सुख छाये॥शिष्यवल्लभाचारय जोई। भगवत काहँ परम प्रिय सोई १२१ भगवत कीन्हीं कृपा महाई।नित्यानन्दम लीन्ह मिलाई॥ काव्य ललित जिनकी सुखदाई। पण्डित भक्तन के मनभाई १२२ एक समय दिल्ली में आये। हरिशृङ्गार खरीदन लाये॥ लखी जलेबी बीच बजारा।मनमें याविधि कीन्ह विचारा१२३ भेजी जाइँ नाथ जीहेता। खाइँकूदि भल मांझनिकेता॥ देहिंबुलाइ मर्कटन काहीं। होहिं प्रसन्न बहुत मनमाहीं १२४ प्रेमातुर सब सखन बुलावैं। आपुखाइँ पुनिसबन खवावैं॥ करिचिंतवन ध्यान इमि आयो। भगवत मानसि भोगलगायो १२५ भगवत कीन्हों अङ्गीकारा। कृष्णदासगे आगे थारा॥ कृष्णदास मन आनँद माना। थारा तजिआये दूकाना १२६ कृष्णदास बाँटो सबकाहीं। जातभये आगेचलि ताहीं॥ सखी एकको नाचत देखा। मनमें आनँदलहो बिशेखा १२७ याकोनाच नाथजी देखैं। तौ कस आनँद लहैं बिशेखैं॥ निकटबुलाइ कहो तिहिबारी। नाथहमार रसिकहै भारी १२८ यह कहिकै ताको लैआये। मज्जन मानसि गंगकराये॥ पुनिताकहँ शृंगारकराई। भगवत सन्मुखगये लवाई १२९ सखी देखि श्रीनाथस्वरूपा। प्रेममगन सोभई अनूपा॥ कृष्णदास तबकहो बिशेखा। मम साहबजादे को देखा १३० सो देखा याभाँति बखाना। मम मननैनन मांझ समाना॥ यह कहि नृत्यकरनसो लागी। नानाभाँति प्रेमरसपागी १३१ सुख

बिलास अरुनैन बिलासा । कीन्हे निजबश रसानिवासा ॥ तदाकारहो मनअनुरागी । दीन्हों तुरितदेहसो त्यागी १३२ नित्य बिहारम जाइ समानी । कोसक हरिजन कृपाबखानी ॥ कृष्णदास जी आनँदराशी । ग्रंथ प्रेमरस रामप्रकाशी १३३ कीन्हों भगवत अंगीकारा । संतसभा महँ भयो प्रचारा ॥ सूरदास मिलिबे हित आये । कृष्णदास सो बचन सुनाये १३४ ऐसोपद निजरचित सुनैये । जहँ ममपदको भावनपैये ॥ कृष्णदास पद कछुक सुनाये । सूरभाव आपन ठहराये १३५ कृष्णदास सुनिकहोबुझाई । प्रातहिदैहै तुमहिं सुनाई ॥ सोवतभे चिंता चितधारी । पदबनाइ धरिदीन्ह मुरारी १३६ प्रातहि उठि ताकियातर देखा । आनँद पावतभये बिशेखा ॥ सूरदास कहँ दियोसुनाई । सुनिकै सूरकहो मुसुकाई १३७ यह बिरचो कौतुक तबहेरी । बात न जाइबशाममकेरी ॥ कहिदोनों सुधि बुद्धि बिसारी । सागर प्रेमकीन्हपैसारी १३८ कृष्णदास नित यमुनाबारी । लैआवैं भगवत हितकारी ॥ हैनवकोस भूमिवह जोई । भगवत मना करतभे सोई १३९ नहिं माने भगवत समुझाये । कलश चिह्न निज शीशलखाये ॥ तब लाचारभये हरिआगे । कूप तोय नित लावनलागे १४० याबिधि तिन बहुचरित सुहाये । जियालाल संक्षेपहिगाये ॥ हरिजन चरित सुखद सबकाला । सुमिरत हरिआवत उरहाला १४१ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचि
तेचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येएकोनविंशद्वात्सल्यनिष्ठा
यांनवभक्तकथावर्णनोनामभक्ता
म्बुनिधावेकविंशस्तरङ्गः २१ ॥

दो० । यह महिमा सौहार्दहै निष्ठबीसवींजौन । जामें रस भक्तन कथा कहौं बरणिकै तौन १ अष्टकोण पुनिरेखको राम चरण की नामि । पुनि प्रणाम बहुविधि करौं जो कल्कीहैस्वामि २ छन्दरामगीतिका । अन्तकलियुग देश सम्हल धरहिंगेवपु जोइ । नाम कलियुग पाप पुंज प्रहार करिहैं सोइ ॥ करहिं

थापित धर्म सतयुग वर्ण निजपथहोइ । अश्वदूरग बैठिजिन
कर दुष्ट बाचन कोइ ३ चौ० । हैं जे जग सम्बन्ध सुहाये । नव
प्रकारके बुधजन गाये ॥ शेषी शेष एकहै सोई । अंशी अंश
जानिये दोई ४ देही देह तृतीय कहावै । पतिपत्नी चतुर्थ छवि
पावै ॥ पूजक पूज्य सुपंचम कहिये । षष्ठसेव्य सेवक सुद ल-
हिये ५ सप्तम रक्षक रक्ष्य बखानो । जनक जन्य अष्टम उर
आनो ॥ गुरु शिष्यहै नवम सुहावा । प्राप्तहोत ईश्वर परभावा ६
येजो नवसम्बन्ध गनाये । भगवत परे न एकौ गाये ॥ ईश्वर
सों सम्बन्ध पुराना । जबसों जग यह जीवबखाना ७ ताते सब
परईश बखानो । सब सबन्ध ताहि पर आनो ॥ नाते सकलतु-
च्छहैं तेते । सत्यनात भगवत पर जेते ८ एसम्बन्ध एकतनगाये ।
जीवईश तनमान न पाये ॥ ताते नात ईश सतिमानै । अपर
सकल मिथ्या करिजानै ९ दीन्हों पतिन त्यागि ब्रजनारी ।
मीरातजो न दोष बिचारी ॥ दीन्ह त्यागि प्रह्लाद पिताहीं ।
भोजग सुयश पाप लहनाहीं १० बलिगुरु त्यागि दियो क्षण
माहीं । भगवत हेत लगो अघनाहीं ॥ भगवतही सों नातो
मानै । दृढ़ बिश्वास हिये निजठानै ११ जेते जग सम्बन्धकहावैं ।
तामें एकनात ठहरावैं ॥ ताके सदृश भाव उरआनै । ईशभाव
को तहां न मानै १२ भगवत केर बचन सुखपांती । बिदित पु-
राणन में बहुभांती ॥ को ममभजै जौन विधिजोई । तादृक फल
पावतहै सोई १३ यह लघुवासर कथा प्रकाशी । राम प्रसाद ज-
नक पुरवासी ॥ गुणग्रामात रामकहँजोई । आवतभये अवध-
पुर सोई १४ अवध भूमि तोयादिक त्यागा । आवदरशहित
सहानुरागा ॥ रघुनन्दन मन्दिर जब आये । भक्ति प्रताप राम
दरशाये १५ तत्क्षण रत्न सिंहासन त्यागी । आगे मिले चित्त
अनुरागी ॥ चाहिय रीति जनक हित जोई । रघुनन्दन मूरति
केय सोई १६ है यह बात प्रगटसुद गेहा । याके कहन प्रयोजन
रहा ॥ दृढ़ निश्चय होवै मनमाहीं । सिद्धप्रयोजन संशय

नाहीं १७ यानिष्ठा जे भक्त कहाये। बरणों तिनके नाम सुहाये॥ तिनमें प्रथम जनक की गाथा। कहौंनाइ रघुबरपद माथा १८॥

राजा·जनक की कथा॥

चौ०। महिमा जनक महासुखदाई। को बरणै तिन भाग्य बड़ाई॥ जिनघर जगत जननि श्रुति सारा। मंगल मूललीन्ह अवतारा १९ छन्द दण्डक। बिश्वामित्र साथ रघुनाथ जबजातभये जनकसमाज धनुयाग सुनिभारीहै। देखत स्वरूप सुख धाम छबि कामहर जनक बिरति योग सुरति बिसारीहै॥ नृपन समाज मांझ परण सुमिरि निजरामहिं निरखि सुधि बुधि तजि डारी है। कोमल बदन बाल सुखमा सदन काल काल को धनुषयह कौन भांति टारी है २० छन्द षट्पद। देखि जनकमन शोच रामधनु तुरित बिभंज्यो। देश देश के भूपकरी मद हरिहरि गंज्यो॥ सीयलिये जयमाल आइ ग्रीवा पहिरायो। जनका नँद तिहिकाल मिष्ट गूंगा जिमिखायो॥ कह जियालाल तिहि काल सुख सुरनर मुनि जेतो लहो। नहिं शेष शारदा कहिसकैं जाइन पुरबासिन कहो २१ दो०। सुमन वृष्टि देवनकरी वन्दी सुयश उचार। विप्रवेद धुनिराम सिय पुट मण्डफ पगुधार २२ ग्रंथिजोरि भावँरि फिरत सुरनर लखत सनेह। मणि खंभन प्रतिबिम्ब लखि भये विदेह विदेह २३ सियाराम जोरी निरखि वाढ़ो नेह अपार। आनंदाम्बुधि डूबियो लहोन वारा पार २४ रामबसे तहँ वहुत दिन दशरथ सहित समाज। लहि आयसु कीन्हों विदा जनकराज महराज २५ जनकराज बैठाइयो सीता राम समेत। एकहि पालकि के विषे पुनिपुनि लखतसहेत २६ प्रेम जलधि बूड़े वहुरि सीताराम पठाइ। जियालाल किमि कहि सकै कविगति बुद्धि शकाइ २७॥

कथा वृषभानु व कीर्ति जीकी॥

दो०। महाराज वृषभानुकी कीर्ति कीर्ति महरानि। म-

हिमाभक्ति प्रतापहू को कविसकै बखानि २८ महरानी श्री राधिका सर्वेश्वरी सुजान। जन्मलीन जिन भवनमें नँदनन्दन सुख दान २९ जाहित राधा कृष्णसह तजि गोलोक बिहार। धरणि मध्य आवत भये लीन्हमनुज अवतार ३० प्रथमहिं अब वर्णनकरौं राधा आवन हेत। एक समयनिर्जन विपिनि मण्डल रास निकेत ३१ चौ०। करि विहार श्रीकृष्ण अबाधा। सोवत त्यागि दियो पुनि राधा॥ बिनपूछे बिरजा गृहगयऊ। शृङ्गारार्थ मोद मन कयऊ ३२ बिरजा शुभ राधिका समाना। वृन्दारण्य विषे सुख दाना॥ अपर सुन्दरी तासम जानी। हैंशत कोटि कृष्ण सुख दानी ३३ बिरजा रत्न सिंहासन माहीं। आवत लखत भई हरि काहीं॥ श्री हरिताहि विलोकन लयऊ। शरच्चन्द्र आनन छबि छयऊ ३४ सस्मित वक्र चक्षु मनहारी। षोड़श बर्षि युवा सबबारी॥ शोभित शुभ रत्ना लंकारा। शुक्लवस्त्र पुलकाङ्ग निहारा ३५ कामबाण सों पीड़ित देखी। कीन्हों कृष्ण बिहार विशेखी॥ पुष्पतल्प शोभित सुख सारा। बिरजा हरि कौतुक शृंगारा ३६ मूर्छा बिवश भई तिहि काला। करिप्राणेशवक्ष निज हाला॥ कोटि काम छबि देखि लजाई। निर्जन बन प्राणप्रिय पाई ३७ तया सक्त श्री कृष्ण हि देखी। राधिकालि कह जाइ बिशेखी॥ कीन्ह क्रोध राधायह सुनिकै। रोवत अमित भई शिर धुनिकै ३८ रक्त कमल चख कहा बखानी। सत्य कहत यदि अली सयानी॥ तौ तू मोकहँ देइ दिखाई। देहुँ यथोचित फलहि लखाई ३९ बिरजहि दण्ड देउँ को राखै। क्रोध सहित राधा इमि भाखै॥ काश्चिदगोप्यसभय सुनि बैना। सम्पुटाञ्जलि कह गुण ऐना ४० कृष्ण सबिरजा देहुँ दिखाई। सुनि राधा रथचढ़ि द्रुतधाई॥ तिरसठि लक्ष करोरिगोपी गन। चलीं साथ रथचलो बेगमन ४१ रत्नसार सों रचित सुहावा। कोटि सूर्य समतेज महावा॥ इन्द्रसार मणि रचित सुहाये। तीनि कोटि कलशाछबिछाये ४२ लक्षचक्रजा

में हैं राजत । मणिमय खंभ कोटि छबि छाजत ॥ मध्य देश मणि लाल सुहावा । कृत्रिम सिंह चक्र छबि पावा ४३ चारि लाख घंटा छबि छाये । चित्र पुत्तली शोभा पाये ॥ एक लक्ष रति मन्दिर सोहैं । रत्नसार निर्मित मनमोहैं ४४ मणि मय शुभग कपाट विराजत । चित्र बाजि तहँ शोभा साजत ॥ भोग द्रव्य अरु वेष समेता । रत्न पात्र मणिघट छबि देता ४५ कुंकुम मणि सोपान करोरी । कौस्तुभरुचकस्यमंत बहोरी ॥ कृत्रिम पद्म कोटि शत सोहैं । कानन वापि चित्र मनमोहैं ४६ शतयोजन सो उच्च बिशाला । दशयोजन विस्तृत छबि जाला ॥ कोटिन पुष्पन माल बिराजैं । पारिजात कुन्दादिक साजैं ४७ छं० । यूथिकदम्बहुमालति मल्लिक माधविचंपकहू छबि छाई । पद्मसहसदलहूकरबीरनि नागेशहुमालासुखदाई ॥ दर्पण रत्नलक्षशतराजत चामर श्वेत सवज्रमहाई । हरि प्राणप्रिया श्रीराधाको रथ जियालाल बरणै किमिगाई ४८ चौ० । तापर चढ़ि राधाद्रुतआई । देखे द्वारपाल सुखदाई ॥ श्रीदामाहरि किंकर जोई । ठाढ़ोलक्ष गोपलै सोई ४९ कमल नयन मुख किंचिछ्हासा । क्रोधित राधा वचन प्रकासा ॥ दूरजाहु रति लंपटदासा । हसत्वत्प्रभुकर लखहिं विलासा ५० मोसमान कांतावहकैसी । देखाचहत होइ वह जैसी ॥ राधावचन सुनत भयहीना । वेत्र पाणि तिन आनन दीना ५१ लखि राधिका सखीरुट धारिकै । दिय निकारि गोपिन बल करिकै ॥ कोलाहल गोपिनकर देखी । कोपित राधाजानि विशेखी ५२ अंतर्धान भये भगवाना । विरजाहू चरित्र यहजाना ॥ देखि राधिका को भय पाई । त्यागेप्राण योग मनलाई ५३ सरिता रूप महा सुदधारा । प्रगटी तहां वर्तुलाकारा ॥ योजन कोटि तासु विस्तारा । दशगुण दैर्घ्यस्य अधिकारा ५४ राधाजाइ भवन मधि देखा । नहिं हरिविरजानदी विशेखा ॥ आई घूमि भवन निजतवहीं । हरिजाना विरजानदि जवहीं ५५ उच्चस्वर तट रोवत भयऊ । आवहु प्रिया ग्रहनइमि

लयऊ ॥ तव बिन मम जीवनहै नाहीं। नाहिंत प्रगट होउ सरि-
माहीं ५६ सिद्धीआठ तुमहिं हमदीनी। तिनहिं सुमिरि आवहु
सुखभीनी ॥ कृष्णाज्ञा बिरजा लहजबहीं। योषिद्वपुहरि ढिगगै
तबहीं ५७ मृदुमुसुकाइ कृष्णदिशि देखत। लखो कृष्णमम दिशि
हैं पेखत ॥ श्रोणिभार उन्नत कुच सोहै। गज गामिनि मानिनि
मनमोहै ५८ सुन्दररूप सुन्दरिनमाहीं। जिनसम धन्यअपर
तियनाहीं ॥ चम्पक वर्ण शुभग तनशोभा। पक्कबिम्ब लखि अ-
धरन लोभा ५९ दो०। कमल नयनि पूर्णेन्दुमुख मृगमद बिन्दु
सुशोभ।बिन्दु सिंदूर सुहावनो कबरी अहिनी लोभ६०रत्नभवन में
शोभई गलरत्नकीमाल।गज मौक्तिक नासाग्र में मुक्ताहार विशा-
ल६१कंकण रत्न किंकिणी जाला।रत्न मँजीर शब्द सुख शाला ॥
या विधि रूपवती छवि देखी। आलिंगन किय कृष्ण बिशेखी६२
चूंबत बारबार सुख भयऊ। विपरीतादि शृँगार न कयऊ ॥ बिरजा
रज अमोघ सो धारा। धारण गर्भ कीन्ह तिहिबारा ६३ दिव्य वर्ष
शतबीते जबहीं। सातपुत्र जन्मे तिन तबहीं ॥ एक समय बृन्दाव-
नमाहीं। करत बिहाररही हरिपाहीं ६४ पीड़ित भ्रातृ पुत्रलघुआ-
यो। बिरजा क्रोड़ामध्यसमायो ॥ दीन्हों त्यागि तबहिं भगवाना।
राधा गृहको कीन्हपयाना ६५ दो०। बिरजापृथुक प्रबोधकरि
नहिं समीप हरिदेख। रहअतृप्त शृंगारसों कीन्ह बिलाप बिशेख
६६ चौ०। सुतहि शशाप क्षारनिधि होऊ। तव जलकबहुँ न
पीवै कोऊ ॥ दीन्हशाप सब पुत्रनकाहीं। जाहु मूढ़ जम्बू भूमा-
हीं ६७ नहिं एकत्र रहौ तुमकोऊ। द्वीप द्वीप महँतिष्ठितहोऊ ॥
लघुसुत कह सब भाइनतेरे। सुनि सब गेमाता केनेरे ६८ अति
दुःखित प्रणाम करिमाता। गये अवनि तल विवरण गाता ॥
सातौ द्वीपन सात समुद्रा। द्विगुण मान आरंभित क्षुद्रा ६९
दो०। लवण इक्षुमधुसर्प्पिदधि दुग्ध शुद्ध जलजान। सातौ
द्वीपनकेबिषे सातजलधि एमान ७० चौ०। रोये सब बालक ति-
हिकाल। माता भ्राताशोक विशाला ॥ बिरजारोदन कियोअ-

पारा। आये कृष्ण जानि तिहि बारा ७१ कांत देखि आनँद ल-
हभारी। लीन्हजाइ हिय कुंजविहारी॥ दीन्ह त्यागि निजपुत्र-
नकाहीं। ताते हरि प्रसन्न तापाहीं ७२ दीन्हों बर हमनित इत आवैं
तव सुतनित्य दरश तवपावैं॥ यह कहि तट हरिबसत बिशेखा।
राधासन कह सखि जोदेखा ७३ क्रोधभवन राधागत हाला।
आवतभये कृष्ण तिहि काला॥ राधाद्वार ठाढ़भेजाई। श्रीदामा
सहहरिसुखदाई ७४ हरिहि बिलोकि क्रोध युतराधा। क-
हतभई इमि बचन अगाधा॥ मोसों अधिक बहुत हैंदारा।
तहाँजाउ इत क्यों पगुधारा ७५ सरिद्रूप बिरजा अतिप्यारी।
ममभय पाइ नदी बपुधारी॥ रचिमन्दिर रहिये तहँजाइय।
नाहिं समुद्रकररूपबनाइय ७६ नदकर नदि संगम गुणवाना।
परम प्रीति निज जाति बखाना॥ कहौं कहाँ लगि अचरज
बाता। जेसर्वज्ञ सर्व गतिज्ञाता ७७ नदी भोक्तु इच्छामनधारा।
जेतुमकहँ सर्वेश बिचारा॥ कौन तत्व तिनलखी अपारा। यह
कहिमौन राधिकाधारा ७८ उठी न भूमि शयन सोतहँवाँ।
गोपीलक्ष बिराजतजहवाँ॥ काहूचामर हाथसुहायो। सूक्ष्मा शुक्र
काहूछबिपायो ७९ काहूकर ताम्बूल बिराजै। कोऊ मालाकर
सुदसाजै॥ कोऊ लियेसुगन्धित नीरा। कोऊ कमल पुष्पमति
धीरा ८० छन्दमनहरण। काहूके सिंदूरहाथ पानहाथलीन्हे
कोऊ कज्जल करदर्पणकोऊवेणुवीणाशोभई। रत्नअलंकारकोऊ
लिये है अबीर हाथ यंत्रहाथ कोऊ लै सुगंधि तैल लोभई॥
कोऊ करतालकोऊचंडुलै मृदंग कोऊमुरलीमधुरतान गान
कारि राजई। निपुण सँगीत कोऊ नृत्य परवीन कोऊ क्रीड़ा
वस्तु पानि कोऊ मधुपानि साजई ८१ दो०। सुधापात्र कोऊ
लिये अंघ्रिपीठ कर कोइ। वेप वस्तु लै कोउकर चरण सेवकी
सोइ ८२ हाथ जोरि कोऊ खड़ी अस्तुति करती कोइ। या विधि
सखी अपारहैं जियालाल कह सोइ ८३ चौ०। बाहर फार्म
जोन सुहावा। कोटि सखी तहँ शोभा पावा॥ वेन्चारि-

णी अपर सुहाई। राधा द्वार नियुक्त सदाई ८४ कृष्णहिभीतर जान न दयऊ। राधा देखि कहन इमि लयऊ॥ सन्मुख देखि प्राण पति पाये। अनुचित कर्कश बचन सुनाये ८५ हे हरि विरजा कान्तकहाये। मम समीप किहिकारण आये॥ जाहु जाहु मम सन्मुखतेरे। देत दुःख किमि अंगनमेरे ८६ लंपट चोर लोल रति केरे। जाहु शीघ्र पद्मावतिनेरे॥ गच्छ रत्नमालाके पासा। अथवा वनमालासु विलासा ८७ हेहे नदीकांत देवेशा। गुरूगुरुन के यह प्रभु वेशा॥ जानो भद्र होइ तव जाहू। कीजिय निकट न ममउर दाहू ८८ मनुजन को सोतव व्यवहारा। भारतभूमि लेहु अवतारा॥ मनुज योनि जनु लंपट लीजै। जाइय धेनु लोक तजि दीजै ८९ यह कहि कहन सखिन सोंलीना। हे शीलशशिकले प्रवीना॥ पद्मावति माधवि सुनि लीजै। याहि निकारि इहांते दीजै ९० जानौ याहि धूर्त्त मनमाहीं। याको इहां प्रयोजन नाहीं॥ या विधि सुनि राधा के बैना। हरिसों कह गोपी करि सैना ९१ कोऊ गोपी कह समुझाई। अपर भवन बैठिय क्षण जाई॥ राधा कोप दूर जब ह्वैहैं। तब तुमको बुलाइ हम लैहैं ९२ छन्दमनहरण। कोऊ कहै द्वितिय भवनक्षण जाहु प्रभु तुम विन बोलि हैं अपर राधाकाहिसो। कोऊ कहै वृन्दावन जाइयेक्षणकप्रभु राधा मानरहै जबलगि चितचाहिसो॥ कोऊ कहै हँसत बचन मानदूरिकीजै भक्तिसों मनाइ प्रेम प्रीति को निबाहि सो। कोऊ कहै जाइये अपरदारा गारमांझ लोलुप चपल परतीति चित नाहिं सो ९३ कोऊ कहै मन्दमुसुकाइ हरि सौंहँजाइ जाइये उठायमान दूरिकरि दीजिये। कोऊकटुबचन कहत हरिहेरिसुखराधा सुख कमल बिलोकिकिमि लीजिये॥ राधाकोप जबलगि दूरिनहीं होइ प्रभु तबलगि वास कहुँ अनतहि कीजिये। कोऊकहै दूजे थल जाहु यान जाहु प्रभु वारण करहिं अनतहि मुदभीजिये ९४ दो०। कोई गोपी आइकै कहे कृष्णसों बैन। मन्दिर बाहरजाइये इहाँ कामवतहै

न ९५ कृष्ण सुनत मुसुकाइकै कहत कछू नहिं बात। स्वस्थ चित्त सर्वेश प्रभु रंचक्रोध नहिंगात ९६ गोपिनकरि वारितनिरखि श्रीहरिको तिहिकाल। श्री दामाउर प्राप्तभो अमित क्रोध विकराल ९७ श्रीदामा बोलतभयो राधासों करिक्रोध। रक्त कमल चख राधिका जाउर क्रोधन बोध ९८ मम ईश्वरको कहति है कटुवाणी किमि मात। बिना विचारे क्रोध यह मोको वृथा लखात ९९ ब्रह्मादिक के ईश प्रभु जगके कारण जौन। उमारमा वाणी प्रकृति ईश सुनिर्गुण तौन॰ १०० पूर्णकाम आतम। रमण करत विड़म्बन तस्य। देविन प्रवर कहावहू सेइपाद रज यस्य १०१ प्रभुलीला भ्रूभंगसों त्वद्विधसृजैं अनेक। ऐसे नि- र्गुण कृष्णको जाननधारि विवेक १०२ जिनके पद वैकुण्ठमें से- वत भक्तिसमेत। केशन मार्ज्जत कमलपद लक्ष्मी बुद्धिनिके- त १०३ कर्णामृत अस्तुतिनकरि स्तौति सरस्वतिजाहि। भक्ति सहित जिन ईश्वरहि तिन तू जानत नाहिं १०४ बीजरूप माया सदा रह भयभीत विशेखि। भक्ति सहित अस्तुति करत जानन तिन प्रभुलेखि १०५ नेतिनेति जिनवेदकह पावन कबहूं अंत। भामिनि तिनहि नजानहू कृष्ण जगतके कंत १०६ चारिवक्त्र अज पंचमुख शंकर आनँदपाइ। अस्तुतिपद पूजनकरत पुलका- वली बढ़ाइ १०७ शेष सहससुख सोंकरत अस्तुति आनँदपाइ। भक्ति सहित सेवत चरण बन्दत शीशनवाइ १०८ देवासुर मनु मनुजहू सेवत चरण मुनीश। स्वप्नहु पावन पगदरश तुमनल- खहु सोईश १०९ विप्ररोपको त्यागिकै गहोचरण भगवान। भृकुटि विलाश संहारई सृष्टि सकल जियजान ११० इनकी एक निमेषमें पतन विरंचिकहोत। अष्टाविंशति इन्द्रहू इनदिन होत उदोत १११ अष्टोत्तरशतवर्ष इमि ब्रह्मा आयु प्रमान। तुमबाराधे वा अपर मम ईश्वरवश जान ११२ पूरण कटु याविधि सुनत श्रीदामाके वैन। सद्यकोप राधाकियो रक्ताम्भोरुहनैन ११३ मुक्त केशिनाहर निकसि फरकत ओठ सक्रोध। श्रीदामासों कहन लिय

मनहुँ सिखावसु बोध ११४ रेलंपट किंकर अधम जानत अर्थन
गूढ़। तेरे ईश्वर कृष्णहैं ममईश्वर नहिं मूढ़ ११५ करत बड़ाई
जनक की निंदसि मातु सदाहिं। यथा असुर देवन तथा तू
निन्दत मोकाहिं ११६ जाहु आसुरी योनिको ताजि गोलोकहि
सद्य। ममशापित रच्छन तुमहिं को ईश्वर है अद्य ११७ यह
कहिकै सुष्वापपुनि राधा पुनि बिरराम। कठिन शाप आपुहि
सुनत बोलतभो श्रीदाम ११८ कोप मानुषिनके सदृश तबताते
भुविजाइ। मानुषि तन धारण करौ शापहमारी पाइ ११९ पत्नी
तुमरापाणकी ह्वैहौ जगती जाइ। वैश्य अंशहरिहोइ सो वृन्दा-
बनसुखदाइ १२० कृष्णहुतेरी शापसों लैहैं तहँअवतार। गोकुल
में पैहौ तिनहिं करिहौ विपिन बिहार १२१ होवैगो विच्छेद
पुनि हरिशतबर्ष प्रमान। आवहुगी गोलोक पुनि पाइकृष्ण सुख
दान १२२ कहि या बिधि पुनि नौमिपद जातभयो हरिअग्र।
हाथ जोरि परणाम करि भाषी कथा समग्र १२३ यह कहिकै
रोवत भयो कहो कृष्ण समुझाइ। जाहुधरणि ह्वैहौ अजित
तीनों लोक महाइ १२४ काले शंकर शूलसों त्यागि देह ममतीर।
पंचाशद्युग अंतमें इतआवहुगे बीर १२५ सुनत वचन श्री-
कृष्ण के कहसशोक श्रीदाम। भक्ति तुम्हारी नहिं तजै कबहूँ
ममउरधाम १२६ यह कहि श्रीहरि नौमिपद गोबाहर अस्थान।
पीछे राधाहूचली पुनिपुनि रोदनठान १२७ कहां जात हेबत्सरे
यह कहिकियो विलाप। श्रीदामाहू नौमिपद कीन्ह महा परि-
ताप १२८ बिह्वलह्वै रोवतभयो पुनिपुनि कियो प्रणाम। शंख-
चूड़ भुविजाभयो तुलसीपति सुखधाम १२९ श्रीदामा जबहीं
गयो देवीहरि ढिगजाइ। सबकारण वर्णन किया शोकाकुल
दुखपाइ १३० शोकातुर अवलोकिकै बोधकियो हरितासु। शं-
खचूड़ गतकाल पुनि आयो हरिढिग आसु १३१ बाराहे राधा
गईं धरणी कृष्ण समेत। जन्म लीन वृषभानुगृह गोकुल आनँद
केत १३२ सो०॥ महाराज वृषभान की महिमा को कहिसकै।

जियालाल सुखदान रासेश्वरि जहँ जन्म लिय १३३ ॥

उग्रसेन की कथा॥

दो०। उग्रसेन पितुकंसके नानारहे मुरारि। भक्तिभाव ऐसो कियो वशकीन्हो वनवारि १३४ पूर्णब्रह्मआनन्द घन जान हरिहि सबकाल। प्रेम निवाहत नातिसम सर्बकाल महिपाल १३५ भगवतबशयाबिधि भये निजईश्वरता त्यागि। चमर छत्र निजकरन लै कियसेवा अनुरागि १३६ ब्रह्माशिव सूरज उडुप यमजलपति अरुकाल। जामायासों भय करत चाहत कृपारसाल १३७ चौ०॥ यामें एकबात है सारी। भक्ति विवश हैं सदामुरारी॥ कौन सुदामा धनी अपारा। काबिद्या गजराज विचारा १३८ उग्रसेन की का प्रभुताई। कुब्जा के तन कौन निकाई॥ व्याध पुण्य कीन्हीं का न्यारी। ध्रुवकी कौन वयक्रमभारी १३९ शवरीकिहि उत्तम कुल केरी। कथा बिदुरकी जानिय फेरी॥ जियालाल किमि अहै प्रमाना। कोटिन ऐसे अंत न जाना १४०॥

कुन्ती की कथा॥

चौ०। अबकुन्ती की कथासुहाई। वर्णनकरौं भक्त सुखदाई॥ कृष्णहि अपन भतीजा मानत। पूरणब्रह्म हिये निजजानत १४१ जब हरि चलैं बिकल अति होवैं। याविधि वचन कहैंअरु रोवैं॥ हेहरि दीजै विपति सदाई। जाते दरश मिलैं तुवआई १४२ जब जब हमहिं परे दुख भारे। तब तब दरशन मिले तुम्हारे॥ इमि बहुविधि कहि कुन्ती भाखैं। जब हरिचलैं रोंकि तवराखैं १४३ परमधाम जबगे भगवाना। कुन्ती तुरत तजे सुनिप्राना॥ भगवत निकट पहूँची जाई। जियालाल मन आँनदपाई १४४॥

युधिष्ठिर भीम नकुल सहदेव की कथा॥

चौ०। सहद्यौनकुल युधिष्ठिरभीमा। हरिहिमेर भ्रात गुण

जीमा ॥ पूरणब्रह्म सदा उरजानत । निज ईश्वर भगवत को मानत १४५ कबहुँ नात गुणि जात भुलाई । तब भगवतपुनि देत चिताई ॥ याविधि दोनों भाव सुहाये । रहत प्रेम भगवत में लाये १४६ धरि उरभगवत भक्ति बिशोका । जिनको यश छायो त्रैलोका । घोर गरल सों भीम उबारे । लाक्षागढ़ में भे रखवारे १४७ द्रुपदसभा महँसुभट अनेका । द्रुपदसुता जीती न्द्रणएका ॥ पांचालीलज्जारखिलीन्हा । कानन में रक्षा बहुकीन्हा १४८ पूरण राजसूयकरवाई । दुर्बासाकी शापबचाई ॥ महभारत भीष्मादिक योधा । द्रोणकर्ण बिकरण रण क्रोधा१४९ कृपाचार्य्ययुत अश्वत्थामा। शल्य जयद्रथहू रणठामा॥ सोमदत्त दुश्शासन योधा। दश सहस्र गजबल किय क्रोधा १५० अष्टधातु दुर्योधन अंगा। शत भ्राता जिनके हैं संगा॥ तिनसों बिजय दीन भगवाना।नाश कराइ दुष्टगण नाना१५१ दो० कृष्ण कृपापूरण निरखि धर्म युधिष्ठिर भूप। राज सिंहासन शोभियो शोभालही अनूप १५२ प्रजा पालियो धर्म युत भगवत भक्ति प्रकाश। शत्रु नाश कीन्हे प्रबल कीन्हे मित्र बिकाश १५३ कृष्ण गमन निजधाम सुनि तजि राज्यादिकतौन। जाइ हिमालयके बिषे कीन्हधाम हरिगौन १५४ ॥

द्रौपदी की कथा ॥

चौ०। कथाद्रौपदीकी शुभएहा। बरणौंधारि रामपदनेहा॥ यज्ञकुण्डसों प्रगटी जोई। पाण्डव बरे स्वयम्बर सोई १५५ तिनकी कथा अनेकप्रकारा। बिदित पुराणनमें बिस्तारा॥ पतिव्रतानिज पति सुखदानी। परम भक्त श्रीशार्ङ्गपानी १५६ पूरणब्रह्म कृष्णको मानत। देवर भाव बहुरि उरआनत॥ दुर्योधन कीन्हो अपकारा। पांडवबोले सभा मँझारा १५७ शकुनी कीन्हो कपट प्रकासा। नृपति युधिष्ठिर खेले पासा॥ कपटअक्ष शकुनी वहँ

डारा। हारे नृपति कोश भयडारा १५८ राज्य समस्त नृपतिगे हारी। निजसह बंधु द्रौपदीनारी॥ दुश्शासन कुरुराजपठायो। पकरिद्रौपदी कहँ सो लायो १५६ गहे केश निजसभा निहारी। दुर्य्योधन बोल्यो तिहिबारी॥ करहुनग्न अबद्रुपदकुमारी। बैठारहुलै जंघहमारी १६० दुश्शासन सुनिभूपति बानी। खैंचनलगो बस्त्र अज्ञानी॥ रजस्वलातन अंशुक एका। द्रौपदि देखे सुभट अनेका १६१ भीषमद्रोण द्रोणि कृपआदी। बैठ सकल परमारथबादी॥ बहुरिआपने पतिन निहारे। नीचे नैन बैठमनुमारे १६२ जबकाहू नहिं बर्जत देखा। तब हरि सुमिरण कीन्ह बिशेखा॥ हेममदेवरहे वनवारी। देखो यहगति होतहमारी १६३ औरन हँसनचहत सब काला। अब हँसिहैं तुमकहँ लखिबाला॥ कीभावज तुम्हारि सुकुमारी। नग्न सभामहँ सकलनिहारी १६४ जैयदुनन्दन जैगिरिधारी। जैराधापति कुंजबिहारी॥ जैलाक्षागढ़पाण्डवतारण। जैजै गजपति बिपतिविदारण १६५ जैजैभीम गरल दुखनाशन। जैब्रजजन उरज्ञान प्रकाशन॥ जैजै बृन्दाविपिन बिहारी। जैगोपीजन आनँदकारी १६६ जाक्षण द्रौपदि हरिचितलावा। ताक्षण भगवत बसन बढ़ावा॥ रंगरंगके अम्बर देखी। हर्षीमन द्रौपदी बिशेखी १६७ हरिसन्मुख दोनोंकरजोरी। लागी अस्तुति करनबहोरी॥ जैगोपीपति मुरली धारण। जै निज भक्तन बिपति विदारण १६८ छन्दमनहरण। जयति जयति अघहरण दरण दुख शरण सुखद बेद बिरदबखान्यो है। खल दलगंजन बिभंजन बिपतिगण रंजन सुनि जजनकोन जग जान्योहै॥ पूरण प्रकास ज्योति रूप सुखबास आस चरण करण निज अरण सुआन्योहै। जियालाल सुखद दुखद जगजाल काल कठिन कराल यमजात नाहिं मान्योहै १६६ चौ०। बढ़ोवस्त्र याभाँति अपारा। जाविधि वामनतन विस्तारा॥ भगवत अर्पित कर्मसमाना। बाढ़तभयो दुकूलमहाना १७० दो०। कुरुक्षेत्र में जाइकै तुलादान करकोइ। सोबाढ़े जिहिभाँति सों

बढ़ोचैल तिमिसोइ १७१ नारायणकी नाभिसों कमल नाल जिहि भाँति। बाढ़ीतिमि बाढ़त भयो अम्बर सुखकी पांति १७२ चौ०। बसन बाढ़िलखि करिअति क्रोधा। दुहुकर खैंच दुशासन योधा॥ बारिराशि जनु मथतमुरारी। गिरिमथानि वासुकि रज्जु धारी १७३ छन्दमनहरण। खींचत खींचत बलथाको है दुशासन को बसन घटतनहिं और सरसातहै। रंगरंग बसन विलोकियत भलीभाँति भूरुह बसन कैधौं द्रौपदीकगातहै॥ अंशुक पुतलि जनु कीन्ही है कृपानिधान जियालाल जासु अंगनेकना लखात है। बसनकरगड ईशकैधौं मायाजगदीश कैधौंहै समुद्रवस्त्र चैल धारभातहै १७४ दो०। याविधि राखी लाजतहँ कृपासिन्धु भगवान। जियालाल शठ ताहि भजु छाँड़ि कपट मद मान १७५ चौ०। औरौ कथा द्रौपदी केरी। सोऊकहौं महानँदढेरी॥ जब पाण्डव बनबास सिधाये। द्रौपदि सहित कठिन दुख छाये १७६ तहाँ न कछु भोजनकी सामा। मन विचारि द्रौपदि सुखधामा। गृह पतिव्रत आनन्दितकीन्हा॥ हर्षितद्युमणि पात्र इक दीन्हा १७७ भोजन करैं न द्रौपदि जबलौं। प्रगटैं नानाव्यञ्जन तबलौं॥ एक समय दुर्वासा आये। दुर्योधन दुख देनपठाये १७८ साठिहजार शिष्य सँगलागे। भोजन आइ नृपति सों मांगे॥ कह भूपति प्रभु चलिय निकेता। सुनि मुनिगे मज्जनके हेता १७९ नृपति जाइ द्रौपदि सों भाखा। पञ्चाली सुनि संशय राखा॥ हौंहूं अब भोजन करिलीन्हा। भययुत हरिको सुमिरण कीन्हा १८० सुमिरतही तत्क्षण हरि आये। भूखे हमकहि वचन सुनाये॥ कह द्रौपदि भोजन गृह नाहीं। लैहम देहिं काह तुमकाहीं १८१ भोजन भाजन कृष्ण मँगायो। किनका एक शाकतहँ पायो॥ सो भोजन कीन्हों भगवाना। भये तृप्त त्रैलोक महाना १८२ फूल उदर दुर्वासा भागे। बोलन भीमगये सुखपागे॥ जब कतहूं मुनिगण नहिं पाये। आइ कृष्ण सों सकल सुनाये १८३ दो०। या विधि द्रौ-

पदि की कथा सकल सुमंगल मूल। जियालाल सुख दायिनी दारक भवभव शूल १८४ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचि-
तेचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येविंशतिसौहार्दमाहि
मानिष्ठायांषट्भक्तकथावर्णनोनामभ
क्ताम्बुनिधौद्वाविंशस्तरङ्गः २२ ॥

दो०। शरणागत महिमा अपर आत्मनिवेदन साथ। एक विंशनिष्ठाशुभग दशभक्तन की गाथ १ राम कमल पद क्षत्रहु चमर रेखको नौमि। मन्वन्तर अवतार को करौं दण्डवत सौमि २ चौ०। शरणागत औ आत्मनिवेदन। दोऊहैं एकै कछुभेदन। शरणागत सब मुख्य कहावै। शरणागत सों हरिद्रुत पावै ३ भगवत शरण होइ नरजबहीं। नाशैं कोटि जन्म अघतबहीं ॥ सब विधि रक्षाकरहिं मुरारी। जिमि शिशुको राखै महतारी ४ शरणागत की अमित बड़ाई। जियालाल बरणै किमिगाई ॥ गीता में भगवत इमि गाया। मेरी शरण तरैंममसाया ५ अर्जुन सों भगवत इमिभाखा। तोसों कहौं गुप्त जो राखा ॥ मेरी शरण गहौ सुखदाई। सब पापन सों देहुँछुड़ाई ६ शरण बिभीषण आयो जबहीं। लंका राज्य दीन्ह प्रभु तबहीं ॥ लीन्हीं गज शरणागत जबहीं। गरुड़त्यागि धाये प्रभु तबहीं ७ शरण सुदामा को प्रभु देखी। कीन्हेकांचनमहल्ल बिशेखी ॥ शरण होइ द्रौपदी पुकारी। बसन रूपप्रगटे गिरिधारी ८ शरणागत गोपी जबआई। तब दीन्हे दुकूल यदुराई॥ शरणागत ब्रजलोग पुकारे। तब गोवर्द्धन गिरिकर धारे ९ दो०। या निष्ठाजे भक्तहैं बरणौं तिनके नाम। कथा शुभग भवनिधि तरणि जियालाल सुख धाम १० ॥

अक्रूर की कथा ॥

दो० कहौं कथा अक्रूरकी यदुवंशी रह जोइ। भगवत पद बि-

श्वास हृद सुफलकके सुतसोइ ११ चौ० । जबहिंकंस हरिलेन पठाये । मथुरासों वृन्दाबन आये ॥ बृन्दाबन की भूमि मँझारा। भगवत के पद चिह्न निहारा १२ ध्वजाछत्र बज्रांकुश देखी। कमल चक्र जबमीन बिशेखी॥ खड्ग तुला धनुशंख सुहाये। विविध चिह्न देखतसुख पाये १३ रथते उतरि दण्डवत कीन्हा। तिहि क्षण प्रेम जात नहिंचीन्हा॥ बारहिंबार कहत सुखपाई। आजु देखिहौं कुँवर कन्हाई १४ जे पगपरसितरी ऋषिनारी। जे बन दण्डकपावन कारी॥ जिन पगपरसितजो भयनागा। जिनपद गोपी मन अनुरागा १५ तिन पद चिह्न देखि अक्रूरा। बाढ़ो प्रेमपूर उर पूरा॥ करत दण्डवत ब्रजमें आये। तहाँ कृष्ण के दरशन पाये १६ दो०। धाइ चरण देखतपरे कृष्ण लियोउर लाइ। ताक्षण को जिहि भांतिसुख कापै बरणो जाइ १७ कृष्ण कीन्ह आदर अमित रहे निशा सुख पाइ। कृष्ण बलहिलैप्रात उठि चले सुरथ बैठाइ १८ भई शंक मारग विषे येकोमल शुचि गात। मल्ल प्रबल बलकंस भट तहाँ लिये हम जात १९ प्रभु मनकी गति जानि कै दूरिकरन सन्देह। अद्भुतवपु दरशाइकै प्रगटतभे नवनेह २० मज्जन हित अक्रूरजी गेयमुनाके माहँ। हरि बलरामहिं देखियो जबहिं निमज्जो ताहँ २१ शय्या शेष अनूपमें शोभित शारँग पानि। सुर ऋषिसिधि निधि जोरिकर बिनवत हरि सुख दानि २२ गदापद्म दरचक्रहू जिन सोहत भुज चारि। कौस्तुभ मणि वनमालसह पीताम्बर सुखकारि २३ क्रीट मुकुट कुण्डल मकर भुज अंगद छबि खानि। लखत भये अक्रूर जल लखे बहुरि रथ आनि २४ लखिहरिजल रथबा-रबहु भगवत मायादेखि। दूरिभयो सन्देहमन जानोब्रह्म बिशे-खि २५ एक समय अक्रूरजी गेदेशान्तर काहिं। आति आवर्षण होतभो द्वारावति के माहिं २६ सकल प्रजागे कृष्ण ढिग त्राहि त्राहि जगदीश। रोग अपर दुर्भिक्ष सों आति व्याकुल हमईश २७ परम भागवत देशसों गये निकरि अक्रूर। तातेपरोदुकाल

कीन्हों जब तप मोद बढ़ाइ ॥ ब्रह्मा आये हित बरदान। मांगो भगवत भक्ति सुजान ४१ चौ०। जब रावण सीता हरिलाये। सदल राम बारिधि तट आये॥ मंत्रिन रावण पूँछन लयऊ। कहत बिभीषण तब इमि भयऊ ४२ जो चाहो निज कुल कुशलाई। राक्षस गण अरु लंक भलाई ॥ तौ सीता लै रामहिं दीजै। धरि पद शीश बिनय बहु कीजै ४३ क्षमा करहिंगे प्रभु अपराधा। लंक राज्य पुनि करहु अबाधा ॥ सुनि इमि बचन बिभीषण केरा। कीन्हों क्रोध काल को घेरा ४४ क्रोधित कीन्हों चरण प्रहारा। तबहुँ बिभीषण नीति उचारा ॥ जब अति बिमुख राम सों देखा। ताको दीन्हों त्यागि बिशेखा ४५ रावण तजो बिभीषण जबहीं। आयु हीन श्रीहत भो तबहीं ॥ राम कमल पद चित्त लगाई। चले बिभीषण आनँद पाई ४६ छन्दमनहरण। आजु सोई चरण कमल अवलोकिहौं मैं रमा जिन्हैं झारतस्वकुचन बनाइकै। जिन पद प्रगटी हैं सुरसरि अघहरिगये सुरलोक नृग पगनमनाइकै ॥ गौतम घरनि जिन पगनि परसितरी योगी जन लख उरकंज चित चाइ कै। जियालाल गोपी उर मदन कि ताप हर देखिहौं चरण आजु नयन लगाइ कै ४७ दो०। बिबिधि मनोरथ करत इमि आयो सागर तीर। आवत रावण बंधु यह जानत भे रघुबीर ४८ मंत्रिन सों पूँछत भये कहे बचन सुग्रीव। शत्रु बंधु प्रभु जानिये शंका अहै अतीव ४९ कहो राम कह नीति भलि परहै एतीबात। शरणागत रक्षक सुखद मोकहँ जानिय तात ५० कोटि विप्र अघकृत जुपै विश्व द्रोह अघजाहि। आवै मेरी शरण जो कबहुँ न त्यागौं ताहि ५१ शरणागत जे त्यागहीं हित अनहितहि बिचारि। ते त्रिलोक में अधम नर अघ तिन काहँ निहारि ५२ चौ०। सुनिभगवत के बचन सुहाये। हर्ष सहित कपि कुञ्जर धाये ॥ अंगद जाम्बवान नल नीला। हनूमान सुग्रीव सुशीला ५३ मानसमेत बिभीषण लाये। रघुनन्दन समीप पहुँचाये॥ राम-

हिंलखो बिभीषण आई। त्रिभुवनशोभा देखि लजाई ५४ श्याम-
लगातसरोरुहलोचन। शरणागतदारिददुखमोचन॥ धनुषबाण
कर कमलबिराजै। जटाजूट शिरशोभासाजै ५५ बल्कलबसन
कुनपनिजधारे। आसन कुशसाथरी सँवारे॥ पादपीठपदत्राण
न जिनके। दरशनकीन्ह बिभीषणतिनके ५६ दूरिहिते तिनकी
न्ह प्रणामा। कहिजैशरण सुखदसुखधामा॥ शरणागत बत्सल
भगवाना पाहि पाहि तब आसन आना ५७ शरणागत रक्षक
रघुराई। धाइलीन्ह निजहियेलगाई॥ कुशलप्रश्णपूछा रघुराई।
सागराम्बु पुनिलीन्ह मँगाई ५८ तिलकराज्य लंकाहितकीन्हा।
करन सुमनझरि देवन लीन्हा॥ औरौ कथा बिभीषण केरी।
वर्णन करौं महासुदढेरी ५६ सो०। साहूकार जहाज रुकत भयो
बारिधि बिषे। कहमंत्रिन शिरताज दीजिय कोऊमनुज बलि६०
दीन्ह मनुज बलि ताहँ सागर हित बूड़त बहत। पहुँचो लंका
जाहँ निशिचर लखिगे लंकलै ६१ चौ०। जबहिं बिभीषण
देखतभयऊ। रामाकारतासु मनठयऊ॥ पूजो सिंहासन बैठाई।
बिविधि भाँति कीन्ही पहुनाई ६२ वह मनुष्य निश्चर भयघोरा।
आवन नित्यचहत इहि ओरा॥ दैबहुरत्न बिदा तिनकीन्हा॥
रामनाम लिखि माथेदीन्हा ६३ जासों जाइ अम्बुनिधि पारा॥
यह निजमनमें कीन्हाबिचारा॥ जिनको नाम भवाम्बुधितारा।
लघुवारिधि यहकाहबिचारा ६४ जो सुखनहिं जहाजमें होई। सो
सुख नरपावत भोसोई॥ वह जहाज पुनिमारग पावा। तिनसों
सबवृत्तान्त सुनावा ६५ सुनि सबभे भगवत केदासा। इविधि
बिभीषण चरित प्रकासा॥ जियालाल भगवत जनचरिता।
मुद मंगल आनँद की सरिता ६६॥

गजराज की कथा॥

चौ०। अब गजराज कथा शुभ कहिये। जासों रामचरण
रति लहिये॥ गिरि त्रिकूट सुन्दर इकराजै। क्षीरोदना वृत

छबिसाजै ६७ योजन अयुत सुउच्च विशाला। तेतोही विस्तृत सुखशाला॥ ताऊपर त्रैशृंगरहावैं। रौप्यायस हिरण्यछबि छावैं ६८ धातुरत्न बहु भाँति सुहावैं। लतागुल्म तरु शोभापावैं॥ जल निर्झर निर्घोष सुहावै। पयोर्मीनधौतांघ्रि महावै ६९ जहँ अति मरकताश्म छबिछाई। श्यामल भूमिसमस्त लखाई॥ विद्याधर चारण गंधर्वा। सिद्धाप्सरामहोरगसर्वा ७० क्रीड़ा कन्दरान कर सोई। गीतनाद बहुबिधि तहँ होई॥ गर्जत कन्दर मनहुँ निहारी। सिंहनाद कर पर भय धारी ७१ तापर शोभित बिपिनि सुहावा। सुरोद्यान द्रुम शोभापावा॥ पक्षीबोलत बचन सुहाये। बन पशु संकुल बिबिधि महाये ७२ छन्दगोपाल। सुर रमणी मज्जन आमोद॥ सौरभांबुनिल युतचहुँकोद। पुलिन सोह मणिवालुकयत्र॥ सरसरि शोभ स्वच्छ जलतत्र ७३ छन्द मनहरण। तौनदरी वरुण उद्यान ऋतु मतनाम क्रीड़ा सुर योषितान अतिसुखदान है। पूरणालंकार युत दिव्य शोभा धाम गिरि नित्य पुष्पफल द्रुमशोभ बहुखान है॥ चम्पक अशोक पारिजात औप्रियाल चूतपनसखजूर बीजपूरकाम्रपानहै॥ पाटल क्रमुकनालिकेरहूमधूक साल तालऔ मँदारहू तमाल बटमान है ७४ सरल अरिष्ट प्लक्ष पिचु मन्द कोबिदार किंशुक उदुम्बर सुचन्दन सुहाये हैं। द्राक्ष इक्षु रंभा जम्बू बदरी कपित्थ बिल्व अक्षाभया मलक जँबीर छबिपाये हैं॥ तापैसर सोहत कमल मनमोहत षड़ंघ्रिगंध जोहत शकुंत शब्दभाये हैं। चक्रबाक सारस कारंडव सुहंस जलकुक्कुट को याष्टि आदि पक्षीगणछाये हैं ७५ मत्स्य कच्छपादि जलचारी सत्वधारी भारी बेतसकदम्ब नलनी पतीरवारी हैं। बंजुल कुरव कुन्द कुटज शिरीष कुब्ज इंगुद अशोक स्वर्ण यूथिनागजारी हैं॥ तीरज अनेक वृक्ष ऋतु ऋतु काल काल शोभित बिशाल जाल फल फूल भारीहैं। तहाँ एक काल घिसिगैरिक कपाल संगकरिणिन जालकरि मन गति धारी हैं ७६ बेत्र बेणुकीचक सकंटक बिशाल गुल्म नोचत

वनसपति आयो गजभारी है। जासु गंधमात्र हरि इभव्याघ्र व्याल-मृग गौर कृष्णशरभ चमरि भयकारी है॥ भागे वृकमहिष बराह सल्यऋक्ष खड्ग साला वृक मरकट चेतना बिसारि है। घामताप उबत चुवत मद मत्तगज कलभ करिणि सहभार गिरिधारी है ७७ छन्दरामगीतिका। गिरि कपावत जात अलिकुल भ्रमत मदके लोभ। वृतस्त्र यूथ तृषार्त्तमद सों विकल ईक्षणशोभ॥ सूंघि सरकी अनिल पंकजरेणु लषिततत्र। जातभयो समीप सरवर रहो शोभितयत्र ७८ धाइप्रविश गजेन्द्र देखत पियो शीतल नीर। पुष्करोद्धृतनीर मज्जन कीन हर्षशरीर॥ बहुरिमज्जन को करायो कलभ करिणिन सोइ। शुण्डजल लै ओपियावत गृही मानहुँ कोइ ७९ गहत ओपद दैव प्रेरित नक्र क्रोधित तत्र। बलीइभसम सोउ खैंचत व्यसन गत गजयत्र॥ भये आतुर कलभ करिणी खिचत गजको देखि। पार्ष्णिग्रहगजहू छुड़ावत परन छूट बिशेखि ८० कीन पुनि चिंघार सब मिलि चलो बलकछु नाहिं। युद्धकरत इभेन्द्रनक्रहु परस्परजल माहिं॥ कबहुँ गजइत खैंचिलावत ग्राहकहुँ निजओर। सहस सम्बत युद्ध या विधि होतभो अतिघोर ८१ बिकलभोगजराज कालमहान बीतो यस्य। बढ़त दिन दिन नक्र विक्रम लरतहै सँगतस्य॥ इविधि आपगजेन्द्र संकट लखन छुटन उपाइ। सकछुड़ाइ न ज्ञाति करिणी गजन सकत बचाइ ८२ मकर पाश विधातु आवृत मैं परोइहि बार। परपरायण शरण गहिहौं जौन जगके पार॥ जौन कोऊ ईश राखत मृत्यु सोहै जौन। भीतरक्षा करत भय सो जासु पंचक गौन ८३ दो०। जोप्रपन्न रक्षा करत सदादीन प्रिय यस्य। भय जासों नितभय करत शरण जाहुँगो तस्य ८४ या विधि बुद्धि विचार करि हिये मांझमनधार। पूर्व जन्मसीखोहुतो परम जाप्य उच्चार ८५ नम-

पंचकइति यद्भयादित्यत्रश्रुतिः भीषाऽस्माद्वातःपवते भीषोदेति सूर्यः भीषाऽस्मादग्निश्चेन्द्रश्चमृत्युर्धावतिपंचमइति८३ प्रपन्नशरणागत८४ जाप्यस्तोत्र ८५

स्कार तिहि भगवंतहि जासोंजग चैतन्य । आदि बीज पूरुषपरे ईशध्याइये नान्य ८६ जामें जातें जाहि करि यह जग आपुहि होइ । कारण कारजतें परे रक्षस्वयंभुव सोइ ८७ देवऋषय आदिक सकल जानत नहिं पद यस्य । अपरजानिहै कौनपुनि अहौं शरणमैं तस्य ८८ जाको मंगल पद लखन मुक्त संगमुनि साधु । ब्रह्मचर्य आदिक बने अव्रणचरत अगाधु ८९ नामरूप गुणदोषहू जन्मकर्म नहिंयस्य । जग जन्माप्ययहेत निज माया सो तनतस्य ९० नमस्कारहै तासुहित परेईशहै जौन । ब्रह्मानन्त शक्ति जो रूपा रूपहु तौन ९१ नमः साक्षि परमात्मने आत्म दीपहै जोइ । मनचित वाणी के परे राखहिगो ममसोइ ९२ नैष्कर्म्य अरु सत्वसो पावत परिडत जाहि । मोक्षानँद कैवल्यपति शरणागत मैं ताहि ९३ निर्विशेष साम्याय नम शांतघोर घन ज्ञान । कारण सत्वादिक धरम शरणगही मैं आन ९४ नमस्कार क्षेत्रज्ञ प्रभु सर्व साक्षि सर्वेश । मूलपुरुष मूलप्रकृति चाहौं शरण बिशेश ९५ मोसम शरणागत पशू पाश बिमोचन नाथ । मुक्तरूप करुणा अयन राखिय नावहु माथ ९६ आतम पुत्र गृह नारि धन सक्त चित्तदुष्प्राप । गुणसंग न वर्जित सदा ज्ञानात्मक हैं आप ९७ अर्थ धर्म कामादिक न देत भजन करि जौन । पूर्ण कृपा करि मोहिं प्रभु मोक्षण करिये तौन ९८ एकांती भगवत शरण जासों कछू न चाह । मंगल गुण गावत सदा मग्नानँद निधि माहँ ९९ अक्षर ब्रह्म परेशपर जो अव्यक्त कहाव । पूरण आदि अनंतजो तिहिशरणागत आव १०० ब्रह्मादिक जे देव सब वेद चराचर लोक । जासुकला लघु सो भये सो हरिहै ममशोक १०१ देवासुरनर नारिनहिं नहीं नपुंसक होय । गुण कर्महु नाहिं हेतमम रूप धरैगो सोइ १०२ नाहिं केवल जीवन चहत ग्राह मुक्त इहिदेह । गज शरीर तामस भरो मोक्षण चाहिय एह १०३ सो मुमुक्षु

८ नेवनविषे अव्रण अच्छिद्र ८९ अप्यय नाश ९०।

मैं विश्वसृज विश्व अविश्व सुजौन। विश्वातमाअज ब्रह्मजो प्रणत परमपद तौन १०४ योगपक्क जिनके करम योग हिये छबिदेत। ऐसे योगी जिन लखत नमस्कार तिन हेत १०५ या विधि गज अस्तुति सुनत ब्रह्मादिक सुरजोइ। विविधि लिंग अभिमानसों जात भये नहिं सोइ १०६ परि पूर्णत्वबिचारिकै प्रगट भये हरि तत्र। चक्रायुध शीघ्रगगरुड़ स्तूयमान गज यत्र १०७ प्रेम सहित अस्तुति करत ग्राह ग्रहित गज जौन। हरि आवत बिक्रम सहित देखो द्योमें तौन १०८ साम्बुज शुण्ड उठाइकै कहो कष्टसों बैन। हे नारायण अखिलगुरु भगवन्नम सुख दैन १०९ पीड़ित इभ लखि बीश तजि धाये सुर शिर ताज। अरिसों काटो नक्रमुख राखि लियो गजराज ११० चौ०। तहँ सुर ऋषय सिद्धगंधर्वा। ब्रह्मेशान पुरो गम सर्वा॥ फूलन की वर्षा बर्षाये। भगवत की अस्तुति शुभ गाये १११ सुन्दर दिव्य दुन्दुभी बाजे। नृत्य गानगंधर्वन साजे॥ जबहीं ग्राह देहतजि दयऊ। तत्क्षण दिव्य रूप तिहि भयऊ ११२ सोहूहूगंधर्व सुहायो। देवल शाप ग्राह तन पायो॥ कीन्ह प्रदक्षिण हरिहि प्रणामा। किल्बिप मुक्त गयो निजधामा ११३ बहुरि गजेन्द्र कृपा भगवाना। तत्क्षण भयो मुक्त अज्ञाना॥ पीत बास भगवत बपु धारी। सायुधभे सोहत भुज चारी ११४ पांड्यद्राविण सत्तम महिपाला। नाम सुइन्द्रद्युम्न विशाला॥ भगवत आराधन इकवारा। मलयाचल आश्रम सुख सारा ११५ करिमज्जन मौनब्रत कारी। तापसवेषजटाशिरधारी॥ ताही क्षण अगस्ति तहँ आये। शिष्यन सह अति परमसुहाये ११६ देखि नृपति नहिं कीन्ह प्रणामा। लखि क्रोधित भे मुनि तपधामा॥ स्तब्ध बुद्धि गजबत नृपएहा। ताते अवशि लहै गज देहा ११७ तिरस्कार बिप्रन को करई।

स्तूयमान देवता जिनकी स्तुति कर रहे हैं १०७॥ अरि चक्र ११०॥

ताते इभ तमोंध तन धरई ॥ दै इमि शाप गये ऋषि ईशा। इन्द्रद्युम्न धरी निज शीशा ११८ इमि कौंजरी योनि नृपपायो। परनहिं भगवत सुरति भुलायो॥ पूरुब हरिपूजा परभावा॥ गजतनहू सुमिरन बनि आवा ११६ जो यहकथा सुनै अरु गावै। सुख संपति नाना विधि पावै ॥ स्वर्ग्य यशस्य कलुष कलि हारी। सकल अमंगल वृक्ष कुठारी १२० दो०। प्रातहि उठि शुचि पढ़हिं जे दुःस्वप्नादि नशाहिं। पुनियाबिधि बोलत भये भगवत गजपति पाहिं १२१ छन्द घनाक्षरी। तुमहिं हमहिं सर बन गिरिकन्दराहु बेणु गुल्म कीचक सुवेत्र सुरपाद पान। शृंग एलखात जौन ब्रह्म शिव ममधाम क्षीर निधि प्रिय धाम श्वेत द्वीप भाशमान॥ कौस्तुभ श्रीवत्स वनमाल गदाकौमोद-की पांचजन्य चक्र सुपरण पतगेश जान। शेष रमानारद प्रह्लाद शिव अज मत्स्य कूर्म क्रोड़ि आदि अवतारममसु-खदान १२२ छन्द मनहरण। अनल सुसोम सूर्य प्रणव अव्य-क्त सत्य धेनु बिप्रधर्म कर्म पुण्य मम जानिये। कश्यप सुसोम धर्म पतनीजो दक्षकन्या सरस्वती गंगा नंदा कालिन्दी बखानि-ये॥ ऐरावत नद ध्रुव ब्रह्मऋषि सप्तपुण्य रूपमनु पुत्रहुमहोज-सप्रमानिये। उठि प्रातकाल शुचिएकचित्त रूपमम एताजियाला-ल सो सुमिरिअघ भानिये १२३ दो०। सुनिय अग्र ममध्याइ है इननामन सों जौन। प्राणात्यय में पाइहै निर्मल मति को तौन १२४ याबिधि कहि गजराज सों शंख बजायो अत्र देवन हर्ष बढ़ाइकै चढ़े गरुड़पर तत्र १२५ इमि गजेन्द्र मोक्षण कहो पुण्यरूप सबकाल। जियालाल कहि श्रवण करि नाशत पाप कराल १२६॥

ध्रुवजीकी कथा॥

चौ०। ब्रह्मपुत्र स्वायंभुवनामा। शतरूपा पति आनँदधामा॥ द्वै सुत तिनके भये ललामा। पादोत्तान प्रियव्रत नामा १२७ नृप उत्तानपाद द्वैनारी। सुरुचि सुनीति नामसुखकारी॥

सुरुचि अमित प्रियपति को जैसी । ध्रुव सुत जासु न सो
प्रियतैसी १२८ दो० । एक समय नृप सुरुचि सुत लालन
करतरहयत्र । उत्तम नामहिं देखिकै जातभये ध्रुवतत्र १२९
नृपति कियो आदर नहीं सुरुचि सेर्ष्य कहएह। नृप आसनकि-
मि बैठिहौ धरन उदरममदेह १३० जनमलियो तियऔरके तुम
बालकनहिं जान। ताते दुर्लभ अर्थमें कियोमनोरथ आन १३१
तपकरि पुरुषाराध्यकै तासुअनुग्रहपाइ। जोनृप आसन चाहऊ
जन्म लेहुममआइ १३२ मातु सवतिके बक्रवच बिद्ध हिये सम
बान। श्वासलेत क्रोधित मनहुँ दण्डहतो अहिजान १३३ लख-
तनबोलत रुदन करि चलेत्यागि ध्रुवतात। श्वासलेत फरकत
अधर ओष्ठगये डिगमात १३४ गोद लियोरोवतनिरखि सुनीपौ
रमुखबात । मातु सवति के बचन सुनि भयेव्याथित जिमिर्ग-
त १३५ धीरज तजि रोवनलगी शोकदावाजिमिबेलि। बचनसव
तिके सुमिरिकै जिमि वनमृगी अकेलि १३६ बृजिनपारपायो
नहीं दीर्घश्वास लैयत्र। तबसुत सो बोलत भई यहबिचारि मन
तत्र १३७ हेसुत दीजिय दोषकिहि दोषन काहूमान। जोपरको
दुखदेतहै दुःखलहतसो आन १३८ सत्यसुरुचि अभिहित सुवन
मेरेजन्मजुलीन्ह। भार्या कहत लजात नृप भाग्य हीन ममकी
न्ह १३९ भगवत पद आराधना करियपुत्रसति नेह। सत्य बच
न तवमातुके चह आसन जो एह १४० चौ०। जिनपदकमल
पूजि सुखधामा। पारमेष्ठ्यलह ब्रह्मललामा॥ जिनपद कमल
एकमति धारे। भगवान्मनु पितुपिता तिहारे १४१ बहु दक्षिण
अमित मषकयऊ। पायो जोकोऊ नहिं लयऊ॥ भौमादिव्य अ
पवर्ग्यहु जेते। पावत भये सकल सुखनेते १४२ ताकी ज
शरण सुतगहिये। वत्सल भृत्यनाम जिहि कहिये॥ मृग्य
मुमुक्षु कंज पदवाटा। भाव अनन्यधर्म निजठाटा १४३ मनअ
रकरि अचल बनाई। भजिये पुरुष आनँदपाई॥ तातेअन्यनदे

सोई। जोदुख दूरिकरै सुतकोई १४४ दो०। सुनि माता केबचन इमि अर्थागम सुख धाम। आत्म आत्ममें रोकिकै चले त्यागि पितुग्राम१४५नारदयह जानतभये मनकी गति पहिंचानि। अघ नाशक करशीशधरि विस्मित बोलेआनि१४६अहोतेज क्षत्रियन कोमानकभंगसहैन। बालक यद्यपि उरधरो असन्मातुकेबैन१४७ चौ०। नारद कहमानहुँ अपमाना। नहिं पुत्रक अबहीं तव जाना॥क्रीड़ासक्त कुमारन देखा। ताते तोसों कहतबिशेखा१४८यद्यपि होइ मान अपमाना। तबहूं असंतोष नहिं आना॥ केवल मोह जानिये सोई। प्रगट सकल निज कर्म न होई १४९ तितनेहीम करिय संतोषा। दैवेश्वर गति काहुन दोषा॥ जासु प्रसाद चहत पद जोई। दुराराध्य पुरुष है सोई १५० माता जो मारग दरशायो। सो मारग मुनि जन नहिं पायो॥ ढूंढ़त तीव्र समाधि लगाई। बीते अमित जन्म इमि भाई १५१ ताते घूमि भवन निज जैये। वृद्धावस्था में मन लैये॥ जा प्रारब्ध माहँ जिहि भांती। सुख दुख भोग करत दिन राती १५२ तामहँ क्रर सन्तोषहि जोई। तमके परेजात है सोई॥ पुण्य चीण सुखभोगे होई। दुख भोगे पापक्षय सोई १५३ या विधि सुनि नारद के बैना। बोलत भे तब ध्रुवगुण ऐना॥ सुरुचि बचन शर बिधे हमारे। ताते रुकत न बचन तिहारे १५४ त्रिभुवन परे लोक है जोई। जीतन चहत सत्य हम सोई॥ पुरुषा गये नहैं मम जहँवां। औरौ कोऊ गयो न तहँवां १५५ सो मोसों उत्तम मग कहिये। ब्रह्मपुत्र जगहित तुम रहिये॥ बीण बजावत घूमत जोई। जग हितार्थ अर्कवत सोई १५६ नारद सुनि ध्रुव मुख इमि बानी। बोलत भये दया उर आनी॥ माता जो मारग दरशायो। सोई मंगल दायक गायो १५७ ताते वासुदेव पद ध्याइय। काम धर्म मोक्षार्थहु पाइय॥ वासुदेव पद सेवा जोई। जोइच्छादायकहै सोई १५८ ताते तात जाहु सुख पाई। यमुना तट हरिबसत सदाई॥ पुण्य रूप मधुवन जहँ गायो। करि

मज्जन तहँ नित्य सुहायो १५९ नित्य कर्म करिकै सुख दाई। वैठिय आसन शुभग बनाई॥ त्रिवृता प्राणायाम बिचारी। प्राणेन्द्रिय मन मल हरिडारी १६० धीरेधीरेमलहि बिहाई। गुरु न गुरू ध्याइय मन लाई॥ अभिमुख ईक्षण बदन प्रकाशी। शुभ नासा सुभ्रुव सुख राशी १६१ सुर सुन्दर कपोल छबि छाये। अरुणोष्ठेक्षण अधर सुहाये॥ रमणीयांग तरुण तन शोभा। तो पद श्याम निरखिमन लोभा १६२ करुणार्णव शरणागत दानी। श्रीवत्सांक चिह्न छबि खानी॥ भुजाचारि जन रक्षक गाये। गदा पद्म दर चक्र सुहाये १६३ कीट मुकुट वनमाल सुहाई। कुण्डल कौस्तुभ मणि सुखदाई॥ वस्त्रपीत कौशेय सुहाये। कांचन नूपुरअति छबि छाये १६४ क्षुद्रघंटिका शब्द सुहाई। जियालाल अति आनँद दाई॥ पदनख मणि समान छबि राशी। उर बारिज महँ प्रभा प्रकाशी १६५ या बिधि बपुउरलाइ बिशेखै। किंचिद्धास सहित मुख देखै॥ देखै रूपटरन नहिं पावै। या बिधि एक चित्त मनलावै १६६ दो०। परमगुप्त अब मंत्र यह तोसों करत बखान। जाहि सात दिन पाठकरि खेचरलखतपुमान १६७ चौ०। यह कहि नारद मंत्र बतायो। द्वादश अक्षर जो सुख छायो॥ यही मंत्र सों पूजन कीजै। नाना वस्तु जौन लखि लीजै १६८ शुचि जल माल्य वन्य फल मूला। अंकुर चैल तुलसि हरशूला॥ प्रतिमा पापाणादिक कीजै। क्षित्यंव्वादि माहँ वापूजै १६९ रोकि चित्त मुनि शांत रहावै। वन्य भोजि जित वाग सुहावै॥ माया रूप धरे भगवाना। तिनको करैं हिये निज ध्याना १७० दो०। मनसा वाचा कर्मणा भगवत पूजै जोइ। मान त्यागि युत भक्ति जन धर्मादिक लहसोइ १७१ इमि सुनि नारद के वचन परिक्रमा ध्रुव कीन। करि प्रणाम मधुवन गये हरिचरणन चितदीन १७२ चौ०। जवहीं ध्रुव मधुवनको गयऊ॥ अंतःपुरहि जात मुनि भयऊ॥ नृपति कीन्ह अति आसस्वासा। तव ना-

रद यह बचन प्रकासा १७३ राजन तब मुख रहा सुखाई।
शोचतकाह कहिय समुझाई॥ अर्थ धर्म कामादिक माहीं। सो
तौ नाश भयो कछु नाहीं १७४ सुनि नारद मुनिके येबैना।
बोलतभये नृपति गुण ऐना॥ दया हीन मैं स्त्रैण महाना। मो
सम अपर कौन अज्ञाना १७५ पांच बर्षकर बालक जोई।
मातासह निकार मैं सोई॥ अपि अनाथ ब्रह्मवन माहीं।
काहवृका ताको नहिंखाहीं १७६ परिम्लान मुख पंकज जोई।
क्षुधित श्रांत सोवै भुवि सोई॥ बैठन अंक प्रेम युत आयो। ता-
को मैं नहिं आदर लायो १७७ अधम कौन मुनि मोहिंसमाना।
स्त्रीजित दुष्टात्मा अज्ञाना॥ सुनि नारद किय बचन प्रकासू।
नृपति शोच करिये जनि तासू १७८ देव गुप्त निज पुत्रहि
जानौ। ताको अति प्रभाव उर आनौ॥ जाको सुयश जगत
में होई। दुष्कर कर्म करैगो सोई १७९ तेरो सुयश करत वि-
स्तारा। लघु दिन में आवैगो बारा॥ नारद बचन सुनत या
भाँती। पुत्रहि शोच नृपति दिन राती १८० करि मज्जनयमुना
जल माहीं। ध्रुव ब्रत करत भये निशि ताहीं॥ कीन्ह चित्त
एकाग्रबनाई। भगवत परिचर्य्या मन लाई १८१ बदर कपित्थ
अशन दिन तीजे। इमि करि वृत्ति मास हरि ईजे॥ द्वितिय
मास जबहीं चलि आयो। तृण पर्णादि छठे दिन खायो १८२
तृतिय मास जब आवत जाना। नवमें नवमें दिन जल पाना॥
करि अर्चन भगवत को कीन्हों। अचल समाधि लगाइसु
दीन्हों १८३ चौथे मास बारहें दीना। वाय्वाहार श्वास जित
कीन्हा॥ पंचम मास जबहिं चलि आयो। जीती श्वास समा-
धि लगायो १८४ ध्यावत ब्रह्म एक पद जोई। ठाढ़े अचल
थाणु सम सोई॥ मनहिं खैंचि एकाग्र लयाई। भगवत रूप
लखत सुखदाई १८५ दो०। महदादिक आधारजो पूरुष ब्रह्म
प्रधान। ताको धारण कीन्ह ध्रुव लोकत्रय भय मान १८६ एक

मातासह अनादर सो १७६॥

चरण ठढ़ो भयो पार्थिव नन्दन यत्र । पदाङ्गुष्ठ पीड़ित मही नमित भई सो तत्र १८७ चौ० । चढ़त तरीजैसे गज कोई। पद पद में कंपित सो होई॥ बिष्णु केर विश्वात्मक ध्याना। रोकि प्राण मग आत्मनि आना १८८ श्वास आपनी जब ध्रुव रोका। निरुच्छ्वास पीड़ित भे लोका॥ लोक पाल सह व्याकुल भयऊ । शरणागत भगवत के गयऊ १८९ नहिं कारण जानिय भगवाना। प्राण रोध चर अचर महाना॥ मोचण करिय बृजिन सो नाथा। बार बार नाइय पद माथा १९० कर तप बाल दुरत्यय सोई। मयि संगत आत्मा है जोई॥ तासों भय कीजिय कछुनाहीं। जाइ निवर्त्त करब हम ताहीं १९१ सुनि भय त्यागि देव सब गयऊ। मधुबन बहुरि जात हरि भयऊ॥ देखो ध्रुवहि समाधि लगाये। रूप अनूप कमल चित लाये १९२ अन्तर्द्धान भयो बपु सोई। खोले दृग ध्रुव व्याकुल होई॥ देखो जिमि उर रूप बिशेखा। ताही भाँति अग्र पुनि देखा १९३ दण्डाकार परो भूमाहीं । प्रेम सहित लख भगवत काहीं॥ करि न सकत अस्तुति चह कीन्हा । हरि मुख कर जोरे चित दीन्हा १९४ ता मन गति भगवत जब जाना। शंख ब्रह्ममयता मुख आना॥ जबहरि मुखयें शंख लगायो। अस्तुति करन तबहिं ध्रुव लायो १९५ जो मम अंतर कीन्ह प्रवेशा । शंख छुवाइ कीन्ह उपदेशा ॥ कर चेतन इन्द्रियन सदाहीं। नमस्कार तिहि भगवत काहीं १९६ छन्द मनहरण। एक तुम प्रगट करत महदादिकन आत्म शक्ति माया गुणमयीजो विशेखिये। विरचि प्रवेश करि असत गुणन मधि नाना रूपदारुषु विभावसु सोलेखिये ॥ तुमहींसों ज्ञानपाइ लखो है विरंचि विश्व सोवतसो जागि कोई जाविधिसो देखिये। यांचत तुमहिं पूजि मनुज कुणप भोग छलित तुमाया तव निरय जो पेखिये १९७ ध्यान पादपद्मकरि श्रवण सुयश तवचहत स्वरग

अर्थ विभावसु अग्नि॥ कुणपशरीर॥ निरयनरक १९७

सुख असत सुगातहै। क्षीण पुण्य कालित चलित निज आसन सो अंतकासि लुलित बिमानहू सो पात है ॥ भक्ति तव बहत जे संग होइ तिन मम महतन आशय अमल दरशातहै। रावरे गुणानुबाद अमृत सुपान मत्त तरिय भवाब्धि उरु व्यसन लखातहै १९८ भूलिजात देह गेह सुहृद कलत्र पुत्र चरण कमल गंध लुब्ध जनसंगहै। महदादि कारण सुजासुस्थूल रूप जौन जानिये जो परिचित देवनादि अंगहै॥ जानत नईश्वर तिहारो रूप ब्रह्मरूप यत्र मन बुद्धिहू नजात बाणी भंग है। सोई प्रभु भक्त हेत धरम गलानि देखि धारत बिबिध तनुश्वेत पीतरंग है १९९ दो०। कल्प समय जग जठर धरि शेष अंककर सैन। नाभि पद्म सों अज भये बिनओं सब गुण ऐन २०० आदि पुरुष कूटस्थ प्रभु त्रिगुणाधीश सुरेश। नित्य मुक्त परिशुद्ध प्रभु नावों माथ रमेश २०१ याबिधि सुनि ध्रुवकी बिनय हँसि बोले भगवान। तेरेउरमें जौनहै नृप बालक मैं जान २०२ करिआयो संकल्प जो देहौं सुब्रत सोइ। अन्य अधिष्ठित जो नहीं अति दुरापथल जोइ २०३ आहित योतिष चक्रहैं ग्रह तारादिकजौन। स्थिर मेढीवत शुभग हैकल्पबासिपर तौन २०४ धर्म अग्नि कश्यप उशन बनबासी मुनिजौन। भ्रमत सतारक यत्रहैं करत प्रदक्षिण तौन २०५ अब्द सहस छत्तिस करिय भूमण्डल प्रतिपाल। पिता दत्त बनजाइगो तप कारण भूपाल २०६ उत्तम तेरो बंधुजो जैहै मृगयाकाहँ।सुरुचि रुदनकरि जाइहै सुनि गतासु सुतताहँ २०७ सोऊ दावानल जरिहि या बिधि कीजौ राज। यज्ञन सों मेरो यजन कीजौ सहित समाज २०८ सत्याशिषइत

अंतक काल लुलित खण्डित १९८ महदादि महत्तत्त्वादि परिचित व्याप्तना+नर १९९ अन्य अधिष्ठित जो नहीं अर्थ जहां कोई नहीं प्राप्तभयो दुराप दुष्प्राप २०३ आहित अर्थात् समर्पित मेढीअर्थ धान्य मर्दनार्थ भ्राम्यमाण पशूनांबंधनस्तंभः स्थिर कहिये तीनों लोक नाश भये परभी जिसका नाश नहीं २०४ ॥

भोगकरि अंत सुमिरि मोकाहँ। लोक नमस्कृत धाम मम बहुरि जाइगो ताहँ २०९ ऊरध सो थल ऋषिन के प्राप्त होउगेयत्र। कबहूं पात न होइगो सदारहौ थिरतत्र २१० इत्यर्चित भगवान तहँ दैबरसहित उछाह। जातभये निजधामको देखत सुत नरनाह २११ पूर्ण मनोरथ होतभे हरिपदसेवातौन। अतिप्रसन्न मननहिं भयो कीन्हों निजपुर गौन २१२ अति प्रसन्न मननहिं भयो याको कहा कारण है. यह विदुरजी महाराज ने मैत्रेयजी महाराजसों पूंछ्यो है श्रीमद्भागवत में कि दुर्लभ जो परमपद है कामनायुक्तनको सोई भगवत के चरणारविन्दों की सेवा सो पाइ एकहीजन्म मेंसो क्योंप्रसन्न न भये तब मैत्रेयजी ने कह्यो कि जाकारण सों मनध्रुवजीको अत्यन्तप्रसन्न नहींहोतभयो सो कहूंहूं जासमय ध्रुवजी महाराज सपत्नीमाता के बाण रूपी बचनों से वेधित होकर भगवत शरण गही फिरभगवतको अत्यन्त प्रसन्नकर मुक्ति पतिसों मुक्ति की इच्छानकरी ताहीसों मनप्रसन्न भयो पीछेमन में अत्यन्त ताप प्राप्त भई यथाह ध्रुवः (श्लोकाः)समाधिनानैकभवेनयत्पदंविदुः सनन्दादयऊर्ध्वरेतसः ॥ मासैरहंषड्भिरमुष्यपादयोश्छायामुपेत्यायगतःपृथङ्मतिः१ अहोबतममानात्म्यंमंदभाग्यस्यपश्यत॥ भवच्छिदःपादमूलंगत्वायाचेयदंतवत् २ मतिर्विदूषितादेवैःपतद्भिरसहिश्नुभिः ॥ योनारदवचस्तथ्यंनाग्राहिपमसत्तमः ३ दैवीं मायामुपाश्रित्यप्रसुप्तइवाभिन्नदृक् ॥ तप्येद्वितीयेप्यसतिभ्रातृभ्रातृव्यहृद्रुजा ४ मयैतत्प्रार्थितंव्यर्थंचिकित्सेवगतायुषि ॥ प्रसाद्य जगदात्मानंतपसादुष्प्रसादनम्५ भवच्छिदमयाचेहंभवंभाग्यविवर्जितः॥ स्वाराज्यंयच्छतोमौढ्यान्मानोमेभिक्षितोवत ६ ईश्वरात्क्षीणपुण्येनफलीकारानिवाधनः २१२ दो०। आवतध्रुव इमि वचन सुनि मिलैमरो जिमिकोइ। बूडतपावैथाहजिमि नृपातिलहोसुखसोइ २१३ मैंअभद्र के पुत्रकहँ श्रद्धानृपति न कीन। सुमिरि बहुरि नारद बचन हारवात हरदीन २१४ रथसदश्व आ-

रूह्य पुनि कार्त्तस्वरमय जौन। ब्राह्मणकुल बृद्धन सहित मंत्रि बंधुयुत तौन २१५ नादशंख दुन्दुभि सहित ब्रह्मघोष युतराउ। पुरबाहर तूरणगये पुत्रेक्षण के चाउ २१६ रानी सुरुचि सुनीतिहूं उत्तम युतपुनि तौन। रुक्म सजी शिविकान चढ़ि तत्क्षण कीन्हो गौन २१७ आवत उपबन निकट लखि रथतेकूदि महीप। प्रेम बिकल तूरण गहो लियोलाइ उरनृप २१८ भेंटे भुजभरि अंगजहि उत्कंठाअति तस्य। अच्युतांघ्रि अस्पर्श सों नशेपाप वपुयस्य २१९ शीशसूंघि चख वारिसों दीन्ही स्नान कराइ। पूर्ण मनोरथ होतभे पुनिगह सुतापितु पाइ २२० तिनसों आशिष पाइकै मातुन कीन्ह प्रणाम। बिप्रन कुल बृद्धन बहुरि कियप्रणाम सुखधाम २२१ दीन्हों सुरुचि अशीश लखि नमित लियो उरलाइ। हरिप्रसन्न हैं जासुपर ताके जगत सहाइ २२२ उत्तमध्रुव पुनिपुनि मिले आनँद अधिक बढ़ाइ। प्रेम बिकल दोनों भये धारा अश्रु बहाइ २२३ प्राणाधिक सुतपाइकै जननी तासु सुनीति। जही आधि उरलाइ कै बढ़ी हिये अतिप्रीति २२४ बक्षोजनसों पय बहो नेत्रनसों जलधार। राज्यहेत अभिषेक यह मनहुँ लहो सुकुमार २२५ छन्द भुजंगप्रयात्। कहैं लोगरानी महाधन्यतूहै। गयो दुःख पायोसु आनन्द जूहै॥ लखो बालजैसे मरो कोइपावै। हरैगो प्रजादुःख शत्रून्नशावै २२६ तुपूज्यो भलेचित्त लारावणारी। घरै जीति आयो महामृत्यु भारी॥ लखो भूपआनन्दसों पुत्रदोई। चढ़ा हस्तिनीपै चले नग्रसोई २२७ यशै उच्चहैं सूतबन्दी महाना। जहाँ जाइँबाढैतहाँ नन्दनाना॥ तहाँजाइ देखी महानग्रशोभा। बिलोके जिसै चित्तकाको न लोभा २२८ सुगंधीनि सींचेसुमार ग्गराजैं। मणीनै सुबन्दीनि बाराहुसाजैं॥ सबृन्दै सुरंभान खंभा सुहावैं। जियालाल वेदध्वनी विप्रगावैं २२९ सुपूगीफलौं+बाल वृक्षों किशोभा। लसैंअम्रके पत्रहू औरकोभा॥ सुवासै सुफूलान

अर्थ सबृन्द फलमंजरीयुक्त २२६ + बालवृक्ष कहिये लघुवृक्ष॥

की मालशोभैं । लसैंदामभुक्तानकी चित्तलोभैं २३० सबैद्वार
में कुंभ राजैं सदीपा । सजेधान्य लाजाहुलाजैं समीपा॥ पुरी
सा अलंकार शोभा न साजै। मनो नारि सौभागिनी रूपराजै
२३१ दो० । मृष्ट रथ्यचत्वर शुभग चन्दन चरचितयत्र ।
सोहत बलितण्डुल सुफल लखत जात ध्रुवतत्र २३२ दधि
दूर्बा सिद्धार्थयव पुष्प फलाम्बु समेत । चढ़ी अटारिन नारि
गण बरषहिं ध्रुवअतिहेत २३३ मधुरगीत याविधि सुनत गये
भवन पितु काहँ। मणिसमूह शोभितजहाँ मणिदीपावलि जाहँ
२३४ शुभग सेज पयफेनवत रुक्म परिच्छद यत्र। दांतासन
बहुमोलके रुक्म उपस्कर तत्र २३५ गयेतहाँ दिबिदेववत लाखि
त पितुकियबास। ललना रत्न समेत जहँ सुन्दर करत प्रकास
२३६ चौ०।जहाँ बिचित्र रम्य उद्याना। कूजद्विहँग भ्रमरकरगा-
ना॥ बापी शुभजहँ माणि सोपाना । फूले कुमुदोत्पल बिधि
नाना। २३७ कारण्डव अरुहंस सुहाये । चक्रबाक सारस छबि
छाये॥ भूपति तासुतकेर प्रभावा। लखिसुनिकै उरविस्मय आवा
२३८यौवन प्राप्त पुत्र निजदेखी । प्रजा जननको संमतलेखी ॥
प्रजानुरक्त बहुरि नृपपेखी । भूपति कीन्हों ध्रुवहि बिशेखी २३९
आपुहि गुनिप्रवयस भूपाला । बनगे चरण शरण गोपाला॥
जो शिशुमार प्रजापति कन्या। भ्रमी नाम उपयेमे धन्या २४०
वत्सर कल्प भये सुत दोई । कन्या वायु इलापुनि जोई ॥ उत्क
ल पुत्र जन्यो नरनाहा। मृगयागो उत्तम बिन व्याहा २४१
पुण्य जनन मारो गिरि माहीं। माता गई मरी सो ताहीं ॥
ध्रुवने सुनो भातृ वध जबहीं। चले कोपि शुच अर्पित तबहीं २४२

दाम कहिये माला २३० लाजा कहिये लाई २३१ अर्थ सिद्धार्थ श्वेतसर्प
प २३३ अर्थ रुक्मपरिच्छद कहिये सोनेकी सामग्री दांतासन कहिये हाथी
दांतके पर्य्यंक रुक्म उपस्कर कहिये स्वर्ण खचित २३५ दिविकहिये स्वर्ग ल
लना कहिये स्त्री २३६ प्रवयस कहिये वृद्ध २४० अर्थ उपयेमे कहिये विवाह
करतभये २४० शुच अर्पित कहिये शोचयुक्त २४२

चढ़ जैत्र स्यन्दनहय जोई। पहुँचे पुण्य जनालय सोई॥ गये
उदीची दिशि कहँ राजा। रुद्रानुचर सेविता आजा २४३
हिमवत द्रोणी लखी सुहाई। गुह्यकपूरित पुरी लखाई॥ शंख
बजायो तबहिं नृपाला। दिशि अम्बर पूरेधुनि जाला २४४
उपदेविन अतिशय भयपावा। सुनिदरवर खघोरमहावा॥ नि-
कसे यक्ष निजायुध धारी। बली सुनत शंखध्वनि भारी २४५
आवत लखो तिनहिं ध्रुव जबहीं। तीनि तीनिशर मारेसबहीं॥
तब देवन किय क्रोध अपारा। एकहि बार तजी शरधारा २४६
बहुरि परिघ निस्त्रिंशप्रहारा। प्रास परश्वध शूलहु मारा॥ शक्ति
भुशुंडि शिष्टिधरिबीरा। वर्षत भये कोपिरणधीरा २४७ वत्सदंत
नाराच अपारा। छूटे बहु बिपाठ खर धारा॥ लै शायक बहुपा-
यक धाये। स्यन्दनघेरिमारु रटलाये २४८ तेरह अयुत पुण्य
जन जोई। शस्त्रन सों छायो रथ सोई॥ ता क्षण ध्रुव तहँ
दृष्टि नआवे। गिरिहि यथा आसार छपावे २४९ हाहाकार
भयो तिहिकाला। बोले सिद्ध बचनइमिहाला॥ मानव सूर्य्य
हतो यह जोई। पुण्य जनार्णव बूड़ोसोई २५० गर्जत यातुधान
मुदसाने। आपनि बिजय जानि हरषाने॥ निकसो स्यन्दन
ताही बारा। भास्करयथा टारिनीहारा २५१ करतदिव्य धनुको
टंकोरा। द्विषत खेदकारकभो शोरा॥ काटेअस्त्र ओघ शरधारा।
घनानीक जिमि बायु प्रचारा २५२ काटि वर्म भेदे शरदेहा।
असनि गिरीन यथाकर वेहा॥ मारत भल्ल ताकि ध्रुव जबहीं।
कुण्डल सहित कटत शिर तबहीं २५३ तालआभ ऊरू कटिगि-
रहीं। सबलय भुजखण्डित भूपरहीं॥ मुकुट हार उष्णीक समेता।
मुक्ता मणि छाये रणखेता २५४ हता वशिष्ठरहे रणजोई। ध्रुव

जैत्र कहिये जय हेत २४३ द्रोणी नाम कन्दरा २४४ उपदेवी नामयक्षोंकीस्त्री २४५ नाराच कहिये समस्त लौहमय तिसीकी आकृत वत्सदन्तभीहै यथाह कार्ष्णायसोऽथ नाराचः वत्सदंतस्तदाकृतिः॥ विपाठ कहिये स्थूल दण्डवाण यथा विपाठः स्थूलदण्डः स्यादितिकल्पद्रुः सायक कहिये खड्ग यथाशरे खड्गेच सायकं इत्यमरः २४८॥

सायकन रक्षगण सोई ॥ घायल भागे अति भय पाई। जिमि करिगण क्रीड़ित हरिजाई २५५ तदनन्तर ध्रुव लखो निहारी। पवन प्रचण्ड बरष रजभारी ॥ परो सुनाइ जलधि रव तहँवां। छाये व्योम पूर्ण घन जहवाँ २५६ छन्द मन हंस ॥ तहँ तड़ित होत प्रकाश अतिशय भयकरं। बिरमूत्र मेदसपूय बर्षत नर बरं ॥ पुनि गिरत अभ्रकबंध नभसों आइ कै। गिरिगिरत नभ सों दिशिन अति भयदाइकै २५७ दो०। गदा परिघ निस्त्रिशहू मूसल अस्म प्रहार। अहि पविसम निज श्वास सों बमत अनल की धार २५८ सिंह व्याघ्र धावत तहाँ करी मत्त बहु यूथ। जलधि भूमि बोरत चले भीमोर्मीन बरूथ २५९ अति भीषण कल्पांतवत घोरशब्दहुव तत्र। शूरन त्रासन योग इमि होत भये बहु यत्र २६० असुर आसुरी मायया प्रगटतिग्मगति कीन। ध्रुव परलखि माया प्रबल मुनिन कहन इमि लीन २६१ नाम धेय निज स्वामि को लीजिय बाणनरेश। दुस्तर मृत्युहि तरतजग जोजपि नामरमेश २६२ सुनत ऋषिन के वचन इमि कीन्हों ध्रुवसंधान। जो नारायणबाणहै जासुप्रभाव महान२६३ चौ०। लिय नारायण शरध्रुव जबहीं। माया नशी निमिषमहँ तबहीं ॥ कोटिन प्रगटे बाण महाई। कीन्ह प्रवेश शत्रुदल जाई २६४ हन्यमान तीक्ष्णशर घोरा। पुण्यजनन किय क्रोधअथोरा ॥ अस्त्र शस्त्र कर धरिसव धाये। सुपर्णपरमानहुँ अहिआये २६५आवत देखि बाण ध्रुवछांटे। शिर उरु बाहु भटनके काटे॥ मण्डलार्क दीन्हों पहुँचाई। जाहि भेदि योगी जन जाई २६६ हन्यमान गुह्यकन विशेखी। सपि आइ मनु बोले देखी ॥ अब जानि वत्स क्रोध उर करिये। तमोद्वार अस मानस धरिये २६७ निरापराध पुण्यजन मारे। यह नहिं कुल के उचित हमारे ॥ निन्दित कर्म तात यह होई। पुण्य जनन मारो तुम जोई २६८ दो०। इक अपराध प्रसंग सों वधे बहुत तुम तात। हरि भक्तन साधन यह मारग नाहिं लखात २६९ हरिको भूतावास गुनि

सब प्राणिन गुणि आप। बिष्णु परम पद पाइयो दुश राध्य करि जाप २७० सो तुम हरिको ध्यान करि भगवत भक्त कहाइ। निन्दित कीन्हों कर्मकिमि सतब्रत शिक्षा पाइ २७१ करुणा मैत्रितितिक्षया सबजन्तुन चितलाइ। लखि समत्व प्रभु अखिलगुरु रहत प्रसन्न सदाइ २७२ जबप्रसन्न भगवत भगे प्राकृत गुण ना जात। जीवमुक्त ह्वै ब्रह्ममें प्राप्त होत है तात २७३ पंचतत्त्वसों होतहैं योषित पूरुषअंग। तिन व्यवाय सों प्रगट जग पुनि पुनि उभय प्रसंग २७४ स्थिति प्रवर्त्त संयम सरग या विधि होत नृपाल। गुण व्यतिकर अरु मायया जानिय परम कृपाल २७५ निर्गुण तहां निमित्तवत पुरुषर्षभ नहिंरक्त। भ्रमत बिश्व यह लोहवत जामें व्यक्ताव्यक्त २७६ भगवत न्यारो रहत है गुण प्रवाह सों तात। करत अकर्त्ता हनत है सदा अहंता भात २७७ अव्ययातकर कालसों पुरुष अनादि अनंत। जनत जनन करि जनन सों धारि निमित्त हनंत २७८ अस्य विपक्ष स्वपक्ष नहिं रहस मृत्युमहान। पीछेधावत भूतगण कर्म विवश गुणवान २७९ काला कालहु मृत्यु द्वै जन्तु हेतुहैं जौन। दोनों सों विभु रहितहै स्वस्थ कहावै तौन २८० कोउ कर्म इनको कहत कोऊ कहत स्वभाव। एक कालपर देव इक कोउ काम कहिगाव २८१ अप्रमेय अव्यक्त जो नाना शक्ति जनेत। तात चिकीर्षित तासुकी को जानै बुधि नेत २८२ तव भ्राता हंतार नहिं धनदानुग ये जौन। पुरुष विसर्गादान में कारण दैवहि तौन २८३ सृजति हंति सोई जगत अवति विगत अभिमान। गुण कर्मनमें लिप्त नहिं अहमिति धरतकदान २८४ भूतात्मा भूतेश जन भावन प्राणि न सोइ। शक्ति मायया युक्त निज सृजति पाल हरजोइ २८५ मृत्यु अमृत वपुदैव जो शरण जाहु

अर्थ तितिक्षाकहिये सबदुःखों कासहलेना यथाह सहनंसर्वदुःखानां तितिक्षासानिगद्यते २७२ नाकहिये पुरुष २७३ अंग हेधुव व्यवाय कहिये मैथुन २७४

तिहि तात । जिनहिं देत बलि बिश्व सृज जिमि पशु यंत्रित गात २८६ तजि निजमावै पंचसम सुनि सपत्न्यमा बैन । बन गत तपसाराध्य हरि लह त्रिलोकपर ऐन २८७ ताते क्रोधहि त्यागिये क्रोध पापकर मूल । बुधताके बश जातनहिं जो शिव हरकर शूल २८८ हेलन कीन्ह धनेशकर पुण्यजनन बधकीन्ह । हनो भ्रात इन जानियह अमित क्रोध उर लीन्ह २८९ कीजिय तिनहिं प्रसन्न सुत नम्र बचन कहि आस्य । ध्रुव सोंवन्दित सर्षि मनु गये पौत्र अनुशास्य २९० लखिनिवृत्त रणसोध्रुवहिं सगण धनेश्वर तत्र । किन्नर चारण यक्षबहु संगगये ध्रुवयत्र २९१ हम प्रसन्न भो क्षत्रिसुत कहो कुबेर सुनाइ । त्यागो दुस्त्यज बैरतुम बचन पितामह पाइ २९२ नहिंतुम यक्षन को बधो नहिं भ्राता तव यक्ष । प्राणिन जनु अप्यय प्रभू काल सदा प्रत्यक्ष २९३ हम तुम अहैं अपार्थ धी पूरुषको अज्ञान । दुख बंधन जा बुद्धि सों होत.स्वप्नवत भान २९४ जाइय ध्रुव कल्याण तव भजहु सदा भगवान । भूतात्मा भूतेशप्रभु भवच्छेदक सुख दान २९५ राज राज पुनिकहत भे माँगिय बरजो चाह । अचल भक्ति हरिपद कमल माँगी ध्रुवनरनाह २९६ दीन्ह इड़बि- ड़ा सुतहरषि पुनिभे अंतर्द्धान । ध्रुवहर्षित बरपाइकै किय निज पुरहि पयान २९७ बहुत दक्षिणा देइकै बहुतयज्ञ ध्रुवकीन । ती- व्रभक्ति धारत भये भूतन हरिलखिलीन २९८ शील युक्त ब्रह्म- ण्यनृप धर्मसेतु गोसार । प्रजासकल मानत भये पिता पुहुमि सुखकार २९९ हायनछत्तिस सहसनृप करत भये क्षिति भोग । पुण्य क्षीण कियभोगकरि नाशेपापअभोग ३०० माया निर्मि- त विश्वगुणि यथा नगर गंधर्व । दीन्ह नृपासन पुत्रकहँ जानि स्वप्नवत सर्व ३०१ सुहृद आत्मस्त्री सुत कटक कोशसुभूमि बि- हार । आसमुद्र क्षिति कालवश गुनि विशाल पगुधार ३०२ धारि यमादिक मज्जि जल बद्धासन जितश्वास । स्थूल रूपभगवत बिषे कीन्हों ध्यान प्रकास ३०३ भले ध्याता ध्येय पुनि समाधि

स्थभूपाल । बहुरि समाधिहुके बिषे स्थूलहु त्यागोहाल २०४ बा-
ढ़ो भक्ति प्रबाहहरि आनँद विह्वलहोइ । द्रयोहृदय पुलकांग पुनि
मुक्तलिंगभे सोइ २०५ पुनि ध्रुव नभ देखतभये आवअनूप बि-
मान । उदित भयो द्विजराज जनु दशदिशि दीपित तान २०६
छन्दरामगीतिका । तत्रपार्षद युग्मश्याम किशोर शुभ भुजचा-
रि। अरुण अंबुज नयन अंशुक हार कुंडलधारि ॥ गदा करधरि
चारु अंगद कीट मुकुट ललाम । जानि उत्तम गायकिंकर उठि
सुकीन्ह प्रणाम २०७ नामभगवत प्रेम संयुत करतभे ध्रुवगान ।
देखि अंजलि बद्धकंधर नम्रहरि जनजान ॥ नन्द अपर सुनन्द
दोनों बचन कहिबे लनि । जौन पंचम बर्ष तपसा तृप्त देवहि
कीन २०८ अहो भूपति होइ तव शिव सुनहु ममबच एह । विष्णु
आयसु लेन आये तत्पदहि युत नेह ॥ ऋषिनको जो प्राप्त
नाहीं लखत जीतो सोइ । बैठिये चन्द्रादि जहँ पर्यंत दक्षिण
जोइ २०९ दो० । पितृ तुम्हारे नहिंगये और गयो नहिं कोइ ।
जगत बंधमें चलि वसिय विष्णु परमपद जोइ २१० यह जो
प्रवर बिमान है विष्णु पठाव सनेह । तामहँ बैठिय आइकै आ-
युष्मन गुण गेह २११ सुनि बैकुण्ठ नियोज्यबर वचन मधुच्यु
त तत्र । करि मज्जन हरि प्रिय बहुरि कियप्रणाम मुनियत्र २१२
पूजन करि धिष्ण्याग्र्यको नौमि पार्षद न काहिं । सुबरण मय
देखत भये बैठनचह मनमाहिं २१३ तबलागिआये मृत्युतहँ करि
प्रणाम कहबैन । मामंगी कुरु नृपति बर सुनिकह ध्रुवगुण ऐन
२१४ भलकीन्हों आये इतै कहि सुमिरो हरितौन । मृत्यु मूर्ध्नि
पदधारिचढ़ि यानकरत भे गौन २१५ तब दुंदुभि बाजे घने पण-
वमृदङ्ग अपार । गावत भे गंधर्वबर बहुरि पुष्प झरिकार २१६
मातु सुनीतिहि सुमिरियो जबहिं चले स्वलोक । जात त्रिविष्टप
काहँ हम त्यागि मातु भुवओक २१७ इतिव्यवसित व्यवसीयि
तिन कह पार्षद गुणभौन । मातु तुम्हारी अग्र वह क्रियायानचढ़ि
गौन २१८ पूजित पथिवैमानिकन पुष्प वृष्टि लखितत्र । लांघि

त्रिलोकी मुनिन अपि गेपर ध्रुवपद यत्र ३१९ शुद्ध श्रांत प्राणिन सुखद सम दृशजावैंतत्र । अच्युत प्रिय साक्षातजे अच्युत पदहै यत्र ३२० इमि सुत ध्रुव उत्तान पद कृष्ण परायणजौन । चूड़ामणि इव अमलभो तीनोंलोकनतौन ३२१ घोर वेग जिहि चक्रको ज्योतिष भ्रमत अपार । ध्रुवमधि मेढ़ीवतयथा वृषकण मर्दन कार ३२२ छन्दशमगीतिका । चरित यश उद्दाम ध्रुवको संत संमत जौन । धन्ययश अरु आयुपुण्यद स्वस्त्ययन गुणभौन ॥ स्वर्ग्य ध्रौव्यप्रशस्यनाशक पाप सुखकरसोइ । सुनहिं श्रद्धा सहित अच्युतप्रिय सुचेष्टितजोइ ३२३ होत भगवत भक्तिजासों क्लेश संक्षयहोइ । चहतजौन महत्व तेजहु मानहूलह सोइ ॥ प्रयत कीर्त्तन करत प्रातहि सभामें जोजाइ । चरित हरिध्रुव सांभहू जे कहत आनँद पाइ ३२४ श्रवण द्वादशि सिनीवाली पौर्णमासी काहँ । दिनक्षय व्यतिपात संक्रम अर्कहू दिनमाहँ ॥ सुनत श्रद्धा सहित भगवत यशसुनावत जौनाकामनानरहीनपावत सिद्धि आतम तौन ३२५ दो० । या विधि श्रीध्रुवको चरित वर्णन कीन्हों सोई । अर्भक क्रीड़ा छांड़िकैविष्णुशरण गे जोइ ३२६ ॥

अथ जटायुकी कथा ॥

चौ० । कथा जटायूकी शुभएहा । वर्णन करौं कछुक युत नेहा ॥ प्रगट कथा रामायण माहीं । ताते अधिक कहत मैं नाहीं ३२७ जबहिं राम वनवाससिधाये । कांचन मृग विलोकिसुखपाये ॥ लषण राखि सिय रक्षा हेता । तापीछे गे कृपानिकेता ३२८ ताकि रघुपति तीक्षण शरमारा । हा लक्ष्मणकहि उच्चपुकारा ॥ श्रवण शब्द सीता के आई । राम भीर गुणि लषण पठाई ३२९ तब रावण आयो थलतेही । करिछल हरत भयोवैदेही ॥ लै विमान नभपंथ उड़ाना । सीता व्याकुल भई महाना ३३० हा रघुनाथ लषण बलवाना । यह वाणी जटायु

सुनि काना ॥ आइ समीप सियहि पहिचाना। रावण सों किय समर महाना ३३१ चोंचन पंजन घायल कीन्हा। व्यथित गिराइ यानसों दीन्हा ॥ सीतहि जाइ सुथलबैठारा। लरन हेत पुनि भयो तयारा ३३२ रावण काहँ बिकल अति कीन्हा। जिहि रावण जग बश करि लीन्हा ॥ तब रावण करि क्रोध निदाना। काटे पंख कठोर कृपाना ३३३ पक्षी पक्षहीन भो जबहीं। थाको सकल पराक्रम तबहीं ॥ क्षत अनेक बहुरौ तन कयऊ। लै सीतहि रावण चलि भयऊ ३३४ ढूंढ़त राम लषण तहँ आये। व्याकुल गृध्रदेखि तहँपाये ॥ जबहीं गृध्र राम कहँ देखा। सबदुख तत्क्षण हरे विशेखा ३३५ वाह्याभ्यंतर हरि छवि छाई। शत्रु मित्र गति गईभुलाई ॥ कहि वृत्तांत बिदा असु मांगी। सुनत राम अतिआनंद पागी ३३६ गृध्रहि लियोगोद निज लाई। हस्त कमल फेरो सुखदाई ॥ वारिज नयन नयन भरि वारी। तातन धूरि जटा निज झारी ३३७ राखहु प्राण न त्यागिय देहा। करिहौं अचल विगत सन्देहा ॥ तबहिं गृध्र कहबचन रसाला। सुनिये देवन देव कृपाला ३३८ मो समधन्य कौन जग आजू। निज अंकम लीन्हों रघुराजू ॥ जो स्वरूप शिव अति श्रम पावा। सो मेरेसमीप चलि आवा ३३९ राखौं तन अनित्य किहि हेता। अस कहि राम चरण चित देता ॥ तन तजि दिव्य रूपधरि लयऊ। हाथ जोरिअस्तुति प्रभु कयऊ ३४० चढ़ि बिमान वैकुण्ठहि गयऊ। ताकी क्रिया करन प्रभु लयऊ ॥ जियालाल ऐसे प्रभुत्यागी। भजहिं अन्य ते परम अभागी ३४१ ॥

मातुलभानजेकी कथा ॥

दो०। मातुल भैने युगल अति भे भगवत के दास। किय प्रसन्न भगवत सुखद निजसेवा परकास ३४२ तजिघर भगवत शरणहो तीरथयात्रा हेत । चले विपिन मधि देखियो भगवत

मूर्ति सचेत ३४३ मन्दिरहीन बिलोकिकै मनमें करी बिचार। कतहुँ द्रव्य जो पावहीं रचहिं भवन सुखसार ३४४ घूमनलागे उर्बरा श्रीहित दोनोंतौन। सुनो कहूंहैपारसी प्रतिमासेबड़भौन ३४५ दोऊहरषे अबबानिहि मन्दिर श्रीपतिकेर। जान उचितय-द्यपि नहीं तदपि करी नहिंदेर ३४६ चौ०। भगवत शरणशरीर बिलोकी। हरि प्रसन्न हित करिय बिशोकी॥ नरकादिक भय लागो जिनके। शरणागत दृढ़ता नहिं तिनके ३४७ गयेसे-वड़ो मन्दिर माहीं। तत्क्षण शिष्य भये तिनपाहीं॥ ऐसीसेवा चितदै कीन्हा। बश्य सेवड़नको करिलीन्हा ३४८ ते प्रसन्न अति भे मनमाहीं। कारबार सौंपो तिन काहीं॥ मन्दिर सबअप-नेबश देखा। मूर्ति लेन चितदियो बिशेखा ३४९ द्वारबन्दमारग नहिंपायो। चिन्ता करन बहुरि मनलायो॥ गुम्मज कलश पेंच युतजाना। कलश अलग निशि कीन्ह निदाना ३५० गुम्मज चढ़ो भानजाजाई। मामादियो मूर्ति लटकाई॥ मूर्तिभानजादृढ़ करिपायो। मामहु चढ़नातिही मग लायो ३५१ हर्षसमेत पीन अति भयऊ। निकरि न सको तत्र फँसि गयऊ॥ कीन्ह उपाय निकरि नहिंपायो। तबनिज भैनेसों समुझायो ३५२ कारजबनोन कछु सन्देहा। मन्दिर रचहुजाइ युतनेहा॥ तुमअब आनँद सहितसि-धारौ। ममशिरकाटि यहाँपर डारौ ३५३ नाहिंतबैहै शोच अमा-ना। निन्दा साधुपरै जो काना॥ साधु भेषवास्तव हरिरूपा। जग जीवन सुखदेत अनूपा३५४ सुनतभानजा दुखितअपारा। मामू कहो कियो तिहि बारा। शीशकाटि मूरति लैसोई॥ व्याकुलजात भयो अतिरोई ३५५ यद्यपि ज्ञान वान रहसोई। सत्संगति बिछोह दुख होई॥ कबहूँशोक मग्नहोजावै। कबहुं मूर्ति लखि आनँद पावै ३५६ भवन रचन जहँ करीबिचारा। दूरिहिते तहँजाइ नि-हारा॥ कोउकरत मन्दिर उद्योगा। देखत अधिक भयो मनशोगा ३५७ जाइसमीप बहोरि निहारा। यहतौ मामूखड़ो हमारा॥ दोऊधाइ परस्पर भेटे। दीरघ दुसह बिछोह कि मेटे ३५८ मन्दिर

रंगनाथ बनवावा । सबजगमें अद्वैत सुहावा ॥ ऐसे भगवतभक्त सुहाये । तनधन भगवत हेतलगाये ३५९ जियालाल तू किमि भ्रमसाना । देखत सुनत करत नहिं काना ॥ सेमर आश शुका जिमि लावै । पाके तूल अपर नहिं पावै ३६० छन्द माधवी । धन धामतिया सुत मातु पिता मनजानत हौ परिवार सगा । जबहंस पयान करै नहिं आवहिं काम न देवहिं संग पगा ॥ भवसागर घोर अथाह महा यमदूत कराल कराल मगा॥ जियलाल भजो हरिहाल नहीं अबहोन चहै दिन एक दगा ॥ ३६१ छन्दमनहरण । दिन दिन छिन छिन छीण होत आयु बलजानत बढ़त मूढ़हरि बिसरायो है । अंजलि के जल सम जरठ केवलसम अस्त गतसूरजके तेजसम गायो है ॥ सलिल बबूल सम तरु सरिकूलसम छीलर कबंध सम थिरता न पायोहै। चालनीके चूरण समान बै घटत जात जियालाल ताहूपै न चेत चित आयोहै ३६२ ॥

राघवानन्दजी की कथा ॥

दो० । संप्रदाय रामानुजे भये राघवानन्द । परमभक्त भगवत सुखद हरिजन आनँद कन्द ३६३ चारौ आश्रम चहु बरण दीन्हे भक्ति लगाइ । बसत रहे जिहि देश में प्रगटीभक्ति महाइ ३६४ रामानन्दहि लेतभे अंतक आस्य बचाइ । वर्षसत शत अर्द्ध शत दीन्ही आयु बढ़ाइ ३६५ ऐसे चरित अनेकहैं महिमा अमित अपार । जियालाल हरिजन चरित तारणतरि भवधार ३६६ ॥ **जगन्नाथकी कथा ॥**

दो० । रामदास सुत बिप्रवर जगन्नाथ जिन नाम । धर्मभक्ति की सीमभे भगवत जन सुख धाम ३६७ सारासार बिचारि कै गहेहंस गुण जौन । नवधा भक्तिहि धारियो मुनिन भांति रहतौन ३६८ पुरुषोत्तम गुरुकी कृपा धरी कवच निजअंग । कटुक बचन इषुनाविधैं नाइषु विधैं कुसंग ३६९ ॥

लक्ष्मणभट्ट की कथा॥

दो०। शरणागत मारग बिषे लक्ष्मण भट्टमहान। दशप्रकार की भक्ति मन हरिजन सेवा आन ३७० संसारी कारज विषे मनस्वप्नहू न जात। हरि कीर्त्तन अद्वैत मे हरिसों राखो नात ३७१॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचितचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येएकविंशशरणागतआत्मनिवेदनमहिमानिष्ठायांदशभक्तकथावर्णनोनाम भक्ताम्बुनिधौत्रयोविंशस्तरङ्गः २३॥

छन्दरामगीतिका॥ रामपदअरविन्दरेखा मुकुटसुन्दर नौमि। दण्डवत अवतार धुरको करहुँधारोसौमि॥ निष्ठयहद्वाविंश सुंदर कथा भक्त सुपाँच। जियालाल द्विजेन्द्र वर्णन करत पावन साँच१ दोहा॥ सखाभाव महिमा शुभग कोकवि पावैपार। यानिष्ठाजे भक्तहैं मित्रभावहरिधार २ चौ०॥ यामेंकछूहैनसन्देहा। ब्रह्म जीव कर सहज सनेहा॥ वेदपुराण विदितयहबाता। तातेसत्य मित्र करनाता ३ सूक्षमजीव बृहतहैईशा। एतोभेदजीवजगदीशा॥ वारिधिनीर यथा घटआनै। दोऊ जलअन्तर किमिमानै४ जिमि दीपैकएक शिखिभारी। अन्तरका विधि कहिय विचारी॥ दोनों सों अतिप्रीति सदाई। एतो अन्तर परै लखाई ५ माया विवश भूलि प्रभुगयऊ। तबतेयह संसारी भयऊ॥ मर्कट यूथयथावन माहीं। गहैवधिक जिमि हरिशिशुकाहीं६बंधनकरिदेवै सुखभारी। नाच नचावै रूपसवाँरी॥ वहनटहीको प्रभुकरि जानत। आपनिजातिहियेनहिं आनत ७ तिमि मायावश जीवभुलाना। भगवत मित्रवचन नहिंमाना॥ निगमागम पुराण मतनाना। सोइमित्र हरिकीन्ह बखाना ८ ताको सुनै गुनै नहिंभाई। माया हीमेंरहासमाई॥ हूजेहारिहि बँधोहरि देखी। जिमि लुकात नट पास विशेखी ६ जबलागि मित्रपास नहिंजावै। सखाभाव रसका

त्रिधिभावै॥ ब्रह्मजीव सो बड़ो कहावै। तातेंप्रथम जीव तहँ जावै १० जैसे नृपति मित्रहै कोई। तासुसमीप जातजन सोई॥ कबहूँ नृपहु तासु घर जावै। पूर्णमनोरथ तिहिकरिआवै ११ ताहूको संगहिलैजावै। याको भवन नृपहि किमिभावै॥ अति आनँद ताकेउरहोई। निजघर सुख जानत लघुसोई १२ ईश्वर निकट दूरनाहिंसोई। माया असत सत्य नहिं होई॥ आपुहि बँधो न बाँधो माया। केवल भरम जीवहित गाया १३ चोंगलि शाख शुकागाहिजैसे। उलटोटँगै महाभ्रमतैसे॥ कोउनबाँध बँधोहैनाहीं। भ्रमकेवल मिथ्या जनकाहीं १४ जबहरि मित्र समीप सिधावै। तहिंआनँद सब भरम नशावै॥ परममित्र भगवत को जानै। तिनसों नई प्रीति नित ठानै १५ खानपान संगहि नित कीजै। शुभग बस्तु दीजिय अरुलीजै॥ अन्तर नेकहु राखिय नाहीं। क्रोध नकरिय कबहुं मनमाहीं १६ दो०। हँसै हँसावै संगही बैठै सोवै संग। चलै सवारी संगसजि हर्ष सहित निज अंग १७ या बिधि नित साधनकरै सखाभाव मन लाइ। अवशिमित्र भगवत मिलैं भव दुख जाइ नशाइ १८ यानिष्ठामें भक्तजे बरणौं तिनके नाम। मित्रानँद जिन पायऊ भगवत शोभा धाम १९॥

अर्जुन की कथा॥

दो०। श्रीअर्जुन महराजको सखाभाव सुखदान। कासोंवर्ण नहोइगो की कबि अस मतिमान २० सखाभाव अवलोकिकै जिनके श्रीयदुराइ। दूत स्वारथी आदिमे मित्रभाव सरसाइ २१ खानपान बैठन उठन लीला हँसन बिहार। सिलिबो कहिबो मित्रबिधि तिनको अति विस्तार २२ व्यासादिक मुनि कहतभे भारतादिमें तौन। दई सुभद्रा ब्याहिकै मित्रनेहसों जौन २३ चौ०। जिन प्रताप अर्जुन बलवाना। योधा द्वितिय जगत नहिं जाना॥ जिन बल हरिवन अग्नि चराये। भारत जलधि पैरितः पाये २४ किय प्रसन्न शंकर रणमाहीं। अर्द्धासन बैठे

हरिपाहीं ॥ बासी जलधि असुर बहु मारे। सुनासीर जिन हेत दुखारे२५साठिहजार अपर भटमानी। शतमन्युहिते अति दुख-दानी ॥ अर्जुन तिनकर कीन निपाता। हर्षित भये बिड़ौजा गाता २६ उत्तर दिशि अति बिकट महाना। जीति नृपन बश किय बलवाना ॥ नीलध्वज हंसध्वजजीते। सुरथ सुधन्वा किये अतीते २७ नृपति मयूरध्वज बशकीन्हे। चन्द्रहास्य मिलि आ-नँद लीन्हे ॥ स्वसुतबभ्रुवाहनसों रारी। कीन्ही अर्जुन समर प्रचारी २८ बभ्रुवाह अर्जुन शिरकाटा। सेना सकल शीश पुनि छांटा ॥ चित्रांगदा उलूपी देखी। कीन्हों तहां बिलाप बिशेखी २९ माता रुदन करत लखिपायो। अर्जुनसुत पाताल सिधायो नागन बांधि जीवन मणि लीन्हा। समरभूमि आगम द्रुति कीन्हा ३० शीश जोरि सब सुभट जिआये। प्रद्युम्नादि उठे सुख पाये ॥ मंत्री शेष सुवन रणआई। अर्जुनशिर लैगयो चुराई ३१ तादिन कृष्ण तहां चलिआये। चक्र पठाइ शीश मँग-वाये ॥ धारिहिये मणि शीश लगावा। कृष्णहिं लखि अर्जु-नसुखपावा ३२ जिनके दश बिधि नाम सुहाये। धेनुरोग न-शक सुख छाये ॥ अर्जुन अपर फाल्गुन नामा। जिष्णु कि-रीटी पुनि सुखधामा ३३ श्वेत बाहबीभत्सु सुहाये। पा-विजय नामछवि पाये ॥ सव्यसाचि जिनकोहै नामा। नाम-जय अपरललामा ३४ इन नामनको अर्थअपारा। भारत-स कीन्ह बिस्तारा ॥ श्री अर्जुन कर सुयश अपारा। को वर्णि लहै जो पारा ३५ कृष्णहि पलक ओट नहिंटारा बिछोह तब सुरति निहारा ॥ खान पान संगहि सँगसोये परस्पर कह तनगोये। ३६ भगवत कियनिज धामपयान वृत्तान्त किरीटी जाना ॥ बधिर मूक उन्मत्तसमाना। ह-स्तिनापुरहि पयाना ३७ राज्य परीच्छित को तहँदीन्ह गमन बन्धुनयुतकीन्हा ॥ जाइ हिमालयमें तनुत्यागे ... गये बड़भागी ३८ ॥

अथ सुदामाजी की कथा॥

दो०। कथासुदामाकी सुखद बिदित पुराणन एह। ब्रहुत सुदामा चरितहू बरणे कबिन सनेह ३९ताते कछु संक्षेपही बरणिकहौं मैं अत्र। पढ़त रहे श्रीकृष्ण जब भईमिताई तत्र ४०
चौ०। पढ़ि निज भवन कृष्ण जब आये। भवन सुदामहू स्व सिधाये॥ रहेसुदामादारिदछाये। कबहुँ अन्नभरिपेट नखाये ४१ तनपर बस्त्र न दुर्बल गाता। नारिएकदिनकह हरषाता॥ यह अचरज की बात महाना। जासु मित्रश्रीपति भगवाना४२ महाराज श्रीकृष्ण कृपाला। दुखी देखि अतिहोत दयाला॥ सो अति दीनदरिद्री कैसे। जाइय शरण कहाइत वैसे ४३ कहो सुदामा सुनिये नारी। लिखा जौन तकदीर हमारी॥ सो कोऊ नहिं मेटनहारा। मानुसुशीला बचनहमारा ४४ कहो सुशीला सुनियेस्वामी। नारायण प्रभु अन्तर्यामी॥ दुखनाशन गुण भासन हारे। केशी कंस अघासुरमारे ४५ मातु पिताजनरक्षन वारे। जातकरहिं दुख दूरितुम्हारे॥ ताते अवशि जाइये स्वामी। ब्रह्मादिक जिन करहिं नमामी ४६ कहो सुदामा सुनिये नारी। टरैनजोप्रारब्धहमारी॥ पश्चिमउदयसूर्य्यचहहोई। चलैमेरुशीतल शिखिसोई ४७ शशाशीश जामैंचहशृंगा। बिधि अक्षरमेटैको अंगा॥ कहो सुशीला सुनिये स्वामी। अहैं कृष्ण प्रभु अन्तर्यामी ४८ जात कृपा तुम ऊपर करिहैं। दारिद सकल बिलोकत हरि हैं॥ जो प्रभुरजको करत पहारा। करतपहार पलक में छारा ४९ कोटिन अण्ड रोम जिन केरे। तिनमें ब्रह्मा बसत घनेरे॥ ब्रह्माक्षर मेटैं प्रभुसोई। यामें कछु सन्देह नहोई ५० कहो सुदामा सुनिये प्यारी। नीति बचन अस कहत विचारी॥ असमय मित्र भवन नाहिंजैये। गये बहुरिपीछे पछितैये ५१ सुनत सुशीला बचन बखाना। मित्रधर्म नीके मैं जाना॥ देत लेत शंका जिन नाहीं। प्रीति प्रतीति सदाउर मा-

हीं ५२ ताते जाहु अवशि इहि बारा। करिहैं दारिद दूरितुम्हारा। कहो सुदामा सुनहु प्रवीना। ब्राह्मण सदा चाहिये दीना ५३ इन्द्री प्रबल होइँ धनपाई। देइँ ज्ञान बिज्ञान नशाई॥ मन करि मत्त मानमद धारै। बरजोरी कुत्सित मग डारै ५४ कहो सुशीला सुनिये नाथा। बारबार नावों पद माथा॥ करि व्यापार जौन धनहोई। होत ममत्व प्रगटतहँ सोई ५५ अकस्मात पावै धन कोई। तहाँ ममत्व प्रगट नाहिंहोई॥ हरि प्रसाद गुनि कीजिय भोगा। दारिद्र्य सकल चित्त के शोगा ५६ जाहु अवशि अबदेर न कीजै। लक्ष्मीपति सुमिरण मन दीजै॥ तण्डुलकणा माँगि पुनि लाई। दीन्हे भेंट हेत यदुराई ५७ पठवत ठेलि सुदामा जाना। नारि स्वभाव ओछसति माना॥ लागे मन में करन बिचारा। हमदरिद्रि वे धनी अपारा ५८ मित्र भाव निबहैगो कैसे। पुनि बिचार आई मनऐसे। मिलिहैं अवशि कृष्ण सुख पाई। कृपासिंधु श्रीयादवराई ५९ उमँगो प्रेम मिलन तिहि काला। दरशन हेत चले ततकाला॥ चलत मार्ग पहुँचे इक ग्रामा। निशा जानि कीन्हों बिश्रामा ६० मित्रागमन जानि भगवाना। मिलन प्रेम अति बढ़ो महाना॥ निशामाहँ प्रभुलीन्ह बुलाई। द्वारावती निकट यदुराई ६१ प्रातहि चले सुदामा जबहीं। सुन्दर नगर लखो तिन तबहीं॥ पूँछत भये कौन यह ग्रामा। लोगन कह द्वारावति नामा ६२ सुनत हर्ष मन भयो अपारा। प्रात कर्म कीन्हे तिहि वारा॥ पुनि पूँछत पूँछत तहँ आये। जहाँ कृष्णके महल सुहाये ६३ द्वारस्थित पाहँ कहो सुखपाई। कृष्ण समीप जाहिं हम भाई। कहत हमारो नाम सुदामा। मित्र हमार कृष्ण सुख धामा ६४ द्वारपाल सुनि हरि ढिग आयो। शीश नाइ अस वचन सुनायो॥ ब्राह्मण एक द्वारपर आयो। फटे वस्त्र नाँगेपग धायो ६५ अतिहि दरिद्री है तनछीना। आपुहि मिलन चहत सुखभीना॥ नाम सुदामा करत बखाना। सुनतहि नाम कृष्ण भगवाना ६६ प्रेमातुर धाये

सुधि त्यागी। चरण लगाये हिय अनुरागी॥ मिले दोउजन पुनि लपि टाई। क्रापे प्रेम कहो सो जाई ६७ रंगमहल कर गहि ले आये। दिव्य पलंग सानँद बैठाये॥ कुशल प्रश्न पूछत यदुराई। पूजन साज रुक्मिणी लाई ६८ रुक्मिणि कृष्ण लगे पगधोवन। देखि दशा लागे पुनि रोवन॥ भये बिमाइन सों बेहाला। लखे पगन में कंटक जाला ६९ हाय सखा अतिही दुख पाये। आव इतन कित दिवस बिताये॥ दशा सुदाम कि दीन बिलोकी। करुणामय हरिभये सशोकी ७० जल परात लिय हाथन जोई। नैनन जल धोये पगसोई॥ पीताम्बर सों पोछन लीन्हा। विधि समेत पूजा पुनि कीन्हा ७१ बैठसुख आसनसों जबहीं। पूँछत भये कृष्ण पुनि तबहीं॥ कछु भाभी हमरे हित दीन्हा। आपुहि चहत काह वह लीन्हा ७२ सदा करत रह तुम चतुराई। आजहु तैसीही मन आई॥ चावल कांख छिपावन लागे। सो देखत हरि आनँद पागे ७३ इत हरिकरत लेन की घाता। उत चोरतद्विज लज्जित गाता॥ जीरण वस्त्र फटो तिहिकाला। बिथुर गये तण्डुल तहँ हाला ७४ भगवत लखि मूठी भरि लीन्हा। स्वाद सहित चर्वण पुनि कीन्हा॥ मूठी द्वितिय लेन जबचाहा। रुक्मिणि पकरिलीन्ह झटबांहा ७५ चित बिचार रुक्मिणि यह कीन्हा। मुष्टिक चारि लोक द्वै दीन्हा॥ द्वितिय चारि देहैं अब काहा। अथवा यह बिचार मन माहा ७६ मोकहँ देहिं न अबकी वारा। अथवा यह मन कीन्ह बिचारा॥ अति कोमल भगवत सुकुमारा। कोमल मधुरकरत आहारा ७७ स्वल्पाहार करत हरिसांचे। अवगुण करहिं न तण्डुल काचे॥ अथवा यह बिचार मनकीन्हा। हरिचावल आपुहि चवि लीन्हा ७८ मधुर मित्र घर के अति जोई। लेहैं हरि चवाइ सब सोई॥ या हित पकरी रुक्मिणि बांहा। सिद्ध रसोइ सेवकन काहा ७९ मित्र समेत गये जिवनारा। भोजन करत भये तिहि वारा॥ सात दिवस तहँ रहे सुदामा। अति सेवा किय

हरिसुख धामा ८० बिदा माँगि पुनि भवन सिधाये। बड़ी दूरि पठवन हरि आये। घूमत भये बहुरियदुराई। कर न द्रव्य दीन्हो सुखदाई ८१छूंछेचले सुदामा जबहीं। या बिधि बचन कहे मन तबहीं॥ बन बन घूमे धेनुचराई। काहभयो प्रभुता अब पाई ८२ दो०।घंटतकाश हमरे दिये जे भूपन शिरताज। कपट पहुनई करतभे करत न आई लाज ८३ जानिपरो सेवा निरखि देंल-दाइधन साथ। गरजे बहुबरषे न घन रहेशिखी धुनि माथ ८४ मुख पसारि सीपी रही चातकगई न प्यास। स्वाति बुन्द नहिं गरजि दिय तिमि निष्फल ममआस ८५ यह बिचारि धन दीन्ह नहिं करी कृपा भगवान। निष्किंचन धन पाइकै होइ बिवश अज्ञान ८६ मृषानहीं यह सत्यहै मैं मानौं उपकार। धनी पुरुष तमघोर बश पातक करत अपार ८७ दोष पंचदश अर्थ में बासकरत सब काल। कल्याणार्थी त्यागई दूरहि ते गुनि हाल ८८ स्तेयानृत हिंसा ब्यसन कामक्रोध मदलोभ। भेद-स्मय अरु बैरहू अविश्वास गतशोभ ८९ संस्पर्द्धा अरु दंभहू मोह सहित ये जौन। बरिआई बश करत हैं ज्ञानभगावत तौन ९० जगतारण वारण सुखद हरण शमन भवत्रास। कृपाकरी नहिं धनदियो ममउर भयो प्रकास ९१ चौ०। याबिधि करत तर्क मन माहीं। भगवत कृपा जानि निज पाहीं॥ निजपुरके समीप चलि आये। शोभा अमितपुरी लखि पाये ९२ द्वारकाहु ते शोभा भारी। मणिमय मन्दिर अति उजियारी॥ लागे कलशाकाशसुहाये। भासवंत निज भासलजाये ९३ शोभा वरणि पारकिन पाये। विश्वकर्म निज हाथ बनाये॥ चकृत भये सुदामा देखी। काहूसों इमि कहो विशेखी ९४ काकीपुरी नाम इहि काहा। सो बोलतभो सहित उछाहा॥ पुरी आपही की यह सोहत। देखत चित्त जनन को मोहत ९५ पुरी सुदामा याको नामा। शोभित अति विचित्र बहु धामा॥ या विधि करत बतकही देखी। आये सेवक अमित विशेखी ९६

आदर युत महलन लै आये। देखि सुशीला आनँद पाये॥ धाइ परी पति चरणन आई। आनँद अश्रु प्रवाह बहाई ९७ धोये चरण बहुरि सुखपाई। बैठारा शुभ पलँग लयाई॥ दांत पुरट सामग्री जामें। दुग्ध फेनसम शय्या तामें ९८ व्यंगित बचन कहे भगवानै। ताको कीन्हों शोच निदानै॥ कीन्हे नाना भोग अपारा। पर नहिं भगवत भजन बिसारा ९९ दो०। नहिं भूले धनपाइ कै सुमिरे चित भगवान। हरि दीन्ही यह जानउर नहिं आपनि पहिचान १०० कथा सुदामा की सुखद जियालाल है एह। सोई मैं बर्णन कियो दायक हरिपदनेह १०१॥

अथ ब्रजके ग्वालबालोंकी कथा॥

चौ०। अमित सखाहैं यदुपतिकेरे। पारलहै को बरणिघनेरे॥ ॥ ख़ासखास गोलोक सुदेशा॥ हरिसंग क्रीड़ाकरत हमेशा १०२ कछुक नाम तिनकहौं बखानी। परम मित्र अति शारंगपानी॥ श्रीदामा मधुमंगल नामा। सुबल सुबाहुभोज ब्रजधामा १०३ अर्जुन मंडलहू सुखछाये। सखा आठ ये मुख्य कहाये॥ रहत समीपकाल सबसोई। नायक सकल सखन केसोई १०४ औरौ सखा मुख्य छबिखानी। नामकछुकके कहौं बखानी॥ रक्तकपत्रक पत्रीनामा। मधुग्रीव मधुवर्त्त ललामा १०५ प्रेम कंदमकरंदकहाये। अपर बिशाल रसाल सुहाये॥ आनँद चन्द्रहास्य सुखधामा। प्रयद बकुल रसदान ललामा १०६ शारद बुद्धिअपर सुखधामा। कोटिन सखा गनै को नामा॥ कोटिनहैं तिनकेर चरित्रा। बरणिपार को लहै पवित्रा १०७ भगवत जबहिं लेतअवतारा॥ तब संगहि आवत सुखसारा। जबहिंकृष्णलीन्हों अवतारा। वृन्दावन पवित्र पगुधारा १०८ ग्वालबाल सब संगहि आये। कीन्हे नाना चरित सुहाये॥ जावें धेनुचरावन जबहीं। रचैं खेल नानाविधि तबहीं १०९ बैठेंकबहूँ जाइ तरुछाहीं। कृष्ण समेत महानँद माहीं॥ सखा गोद सोवत हरि कबहीं। बीजन

अपर डुलावत तबहीं ११० कोऊ चापत चरण सुहाये। जे अज शंकर ध्यान न आये॥ कबहूं नृपति बनैं भगवाना। भारवाह होंस खा निदाना १११ कबहू सखा नृपति बनि जावैं। शिविकामें भगवतहि लगावैं॥ कोऊ बेत्रपाणि बनि जावै। कोऊ बन्दी सुयश सुनावै ११२ कोऊ गान करन तहँ लागै। कोऊ हास्य प्रगटि सुखपागै॥ नानाभांति कुतूहल करहीं। आनँद उँमगि उँमगि हियभरहीं ११३ कबहू नृपति रूप भगवाना। सभा मध्य बैठें सुखदाना॥ कोऊ मंत्री बनै गुवाला। हाथ जोरि कह बचन रसाला ११४ कोऊ सेवक बनि सुखपावैं। समयसमय सेवा मनलावैं॥ कोऊ चामर बीजन लीन्हे। सादर नृप सेवा चित दीन्हे ११५ धारण छत्र शीश इक कयऊ। पान करण्ड कोऊ कर लयऊ॥ पात्र लिये निष्ठीवन कोई। दर्पण लै सन्मुख इक होई ११६ बेत्रपाणि है कै इक आवै। भली भांति सबको बैठावै॥ द्वारपाल होवै इक आई। सभा कोउ बिनपूछि न जाई ११७ मागध सूत बन्दि हुवकोई। बर्णत सुयश नृपति को सोई॥ हासक अपर बिदूषक बनते। नाना भांति बचन ते भनते ११८ करत गान गायक हो आना। बाद्य बजावकोउ विधिनाना॥ कोऊ पण्डित बनि तहँ आवै। ज्योतिष शोधि लग्न ठहरावै ११९ कोऊ बहुविधि रूप बनावै। नृपहि प्रसन्न करै धन पावै॥ याविधि नाना चरित सुहाये। भांति अनेक पुराणन गाये १२० जब अक्रूर हरि हि लै गयऊ। मथुरा जाइ मल्ल वध कयऊ॥ बहुरि अखारे सखन बुलाई। मल्ल युद्ध कीन्हों यदुराई १२१ कबहूं सखा भूमि लै आवैं। कबहुँ सखन कहँ आपु भ्रमावैं॥ आकर्षणोपसर्पण आदी। ग्वालन सह किय पुरुष अनादी १२२ दो०। ग्वालचरित याविधि अमित जियालाल सुखसार। मैं अति संक्षेपहि कहो ग्रंथन बहु बिस्तार १२३॥

चौ०। गोविंद स्वामी कथासुहाई। मैं बरणौं रघुबर शिर नाई॥ सखा भाव भगवत में भारी। तिनसों सक न क्षणक

मनटारी १२४ कीन्ही ऐसी प्रीति अपारा। शीघ्रहि पहुँचे नित्य बिहारा॥ खेलत गोली रह इकवारा। गोविंद स्वामी नन्दकुमारा १२५ इनको दावँ आव तहँ जबहीं। मन्दिर भाजि घुसे हरि तबहीं॥ गोविंद स्वामी जबलखि पायो। नट नागरके पीछे धायो १२६ गोली जाइ मूर्त्ति में मारी। देखत क्रोधित भयेपुजारी॥ ठेलि भवन सों दीन निकारी। बाहर जाइ दीन बहु गारी १२७ अब तौ बैठ भवन में जाई। निकरि मिलिहिं कबहूं तौ आई॥ तब करिहौं अति शिष्टाचारी। यह कहि बैठ क्रोध जिय धारी १२८ छन्द मनहरण। कीन्ही चिंताभारी महाराज नन्दलाल तबै बैठेहै सकोच यह मेरीही तलासमें। कान्हबिहारविन खेले सखा संगबिन, मोसों रहोजात नाहीं चित्त है बिलास में॥ बाहर जो जाउँगो न जानै यह कैसेकहा कीन्हैं न अशन हरिशोक के प्रकासमें। परम भक्त बिट्ठल नाथ जीसों कहो हरि डरत गोविन्द स्वामी काहँ निजत्रासमें १२९ दो०। हम भजिआये दाउँले तातै कीन्हों क्रोध। भोजन सैनहिं करि सकौं जबलगि तासु न बोध १३० भोग लगायो मम चहिय तौ समुझावो ताहि। क्रोध शांत ताकोकरिय मम आनँद उर चाहि १३१ चौ०। बिट्ठलनाथ सुनत तहँ आये। विनयप्रार्थना करिसमुझाये॥ लाद मनाइ हाथगहि तहँवा। श्रीनँद नन्दन शोभित जहँवां १३२ पठै दीन मन्दिर में ताही। दोनों मिले डारि गल बाही॥ दोनों मित्रानँद में पागे। दोउ परस्पर अति अनुरागे १३३ तब भोजन कीन्हों गिरिधारी। सखाभावकी प्रीति पियारी॥ श्रीगोविन्द स्वामि इकदीना। गये बाग शंकाहि प्रवीना १३४ बैठे जबहिं तबहिं नँदलाला। हरिहित अति रूप बिशाला॥ मारनलगे अर्क फल लैकै। औरौ अमित चपलता कैकै १३५ गोविंद स्वामि क्रोध अति कीन्हा। क्रोधित अर्क फली कर लीन्हा॥ ऐसी मारत भे इकबारा। व्याकुल भे श्री नन्दकुमारा १३६ भागन

को मन कियो उपाई। गोविंद स्वामि मातु तहँ आई॥ ढूँढ़त रहि घर गई लवाई। तहँई सो रुकि गई लराई १३७ एक समय हरि मन्दिर माहीं। थार पुजार भोग लिये जाहीं॥ बैठ रहे मग गोविंद स्वामी। भोग थार दीजे कह स्वामी १३८ भोजन हम करि लेवें जबहीं। दीजो नंदनंदन कहँ तबहीं॥ सुनत पुंजारी सोनहिं दीन्हा। गोविंद स्वामि छीनि तब लीन्हा १३९ खायो सामग्री सब थाला। पुनि चलि भे आनंद बिशाला॥ देखि क्रोध अति कीन्ह पुजारी। कहागोसाईं पास पुकारी १४० आव बाज ऐसी सिखकाई। गोबिंद स्वामी करत ढिठाई॥ छीनि भोग सामा सब लीन्हा। बैठि निडर भोजन तिन कीन्हा १४१ पूंछतभे गोसाइँ बुलाई। ऐसी तू क्यों करत ढिठाई॥ गोबिंद स्वामि कहन सुनि लीना। अपने लाला कहँ प्रति दीना १४२ तुम शुचि भोजन देत कराई। आगे सजि पहुँचत बन जाई॥ खेलन फिरन लड़न के हेता। तुम उद्यत करिदेत सचेता १४३ हम पीछे भोजन को पावत। ढूँढ़त फिरहिं ताहि बन धावत॥ श्रमित भ्रमित घूमत ढूंढ़त नित। आजु विचार कियो ताते चित १४४ पहिलेही किन रहौं तयारा। सुनि गोसाइँ बचन सुख सारा॥ हँसि पुजार सो कहो वखानी। सखा भाव उर अंतरजानी १४५ हरि प्रसन्न इन के सुख पाये। अकथ चरित्र वेद जन गाये॥ भगवत देत भक्त को माना। अंगीकृत अपनो अपमाना १४६ मन प्रसन्न इन कर जिमि होई। करियो अचारी धारि चित सोई॥ सुनि पुजारिउर आनँद माना। गोविंद स्वामि कथा इमि गाना १४७ चौ०। गंगग्वाल की कथा सुहाई। मैं वरणौं रघुवरहि मनाई॥ शिष्य रहे व्रजनाथ सुहाये। सखा भाव भगवत मन लाये १४८ क्रीड़ानन्द मगन सब काला। खेलत सदा संग गोपाला॥ वृजकी भूमि प्राण सम मानत। प्रीति अमित हरि चारितम आनन १४९ गांधर्व विद्या जो गाना। तामें भे अद्वैत निदाना॥

बादशाह आयो इक काला । सुनत भयो तिन गान रसाला १५० हरिचरित्र सुनि मोहित भयऊ । सभा समेत परम सुख लयऊ ॥ बोलत भयो जोरि युग हाथा । चलिये आपु हमारे साथा १५१ गंगग्वाल सुनि बचन सुनावै । तजि ब्रजभूमि अनत नहिं जावैं ॥ बादशाह यों विधि सुनि पायो । दण्ड बाँधि हस्तीपुर लायो १५२ नृप हरिदास श्रवण सुनि पायो । तो दर राजपूत तहँ आयो ॥ बादशाह सों बिनती करिके । तिनहिं छुड़ावत भो मुद भरिके १५३ हर्ष सहित ब्रज में चलि आये । मित्र बिलोकि परम सुख पाये ॥ इमि भगवत जन चरित महाना । जियालाल संक्षेप बखाना १५४ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायक जियालालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येद्वाविंशसखाभावमहिमानिष्ठायांपंचभक्त कथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौचतुर्विंशस्तरङ्गः ॥ २४ ॥

चौ० । निष्ठ त्रिविंश शुभग अब गावों । श्रीरघुबर पद शीश नवावों ॥ जामें है महिमा शृंगारा । अरु माधुर्य्य महात्म्य अपारा १ कथा बीश भक्तन की गाई । या निष्ठा में सुखद महाई ॥ रेख त्रिकोण कमल पद रामा । वन्दि करहुँ कृष्णहि पर नामा २ जिन गोकुल में धरि अवतारा । कीन्ह पवित्र चरित्र अपारा ॥ जिनहिं सुमिरि सुनि करिके गाना । उत्तम गती लहत नर नाना ३ जो यह रस शृंगार सुहायो । उज्वल शुक्लहु नाम कहायो ॥ ज्ञान विराग भक्ति सब जेते । याके दास रूप हैं तेते ४ रंकहि नृपति करे क्षण माहीं । नृपहि रंक क्षण संशय नाहीं ॥ पूरण प्रेम क्षणहि प्रगटावे । शूल ताप दुख दूरि बहावे ५ मोहन गुण नहिं सम शृंगारा । मंत्र तंत्र रागादि अपारा ॥ बीते बीतत बीतहिं जोई । बांछित पद यासों लह सोई ६ जन शृंगार उपासक जोई । ब्रह्मानन्द गुणत सुख सोई ॥ मधुर रूप भगवत उर आवे । मग्नानँद तन दशा भुलावे ७ तृण समान त्रयलोकहि जानै । भगवत रूप झलक उर आनै ॥ या निष्ठा विस्तार

कों और सवाद अपार। करतभई इच्छा बहुरि जैबे यमुनापार २०
ब्रज किशोर महराज ने कहहै यमुना नाव। है न मलाहो या
समय पार कौन विधि जाव २१ आवश्यक जानो चहिय तो
हमकरिहैं पार। चढ़ीनाव गोपी सुनत लखि मलाह सुखसार २२
चौ०। औरण रहै तरीवह जोई। पहुंची मध्यधार जब सोई॥
आवन बारि लगो तिहि माहीं। हरि कौतुकी कहोतिन पाहीं
२३ बूड़न नाव चहत अब एहा। यामें कछू नहीं सन्देहा॥ ह-
रिस्वभाव गोपी जो जाना। तिन याविधिसों बचन बखाना २४
डूबन देहु शंक कछु नाहीं। धमकावत जानत हम आहीं॥
जे नवयोवन हैं तहँ कोई। अरु अज्ञात यौबना सोई २५ नँद-
नन्दन स्वभाव नहिं जाना। नइ आई न भले पहिचाना॥
सुनत श्यामसुन्दर की बानी। कोऊ धाइ कंठ लपटानी॥ २६
कोउलगी छाती सों धाई। करगहि लीन्ह कोउ यदुराई॥ च-
रण पकरि बैठीतहँ कोई। भगवत पुनि विचार किय सोई २७
सिद्ध मनोरथ बहुसोभयऊ। बहुतै रहोंनभय कछुकयऊ। नौका
मग्न कछुक करि दीन्हा। डूबीतरी सबन यह चीन्हा २८ गोप
कुमार कूल जेठाढ़े। ताली देइँ हँसे मुद बाढ़े॥ ये गोपी मूरुख
चढ़ि नावा। कृष्ण भरोसे किये बनावा २९ गोपिन भयो शोच
नहिं नेका। बोलीं बचन धारि दृढ़ टेका॥ गोरस माखन बहि
किन जावै। प्राण जाइँ यहदेह नशावै ३० शोचनतासु शोच
है एका। कहिहैं जन उर जासु बिबेका॥ भव सागर तारक है
जोई। डूबिनाव खेवक रहसोई ३१ यशुमति बांधे कुँवर
कन्हाई। देखन हित गोपी सबधाई॥ बोलत भई सकल मुसु-
काई। भली भई यहबात कन्हाई ३२ यशुदामातु भलोयह
कीन्हों। बंधन जो तुमरो करिदीन्हों॥ अबतौ जनिहौ नरश्रा-
राती। बंधन पीर होतया भांती ३३ गूढ़ बचन ब्रजबधू सुनावा।
जीव मुक्त करिये यह भावा॥ जब उद्धव मथुरासों आये। हरि
सँदेश गोपिन हित लाये ३४ ज्ञान बिराग सुनावन लयऊ।

तिनहिं निरुत्तर गोपिन कयऊ ॥ वश संयोग अमर इक आयो । तिहि गोपीगण देखन पायो ३५ करिषडंघ्रि मिस उद्धव पाहीं । बोलत भई भ्रमर सों ताहीं ॥ तूताकी अति करत बड़ाई । निर्दय कपटी जौन कहाई ३६ राज्य लई राजाबलि केरी । कपट धूर्त्तई करि बहुतेरी ॥ रामरूप सूर्पणखा देखा । बिकल भई लखि रूप बिशेखा ३७ निज बश अरु अशक्त करि रामा । बहुरि कुरूप करत भे बामा ॥ अतिबेशील छलीहैं जेई । अंतर्यामि कहत किमि कोई ३८ जो वह संतिहै अंतर्यामी । अंतर दशा देख किन आमी ॥ आवत क्यों न समीप हमारे । दुःख दशामदया किनधारे ३९ कै अन्तर्यामी वह नाहीं । कै निर्दय बेशील सदाहीं ॥ ऐसे कोटिन चरित सुहाये । ब्रजसुन्दरी पुराणन गाये ४० गोपिन काहँ बिरह युत देखी । उद्धवमन भइ दया बिशेखी ॥ व्याकुल भये चित्तमें भारी । भगवत की निर्दया निहारी ४१ यह चरित्र देखो तिहि काला । गोपिन सँग देखे गोपाला ॥ काहू संग हँसत यदुराई । काहू की दधि लेत चुराई ४२ गऊ बत्स कहुँ बांधत धाई ॥ गऊ दुहत कहुँ आनँद पाई ॥ कहूँ सखा निज टेरि बुलावैं । कहुँ बंशी बजाइ सुख पावैं ४३ गऊ चराये बनसों आवत । गोपिन बंशी शब्द सुनावत ॥ गोपीनि करि द्वारपर आईं । मन चितलागो कुवँरकन्हाई ४४ उद्धव लखि आश्चर्य भुलाने । बे सुधि भये न यह कछु जाने ॥ गोपी उद्धव कहँ समुझावत । तू उद्धव किहि ज्ञान सिखावत ४५ कौन प्रयोजन है इत ज्ञाना । तू क्यों लखि यह चरित भुलाना ॥ गोपिन संग सदा हरि आहीं । कबहुँ ब्रजसों अलग नजाहीं ४६ दो० । गोपी चरित अपार है सुकवि न पावत पार । जियालाल किमि कहि सकै अति मतिमन्द गवाँर ४७ ॥

मीराबाई की कथा ॥

श्रीगोपीजन भक्तिसमाना । मीराबाई भक्तिबखाना ॥ निर्भय

भक्ति अशंक्क सुहाई। भगवत में पूरण चित लाई ४८ कुलकी परम्परा तजि दीन्ही। गिरिधर लाल माहँ रति कीन्ही॥ निर्मल यश जिन भक्त नगायो। बरणौं तिन को चरित सुहायो ४९ कारण प्रीति होन कर एहा। गिरिधर लाल मूर्ति रह गेहा॥ कतहुँ बरात ग्राममें आई। देखनधाये लोग लुगाई ५० इनकी मातु महल चलि आई। गिरिधर लाल जहाँ सुख दाई॥ मीराहू पीछे चलिआई। चार वर्ष की वयस सुहाई ५१ माता सों पूछन यह लागी। हमरो दूलह कौन सभागी॥ सुनि हँसि लीन्ह गोद बैठारी। गिरिधर लाल कि ओर निहारी ५२ कहत भई तब पति है एहा। मीरा सुनत बढ़ायो नेहा॥ घुंघुट वाही क्षण करिलीन्हा। पूर्ण प्रीति ताक्षण सों कीन्हा ५३ पल नहिं कल बिन दर्शन कीन्हे। स्वामी माहँ चित्त अति दीन्हे॥ कछु दिन गये पिता अरु माता। किय बिवाह चलि आइबराता ५४ नृप चित्तौर सुवन सुख दाई। तासोंकीन्ही तासु सगाई॥ राना सुत संग भावरिहोई। गिरिधर लाल जान यह सोई ५५ मातु पिता किय बिदा तयारी। मीरा जानि कियो दुखभारी॥ गिरिधर लाल वियोग कराला। सहिन सकी मीरा तिहि काला ५६ दो०। सोरोये बेसुधि भई मातु पिता लखि एह। जो चाहौ सो लीजिये कहत भये युत नेह ५७ छन्दमनहरण। सुनत बचन मीरा कहत बिकल अति हमहिं जियाइबेकेहेतयह कीजिये। तनमन धन लाइ सेवा मैं करौंगी मातु गिरिधरलाल जीको हमहिं दे दीजिये॥ इन बिन जीवन हमारो नहिंहोइ मातु कोटिन उपाय करिकरि किन छीजिये। मातु पिता दुखित बिलोकि हियलाइलीन्हों कहोयुत प्यार गिरिधर लाल लीजिये ५८ दो०। गिरिधर लालहि पाइकै मीराअति सुख पाइ। निज डोला बैठायकै प्रभु छबि निरखत जाइ ५९ प्राणप्रियको पाइकै उपजो सुख कह कौन। प्रभु छबि देखत छकित चख पहुँची राना भौन ६० सासु उतारी पालकी रीति भांति करि **अग्र**।

दुर्गा पुजवायो सुतहि मीरा सों कह तत्र ६१ दुर्गा देवी पूजिये जासों बढ़ अहिवात। सुनत सासुके बचन इमि कहमीरा यह बात ६२ मैंतौ गिरिधर लाल हित भेंट कियो यह देह। नवै दूसरे कोकि विधि शीश परायो एह ६३ छन्दमाधवी। नवशीश यदानँदलाल बिना तिहि काटिकरै किन भिन्नसही। कट बुद्धि भुलाव जुगान हरी कटिजीभ गिरै गतनाम मही॥ कटि हाथ गिरैं हरि पूज बिना कटि पाद गिरैं गतक्षेत्र नहीं। मति हीन हियो जरिजाइसदा पदकंज बिना मनहेरतही ६४ नाहिं आंखिग हैं किमि अंधपदै हरिरूप लखै नाहिं जौन हिये। बधिरत्वग हैं किन कर्ण दुहू नँदलाल सुधानहिं पानकिये॥ जपयोग बिराग सबै धृग है ब्रजराज बिना मन पाददिये। जन धन्य सदा ब्रजराज पदै जल जानिमनैं मनमीन लिये ६५ दो०। मीराबाई सासु सुनि अप्रसन्न तिहिकाल। जलबल करि पति ढिगगई कहत भई सब हाल ६६ कीन्हों राना क्रोध सुनि मारन कियो उपाइ। तिहिरानी समुझायऊ तबतौ रहो चुपाइ ६७ चौ०। अलग भवनमें दियो टिकाई। भगवतसह मीरातहँआई॥ मीराजाइ बास किय जहँवां। गिरिधर लाल बिराजे तहँवां ६८ भगवत काहँ बास शुभदीन्हा। अति शृंगार साज सब कीन्हा॥ अहनिशि तिन में मनहिं लगायो। तिन सतसंगति काल बितायो ६९ रानाकी पुत्री छबिधामा। उदाबाइ रह जाकर नामा॥ मीराके समीप चलि आई। याविधि वचन कहे समुझाई ७० बड़घर की बेटी तूआई। भाभी सुन बिवेक मनलाई॥ बैरागिन को छोड़ैसंगा। कुल कलङ्क दोनोंके अंगा ७१ मीराबाई कह सुनिलीजै। शुभ उत्तर तुमको हम दीजै॥ कोटि न जन्म कलङ्क नशावै। जो सतसङ्गतिमें मनलावै ७२ जिहि सतसंगति नहीं पियारी। सोइ कलङ्की नरतनु धारी॥ सतसंगति जिन्दगी हमारी। दुखितहि शिक्षा उचित तुमारी ७३ उदाबाइ सुनिकै फिरिआई। मातु पितासों कह्यो बुझाई॥ मीरा-

बाइ भक्ति दृढ़धारा । काहू वचन न करिहि बिचारा ७४ राना सुनत क्रोध अति करिकै । पठयोगरल कटोरा भरिकै ॥ चरणामृतको नाम सुनायो । मीराहर्षित शीश चढ़ायो ७५ अतिआनन्द सहित किय पाना । करन लगी भगवत गुण गाना ॥ राना सुनि अति हर्षित भयऊ । अब मीरावध याविधि कयऊ ७६ निरखत कहत कोउ अबआई । मीरा दीन्हे प्राणगवाई ॥ इत मीरा मुख कमल सुहावा । क्षण क्षण में शोभाअति पावा ७७ महाराजश्री गिरिधर लाला । के शृंगार माहँ वेहाला ॥ शोभामाहँ छकी अति सोई । नये प्रकार साज सबजोई ७८ करत साज सबनाना भांती । पुनि भगवत कीर्त्तन सुख पांती ॥ रस अरु प्रेमामृत में भरई । सेवानई विविधि विधि करई ७९ हालाहल गरमी कछु जानी । भगवत सों तब विनय बखानी ॥ विरसन व्यथा नेकनहिं व्यापी । रानादांत जीभ तब चापी ८० द्वारपाल राखेतबराना । तिनसों याबिधि बचन बखाना ॥ साधुन बोलै मीराबाई । दीजो तब तुम हमहिं बताई ८१ बधकरवावहिं तबतिहि केरा । द्वारस्थितसुनि पहुँचे तिहिबेरा ॥ दिनदिन प्रति श्री मीरा बाई । गिरिधर लाल साथ सुख पाई ८२ ठट्ठाहँसी खेल बतरावा । प्रिय बल्लभ सँगहो जस भावा ॥ काया अभिमानी जिमि करई । ता बिधि महामोद उर भरई ८३ द्वारपाल इकदिन सुनिपायो । राना के ढिग खबरि पठायो ॥ कीया क्षण पूरुषहै कोई । ठट्ठाहँसी करत हैसोई ८४ नग्न खड्ग लै राना धायो । खोल कपाट पुकारि सुनायो ॥ खोले मीराबाइ केवारा । भीतर गो नहिं काहु निहारा ८५ क्रोधित कहो गयो वह काहां । ठट्ठा हँसी करत रहयाहां ॥ मीरा जीने वचन उचारो अहै बिराजत अग्र तुम्हारे ८६ आंखी खोलि देखि किन लीजै वाकी तुमसों लाज न कीजै ॥ मीराबाई गिरिधर लाला । रहे खेलि चौसर तिहि काला ८७ राना पहुँचत भो जिहि काला। पासाडारन हरिकर चाला ॥ पासा भगवत करसो देखी । मन

में लज्जा कियो विशेखी ८८ घूमि बहुरि निज मन्दिर आयो। यह प्रताप तहँदेख न पायो॥ परन नेक निश्चय दृढ़ आई। तब लगि कृपा न कर यदुराई ८९ दो०। जबलागि कृपा न करत हैं भगवत भक्त कृपाल। जियालाल तब लागि नहीं अपनावत नँदलाल ९० मीरा जीके बचन को राना करत उपाइ। कृपा करहिं नँदलाल किमि नतुलेते अपनाइ ९१ चौ०। कोऊ साधूभेष बनायो। मीरा के समीप चलि आयो॥ कहोकि आयसु गिरिधर लाला। मोको दियो सुनिय ततकाला ९२ पुरुष अंग संग सुख जोई। मीरा जीको दीजै सोई॥ मीराबाईने सुनि एहा। कहो करौं शिरधरि युतनेहा ९३ भोजन प्रथम आपु करि लीजै। अंग संग मोसों पुनि कीजै॥ यह कहि मीरा तहँचलि आई। संतन की जहँ बैठिअथाई ९४ आंगन माहँ पलँग बिछवायो। पुनि सजिकै निज अंग बनायो॥ धूर्त्तसाधु कहँ बोलि पठाई। कहो कि पलँग पधारिय आई ९५ लज्जा भयकछु नेक नकीजै। गिरिधर लाल बचन चित दीजै॥ आज्ञापालन उचित सदाई। सुनत मूर्ख वह गयो सुखाई ९६ गयोमोह उर ज्ञान प्रकाशा। मीराबाइ चरण किय आशा॥ त्राहि त्राहि इमि कहिबे लीन्हा। मीरादेखि दया अति कीन्हा ९७ दीन्ही भगवत भक्ति सुहाई। मीरा कथा अपर सुखदाई॥ अकबर बादशाह यह जानी। मीरा है अति सुन्दर रानी ९८ तानसेन को संग लवाई। दर्शन हेत गयो सुख पाई॥ दर्शन कीन्ह भक्ति अति देखी। आपुहि जानो धन्य विशेखी ९९ तानसेन अति हर्षित भयऊ। हरिहि समर्पि विष्णु पद दयऊ॥ आनन्दित दोनों घर आये। मीराबाई आनँद पाये १०० दर्शनहित वृन्दावन आई। गईरहत जहँ जीव गुसाई॥ दर्शन हित कहाइ पठवायो। जीवगुसाइँ बचन सुनायो १०१ युवतिनको देखत हमनाहीं। सुनि मीराबोली तिनपाहीं॥ हमसब सखी रूपइत जाना। गिरिधरलाल पुरुष इकमाना १०२ पर

अचयहौ आजु हमजाना। हैं ब्रजराज दुसरिहा नाना॥ जीव गुसाईं सुनि यह बाता। नांगेपग धाये हरषाता १०३ दर्शन मीराजीके कीन्हे। प्रेमपूर्णहो आनँद लीन्हे॥ फिरि मीरा जी आनँद पाई। सब बन कुंजन जाइ मँझाई १०४ भगवतरूप मधुर सुखदाई। धारिहि ये निजदेश सिधाई॥ द्वेषबुद्धिराना की देखी। गइ द्वारका बहुरि बिशेखी १०५ गिरिधरलाल शोभ में छाकी। हरिशृंगार मगन मतिजाकी॥ रहीतहां मीरा सुख पाई। राना नगर न साधु लखाई १०६ मीरागमन सवन सुनि लीन्हा। तजि आगमन साधुजन दीन्हा॥ होन उपद्रव बहु बिधि लागे। राना भे चितासों पागे १०७ भक्ति प्रताप जानि मनमाहीं। ब्राह्मण बोलि पठायो ताहीं॥ मीराको लावहु पलटाई। सुनतहि बिप्र चले तहँ धाई १०८ पहुँचे चलि मीरा ढिग जाई। रानाकी तिन बिनय सुनाई॥ पुनि बिप्रन जानो मनमाहीं। मीरा जानचहत अबनाहीं १०९ तब धरने बैठे सब बिप्रा। तजिहैं अन्न चलहु नतुछिप्रा॥ कहमीरा सुनिये द्विजराई। बिदाहोइ भगवत सों आई ११० श्री रणछोर कृपा इतवासा। औरनहीं हमरेकछु आसा॥ मीरागई भाषि या भांती। गिरिधरलाल प्रेमरंग राती १११ प्रेम मग्नहो कीन्हों गाना। तुमसब घटके अन्तर जाना॥ मीराके प्रभुगिरिधर नायक। अबन बिछोह करिय सब लायक ११२ भगवत आनँदघनसुख खानी। परमप्रीति मीराउर जानी॥ करिनहिं अलग सकेतिहि काला। लीन्ह मिलाइ अंगनिज हाला ११३ देरभई तब ब्राह्मणधाये। ढूंढन भगवत मन्दिर आये॥ मीराकाह तहां नहिं देखा। तिनको अम्बरलखो बिशेखा ११४ भगवत पीताम्बर नहिंलेखा। मीराकी सारीतन देखा॥ निश्चय भक्ति जानि मनमाहीं। आयेघूमि नगर निजकाहीं ११५ मीराकी यात्रा सुनि पायो। अकबरबादशाह चढ़ि आयो॥ गढ़चित्तौर घेरि पुनि लीन्हा। करिके युद्ध विजय सो कीन्हा ११६ दो०। या

विधि मीराकी कथा शुभग रूपरस खानि। भगवत वपु संतन सुखद जियालाल मुददानि॥ ११७॥

करमैतीजी की कथा॥

चौ०। करमैती जीकी शुभ गाथा। बरणौं अब भगवत यश साथा॥ शिखादत्त नृप कण्डिल केरे। परशुराम तिहि प्रोहितहेरे ११८ तिन कन्या करमैती नामा। भगवत भक्त भई छबिधामा॥ कलिकरगड जो भरो कलङ्का। निकट न आव भई नहिं शंका ११९ जिन निज पति को दियो बिहाई। निर्विकार पति हरि मन लाई॥ जगत फांस तृणके समतोरी। बृन्दाबन किय बास वहोरी १२० परशुराम ब्राह्मण धनि गाये। जिन ऐसी कन्या प्रगटाये॥ जासु भक्ति शुभ भक्तन गाई। ताकी को करि सकै बड़ाई १२१ महाराज श्री कृष्ण कि शोभा। कोटिनकाम लाज छबि लोभा॥ छबि चिंतवन रहत सो बाला। ध्यान मग्नरहती सब काला १२२ आनँद स्वाद लेत या भांती। निज शरीर में नहीं समाती॥ सबजग काम असार बिचारा। फीका लगत सकल संसारा १२३ द्विरागमन हित तिन पति आयो। मातु पिता सब साज सजायो॥ बिदा करन हित करी तयारी। भयो शोच करमैतिहि भारी १२४ भगवत भजन हेत यह देहा। बिषय भोग के हित नहिं एहा॥ तनत्यागन इच्छा मनदीन्ही। पुनि विचार अपने मनकीन्ही १२५ भगवत भजन प्रीति है सारा। जगत प्रीति सम्बन्ध असारा॥ बिना शरीर भजन नहिं होई। त्यागव उचित नजानो सोई १२६ योग त्यागि बेभजन विरोधी। यह सिद्धान्त हिये निज शोधी॥ जिहि निशि भोर गमन नियराना। तिहि आधीमें कीन्ह पयाना १२७ भगवत छबि में छकी छबीली। ध्यान मग्न चलि भई अकेली॥ निर्भय निपटि निराली सोई। तात्तण जानत भोनहिं कोई १२८ प्रात जागि सबढूंढन धाये। करमैती देखो जन आये॥ मृतक ऊंट

कंकार समानी। तामहँ छिपी न कोऊ जानी १२९ कलियुग अघ दुर्गन्ध समाना। मृतक ऊँटदुर्गन्धन जाना॥ पुनि भगवत शृंगार सुहावा। अतर सुगंध हिये महँ छावा १३० सो दुर्गंध विकार न आई। तीनि दिवस तहँ रही छिपाई॥ चौथे दिवस निकर यह देखा। मेला गंगा जात बिशेखा १३१ ताके सँग गंगा पर जाई। दाना भूषण किये अन्हाई॥ मथुरा माहँ बहुरि चलि आई। मज्जन यात्राकिय हरषाई १३२ गई बहुरि वृन्दाबन खासा। ब्रह्मकुण्ड पर कीन्ह निवासा॥ हरि चितवन अपर जो ध्याना। रहन लगी तामें सुख दाना १३३ करमैती के पिता सुहाये। ढूंढ़त मथुराजी में आये॥ चौबे एकपता बतलाये। पता पाइ वृन्दाबन आये १३४ हरि तस घन वृन्दाबन देखी। सोवटैक चढ़ि गये बिशेखी॥ ध्यानमगन करमैतिहि देखा। उतरि वृक्ष ढिगगये बिशेखा १३५ रोदन करि चरणन लपिटाने। स्नेहात्यंत माहँ अकुलाने॥ कहत भये तुम इतचलि आई। कटीनाक मेरी बिचभाई १३६ मारत बचन सकल हैं मोहीं। सकल कलंक लगावत तोहीं॥ अब घरको चलिये सुनि लीजै। रहि घरसासु भक्तिहरि कीजै १३७ कानन यह गंभीर महाई। कोऊ जंतुजोइ इतखाई॥ हमको दुखहोवै अतिभारी। मरत जियावहु मातु तुम्हारी १३८ करमैतीजी सुनिये बैना। उत्तर देतभई गुण ऐना॥ जासु भक्ति भगवत उरनाहीं। सत्यमृतक सम जानिय ताहीं १३९ जीवनकीआशा जो चाहै। भगवत भक्ति हिये अवगाहै॥ नाक कटीजो भाषी ताता। ताकी यह सुनिलीजै बाता १४० प्रथमहि सोन नाक हम देखा। नाक सु भगवत भजन बिशेखा॥ ता बिन नकटा कोटिन आहीं। शोचकरिय किन पितु मनमाहीं १४१ वर्ष पचाश भये तनुधारी। विषय विलास आश नहिं दारी॥ अब हूं मोह नींद सो जागो। विषय तुच्छ गुनि हरिपद लागो १४२ भगवत भजन सार गुनि लीजै। तजि सबबहीऔर मनकीजै॥

ऐसो सुनि उपदेश सुहावा। परशुराम अज्ञान नशावा १४३
जिमि तमहो सूर्योदय नाशा। नशे मोहहिय ज्ञान प्रकाशा॥
करमैती मन आनँद लीन्हा। भगवत मूर्ति तिनहिं इकदीन्हा
१४४ बिदा कीन्ह हर्षित घरआये। मूरति सिंहासन बैठाये॥
या बिधि तिनपद चित्तलगायो। तजि हरिभजन न दोसरभायो
१४५ आवन जान बोलबतशावा। सबतजि हरिपद चित्तलगा-
वा॥ कहदिनैक नृपलोगन पाहीं। परशुराम आवत अबनाहीं
१४६ ताके समाचार हैं कैसे। लोगन कहो रहत सो जैसे॥
राजा तिनकहँ बोलि पठायो। परशुराम तब बचन सुनायो१४७
नृपसों हमसों काम न कोई। करत करन चह नरतन जोई॥
ब्राह्मण हिये भक्ति असि देखी। अरु वैराग्य बिचार बिशेखी
१४८ दर्शन हित आपुहि चलि आयो। सांचीप्रीति देखि सुख
पायो॥ करमैतीजी को सुनि हाला। प्रेमबिकल भो नृपति-
हि काला १४९ दर्शनहित इच्छा मनधारा। पुनि अपने मन
कीन्ह बिचारा॥ मेरो भाग्य उदय जो हैहै। तौकरमैती जी इत
ऐहै १५० देश पवित्रकरैं किनआई। कहि बृन्दावन गे नरराई॥
करमैती के दर्शन कीन्हा। निश्चल भक्ति तासुलखि लीन्हा
१५१ दो०। नन्दनँदन महराजमें देखो दृढ़ विश्वास। बहुन
वारता करिसके चलन हेतनिजवास १५२ मनाकरत यद्यपि भई
तदपि नृपति गुण ऐन। कुंज कुटी बनवायऊ करमैती सुख
दैन १५३ करिदण्डवत सप्रेमनृप फिरिआये निजगेह। चरण क-
मल भगवतविषे करतभये अतिनेह१५४ करमैतीजीकी कुटी ब्रह्म
घाटपर सोह। जियालाल याविधि कथा मंगलसुखसंदोह॥१५५॥

नरसी जीकी कथा॥

सो०। नरसीजी महराज होतभये गुजरातमें। स्मार्त्त धर्म
शिरताज भगवत भक्ति न जानई १५६ चौ०। तिलक माल
धारे जिहि देखै। ताकी निन्दाकरै बिशेखै॥ सोई परम भक्तअस

भयऊ। हरि समीप कोटिन करि दयऊ १५७ शृंगारहु माधुर्य्य उपासी। भेगोपिन सम प्रभा प्रकासी॥ भये काल वश मा पितु जबहीं। आश्रय भाइ भवजभे तबहीं १५८ जूनागढ़ मन्दिर छबि पावा। एक दिवस कर चरित सुहावा॥ खेलत वाहरसों घर आये। भावजसों वोले श्रमछाये १५९ दे मोकहँ जल नेक पियाई। सो बोली अति क्रोधहि पाई॥ करिलाये ऐसिही कमाई। जो तुम को जलदेहुँ पिलाई १६० नरसी को लज्जा अति लागी। गुनो जिन्दगी वृथा अभागी॥ शिवजी की सेवा में आये। अहनिशि बिन जल अन्न बिताये १६१ तब शिव जीने कियो बिचारा। परोआइ यहहमरे द्वारा॥ करत मनुष्यहु रच्छाद्वारे। हमतौ हैं जगके रखवारे १६२ प्रगटि रूप निजदर्शन दीन्हा। मांगहु चहिय जुकहिबे लीन्हा॥ नरसीजी सुनिविनय बखाना। मैंवर मांगन को नहिं जाना १६३ आपु काहँहोवै प्रिय जोई। दीजिय हमहिं कृपा करि सोई॥ शिवजीके चिन्ता मनआई। जो मम प्रिय बेदांतन पाई १६४ पार्वती जानतनाहिं भेवै। सो कैसे मनुष्य यह लेवै॥ पुनि शंकर मन कीन्ह विचारा। याको हो परभाव अपारा १६५ तासों देश कृतारथहोई। यह विचारकरि शंकरसोई॥ नरसी सहित सखी वपुकरिकै। आये बृन्दावन मुदभरिकै १६६ लखो रासमण्डल तहँ आई। कंचनमयसबभूमि सुहाई॥ रत्नजटित शोभा अतिराजै। जहँ असंख्य गोपीगणसाजै १६७ गोपिनमध्य सिंहासनसो है। देखत सुरनर मुनि मनमोहै॥ सिंहासनपर परम सुहाये। प्रीतमप्रिया महा छबिछाये १६८ जिनशोभा परकाश निहारी। चन्द्रचांदनी काहविचारी॥ रासविलासहोत अतिनीको। जहँत्रिलोक सुखलागत फीको १६९ दोहा॥ कबहुँतालदै प्रियाजी प्रीतमको समुझाव। प्रीतमकहु सांगीतगति प्रियाहेत सुखछाव १७० नृत्यपरस्पर कहुँकरत गलबाहींदैसोइ। गानकरतकहुँ कर पकरि मण्डल मधिगतदोइ १७१ चौ०। कबहूँअपरगोपिकन

साथा। गानकरत सुरनायकनाथा ॥ नाचत बिचअनेक-बपु धारी। श्रीराधावर कुंजबिहारी १७२ ठट्ठाहँसी करत कहुँराजें। कवहूँबीन पखावज बाजें ॥ बाजाबाजें बिबिध प्रकारा। मिलें तालस्वर सहित अपारा १७३ रागिनि छहोराग सुखबाढ़ें। सखीरूप सुन्दर तहँठाढ़े॥ नरसीजी यह देखि समाजा। भयेकृतार्थ रूप दुख भाजा १७४ शिवजीकी पुनि आज्ञा लहिकै। लगेमशाल दिखावनगहिकै ॥ ब्रजकिशोर कह प्रियहि बुझाई। आजुनवीन सखीयह आई १७५ तबहिं प्रियाजी कहो सुनाई। शिवजी साथ आजुयह आई ॥ नट नागर महराज कृपाला। कृपादृष्टि लखिभये दयाला १७६ नरसीजीसों कहो बुझाई। अवतुम जाहु भुवन सुखपाई ॥ जोइतमें देखो तुमआई। ताको ध्यान करहु मनलाई १७७ जब जिहिकाल बुलावो हमको। दर्शनदेउँ आइतव तुमको ॥ भगवतआज्ञा नरसीपाये। आनँद मग्न धिष्णनिजआये १७८ मन्दिरएक अलग बनवाई। ध्यान समाज करत मनलाई ॥ कीन्हविवाह विप्र इकआई। एकपुत्र कन्या द्वैजाई १७९ जगमें भगवत भक्तिपसारा। सेवासाधु करी सुखसारा ॥ अहनिशि भगवत भजन विनाहीं। दोसर काम कियो कछुनाहीं १८० तिनको चरितदेखि तिहिबारा। विप्रसजाति द्वेष उरधारा ॥ लगेशत्रुता करन अपारा। परकछु करि न सके तिहिबारा १८१ रूपसमुद्र मग्न हरिकेरे। कृपादृष्टि भगवत नितहेरे ॥ करिकछुसके न तातेलोगा। आयेसाधु दैवकेयोगा १८२ पूछतभे सब लोगनपाहीं। द्वारावती जात हमआहीं ॥ साहूकार यहां है कोई। हुण्डी करै हमारी जोई १८३ मानभंग चाहत नर जोई। करिकै हँसी कहतभे सोई ॥ नरसीजी हैं साहूकारा। भयसनकरि हैं अंगीकारा १८४ चरण पकरि लेहौ तुम जवहीं। हुण्डी करहिं तुम्हारी तवहीं ॥ सुनिकै साधु तहां चलिआये। मुनिशतमुद्रादै शिरनाये १८५ कहहुण्डी हमारि करिदीजै। यं तो सुयश जगत में लीजै ॥ कह नरसीसों

पैनहिं होई। जोरत भये हाथ सुनिसोई १८६ नरसीजी विचार मन लाये। कोउ इनहिं बहकाइ पठाये॥ अथवा भगवत रचा उपाई। शत्रुन उर प्रेरणा कराई १८७ समहित खरच दीन पठवाई। हुण्डी लिखी तुरित सुखपाई॥ साधुन सों बोलेसमुझाई। सांवलशाह नाम यह भाई १८८ तिनहीं के करमें यह दीजो। बहुरि समशात मुद्रालीजो॥ साधुगये द्वारकानुरागे। साहूकारहि ढूंढ़न लागे १८९ ढूंढ़त कतहुँ पता नहिं पाये। अति व्याकुल पुरबाहर आये॥ की भोजन करिआवहिं जाई। ढूंढ़हिंबहुरि साह को आई १९० सांवलशाह विचारो मनहीं। कठिन खोज बिन लहे न हमहीं॥ योगी यतन करत बहु हारे। तबहुँ न पाये दरश हमारे १९१ परजो अधिक कष्ट इन देहौं। तो जगमें यह अपयश लेहौं॥ नरसीजी जोसाहूकारा। ममगुमास्तगी को अधिकारा १९२ दो०। तामें बट्टा लागिहै भगवत चित्त बिचारि। बड़ी पाग शिर धारिकै लम्बी धोती धारि १९३ साहूकारकरूपकरि कटि कसि कंचुक धारि। कांख बही लेखनि करन थैली कंधे डारि १९४ साधुटिके जहँवांरहे पूंछत भे तहँ आइ। नरसीजी की हुण्डिका को लायो इतभाइ १९५ प्राण परे सुनि साधुतन बोले एकहिबार। महाराज लाये हमहिं ढूंढ़त भई अवार १९६ ढूंढ़त हारे करिकृपा मिले आप अबआइ। साह कहो किहि हेत तुम हमहिं लजावत भाइ १९७ ढूंढ़त हम तुमको फिरत गये कईदिनबीति। पता न लागो नगरमेंताकी है यह रीति १९८ सोईमोको जानई जो भगवत निज दास। यह कहि मुद्रा देतभे लैहुण्डी तिन पास १९९ पत्र लिखोसुखपाइकै नरसीजी हित सोइ। पत्री लै मुद्रादिये लिखो आपुनेजोइ २०० जानि गुमास्ता मोहिं निज लिखतरहब सब काल। यात्रा करि साधूतहां जातभये पुनि हाल २०१ नरसीजीको पत्र वह देतभये तिहिकाल। साधुनसों कहतुमलखे सांवलशाह कृपाल २०२ चौ०। बोलतभे साधू सुखपाये। महाराज हमलखिकैआये॥

रँगेप्रेम रँगनरसीजीसुनि । अङ्ग लगाइ मिलेसाधुन पुनि २०३ साधुन जब जानो यह हाला । रँगेप्रेमरँगभये बिहाला ॥ सकल द्रब्य साधुन की जोई । सेवासाधु लगाई सोई २०४ कारण यह मन करि सन्देहा । साहूकार रुपैयाएहा ॥ तिन ढिग पठवन च-हिये सोई । तहँवांजाइ सकत नहिंकोई २०५ सेवासाधु सकत पहुँचाई । यह विचार नरसी मनआई ॥ नरसीजीकी कथा सु-हाई । अपरकछुक वरणौं सुखदाई २०६ बड़ी कन्यकाके सुत भयऊ । छूछकको सामान न गयऊ ॥ सासु आदि गृहबनिता जेती । तनुजहि बोलीमारहिंतेती २०७ तब कन्या अतिहीदुख पाई । नरसीजी ढिगपठव कहाई ॥ देत महादुख मोकहँ सासू । कुछदै सकियत लाइयआसू २०८ नरसीजी जबयह सुनिपाये । जीरण शकटचढ़ तहँआये ॥ कन्यादेखि दशा कंगाली । बोलत भई वचन इमिहाली २०९ तुम्हरे पासरहै कछुनाहीं । तौआयेका गुनि मनमाहीं ॥ नरसीकहो न चिंताकीजै । सासु आपनी सों कहिदीजै २१० छूछक सामादेहिं लिखाई । सोहम उनको देहिं मँगाई ॥ सुनिकन्या वरणो सबजाई । सुनतसासु मनउठी रिसा-ई २११ नगरतमाम लिखी सबसामा । वस्त्राभूषण विविध ल-लामा ॥ लैकागज्ञ सो कन्या आई । नरसीबहुरि कहो समुझाई २१२ घूमिपूंछि आवहु पुनिजाई । भूलोहोइ सुदेहिं लिखाई ॥ तब क्रोधित लिखिदीन्हा सासू । दोपत्थरहु भेजिये आसू २१३ टूटोमन्दिर दीन्ह वताई । नरसीजी उतरेतहँजाई ॥ उष्णतोय मज्जन हितभेजा । छुयोनजाइ अग्निसम तेजा २१४ भगवत तबहिं मेघ बरषाये । शीतलदेखि मंजि हरषाये ॥ परदाडारि बैठ सुखपागे । भगवत कीर्त्तन करिवेलागे २१५ सहरुक्मिणी कृष्ण तहँआये । सब असबाबलिये सुखछाये ॥ नानाभरण वस्त्र समुदा-ई । भगवततिनहिं देतभेलाई २१६ दो० । लागी पहिरौनीबटन ग्राम जनन सुखदाइ । जैसेनहिं आंखिनलखे पहिरतभे सुखपाइ २१७ पत्थरद्वै पुनिदेतभे एक स्वर्ण इकरूप ॥ नरनारी तिहिनगर

सजि धारोरूप अनूप २१८ छायो नरसीको सुयश नगर देश
अरुग्राम ॥ अजहूँ साधु समाज में गावत सुयश ललाम २१९
एक नारिपायो कछु नाहीं। नाम चढ़ो नाहिं कागजमाहीं॥
कहकन्या पोशाक हमारी। लीजै सो इमि कहा विचारी २२०
जाके कर सबहीं ने पायो। लेहौं ताही हाथ सुहायो॥ कन्या
उर संकोच बिचारी। नरसी हरि सुमिरे तिहिवारी २२१ ताहूको
दीन्हो हरिदयऊ। कन्यादेखि महासुद कयऊ॥सबको सुखी की-
न्ह पितु आई। कन्यां फूलि न अङ्ग समाई २२२ पितुकी भक्ति
देखि अतिसोई। तजिदीन्हे पति आदिक जोई॥ नरसीजीके
साथ सिधाई। भगवत भजन लगीहरषाई २२३ दूजी कन्या
व्याह न कीन्हो। भगवत भक्ति माहँ चितदीन्हो॥ ऐसे नरसी
चरित अपारा। जियालाल कहिलहको पारा २२४ नरसी
जीकी कथा सुहाई। औरौ कहौं संत मनभाई॥ दोगाने वाले
नर कोई। गावत फिरत नगर महँ सोई २२५ कौड़ी एक कहूं
नहिं पाये। कोऊ नरसी नाम बताये॥ कहो कि उनघर जाहु
सिधाई। तहां भली विधि पावहु भाई २२६ सुनि कै तुरित त-
हां चलि आये। नृत्य गान करिबे मनलाये॥ नरसी कहो काह
हम दीजै। हमहूं को फकीर गुनि लीजै २२७ भगवत भक्ति च-
हिय तौ लीजै। और कछू निज चित्त न दीजै॥ सुनत कियो
तिन अंगीकारा। मिले समाज माहँ तिहि बारा २२८ नरसी
को मामूरह जोई। नृपमंत्री जूनागढ़ सोई॥ नरसीजी को
शुभ आचारा। लखि मन में किय क्रोध अपारा २२९ पाखण्डी
कहि नृपहि हटायो। चोपदार पुनि लेन पठायो॥ चले तुरित
नरसी जी सुनि कै। कन्या गायकहू सँग पुनिकै २३० पहुंचे
नृपति सभा महँ जाई। जासु तेज जनगये छिपाई॥ कोऊ
कछू कहत नहिं भयऊ। पण्डित एक कहन इमि लयऊ २३१
सङ्ग सखिवो तरुणी केरा। लिखो कहां कहिये या बेरा॥ नरसी
जीसुनि उत्तर दीन्हा। शास्त्र पुराण वेद लिखि लीन्हा २३२

जाउर भगवत भक्ति अनूपा। परम भागवत भगवत रूपा॥
नर नारी कोऊ किन होवै। निमिष संग कोटिन अघ खोवै २३३
भगवत श्रीमुख कीन्ह बखाना। मथुरा की नारी धनिमाना॥
तिनके पति बहुकरी बड़ाई। धन्यभाग तरुणी सुखदाई २३४
पढ़न हमारे को धिक्कारा। भगवत बिमुख सहत दुख भारा॥
धनि युवती हरिभक्तिहि पाई। हम ब्राह्मण गे मान बुढ़ाई २३५
लिखो भागवत में पुनिसोई। बड़ो सुकिलायक वह होई॥
सोसतसङ्गी सेवा लायक। भक्तिहिये हरि जासु सहायक २३६
उद्धव सों भगवत कह सोई। श्वपचहु भक्त बड़ो मम होई॥
ऊंचो कुल लघुभक्ति बिहीना। दिनमणि बिन दिन यथामलीना २३७ पुरुष न पुंसक नारिकुजाती। उर युत भक्ति श्रेष्ठ सब भांती॥ पण्डित खण्डित भक्ति बिहीना। सब गुण तुच्छ न हरि पदलीना २३८ कीन्ह निरुत्तर सभा सयानी। नृपसों कहो बिप्र इक ज्ञानी॥ नरसीजी परताप अपारा। सुनो लखो हम वारहिवारा २३९ सुनत भूप मन निश्चय आई। चरण परे नरसी के जाई॥ बहुरि भुवन निजगये लवाई। आश्वासकीन्हों हरपाई २४० नरसीजी पुनि आनँद पाये। बिदामांगि नृप सों घर आये॥ भगवत के पूजन में लागे। सुमिरण भजनकरत सुखपागे २४१ गावत राग किदारो जबहीं। भगवत हों प्रसन्न अति तबहीं॥ माला देत गले निज तिनहीं। परोप्रयोजन इकदिन इनहीं २४२ सो०। साधू सेवा हेत गिरों किदाराको धरो। कहतभये मुदसेत अहै न मुद्रा गाइ हैं २४३ अखिह कायो तत्र भूपहिं अवसर पाइकै। लेहु परीक्षा अत्र नरसीजी झूठे भगत २४४ दो०। कच्चे धागा पोहिकै हरिहिमाल पहिराव। टूटिपरत है भारसों हरिदीन्ही कहिगाव २४५ भूपनि मनभाय वचन तत्क्षणलियो बुलाइ। सूत्र रेशमी दृढ़गुही माला हरि पहिराइ २४६ पुनि नरसीजी सेइविधि कहत भये नरनाह। मालातुमको देत हरि हमहूँ देखन चाह २४७ सुनि

नरसीजी बचन नृप लगे करन हरिगान। केदारा गायो नहीं नदी माल भगवान २४८ तब नरसीजी कहत भे हौ आखिरि तुम ग्वाल। एक किदाराके बिना देत नहीं यहमाल २४९ बिष्णु अहैं धनि जगत में पालत दास समाज। गही कृपणता देत नहिं माल न आवत लाज २५० तरफ़ दोसरी होनहूं देतन छवि दरशाइ। बश अधीन करि लीन्ह निज अंग अनूप लखाइ २५१ कौन हमारीहानि है लगिहै तुम-हिं कलंक। बोली मारन बचन ये सुनतभये हरिबंक २५२ करिवपु नरसीको तबै गेघर साहूकार। साहरहो सोवत तबहिं बोले बचन पुकार २५३ मुद्रा आपन लीजिये कहो नींदवश शाह। ससनारी को दीजिये लिखनो लीजिय ताह २५४ गये देखि बड़भागिनी नर्सीजन्म फल लेखि। लै मुद्रा लेखनदयो भोजन दियो बिशेखि २५५ कारण यह दर्शनलहे नारीसाहू-कार। नरसीजीसों माँगियो प्रथमहिं सो सुखसार २५६ दर्शन हमहिं कराइये दीन्हो बचन बिशेखि। बचन सत्य प्रभुकरत भे दास लाजको लेखि २५७ केदारा गावतभये नरसीजी तिहि काल। कागज़ डारो गोदमें ताहीक्षण नँदलाल २५८ अति हरषित नरसी भये कीन्हो अधिक अलाप। कर उठाइ पहिराइ-यो मालाहरि उरआप २५९ चौ०। लखिजन जयजयकार प्रका-सा। राजाउर भो दृढ़ बिश्वासा॥ चरणन परत भयो पुनि आई। दुष्टनके लज्जा उर छाई २६० पुनि बिश्वास सबन उर भयऊ। भगवत की शरणागत लयऊ॥ यह नरसीजी कथा सुहाई। जियालाल बरणीसुखदाई २६१ दो०। कन्याको बर ढूंढ़िबे चलो एकबर बिप्र। रुचि अनुकूल न पाइयो जूनागढ़गो छिप्र २६२ कोऊ दीन्ह बताइकै नरसीजीको पुत्र। रूपगुणन युत ब्याहिये अनत जाहुगे कुत्र २६३ बिप्रतहां वह जाइकै सुन्दर बालक देखि। अति प्रसन्न मनहोत भो कीन्हो तिलक बिशेखि २६४ कहनरसी कंगाल हम धनीढूंढ़ते कोइ। बिप्रबड़ा

ईकीन्ह सुनि बिनय कियो पुनिसोइ २६५ बिप्र तुरित पुरजाइ
कह कन्या पितुसों बैन। नरसीजीके पुत्रको कीन्ह तिलक
गुण ऐन २६६ नाम सुनरसी को सुनत कीन्होब्राह्मण क्रोध।
टीका लाइय फेरिकै होतनहीं ममबोध २६७ कहत बिप्र नहिं
घूमि है आये तिलक चढ़ाइ। लेहुअंगुली काटिचह गोसम्बन्ध
हढ़ाइ २६८ मानस कन्या पितुकहो यह कन्या को भाग। दा-
यज पूरण देहिंगे जाइशोचको दाग २६९ आव समीप विवाह
दिन लग्नपत्रिका तत्र। ब्राह्मण दियो पंठाइ कै नरसीजी घर
यत्र २७० लहि नरसी बिसमय रहित दीन्हो कतहूँ डारि। चर्चा
हू कीन्ही नहीं रहे ब्याह दिन चारि २७१ कार्य सवाँरन ब्याह
के कृष्णरुक्मिणी संग। नरसी घर आये लिये ऋधिसिधि पूर-
ण अंग २७२ नारी कारज रुक्मिणी सजत महासुख पाइ।
नरसीजी कारजसकल कृष्ण सवाँरेआइ २७३ मिष्टान्नहु पक्वान्न-
हू होनलगे सबठौर। बाजाबाजे गानहू वैवाहिकभो ओर २७४
बालक मुखमण्डन कियो श्रीरुक्मिणि निजहाथ। अश्वचढ़ा-
वत पुनि भई कीन्हे सेवकसाथ २७५ कीन्हे नानादानतहँ नेग-
चार सुखपाइ। रथ पालकि गजसाजि चली पुनि बरात हरषाइ
२७६ भगवत या विधि कहत भे गहि नरसी को हाथ। कारज
करहु बरात चलि गुसरहहिं हम साथ २७७ सुनि नरसीजी
कहत भे मैं नहिंजानौं एह। जानौं कीर्त्तन रावरो मनबाणीयुत
नेह २७८ सुनि भगवत अधिकार सब धारण कियो बरात।
समधी नगर समीप पुनि पहुँचत भे सुखदात २७९ प्रथमहि
सो पठवत भयो समधी लोगन तत्र। बालक कछुक बरातसह
होवै लावो अत्र २८० लोगन पूंछोजाइतहँ काकी अहै बरात।
नरसीजीकी जानिकै आवतभे हरषात २८१ आइ तुरित लो-
गन कहो सुनि लीजै महराज। घनी बरातन असि लखी
जसि देखी हमआज २८२ लोगन सों सुनि कहत भे हँसी
करन किमि अत्र। टीका विप्र चढ़ाव जो ताहि पठायोतत्र २८३

लखि बरात सो विश्वर कहो हर्षयुत आइ। अश्वन घास न दै सकत अस्ति बरात रहि छाइ २८४ सुनत विश्वरके बचन सूखि गयो सो तत्र। कछु सामान न कीन्हहम करहिं कहा अब अत्र २८५ परत भये ब्राह्मण चरण तुमराखो अबलाज। बहुरि विप्रसह जाइकै देखे सकल समाज २८६ चहूं ओर लखि परत है अति बरात विस्तार। गर्वदूरितिनको भयो खोइ गयो अहँकार २८७ विनयविप्र की पुनि करी सोलै नरसीपास। गयो देखि चरणन परे कहि चरणन की आस २८८ हाथ जोरिविनती करी तुम राखहु निज हाथ। हाथ पांव मम थकिरहे लखि बराततव साथ २८९ उठि नरसी जी मिलत भे। लीन्हों अंग लगाई। अमित कृपा पुनि करि तहां दीन्हों हरिहि मिलाइ २९० दोऊ राखहि लाज ए पुरुष विराजत अत्र। कछू शोच नहिं कीजिये ए राखत सर्वत्र २९१ एनरसी जीके बचन सुनत गये निज भौन। चली बरात समुद्रवत तिन घर कीन्हों गौन २९२ भगवत दोनों ओर के कारज किय सुख सार। भो विवाह अति धूमसों छायो यश संसार २९३ भगवत जनको चरित यह वारिधि सरिस अगाधु। जियालाल किमि कहि सकै अति मति मन्द असाधु २९४ छन्ददोवै। पत्री भूमि नील गिरि मसि करि वारिधि पात्र बनावै। पारजात संतान शाख की निज कर लेखनि लावै॥ लिखि शारदा शेष सब कालहु कोटिन जन्म गवाँवै। जियालाल महिमा संतन की तदपि पार नहिं पावै २९५ कहत बनत नहिं सुनत बनत नहिं समुझन में नह आवै। जबहीं समुझ आइ मन भासै ज्यों की त्यों रहि जावै॥ लवण पुतरि चलि सिंधु थहावन पाथिलि तहां रहि जावै। जियालाल इमि सुरति समानी कहिवे में नहिं आवै २९६ ऐसो है संतन निर्मल कहा कौन पै जाई। तीनि देव नहिं सूरसोम नहिं ज्योति जहां नहिं गाई॥ जीव तत्त्व नहिं निराधार नहिं निराकार श्रुति गावै। जियालाल इहि गति को

जानै बहुरि नया जग आवै २९७ निराकार बिच निराधार है तामें ज्योति समाई। निराधार के रोम रोम महँ कोटिन अराड महाई॥ अराड अराड में अमित लोकहैं शोभा कही न जाई। सकल भेद यह लखत संत जन जियालाल कह गाई २९८ दो०। या विधि संतन गति निरखि पंगु होत बुधि धीर। जियालाल कछु भाखियो यथापढ़ायो कीर २९९ द्वारावति भगवत गये नरसीजी निजगेह। सदा भजन भगवतकरत धारिहिये निज नेह ३०० ॥

हरिदास जीकी कथा ॥

दोहा। कथा स्वामि हरिदासकी अब बरणौं या ठौर। सब शृङ्गार ऊपासकन होत भये शिर मौर ३०१ उनहिं जैसि दृढ़ धारना उपासना के माहिं। तैसी वर्णन करतमें सुकबि मती ठहराहिं ३०२ सखी भावना में निपुण प्रीतम प्रिया समाज। नित्य बिहारहि में रहत रसभक्तन शिरताज ३०३ बसो जासुरसना विषे भक्ति प्रताप अनूप। कुंज बिहारी रटरहत हिये ध्यान हरिरूप ३०४ प्रगट भक्तिपरताप यह देश देश के भूप। खड़े रहत जिन द्वारपर दर्शन हेत अनूप ३०५ भोग लगे पीछे अशन मर्कट मोरन देत। नट नागर महराज जिहि तेतिन हँसत सहेत ३०६ कीर्त्तन विद्या गानमें जिन सन्मुख नहिं और। गन्धर्वहु लज्जित रहे जेगायक शिरमौर ३०७ एक समय यमुना पुलिन बैठेस्वामी यत्र। शीशादीन्हों अतरलै कोऊ सेवक तत्र ३०८ लै शीशा सोरेतमें दीन्हों तत्क्षण डारि। दुखित भयो सेवक लखत मनमें कहो विचारि ३०९ जानो नायातैल को गुण नहिं कछु मर्य्याद। स्वामी तामन गति निरखि बोले युत आह्लाद ३१० दरश बिहारीलाल के तुमकरि आवो जाइ। सो सेवक सुनतहि चलो गो मन्दिर में धाइ ३११ अतर सुगन्धित भवन लखि पुनि दरशन हरि कीन्ह। भीगे अंशुक अतरसों अंग सकल लखि लीन्ह ३१२ ता

के भो विश्वास उर लज्जा पाई तत्र। शीशा फेको अतर को यह कारणहै अत्र ३१३ ताक्षण श्री हरिदासजी ध्यान मग्न हरिसंग। होरी खेलत रंगहरि डारो तिनके अंग ३१४ तात्त्क्षण शीशा अतरको आयो इनके हाथ। हरि ऊपर डारत भये पूज्यो तिनको साथ ३१५ एक समय कोऊ पुरुष आयो तिनके पास। पारस मणि लै भेंट दिय शिष्य होन की आस ३१६ छन्दरामगीतिका। पारस मतिहि प्रीति भारीदेखि स्वामिविचार। प्रिया प्रीतम प्रीति किमिहो पारस में मति धार॥ कहो पारस डारि आवहु यमुनजी में एह। डारिदीन्हों जाइ यमुना सुनत गुरुके नेह ३१७ करत मनमें शोच पर यह पारसरह तोपास। सकल हरि शृंगार सेवा साधुहोत प्रकास॥ जानि यह हरिदासमनकी गई ममता नाहिं। हेतु याही संगलै तिहि गयेकानन माहिं३१८ बहुतपारस तहँ लखाये कहत भे पुनि बैन। स्वाद अरु ऐश्वर्य्य तीनहु लोक जो गुण ऐन॥ प्रात भगवत पंथके ठग जानिये सब सोइ। खैंचिमनसब ओर सों हरि चरण जबरति होइ ३१९ प्रात परमानन्द भगवत होत है तिहि काल। खैंचिसो चहुँओर सों मन चाहिये यहहाल॥ होय पारस प्रीय तौलै लेहु चाहौ जेत। सुनतसेवक बचन याबिधि परो चरण सचेत ३२० दो०। मनहिं कियो एकाग्रसो भगवत पद चितलाइ। सुमिरनकीरतिन में लगो सब जग जाल बहाइ ३२१ छन्ददोवै। अकबर वादशाह इकअवसर तानसेन से पूछा। विद्या गान तुमारा गुरुको कहौ सत्य नहिं छूछा॥ तानसेन कह गुरुहमारे स्वामीहैं हरिदासा। वादशाह दर्शन करिबेकी करत भये मन आसा ३२२ संग सिधाये तानसेन के दर्शन कीन्हे आई। तानसेन पद एकसुनायो जान बूझ बिलगाई॥ सोइपद स्वामीने गायो तानपूर करधारी। भगवत रूप भये लयश्रोता सभा भई वशसारी ३२३ अकबर शाह आइ डेरेपर फिरिवह राग गवायो। तानसेन गावतभे तबहीं पर वह रस नाहिंआयो॥ बाद शाहपूछतभे कारण

तानसेन कह एहा । सब जग स्वामी पालन हारा तासुखगाव सनेहा ३२४ गावतहैं हम सौहँ तुम्हारे सरवरिहोवै कैसे । जान- तभये सही बचन जो तानसेनकह ऐसे ॥ बिदासमय स्वमी सों भाखो बादशाह शिरनाई । आज्ञा कछु हमहूंको होवै सदाकरौं सिवकाई ३२५ कीन जबहिं हठस्वामी तब ब्रज दिव्य भूमिदर शाई । परो चरण कह योग्य यदपि नहिं करौं स्वल्प सिवकाई ॥ चणक दीजिये नित्यमर्कटन कहस्वामी इमि बैना । आपुनअब कबहुं इतआवैं ब्रज तरु कौकाटैना ३२६ आज्ञापालन करत भे स्वामी के सुनिबैन । बादशाह अयत्रचनदै जात भये निजऐन ३२७ याविधि श्रीहरिदासकी कथा महा मुदमूल । जियालाल बर्णन कियो दारकसंसृति शूल ३२८ ॥

रत्नावली जीकीकथा ॥

चौ० । कथा रत्नावलीकी यह शुभग बर्णत सोइ । भक्ति अरु शृंगार रस में रहीएकहि जोइ ॥ प्रीति पति सों खैंचि भग- वत मध्यप्रीति बढ़ाइ । भयोनहिं चल चित्त जिहिबिश्वास दीन्ह दृढ़ाई ३२९ मैर अधिपति मानसिंह सुसिंह माधव यस्य । बंधु लघुरत्नावली रह धन्य रानीतस्य ॥ सखी एक सुतस्य भगवत भक्तिमें लवलीन । ब्रजविहारी मदन मोहन नामजल रहु मीन ३३० भरत अँशुआ प्रेम के हरिनाम कहि परवीन । नाम सुनि सहप्रेम रानी सखिहि पूछन लीन । नाम बारहिंबार काको प्रेम युत तूलेत । खींचतो मनमोर तादिशि कहहि हेसखि हेत ३३१ कहसखी सोहागमें लवलीनराहिये आप । प्राप्त रत्नअमोल मोको भक्तहरि परताप ॥ भयोरानी के हिये सुनि प्रेम अद्भुत तत्र । कहहु का बिधि मिलहिं हेसखि मोहिं मोहन ध्यत्र ३३२ लखि सहेली चित्त या बिधि रानिको तिहिकाल । चरित भगवत के सुनाये मोहदारन हाल ॥ रसिक जे शृंगार रसके भक्त भे सुखदान । कथा तिनकी कहि सुनाई भक्तिवर्द्धक

जान ३३३ गुरुसदृश तिहि जान रानी चित्तआनी बात। प्रेम संयुक्त चरित भगवत सुनतसो अहरात॥ भई दर्शन चाहबोली सखीसोंइमि बैन। होइँ भगवत दरश जा विधि कहिय सो गुण ऐन ३३४ मदन मोहन रूपमेरे चित्तगयो समाइ। सुनतरानी के बचन इमि कह सहेलि बुझाइ॥ दरश ताके कठिनमिलिबो कहसहेलरि बैन। सहत कठिन कलेश जाहित सिद्ध ऋषि गुण ऐन ३३५ मिलत सोनहिं मिलतहै वह प्रेमसों सुखदान। करहु अंगीकार भगवत भक्ति भाव अमान॥ नीलमणि हरि रूपरानि विराजमान सुकीन। भोग अरु शृंगार नाना भाँति सों चित दीन ३३६ अल्प दिनमें स्वप्नमें हरि दरश होने लाग। बात चीतहु होन लागी बढ़ो अति अनुराग॥ योग जप मख दान करिकै कोटि जन्म न होइ। प्रेम की कछु राह न्यारी होत क्षणमें सोइ ३३७ दरश होवैं प्रगटमोको चहो जीमें एह। सखी सों वह बात वर्णन कीन्ह सहित सनेह॥ कहो सखि निज महलके ढिग रचहु मन्दिर एक। सावधान मनुष्य राखौ धारिउर दृढ़ टेक ३३८ साधु भगवत भक्त मन्दिर लै टिकावैं तत्र। भोजनादिक सकल सेवा होइ सुनिये अत्र॥ बैठिपरदे मांझ दर्शन कीजिये सुखपाइ। दरश होवैं ब्रजकिशोर कि यह उपाय लखाइ ३३९ सुनत रानी सोइ करिकै भई सेवा लग्न। एक दिन ब्रज साधु आये युगुल मूरति मग्न॥ थकित रानी सुनत बानी भई दर्शनपाइ। कौन अंगहै योग्य जज्जा देहु सखीबताइ ३४० सकल अंगसमान मोकहँ लखि परतहै वीर। रूप भगवत सार आनंद मग्न होवै धीर॥ यहीसार असार सबहै भाखि या विधि रानि। निकरि साधुन तीर आई गहेपग छबिखानि ३४१ दीनता अरु विनय संयुक्त दिये भोजन सोइ। विनय कीन्ही करहुँ सेवा जौन आयसु होइ॥ वह दशा तिहिप्रेमकी करिसकै वर्णन कौन। हाथ सोनेथार सबको दीन्ह भोजन जौन ३४२ पान दिय अरु चरणचापे लाज परदा खोइ। प्रेम विह्वल भये

लखिकै प्रेम रानी सोइ । बात फैली नगर में सब लोग दे-
खन आव । रह मुसद्दी महल परसों नृपहि लिखि पठाव ३४३
भई निर्भय रानि बैठत मुरिडयों के साथ । सुनत यह बृत्तान्त
अतिशय क्रोध किय नर नाथ ॥ प्रेम सिंह सुकु बरतब लागि आ
व बन्दन तत्र । तिलक माल बिलोकि लोगन कहो नृपसों
अत्र ३४४ क्रोध संयुत बिहसि भूपति कहो मुराडी पुत्र । समुझि
कै यह बात नृप सुत लहन आनँद कुत्र ॥ मातु को लिखि पठै
दीन्हों कहो भूपति जौन । भई मुराडी आजते हम लिखो उत्तर
तौन ३४५ बहुरि मुराडन शिर करायो अतर तेल समेत । साधु
सेवा करन लागी धारि उर अति हेत ॥ छांड़ि दीन्हों महल जे-
बोरहनलागी तत्र । साधु सेवाहोतहै जहँरहत साधू यत्र ३४६ कुवँर
सुनि कै लहो आनँद दिये सबन इनाम।नौबतिहु बजवाव ताके
भये पूरण काम ॥ नृपति लोगन सों कहो यह काह कारण अत्र ।
सकल सो बृत्तान्त लोगन कहो नृपसों तत्र ३४७ बधन हित
सुत नारि माधव सिंहकीन्ह उपाइ । भये आपु सवार औरौ
दल लियो सजवाइ ॥ प्रेम सिंहहु आइयो पुनि लड़न हित रण
भूमि । होन कड़खा तत्र लागे चले भटरण झूमि ३४८ लखो
मंत्रिन होत अनरथ अग्र आये धाइ । पुत्र सों नाहिं युद्ध करिये
कहत भे समुझाइ ॥ जगत में तव होइ अपयश भाखिगे पुनि
तत्र । प्रेमसिंह नरेश अंगज खड़ो उद्यत यत्र ३४९ कहत भे समु-
झाइ बोले कुँवर तिनसों बैन । नृपति सों हम करहिं संगर नेक
भय कछु है न ॥ भोगहेत शरीर कोटिन धरेनशिगे तौन । एक
तन यह जाइ भगवत मार्ग संशय कौन ३५० सुनत मंत्रिन बि-
नय संयुत चरण पकरे तासु । प्रेमसिंह नरेश को सुत कहत भो
इमि आसु ॥ प्रथम माधवसिंह तजि संग्राम को घर जाहिं ।
जाहिं गे रणभूमि को तजि कछू संशय नाहिं ३५१ गे रजनि
में प्रथम घरको सिंहमाधव तत्र । व्याघ्र छोड़ो क्रोध संयुत रहत
रानी यत्र ॥ सभय जन रनिवास बोले आव नाहर एह । उठी

करि भगवान सेवालखि कहो सुतनेह३५२ नहीं नाहरआवईनर सिंह आये अत्र। भाखि इमि सुत प्रेमपूजन करन लीन्होंतत्र॥ नाहरहिके रूपमें नरसिंहप्रगटे आइ। करन लागी देखि अस्तुति हिये आनँद पाइ३५३धनि अहैमम भाग प्रगटेआइ रूप कराल। जौन भयकृत रूपदेखत भये असुर विहाल॥ जवहिं जनप्रहरा-द को दुखदेत भो असुरेश। फारिखंभ कराल प्रगटे रूपतौने देश ३५४ गरजशब्द कराल सुनिकै चौंकि यो दिगपाल। भयो खलभल शब्द वारिधि भूमि भूधर चाल॥ गिरे योधा भूमि लखि नरसिंह कठिन कठोर। सटकभटभट खटकहि यमें शब्द गरजनि घोर ३५५ छन्द मनहरण। दशन कराल काल ग्रसन जगतजन्तु कसन त्रिलोकि शत्रुत्रसन भुलावई। रसन कराल लाल कैधौं कर वालकाल प्रगटीसुमेरु ज्वाल जालभय आवई॥ अरुण नयनसम तरणि किरणजूह छायो है सभा समूह विज्जुल पकानसी। कैधौं है कराल वान ग्रसो शत्रु सभा जान पलक लगन पंचभृकुटी कमानसी ३५६ दो०। ऐसो जो प्रकटो वपुषदास राखिवे हेत। सोई आजु विलोक मैं नरहरि कृपा निकेत ३५७ याविधि पूजन पाइकै नरहरि कियो विचार। कछुक काम दरशाइये कूदिगये नृपद्वार ३५८ त्रिभुवन हरि मारत भये आरत रच्छा कीन्ह। रानि प्रताप लखाइकै निज मारग पुनि लीन्ह ३५९ माधवसिंह नरेश के निश्चय आई आसु। सविनय रानी ढिग गयो परो चरण में तासु ३६० परम सखीकह नृपति जी परेचरण में आइ। परैंलाल जीकेचरण कह रानीसुखदाइ ३६१ एक दृष्टिसों देखिये कहोसखी पुनि वैन। या विधि सुनि ताके वचन कहरानी गुण ऐन ३६२ एक तरफ लागी नजर होइनदूजी ओर। या विधि सुनि रानीवचन बोले नृपति निहार ३६३ सकल अहै यह आपका माल खजाना जौन। भगवत सेवा में मगन दियउत्तर नाहिं तौन ३६४ भूपति माधवसिंह अरु मानसिंह नरवीर। सरिता एक गँभीरचढ़ि पार

जात रणधीर ३६५ तरी मग्न होनेलगी बेवश भयो मलाह । मानसिंह कहकरियका दीजिय कछू सलाह ३६६ माधवसिंह नरेश ने रानी भक्तिसुनाव । ताही को सुमिरन लगे पारगई द्रुतनाव ३६७ या बिधि रत्नावलि कथा जियालाल है एह । अचल बिष्णुपद दायिनी हरिपद दायकनेह ३६८ ॥

निषादकी कथा ॥

दो० । कथा शुभग नीषादकी शृंगबेर पुरबास । दशरथ आयसु रामजब जातभये बनबास ३६९ चौ० । आवत रामदास सुनिपायो । सह परिवार अग्रचलिआयो ॥ चरणनपरो दण्डवत धाई । लखोरूप इकटक चखलाई ३७० सुनि बृत्तान्त दुखितभो नारी । रघुनन्दन की ओर निहारी ॥ बिबिधि भांति सेवा पुनि कीन्हा । कन्दमूलफल लै सो दीन्हा ३७१ चले चित्रकूटहि प्रभु जबहीं । संगहिचलो निषादहु तबहीं ॥ पुनि रघुनन्दन आयसु पाई । घूमतभयो दूरपहुँचाई ३७२ दो० । जबहिंचले रामहि मिलन भरत नगर नर नारि । देखि निषाद अपारदल चलनिज कटकसवांरि ३७३ चौ० । मानस या बिधि करीबिचारा । आये सदल भरत इहिवारा ॥ रामगये काननहिं सिधारी । अबका आये चित्तबिचारी ३७४ चाहतराज्य अकंटक कीन्हों । शिक्षा मातुहिये जनुलीन्हों ॥ जिमिचह गहन अकाशहिकोई । बिय तानि चोरिचहत जलसोई ३७५ जीवत गज गजमुक्ताचहई । जीवत सिंहमुच्छ चहलहई ॥ सती अंग आलिङ्गनचाहा । जीवंत उरगचहत मणिलाहा ३७६ जीवत वीर शीशाचह जैसे । बांधनरज्जुसमीरहितैसे ॥ व्योमअन्तचाहत जिमिकोई । तिमि अभिलाप भरतमनहोई ३७७ उदय सूर्य्य पश्चिम किनहोवै । बांझनारि सुतमुख को जोवै ॥ विना नयन बरु लिखै पुराना । गूंगा करै विविधि विधिगाना ३७८ श्रीगंगा पश्चिममुख बहई । मथिकीलाल कोउ घृत लहई ॥ चलै मेरु शीतलशशिहोई ।

पंगुलांघ गिरिसंकुलकोई ३७६ जामहिं शृंग शशाके शीशा। परनहिंहोहिं भरतअवनीशा॥ रामक्रोध पावक विकराला। होवै सैन शलभकीमाला ३८० कुमति धारि आये मनमाहीं। लांघनदेहुँ गंग मैं नाहीं॥ आयुधपात देह निजलेहौं। जीवत अग्र जाननहिं देहौं ३८१ समर सरोष तजौं शरनाना। रामहेत त्यागहुँ रणप्राना॥ याबिधिकरि विचार मनमाहीं। आवतभयो भरतदलपाहीं ३८२ भरत भक्ति सुनि लोगनपाहीं। जातमनावनहैं बनमाहीं॥ हर्षितभयो निषादविशेखी। आनँदलहो भरत कहँदेखी ३८३ रामवियोग शोकउरजिनके। वदनमलीन मान गत तिनके॥ देखि निषाद विषाद समेता। दण्डाकार परो गतचेता ३८४ दो०। भरत जानि रघुवरसखा धाइलीन्हउरलाइ। मिले परस्पर दोउ जन प्रेम न हृदय समाइ ३८५ चौ०। भरतनिषाद काहँ जब देखा। पायो परमानन्द विशेखा॥ बूड़त राम बिरह बारीशा। पठयो पोत मनहुँ जगदीशा। ३८६ निर्द्धन कोउ यथा धन पावै। क्षुधित सुअन्न यथा रुचि लावै॥ कुशल प्रश्न पूंछा बहु भांती। निर्भर प्रेम न हिये समाती ३८७ चलो निषाद भरतके संगा। दर्शन हेत राम रण रंगा॥ जहँजहँ राम बासबन कीन्हा। भरत समेत जाइ लखि लीन्हा ३८८ बनचर कोल भील दरशाये। कुश साथरी देखि दुख पाये॥ पहुँचे चित्रकूट इमि जाई। रामहिं लखितन दशा भुलाई ३८९ भरत भूमि रामायसु आये। निज घरगे निषाद दुखपाये॥ जबलागि राम भूमि नहिं आये। तबलगि रहे महा दुख छाये ३९० आये लंक जीति जब रामा। दरश पाइ पूरण भे कामा॥ रूप मनोहर मानस धरिके। रहत भये मन्दिर मुद भरिके ३९१ कथा निषाद महासुख सारा। वर्णन कीन्ह कविन विस्तारा॥ ताते यह हरि जन यश गाना। जियालाल संक्षेप बखाना। ३९२॥

बिल्वमंगलकी कथा ॥

चौ०। कथा बिल्वमंगल की एहा। बरणौं दायक हरि पदनेहा ॥ बेणा कृष्ण नदी के तीरा। वासस्थान बिप्र बरधीरा ३९३ बारमुखी चिन्तामणि नामा। तासँगरमे भूलिसब कामा॥ एक दिवस कर चरित सुहावा। श्राद्ध दिवस पितु को चलि आवा ३९४ कीन्हीं श्राद्ध जिमाये विप्रा। लखि अलपाह चलत भे छिप्रा॥ सरिता पार बिलासिनि धामा। निशि में सरितट गये सकामा ३९५ बाढ़त देखी नदी अपारा। उडुपन लखी तहाँ तिहि बारा ॥ मिलन हेत बाढ़ो अति नेहा। कूदे नदी छांड़ि सन्देहा ३९६ कछुक दूरि परे खरधारा। बहत जात शव अग्र निहारा ॥ जानत भे आई यह नावा। चिन्तामणि मम हेत पठावा ३९७ तापर हरषित भये सवारा। पहुँचत भये जाइ वा पारा ॥ बिह्वल उतरि मिलन हित धाये। गणिका द्वार शीघ्र चलि आये ३९८ अर्द्धरात्रि तहँ बन्द कपाटा। मन्दिर जान लखी नहिं बाटा। उरग एक लटकत लखि पायो ॥ जानो मित्र डोरि लटकायो ३९९ पकरि सर्प छतऊपर आये। आंगनजान मार्ग नहिं पाये ॥ कूदि परे ऊपरसों तहँवां। जागे लोग शब्द सुनि जहँवां ४०० वेश्या बिल्वमंगलहि जाना। अंशुक दिय कराइ अस्नाना ॥ पूँछा बहुरि कि विधि चलिआये। तासों सब वृत्तान्त सुनाये ४०१ तुम पठई सरिता परनावा ॥ ऊपर द्वार डोरि लटकावा ॥ ताही को गहि कै इत आये। कहिछति जाइ बहुरि दिखराये ४०२ देखो चिन्तामणि तिहि काला। लटकत आशीविष बिकराला ॥ करिकै क्रोधकहो तिन पाहीं। ऐसे भूलि गये मो माहीं ४०३ यह शरीर है सदा असारा। विष्ठामूत्र रुधिर मल भारा ॥ अस्थि मांस मज्जामय जोई। कफ पित स्वेद लार युत होई ४०४ तामेंकीन्हो प्रेम महाना। ऐसे भजिय न किमि भगवाना॥ करुणामय सुन्दर सब लायक। श्री राधावर जन सुखदायक ४०५

अब भजिहौं मैं तौ नँदलालहिं । यशुमति नन्दन खल बल सालहिं ॥ भावै तुमहिं तौन अब कीजै । मोसों नेह छांड़ि अब दीजै ४०६ बीती राति इमिविधि बतराता । निज निज मगगे होत प्रभाता ॥ शोभाधाम रूप हिय धरिकै । जिह्वारटत नाममुद भरिकै ४०७ दो० । बहुरि सोम गिरिशिष्य भे माध्व संप्रदा माहिं । इमि श्रीमंगल बिल्वजी हरिउर धरे सदाहिं ४०८ चौ० बृन्दा कानन दरशन हेता । प्रेमातुर पुनि चले सचेता ॥ पहुँचे एक नदी तटजाई ॥ नारी मज्जत परी लखाई ४०९ तामें नारिएक छबि धामा । एदेखत ही भेबशकामा ॥ जबहीं मज्जि चली बहनारी । ताके पीछे चले सिधारी ४१० नारी जातभई गृह माहीं । एठाढ़ेतिहिद्वारतहाँहीं ॥ तापति भक्त रहोसो आयो । द्वारेपर इनको लखि पायो ४११ निजयुवती सों पूंछन लीन्हा। सोतौ सकल हाल कहि दीन्हा ॥ भगवतभक्त जानि सुखपायो । द्वार आइकै विनय सुनायो ४१२ मोपर कृपा कीन्हअति भलिकै । भवन पवित्र करिय अब चलि कै ॥ हरिजन जासु भवन नहिंआवैं । तिन मन्दिर शोभा नहिं पावैं ४१३ यहकहि मन्दिर गयो लवाई । दीन्ह अटारी तिनहिं टिकाई । बहुरि आइ युवती सों भाषा । पूरण करहु साधु अभिलाषा ४१४ जाइय शुभ शृंगार सवांरी । सेवाकरब विविधि विधि सारी ॥ सो सुनि कै अति हर्षितगाता । गई सथारासनसुखदाता ४१५ लखी बिल्व मंगल इहि भांती। तिनकी भक्ति भक्त सुखदाती ॥ मनको रोकि विषय सों हाला । बोलत भये वचन तिहि बाला ४१६ दो सूई हमको लै दीजै । एतो कहो हमारो कीजै ॥ कामिनि सुनत तुरित सो कीन्हा । लै सूई तिनके कर दीन्हा ४१७ कारण विषय नेत्र गुणि सोई । लीन्हें छेदि नयन तिन दोई ॥ भामिनि लखि किय हाहाकारा । तिहि पति धाइ गयो तिहि बारा ४१८ बोल्यो दशा देखिकर जोरी । का तकसीर परी यह मोरी ॥ कहो बिल्वमंगल सुनि बैना । कछु तक-

सीर तुम्हारी हैना ४१९ मम तकसीर छिपी मोमाहीं। तुम सम धन्य लखत हम नाहीं॥ सो कह बिनय सहित तिन पाहीं। कछु दिन आप रहिय अब याहीं ४२० सेवा किंचित करहिं तुम्हारी। कह्यो बिल्वमंगल तिहि बारी॥ सेवा तुम कीन्ही है जोई। ऐसीसेवा करै न कोई ४२१ यह कहिकै बृन्दाबन आये। आसन भूरुह एक लगाये॥ लगे करन भगवत को ध्याना। क्षुधित तृषित जानो भगवाना ४२२ महा प्रसाद दीन्ह प्रभु लाई। पुनि आसन रह आतप छाई॥ कर गहि भगवत तिनहिंउठावा। छाया माहँ जाइ बैठावा ४२३ भोजन में लखि स्वाद अपारा। कोमल हाथ परसि तिहि बारा॥ जानि गये हरि बिनै नाहिं कोई। पोढ़े कर पकरत भे सोई ४२४ दो०। कर छुड़ाइ हरिगे तबै ए बोलत भे बैन। करसों गये छुड़ाइकै हियसों छाँड़ौं मैंन ४२५ चौ०। यह कहि मन एकाग्र लगायो। भगवत ध्यान माहँ चित लायो॥ पुनि इच्छा मनमें यह होई। होतेनयन हमारे जोई ४२६ तौ दरश न हरि रूपन करते। कुंजाबिहार देखि मुद भरते॥ भगवत यह तिन मन गति जानी। किये प्रकाशित चख सुखदानी ४२७ नयन पाइ अति हर्षित भयऊ। जाइ दरश भगवत बपु कयऊ॥ पुनि बैठेथिर आसन लाई। ध्यान माहँ चित गयो समाई ४२८ दो०। दरश भये भगवान के चिन्तामणि सुनि एह। आवत बृन्दाबन भई तिन ढिग गई सनेह ४२९ लखत बिल्वमंगल उठे पूर्व मित्रता जानि। आदर युत भेटत भये बैठारे गहि पानि ४३० कुशल प्रश्न पुनि पूछिकै भोजनदियो सनेह। चिन्तामणि पूछतभई कोलायो है एह ४३१ चौ०। कहत बिल्वमंगल सुनि बानी। दीन्हों यह भगवत सुखदानी॥ सुनत कह्यो चिन्तामणि तबहीं। मोहूं को देहैं हरिजबहीं ४३२ तब करिहों भोजन सुखपाई। यहतौ तुम को दीन्हपठाई॥ अन्तर प्रेम तासु पहिचानी। लैभोजन दीन्हों हरि आनी ४३३ दुर्लभ ब्रह्मादिकको जोई। भोजन किय वेश्या

वह सोई ॥ जाति पांति जानत प्रभु नाहीं । जियालाल सेवक प्रिय आहीं ४३४ छन्दमनहरण। यमन किरात भील शबरी पिशाच कपि गणिका कवन्ध गीध तारोदीन हेरोहै।दारिद सुदामा छीनो गोपिन सनाथ कीन्हों गज प्रह्लाद वीच सुयश घनेरो है ॥ पांडुपुत्र राखि लीन विप्र सुत आनि दीन बूड़त सों राखि लीन गोपन को खेरोहै। ऐसे समरत्थ नर नाथन के नाथ नाथ जियालाल नावैं माथ केतो पाप मेरोहै ४३५॥

सूरदास मदनमोहनकी कथा॥

छं०रा०। सूरदास सुमदनमोहन विप्रवर सुख भौन। संप्रदा जोमाध्व तामें प्रगट भे एतौन ॥ गानविद्या काव्य रचना निपुण उत्तम भक्त। प्रिया प्रीतमगोप्यलीला में सदा अनुरक्त ४३६ करत भे निज काव्यमें शृंगारवर्णनजौन । मलिक अक्बरशाह केरी ओरसे पुनितौन ॥ रहेसूबेदार सो संदीलमें तिहिकाल। शर्करा लखि विपणि में हरियोग्यलीन्ही हाल ४३७ वनहिंगे इहिमालपूआ मदन मोहन हेत । पठव शकटन माहिं वृन्दावन हि तस्य निकेत॥ भये पहुँचत शकट निशि में देखिकै पूजार। लागिहि प्रातहि भोग कहि धरवाइयो भंडार ४३८ दो०। भक्त पठायो हेत मम जानि हिये भगवान। स्वप्नदियो पूजारको क्षुधित नींदनाहिंआन ४३९वनैंमालपूआ अवहिं उठपुजारी जागि। रचिकै भोग लगायऊ हरिसोये सुख पागि ४४० जियालाल धनि भक्त हैं धन्य भाग हैं तस्य। क्षुधित तृप्त भगवानहू कहत दिये सो यस्य ४४१ जाकी माया जगत सब ग्रास करत क्षण माहिं ॥सो भगवतहैं भक्त वश सब विधि कृपा कराहिं ४४२ चौ०।भगवत सों इमि अरज सुनायो।एक विष्णुपदमें यह गायो॥ संत उपानह रक्षक जोई। पदवी मिलै मोहिं वह सोई ४४३ साधू एक परीक्षा लीन्हा। इविधि वचन इनसों कहि दीन्हा। दरश मदनमोहन करि आवैं ॥ तबतक जूतीं

आपु बचावैं ४४४ प्रमुदित सूरदास तिहि काला । जूती लिय उठाय कर हाला ॥ आनँद सहित कहन इमि लयऊ । भगवत बचन सत्य मम कयऊ ॥ ४४५ सेवा मोहिं आजु यह दीन्हा । अति करुणा मम ऊपर कीन्हा ॥ गोसाँई बहु बार बुलायो । सूरदास इमि बचन सुनायो ४४६ साधु चरण सेवाको करिकै । पीछे दरश करहुं मुद भरिकै ॥ भये प्रसन्न देखि बिश्वासा । करौं अपर तिन कथा प्रकासा ४४७ तेरह लाख रुपैया जोई । करि तहसील आवतहँ सोई ॥ सो संतन कहँ दीन्ह खवाई । कंकर भरि तहँदीन्ह पठाई ४४८ पुरजा सन्दूकन धरि दयऊ । ताके मध्य लिखत इमि भयऊ ॥ तेरह लाख संदीले लीन्हा । ते साधुन मिलि भोजन कीन्हा ४४९ भागे सूरदास अधराता । बादशाह सुनिये यह बाता ॥ बादशाह पढ़ि या बिधि हाला । सभा मध्य बोले ततकाला ४५० संतन खायो यह भल भयऊ । भागे सूर न यह भल कयऊ ॥ सेवा साधु जानि सुख पायो । होन कसूरमाफ बुलवायो ४५१ याबिधि उज़ुर लिखतभे सोई । सूबेदारि आमिली जोई ॥ तासों सहस गुनो सुखपैहैं । श्रीवृन्दावन झारू देहैं ४५२ दो० । टोड़रमल दीवान कह बादशाहसों बैन । इमिलैलै सबभागिहैं राज्य चलनको हैन ४५३ गहन हेत आज्ञादई पकरिमँगायो तत्र । बन्दीभुवन पठाइयो करीदेर नाहिं अत्र ४५४ दोहा भेजत एक भे सूरदास तिहि काल । प्रगट प्रशंसा मलिक की निज दुख प्रगट कराल ४५५ दीन्ही कैदि छुटाइ कै बादशाह मतिधीर । छूटेवृन्दावन गये कालिन्दी के तीर ४५६ ब्रजकिशोर अरु लाड़िली ध्यानमगन रहतत्र । वृन्दावन विहरत सदा रासमंडल हरियत्र ४५७ ॥

अग्रदासजी की कथा ॥

चौ० । कृष्णदास पयहारी जोई । तिनके शिष्य अग्र जी सोई ॥ प्रेमाधुर्य्य उपासकजोई । भजनानन्दकौनअसहोई ४५८

नाभाग्रंथ नेत्र जिन दीन्हे । पोतउबारि सुडूबत लीन्हे ॥ ग्रंथारंभ माहँ लिखि दीन्हा । तातेइत विस्तार न कीन्हा ४५९ दरश जानकीजी के पाये । ज्ञान विराग भक्ति सुखछाये ॥ गलताजी आमेर समीपा । कीन्हों वास भक्त कुलदीपा ४६० स्वामी केर विहार विचारी । झारूस्वकरदेत फुलवारी ॥ यद्यपि बागवान बहुतहँवां । नाभादिक सेवक बहुजहँवां ४६१ एक दिवस आमेर नृपाला । मानसिंह आये तिहि काला ॥ दरशहेतवनवारी गयऊ । तिनको तहां लखत नहिंभयऊ ४६२ ये कूड़ालैगे तिहि बारी । वटतर बैठे हृदय विचारी ॥ सकललोगदरशन इत लैहैं । उत नगरीवजानबहु पैहैं ४६३ अलपकाल ठहरैगो राजा । कुत्सित भूमि जानि सुखमाजा ॥ धनी जननकी संगति जोई । दुखदायक लायक नहिं होई ४६४ जबहिं बाटिका मांझ न पाये । बाहरनिकरि सजन नृपआये ॥ वटतर देखिदंडवत कयऊ । आशिरवाद देत सो भयऊ ४६५ ॥

कील्हदासजी की कथा ॥

छन्दरामगीतिका । पय अहारी कृष्णदासजु शिष्य तिनके सोइ । शृंगार अरु माधुर्य्य में अति भे उपासक जोइ ॥ रामपद अरविन्द में रह ध्यानमग्न सदाइ । सुयश निर्मल जासु जगमें अजहुं प्रकट लखाइ४६६चौ० । नाम सुमेर देव जिनताता । सूबेदार रहे गुजराता ॥ तजिशरीर परलोक सिधाये । चढ़िविमान मथुरा महँ आये ४६७ निकट सुमानसिंहमहिपाला । कील्हदास बैठेतिहिकाला॥ लखि उठितुरितदण्डवतकयऊ । भलोभयो भापत इमि भयऊ ४६८ किहिवतरातकहोमहिपाला । प्रथम न इनन्नकटो वह हाला ॥ जब नृपबहुबिधि पूछन लीन्हा । तब वृत्तांत सकल कहि दीन्हा ४६९ भूपति धावन तुरित पठायो । सत्य जानि निश्चय मनलायो ॥ पूजन करत रहे इकबारा । फूलपिटारी धरीअगारा ४७० डारो हाथ फूलहित जबहीं । काटत भो अंगु-

लि आहि तबहीं॥ भयो न तृप्त जानि मनमाहीं। कटवायो पुनि पुनि तिहिपाहीं ४७१ पूजन करतभये हरषाई। विषबाधा तन में नहिंआई॥ सांख्य योगमें भीष्म समाना। निज आधीन मृत्यु निज आना ४७२ परमधाम जब इच्छा कीन्हा। भगवत भक्त बोलि सबलीन्हा॥ सबसों करि दण्डवत प्रणामा। भेदोदशम द्वार सुखधामा ४७३ दो०। परम धामगे देहतजि योगिन भ्रम उपजाइ। जियालाल महिमा अमित कापै बरणीजाइ ४७४

गोपालभट्टकी कथा॥

छन्द रामगीतिका॥ भये व्यंकट भट्टसुत गोपालभट्ट महान। महाप्रभु श्रीकृष्ण जो चैतन्यके शिषिजान॥ परमभगवत भक्त ब्राह्मण जाति रस शृंगार। के उपासक बसत वृन्दाविपिन आँनद धार ४७५ दो०। सहसन भगवत भक्तभे जिन प्रभावको पाइ। गुणतजि नहिं देखत भये अवगुण चित्त लगाइ ४७६ संपति अरुधन छोंड़िकै बसवृन्दाबन सोइ। ब्रजकिशोर महराजके शोभ मग्न रह जोइ ४७७ एक दिवस सेवासमय कियो चिन्तवन एह। ध्यानालय शृंगार बपु जो देखत युत नेह ४७८ प्रगटत शालग्राम में सोई रूप अनूप। भक्त मनोरथ पूर्ण हित प्रगटे भूपनभूप ४७९ चरणनके नीचे वपुष शालग्राम अनूप। ऊपरमदनाशक मदन प्रगटो सुंदररूप ४८० मंदिरमेंपधराइयोभट्टमहानँदसाज।नामधरोराधारमणहैंप्रसिद्धतहँआज ४८१

केशवभट्टकी कथा॥

दो०। काश्मीरी ब्राह्मण रहे केशव भट्ट अनूप। परमभक्त परमार्थगत दुखी कियेसुखरूप ४८२ विदित प्रताप जहानमें भक्ति परशुकर धारि। अन्यधर्म भूरुहदले हरिचरित्र विस्तारि ४८३ संप्रदायनिम्बार्क में शिष्य प्रथम भे जोइ। माध्व संप्रदामें बहुरि शिष्य होनभे सोइ ४८४ ताको है वृत्तान्त यह पण्डित रहे महान।

शास्त्रार्थ जीते अमित कीन्हीं विजय कहाँ न ४८५ शिष्य पण्डितन युत गये नदिया शांती काहँ। सुनत विदुप भय भीत भे गुनिआगम तिन ताहँ ४८६ श्रीकृष्ण चैतन्य जी महा प्रभू रह जोइ। गर्वदूरकीन्हों चहो सात वर्षके सोइ ४८७ केशव भट्ट समीप गे बोले मीठे बैन। तव विद्या यश जगतमें छाव सुनिय गुण ऐन ४८८ कछुक सुनाइय हमहुँ को करिय कृतारथ आज। कहो भट्ट तुम बालहौ लखौ न विदुष समाज ४८९ निरभय बोलत बचन इमि अमित ढिठाई होइ। परप्रसन्न मृदुवचन सुनि कहो सुनावहु सोइ ४९० चौ०। महा प्रभू सुनि बोले बानी। कहिये गंगा रूप बखानी॥ निज निर्मित तब भट्टबखाना। इनकह चहत-दोष गुण जाना ४९१ कहो भट्ट दूषण युत कैसी। मेरी काव्य होइ किमि ऐसी॥ सुनत प्रभू गुण दोप बखाने। जौन भट्ट सपने नहिं जाने ४९२ यह कहि भवन महा प्रभु गयऊ। बाणी ध्यान भट्टतब कयऊ॥ सुमिरत सरस्वती चलि आई। तिन सों भट्ट कहो शिर नाई ४९३ पुहुमि जीति बालक सो हारा। काह भयो अपराध हमारा॥ कहो सरस्वतिममपति सोई। मेरी का समरथ उत होई ४९४ पाव दरश धनिभागि तुम्हारी। गई सरस्वति भाषि सिधारी॥ निशिमहँ भट्ट शरण तिन आये। हाथ जोरि यह विनय सुनाये ४९५ आज्ञा होइ तौन हम कीजे। मोको शरण आपनी दीजै॥ सुनत महा प्रभु वचन उचारा। करहु भक्तिहरि-अंगीकारा४९६ विदुपनसों विवाद तजि दीजे। एतो कहो हमारो कीजै॥ सुनत भट्ट प्रभु की यह बानी। आये भवन शीश धरि मानी ४९७ सुनतहाल मथुरा को भयऊ। मुसल मान बहु तहँ चलिगयऊ॥ पुनि विश्राम घाटपरजाई। दीन्हों है इकयंत्र लगाई ४९८ हिन्दूजात तहांचलि जोई। सुन्नत आप आपही होई॥ मुसलमान बल सो करि लेवै। चले भट्टयाविधि सुनि भेवै ४९९ पुनि विश्राम घाटचलि आये। मुसलमानलखि वचनसुनाये॥ होइ नग्न हम को

दिखरैये । तदुपरिबहुरि अग्र चलि जैये ५०० सुनत भट्ट क्रोधा-
तुर अंगा । धावसहस्त्र शिष्य निज संगा ॥ यंत्र तोरि यमुना
में डारा । मुसलमान गहि गहि बहुमारा ५०१ सूबापास गये
फिरयादी । उनकी रही दुष्टता आदी ॥ फौज संगउनके करि
दीन्हा । देखत भट्ट समर अति कीन्हा ५०२ दो० । चक्राराधन
भट्टकरि बरषाई शिखितत्र । मुसलमान लागे जरन गयेशरण
येयत्र ५०३ चौ० । पुनि चरित्र कीन्हों यहजहवां । जेतमुसल-
मान रहतहँवां ॥ हिन्दू चिह्न परे दिखराई । औरौ शरण भयेते
आई ५०४ बोलेहाथ बांधि सब बानी । त्राहि त्राहि शरणागत
जानी ॥ बोलि भट्ट ब्रज लोगन लीन्हा । निर्भय मुसलमान सो
कीन्हा ५०५ दो० । भगवत भक्ति प्रवृत्ति तहँ करतभये सुखदा-
न । जियालाल हरिजन चरित कोकबि सकै बखान ॥ ५०६ ॥

बनवारी जीकी कथा ॥

चौ० । भगवत भक्ति रङ्ग रङ्गीना । बनवारी भे भक्तप्रबीना ॥
रसश्रृंगार रसिक भे सोई । भजनानन्द मग्न चित जोई ५०७
बोलत मधुर बचन अति नीके । गत मदमान बिषय रस फीके ॥
नव प्रकार जो भक्ति सुहाई । सोनिज मानस माहँ बसाई ५०८
करि सतसंगति मोह नशावै । होइ पवित्र दरशजो पावै ॥
गाथा बनवारी सुख दाना । जियालाल संक्षेप बखाना ५०९ ॥

यशवंत जीकी कथा ॥

चौ० । श्रीयशवंत भक्त पद पाये । राजपूत राठौर सुहाये ॥
सत्य प्रीति भगवत पदमाहीं । तजिहरि भजन अपर कछु नाहीं
५१० वास कियो वृन्दावनजाई । हरि विहार लीलाचित लाई ॥
रसश्रृंगार चिंतवनकरहीं । नवधा भक्तिहिये निजधरहीं ॥५११॥

कल्याणदास जीकी कथा ॥

चौ० । भगवत भक्ति भलाई जोई । लह कल्याणदास सब

सोई ॥ भगवत प्रेम मग्न सब काला । सुमिरत श्रीब्रजचन्द कृपाला ५१२ चिंतत भगवत रस शृंगारा । बोलत मधुर वचन सुख सारा ॥ मन क्रम वच्चन भक्त हरि जोई । पर उपकारि दया युत सोई ५१३॥

कर्णहरिदेव विख्यात कन्हरदास की कथा ॥

चौ० । भगवत भक्त भये अति सोई । कन्हरदास विप्रवर जोई ॥ जानत सब भविष्य की बाता । भानुसमान तेज जिनगाता ५१४ सोसूराम शिष्य मुद भीनें । रस शृंगार माहँ लवलीने ॥ अरु माधुर्य्य रूप भे सोई । समदरशी जानत सब कोई ५१५ ॥

लोकनाथ जी की कथा ॥

चौ० । भगवत भक्त अनूप सुहाये । लोकनाथ पार्षद सम गाये ॥ राधा कृष्ण चिंतवन जोई । अनुक्षण मग्न रहत मन सोई ५१६ दो० । श्रीकृष्ण चैतन्य के शिष्य रहे सुख दान । प्राणाधिक मन जानिके करत भागवत गान ५१७ ॥

मानदास जी की कथा ॥

चौ०। परम भक्त भगवत के सोई । मानदास उपकारी जोई॥ श्री रघुनन्दन पद सब बेरा । प्रेम अनन्य रहत जिन केरा ५१८ से शृंगार उपासक भारी । अरु माधुर्य्य भाव सुदधारी ॥ वरणे राम चरित्र सुहाये । निज कविता सो प्रगट लखाये ५१९ ॥

कृष्णदास जी की कथा ॥

चौ०। कृष्णदास जी भक्त सुहाये। श्री गोविन्दचन्द्रके गाये॥ रूप माधुरी अरु शृंगारा। मग्न रहत अह निशि सुख सारा ५२० भगवत भक्त भवन जो आवें । भांति भांति भोजन करवावें ॥ भगवत रूप चिंतवन करहीं। कीर्त्तन करि आनँद उरभरहीं ५२१॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचितेचतुर्विंशतिनिष्ठामध्येत्रिविंशशृङ्गारमाधुर्य्यमहिमानिष्ठायांत्रिंशतिभक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौपंचविंशस्तरंगः२५॥

निष्ठाचौबीशवीं ॥

छन्दरामगीतिका । निष्ठयह चौवीशवीं अबकरत ब०.... कथा षोडश भक्त वर्णन प्रेम महिमा जोइ ॥ रामपद अरविन्द रेखा साधुहृदको नौमि । दण्डवत अवतार रामहिं करहुं धारो सौमि १ सो जगत उद्धार के हित अवधपुरमेंधार । धर्म की मर्याद थापी दुष्ट किय संहार ॥ निज चरित्र पवित्र शुभ बिस्तार जगमें कीन । जियालाल सुपुत्र के सम प्रजहि आनँद दीन २ अति शुभग यह प्रेम निष्ठा रूप भगवत जोइ । निष्ठ सबको सार अरु परिणाम जानिय सोइ ॥ और याके अग्र साधन जानिये नहिं कोइ । मुक्ति अरु कैवल्य पद जोयही साधनहोइ ३ दो० । या निष्ठा जेभक्त हैं बरणों तिनके नाम । राम कमल पद भ्रमरमन करत भये बिश्राम ४ ॥

आनँद रसपागी ॥ निजपराव भूली तिहिकाला। बूड़े आनँद पूरनृपाला १२ दोहा। तादिन सों भूपतिरहे रानीके सतसङ्ग धन्यभाग मानत भये दिनप्रति बढ़तउमङ्ग १३॥

सुतीक्ष्ण जी की कथा॥

चौ० ॥ नामसुतीक्ष्ण ऋपीश्वरजोई। शिष्यअगस्त्य केर रह सोई॥ रामोपासक प्रेमीधीरा। दण्ड कवन जवगे रघुवीरा १४ निकट सुतीक्ष्णाश्रम जब गयऊ। स्वाम्या गमन जानि इन लयऊ॥ आगेलेन चले सुखपाई। परमानन्द भरो उरआई १५ अपन बिरान भुलाने सोई। रूप अनूप चिन्तवन जोई॥ ताविन अपरन परत लखाई। भीतर बाहर सुरति भुलाई १६ मैं कित जात कौनहौं काहां। पुनि सुधि होत कहत मन माहां॥ आजु कौन शुभघरी सुहाई। कौन अद्य मंगल दिनआई १७ अजहरि हर सुर दुर्लभजोई। लखिहौं आजु नयन निजसोई॥ वड़भागी मोसम नहिं कोई। पूर्णब्रह्म आये इत जोई १८ या विधि आनँद चिंतामाहीं। चलि पग अग्र सके सोनाहीं॥ त्रिवश होइ बैठेपथ सोई। रूपध्यान बूड़े पुनि जोई १९ लषण जानकी राम कृपाला। इनसमीप आये तिहि काला॥ मुनि परन्तु जानो नहिं जवहीं। दीन हांक रघुनन्दन तवहीं २० जब न सुनो गतध्यान अनूपा। अन्तर्द्धान कियो निजरूपा॥ रूपचतुर्भुज हिये लखाये। व्याकुल भये न प्रभु लखिपाये २१ नयन खोलि आगे प्रभुदेखा। प्रेम मग्न पगगहे विशेखा॥ राम उठाइ लाइ उर लीन्हा। पूरण सकल मनोरथ कीन्हा २२ आश्रम ऋषय गये रघुराई। मुनिवहुभांतिकरी पहुनाई॥ लागे अस्तुति करन बहोरी। राम लषण जय जनक किशोरी २३ छन्दतोटक॥ जयराम सियापति भूपवरं। महि मण्डल मण्डन शोभधरं॥ अघगंजन रंजन संतजनं। महिभार विभंजन ज्ञान घनं २४ उरमानस शंकर हंसवरं। हित दीनदुखी सुर वृन्दकरं॥ अहि संशय

नाशन वीशयथा। भवबन्धन रन्धनयस्यकथा २५ भवताप बि-
नाशक देवपरं। शुभशायक चाप निषंगधरं ॥ अनवद्यअपार
विकारगतं। श्रुतिपार न पावतयस्यमतं २६ भवसागर वोहित
बुद्धिपरं। मद लोभ बिनाशन क्रोधहरं॥ भुजदण्ड प्रचण्ड अख
ण्डसही। जनरक्षक भक्षक दुष्टसही २७ चखवारिज लालक-
पोलभले। अलिमण्डलपाइ सुगन्धचले ॥ करिजूहनिशाचर
सिंहबलं। अघ ओघ बिनाशन गंगजलं २८ बनमोहबिनाशन
अग्निखरं। जनकाननवारिज भानुवरं॥ मदमोहममत्व सदा
शमनं। तवनौमि शुभांघ्रि सियारमनं २९ दो०। अल्प बुद्धि
महिमा अमित कहौं कौन बिधिनाथ। शेष शारदा सकन कहि
कबि कोबिद तवगाथ ३० चौ०। लियोराम पुनि हृदयलगाई।
वोलतभे अति आनँद पाई ॥ मांगहु बर जो इच्छाहोई। तुम
कहँ देउँ आजु मैं सोई ३१ कहमुनि मैंबर मांगन कबहू। सत्या
सत्य न जानौं अबहूँ॥ तुमहिं नीकलागै सो दीजै। दास सुखद
मानस गुनिलीजै ३२ कहप्रभु भक्तिबिरतिबिज्ञाना। तुमहिं दीन
गुण ज्ञान अमाना॥ सुनि मुनीश बोले करजोरी। औरौ नाथ
विनय यह मोरी ३३ लषण जानकी सहित कृपाला। मम उर
वसिये दीनदयाला॥ यद्यपि बसतहृदय सब केरे। तदपि बसहु
इहि बपु उर मेरे ३४ कामिहिं जा बिधि नारिपियारी। तिमिप्रिय
लागहु धनु शर धारी॥ याबिधि चितमें रहैसदाई। मैं सेवक
मम पति रघुराई ३५ एवमस्तुकहि रघुकुलदीपा। हर्षितचले
अगास्ति समीपा। कहो सुतीक्ष्ण तबहिं शिरनाई। ममयह विनय
सुनिय रघुराई ३६ गुरु निज दरश करनहमजाहीं। तव सँग
चलहिं निहोरा नाहीं॥ लखत चलब मग तव पद कंजा। शमन
सकल दुख दल मद गंजा ३७ मुनि चतुरता जानि रघुराया।
बिहँसि संगलीन्हों करिदाया ॥ पंथकहत निज भक्तिसुहाई॥
मुनि आश्रम पहुँचे प्रभुजाई ३८ ॥

शवरीकी कथा ॥

चौपाई। भीलनि योषित शवरी जोई। महिमा वरणि सकै नहिं कोई ॥ जाकी भक्ति देखि अति भारी। भे आधीन ऋषीश्वर झारी ३९ अंकुर भक्ति जमो उर जबहीं। सेवा साधु लगी सो तबहीं ॥ दण्डक वन पम्पासर तीरा। आश्रम मतंगादि मुनि धीरा ४० काष्ठ गुप्त निशि में धरि आवैं। पुनि ऋषिजिहि मग मज्जन जावैं॥ शवरी निशि मग जाइ बहारैं। ऋषि मतंग नित हिये बिचारैं ४१ सेवा कौन करत बड़भागी। मम तप भेद करन हित लागी ॥ गुप्त ऋषिन इकादिन बैठाये। शवरीगई पकरि ते-लाये ४२ जब शवरी ऋषि सन्मुख आई। कांपन लगी रोइ भय पाई॥ भय सों बिनय सकी करिनाहीं। सकल ऋषिनजानो मन माहीं ४३ याकी काष्ठ जलावा जोई। शवरी नीच जाति यह सोई॥ नहिंजानैं किहि पाप पधारैं। ऋषि मतंग पुनि मनहिं बिचारैं ४४ भक्ति प्रभाव जानहिय जोई। यह सिद्धान्त विचारो सोई ॥परम पवित्र शुद्ध है एहा। जाउर प्रगट संत पद नेहा ४५ गे निज आश्रम ताहि लवाई। भगवत मंत्र दियो सुखपाई॥ लागेजान परमपद जबहीं। शवरी सों बोले इमि तबहीं ४६ पूर्णब्रह्म रघुवर इतऐहैं। तबतोकहँ निज दर्शन दैहैं ॥ शवरी गुरु बियोग दुख पावा। पर रघुनन्दन पदचित लावा ४७ दरशन आश किये मनमाहीं। भजन ध्यान तजि कारज नाहीं॥ जौनघाटमज्जन मुनि जाहीं। शवरीबाट वहारत ताहीं ४८ समय विलम्बभयो इकदीना। शवरी कोलख ऋषय प्रवीना॥ कीन्ह क्रोध कटु वचन सुनाये। मज्जन हेत बहुरिमुनि आये ४९ तहँ जलदेखो रुधिर समाना। तामहँ कीटलखे बिधि नाना॥ मनविचारमुनि जन यह कयऊ। शवरी छुये विगरिजल गयऊ ५० मुनि जन घूमि कुटीनिज आये। कुटीगई शवरीभय पाये॥ पुनि चिन्ता कीन्हों मनमाहीं। रघुवर हेत धरो कछु नाहीं ५१ वनवन फल ढूंढ़न सो लागी। वदरी फल तोरत सुख पागी ॥ चाखि होइँ

मीठे सो लेवै । खट्टे होइँ फेंकि सो देवै ५२ पुनि वहि राह जात
दिन दीना । ऐहैं राम जासु पर बीना ॥ देखा करत बाट टक-
लाई । पुनि यह चित्त बसत जब आई ५३ ओछी जाति
कुरूप अपारा । झाड़ी माहँ छिपत तिहि बारा ॥ पुनि उरगुरु
के बचन सँभारै । अघि पावनता प्रभु चित धारै ५४ आगे लेन
हेत हठिधावै । भगवत कृपा दृष्टिउर लावै ॥ या विधि भगवत
प्रेम अपारा । चिन्ता में बीतत निशिबारा ५५ बहुत दिवस
बीते इहि भांती । तिहि बन गये राम गुण पाती ॥ पूंछत भे
लोगन सुख पाई । शवरी आश्रम देहु बताई ५६ आश्रम निकट
गये रघुराई । शवरी कीन्ह दण्डवत धाई ॥ रघुबर धाइ लीन्ह
उर लाई । प्रेम प्रमोदन कछुकहि जाई ५७ भो आनन्द शवरि
उर जोई । कवि जन भाखि सकत नहिं सोई ॥ राम चन्द्र मुख
चन्द्र चकोरी । शवरी होत भई बरजोरी ५८ दो० । मग्न भई
प्रभु दरशमें निर्भर आनँद जासु । जल प्रबाह नयनन बहो वार
पार नहिं तासु ५९ चौ० । पुनि शवरी अति आनँद पाई ।
निज आश्रम कहँ गई लवाई ॥ बेरधरे दिन दिन लै जोई ।
रघुनन्दन कहँ दीन्हों सोई ६० भोजन करन लगे रघुराई । भाग
सराहत सुर समुदाई ॥ डारत राम बेरमुख जबहीं । स्वादसराहत
बहुविधि तबहीं ६१ ऐसे बेर कबहुँ नहिं खाये । जैसे शवरी तब
घर पाये ॥ बेरखाइ बैठेरघुनाथा । आगम सुनत भये ऋषिनाथा ॥
६२ अचरजमानि दरश हित आये । धर्मकर्म कर गर्ब नशाये ॥
भये कृतारथ दरशन पाई । पुनिसबहुन मिलि बात चलाई ६३
सहमल भो तड़ागकर पाथा । सो किमि शुद्ध होइ रघुनाथा ॥
तब रघुनन्दन कहो बुझाई । शवरी चरण परहि जबजाई ६४
विमल शुद्ध तबहीं जल होई । शवरी विनय कीन्ह ऋषि सोई ॥
लै तिहि तहां गये ऋषि झारी । परतहि चरण भयो शुभवारी ६५
पुनि रघुनन्दन आनँद पाई । शवरिहि नवधा भक्तिबताई ॥
आगे जानि हेत सुखदाई । मांगत बिदा भये रघुराई ६६ ब्राह्मन्तर

प्रभु रूप समाना । जात राम शवरी यहजाना ॥ मांगत विदा तजो तनहाला । सहि नहिं सकी वियोगकराला ६७ तिहिक्षण प्राण निछावरि करिकै । परमधाम पहुँची मुदभरिकै ॥ दाहकर्म भगवत तिहि कीन्हा । आवागमन दूरि करि दीन्हा ६८ ऐसे रामहिं जेनहिं भजहीं । नाना दुखन किमि न नर सजहीं ॥ करुविश्वास आश पदलाऊ । जियालाल अनुराग बढ़ाऊ ६९ पाप जनी कुलहीन मलीना । ताकहँ राम परमपद दीन्हा ॥ जो कुलीन प्रभुपद चितलावै । सो कैसे न परमगतिपावै ७० ॥

सपत्नीक विदुरजीकी कथा ॥

चौ० । विदुर सपत्नि भक्ति सुख सारा । लीन्हों जगति धर्म्म अवतारा ॥ मांडवि शाप मनुज तनु पावा । भारत माहँ व्यास मुनि गावा ७१ जेती प्रीति विदुर हरिमाहीं । तिनसों अधिक नारि तिनकाहीं ॥ जब हरिसंधि करावन हेता । दुर्योधनके गये निकेता ७२ तासों नीति भाषि समुझायो । पर वाके मन नेक न भायो ॥ भोजन हित कह भगवत पाहीं । अङ्गीकार कियो हरिनाहीं ७३ जानि अभक्त ताहि तजिदीन्हा । मन्दिर विदुर गमन प्रभु कीन्हा ॥ विदुर रहे नहिं घरतिहि वारी । मज्ज न करत रही तिननारी ७४ आगम सुनि वसुदेव कुमारा । धाई नग्नहर्षि तिहि बारा ॥ भूली वस्त्र रहो नहिंचेता । हर्ष समातन दरशन हेता ७५ लज्जा राखन श्रीयदुराई । पीताम्बर दियतुरित उढ़ाई ॥ भगवत कहँ मन्दिर निजलाई । सिंहासन सप्रेम बैठाई ७६ वे सुधिभई प्रेममें भारी । मग्नानँदतन दशाविसारी ॥ ताकिदशा देखिभगवाना । याविधिसों पुनिवचनवखाना ७७ भूख लगी मोकहँ यह कीजै । भोजन कछूहोइ लैदीजै ॥ रंभाफललाई अनुरागी । भोजन स्वकर करावन लागी ७८ दो० । गूदाडारत भूमिमें छकला हरिको देत । हरिसराहि भोजनकरतस्वाद प्रेमयुत हेत ७९ चौ० । तिहिक्षणमध्य विदुर तहँ आये । कृष्णहि देखिचरण

शिर नाये ॥ लखि युवती कहँ तर्जन लागे । बकला देत कृष्ण के आगे ८० गूदा देत भूमि में डारी । यह का करत मन्दमति नारी ॥ यह कहि आपु खवावन लागे । बोलतभये कृष्ण सुख पागे ८१ स्वाद रहो बकलामें जोई । या गूदाम बिदुर नहिं सोई ॥ जियालाल यह सत्य न आना । रीझत एक प्रेम भगवाना ८२॥

भक्तदास जीकी कथा ॥

चौ० । भूपति भक्तदास सुखधामा । कुलशेखर जिनकर उपनामा ॥ रामोपासक भक्त सुहाये । भगवत चरित सुनत मन लाये ८३ प्रेम सहित लीला उत्साहा । करत नवीन नित्य नर नाहा ॥ ब्राह्मण कथा सुनावत जोई । भूपप्रेम जानत सब सोई ८४ गाथा सीयहरण जब आवै । ताहि त्यागि पुनि अग्रसुनावै॥ एक दिवस ब्राह्मण दुखपावा । कथा सुनावन पुत्र पठावा ८५ तादिन सोईकथा सुनाई । हरोजानकी रावण आई ॥ लैदक्षिण दिशिकाहँ सिधायो । एतो बचन नृपति सुनिपायो ८६ भूपति नग्नखड्ग लै धायो । मारु मारु कै टेरिसुनायो ॥ पुनि चढ़िअश्व लंक की ओरा । चलत भयो कहि बचन कठोरा ८७ मातहि देखौं रावणमारी । किमि लै जैहै मातु हमारी ॥ वारिधि परो राहमें आई । निर्भय दीन्हों अश्वफँदाई ८८ तबहिं प्रगट भे दुष्ट निकन्दन । लषण जानकी सह रघुनन्दन ॥ भावन भक्त भक्त मन रंजन । जियालाल अघदुखदल गंजन ८९ कहांजात कुल शेखर राजा । रावण मारि कीन हम काजा ॥ जनक नन्दिनी सह चलि आये । जात अयोध्या को सुखपाये ९० भूपतिसुनत दण्डवत कीन्हा । युगुल स्वरूप हिये धरिलीन्हा ॥ प्राण नवीन लहे जनु राजा । आव राजधानी महराजा ९१ दो० । प्रेम भक्ति में लीन भे भूपति परमप्रवीन । विना प्रेम जलहीन जिमि मीनांडज परहीन ९२ ॥

बिट्ठलदास जीकी कथा ॥

चौ०। विट्ठलदास भक्त सुखसारा। माथुर चौबे अनहंकारा॥ मानद परोपकारी सोई। पर अवगुण परदृष्टि न होई ९३ इन पितु रह्यो पुरोहित राना। बिट्ठल दास तजो तहँ जाना॥ राना पूछो लोगन पाहीं। प्रोहित सुत आवत किमि नाहीं ९४ लोग पठाव बुलावन काहीं। परये जात भये तहँ नाहीं॥ दूजी वारहु जव नहिं गयऊ। शत्रुन तव राना सों कह्यऊ ९५ वैरागी सङ्गति तिहि भावै। रागरंग निशिदिवस वितावै॥ अपने आप भक्त जिय जानै। तव राना इहि भांति वखानै ९६ विट्ठल दास पाहँ कहि दीजे। ममघर आजु जागरण कीजे॥ सो सुनि हरि भक्तन सँग लैकै। सहित समाज गये मुद कैकै ९७ देखत राना आदर कीन्हा। अँटा तिमँजिले आसन दीन्हा॥ कीर्त्तन भजन होन तहँ लागे। विट्ठल दास मनहिं अनुरागे॥ वेसुधि भये भूलि रस माहीं। कीर्त्तन करन लगे पुनि ताहीं ९८ भूले नृत्य गानके माहीं। मन्दिर देह रही सुधि नाहीं ९९ भूमें आइ गिरे तिहि वारी। राजा देखि शोचकिये भारी॥ तर्जन भर्त्सन दुष्टन कीन्हा। साधु उठाइ धाइ पुनि लीन्हा १०० लैगे सोतिन भुवन उठाई। तीजे दिवस देह सुधि आई॥ माता तिनकी कहो बुझाई। जा बिधि लीन परीक्षा राई १०१ विट्ठल दास निशा को पाई। गेछठीकरा ग्राम सिधाई॥ जहां यशोदा छट्ठीकीन्हा। श्री नँदनन्दन की मुद भीना १०२ श्री गोविन्द गरुड़ की पूजा। लागे करन काम नाहिंदूजा॥ नृप सेवक ढूंढेवहु घाहीं। विट्ठल दास मिले कहुँ नाहीं१०३ माता नारि तिन चलि आई। भुवन चलन हित कहो सुनाई॥ ओऊ रहीं न सो घरगयऊ। कछु दिन गये दुखी तन भयऊ १०४ भगवत तिन सों स्वप्न प्रकासा। जाइ करहु मथुरा में वासा॥ तीनि दिवस जव आज्ञा पायो। वेवश हो मथुरा में आयो १०५ देखि सजाती भक्तिविहीना। वढ़ई भक्त गमन घरकीन्हा॥ उतरे विट्ठल दास सुखारी।

प्रेममगन पुनि लोटन लागे ॥ छतसों गिरेभूमिमें जाई। तसकराह परेसो आई १३३ दो०। उत्सव के पकान्न हित चढ़कराह रहयत्र। नेक चोट तननहिं लगी राखो भगवत तत्र १३४ भूपति की आंखैं खुलीं भयलज्जा को धार। भक्तन के आधीन भो किय भक्त्यङ्गीकार १३५॥

नारायण दास जीकी कथा॥

चौ०। नर्त्तक श्रीनारायण दासा। जिनहिय भगवत प्रेम प्रकासा॥ नर्त्तक यदपि सहस्रन नाना। तदपि न इनके भये समाना १३६ भगवतप्रेम निबाहो जैसो। सकत निबाहि न दोसर तैसो। अक्षर अर्थ समुझि सो गावैं। सोई भाव हियेनिज लावैं १३७ नृत्य करत भगवत के आगे। नाना प्रीति भाव अनुरागे॥ कोऊ मनुज अग्रनहिं गावैं। नाचैं नहीं न आनँद पावैं १३८ दो०। दरश करत हरि मन्दिरन एकसमय सुखपाइ। निकट प्रयाग सराय जो हँडिया पहुँचे जाइ १३९ चौ०। अधिपति रहो यमन तहँ केरा। इन आगमन सुनोतिहि बेरा॥ नृत्य गान हित पठइ बुलाई। करत विचार भये मन लाई १४० भगवत सिंहासन सुखदाई। यमन समीप कि बिधि लैजाई॥ बिनागये बनिहै कछुनाहीं। पुनि बिचार कीन्ही मन माहीं॥ १४१ भगवत सम तुलसी सुखदाई। उच्चसिंहासन लै पधराई॥ मीरा कथित भजन तिनगायो। अर्थ समुझि तनदशा भुलायो॥ १४२ लख समाज हरि राधाकेरा। प्रेमभाव तहँ लखोघनेरा॥ प्राण निछावरिकिय सुखपाई। नित्य बिहार मिलेसोजाई १४३॥

लीलानु करनजी की कथा॥

चौ०। पुरिपुरुषोत्तम ब्राह्मणएका। प्रेमीभगवत भक्तविवेका॥ रूपानुभवमग्न सोहोई। तन्मय पुनि बेसुधिहोजोई १४४भइनृसिंह लीला इकबारा। चतुर्द्दशी नृसिंह सुखसारा॥ धूम धाम सोलोगन कीन्हा। विप्रहि रचि नृसिंह वपु दीन्हा १४५ लीलाहोनलगी

हैं चारा । जब यह बात भई संचारा ॥ श्रीनृसिंह हिरणाकुश
रा । जन प्रह्लाद राज्य बैठारा १४६ क्रोधित विप्र धाव तिहि
ा । विरचित दैत्य नखोदर फारा ॥ राज्य दीन्ह प्रह्लादहिजाई।
ेख लोगन कह बचन सुनाई १४७ डारो मारि शत्रुताहेता ।
ऊ कहत भये मुदसेता ॥ आव नृसिंह अंश इहिमाहीं । ताते
ो अचरज नाहीं १४८ पुनि सबहुन मिलि कीन्ह बिचारा ।
ीलाराम होइ जिहिवारा ॥ दशरथ इनको देहु बनाई । आपुहि
म प्रगट खुलिजाई १४९ लीलाराम समय सो कीन्हा । दशरथ
प तिनहिं रचिदीन्हा ॥ जबहिंरामबन बास सिधाये । घूमि सु-
न्त खबरि लै आये १५० सुनत सँदेश प्राण तजि दीन्हा ।
शरथ अधिक जाइ पद लीन्हा ॥ या विधि जबतन प्रेम सुहावै ।
जयालाल तबहीं सुखपावै १५१ ॥

मुरारिदास जीकी कथा ॥

चौ० । देश जुमाड़वार सुखछावा । बलवंडातहँशहर सुहावा ॥
तहाँ मुरारिदास छवि पाये । श्रीरघुनन्दन भक्त सुहाये १५२
भगवत जनसेवा मन लावैं । भगवत के उत्साह सजावैं ॥ राम
चरित मनलीन सदाई । एकदिवस की बात सुहाई १५३ एक
चमार भक्त रघुराई । सेवा पूजा करत सदाई ॥ उच्चस्वर सों क-
हत पुकारी । चरणोदक ले जो अधिकारी १५४ सुनत मुरारि
दास यह भयऊ । ताकेभुवन तुरित चलिगयऊ ॥ देखत काँपन
लगो चमारा । इनकह क्यों भय चित्त बिचारा १५५ केवल च-
रणामृत हितआये । असकहि आश्वास मनलाये ॥ विनय चमार
कीन्ह बहुभाँती । दैंकिमि सकत नीच मैंजाती १५६ कहत मुरारि
दास समुझाई । तुम हमसों उत्तम होभाई ॥ जोकछु डरहोवै तुम
काहीं । काहू सों कहिहैं हमनाहीं १५७ असकहि विह्वलभोतिहि
तीरा । बहनलगो नयननमें नीरा॥ सोलखि पूँछत भयो चमारा ।
सोवत किमि चिंत काह बिचारा १५८ इनकह नयनापिरातहमारे ।

पुनि चमार इमि बचन उचारे॥ लेहुन चरणोदकमोपाहीं। लीन्हो हठकरि मानोनाहीं १५६ गुनिहरिभक्तन करी बिचारा। जाति कर्म पर डारोछारा॥ बेद पुराण संतमतएहा । करिय रामपद छल तजि नेहा १६० भल कुल ऊंच न भलकुलनीचा। रघुबर भक्ति जासु उरबीचा॥ राम भक्ति नहिं जाउरबीचा । ऊंचोकुल नीचहुते नीचा १६१ फैलीबात नगरमें सारी । बोलीमारत सब नरनारी॥ समाचार राजाहू जाना। अच्छी बातन यह मनआना। १६२ दाससुरारिगये इकबारा। बैठेभूप जहाँ दरबारा॥ कियनप्रथम समआदर राजा। उठेतुच्छ गुनि सकल समाजा १६३ कतहूं रहे अन्यथलजाई। भूपति नगर भईबिकलाई॥ आवत नगर न संत प्रवीना। दारिद रोग ग्रसितजनछीना १६४ भूपति जब जानो यहहाला। तिन समीप पहुंचे ततकाला॥ दीनताहु कोमलता साथा। कीन्ह दण्डवत पुनि नरनाथा १६५ तबहिं मुरारि दास मुखफेरा। भगवत बिमुख नचाहियहेरा॥ नृपति हाथजोरे तहँठाढ़े। बूड़त लाज नदी महँगाढ़े १६६ बहुरि दण्डवत किय महि पाला। बोले बचन धारि महिभाला॥ दीजिय दण्ड दयाकरि जोई। मेरे योग्य अहै सबसोई १६७ मम शुभभाग्य नकछु सन्देहा। मिले आपु समगुरु गुणगेहा॥ है कछुन्यून कृपामें जाते। चरणन में बिश्वास नताते १६८ बचन कटाक्ष सुनत हरपाने। बोले बचनदयासोंसाने॥ शंकाभक्तजननहिंकीजे। सदाधन्य तिनको गुणिलीजै १६९ लखिय श्वपचबाल्मीकसुहायो। यज्ञ युधिष्ठिरमेंछबि पायो॥ शवरीपगशरभयो पवित्रा। जानत प्रगट निषाद चरित्रा १७० नामबखानि पारको पावै कहि किन कोटिन जन्म गवाँवै॥ भयेबहुतहैं ह्वैहैं आगे । महा मोह निशि सोवतजागे १७१ कहि नृप हृदय हरो अंधियारा। प्रगटत भये भक्ततिहि बारा॥ भूपति साथ नृपति पुरआये। हरसकल दुखआनँद छाये १७२ साधुसमाज होन पुनिलागा। सबके उरबाढ़ो अनुरागा॥ एक समय कर चरित सुहावा। की-

तन राम भयो सुखछावा १७३ दो०॥ जबहिं रामवन गमनको भयो चरित्र बखान। ध्यानमगन तन्मय भये तजिदीन्हे निज प्रान १७४ श्रीरघुनन्दन परमपद पायोदास मुरारि। जियालाल भगवत चरण प्रेमसकल सुखकारि १७५॥

गदाधर भट्टजीकी कथा॥

चौ०। भक्त गदाधर भट्टसुहाये। प्रेमीभक्ति समुद्र महाये॥ शीलखानि बोलत मृदु बानी। निस्पृह अरु अनन्य छविखानी १७६ सेवत भगवत जनमन लाई। भजनानन्द रहो उरछाई॥ तस्यभक्ति सुनि जीव गुसाई। लिखि पत्री याभांति पठाई १७७ कीन्हों बृन्दावन नहिं वासा। भक्ति रंग किहिभांति प्रकासा॥ पत्रीलिये साधु तहँ आये। बसत भट्ट जिहि ग्रामसुहाये १७८ बैठेभट्ट कूप तट ग्रामा। पूछत साधु भट्टकर धामा॥ कहो गदाधर कहँ सों आये। तिन बृन्दावन धाम बताये १७९ नाम सुनत बृन्दावन केरा। बेसुध भे सप्रेम तिहि बेरा॥ भूमें गिर रही सुधि नाहीं। चेतत भये कालकछु माहीं १८० आनँद मग्न महाअतिसोई। मौन चित्र पूतरि जनु होई॥ कोउ कहत भो साधुन पाहीं। एई भट्ट गदाधर आहीं १८१ साधुनसुनि दीन्ही वह पाती। पढ़ि शिर धारि जुड़ाई छाती॥ बृन्दावनहिं तुरित चलि भयऊ। जीव गुसाई के ढिग गयऊ १८२ कीन्हों प्रेम परस्पर भारी। मिले उभय तनु दशा बिसारी॥ कीन्हपरस्पर पुनि सतसंगा। भगवत रूप रँगे निज अंगा १८३ कथा भागवत अति सुखदाना। भट्ट गदाधर करत बखाना॥ नृपकल्याण सिंह नितआवै। बसत दरेरा ग्रामसुहावै १८४ बृन्दाकाननादिगसों ग्रामा। लागो चित हरिपाद ललामा॥ भगवत भजन बढ़ो अनुरागा। आवन जान भुवन को त्यागा १८५ नारी तासुहाल यहजाना। मनमें करत भई अनुमाना॥ काम बासना उन तजिदीन्हा। भिक्षुकि नारि बोलि इकलीन्हा १८६

तौन सगर्भ बुभुक्षित नारी । मुद्राबीस दिये तिहि बारी ॥ ताहि
सिखाइ कहो इमि तबहीं । बांचैं कथा गदाधर जबहीं १८७ तब
कहि औ हम जौन सिखावा । असकहि तिनके भवन पठावा ।
बांचन कथा गदाधर लागे । श्रोता सुनन लाग अनुरागे १८८
ताच्चण जातभई वह नारी । कहो गदाधर पाहँ पुकारी ॥ तब
तौ हेल मेल बहुकीन्हा । देखि सगर्भ खर्च नहिं दीन्हा १८९
कथाराखि तत्र भट्टबखाना । तुमहीं छांड़िदियो इत आना ॥ स-
बनबात मिथ्या यहमानी । गोसाईंजीने यहजानी १९० नारि
को समीप बुलवाई । राधा वल्लभ लाल गुसाईं ॥ त्रास दिखाइ
सुपूंछन लीन्हा । तबतौ सभय सत्यकहि दीन्हा १९१ नारि
चरित्र जानि दुख दाता । सुनि कल्याणसिंह यहबाता ॥ निज
नारी मारन के हेता । लीन्ह खड्ग तब बुद्धि निकेता १९२ दे
खत भट्ट दयाउर आनी । तिनसों कह इमि बचन बखानी ॥ अब
नहिं कछू कहिय निजनारी । दीन्हों त्यागि दण्डयह भारी
१९३ एक महंत कथामें आये । तिहि सर्बाग्र भट्ट बैठाये ॥ आंशू
प्रेम बहत सबकेरे । देखि महंत हिये निजहेरे १९४ व्यंगवचन
कहिहैं सबलोगा । लाये मिरिच बस्त्रके योगा ॥ नयनन मांहि
लगायो जबहीं । आंशूबहन लाग तिन तबहीं १९५ जानत
रहो एक जनहाला । कहो कथांत भट्ट सो ख्याला ॥ भट्टशुद्ध
चित मानसआना । यह महंत निजहियमें जाना १९६ जि-
न नयनन प्रेमाशू नाहीं । देवोमिरिच भलो तिन माहीं ॥ मिले
भट्टअति प्रेमबढ़ाई । जिनकी कृपा भक्ति उर छाई १९७ एक
समय तिन मन्दिर माहीं । आइ चोर बांधो गथ काहीं ॥ भारी
पोटन सको उठाई । दीन्हों भट्ट आइ उठवाई १९८ तस्कर लखि
मन चिन्ता कीन्हा । को यह हमहिं पकरि नहिं लीन्हा ॥ पूंछत
भोतब तिनकोनामा । दीन्हबताइ भट्ट गुणधामा १९९ कहो चोर
सों पुनि सुखपाई । लेअबशीघ्र जाहु तुमभाई ॥ येते माहँ भयउ
भिनुसारा । चरण न परि तब चौर पुकारा २०० सोधन मोंकहँदेहु

विशोका। मैंनिरुपाधिहोउँ दुहुँलोका॥ यहकहि रोइ चरणगहि लीन्हा। करिकै कृपा मंत्र तिहिदीन्हा २०१ चौरकर्मतिहि दीन्ह छुड़ाई। माखन चौर सुत्राहँ गहाई॥ भगवत हेत रसोई कामा। निजकर करत भट्ट सुखधामा २०२ एकदिवस इकआव नृपाला। चौकादेत रहे तिहिकाला॥ सेवक आइ कहो तिहि वारी। आवत नृपदेहै धनभारी २०३ गहीपै चलिये इहिबारा। सुनत भट्ट किय क्रोध अपारा॥ भगवत सेवतजैं इहिवारी। यासों अधिक काम वहभारी २०४ भट्टगदाधर चरित अपारा। ऐसे अपर महा सुखसारा॥ जियालाल हरिभक्त चरित्रा। आनंद दायक परम पवित्रा २०५॥

रतवंतीजीकी कथा॥

चौ०। परमभक्त रतवंती बाई। सो वात्सल्य उपासक गाई। धरिमानस अतिप्रेम अपारा। भगवत भोग करत तय्यारा २०६ कतहुं होत भागवत सुहाई। नियम समेत सुनन नितजाई। भगवत भोग बनाव दिनैका। जाइनसकी कथा सुनिवेका। २०७ सुवन आपनों दीन्ह पठाई। तादिन कथा परी यहआई॥ नँद नन्दन ब्रजचन्द कन्हाई। माखन निजघरमाहँ चुराई २०८ सोरहमित्रनकाहँ खवाई। देतमर्कटनकाहँ बुलाई॥ ताहँगोपि उरहन बहुलाई। नयनन लखो यशोदामाई २०९ तातें क्रोध सहित नँदरानी। ऊखलमें बांधे हरिआनी॥ सुनि यहकथा सुवन चलिआयो। रतवंतीसों भाषि सुनायो २१० बँधेदाम भगवत सुनिएहा। रतवंती भइ विह्वलदेहा॥ महाकठोर यशोदारानी। अति सुकुमार अंग सुखदानी २११ बांधति नहिं ऊखल लैसोई। मैं वैठीउनको दुखहोई॥ बांधि रज्जु वैठी वह कैसे। प्रगटो ध्यान लालु उर ऐसे २१२ ध्यान माह यह सत्य लखाना। तत्क्षण त्यागि दिये निजप्राना॥ भगवत प्रेमहिये निजआनी। नित्या नन्दमजाइ समानी २१३॥

जस्सूधरजीकी कथा ॥

चौ० कुलपरिवार सहित सुखछाये। जस्सूधरदृढ भक्तसुहाये॥ अमितप्रीति रघुनन्दन चरिता। बिह्वलहोत तासुउर भरिता २१४ कीर्त्तन सुनतरहे इकबारा। श्रीरघुनन्दन करसुखसारा॥ याबिधि कथातहाँ चलिआई। बिश्वामित्र ऋषय सुखदाई २१५ दशरथ पहँ माँगत भे आई। मखरच्छन लच्मण रघुराई॥ चले राम लच्मण सुख दाना॥ इनके हिय वह ध्यान समाना २१६ बोलत भये जोरि युग हाथा। हमहूँ नाथ चलब तव साथा॥ रहौ इतहिबोले रघुनन्दन। जात अहेंहम असुरनिकन्दन २१७ पुनि हम घूमि शीघ्रही ऐहैं। मखरच्छब मुनि आनँदपैहैं॥ अस कहि चलत भये भगवाना॥ इनके उरवह रूपसमाना२१८ चौदह भुवन रूप छबिहारी। कोटिन काम जासु बलिहारी॥ सहि न सके बियोगतिन केरा। दीन्हे प्राण त्यागि तिहि बेरा २१९ दो० नित्यानँदमें प्राप्तभे प्रेमहिये बिचधारि। जियालाल विन प्रेमके जिमिपूरुष विन नारि २२०॥

कृष्णदासजी की कथा॥

चौ०। कृष्णदास हरि भक्त सुहाये। शिष्य सनातनजी के गाये॥ भोनिर्माण जबहिं अस्थाना। श्री मनमोहन को सुख दाना २२१ तबहिं सनातनजी सुखकारी। कृष्णदासको योग्य बिचारी॥ सेवा सौंपिदियोतिन काहीं। भगवत प्रीति जानिमन माहीं २२२ कृष्णदासजी सेवा पाई। पूजन करन लाग सुख पाई॥ मन लगाइ सेवा इमि कीन्हा। भगवत को प्रसन्न करि लीन्हा २२३ भगवतको शृंगार करावें। इकटक लाइ दृष्टि जब लावें॥ बेसुधिहोवें प्रेमअधीरा। रहतचेतन हिंनेक शरीरा २२४॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायक जियालाल जन्माग्रेण विरचितेचतुर्विन्शतिनिष्ठामध्येपरिपूर्णचतुर्विन्श प्रेममहिमानिष्ठायां

षोड़शभक्तकथावर्णनोनाम भक्ताम्बुनिधौषड्विंशस्तरङ्गः २६ ॥

दो०। ग्रहश्रुति ग्रहविधुहायने भादूशुक्ल रविवार। भक्ताम्बुधि पूरणभयो षष्ठी तिथि सुखसार १ सो०। छव्विस जासु तरङ्ग हरिपददाभक्ताम्बुनिधि। पावनकर समगंग चौविस निष्ठायुत शुभग २-दो०। षष्ठ्याधिकर सयुगमशत जामें भक्त प्रमान। गिरिसहस्र श्रुतिशत असी रसयुत ७४८६ छन्द बखान ३॥

आरती॥

आरति श्रीभक्ताम्बुधि केरी। भगवत भक्त सुयश मुदढेरी॥ मुद मंगल मय सुन्दर सरिता। हर्ष पुलक रोमांचक भरिता॥ दुःखदारिद्र शोक दल दरनी। ज्ञान विराग भक्ति उर भरनी॥ चारि पदारथ देतन देरी। कलिमल हरणि शरणि हरि देनी॥ अभिमत दायक सरिस त्रिवेनी। कामक्रोध लोभादिक शमनी॥ व्याधी भव भय मर्कट दमनी। अशुभ क्षुद्रमृग नाशक शेरी॥ राम धाम सोपान सुहाई। अकथनीय परभाव महाई॥ सेवत सुलभ सकल सिधि तासू। कपट विहीन वसत उर जासू॥ पावत जाउर प्रीति घनेरी। वेद पुराण शास्त्रनय पूरी॥ पढ़त सुनत संशय कर दूरी। मन मल हरणि विवेक प्रकासी॥ आश कुबुद्धि करन द्रुत दासी। जियालाल जीवन धन हेरी॥ छन्दमनहरण। जानों मेरु मर्कटी पताकहून छन्द रीति अपर प्रस्तार मात्रा वर्ण जो सुहायो है। नष्टहू उदिष्ट गणदोष गुण दग्ध वर्ण द्रुगुण विचार नाग राज समुझायो है॥ उपमो पमेय उपमानहू के नाना भेद अलंकार भावरसभेद वहुतायो है। कलिमल हरण दरण दुख जियालाल विमल सुयश भगवत जन गायो है॥

छन्दषट्पद। भूसुर जाति प्रसिद्ध त्रिपाठी वंश वदारा। राम कोट शुभ ग्राममध्यहै जन्म हमारा॥ योजन मिश्रित याम्य

द्वियोजन नैमिष राजत। उत्तरयोजन पंचशम्भु गौकर्णविराजत॥ तहँ जियालाल भूसुर बसत गंगासागर शोभ जहँ। हरदेव बक्स भूपति रचित देवालयबहु सुरनतहँ १ प्रेरितहरि इक कालपरस मंडीचलिआयो। विद्यापढ़िबे हेतपढ़त कछुदिवस गवाँयो॥ बाढ़ोनृपसों नेह तहाँअतिहीअवर्चीना॥दिनदिन बाढ़त जातब्याज इवहोतनहीना॥यह ग्रंथकछुक बिरचितरहो पारलहन कियचाहतहँ। नृपकृपाबैठिनिर्विघ्न चित भक्तोदधि किय पूर्णजहँ २॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ कर्मविपाकगीताप्रारम्भः ॥

दोहा ॥

जनक नन्दिनी दाशरथि वन्दि चरण सुखमूल । वरणौं कर्म विपाक यह गीता जग सरिकूल १ जियालाल द्विजमन्दमति ताहि निवाहनहार । बिन श्री सीतानाथके और न जगतवदार २ अर्जुन यह पूँछतभये यदुपतिसों चितलाइ । सोई मैं वर्णन करौं श्रीरामहिं शिरनाइ ३ ॥ अर्जुनउवाच ॥ अन्ध होत किहि पापसों और दरिद्री जोइ । पुनि कुष्ठी किहि पाप सों कहिये श्रीहरि सोइ ४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अन्ध होत परदार रत दारिद्री धन-चोर । होत कुष्ठि ब्राह्मण वधे वचन किरीटी मोर ५ ॥ अर्जुनउवाच ॥ मिलत हेम किहि पुण्यसों कौन पुण्य नर देह । कौन पुण्य हय गज मिलत कहिये प्रभुयुत नेह ६ ॥ श्री भगवानुउवाच ॥ स्वर्ण दान सुवरण मिलत भूमिदान हय नाग । अन्न दिये मानुष वपुप सुनु अर्जुन बड़भाग ७ ॥ अर्जुनउवाच ॥ कौन पाप सों [illegible] मरत कौन पाप सुत नास । होत शिखण्डी कौन अघ क[illegible]ये प्रभु गुनिदास ८ ॥ श्रीभगवानुउवाच ॥ मरतदार ऋण [illegible]प सों पुत्र नाशयाति पाप । मानभंग सों हीजरा सुनिये अर्जुन आप ९ ॥ अर्जुनउवाच ॥ नर्क जात किहि पाप सों होत न सुत किहि पाप । कौन पाप सों रोग युत कहिये श्री हरि आप १० ॥ श्री भगवानुवाच ॥ नर्क जात तनुजादरवि भूसुर द्वेपि अपुत्र । करि सुर निन्दा रोग युत सुनहुँ पाण्डुके पुत्र ११ ॥ अर्जुनउवाच ॥ कौन पाप विक्षिप्ततनु पुत्र लाभ किहि पुण्य । भोगी नर किहि पुण्य सों कहिये नाभि हिरण्य १२ ॥ श्री भग-